

अग्रगामी० गु० आगे चलनेहारा, पेशवा, ।
 अग्रज० गु० जो पहिले प्रकट हुआ, हेतु, बड़ा ।
 अग्रता० } ना० स्त्री० पु० अग्र्यापन, ना०
 अग्रत्व० } पु० पेशवाई ।
 अग्रशेची० ना० पु० गु० पहिले शक्तिनेवाला
 प्रथमही समझनेहारा, दूर-अदेश ।
 अग्रसर० गु० वा० पु० मुखिया, प्रधान, पेशवा,
 आगे चलनेहारा, सरदार ।
 अग्रहायण० ना० पु० अग्रहन ।
 अग्रघ० ना० पु० पाप, दोष, गुनाह, अपासर देय ।
 अग्रदित० गु० अयोग्य, जो पूरा न परे ।
 अग्रार्द्र० गु० पूरी, भरी ।
 अग्राना० अ० कि० अकरना, आग्रह होना
 गु० सन्तुष्ट, धनवान् ।
 अग्रारि० ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्रनी ।
 अग्रामुर० ना० पु० देवविशेष, जिसको श्री-
 कृष्णचन्द्रने बध किया था ।
 अग्रो० गु० पापी, दोषी ।
 अघोर० ना० पु० भयानक, अचूक, शिवकृत
 मंत्र, धर्मविशेष, श्रीमहादेवनी ।
 अघोरपत्न्य० ना० पु० धर्मविशेष ।
 अघोरपत्नी० } ना० पु० जो अघोरपत्न्यका
 अघोरी० } सेवन करे, मलादिसंयुक्त,
 सर्वभक्ती ।
 अन्न० गु० मारनेहारा, ना० पु० मारण, हनन ।
 अशक० ना० पु० अक्षर, गोदी, कनियां, चिक,
 संख्या, गिन्ती के नव अक्षर, निरानां ।
 अशकदुन० ना० पु० दुःख, पीडा, नाममाला,
 (विधुरकदे ने अशकदुन गहन वृजिने
 अधनाउ) ।
 अहना० अ० कि० मोल-टहरना, परीक्षित-होना ।
 अहाना० स० कि० मोल-टहरना, भोगा

अहित० गु० चिद्र किया गया, लिखित,
 परीक्षित ।
 अंकुर० ना० पु० बीज बोने से जो अंकुवा
 पहिले निकलता है ।
 अंकुश० ना०-पु० आंकुड़ी जिस से महावत
 हाथी को मारता है ।
 अङ्गोल० ना० पु० शीघ्रप्रसिद्ध ।
 अङ्ग० ना० पु० अवयव, शरीर, देह ।
 अंगद० ना० पु० बालिका पुत्र, भूषण, वाज्रवंदः ।
 अंगदा० ना० स्त्री० नाम चन्द्रमा की एक
 कला का, वा शरीर की दाता ।
 अंगन० ना० पु० आंगन, सहन ।
 अंगना० ना० स्त्री० पत्नी, जोरू, स्त्री, आंगन ।
 अंगवना० अ० कि० सहना, गैवारा करना ।
 अंगराग० ना० पु० उबटन, केसर चंदनादि
 का शरीर विषे मर्दन ।
 अंगारक० ना० पु० मंगल, भंगरा, पौदा ।
 अंगाङ्गिभाव० ना० पु० शरीर के अवयवों
 का सम्बन्ध ।
 अंगिरा० ना० पु० मुनिविशेष, बृहस्पति
 जी के पिता ।
 अंगीकार० ना० पु० स्वीकार, कबूल, मंजूर ।
 अंगुल० ना० पु० आंगुल ।
 अंगुली० ना० स्त्री० हाथ का अवयव ।
 अंगुष्ठ० } ना० पु० अंगुठा ।
 अंगुष्ठा० }
 अंगुठा० ना० पु० अंगुष्ठ ।
 अंगुठी० ना० स्त्री० अंगुठी, सुन्दरी ।
 अंगेठी० ना० स्त्री० अंगेठी ।
 अचगरी० ना० स्त्री० अचूकित, अचरकर्म,
 अजविलाते, यथा—सुनो महेरि निज-सुतकी
 करनी । करत अचगरी जात न बननी ।
 अचम्मा० }
 अचम्भध० } ना० पु० आश्चर्य, तथ्यव्यव
 अचरज० }

अचल० यु० जो चल नहीं सकता ना० पु० पर्वतादि ।

अचला० ना० स्त्री० पृथ्वी, धरती ।

अचानक० अव्य० अकस्मात्, एकाएक ना० पु० कलकत्ता के निकट नगरविशेष ।

अचानचक० अव्य० अकस्मात्, नागहान ।

अचाना० स० कि० भोजन करके मुसभौना ।

अचार० ना० पु० आम इत्यादि का जो बन जाता है, और आचार ।

अचिन्त० यु० चिन्तारहित, निषङ्क ।

अचूक० यु० जो न चूके, ठीक ।

अचेत० यु० संसाररहित, बेहोश, मूर्च्छित ।

अच्छत० ना० पु० अचत, धावरहित ।

अच्छा० यु० भला, सुबोल, सुन्दर ।

अच्युत० यु० स्थिर, अचलविशेष, ईश्वर ।

अच्युताग्रज० ना० पु० श्रीवलदेवजी ।

अच्छेह० यु० बहुत, विहारीलालसप्तशतिकायां धरे रूप गुणको गरव फिर अच्छेह उवाह ।

अज० अव्य० आज, अज, ना० पु० ब्रह्मा, बक्रा, ईश्वर, शिव, यौवन, और आभरण, यु० जो पैदा न होने वा उपजा किसीसे न हो ।

अजगर० ना० पु० बड़ा साँप, अजदहा साँप ।

अजगुत० यु० अदभुत, अजायब ।

अजगन्धा० ना० स्त्री० बबरीपौधा ।

अजन्म० यु० निस्तका जन्म न होवे ।

अजय० यु० जयरहित, जो जीता न जावे, ना० स्त्री० वीरभूमि जिले की नदीविशेष ।

अजया० ना० स्त्री० अजा ।

अजर० यु० जरारहित अर्थात् जो वृद्धा हो, ना० पु० देवता ।

अजलोक० ना० पु० अयोध्याजी, ब्रह्मलोक ।

अजवीथी० ना० स्त्री० सकेदी जो छोटे घने तारागणों की आकारमें दीप्तपड़ती है ।

अजहूँ० अव्य० अजमी, अमी ।

अजा० ना० स्त्री० बकरी, माया ।

अजात० यु० जन्मारहित, जो न उपजे ।

अजातअरि० } ना० पु० राजा युधिष्ठिर ।
अजातरिपु० }

अजान० यु० अज्ञान, मूर्ख, नादान ।

अजामिल० } ना० पु० नाम एक मनुष्य पा-
अजामील० } पिष्ठका जो नारायण कहके मरा और मुक्ति पाई ।

अजित० } यु० जो जीता न जासके, ईश्वर ।
अजीत० }

अजिन० ना० पु० सिंहइत्यादि का चर्म जो प्रसचारीलोग बिकते हैं ।

अजिर० ना० पु० आंगन, सहन ।

अजीर्ण० ना० पु० कुपच, नाई, नदीन ।

अजौं० अव्य० अचतक, अमी ।

अज्भल० ना० पु० अच और हल अर्थात् स्वर और व्यंजन ।

अंचल० ना० पु० अंचल, अंचला, बखका अन्त ।

अंजन० ना० पु० काजल, सुरमा ।

अंजलि० } ना० स्त्री० दोनों हाथका संपुट ।
अंजली० }

अंजि० कि० अंजन लगाकर ।

अंजित० यु० अंजन अर्थात् सुरमा लगाये ।

अटक० ना० स्त्री० रोक, प्रतिबन्ध, सिन्धुनदी ।

अटकना० अ० कि० रुकना, लगना ।

अटकल० ना० स्त्री० अनुमान, प्रमाण, अन्दाजा ।

अटकलना० स० कि० ताड़ना, बूझना, जांचना ।

अटका० ना० पु० अजिगवाथ जीमें प्रसाद पकाने का पात्र वा प्रसाद ।

अटकाना० स० कि० रोकना, ठहराना ।

अटकाव० ना० पु० रोक, प्रतिबन्ध ।

अटखेल० यु० खिलाड़, अंचल ।

अटखेली० ना० स्त्री० खिलाड़पन, अंचलाइट ।

मङ्गलकोष ॥

अर्थात्

संस्कृत भाषा आदि शब्दों का तात्पर्यप्रकाशक

जिसको

श्रीमद्विद्वज्जनमण्डलीमण्डन कालिन् ब्रौनिंग साहब

एम० ए० पूर्व डैरेक्टर वीरेशके समय में

शुंशी मङ्गलीलाल साहब मुख्य पाठक पैतेपुर प्रदेश
सीतापुर ने अतिपरिश्रम से रचना किया

श्रीयुत विद्यागुणग्राहक, युधिजनसुत्तदायक जान० सी० न्यस्कील्ड साहब अवध के
पाठशालाप्यक्त वीरेश ने पौरजानपदीयपाठशालान्तर्गत विद्यार्थियों के
उपकारार्थ अद्वीकार किया ॥

पांचवीं बार

ल ख न ऊ

सुपरिटेण्डेंट वाचू मनोहरलाल भागिव के प्रबन्ध से

शुंशी नवलकिशोर (सी, आर, ई) के छापेखाने में छापामया
सन् १९०६ ई० ॥

अटन० घ० कि० फिरना, घूमना, ना० पु० ऊपर-
की कोठरी ।
अटना० घ० कि० समाना, भरजाना, फिरना ।
अटपट० गु० चलद, पुलद० गोल बात ।
अटपटी० गु० अरौच, अनरीति ।
अटल० गु० पूरा, दृढ़, सचल, जो न टरे ।
अटवी० ना० पु० वन, जंगल ।
अटा० } ना० स्त्री० ऊपरकी कोठरी,
अटारी० } कोठा ।
अटाला० ना० पु० ढेर, सामग्री ।
अटूट० गु० जो टूट न सके ।
अटके० गु० जो टेकरहित हो, सहाराविना ।
अटेरन० ना० पु० फेंटी, चरखी, घोड़े को चकर
देनेका स्थान ।
अटेरना० स० कि० फेंटी बगाना, घोड़े को
चकर देना ।
अटेरि० ना० पु० नगरविशेष ।
अटोक० गु० टोक बिन, अलड़ ।
अट्टहास० ना० पु० टट्टा मार के हँसना ।
अट्टालिका० ना० स्त्री० अटारी ।
अट्टालीस० गु० चालीस और आठ ४८ ।
अट्टीस० गु० तास और आठ ३८ ।
अट्टवार० ना० पु० आठवां दिन, समाह ।
अट्टसठ० गु० साठि और आठ ६८ ।
अट्टसत्तर० गु० सत्तर और आठ ७८ ।
अट्टारस० गु० बीस और आठ २८ ।
अठानघे० गु० नव्वे और आठ ९८ ।
अठारह० गु० दस और आठ १८ ।
अठासी० गु० अस्ती और आठ ८८ ।
अठेल० गु० जो टेला न जावे ।
अड० ना० स्त्री० भगडा; विरोध, हट ।
अडंग० ना० पु० मंडी अर्थात् दिसावरकी वस्तु
का उतार, गु० भगडाल, टटा ।
अडना० अ० कि० रुकना, हटकरना ।
अडसा० ना० पु० बांसा अर्थात् औषधिवि० ।

अडोल० गु० जो न डले, अटल ।
अणि० ना० स्त्री० मोनी, अनी, नीक ।
अणिमा० ना० स्त्री० अन्तर्मान होने की शक्ति
सिद्धिविशेष ।
अणु० ना० अत्यन्त सूक्ष्म वस्तु ।
अण्ड० ना० पु० अंडा, अंड ।
अण्डकोष० ना० पु० अण्डकग्रह ।
अण्डज० ना० पु० गु० जो अण्ड से उपजे ।
अण्डा० ना० पु० अण्ड० अण्ड ।
अण्डाकार० } गु० अण्ड के ढाल ।
अण्डाकृति० }
अतनु० ना० पु० कामदेव, शरीररहित ।
अतर्क० गु० जो तर्करहित है, वेदलाल ।
अतर्क्य० गु० जो लंघा न जावे, वेदलाल ।
अतल० ना० पु० सात पातालों में से एक ।
अतलस्पर्श० गु० अथाह, अगाध ।
अतसी० ना० स्त्री० अलसी, जिसका तेल निकल
कालते हैं ।
अति० अत्य० जिस शब्द के प्रथम अक्षरके मेल
होता है उसका अर्थ अधिक लिया जाता है, यथा-
अतिसुन्दर अर्थात् अधिकसुन्दर ।
अतिकण्टक० ना० पु० जवासा ।
अतिकाल० ना० पु० अघोर ।
अतिकाय० ना० पु० रावणका पुत्र ।
अतिकुचै० अ० कि० समिद, सकुचै, भूल, राम-
चन्द्रिकायां, यथा कपे वर वाणी-उर्ग उर टीटि
त्वचा तिकुचै सकुचै मतिबली ।
अतिगुहा० ना० स्त्री० शालपर्णी औषधिवि० ।
अतिचंचुल० ना० पु० लाल अण्ड ।
अतिजिहा० ना० स्त्री० कलिहारी ।
अतिथि० } ना० पु० यात्री, पाहुन, संन्यासी ।
अतिथि० }
अतिपराक्रम० ना० पु० बड़ा प्रताप ।
अतिपान० ना० पु० अधिक मदिराका पीना ।
अतिपार्श्व० गु० बहुत निकट ।

अनगदी० ना० स्त्री० अनगदी ।
 अनगलित० यु० जो गिना नहीं वा गिना न
 जामके वा हिसाब में न आवे ।
 अनघ० यु० निष्पाप, निर्दोष, बेगुनाह ।
 अनंग० ना० पु० कामदेव, राजाननक, यु०
 देहरहित जो तन में न होवे ।
 अनजाना० यु० बिना पहिचाना ।
 अनट० ना० स्त्री० गांठि ।
 अनत० अय्य० अन्यत्र, और स्थान में ।
 अनधन० ना० पु० सम्पत्ति वा लक्ष्मी अर्थात्
 अधनामा लक्ष्मी ।
 अनंत० यु० जिसका अन्त नहीं वा भाद्र
 शुक्र चतुर्दशी को जो सूत्र में १४ अयि देकर
 पूजते हैं और माहपुर बांधते हैं बहुत० ना०
 पु० ब्रह्मा, आकाश, विष्णु जी, शेष जी,
 लक्ष्मण जी ।
 अनंतकाल० यु० बहुत दिन ।
 अनंतर० ना० पु० अत्यन्त, समीप, पीछे,
 दूसरा, अव्यवहित ।
 अनन्ता० ना० स्त्री० धरती, जंवासा ।
 अनन्य० यु० एक भाव, एक भरोसे ।
 अनपदा० यु० मूर्ख, कुपदा, अज्ञानी ।
 अनपायन० यु० अचल, दृढ़ ।
 अनयुक्त० यु० जो सम्भक्त न जावे ।
 अनमन० } यु० धारणा, उदास, बेदिल ।
 अनमना० }
 अनमिल० यु० मेलरहित, नादुरस्त ।
 अनमिप० यु० समय, बिना मिस, बेउत्तर ।
 अनमेल० यु० अनमिल ।
 अनमैल० यु० मैलरहित, उज्वल, साफ ।
 अनमोल० यु० जिसका मोल नहीं अर्थात् जो
 बहुत अपूर्व है ।
 अनायास० यु० बिना परिश्रम, बेमिहनत ।
 अनरस० ना० पु० रसरहित, भ्रमण, फीका,
 मित्रों में अननयाव ।

अनरीति० ना० स्त्री० कुचालि, अस्तमान,
 अनादर ।
 अनर्गल० यु० निर्वाध, स्वेच्छक ।
 अनर्घ० यु० अपूज्य, अमूल ।
 अनर्थ० यु० अर्थहीन, अनुचित, बेमतलब ।
 अनर्थक० यु० निष्प्रयोजन, निष्कारण, भ्रूण ।
 अनल० ना० पु० पायक, अग्नि, आग ।
 अनलपक्ष० ना० पु० पक्षी विशेष जो सर्वदा
 काल आकाश में उड़ा करता है और जब
 ईश्वरेच्छा से उस के गर्भ होता है तो उसके
 को आकाश से छोड़ देता है और वह अण्ड
 पृथ्वी पर पहुँचने के पहिलेही मार्ग में पाक
 फूटकर बँचा बन जाता है और उड़ने
 लगता है और अपने माता पिता का स्मरण
 कर ऊपर लौट जाता है, (यथा विचार
 'मालायाम्') अनल पक्ष को चेट्टया गिरे
 धरणि अरराय । बहु अलीन यह लीन है मि
 ल्यो तासु को धाय ।
 अनवकाश० ना० पु० अवकाशरहित ।
 अनवट० ना० पु० भूषणविशेष जो शिया पां
 के अंगुठे में पहनती हैं ।
 अनवस्थित० यु० बैठिकाने, रंग रंग की ।
 अनशन० ना पु० उपवास, लंघन ।
 अनश्वर० यु० जिसका नाश न हो, जो न मिते
 अनसीला० यु० अनपदा, अज्ञानी ।
 अनसुनीकरना० थ० कि० अनाकानी करना
 अनसूया० ना० स्त्री० अविष्मिनी की पत्नी ।
 अनहित० यु० स्नेहरहित, शत्रु, बैर, बुराई ।
 अनहोना० यु० अस्मभव, जो होनहार नहीं ।
 अनाकुरः ना० पु० वृक्ष, पेड़ ।
 अनाचार० ना० पु० कुचाल, आचाररहित ।
 अनाज० ना० पु० अन्न, खाता ।
 अनाजक० ना० पु० कालाद्यगरु ।
 अनाड़ी० यु० भेदसल, निगुण्यो, नवसिखा ।
 अनाथ० यु० दुःखी, जिसका कोई रक्षक न
 हो, यथा विधवा, पिताहीन पुत्र ।

मङ्गलकोष की भूमिका ॥

दो० यदि प्रथम परमात्मा कारण करता जोय । ग्रन्थकारके धर्ममधि करै अनुग्रह सोय ॥ १ ॥
 सिधिदाता गुणगण विमल सुमति नदाननहार । करता हरता पालका तामुचरण आधार ॥ २ ॥
 युक्तज्ञाता वाणी विशदसुमति समृद्धि सदाहि । करिप्रणामतनमनवचनकरों धोपचितचाहि ॥ ३ ॥
 ईशासन विभु मुनि गयन धरा फरवरीमास । संवतविक्रमद्वीपचपनभमहितपसविलास ॥ ४ ॥
 आनंद महल सट्टमन पेंतेपुर चट्टशाल । कोपरच्योललिग्रन्थवहुशमनशब्दजंजाल ॥ ५ ॥

जानना चाहिये कि यह आधीन मतिमन्द मङ्गलीलाल का-
 यस्थ श्रीवास्तव सरहीग्राम, जिल्ल अ. शाहजहांपुर का निवासी
 १५ मई सन् १८५४ ई० सरिश्तहतालीम में कि २३ वर्षके अनु-
 मान हुये नौकर है और अब मुख्य पाठक अर्थात् अफसर मुद-
 रिस मदर्सह पेंतेपुर प्रदेश सीतापुर का है कुछकालसे हिन्दीभाषा
 के कोष के खोज में यत्न करताथा और बहुधा कोष फ़ारसीभाषा
 आदि मिलित दृष्टिआये जिनसे कुछ प्रयोजन हिन्दीभाषा के
 विद्यार्थियों का नहीं निकलसक्ता कोई ग्रन्थ हिन्दीभाषा का
 ऐसा दृष्टिगोचर न हुआ जिसकी सहायता से हिन्दी भाषानु-
 रागी विद्यार्थी रामायण आदि ग्रन्थों में संस्कृत भाषादि शब्दों
 का अर्थ शिक्षककी कृपा विना विचार करलेते, यद्यपि बहुतेरे ग्रन्थ
 नाममाला आदि भाषापद्य में पायेगये तथापि वे सब निरनुप्रास
 अर्थात् बेरदीफ़ हैं उनमें भी शब्दार्थ शीघ्रता से नहीं मिलता है
 जबतक समस्त पुस्तक सुखाग्र न हो इसलिये आधीन ने निम्न
 लिखित पुस्तकों और बहुत अन्य भाषाग्रन्थों के शब्द जो देखे
 और स्मृत थे इकट्ठा करना प्रारम्भकिया कि जिसमें सामान्य भाषा
 विद्यार्थियों को लाभ हो और जब बहुत से शब्द सार्थ इकट्ठा

अनादर० ना० पु० अपमान, निरस्कारः।
 अनादि० यु० नितकी आदि न हो, यथा ईश्वर।
 अनामय० यु० रोगरहित, निर्दोषः।
 अनामिका० ना० स्त्री० तामरी अंगुली।
 अनायास० ना० पु० यत्नविना, निरुपाय।
 अनावृष्टि० ना० स्त्री० सूखा, पानी न बरसे।
 अनाश्रम० यु० विनमकान, विना ठिकाने और
 चारों आश्रमरहित।
 अनाहत० यु० वह शब्द जो ब्रह्मण्ड में अलण्ड
 होता है, ना० पु० चक्रविशेष।
 अनिरुद्ध० ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्र का पोता।
 अनिर्घञनीय० } यु० जो कहने के योग्य
 अनिर्वाच्य० } नहीं है।
 अनिल० ना० पु० पवन, वायु, हवा।
 अनिश्चित० पु० जो निश्चय नहीं किया गया।
 अनिश्चितता० ना० स्त्री० जिसका निश्चय
 नहीं है उसकी स्थिति।
 अनिष्ट० यु० अशुभ, अशुचि।
 अनी० ना० स्त्री० सेन, बरखी और बाण आदि
 की नौरु।
 अनीक० ना० पु० मत्था, ना० स्त्री० सेन, समूह।
 अनीकिनी० ना० स्त्री० सेना, क्रीड।
 अनीति० ना० स्त्री० कुचाल, अन्याय।
 अनीश० ना० पु० ईशरहित, जीव।
 अनीह० यु० चेष्टारहित, उन्मत्त।
 अनु० ध्व्य० यह जिस शब्द के प्रथम में संयुक्त
 होता है उसका अर्थ, कभी पुना, कभी सादर्य,
 कभी निषेध, कभी संग, कभी पीछे, कभी
 समीप का होता है।
 अनुकम्पा० ना० स्त्री० कृपा, दया, रहम, मेह-
 रानी।
 अनुकरण० ना० पु० किसीके पीछे काम कर-
 ना, किसीकी प्रति वा नकल करना।
 अनुक्त० यु० जो उक्त नहीं, ना० पु० द्यन्त।
 अनुक्रम० ना० पु० क्रमसे, परिपाटी, रीति।
 अनुक्रोश० ना० स्त्री० दया, कृपा, रहस।

अनुकारी० ना० पु० नौकर, सेवक।
 अनुकूल० यु० प्रसन्न, सहायक, व्याधिहीन।
 अनुसू० ना० पु० आलस, बुराई।
 अनुखाल० ना० पु० किसी नदी का एक भाग
 किसी देश में प्रविष्ट हो थोड़ी दूर और भेद न
 करे उसका नाम अर्थात् छोटाखाल।
 अनुग० यु० सेवक वा सेवकन, पीछे चलेया।
 अनुगत० ना० पु० आश्रित।
 अनुग्रह० ना० पु० कृपा, दया, मेहरवानी।
 अनुगामी० यु० सेवक, पीछे चलनेहारा।
 अनुचर० ना० पु० सार्थी, सहचर, दास, सेवक।
 अनुचरी० ना० स्त्री० दासी, सेवकन।
 अनुचित० यु० अयोग्य, जो वाजिब न हो।
 अनुज० ना० पु० छोटाभाई।
 अनुजा० ना० स्त्री० छोटीबहिन।
 अनुत्तर० यु० उत्तरहीन, महजन, श्रेष्ठ।
 अनुताप० ना० पु० परचात्ताप, शोच।
 अनुतारा० ना० पु० तारि के पीछेका तारा।
 अनुदिन० ना० पु० प्रतिदिन, नितप्रति।
 अनुनासिक० ना० पु० जो नासिकासे निकले।
 अनुपल० ना० पु० पलका साठिवां अंश।
 अनुपस्थित० यु० जो उपस्थित न होवे।
 अनुपान० ना० पु० शीघ्र आदि के साथ और
 जो कुल मिलाय के पीते हैं।
 अनुप्रास० ना० पु० समान जाति के वर्णों से
 रचितपद, समूह, रदीक।
 अनुभव० ना० पु० मानसज्ञान, अटकल, विचार,
 ध्यान।
 अनुभूति० ना० व्याकरण के आचार्य का नाम
 है जिन्होंने सारस्वत बनाई और अपने चित्त के
 स्थिर निश्चय को भी कहते हैं, जिसका पर्याय
 अनुभव है।
 अनुभाव० ना० पु० महिमा, बड़ाई।
 अनुभूत० यु० बीता, जो मनसे जानागया है।
 अनुमति० ना० स्त्री० अनुज्ञा, आज्ञा, सम्मति,
 सलाह।

होगये तत्र श्रीमन्निखिलसुखसमाज विराजमान विमल धार्मिका-
 नेकसुरसमाज समान सामन्तोपहारीकृत कनकमय गजाश्व
 शब्दायित द्वाग्देश प्रोद्गण्ड प्रचण्डाखण्ड विपक्षबल प्रोद्गटभटस-
 मूहसंकर्तन निर्दयातिशय तीक्ष्णधार सहायीकृत खड्ग दिग्वि-
 जयी विनोदानन्दित महाभूताधिप शिव श्रीयुत कालिन् त्रौनिग
 साहव एम.ए. अवधदेशीय पाठशालाध्यक्ष वीरेशकी आज्ञानुकूल
 वर्णमाला के अक्षरानुहारि निज शिष्य सीताराम और हरदेववर्षा
 की सहायता पाकर सीनुप्राप्त करके मङ्गलकोप नाम रख-उक्त
 साहव वीरेश साहसी की प्रतिष्ठित प्रतिभा में निवेदन किया तब
 साहव सुजान गुणखानने दृष्टिगोचरकर आज्ञा दी कि यह पुस्तक
 और अधिक की जावे और सहायता के निमित्त हिन्दीकोप कृपा
 किया और एक अन्य तसलीसुल्लुशात द्वितीयभाग जिसमें भाषा
 शब्दोंकी फारसीभाषा लिखी है हस्तामलक हुआ फिर सन् १८७२
 ईसवी में यह कोप और अधिक किया गया परन्तु इसी अवसर में
 उक्त पाठशालाध्यक्ष वीरेश की नागपुर प्रदेश यात्रा से ग्रन्थकार
 के मनोरथ हृदय के हृदयमें ही रह गये थे कि दैवयोग से हम लोगों
 के आनन्ददायी स्वस्ति श्रीमद्दुर्गादेवि गुणगणग्राम त्रिस्फुरत्कमल
 मुख भक्त विशदीकृतानेक संगीत प्रकारास्मदीय विद्याप्रचाराग्र-
 णीय गुणिजनजगीशमान यशोदानन्दकन्दकर्म पराक्रम श्रवण
 रसास्वादानन्दार्थि मनोभिलषित विविध पदांर्त्य दानसंसक्त मा-
 नस श्रीयुत जान सी न्यस्फील्ड साहव एम.ए. पूर्वोक्त नाग-
 पुरगामी के स्थानपर अवधदेशीय पाठशालाओं के डैरेक्टर प्रव-
 लिक इन्स्ट्रक्शन वीरेश नियत होय ब्रह्मलोक से सुशोभित हुये
 और अन्य को कृपाकशक से अवलोकन करते ही आश्रीन के

अनुमरण० ना० पु० एक चित्त में विधिपूर्वक शरीर का दहन, सती होना ।
 अनुमान० ना० पु० अटक, युक्ति से जीवि- रचय होवे ।
 अनुमति० गु० विचारा गया ।
 अनुमोदन० ना० पु० प्रशंसा वा बड़ाई करना ।
 अनुयायी० गु० पीछे जानेवाला, सेवक ।
 अनुरत० गु० मग्न, रत, मस्त ।
 अनुराग० ना० पु० स्नेह, प्रीति, थोड़ी लड़ाई ।
 अनुरागी० गु० मित्रतम, दोस्त ।
 अनुराधा० ना० स्त्री० सप्तहत्यां नक्षत्र ।
 अनुरूप० गु० सदृश, समान, तुल्य ।
 अनुरूपक० गु० समान करनेवाला, प्रतिमा ।
 अनुरोध० गु० अपेक्षा, उपकार, रोक, मुवाफिक, अनुरूप होना ।
 अनुरोधी० गु० विरोधी ।
 अनुत्पाप० ना० पु० दुःखित वार्त्ता ।
 अनुत्तह० ना० पु० मुकुटप्रपवन ।
 अनुवाद० ना० पु० पुनः कथन, वार्त्ताका प्रच- करना, हठोकरता ।
 अनुशयना० ना० स्त्री० नायिकाविशेष ।
 अनुशाखा० ना० स्त्री० पीछेकी डाली, अर्माणि ।
 अनुशासन० ना० पु० आज्ञा, हुक्म ।
 अनुसंधान० ना० पु० कामना, पीछे लगाना ।
 अनुसरना० अ० कि० पीछे चलना वा आना ।
 अनुसार० ना० पु० सदृश, तुल्य, अनुरूप होना ।
 अनुस्वार० ना० पु० बिन्दु जो अक्षर के मस्तक पर देता है ।
 अनुहर० ना० पु० तुल्य, अनुहार ।
 अनुहरण० ना० पु० श्राना, उठाना ।
 अनुहार } गु० तुल्य, सदृश, समान, वाप्य ।
 अनुहारि० }
 अनुपम० } गु० उपमासहित अर्थात् 'सर्व' से
 अनुपमा० } भला, एकता, बेगजीर ।
 अनूप० }

अनूठा० गु० अपूर्व, निराला, नया, बनाव
 अन्यून० गु० संव, विलकल ।
 अनृत० ना० पु० झूठ, मिथ्या ।
 अनेक० गु० बहुत, एक से अधिक ।
 अनेकवर्णात्मक० गु० जिस शब्द में एकसे अधिक वर्ण हों ।
 अनैसी० ना० स्त्री० अशुचित, कुदृष्टि ।
 अनैसे० गु० कुदृष्टि, क्रोधदृष्टि, रामायणे यथा (अनई अतुज तप चित्तय अनैसे)
 अनौपधि० गु० जिसकी औपधि नहीं, सादवा ।
 अन्त० ना० पु० समाप्ति, दोषभाग, सीमा, दूसरी जगह, अव्य० निदान ।
 अन्तक० ना० पु० कोल, यमराज ।
 अन्तकाल० ना० पु० मरने का समय ।
 अन्तःकरण० ना० पु० मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार ।
 अन्तःकोण० ना० पु० भीतर की कोना ।
 अन्तःपाती० गु० अन्तर्गत, भीतर ।
 अन्तःपुर० ना० पु० घर जिसमें रानी आदि स्त्रियां रहती हैं ।
 अन्तःसम्पात० ना० पु० भीतर छूना ।
 अन्तड़ी० ना० स्त्री० अंत ।
 अन्तर० अव्य० बीच, फरक, ना० पु० भीतर, समय, भेद, हृदय ।
 अन्तरंग० ना० पु० आत्मीय, अर्पना ।
 अन्तर्हित० गु० छुपाना, भाव्य होना ।
 अन्तरा० ना० पु० गीत के पहिले पदका छोड़के जो पद है अन्य, मध्य, बाहिर ।
 अन्तरापत्ति० ना० पु० गर्भ ।
 अन्तरित० गु० छुपाना, भाव्य होना ।
 अन्तरिया० ना० पु० तिजारी, ज्वरविशेष ।
 अन्तरीप० ना० स्त्री० रास, धरती की नोक जो समुद्र में बलीगई हो ।
 अन्तर्वेद० ना० पु० देश जो गंगा यमुना के मध्य में है ।
 अन्तस्थ० गु० बीच में, दूरवाला, अन्तका

परिश्रमसफल करनेके हेतु सकलकलाध्यक्ष मुन्शी नवलकिशोर वर्मा के मुद्रालय में सीसाक्षरों से मुद्रित होने के लिये आज्ञादी अव यह ग्रन्थ अतिसावधानता से छपकर श्रीमहाशय की अनुमति से तय्यार हुआ इस कारण सम्पूर्ण विद्वानों की उत्तम सेवा में निवेदन है कि जिस शब्दकी लिपि वा अर्थ आदि में रंचक विभेद वा अशुद्धता पावें उसको कृपादृष्टि से शुद्ध करलेवें मेरी मूर्खतापर ध्यान न देवें क्योंकि इस अज्ञानमूर्तिने पूर्वोक्त साहब वीरेश पराक्रमी की अभिज्ञता देख अपनी मूढ़ता विदित की ॥

यथा सोरठा ॥

साहब पाय प्रवीन सबे जगावन विज्ञता । पदवी कर्माधीन सब पावत संसार मई ॥ १ ॥
जाकर गुणगण्य चक्र लखि भागन मुवमूढ़ता । यथादेखि शशिचक्र तम नहि आवत निकटही ॥ २ ॥

दोहा ॥

अतिप्रवीण गाहक चतुर नितप्रति करत समोद । श्रीवृधिवर विज्ञानमय सुयश छयो चहुँकोद ॥ ३ ॥

सवैया छन्द ॥

कीरति सोहत देस विदेश प्रसिद्ध महागुण ज्ञान बढ़ाई ।
साहब कालिन श्रीनिगधी रवि देखिगई कुधिरैनि पराई ॥
मूढ़सगामि अमृक्त निशाकर-मन्द-रहे सब ठाम छिपाई ।
ज्ञान गुणादि सरोज प्रफुलित बल सरोवर देत दिखाई ॥ ४ ॥

दोहा ॥

विशमान कीरति विमल कवि पण्डित मनुहारि । धन्यवाद भागत सबे आदरदानि बिचारि ॥ ५ ॥
सुनि अभिज्ञता स्वामिकी चित्रउल्लाह अधिकांन । रघ्योक्तोपमंगलसुकुनि निजभलललितसन्मान ॥ ६ ॥
श्रीकालिन्ध्रीनिग जू गमन गनपुरादि कीन । कोष छपनकी आसतन मनसों में तनिदीन ॥ ७ ॥
ग्रन्थ रचत जो अम किहो जान्यहु भा वैकान । देवयोग मे-नुरतही सनी तासु सुनि सान ॥ ८ ॥
करुणालय ताही समय विधाचय गुणराशि । निसक्रीडसाहब यहां आये सुयशप्रकाशि ॥ ९ ॥
मे छेरेक्टर अथ के विधाकेरि प्रचारि । पानवीचननु उद्दितां सबकई लीन उचारि ॥ १० ॥
गुणगाहक धनदायकहि लैके में निज कोरा । जायदिलायहुनिजप्रभुहि तासुशरणकरिपेरा ॥ ११ ॥

अंतावली० ना० स्त्री० अंता ।
 अंतिम० यु० अन्तका ।
 अंतेवासी० ना० पु० पीछे रहनेवाला। दूररहने
 वाला शिष्य ।
 अन्त्य० यु० अन्तका, पिछला ।
 अन्त्यज० ना० पु० धोती, चमार, नट, बरट,
 किरात, मेद, भिन्न, पीछे उपजा, नीचजाति ।
 अत्याक्षर० ना० पु० अन्तका अक्षर ।
 अंध० यु० अन्धा ।
 अंधक० ना० पु० दैत्यविशेष जो सदाशिव
 से लड़ा था और मारा गया ।
 अंधकयन्ध० ना० पु० दैत्यविशेष ।
 अंधकरिपु० ना० पु० श्रीमहादेवजी ।
 अंधकार० ना० पु० अंधेरा ।
 अंधकारि० ना० पु० श्रीमहादेवजी ।
 अंधला० यु० अन्धा ।
 अंधसुत० ना० पु० दुर्बोधनादि सौ १०० ।
 अंधा० यु० नेवहीन ।
 अन्न० ना० पु० पक शोधनादि, अनाज ।
 अन्नकूट० { ना० पु० अन्नका ढेर लगाना ।
 अन्नपर्वत० { हिन्दुधर्ममें त्योहार दीवालीके दूसरे
 दिन होता है ।
 अन्नप्राशन० ना० पु० बालक को पाँचवें वा
 छठेमास खीर चढाना, माद चढाना ।
 अन्ना० } ना० स्त्री० दाया, दाई, धाय ।
 अन्नी० }
 अन्य० यु० दूसरा, भिन्न, कोई और ।
 अन्यच्च० यु० अन्य भी, और भी ।
 अन्यथा० अव्य० और, प्रकार, प्रकारान्तर,
 अशुद्ध, भूट ।
 अन्यथाचरण० ना० पु० उलटाव्यवहार ।
 अन्यथासिद्धि० ना० स्त्री० और, प्रकार से
 वहराना ।
 अन्यदेश० ना० पु० और देश, चौरगुल्क ।
 अन्यदेशीय० यु० परदेशी, विदेशी ।
 अन्यपुरुष० यु० जो परोक्ष में है, ध्यानमें ।

अन्यरक्त० ना० पु० लालरङ्गा ।
 यया, (अन्यरक्तःवृत्तफलावसिरःकांपिपपली)
 इति निघंटे ।
 अन्याय० ना० पु० अन्याय, उपद्रव ।
 अन्याय० } यु० अयोग्य, अधर्मी, जालिम ।
 अन्यायी० }
 अन्यत्र० अव्य० और कहीं ।
 अन्योन्य० यु० परस्पर ।
 अन्यव्य० ना० पु० एकका एकके साथ
 सम्बन्ध, कुल ।
 अन्यत्रहं० यु० निरन्तर, सत्यकर ।
 आन्धित० यु० संयुक्त, मिलित ।
 अन्वेपण० ना० पु० अनुसन्धान, खोज ।
 अन्वेपिणी० ना० स्त्री० खोजनेवाली, ढूँढने
 वाली ।
 अप० अव्य० जिस शब्द के प्रथम में यह संयुक्त
 होता है उसका अर्थ, कु० निषिद्धता, विरुद्धता,
 भिन्नता, आसन्नता इत्यादि होताहै सर्व० आप ।
 अपकर्म० ना० पु० कुकर्म, बुराकाम ।
 अपकार० ना० पु० अनिष्ट, विनाश, देव,
 अधर्म ।
 अपकारी० यु० देवी, कुकर्मा ।
 अपकृष्ट० यु० अधम, न्यून, छोटा ।
 अपक० यु० जो पका न होवे ।
 अपघात० ना० पु० निज करसों आप को
 मारना ।
 अपचय० ना० पु० टोटा, घाटा, हानि ।
 अपजस० ना० पु० कलंक, अपमान, अपयश ।
 अपदु० यु० जो काम करने में प्रवीण नहीं,
 निवृद्धि ।
 अपद्धर० ना० पु० भूटडर, निजऔर से डर
 अपत० यु० पापी, बेइज्जात ।
 अपति० ना० स्त्री० अनादर, अपमान ।
 अपत्य० ना० पु० सन्तान, औलाद ।
 अपथ० ना० पु० कुमार्ग, मार्गरहित ।

तासु छपनकी शीघ्रही आजा साहज दोन ॥ यचित सो अत्र यह भयो नाम निमित्त कीन ॥ १२ ॥
 निजस्वामी से विनय यह करत अहो मनलाह । करहि प्रकट यहि कोष को देशदेश चलिजाह ॥ १३ ॥
 कीन परिश्रम में बहुत करत ताहि निर्माण ॥ सहहुपारितोषिकअधिक यहही आशाप्रमाण ॥ १४ ॥
 गुणी याचिहै अम अधिक चतुर याचिहै भूल । दोषअदोष इहन की कविके हृदय न शूल ॥ १५ ॥

ग्रन्थनामानि ।

- (१) श्रीरामायण भाषा तुलसीदासकृत ॥ (२) रामचन्द्रिका केशवदासकृत ॥
 (३) ब्रजविलास ब्रजवासीदासकृत ॥ (४) नाममाला नन्ददासकृत ॥
 (५) अनेकार्थ नन्ददासकृत ॥ (६) तत्त्वसंज्ञा चन्दनकविकृत ॥
 (७) सप्तशतिका विहारीलालकृत ॥ (८) वदनिचंद्र मदनसिंहकृत ॥
 (९) अष्टात्मप्रकाश सरस्वदकृत ॥ (१०) हिन्दीकोष प्रादुराभादमकृत ॥
 (११) अन्य भाषा बहुग्रन्थ ॥

चिह्न ॥

नाम पुलिग=ना० पु० । नाम श्रीलिग=ना० श्री० । गुणवाचक=गु० । सकर्मक क्रिया=स० क्रि० ।
 अवर्मेक क्रिया=अ० क्रि० । अव्यय=अव्य० । सर्वनाम=सर्व० ॥
 प्रकट हेतु कि बहुत से शब्द अप्रचलित इस ग्रंथ में लिखेगये उनके उदाहरण अमरकोषादि संस्कृत
 और भाषा ग्रन्थों में से दिये है और जहां २ उचित होंगे वंके २ कविलोग और उदाहरण देदें ॥
 इस पुस्तक से विद्याभारतियों का बहुत लाभ हुआ और उनकी गुणग्राहकता से सीधतर बिक्री होगई
 अबकी पंचवारा छपता है आशा है इसको गुणग्राहक अंगीकार करें ॥

अपथ्य० गु० जिसके खानेसे रोग अधिक होवे ।
 अर्थात् जठरानल जिसे न पचा सके ।
 अपना० सर्व० निजका, स्वकीय ।
 अपनाहत० ना० स्त्री० घराना, कुटुम्ब, सम्बन्ध ।
 अपवस० गु० स्वाधीन, अपनेवश में ।
 अपभय० ना० पु० भूठबर, अपडर ।
 अपभाषा० ना० स्त्री० गैबारीबोली, या
 यवनादिकों की बोली, फ़ारसीआदि ।
 अपभ्रंश० ना० पु० अपशब्द, अशुद्धशब्द ।
 अपमान० ना० पु० अनादर, इज्जत घटना ।
 अपमानी० गु० जो अपमान के योग्य है ।
 अपमृत्यु० ना० स्त्री० अनमौत, रोगहानि, म-
 रणा, अकालमृत्यु ।
 अपर० ना० पु० तगार औषध, गु० दूसरा,
 अन्य, विरुद्ध ।
 अपरस्पर० गु० जिसका पार नहीं है, अनन्त ।
 अपरा० ना० स्त्री० जुड़ी ।
 अपराजय० ना० पु० पराभव, हानिता, हारि ।
 अपराजित० गु० जो जीता न जावे ना० पु०
 श्रीसदाशिवजी, श्रीविष्णुनारायण ।
 अपराजिता० ना० स्त्री० देवीविशेष, पुष्प-
 विशेष, जिसको विष्णुकान्ता वा कौशा-
 गोड़ी कहते हैं ।
 अपराध० ना० पु० दोष, पाप, घात, अधर्म ।
 अपराधी० गु० पापी, दोषी, अधर्मी ।
 अपराह्न० ना० पु० तीसरापहर ।
 अपरिचित० गु० जातिवाचकशब्द, जिससे
 परिचय न हो, जिससे पहिचान न हो ।
 अपरिमित० गु० जो नापा नहीं गया, बहुत ।
 अपर्णा० ना० स्त्री० पार्वती ।
 अपलक्षण० ना० पु० अपराकृत, बुरे चिह्न ।
 अपलोक० ना० पु० अपयश, बंदनामी ।
 अपवर्ग० ना० पु० मुक्ति, मोक्ष, निजति ।
 अपवाद० ना० पु० निन्दा, अपयश, उलहना,
 बुरीबति आनको कहना, अनियमशब्द ।
 अपवादी० गु० अर्थ, जो अपवाद करे ।

अपवित्र० गु० अशुद्ध, छुतहरा, नापाकी ।
 अपवित्रता० ना० स्त्री० अशुद्धता, छुत, ना-
 पाकी ।
 अपशकुन० ना० पु० बुरासुख ।
 अपशब्द ना पु० शब्द जो अशुद्ध है ।
 अपश्य० गु० जो देखा न जावे ।
 अपसव्य० गु० दाहिना भाग अंगका वा दा-
 हिना हाथ वा कांधो वा जलदान में अगोधि,
 दाहिने कांधेपर रखना, विरुद्ध ।
 अपस्मार० ना० पु० रोमविशेष, जिसको मि-
 रगी कहते हैं ।
 अपस्तरा० ना० स्त्री० स्ववेश्या, परी ।
 अपहरण० ना० पु० हरलेना, लुटलेना, लुटना ।
 अपहृत्ता०)
 अपहृता०) गु० चोर, डाकू, लुटेरा ।
 अपहारी०)
 अपह्व० ना० पु० छिपाव, नकार ।
 अपह्व० गु० पहरहित ।
 अपाक० गु० जो पका नहीं है ।
 अपांग० ना० पु० नेत्रका अंत भाग, कटाह ।
 अपादान० ना० पु० पांचवांकारका ।
 अपान० ना० पु० शुदा, नीचेकी वायु, पाद-
 प्राणविशेष, सर्व, अपना ।
 अपाप० गु० पापरहित ।
 अपामार्ग० ना० पु० जंगा ।
 अपार० गु० जिसका पारावार नहीं है, अनन्त ।
 अपावन० गु० अशुद्ध, नापाक ।
 अपवृत्त० गु० निर्वश, कुपुत्र, कपूत ।
 अपूर्ण० गु० जो अभी पूरा नहीं भया है ।
 अपूर्णभूत० गु० अभी व्यतीत नहीं भया ।
 अपूर्व० } गु० जो पहिले कभी नहीं देखा
 अपूर्व० } अमृता ।
 अपि० अर्थ० निश्चय, ठीक, भी ।
 अपिधान० ना० पु० पोशाक, सब ।
 अपीह० ना० पु० शिला, भूषण ।

अ० अय्य० देवनागरी वर्षमासा का प्रथम अक्षर जिस शब्द के प्रथम में इसका सम्बन्ध होता है उसका अर्थ उलटा हो जाता है यथा अकारण अर्थात् कारणरहित और स्वरान्तर शब्द के पहिले जब आवे तब अन् हो जाता है यथा अनन्त अर्थात् अनन्त ।

अंकवार० ना० स्त्री० गोदी, कौला ।
 अंगरखा० ना० पु० पहिरने का वस्त्रविशेष ।
 अंगिया० ना० स्त्री० चोली, वस्त्रविशेष ।
 अंगीठी० ना० स्त्री० पात्र, जिसमें आग रस्तते है ।
 अंगूठी० ना० स्त्री० जो आभूषण अंगुली में पहिनेते है ।

अंगोछा० ना० पु० देह पाँखनेका वस्त्र, रुमाल ।
 अंत० ना० पु० अंत, समाप्ति, पूरा ।
 अंतर० अय्य० धनुष, फरक ।
 अंतर्गति० ना० स्त्री० भीतरी चाल ।
 अंतरिक्ष० } ना० पु० छत ।
 अंतरिक्ष० } ऊपर की जगह ।
 अंतर्दामी० शु० अंतर्दामी, जो दिलमें रहे यह शब्द ईश्वरके लिये है ।

अन्तर्धान० शु० अंतर्धान, छिपाना, गुप्तहोना ।
 अंतःपट० ना० पु० भीतर का वस्त्र ।
 अंधाकुँवा० } ना० पु० कुआँ, जो कुँवाआदि
 अंधकूप० } से भरगया है ।
 अन्धेर० ना० पु० अन्धाय, उपश्रव ।
 अन्धकार० शु० अंधेरा ।
 अन्ध० ना० पु० घाम ।
 अन्धर० ना० पु० आँकारा, कान्डी ।
 अंधारी० ना० स्त्री० हीरा जो हाथीपर रखते है ।
 अंश० ना० पु० भाग, हिस्सा, देना जो ईश्वर मील का होता है ।

अशी० शु० भागी अर्थात् हिस्सेदार ।
 अशु० ना० पु० किरण ।
 अशुमती० ना० स्त्री० शालपर्णी ।
 अशुमान्० ना० पु० सूर्य, सूर्यवर्शी राजा वि०

अशुमाली० ना० पु० सूर्य, चंद्रमा ।
 अस० ना० पु० कंधा ।
 अजत० ना० पु० निर्वैशी, निन व्याहा ।
 अनुष्टु० शु० उच्चार, वेवाक ।
 अकच्छु० शु० नंगा, मेहरा, वस्त्ररहित ।
 अकरटक० शु० वेस्टके, वेधइक ।

अकथ० }
 अकथनीय० } शु० जो कहनेके योग्य न हो
 अकथ्य० } जो वर्णनरहित होवे ।

अकनि० अ० कि० सुनिके, रामायणे यथ (सुरंग नचावहि कुँवर वर अकनि मृदंग निशान) ।
 अकम्पन० ना० पु० राक्षसविशेष, कम्पहीन ।
 अकंकश० शु० कौमल, नरम ।

अकर्म० ना० पु० अपराध, कुकर्म ।
 अकर्मक० शु० कर्मरहित धातु ना० क्रिया अर्थात् जो कर्ता की शक्ति में होवे ।
 अकर्मण्य० शु० निकम्मा, बेकाम ।

अकलंक० }
 अकलंकित० } शु० निर्दोष, बेदाग ।

अकल्याण० शु० कल्याणरहित, अमंगल ।
 अकवार० ना० स्त्री० अंकवार ।
 अकर्म० ना० स्त्री० वैर, शत्रुभाव ।
 अकस्मात्० अय्य० अचानक, निमित्तहीन ।
 अकाज० ना० पु० कामका विनाश, उखारी ।
 अकाम० ना० पु० व्यर्थ, निष्फल, कामहीन ।
 अकारण० ना० पु० निमित्तहीन, बेमतलब, बेसबब ।

अकारण्य० शु० व्यर्थ, निष्फल ।
 अकारान्त० शु० जिस शब्दके अन्तमें अकार होवे ।
 अकाल० ना० पु० दुर्मिष्ट, कुसमय, कहत ।
 अकालफल० ना० पु० कुसमय के फल, बे मोसिम की वस्तु, दुर्मिष्ट की वस्तु वा फल ।
 अकालमृत्यु० ना० पु० कुसमय में मरना, पीले में मरना, बे मौत मरना ।

अपेय० गु० जो पीने के योग्य नहीं है ।
 अपेयल० गु० अचल, जो टल न सके ।
 अपेक्षक० गु० अपेक्षा करनेहारा, निसवतकरने-
 हारा, अतुरोधक ।
 अपेक्षा० ना० स्त्री० अतुरोध, आशा, भरोसा;
 रिश्वह, निसवत ।
 अपेक्षित० गु० आश्रित, अपेक्षा कियागया ।
 अपौरुष्य० गु० जिसके साध्यता नहीं है, ना-
 ताकत ।
 अप्रकाश० ना० पु० अंधेरा, जो प्रकट नहीं है ।
 अप्रतिहत० गु० जिसकी रोक नहीं है ।
 अप्रतीत० गु० प्रतीतिरहित अर्थात् जो वि-
 श्वास के योग्य नहीं है ।
 अप्रत्यय० ना० पु० अविश्रवाप्त ।
 अप्रत्यक्ष० गु० जो देखा न जावे ।
 अप्रधान० गु० मुख्यनहीं है, जो सरदार नहीं है ।
 अप्रयन्ध० ना० पु० वेवन्दोवस्त, प्रयन्धीन ।
 अप्रमाण० गु० बहुत, ममापररहित, अतत्य ।
 अप्रसन्न० गु० जो प्रसन्न नहीं है, गंदसा,
 नाखुश ।
 अप्रसिद्ध० गु० जिसकी कोई नहीं जानता
 है, गुप्त ।
 अप्राकृत० गु० जो प्राकृत नहीं है ।
 अप्राप्तयौघन० ना० पु० लड़का, नावात्तिया ।
 अप्रिय० गु० अहित, जो प्रिय नहीं है ।
 अफरना० अ० कि० अधिकभोजन से पेट
 फूलना, अधिक धनवान् होना ।
 अफराना० अ० कि० अधिक भोजन करना ।
 अफल० गु० निफल, व्यर्थ, बेकार्यदेह ।
 अघ्न० अघ्न० इतसमम्, इदानीं; ना० सु० पानी ।
 अघतक० } अघ्न० अघ्नोक्त, इतसमम् ।
 अवतलक० }
 अम्बरण० ना० पु० पानीभरना ।
 अचल० गु० निरवल, यौरपररहित ।
 अघलां० ना० स्त्री० नारी, स्त्री० गु० बरहीना ।

अचल० गु० निरवल, वराररहित ।
 अचार० ना० स्त्री० विलम्ब, देर, कुसमय ।
 अवुध० गु० मूर्ख, मूढ़, अहमक, दैन्य ।
 अवृद्ध० गु० नासमक, नादान ।
 अवृद्धा० गु० बिना समक, अनजाना ।
 अवृद्धित० गु० जो वृद्ध नहीं गया ।
 अवेर० ना० स्त्री० अवार ।
 अवै० अघ्न० अघ्नो० गु० अनिश्चित ।
 अवज० ना० पु० कमल, अर्प, चन्द्रमा, देव-
 वैद्य, शंख, वृक्षविशेष ।
 अवद्० ना० पु० वर्ष; साल, संयत् ।
 अधि० ना० स्त्री० मंडकी, सीपी, समुद्र ।
 अभक्त० गु० जो भक्त नहीं, भक्तिहीन, जो
 हिस्सह नहीं हुआ है ।
 अभंग० गु० जिसका नाश न हो ।
 अभय० गु० निर्भय, निडर ।
 अभया० ना० स्त्री० हर ।
 अभरण० ना० पु० गहना, आभूषण, नेवार ।
 अभरम० गु० पतिहीन, निडर ।
 अभ्राग० } ना० पु० दुर्गति, विपत्ति ।
 अभ्राग्य० }
 अभागा० ना० पु० } गु० भाग्यहीन, निपस ।
 अभागी० ना० स्त्री० }
 अभ्राय० ना० पु० अनहोना ।
 अभार० गु० इलका ।
 अभ्राव० ना० पु० अविश्रमान, नारा, मनु्य,
 अनहोना ।
 अभ्रास० ना० पु० वाया, प्रतिभिन्य ।
 अभि० अघ्न० सव दिशितं, यह जिस शब्दके
 प्रथममें संयुक्त होताहै उसका अर्थ यथा, अगे,
 प्रत्येक इत्यादि होताहै ।
 अभिगम्य० अ० कि० आपुनक्ति ।
 अभिचार० ना० पु० मन्व जिससे वधकिया
 जाता है ।
 अभिजित्० ना० पु० मुहुर्त विज्ञान, इत्यादि
 नक्षत्र ।

अकाश० ना० पु० आकाश, प्रकाशहीन ।
 अकिञ्चन० गु० कंगाल, कुछ पास नहीं, केवल
 भगवान् भारीसे ।

अक्रिय० गु० कुछ नहींकरता, करनेके योग्य न हैवि ।

अक्रुण्ड० गु० तीक्ष्ण, तेज, विनाशरहित ।

अकुताना० अ० कि० ऊबना, घबड़ाना ।

अकुताही० गु० ऊबै, घबरावै ।

अकुल० गु० कुछ जाति नहीं, नीचधराना, ना०
 पु० विशेष ईश्वर ।

अकुलाना० अ० कि० व्याकुल होना, घबड़ाना ।

अकुलीन० } गु० धारर, कुलहीन, नीच ।
 अकुलीना० }

अकेल० } गु० दुःखी, एफही ।
 अकेली० }

अकूर० ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्रजी के चंचा,
 गु० निसका अन्तःकरण कोमल हो ।

अखण्ड० गु० समस्त, सम्पूर्ण, सखहीन ।

अखर्य० गु० समस्त, बहुत ।

अखल० गु० अखिल, ना० पु० देवता, सुर ।

अखाडा० } ना० पु० जहां मल्लयुद्ध होता है,
 अखारा० } अंगनाई ।

अखिल० गु० समस्त, सम्पूर्ण, बिल्कुल ।

अखेट० ना० स्त्री० मृगया, शिकार ।

अखयवृत्त० } ना० पु० अखयवृत्त ।
 अखयवृत्त० }

अख्याति० ना० स्त्री० अपेयश, अयशः, बदनामी ।

अग० ना० पु० पर्वत, अगम्य, जहां जा न सके ।

अगम० } गु० जहां जाय न सके, जो घूमने के
 अगम्य० } योग्य नहीं ।

अगर० ना० पु० मुग्धप्रसिद्ध ।

अगस्त० ना० पु० वृषविशेष ।

अगस्ति० } ना० पु० मुनिविशेष जिन्होंने सपुत्र
 अगस्त्य० } को सुखा दिया था ।

अगणित० गु० बहुत, जो गिना न जावे, बेहिसाब ।

अगधानी० ना० स्त्री० आगे जाकर लेना,
 पेशवाई ।

अगहन० ना० पु० नवयं महीना का नाम ।

अगाऊ० अव्य० पहिले से, आगे ।

अगाध० गु० अथाह, अत्यन्त गम्भीर ।

अगार० ना० पु० घर, आगे ।

अगास० ना० पु० अपराध, दोष, नाममात्रायो,
 अथ अगास हेलन अहित औद्युष जो कुछ प्रिय ।

अगुवा० ना० पु० मार्ग, दिखानेवाला, संदेशी,
 आगे चलनेहारा, प्रधान, चौधरी ।

अगुण० गु० अवगुण, गुणहीन, ना० पु० ईश्वर ।

अगुरु० ना० पु० निसका गुंठ नहीं, नीच हस्त ।

अगूढ़० गु० सुगम, जो गूढ़ नहीं ।

अगूढ़गन्धा० ना० स्त्री० हंस ।

अगोचर० गु० अदृश्य, अलख, अव्यय ।

अगोटना० } सं० कि० चीकीदेना, रखना ।
 अगोरना० }

अगौनी० ना० स्त्री० अगवानी ।

अग्नि० ना० पु० आगे, अगुथा ।

अग्निका० ना० स्त्री० कलिहारी ।

अग्निजिह्वा० ना० पु० देवता ।

अग्निपाली० ना० स्त्री० चीता, वृद्धी ।

अग्निमन्थ० ना० पु० अरणी ।

अग्निमुखी० } ना० पु० मिलवां वृद्ध ।
 अग्निचक्रफ० }

अग्निवह्म० ना० पु० रात, रात ।

अग्निशिक्षा० ना० स्त्री० केशर, जाफरान ।

अग्निसंस्कार० ना० पु० दाह देना, मृतक को
 जलाना वा उसके हेतु क्रियाविशेष ।

अग्निहोत्री० ना० पु० अग्नि पूजनेहारा, ब्राह्मण
 जातिविशेष ।

अग्र० ना० पु० मुख्य, आगे, प्रथमभाग ।

अग्रगण्य० गु० जो पहिले हैवे, वा भिन्नजाति ।

अभिघान० ना० पु० नाम, कोप ।
 अभिनव० गृ० नया, नूतन, नवीन ।
 अभिनन्दन० ना० पु० सराहे, मन्मते, सलाह ।
 अभिप्राय० ना० पु० मतज्ञान, सारार्थ, अर्थ,
 आशय, कारण ।
 अभिभूत० गृ० पराभित, बलहीन ।
 अभिमत० गृ० वाञ्छित, इच्छानुसार, सम्मत ।
 अभिमान० ना० पु० अहंकार, ममयुक्त, गहर ।
 अभिमानी० } गृ० अहंकारी, मयस्वर ।
 अभिमान्य० }
 अभिमुख० गृ० सम्मुख, सामने, वर्तमान ।
 अभिरत० गृ० संयुक्त, मिलित ।
 अभिराम० गृ० सुन्दर, सुखद, रमण ।
 अभिरामी० गृ० रमनेवाला ।
 अभिलाष० } ना० स्त्री० इच्छा, मनोरथ,
 अभिलाषा० } तमसा ।
 अभिवन्दन० ना० पु० नमस्कार करना ।
 अभिवाद्० ना० पु० दुर्भजन, कुवचन और
 पुरा वक्तव्याण ।
 अभिवादन० ना० पु० चरण महणपूर्वक
 नमस्कार ।
 अभिविह्व० गृ० निरसका अभिवेक भयाहो ।
 अभिषेक० ना० पु० जल दिग्गन्ता, शान्ति
 स्नान, पदार्थ प्राप्ति के लिये पहिली क्रिया
 विंशति राज्यातिथक ।
 अभिसार० ना० पु० नायक, रति ।
 अभिसारिका० ना० स्त्री० नायिका, मैनापत्नी ।
 अभिसारिणी० ना० स्त्री० नायिका ।
 अभित० गृ० प्रतीक, कदरदान, गुणगाहक ।
 अभनी० अर्थ० रक्षितमय ।
 अभीत० गृ० निश्च, अमय ।
 अभीसित० गृ० विद्याभित्त, मनमाधित ।
 अभीश० ना० पु० जीव, प्राण ।
 अभीष्ट० गृ० विद्याभित्त, मनमाधित ।
 अभूत० गृ० जो न्पदार्थ नहीं मया, अभात ।
 अभूतरिपु० गृ० शत्रुद्विष्ट ।

अभेद० } गृ० एक्य, परस्पर सम्बन्ध, प्रकट ।
 अभेव० }
 अभ्यन्तर० ना० पु० भीतरी, भीतरका ।
 अभ्यास० ना० पु० साधन, चिन्तन, कर्तव्य ।
 अभ्र० ना० पु० आकाश, मेघ ।
 अभ्रक० ना० पु० अवरक, धातुविशेष ।
 अभंगल० गृ० मंगलरहित, अशोभा ।
 अभक्त० गृ० सीधा, सावधान, होशम ।
 अभर० गृ० जो न मरे, ना० पु० देवता, गिर-
 कार, अविनाशी ।
 अभरपुर० ना० पु० मङ्गदेशका नगरविशेष,
 इन्द्र, विष्णु, शिव, शोक, स्वर्ग ।
 अभरस० ना० स्त्री० आमका रस ।
 अमरावती० ना० स्त्री० इन्द्रपुरी ।
 अमरीहत० ना० पु० कचनार वृक्ष ।
 अमर्याद० } ना० स्त्री० अनीति, धनज्ञा,
 अमर्यादा० } अस्तमान ।
 अमल० गृ० निर्मल, उजला, मादकवस्तु, राज्य ।
 अमलतास० ना० पु० सुन्दर, लाठी, औषध
 विशेष ।
 अमात्य० ना० पु० मन्त्री, दीवान ।
 अमान० गृ० साधेस्वभाव, मानरहित ।
 अमाना० अ० कि० समाना, भरना, सपना ।
 अमान्य० गृ० जो मानने के योग्य नहीं है ।
 अमानुष० गृ० मनुष्यतररहित, विना मनुष्य ।
 अमावस्य० } ना० स्त्री० कृष्णपक्षकी समाप्ति
 अमावस्या० } की तिथि वही १५ ।
 अमावास्या० }
 अमर्ष० } गृ० शररहित, अक्रोध ।
 अमर्ष० }
 अमित० गृ० जो भिन्न न जावे या भेद न
 जासक ।
 अभित० गृ० जो नाश नहीं गया, नष्टन ।
 अभिय० ना० पु० अनुन, आतृहयात ।
 अभियमूरि० ना० स्त्री० सजीवन वृद्धी ।
 अभिख० गृ० लहा, जो न मिले ।

अमी० ना० पु० अमृत ।
 अमुक० सर्व० कोई, वह, अमुका, कलानाग ।
 अमूल० गु० जिसकी जड़ नहीं है ।
 अमृत० ना० पु० पीयूष, सुधा, विष, पानी, देव-
 ता, गु० जो न मरे ।
 अमृतफल० ना० पु० आवला ।
 अमृतवल्लरी० ना० स्त्री० गुरच, गिलोय ।
 अमृता० ना० स्त्री० हरे, गुरच, फट्करी, नाम
 चन्द्रमा की एक वृक्षा का ।
 अमृताद्गु० ना० पु० अमृतता, यथा (अमृतानौ
 दशाङ्गुलौ) इति निघंटः ।
 अमृतेश० ना० पु० देवता, इन्द्र ।
 अमेध्य० ना० पु० विद्या, मल ।
 अमेय० गु० अप्रमाण, यथा श्रीभगवान् जिसका
 प्रमाण कोई न जानसके ।
 अमोघ० गु० जो व्यर्थ नहीं, सकल, अचूक,
 फलदाता, ना० स्त्री० नदीविशेष ।
 अमोघा० ना० स्त्री० हरे ।
 अमोल० गु० मोलरहित, अपूर्णवस्तु, बेकामत ।
 अम्वत० गु० लट्टा ।
 अम्बक० ना० पु० नेत्र, आँसू, यथा अम्बक,
 अर्थात् शिव ।
 अम्बर० ना० पु० आदर, आकाश, वस्त्र ।
 अम्बरमणि० ना० पु० सूर्य ।
 अम्बरी० ना० स्त्री० पृथ्वी, धरती ।
 अम्बरीष० ना० पु० राजाविशेष ।
 अम्बरीषी० ना० स्त्री० माई औषध ।
 अम्बा० ना० स्त्री० माता, महतारी ।
 अम्पारी० ना० स्त्री० हाथी परका आसन
 विशेष ।
 अम्बिका० ना० स्त्री० माई औषध, माता, देवी,
 पार्वती ।
 अम्बिष्ठा० ना० स्त्री० रायलता ।
 अम्बु० ना० पु० जल, पानी ।
 अम्बुज० ना० पु० कमल ।
 अम्बुद० ना० पु० मेघ ।

अम्बुधि० ना० पु० समुद्र ।
 अम्बुपति० ना० पु० वरुणदेव ।
 अम्बुवल्लरी० ना० स्त्री० जलपिप्पल ।
 अम्बुवह० ना० पु० मेघ ।
 अम्बुवासिनी० ना० स्त्री० मछली, कुम्भी ।
 अम्बुभृत्० ना० पु० मेघ ।
 अम्ब्य० ना० पु० कमल ।
 अम्भफल० ना० पु० आर्षसिध, यथा (अम्भ
 फलः चापः) इति निघंटः ।
 अम्भोज० { ना० पु० कमल ।
 अम्भोरह० }
 अम्भा० ना० स्त्री० माता, मा, चर्चा, यह
 शब्द शरबी का है ।
 अम्भ० ना० पु० अम्ब, आम ।
 अम्बल० गु० लट्टा, लट्ठई ।
 अम्बलान० गु० निर्मल ।
 अम्बिका० ना० स्त्री० शिमलीशुल ।
 अम्बिलवेतस० ना० पु० अमलवेत ।
 अम्ब्य० ना० पु० लोहा, रामायणे यथा (अम्ब्य
 सण्डन ऊत्तमय अम्ब्यं वृक्ष अम्ब्यं) ।
 अम्ब्यं अम्ब्यं सर्वं, यह ।
 अम्बन० ना० पु० वर्षका आधा अर्थात् उत्तरायण
 वा दक्षिणायन, मार्ग, घर ।
 अम्ब्यार्थ० ना० पु० अन्याय, चन्धेर ।
 अम्ब्यमात्मा० ना० पु० यह जीव ।
 अपान० { गु० भोला, नादान, मूल ।
 अपानात्मा० }
 अयुक्त० गु० अतुचित, विनानेल ।
 अयुत० ना० पु० दश सहस्रः १०००० ।
 अयोग्य० गु० अतुचित, असेमर्थ, बेजा ।
 अयोध्या० ना० स्त्री० अयोध की प्राचीनराज-
 धानी जहाँ श्रीरामावतार भया था ।
 अयोनि० ना० पु० मघा ।
 अरगट० ना० पु० छुपाव, वृषट्ट ।
 अरगा० गु० अलग, भिन्न ।

आरना० स० कि० मङ्गियाना, चिपकाना, लई
 लगाना; जमाना ।
 आरी० गु० खनिवाला, छोटी हुई लकड़ी, कोई
 वस्तु जो मङ्गियाई गई ना० स्त्री० फोयल पत्ती ।
 आर० ना० पु० सांन, रुधिर, दैत्यविशेष ।
 आसक० गु० भोला, साधु जो हिंसा न करे ।
 आहत० ना० पु० शत्रु, वैर, शत्रुता ।
 आकृत० ना० स्त्री० अकृत, अकीम ।
 आम्बाली० ना० पु० धामहादेवजी ।
 आर० ना० पु० मोरपत्ती, जातिविशेष ।
 आचल्य० ना० स्त्री० नामवेलि, पानघादि ।
 आवात० ना० पु० सुहागरुखीका ।
 आचेलि० ना० स्त्री० नामवेलि, पानघादि ।
 आर० ना० पु० ग्वाला, आभीर ।
 आरणी० ना० स्त्री० ग्वालिन ।
 आला० गु० साहसी, निडर, महादुर ।
 आश० ना० पु० शमादि, सपीदि ।
 आ० अ० सम्बोधन, थे ।
 आ० ना० स्त्री० आखेट, शिकार ।
 आरिया० } गु० आखेटकी, शिकारी ।
 आरी० }
 आ० अ० सम्बोधन वा आश्चर्य वा हर्ष में
 भोला जाता है, यथा अहोभाग्य ।
 आ० ना० पु० दिनराति ।
 आ० अ० अहो ।
 आ० ना० पु० भेद, बहिरावृत्त, पांसा ।
 आ० ना० पु० चावल, जब पूजाआदिके
 गु० धानरहित, फाड़ारहित ।
 आ० ना० पु० फकारादि वर्ण, गु० सूत्र,
 ध्वनिनाशी ।
 आविद्या० ना० स्त्री० रमल ।
 आपिहान० गु० रमाल, पांसावाला ।
 आंस० ना० पु० रेखा, भूमिके उत्तर; वा द-
 क्षेप केन्द्रतक; नभ्वे, २ अंश ।
 आ० ना० पु० नेत्र, आंखि ।

अक्षिसंकेत० ना० पु० आखिसे इशारह करना
 यटाक, हावभाव ।
 अक्षुब्ध० गु० स्थिर, शान्त ।
 अक्षौहिणी० ना० स्त्री० सैन प्रमाण, इसका
 कथन कई प्रकार का है । यथा (नवनागसह-
 स्रुषि नागे नागे शतं रथाः, रथे रथे शतैश्चाश्वं
 शश्वैश्चरथे शतधराः) अथवा दश वाहनी
 अथवा १०६३५० पैदल, ६५६१० सवार,
 २१००, रथ, २१००० हाथी ।
 अत्र० अ० यहा, इस जगह ।
 अत्रि० ना० पु० चन्द्रमा के पिता, मुनिविशेष ।
 अत्रिज० ना० पु० चन्द्रमा, दुर्योसा, दत्तात्रेय
 अत्र० गु० मूर्ख अज्ञान, नादान ।
 अत्रता० ना० स्त्री० मूर्खता, नादानी ।
 अत्रात० गु० अनजान, नामालूम ।
 अत्राता० गु० मूर्ख, भोला, नादान ।
 अत्रान० गु० मूर्ख, मूर्खता ।
 अत्रानता० ना० स्त्री० मूर्खता, नादानी ।

(आ)

आ० अ० जिस शब्द के प्रथम में यह संयुक्त
 होता है उसका अर्थ न्यून वा उलटा होजाता है
 और कमी किया के अर्थ का शापक होता है ।
 आ० अ० ऐदोक्तिका सूचक शब्द ।
 आंक० ना० पु० अंक, चिह्न, मदार ।
 आंकना० स० कि० लखना, अंकाना ।
 आंख० ना० स्त्री० चक्षु, नेत्र ।
 आंग० ना० पु० अंग ।
 आंगन० } ना० पु० अंगना, सहन ।
 आंगना० }
 आंच० स्त्री० अग्निकी ताप ।
 आंचर० } ना० पु० अंचला ।
 आंचल० }
 आंझ० ना० पु० आंश ।
 आंट० ना० स्त्री० गांठि, विरुद्धता, ताक ।
 आंटना० अ० कि० समाना, पहुँचना ।

अरुगाना न० कि० अलगाना, अ० कि० अलग
 होना, ना० पु० उपलगाना ।
 अरुगानी० ना० स्त्री० चुप, चुपकी ।
 अरुगे० अ० कि० हट-क्रिया ।
 अरुहना० अ० कि० उलभना, फसना ।
 अरुणता० ना० पु० देशविशेष ।
 अरुणी० ना० स्त्री० अग्निप्रचारक काष्ठविशेष ।
 अरुण्ड० ना० पु० रेंडी का वृक्ष, अण्डवृक्ष ।
 अरुण्य० ना० पु० जंगल, वन ।
 अरुना० ना० पु० जंगली भैंसा ।
 अरुनी० ना० स्त्री० जंगली भैंस ।
 अरुवराना० अ० कि० धराना, हरवराना ।
 अरुवना० अ० कि० विनारोक गिरनेका शब्द ।
 अरुवय० गु० विनारोक, विनासहारा ।
 अरुलू० ना० पु० स्यानावृक्ष ।
 अरुविन्द० ना० पु० कमल ।
 अरुवजक० गु० राजा विना देश ।
 अरुि० ना० पु० वैरी, शत्रु, दुश्मन ।
 अरुिल० ना० पु० वन्दविशेष ।
 अरुिष्ट० ना० पु० चेशुभ, मृत्युदायक, शीत,
 गीबृक्ष ।
 अरुिष्टक० ना० पु० रीटा ।
 अरुिहा० ना० पु० शत्रुनाशक, शत्रुन ।
 अरुि० अ० कि० स्त्रीका सम्बोधन ।
 अरुि० अ० कि० धीर, पुनः ना० पु० कुरहा ।
 अरुिचि० ना० स्त्री० मतलब, अनिष्ट ।
 अरुिण० ना० पु० लालरंग, सूर्य, लालयरुण्ड,
 सूर्य का सारथी ।
 अरुिणचूह० } ना० पु० मुर्गा ।
 अरुिणशिखा० }
 अरुिण० ना० स्त्री० जपापुष्प, सुइहलका फूल ।
 अरुिणार्ई० ना० स्त्री० लाली ।
 अरुिणारे० गु० लाल ।
 अरुिणोदय० ना० पु० सूर्योदय के पहिले दो
 घटत, सूर्योदय ।

अरुिणक० ना० पु० मिलापि ।
 अरुिरे० अ० कि० नीच नर का सम्बोधन, गु० अज्ञ,
 हटा ।
 अरुिरेच० ना० पु० अराध ।
 अरुिरेग० गु० भलाचंगा, रोगरहित ।
 अरुिरेग्यशिची० ना० स्त्री० किरवाली ।
 अरुिरेक० ना० पु० चूर्ण, मदारवृक्ष, स्फटिक ।
 अरुिरेकपुत्री० ना० स्त्री० ऊंधाहीली ।
 अरुिरेकविशदा० ना० स्त्री० बड़ी कटाई ।
 अरुिरेजा० ना० पु० मुग्धाधि, द्रव्यविशेष ।
 अरुिरेगी० गु० जो अरुिरे से रंगा गया ।
 अरुिरे० ना० पु० पूजा करने की एकरीति, आठ
 वस्तु को मिलायके श्वर हेतु अर्पण, सूर्य की
 पूजा करके जल देना, मौल ।
 अरुिरेर्घा० ना० पु० पात्रविशेष जिसमें देवता की
 स्नान कराते हे या जल देते हे ।
 अरुिरेचक० गु० पुजाते ।
 अरुिरेचन० } स० कि० आराधना, पूजाकरना ।
 अरुिरेचना० }
 अरुिरेर्चा० ना० स्त्री० पूजा ।
 अरुिरेर्चि० ना० पु० आंच, टेम ज्योति चमक ।
 अरुिरेर्चित० गु० पूजित ।
 अरुिरेर्जन० ना० पु० उपार्जन, कमाई, प्राप्ति ।
 अरुिरेर्जना० स० कि० कमाना, उपार्जन करना ।
 अरुिरेर्जन० ना० पु० वृक्षविशेष, समेद, सुवर्ष,
 सहस्रबाहु, पांडका तीसरा पुत्र, ककुभवृक्ष
 धवल ।
 अरुिरेर्णच० ना० पु० सागर, समुद्र ।
 अरुिरेर्थ० ना० पु० अभिप्राय, निमित्त, तात्पर्य,
 धन, दीलत, माने, मतलब ।
 अरुिरेर्थशास्त्र० ना० पु० धन के उपार्जन करने
 का शास्त्र, नीतिशास्त्र ।
 अरुिरेर्थसाधन० ना० पु० रीटा, अर्थ का ठिक
 करना ।
 अरुिरेर्थात्० अ० कि० जानो, अर्थ, यह, यानी ।

आंटी० ना० स्त्री० कंठी, अंटीया ।
 आंड० ना० पु० वृषण, अण्ड ।
 आंत० ना० स्त्री० आंतड़ी ।
 आंधी० ना० स्त्री० भङ्गड़, भंग्नावायु ।
 आंध० ना० पु० आम्र ।
 अअ० } ना० पु० पेट में रोग विशेष, आम्र,
 आंच० } आमाशय ।
 आंचला० ना० पु० वृक्ष वा फल विशेष ।
 आंसू० ना० पु० आंसीका पानी ।
 आक० ना० पु० अर्क, मदर ।
 आकर० ना० स्त्री० खानि अर्थात् धातु ना रखादि
 के उत्पन्न होनेका स्थान ।
 आकरीय० गु० जो खान से उत्पन्न हो ।
 आकर्षण० ना० पु० बल से खींचना ।
 आकर्षित० गु० जो खींचा गया ।
 आकांक्षा० ना० स्त्री० वांछा, इच्छा, चाह ।
 आकांक्षित० गु० वांछित, चाहिला ।
 आकांक्षी० गु० इच्छा करनेवाला, चाहक ।
 आकार० ना० पु० स्वरूप, डील, सैन, सूरति ।
 आकारान्त० गु० जिसके अन्त में आकार होवे ।
 आकाश० ना० पु० गगन, आस्मान, अम्बर ।
 आकाशपवन० ना० पु० लताविशेष, आकाश-
 बेलि वा आकाशका पवन ।
 आकाशवाणी० ना० स्त्री० वार्था जो आकाश
 से होती है ।
 आकाशविलासी० ना० पु० देवता, नक्षत्र, गु०
 जो आकाशमें विलासकरे यथा पर्वा ।
 आकाशवेलि० ना० स्त्री० अम्बरवेलि ।
 आकाशी० गु० आकारका, स्वर्गीय ।
 आकुल० गु० व्याकुल, कातर ।
 आकृति० ना० स्त्री० रूप, आकार, सूरति,
 डील ।
 आकृष्ट० गु० खींचा हुआ ।

आक्रम० ना० पु० बलको प्रकाश करके
 काम में दूसरे से अधिक होना, चढ़ाव ।
 आक्षरदण्ड० ना० पु० इन्द्र ।
 आक्षरदण्डपुर० ना० पु० इन्द्रलोक, स्वर्ग ।
 आक्षत० ना० पु० झूठत ।
 आखा० ना० पु० बारा, गठिया, चलनी ।
 आखात० ना० पु० खर्लाज ।
 आखु० } ना० पु० मूरा, चूहा ।
 आखुख० }
 आखेट० ना० पु० घरेर, शिकार, मूराया ।
 आखेटकी० गु० शिकारा, घरेरी ।
 आख्या० ना० स्त्री० संज्ञा, नाम ।
 आग० ना० पु० अग्नि ।
 आगत० गु० उपस्थित ।
 आगम० ना० पु० वेद व शिवोक्तशाल विशेष
 भविष्यत् वा ईश्वरई ।
 आगमन० ना० पु० अवाई, आन ।
 आगमवह्ना० ना० पु० शिव, गु० जो आगमकी
 बात बदे वा आगम का पाठक होवे ।
 आगमविद्या० ना० स्त्री० आगम कहने की
 विद्या ।
 आगमज्ञानी० ना० पु० तान्त्रिक जो आगमकी
 जानता होवे ।
 आगर० ना० पु० अधिक बावर ।
 आगरा० ना० पु० नगर विशेष ।
 आगरी० ना० स्त्री० कौठरी ।
 आगलान्त० अव्य० गललगा ।
 आगा० ना० पु० सामना, अगवाड़ा ।
 आगामी० गु० आनेहारा, अवेया ।
 आगार० ना० पु० घर, मकान ।
 आगिल० गु० पहिला ।
 आगू० } अव्य० सामने, नदिके, अगे ।
 आगे० }
 आगोट० ना० स्त्री० चौकडी, कूद ।
 आग्रह० ना० पु० उपकार, जिहालत, ग्रहण ।
 आघात० ना० पु० चोट मारपीट ।

अर्धानुरोध० ना० पु० नाम के अर्धरूप होना,
अर्ध के अर्धरूप ।
अर्थान्तर० ना० पु० दूसरा अर्थ ।
अर्थी० गु० धनी, बादी, अर्थवक्ता, प्रयोजनयुक्त,
ना० पु० याचक, अर्थी, ना० स्त्री० लारी,
ताबूत, टिन्डी ।
अर्थावा० ना० पु० मोटापिसान ।
अर्द्ध० गु० आधा ।
अर्द्धचन्द्र० ना० पु० आधाचन्द्रमा ।
अर्द्धचन्द्रिका० गु० कालानिसेत, अर्धचिन्दिनी ।
अर्द्धजल० गु० आधापानी, मरणकाल ।
अर्द्धरात्रि० ना० स्त्री० आधीराति ।
अर्द्धाङ्ग० ना० पु० आधाशरीर, शीतांग ।
अर्द्धांगी० गु० शीतांगी ना० स्त्री० पत्नी ।
अर्पण० ना० पु० दान, देवता को भेटदेना ।
अर्पना० स० कि० अर्पणकरना ।
अर्पण० ना० पु० सी क्रि० १००००००००००० ।
अर्धुद० ना० पु० दराक्रि० १०००००००००००० ।
अर्भक० ना० पु० पुत्र, शिशुगर्भ ।
अर्चना० ना० पु० सूर्य ।
अर्वाङ्ग० गु० नीच, अर्ध्य० पहिली ।
अर्शपर्श० ना० पु० शुद्ध करने के लिये जल छिड़-
कना, छूना ।
अर्हन्त० ना० पु० जेनी ।
अल० अर्थ० अर्थ, समर्थ, पूरण, ना० पु०
आभरण, आलस, बहुतायत ।
अलक० ना० स्त्री० बालों की लट, पूर ।
अलक्त० ना० पु० कुसुम, महाविरयुत ।
अलकावली० ना० स्त्री० एकआर के बालों
की लट ।
अलख० गु० अगोचर, अनेकता, जोन पहिचाना
जावे, यथा ईश्वर ।
अलग० गु० भिन्न, उदा, लगाव नहीं ।
अलगनी० ना० स्त्री० रस्ती धनितपरकपड़े
धरते हैं ।

अलगदं० ना० पु० पनिहासाय, यथा-अलगदों
जलव्यालः इत्यमरः ।
अलग्ना० गु० भिन्न, निर्धन्य ।
अलगाना० स० कि० उदाकरना, अ० कि०
उदा होना, अलग होना ।
अलंकृत० गु० अलङ्कारयुत, आभूषित ।
अलङ्कार० ना० पु० भूषण, गहना और शास्त्र
निरोप ।
अलंग० ना० स्त्री० और, पार ।
अलभ्य० गु० जो मिलने के योग्य न हो ।
अलम्० अव्य० बहुत, ढेर ।
अलभ्युवा० ना० स्त्री० श्वाना जो मुल से
निकलती है, ज्ञानसारपल्लवां यथा-(सुखमधि
अलम्बुषा भियाभिन, कुहलिंग, के-देरा
विरामित) ।
अलवाई० गु० धीड़ेदिगकी स्थानी, रामचन्द्रिका
यां यथा-(ज्यों सुनको सुरभी अलवाई) ।
अल्लेश० गु० बहुतायत, अतिशयानदेशः इत्य-
भिवानः ।
अलश० ना० पु० आलस्य ।
अलसाना० अ० कि० आधाना ।
अलसी० ना० स्त्री० तीसी, अतसी ।
अलक्षग० ना० पु० दुष्टचिह्न ।
अलात० ना० स्त्री० बनेटी ।
अज्ञान० ना० स्त्री० हाथीवांधने की जेरी ।
जित्तो आदू करते हैं ।
अलाप० ना० पु० आलाप, उच्चारण ।
अलापना० स० कि० आलापना ।
अलाद० ना० पु० भूनी, पूरा ।
अलि० ना० पु० विन्दू, अमर, वृश्चिक लान,
स्त्री० सली ।
अलिक० ना० पु० माथा, भूंड ।
अलिन० ना० पु० अमर, ना० स्त्री० द्विपार
अलिनी० ना० स्त्री० अनरी, भोरी ।
अली० ना० स्त्री० सली, दूती, स्त्री ।
अलीक० ना० पु० भूंड, मिथ्या ।

आघार० ना० पु० घृत, घी, लिङ्कान् ।
 आघु० ना० पु० मील, मय्याद, यथा विहारीलाल
 सप्तशतिकायां । दोहा (जन्म जलधि, पानिप
 विमल भोगग आघु अपार, रहे गुणी है गरपरं
 भती न सुताहार) ।
 आंगिरस० ना० पु० बृहस्पति ।
 आचमन० ना० पु० आचमन अर्थात् भूमन-वा
 पङ्गा करने के पहिले धोड़ानस हथेली में रखके
 पीना वा कुसीकरना ।
 आचरण० ना० पु० कर्तव्य, चालि, व्यवहार,
 प्रचार, शास्त्रोक्त किया ।
 आचार० ना० पु० विचारकरना, पासखड, परहेत
 समई, कारसी ।
 आचारी० गु० जो मनुष्य शास्त्रोक्त-किया-धेक
 समेत करे ।
 आचार्य्य० ना० पु० वेदका उपदेशक, गुरु ।
 आच्छादन० ना० पु० बस, ढकना, घोंधी,
 पोशाक ।
 आच्छादित० गु० बसयुत, ढकाभया ।
 आच्छे० गु० अच्छेका बहुवाक्य ।
 आज० अथ० अथ, इगरोत् ।
 आजनेय० ना० पु० घोड़ा यथा (आजनेयाःकुली
 नाःसुर्विनीनाःसाधुवाहिनेःश्वमरः) ।
 आज्ञा० ना० पु० दादा, पिताका पिता ।
 आज्ञाना० अ० कि० अचानकआना, पङ्ना ।
 आजि० ना० पु० युद्ध, समर, लड़ाई ।
 आजीव० ना० पु० } जीविकानिर्वाह, मभारा ।
 आजीविका० स्त्री० }
 आटना० स० कि० भरना ।
 आटा० ना० पु० चास, सूजी, पिसान ।
 आठकी० ना० पु० तिल जिनमें से तिल निक-
 लता है ।
 आडू० ना० स्त्री० ओट, परदा ।
 आडूना० स० कि० ओटकरना, आडूदेना ।
 आडम्बर० ना० पु० उद्योग, अभिमान, हर्ष ।
 आडा० गु० तिरछा, टेढ़ा ।

आडी० ना० पु० रसक, ना० स्त्री० गाने में स्वर
 विशेष, टेढ़ी, तिरछी, बेंड़ी ।
 आडेआना० अ० कि० रक्षा करना, बचावहेना ।
 आड्य० गु० धनाढ्य, धनी, स्वामी ।
 आतङ्क० ना० पु० भयभीत, दुःख अट डर, प्रताप
 इवत ।
 आततायी गु० उकेत, हत्यारा, परस्त्रीहारक ।
 आनप० ना० पु० घाम, धूप ।
 आतपत्र० ना० पु० वृष ।
 आतपी० गु० धूप से विकृत ।
 आता० ना० पु० सीताकल ।
 आतिथ्य० } गु० अतिथिका सत्कार, करना,
 आतिथ्य० } अतिथिपालन, भोजवानी ।
 आतुर० गु० दुःखी, रोगी, व्याकुल, पावरा ।
 आतू० ना० स्त्री० मुखवायिन ।
 आःमघात० ना० पु० अपनीहत्या, निजघात ।
 आःमघाती० गु० निज जीवहन्ता, अधर्मी, जीव
 को दुःखदाता ।
 आत्मज० ना० पु० पुत्र, लड़का ।
 आत्मनामी० गु० जो आपसे प्रसिद्ध है ।
 आत्मपालक० गु० आपस्वार्थी, आपकाजी ।
 आत्मभू० ना० पु० ब्रह्मा ।
 आत्ममात्र० ना० पु० समस्तजगत्, जीवभर ।
 आत्मरक्षा० ना० स्त्री० निजजीवकी रक्षा, इन्द्रवा-
 क्शी औषधि ।
 आत्मरक्षक० गु० निजजीवपालक ।
 आत्मश्लाघा० ना० स्त्री० निज सुत से अपनी
 बड़ाई ।
 आत्महा० गु० निजजीवघाती, धर्मरहित ।
 आत्मा० ना० पु० स्त्री० जीव, मन, बुद्धि, देह,
 स्वभाव, धन, अन्तर, अहङ्कार, आप ।
 आत्मिक० गु० मनुका, अपना ।
 आत्मिकता० ना० स्त्री० अपनाहित ।
 आत्मीय० गु० आत्मिक, अपना ।
 आदर० ना० पु० सत्कार, सम्मान, प्रेमसे लेना ।
 आदराय० गु० जिसमें आदर पायाजाता है ।

अरगाना न० कि० अलगाना, अ० कि० अलग होना, ना० पु० उपलगाना ।
 अरगानी० ना० स्त्री० चुप, चुपकी ।
 अरगे० अ० कि० हट-किया ।
 अरसना० अ० कि० उलभना, फंसना ।
 अरएता० ना० पु० देशविशेष ।
 अरणी० ना० स्त्री० अग्निप्रचारक काष्ठविशेष ।
 अरएड० ना० पु० रेंडी का वृक्ष, अरएडवृक्ष ।
 अरएय० ना० पु० जंगल, वन ।
 अरना० ना० पु० जंगली भैंस ।
 अरनी० ना० स्त्री० जंगली भैंस ।
 अरवराना० अ० कि० धराना, हरवराना ।
 अरराता० अ० कि० विनारोक गिरनेका शब्द ।
 अरराय० गु० विनारोक, विनासहारा ।
 अरलू० ना० पु० स्योनावृक्ष ।
 अरविन्द० ना० पु० कमल ।
 अराजक० गु० राजा विना देश ।
 अरि० ना० पु० बैरी, शत्रु, दुश्मन ।
 अरिल० ना० पु० अन्धविशेष ।
 अरिष्ट० ना० पु० असुभ, मृत्युदायक, रोग, विभव ।
 अरिष्टक० ना० पु० रीठा ।
 अरिहा० ना० पु० शत्रुनाशक, शत्रुना ।
 अरी० अ० अ० स्त्रीका सम्बोधन ।
 अर० अ० अ० स्त्री, पुनः ना० पु० अरुहा ।
 अरुचि० ना० स्त्री० मतभ्रर, अविच्छा ।
 अरुण० ना० पु० लातरंग, सूर्य, लातरारुण, सूर्य का स्तरथी ।
 अरुणचूड० } ना० पु० मूर्त्ति ।
 अरुणामूर्त्ति० }
 अरुण० ना० स्त्री० जगामुष्प, गुडहलका फूल ।
 अरुणार्क० ना० स्त्री० लाली ।
 अरुणारे० गु० साल ।
 अरुणोदय० ना० पु० मूर्त्ति के पहिले दो हात, मूर्त्तिदय ।

अरुष्क० ना० पु० मिलावटी ।
 अरु० अ० अ० नीच नर का सम्बोधन, गु० अरु, हा ।
 अरुख० ना० पु० अरुख ।
 अरुग० गु० मलाखंगा, रोगरहित ।
 अरुग्यशिखी० ना० स्त्री० किरवाली ।
 अरुक० ना० पु० सूर्य, मदारवृक्ष, रफटिक ।
 अरुकपुष्पी० ना० स्त्री० ऊँचाहोली ।
 अरुकविशदा० ना० स्त्री० बड़ी कटाई ।
 अरुजा० ना० पु० सुगन्धि, द्रव्यविशेष ।
 अरुजी० गु० जो अरुजि से रंगा गया ।
 अरु० ना० पु० पूजा करने की एकरीति, आठ वस्तु को मिलायके ईश्वर हेतु अर्पण, सूर्य की पूजा करके जल देना, मोल ।
 अरुधा० ना० पु० पानविशेष जिसमें देवता को स्नान कराते हैं वा जल देते हैं ।
 अरुचक० गु० पुनारि ।
 अरुचन० } स० कि० आराधना, पूजाकरना ।
 अरुचना० }
 अरुचा० ना० स्त्री० पूजा ।
 अरुचि० ना० पु० आंच, टेम ज्योति चमक ।
 अरुचित० गु० धूमित ।
 अरुजम० ना० पु० उपार्जन, कमाई, मासि ।
 अरुजना० स० कि० कमाना, उपार्जन, करना ।
 अरुजुन० ना० पु० वृक्षविशेष, सफेद, सुवर्ण, सहस्रबाहु, पांडुका, तीसरा, पुत्र, ककुभयुक्त धवल ।
 अरुणच० ना० पु० तागर, समुद्र ।
 अरुथ० ना० पु० अभिप्राय, निमित्त, तारथ्य, धन, दौलत, मान, मतलब ।
 अरुथशास्त्र० ना० पु० धन के उपार्जन करने का शास्त्र, नीतिशास्त्र ।
 अरुथसाधन० ना० पु० रीठा, अर्थ का ठिक करना ।
 अरुथात्० अ० अ० जानो, अर्थ, यह, यानी ।

आरोपित० शु० कल्पना कियागया, बनाया गया, सौपागया ।

आरोप० ना० पु० कल्पना, बनावट ।

आरोह० ना० स्त्री० } ऊपर चढ़ना, सीढ़ी,
आरोहण० ना० पु० } जीना ।

आर्त्त० } शु० पीड़ित, दुःखित, व्याकुल ।
आरत० }

आर्द्र० शु० गीला, सीला ।

आर्द्रा० ना० स्त्री० छठानक्षत्र ।

आर्य्य० शु० उत्तमकुलोत्पन्न, कुलीन, उत्तम, श्रेष्ठ ।

आर्य्यावर्त्त० ना० पु० वह पवित्रदेश जो पूर्व समुद्रतट से पश्चिम सिन्धुतट तक और हिमालय से विन्ध्याचल तक है ।

आर्षी० ना० स्त्री० भूषणविषेण जो स्त्रियां अग्रे में पहिनती हैं, दर्पण ।

आल० ना० पु० वृक्ष या उसका फलविशेष, पीला, हरताल ।

आलम्ब० ना० पु० सहारा, मदद ।

आलम्बन० ना० पु० आश्रय, अवलम्ब ।

आलय० ना० पु० घर, मकान ।

आलवाल० ना० पु० थाला, धाँवला ।

आलस० ना० पु० ढील, सुस्ती, सिथिलता ।

आलसी० शु० ढीला, सुस्त, शिथिल ।

आलस्य० ना० पु० आलस ।

आला० ना० शु० धारा, ताक, तास जिसमें विरास आदि रसते हैं ।

आलान० ना० पु० खूँडा जिसमें हाथी नाँधा जाताहै, बेड़ी, जंजीर ।

आलाप० ना० पु० बातचीत करना, स्वरमिलाप ।

आलि० ना० स्त्री० सली, पंक्ति ।

आलिङ्गन० ना० पु० परस्पर गलेलगाणा ।

आलिङ्गित० शु० प्रसंगित, भोगाहुई ।

आली० ना० स्त्री० सली ।

आलु० } ना० पु० विलायती कन्दविशेष ।
आलु० }

आलोक० ना० पु० ज्योति, दृष्टि, चापलौसी ।

आलोकन० ना० पु० दृष्टि देकर देखना ।

आवभ० ना० पु० बाजाविशेष ।

आवरण० ना० पु० ढाल, आव्हान, विरूप, भँवर, घेरा ।

आवर्त्त० ना० पु० भँवर जो पानीमें होता है ।

आवर्द्दा० ना० स्त्री० आयुर्दाय, उमर ।

आवनो० अ० कि० आना ।

आवभक्ति० }
आवभगत० } ना० स्त्री० मान, सम्मान, आदर ।
आवभगति० }

आवलि० ना० स्त्री० पांति, पंक्ति ।

आवश्यक० शु० निश्चय कर्तव्य, जरूरीकाम ।

आवश्यकता० ना० स्त्री० जरूरत ।

आवा० ना० पु० ब्रह्मा देराकी राजधानी ।

कुम्हार जिसमें बत्तन पकाताहै, अ० कि० आया ।

आवाई० ना० स्त्री० चर्चा, समाचार ।

आवागमन० } ना० पु० आनाजाना ।
आवागवन० }

आवाजाई० ना० स्त्री० पंडिपडना, आना जाना ।

आवाती० ना० स्त्री० अवाई ।

आवाधा० ना० स्त्री० भूमिसण्ड ।

आवास० ना० पु० घर ।

आवाहन० ना० पु० सादर बुलाना, बुलाना ।

आधिर्भाव० ना० पु० प्रकटहोना ।

आधिर्भूत० शु० प्रकटवस्तु ।

आधिष्ट० शु० जो भूतादिक करके अस्त है ।

आवृत्त० शु० विराहुआ, वेधित ।

आवृत्तिक० ना० स्त्री० उद्धरिणी, पदाहुआ, इहराना, डब ।

आसक्त० शु० मोहित, गटपट, लान और अतिरत ।

अर्धातुरोध० ना० पु० नाम के अरु रूप होना,
अर्थ के अरु रूप ।
अर्थान्तर० ना० पु० दूसरा अर्थ ।
अर्थी० गु० धनी, बादी, अर्थवक्ता, प्रयोजनयुक्त,
ना० पु० याचक, अर्थी, ना० स्त्री गौलाश,
तावत, टिकटी ।
अर्थावा० ना० पु० मीठापित्तान ।
अर्द्ध० गु० आधा ।
अर्द्धचन्द्र० ना० पु० आधाचन्द्रनी ।
अर्द्धचन्द्रिका० गु० कालानिसोत, आधीचांदनी ।
अर्द्धजल० गु० आधापानी, मरणकाल ।
अर्द्धराशि० ना० स्त्री० आधीराशि ।
अर्द्धाङ्ग० ना० पु० आधीशरीर, शीतान ।
अर्द्धांगी० गु० शीतानी ना० स्त्री० पत्नी ।
अर्पण० ना० पु० दान, देवता को भेंट देना ।
अर्पना० स० कि० अर्पणकरना ।
अर्घ० ना० पु० सौ चिरोइ १०००००००००० ।
अर्घुद० ना० पु० दराकिरोइ, पर्वतविशेष ।
अर्भक० ना० पु० पुत्र, शिशुगर्भ ।
अर्घमा० ना० पु० सूर्य ।
अर्वाकू० गु० नीच, अव्य० पहिली ।
अर्शपश० ना० पु० शुद्ध करने के लिये जल छिड़-
कना, छुना ।
अर्हन्त० ना० पु० जैनी ।
अल० अव्य० अस्यर्थ, समर्थ, पूरण, ना० पु०
आभरण, आलस, बहुतायत ।
अलक० ना० स्त्री० बालों की लक, धूर ।
अलक्त० ना० पु० कुलम्ब, महाभयुत ।
अलकान्वली० ना० स्त्री० एकप्रकार के बालों
की लक ।
अलख० गु० अगोचर, अनदेखा, जौन पहिचाना
जावे, तथा ईश्वर ।
अलग० गु० भिन्न, छुदा, लगन नहीं ।
अलगनी० ना० स्त्री० इसरी अलखप्रतीक
धरते है ।

अलगदं० ना० पु० पणिहाताप, यथा-अलगदों
जलव्यालः इत्यमरः ।
अलग्ना० गु० भिन्न, निर्वन्ध ।
अलगाना० स० कि० छुदाकरना, अ० कि०
छुदा होना, अलग होना ।
अलंकृत० गु० अलङ्कारयुत, आभूषित ।
अलङ्कार० ना० पु० भूषण, गढ़ना और शास्त्र
विशेष ।
अलग्ना० ना० स्त्री० श्रेत, पर ।
अलभ्य० गु० जो मिलने के योग्य न हो ।
अलम् अव्य० बहुत, ढेर ।
अलभ्युपा० ना० स्त्री० दयाता जो मुक्त से
निकलती है, ज्ञानसारावल्यां यथा-(मुखमधि
अवलम्बुया विग्रामिन, कुङ्किण, के ; देरा
विरामित) ।
अलवाई० गु० धोडेदिनकी ब्यानी, रामचन्द्रिका
यां यथा-(ज्यो सुनको सुखी अलवाई) ।
अल्लेश० गु० बहुतायत, अतिशयानुपेक्षा-इत्य-
भिवानः ।
अलश० ना० पु० आशय ।
अलसाना० अ० कि० औषधाना ।
अलसी० ना० स्त्री० तीसी, अतसी ।
अलसग० ना० पु० दुष्टचिह्न ।
अलात० ना० स्त्री० बनेटी ।
अज्ञान० ना० स्त्री० हाथीनाथने की जमीर ।
जिसको आदू कहते है ।
अलाप० ना० पु० आलाप, उच्चारण ।
अलापना० स० कि० आलापना ।
अलाद० ना० पु० धूनी, पूरा ।
अलि० ना० पु० विन्दू, भ्रमर, शुद्धिचंद्र लगन,
स्त्री० सपरी ।
अलिक० ना० पु० माया, झूठ ।
अलिन० ना० पु० भ्रमर, ना० स्त्री० लियांग
अलिनी० ना० स्त्री० भ्रमरी, मीरी ।
अली० ना० स्त्री० हाथी, दूरी, स्त्री०
अलीक० ना० पु० झूठ, मिथ्या ।

आशक्ति० ना० पु० चाह, प्यार ।
 आशंका० ना० स्त्री० भय, डर, सन्देह, शक ।
 आशय० ना० पु० अभिप्राय, आश्रय, मतलब,
 मसमून ।
 आशर० ना० पु० निशाचर, दैत्य ।
 आशा० ना० स्त्री० आसरा, भरोसा ।
 आशावन्त० गु० आसुरिका, उम्मेदवार ।
 आशावसन० गु० नेगा, तुष्णा रहित ।
 आशावान्० गु० आशावन्त ।
 आशिप० ना० पु० } दुआ, मला मनाना,
 आशिपा० स्त्री० } अच्छा चाहना ।
 आशीर्वाद० पु० }
 आश्चर्य्य० गु० अद्भुत, ना० पु० अचम्भा,
 विस्मय ।
 आश्चर्य्यवन्त० गु० तज्जुब में, अचम्भित ।
 आश्रक० ना० पु० रुधिर, लोह, खून ।
 आश्रम० ना० पु० हिन्दू लोगों में चारि आश्रम
 अर्थात् महाचारी १ गृहस्थ २ वाग्प्रस्थ ३
 संन्यासी ४ और श्रमियोंके रहनेका स्थान, घर ।
 आश्रमी० गु० आश्रम धरनेवाला ।
 आश्रय० ना० पु० आसरा, समीपता, गु० अधी-
 न, शरण, छल ।
 आश्रित० गु० आश्रित, काय परवरा ।
 आशवास० ना० पु० भरोसा, समाप्ति, अस्याय ।
 आश्विन० ना० पु० कुवार रातवांमास ।
 आपत० ना० पु० अचत चावलादि ।
 आपर० ना० पु० अचर वर्षा ।
 आपाह० ना० पु० आपादि चौधामईना ।
 आस० ना० स्त्री० आशा, भरोसा ।
 आशंसार्थ० गु० जिससे इच्छा का बोध
 होता है ।
 आसक्त० गु० आशक्त, फेरकतह ।
 आसक्ति० ना० स्त्री० आशक्ति, प्रीति प्रेम ।
 आसन्न० ना० पु० निस्तार, सेन, योगासन, बैठने
 के लिये करावा काष्ठवा ऊनकी वस्तु बैठक,
 जाप के भीतरी और ।

आसनगत० गु० बैठाहुआ ।
 आसनी० ना० स्त्री० ऊन वस्त्रादि बिछाना ।
 आसन्न० गु० निकट, पास ।
 आसन्नकोण० ना० पु० पास का कोना ।
 आसन्नभूत० ना० पु० निकटही व्यतीतभया ।
 आसपास० गु० लगभग ।
 आसमुद्र० ना० पु० सपुद्रपर्यन्त ।
 आसय० ना० पु० आशय ।
 आसर० ना० पु० आशर, दैत्य ।
 आसव० ना० स्त्री० मदिरा विशेष, शरान ।
 आसा० ना० स्त्री० आशा ।
 आसाम० ना० पु० देशविशेष ।
 आसावरी० ना० स्त्री० रागिनी विशेष, कमीत
 विशेष, कपड़ा विशेष ।
 आशिख० ना० स्त्री० आशिप ।
 आसीन० गु० बैठाहुआ ।
 आसीविष० ना० पु० सांप ।
 आसीस० ना० स्त्री० आशीर्वाद ।
 आसु० गु० शीघ्र, शितापी ।
 आसुग० गु० बाण, वामु, सूर्य्य ।
 आस्तोप० गु० शोभ प्रसन्न होनेवाला ।
 आसुर० ना० पु० असुर वा कोई असुर ।
 आसुरी० ना० स्त्री० राक्षसीमाया, निशाचरी ।
 आसकत० ना० स्त्री० आलस्य ।
 आसकती० गु० आलसी ।
 आस्तित० ना० पु० वेदधर्मोकाकृत, साधुता,
 धर्मशक्ति, इस्ती ।
 आस्तिक० ना० पु० वेद के धर्मों के फलके
 विश्वासी, साधु ।
 आस्था० ना० स्त्री० टेक, सभा, परिश्रम ।
 आस्पद० ना० पु० स्थान, पद, सितान ।
 आस्पात० ना० पु० कचनारवृक्ष ।
 आश्रप० ना० पु० असुर, दैत्य ।
 आस्वाद० ना० पु० रसका अनुभव ।
 आह० ना० स्त्री० साँस, धीरता, धीरज ।
 आहट० ना० पु० घंटा, शब्द, आवाज ।

अलीन० गु० अयोग्य, अनुचित, वैमेल ।

अलीह० गु० अयोग्य, झूठ ।

अलेश्व० गु० अत्यन्त, अगणित, बहुत ।

अलैयावलैया० ना० सां० निधावर और दीवालौ
में पूजा जलायके नचाना ।

अलोन० } गु० लोनरहित, फाँका ।
अलोना० }

अलोप० गु० छुपा, विगाड़ा, नष्ट, प्रकट ।

अलोपना० स० कि० छुपाना, गुप्तकरना ।

अलोल० गु० अटल, धिर, ना० स्त्री० खलकूद ।

अलौकिक० गु० जो लौकिक नहीं है अर्थात्
परलोक का लौकिकता ।

अल्प० गु० थोड़ा, किंचित् ।

अल्पतर० गु० बहुतथोड़ा ।

अल्पर्था० गु० लघुबुद्धी, नासमझ ।

अल्पनिद्रा० गु० स्त्री० थोड़ासोना ।

अल्पज्ञ० गु० कमसमझ, थोड़ाज्ञानकार ।

अल्पक० ना० पु० आलूतरकारी ।

अव० अव्य० जिस शब्द के प्रथम में यह
संप्रक होता है उसका अर्थ कभी भिन्नता,
कभी फलान का होता है कभी नास्तिक, कभी
अनादर ।

अवकाश० ना० पु० आसरा, सावकाश ।

अवकेशी० गु० बांझ ।

अवगति० ना० सां० ज्ञान, वा उरीदरा ।

अवगाह० ना० पु० अथाह ।

अवगाहन० ना० पु० स्नान, तरना, धाह
लगाना ।

अघमाहि० अ० कि० थाहलगाके ।

अघगीत० गु० निन्दित, दुष्ट, ना० पु० निन्दा,
दोष ।

अवगुण० ना० पु० सौंड, दोष ।

अवघट० गु० कुघट ।

अवचट० गु० एकदृष्टि, एकाग्र ।

अवडेरि० अ० कि० बहकाये, धोखा देकर,

रामायणे यथा (पंच कहे शिव-सती-विवाही
पुनि अबडेरि मराइन ताही) ।

अवतंस० ना० पु० पतौका, शिरोमणि ।

अवतरना० अ० कि० उतरना, प्रकट होना ।

अवतार० ना० पु० ईश्वर का मनुष्यादि के
रूपसे पृथ्वीतलपर प्रकाशित होना, जन्म ।

अवतारिक० } गु० परमात्मा, ईश्वर, अवतार
अवतारी० } लंगहारा, यथा राम, कृष्ण ।

अवदात० गु० उज्वल, उत्तम, सुन्दर ।

अवदाच० ना० पु० गुजराती-ब्राह्मणोंकी गाति ।

अवध्य० } ना० स्त्री० वचन, मर्यादा, सीमा,
अवधि० } समय, वा श्रीअयोध्याजी वा उत्त
के और पास्तका देस, प्रसिद्ध ।

अवधान० गु० चौकस, सावधान, ना० पु०
चौकसाई, वचन ।

अवध्य० गु० जो बध करने के योग्य नहीं है ।

अवधूत० ना० पु० योगी, शिवपूजक ।

अवधूतनी० ना० स्त्री० योगिन ।

अवनी० ना० स्त्री० पृथ्वी, भरती, जमीन ।

अवनीश० ना० पु० राजा, बादशाह ।

अवन्तिका० } ना० सां० उज्जैननगरी,
अवन्ती० } नदीविशेष ।

अवम्० ना० पु० तिथिकाक्षय, गु० नीच ।

अवयव० ना० पु० अंग वा शरीर का भाग ।

अवराधक० गु० सेवक, ध्यानी ।

अवराधित० गु० सेवित, ध्यान-क्रियेयोग्य ।

अवराधना० स० कि० सेवाकरना ।

अवरुद्ध० बंधाहुआ ।

अवरेखना० स० कि० लिखना, लकीरकरना ।

अवरेखी० स० कि० लिखी, लकीर का ।

अवरोध० ना० पु० बन्ध, रोक, अटक ।

अवलम्ब० ना० पु० आश्रय, आसरा, सहारा ।

अवि० ना० पु० पर्वत, शैल, सूर्य, रत्नक ।

अविलम्बित० } गु० आश्रित, लकड़ता,
अविलम्बी० } पंथी ।

अचिरलि० ना० स्त्री० पांति, पंक्ति, कतार ।

आहा० अन्व० खिदका सूचक शब्द ।
 आहार० ना० पु० भोजन, खाना ।
 आहारी० यु० भोजन करनेवाला, भोजन के योग्य ।
 आहि० अन्व० है ।
 आहुत० } ना० स्त्री० देवताओं के लिये होमने
 आहुति० } के लिये जो वस्तु पृतादि ।
 आहवनीय० ना० पु० अग्निविशेष ।
 आहु० ना० पु० उग्रसेन राजाका पिता ।
 आहुतदान० ना० पु० ब्राह्मणको घुलाकर धर
 पर दानदेना इसको मध्यम दान कहते हैं ।
 आहिक० ना० पु० प्रतिदिन धर्मका कार्य ।
 आहिकगति० ना० स्त्री० एक दिनकी चाल,
 प्रतिएकग्रह का नित्यमचक्र ।
 आहा० ना० पु० जलार्णव ।
 आहाद० ना० पु० हर्ष, आनन्द ।
 आहादित० यु० हर्षित, आनन्दित ।
 आह्वान० ना० पु० आवाहन, पुकारना ।
 आक्षेप० ना० पु० दुर्वचन, निन्दा ।
 आक्षोदन० ना० पु० आखेट ।
 आश्रेय० ना० पु० अश्रिका पुत्र ।
 आश्रेयी० ना० स्त्री० नदी विशेष जो बंगालमें है ।
 आशा० ना० स्त्री० आदेश, हुक्म ।
 आशाकार० } यु० जो आशापर चले, सेवक,
 आशाकारी० } तबिदार ।
 आशाद० ना० पु० जो आशा देवे, हाकिम ।
 आशानुयायी० यु० आशावत् बर्तनेवाला ।
 आशानुसार० ना० पु० हुक्म के बमूनिव ।
 आशानुवर्ति० यु० तबिदार, सेवक ।
 आशाभिलाषी० यु० आशाचाहनेवाला ।
 आशार्थ० यु० आशा का बोध मिससे होता है ।
 आशालंघन० ना० पु० उद्वलहुक्मी, हुक्म न
 मानना ।

(इ)

इक० यु० एक ।
 इकटफ० ना० पु० एक ताक से देखना ।
 इकट्टा० } यु० जो एक जगह में जमाहोवे ।
 इकट्टा० }
 इकठौरा० }
 इकठौरी० }
 इकसार० यु० सरिता, सदृश, समान ।
 इकारान्त० यु० जिस शब्दके अन्तमें इकार है ।
 इका० यु० अकेला, अद्वितीय, एका ।
 इंगलएड० ना० पु० देशविदेश, जिसमें लखन
 नगर प्रसिद्ध है ।
 इंगलएडीय० यु० जो इंगलएडका है ।
 इंगितज्ञ० पु० इच्छा, समान, चलनेवाला ।
 इंगित० ना० पु० सैन, संकेत, आगमन, खोज ।
 इच्छा० ना० स्त्री० मनोरथ, चाह ।
 इच्छाचारी यु० मनोवत्गामी, बन्धरहित ।
 इच्छित० यु० इच्छासमाना, चाहा हुआ ।
 इच्छितफल० ना० पु० चाहाहुआ फल वा
 अर्थ ।
 इच्छानुसार० ना० पु० इच्छावत्, चाहना ।
 इलन० ना० पु० नेत्र, दृष्टि ।
 इडा० ना० स्त्री० भरती, देवी, बाई श्वास ।
 इत० } अन्व० यहां, इधर ।
 इत० }
 इतना० यु० यह शब्द परिमाण वा अवधि का
 ज्ञापक है ।
 इतनी० ना० स्त्री० सैन्य, यु० इस प्रमाण ।
 इतर० यु० अन्य, रहित नीच ।
 इतरलोग० ना० पु० छोटीजाति, लोकांतर ।
 इति० अन्व० समाप्तिका बोधक है, अधिक,
 इसप्रकार ।
 इत्याल० ना० पु० मिलान, सामाना, मुकाबिलह ।
 इत्यादि० ना० पु० आदिक, वधिरह ।
 इतिहास० ना० स्त्री० घटनांत, प्राचीन कथा,
 पुराणादिकी वार्ता, तारीख ।

अवलोकन० ना० पु० दर्शन, दृष्टि, देखाव ।
 अवलोकना० सं० कि० देखना, ताकना ।
 अवश० गु० पराधीन, असमर्थ ।
 अवशिष्ट० गु० शेष, उच्छिष्ट, बाकी ।
 अवशेष० ना० पु० शेषवचा, बाकीरहो ।
 अवशोपित० गु० जो बाकी रह गया ।
 अवश्य० अव्यय० चाहिये, निश्चय, कर्तव्य,
 जरूरी ।
 अवसर० ना० पु० सावकाश, पाते, समय,
 मौक़ा, इतिकाल ।
 अवसान० ना० पु० अन्त, समाप्ति, आखिर ।
 अवसरि० ना० स्त्री० दर, राहदेखना, बाट
 हेरना ।
 अवस्था० ना० स्त्री० दशा, उमर, हातत और
 दरता ।
 अवज्ञा० ना० स्त्री० अपमान, निन्दा, अनादर,
 तुच्छकरना, अवरु उतारना ।
 अवाई० ना० स्त्री० नगिनई, आमद ।
 अवाक० ना० पु० गुंफा, मूक, मौनी ।
 अवाच्य० गु० अकथ्य, मौनी, निर्ध, कुवद् ।
 अवाधो० गु० स्त्री० सुखरूपी, बाधा रहित ।
 अवाध्य० गु० विना बाध, अतर्क्य ।
 अवाध्योपक्रम० गु० बाधा रहित कर्म, अतर्क
 कर्म ।
 अवारी० ना० स्त्री० दुकान, पक, सामायण
 यथा- (नारु बनाइ विचित्र अवारी, मणिमय
 विधि जनु स्वकर सवारी) अम्बारा ।
 अवास० ना० पु० घर, मकान ।
 अविमल० गु० निश्चिन्त, आनन्द ।
 अविमलित० गु० निश्चिन्त, आनन्द ।
 अविकार० ना० पु० विकार रहित ।
 अविकारी० गु० जन्मादिविकार रहित ।
 अविगत० गु० व्यापक ।
 अविगति० ना० स्त्री० ज्ञान ।
 अविचल० गु० अचल, धिर, कायम ।
 अविचार० ना० पु० मूल, अन्याय, नादानी ।

अविचारी० गु० विचार रहित, अन्यायी ।
 अविदुरि० गु० पास, निकट ।
 अविद्या० ना० स्त्री० मूल, अज्ञानता, माया
 विद्याहीन ।
 अविनय० गु० दिवाई, चञ्चलाहट, गुस्ताखी ।
 अविनाश० ना० पु० नाश रहित, कुशल ।
 अविनाशी० गु० कुशल, निसका नारा न हीवे ।
 अविनीति० गु० चञ्चल, टोट ।
 अविन्दु० गु० विन्दुरहित ।
 अविरल० गु० निरन्तर, अभेद ।
 अविरोध० ना० पु० चैन, मुस आनन्द, गु०
 विरोध रहित ।
 अविरोधनी० ना० स्त्री० गु० सुखी, बेत-
 अविरोधी० ना० पु० टक ।
 अविलम्ब० ना० पु० शीघ्रता, जल्दी, यत्न ।
 अविलम्बित० गु० शीघ्र, जल्द ।
 अविवादी० गु० जो विवाद न करे, शान्त ।
 अविवेक० ना० पु० अविचार, अज्ञानता, गु०
 जो विवेकरहित हो ।
 अविवेकी० गु० विचारहीन, अज्ञानी ।
 अविशेष० समान, जो विशेष नहीं ।
 अविश्रास० गु० ना० पु० अप्रतीति, बेएतबार ।
 अविश्रासी० गु० निसकी प्रतीति नहीं वा जो
 किसीकी प्रतीति न माने ।
 अविशीण० गु० निरन्तर, अतृण, पूरा ।
 अवेगी० ना० पु० विधारा औपधि गु० जो
 वेगता रहित हो ।
 अवेर० ना० स्त्री० टाल, विलम्ब, कुसमय ।
 अवेला० ना० स्त्री० कुसमय, बेवक्त ।
 अव्यक्त० गु० जो व्यक्त नहीं अर्थात् मालूम
 नहीं ।
 अव्यय० ना० पु० स्वर्ग, अजर, गु० जो व्यय
 न हो, जिस शब्दका कोरफव न हो, कृपण ।
 अव्यवस्था० ना० स्त्री० जो शांति से संभत
 नहीं है ।
 अव्यवस्थित० गु० जो ठीक नहीं है ।

इतो० } यु० इतेना ।
 इतो० } यु० इतेना ।
 इदम्० सर्व० यह ।
 इदानीम्० अव्य० यहाँ, इसजगह ।
 इधर० अव्य० यहाँ, इसतौर ।
 इन्दारा० ना० स्त्री० बंझापका कूआँ ।
 इन्दिरा० ना० स्त्री० लक्ष्मी ।
 इन्दीवर० ना० पु० नील कमल, पौधा विशेष ।
 इन्दु० ना० पु० चन्द्रमा ।
 इन्दुर० ना० पु० ऊँर, चूहा ।
 इन्दौर० ना० पु० नगरविशेष ।
 इन्द्र० ना० पु० देवताओं का राजा, प्रधान ।
 इन्द्रगोप० ना० पु० वीरवेहटी ।
 इन्द्रजित्० ना० पु० मेघनाद, यु० जो इन्द्रकी जीते ।
 इन्द्रपुरी० ना० स्त्री० इन्द्रका नगर ।
 इन्द्रप्रस्थ० ना० पु० दिक्षीनगर ।
 इन्द्रवधू० } ना० स्त्री० वीरवहटी कीका,
 इन्द्रवधूटा० } लाल रत्नका वर्षा में होताहै,
 इन्द्र की पत्नी ।
 इन्द्रयव० ना० पु० कुट्टन का कल, इन्द्रकी औषधि विशेष ।
 इन्द्रवारु० ना० पु० }
 इन्द्रवारुणी० स्त्री० } औषधिविशेष ।
 इन्द्रविपादिनी० }
 इन्द्राणी० } ना० स्त्री० शर्चा, इन्द्रकी पत्नी
 इन्द्रायणी० }
 इन्द्रायन० ना० पु० वृक्षविशेष वा उसकाफल जो अतिसुन्दर और कड़वा होताहै ।
 इन्द्रासन० ना० पु० इन्द्रका सिंहासन ।
 इन्द्रिय० } ना० स्त्री० जिनसे रूप रसादिका
 इन्द्रा० } जान होताहै वह दोप्रकार की दरा
 हैं पांच कर्मेन्द्रिय अर्थात् हाथ, पांव, गुदा, लिंग, श्रोत्र और पांच ज्ञानेन्द्रिय अर्थात् आँख, नाक, कान, जीभ, त्वचा ।
 इन्द्रधन० ना० पु० जलानिकी लकड़ी आदि इंधन ।

इम० ना० पु० हाथी ।
 इमपालक० यु० महावत पीलवान ।
 इभ्य० ना० पु० स्वामी ।
 इमम्० सर्व० यह यु० ऐसा, इसप्रकार ।
 इमि० यु० इसप्रकार ।
 इला० ना० स्त्री० धरती, नारी, भवानी, देवी, बुद्धि, सरस्वती ।
 इलायची० ना० स्त्री० फलविशेष, एला ।
 इलावृत० ना० पु० पृथ्वी के नवलएडों में से एक ।
 इला० ना० पु० मसा ।
 इव० अव्य० तरह, प्रकार, जैसे ।
 इष्ट० यु० पूजित, प्यारा, वांछित ना० पु० देवता, मनुष्य, चहीता, वस्तुचहीती ।
 इष्टदेव० ना० पु० पूजित देवता, जिस देवकी सेवाकरे वा प्यावे ।
 इष्टा० ना० स्त्री० प्रिय, प्यारी ।
 इष्टित० यु० विचारित, जो मानागया ।
 इध्यासन० ना० पु० धनुष, कमान, कमाण ।
 इयु० ना० पु० बाण, तीर, आश्विनमास, और गणित में ५१ ।
 इयुधी० ना० स्त्री० पु० धनुष, कमान, कमाण ।
 इयुधीपति० ना० पु० धनुर्धर अर्जुनादि ।
 इस्त्री० ना० पु० लोहि का यंत्र जिससे धोबी कपड़े सेंगलता है ।
 इस्पात० ना० पु० पकालोहा ।
 इष्ट० सर्व० यह ।
 इहलोक० ना० पु० मनुष्यलोक, यह लोक ।
 इक्षु० ना० ऊँर, गाँडा, गन्ना ।
 इक्षुगंधा० } ना० स्त्री० विहारीकन्द ।
 इक्षुगन्धी० }
 इक्षुसार० ना० पु० रस, मिठाई, गुड़ ।
 इक्षुवाकु० ना० पु० सूर्यवंशियों में प्रथमराजा ।
 [इ]
 इट० ना० स्त्री० माटी की वस्तु जिससे भीति उठाते हैं ।

अव्यवहारित० गु० त्यागित, छोड़ा हुआ ।
 अव्यवहित० गु० मिला, व्यवधान रहित ।
 अव्याप्ति० ना० स्त्री० लक्ष्य में लक्षणका जो नहीं
 जाना, प्रकट में प्रकटतारहित ।

अव्याप्त० गु० विनरीक, मायाजित, रामायण
 यथा - (अद्याह्न गति शम्भु प्रसादा) ।

अशकुन० ना० पु० अपशकुन, बुराशकुन ।

अशकुनी० गु० अपशकुनी, बुरे लक्षणयुत ।

अशक्त० गु० निर्बल, लाचार, असमर्थ ।

अशक्ति० गु० निर्बल, असमर्थता, शक्तिरहित
 देव ।

अशक्त्य० गु० असाध्य, शक्यतारहित ।

अशकं } गु० निर्भय, निडर, वैभ्रौक ।
 अशकां }

अशन० ना० पु० भोजन, खाना ।

अशनि० ना० पु० वज्र ।

अशरण० गु० रचारहित, पनादनही ।

अशास्त्र० गु० जो शास्त्र से बाहर है ।

अशास्त्रीय० गु० जो शास्त्र में उक्त नहीं है ।

अशिव० गु० मंगल रहित, अशुभ ।

अशिष्ट० गु० जिसका व्यवहार निन्दित है ।

अशुक० गु० अशोक, अदुःख ।

अशुचि० गु० अपवित्र, अशुद्ध, नापाक ।

अशुद्ध० गु० अपवित्र, जो ठीक नहीं है, गलती ।

अशुद्धता० ना० स्त्री० अपवित्रता, चूक, भूल ।

अशुभ० गु० अमंगल, जो अच्छा नहीं, ना०

पु० पाप, दोष ।

अशेष० गु० सम्पूर्ण, सारा, समस्त, सब ।

अशोक० ना० पु० वृक्षविशेष, सुख, चैन ।

अशोभा० गु० अनगद, कुरूप, ना० स्त्री०

सुन्दरतारहित, शोभाहीन ।

अशौच० गु० नापाक, अशुद्ध ।

अशम० ना० पु० पत्थर ।

अशमरी० ना० स्त्री० पथरी वा मृत्कृच्छरी ।

अशमभेद० ना० पु० पांशुभेद ।

अश्रद्धा० ना० स्त्री० धिन, चिद, अपिश्रवात ।

अश्रु० ना० पु० आँसू ।

अश्रुपात० ना० पु० आँसू का गिरना ।

अश्रुत्तेपा० ना० स्त्री० श्लेषा, नवांगकृत ।

अश्व० ना० पु० घोड़ा ।

अश्वगन्धा० ना० स्त्री० अश्वगन्ध औषधि ।

अश्वतर० ना० पु० सचर ।

अश्वत्थ० ना० पु० पीपलवृक्ष ।

अश्वपति० ना० पु० वह राजा जिसके पास बहुत

घोड़े वा घोड़े हैं ।

अश्वमेध० ना० पु० यज्ञविशेष यह यज्ञ राजा

धिराज कर सकता है, जो जगत् जीतता है ।

अश्वशुभ्र० ना० पु० कुंवारमास ।

अश्वरक्षक० ना० पु० ताँस ।

अश्ववार० ना० पु० अश्ववार, सवार, घोड़ेवद्ध ।

अश्वशाला० ना० स्त्री० तवेला, घोड़साल ।

अश्वहा० ना० स्त्री० कनैरवृक्ष ।

अश्व० ना० स्त्री० अश्वगन्ध ।

अश्वारूढ० ना० पु० अश्ववार, सवार

घोड़ेवद्ध ।

अश्विनी० ना० स्त्री० प्रथमनक्षत्र ।

अपय० गु० जिसका क्षय नहीं, अमित ।

अपयवट० ना० पु० वह वरगद जो प्रया

में है ।

अपाङ्ग० ना० पु० चतुर्थमास, अपाङ्ग, अमाव ।

अष्ट० ना० पु० अष्ट ।

अष्टकुरीत्सर्व० ना० पु० आठकुरी साँपों का

अर्थात् अनन्त १ वासुकि २ तत्क ३ कर्कोटक ४

शंख ५ कुलिक ६ पद्मक ७ महापद्मक ८

अष्टकोण० ना० पु० आठकोन ।

अष्टचत्वारिंशत्० गु० अठतालीस

अष्टदिशाग्रह० ना० पु० आठों दिशाके अग्रह

अर्थात् सूर्य, शुक्र, मङ्गल, राहु, शनि, चन्द्र

चन्द्रमा, बुध, शुक्र ।

अष्टधातु० ना० पु० आठधातु अर्थात् सोना ।

ईडुवा० ना० पु० शिरपर बोझ रखने का टेकन

जो कपड़ा वा सन मूंजआदिक होता है ।

ईकारान्त० गु० जिस शब्दके अन्तमें ईकार है ।

ईख० ना० स्त्री० ऊख, उखारी, इख ।

ईठ० गु० इष्ट, प्रिय, मित्र, ना० पु० नगनें, देवता ।

ईठि० ना० स्त्री० दोस्ती, प्रीति, सखी ।

ईठि० ना० स्त्री० अपनेको अधिकजानना, हठ ।

ईति० ना० स्त्री० बाधा, दुःख ।

ईद० ना० स्त्री० मुसलमानों और यहूदियों में एक पर्वहोता है रमजान के पीछे, अरबी शब्द है ।

ईदश० गु० ऐसा ।

ईर्ष्या० ना० स्त्री० हिसक, द्वेष, डाह, हसद ।

ईश० ना० पु० ईश्वर, प्रभु, स्वामीविशेष, शिवज, विष्णु, नारायण ।

ईशता० ना० स्त्री० प्रधानता, महत्त्व, माया, सिद्धिविशेष ।

ईश्वर० ना० पु० प्रभु, स्वामीविशेष, परमात्मा, शिवजी, विष्णु, नारायण ।

ईश्वरता० ना० स्त्री० } मायायोगमाया, कु-
ईश्वरत्व० ना० पु० } दत्त ।

ईश्वराराधन० ना० पु० परमेश्वरका भजन ।

ईशान० ना० पु० सदाशिव, ईशानकोण ।

ईशानकोण० ना० पु० पूर्व उत्तर का कोना ।

ईपत्० } गु० थोड़ा २, अल्प ।
ईपद्० }

ईस० ना० पु० ईश, मालिक ।

ईह० } ना० स्त्री० चेष्टा, इच्छा, उत्पन्न ।
ईहा० }

ईक्षण० ना० पु० चक्षु, आंख, दृष्टि ।

(उ)

उच्चाई० ना० स्त्री० } उचापा, उचाति,
उच्चान० ना० पु० } नलदी ।
उच्चाव० ना० पु० }
उच्चाहट० स्त्री० }

उच्चाना० स० क्रि० उँचाकरना, उठाना ।

उडेलना० स० क्रि० धक्कादेकर गिराना, डालना ।

उकठा० गु० सखाकाष्ठ वा वृक्ष ।

उकत० ना० स्त्री० उक्ति, कहन ।

उकताना० अ० क्रि० धराना, धकना, कुदना

उकतारू० ना० पु० उपनाऊ पची ।

उकतारना० स० क्रि० संभालना, पचकरना ।

उकसना० अ० क्रि० उठना, ऊपरकी चढ़ना, वा बढ़ना ।

उकसाना० } स० क्रि० उठाना, चढ़ाना ।
उकसाना० }

उकू० गु० कथित, कहाहुआ ।

उक्ति० ना० स्त्री० कथन, भाषा, चतुराई, कहना ।

उखड़ाना० अ० क्रि० उजड़ना, निजस्थान से हटना ।

उखड़हा० गु० उखड़ाभया ।

उखड़ना० } स० क्रि० उगाड़ना, निजस्थान से
उखाड़ना० } हिलाना ।

उगना० अ० क्रि० उत्पन्नहोना, जमना, बढ़ना ।

उगलना० स० क्रि० मुल में कोई वस्तु डाल कर फिर निकालना ।

उगाल० ना० पु० जो चबाय के मुल में से फेंका ।

उगाहना० स० क्रि० जमझकरना, तहसीलना ।

उगाही० ना० स्त्री० स्याजलेना वा यह रूपया जो महाजन आटके, नव या नव के दश वा दशके ग्यारह, प्रतिमास एक २ रूपया करके लेता है ।

उग्र० गु० क्रीवी, कठोर, भयकर, तेज, ना० पु० श्रीशङ्करजी ।

रूपा, तांवा, पीतला, रांगा, कांसा, लोहा ।
अष्टपञ्चाशत्० गु० अष्टावन ५८ ।
अष्टप्रहर० गु० आठप्रहर, दिनराति ।
अष्टभैरव० ना० पु० आठ भैरव अर्थात् अस्ति-
 तांग रुद्र, चण्ड, उन्मत्त, कौष, कपाली, भीषण,
 काल ।

अष्टम० गु० आठवां ।
अष्टमांश० ना० पु० अष्टवांभाग ।
अष्टमी० ना० स्त्री० आठवी तिथि, अष्टौ ।
अष्टवस्० ना० पु० आठवस् अर्थात् आप, ध्रुव,
 सोम, धर, अनिल, अनल, प्राण, प्रणवन्त ।
अष्टविंशकुलक्षत्र० ना० पु० अष्टविंशकुल-
 क्षत्र अर्थात् काम १ क्रोध २ क्रियाहृत ३ दुर्वा-
 द ४ लोभ ५ तन्मयता ६ अलज्जा ७ अविद्या
 ८ अशीमा ९ आश्रय १० अतिनिद्रा ११
 दुष्टता १२ अदया १३ कुण्ठता १४ दरिद्रता १५
 रोग १६ मलिनता १७ कुसवदान १८ अह-
 भक्ता १९ भोग्यता २० अत्याहार २१ अहङ्कार
 २२ अदृढता २३ कुदान २४ दुर्भावता २५ अम-
 तीति २६ मोह २७ व्यंग्यवाक्यता २८ ।

अष्टविंशति० गु० अष्टविंश २८ ।
अष्टसिद्धि० ना० स्त्री० आठसिद्धि अर्थात् अ-
 शिमा १ महिमा २ गेहिमा ३ लक्षिमा ४ प्राप्ति ५
 प्राकाम्य ६ वशीकरण ७ ईशता ८ ।

अष्टांगप्रणाम० } ना० पु० स्त्री आठ अङ्ग सि
वादराज्य० } प्रणाम अर्थात् उर, शिरः,
 टङ्गि, मन, श्वसन, पद, कर, जानुसे प्रणमकार
 करना ।

अष्टांगयोग० ना० पु० योगके आठअंग अर्थात्
 यम १ संयम २ आसन ३ प्राणायाम ४ अर्थात्
 हार ५ धारणा ६ ध्यान ७ समाधि ८ योग ।

अष्टादश० ना० पु० अठारह १८ ।
अष्टादशपुराण० ना० पु० अठारह पुराण
 अर्थात् भागवत १ मनुस्मृत्य २ मार्कण्डेय ३ मे-
 त्तय ४ वासुदेव ५ ब्रह्म ६ ब्रह्मवैवर्त ७ विष्णु
 वायु ८ वामन ९ बृहदार १० अग्नि ११ नारद १२

पद्म १४ कर्म १५ स्कन्द १६ लिंग १७ नन्द १८ ।
अष्टादशस्मृति० ना० स्त्री० अठारह स्मृति ।
 अर्थात् मनु १ अथि २ विष्णु ३ याज्ञवल्क्य ४
 हारीत ५ उशना ६ अंगिरा ७ आपस्तम्ब ८
 संवत् ९ यम १० कान्यायन ११ बृहस्पति १२
 पाराशर १३ व्यास १४ शत्रुलिखित १५ गो-
 तम १६ वशिष्ठ १७ दत्त १८ ।

अष्टापद० ना० पु० कंचन, सुवर्ण, पशु ।
अष्टाशक्ति० गु० अस्ती ८ ।
असंख्या० } गु० अगणित, वेशुमार, बहुता ।
असंख्यात० }

असंशय० ना० पु० निश्चय, निश्चन्देह ।
असकति० ना० स्त्री० आलस्य ।
असकती० गु० आलसी ।

असगन्ध० ना० पु० औषधविशेष ।
असंगत० गु० भिन्ना, अत्रुचित, अनर्थ ।
असजन० गु० कुपान, नीच, दुष्ट ।
असत्० गु० अतापु, अप्रमां ।

असन० ना० पु० भोजन, रागा, वृक्षविशेष ।
असनि० ना० पु० वज्र ।
असन्तान० गु० पुत्रहीन, निर्देश ।
असन्तुष्ट० गु० अप्रसन्न, धीरजरहित ।

असन्तोष० गु० अधीरजता ।
असंभ्य० गु० जो सभाके योग्य नहीं, दुष्ट, शिष्य,
असंभ्यता० ना० स्त्री० दुष्टता, सङ्गनता
 शिष्यारपन, बहसता ।

असम० गु० जो बराबर न हो, विषम ।
असमंजस० ना० पु० दुविधा, सन्देह, विन,
 लगाव ।

असमय० गु० अकाल, विपत्तिकाल ।
असमर्थ० गु० जो समर्थ न हो, निर्बल ।
असमशर० ना० पु० कामदेव ।
असम्पूर्ण० गु० जो पूरा न हो ।

असम्बन्ध० गु० अनमेल, अनर्थ ।
असम्भव० गु० अनहोना, जो न होसके ।

उप्रगन्धा० ना० स्त्री० अजवायन, सच और
 लहसुन० यु० जिसकी गन्ध कठिन है ।
 उपसेन० ना० पु० राजा कंस का पिता ।
 उघटना० स० कि० किसी पर उपकार करके
 कहना वा बात मारना, ताना देना ।
 उघटना० अ० कि० नंगा होना, खुलना ।
 उघरे० यु० खुले, प्रगटे ।
 उघाटना० } स० कि० नंगाकरना, खोलना ।
 उघारना० }
 उघारी० यु० नंगी, खुली ।
 उचकना० अ० कि० कूदके उठाना, उखलना ।
 उचकाना० स० कि० ऊपर की उठाना वा
 चढ़ाना ।
 उचका० यु० चोर, उठाईगीर ।
 उचटना० अ० कि० अलग होना, बिछुड़ाना,
 न लगना, उलटना, फिसलना ।
 उचरङ्ग० ना० पु० पतंगा ।
 उचरना० अ० कि० बात निकलना, उखलना ।
 उचाट० यु० उदासी, जी न लगना ।
 उचाटना० स० कि० उदासकरना, उखलाना ।
 उचारना० स० कि० उच्चारणकरना, निकलना ।
 उचित० यु० योग्य, ठीक, सुनासिद्ध ।
 उचिलना० अ० कि० फटना, छुटिजाना ।
 उचेलना० स० कि० मिलाई हुई वस्तु को अलग र
 करना; उधेड़ना ।
 उच्च० यु० ऊंचा ।
 उच्चाटना० ना० पु० (जी भड़कना) जी का न
 लगना ।
 उच्चार० ना० पु० पुरीष, मल, पाताना ।
 उच्चारण० ना० पु० शब्दकहना वा निकलना ।
 उच्चारना० स० कि० उच्चारना, बात कहना ।
 उच्चैःश्रवा० ना० पु० सूर्य का घोड़ा ।
 उच्छिन्न० यु० निर्मूल, उखड़ा, खराब ।
 उच्छ्लित० यु० उखलता भया ।
 उच्छिष्ट० ना० पु० जड़नि, धाँसूठा, भोजन
 अवशेष ।

उच्छ्वास० ना० पु० श्वास, धारा ।
 उच्छ्रम० ना० स्त्री० गौद, कनियाँ ।
 उच्छ्रना० } अ० कि० कूदना, उठाना ।
 उच्छ्रलना० }
 उच्छालना० स० कि० कुदना, ऊपर की
 फेंकना ।
 उच्छाह० ना० स्त्री० आनन्द, खुशी ।
 उजड़ना० अ० कि० नाश होना, मिटना,
 भगना, वैरान होगा ।
 उजला० यु० उज्वल, सफेद, निर्मल ।
 उजागर० यु० यशवन्त, चटकीला, सुन्दर ।
 उजाड़० यु० सूना, वनखण्ड, वैरान ।
 उजड़ना० स० कि० सूनाकरना, नाशकरना,
 वैरान करना ।
 उजालना० स० कि० उजाला करना ।
 उजाला० ना० पु० व्योति, तेज, प्रकाश ।
 उजाली० ना० स्त्री० चाँदनी ।
 उजास० ना० पु० उजला ।
 उज्जल० } यु० निर्मल, चोखा, चमकीला,
 उज्ज्वल० } साफ, सुन्दर ।
 उभङ्गति० यु० भाङ्गति, ताकत ।
 उभङ्कना० अ० कि० देखना, स० कि० नि-
 भागना ।
 उठंगन० ना० स्त्री० पीधा विशेष, और नदी जो
 म्वालियर के पास है ।
 उठंगन० ना० पु० ठेकन ।
 उठना० अ० कि० खड़ाहोना ।
 उठथैठ० ना० स्त्री० घबराहट, साधन विशेष ।
 उठवैया० ना० पु० उठानेवाला ।
 उठाना० ना० पु० उठाना, दिखाना ।
 उठाना० स० कि० खड़ाकरना, ऊपर लेना ।
 उठना० अ० कि० भागना ।
 उठान० ना० स्त्री० उठने की चाल ।
 उठाना० स० कि० उठाना, भागाना ।
 उठारु० ना० पु० लुंठरा, बहुत खर्च करवैया ।
 उठु० ना० पु० पत्नी, नक्षत्र, मेघ, मह

असम्मत्त० गु० विक्रम, वेत्सलाह ।
 असह० } गु० जो रहा न जावे, कठिन ।
 असह्य० }
 असमाधि० गु० जो दूर न होसके रामायणे
 यथा- (देखी व्याधि असाधि बड़ि) ।
 असाधु० गु० अधर्मा, दृष्टमति, कर्मना ।
 असाध्य० गु० जो कामसिद्धि न होसके, रोगी
 जो जीवे नहीं ।
 असामर्थ्य० } ना० पु० कुछ सामर्थ्य नहीं, लाचार
 असामर्थ्य० } गु० कुछ सामर्थ्य नहीं रखता ।
 असार गु० छूटा, पोडा, सूता, कच्चा-काठ,
 विनापौरुष, निर्बल ।
 असि० ना० स्त्री० तलवार, अव्य० है, ऐसे ।
 असिद्ध० गु० अनवना, अनपका, जो सिद्ध नहीं ।
 असिधेनुक० ना० स्त्री० छुरी ।
 असिनि० ना० स्त्री० तलवार ।
 असिपत्री० ना० स्त्री० सेंदुड़ ।
 असिपुत्री० ना० स्त्री० छुरी, कटारी ।
 असिदंष्टक० ना० पु० मगर, मच्छ ।
 असोम० गु० सीमारहित अर्थात् अनन्त ।
 अशोश० गु० शिररहित ।
 असीस० ना० पु० आशीर्वाद, दुआ ।
 असु० ना० पु० पंचप्राण, जीव, शोच ।
 असुग० ना० पु० शिरण, बाण ।
 असुर० ना० पु० दैत्य, राक्षस ।
 असुरविनायक० ना० पु० बाणासुर ।
 असुरारि० ना० पु० देवता, श्रीरामकृष्णादि ।
 असुहर० गु० प्राणहर, मारनेवाला ।
 अशुभ० गु० अदृश्य, निरूप ।
 असूया० ना० स्त्री० कलङ्क, दोष ।
 असौ० अव्य० यह वर्ष, इस वर्ष ।
 असौक्य० ना० पु० अशोक ।
 असोची० गु० ज्ञत, जो बिया वा विचारसे
 न होसके, जो पक्षिताने के योग्य नहीं ।
 असोचा० गु० निर्माही, प्रमादी ।
 असोस० ना० स्त्री० सली नदी ।

असौ० अव्य० यह वर्ष, इस वर्ष ।
 असौध० ना० स्त्री० कुवास, बदबू ।
 अस्त० ना० पु० धिपात, छुपना ।
 अस्तव्यस्त० गु० भिन्न भिन्न, उलटपुलट,
 बेमेल ।
 अस्ताचल० ना० पु० वह पर्वत विशेष जहां
 सूर्यनारायण अस्त होते हैं ।
 अस्तित्व० ना० पु० मौजूदगी ।
 अस्थि० ना० पु० हाड, हड्डी ।
 अस्थिमात्र० गु० हड्डीभर ।
 अस्थिर० गु० चंचल, चलायमान ।
 अस्थिरता० गु० स्त्री० चंचलाई, स्थिरताहीन ।
 अस्थिरशुक्ला० } ना० स्त्री० हरसिपाई ।
 अस्थिसंहार० }
 अस्थूल० ना० पु० सूक्ष्म, न्यून ।
 अस्थूलभटा० ना० स्त्री० बड़ीकटाई ।
 अस्मसार० ना० पु० लोहा ।
 अस्वलन्द० } गु० अधीन, अपराधीन जो अपने
 अस्वतन्त्र० } वश में नहीं है ।
 अस्वत्थामा० ना० पु० द्रोणाचार्य का पुत्र ।
 अस्वीकार० ना० पु० नामंजूर, अङ्गीकार नहीं ।
 अस्ती० गु० अस्त ।
 अस्त्र० ना० पु० निपाकी फेंकके मारते हैं यथा
 बाण आदि ।
 अह० ना० पु० दिन, अहंकार, कष्ट ।
 अहं० सर्व, मैं, हम, निजका बोधक ।
 अहङ्कार० ना० पु० गर्व, मद, घमण्ड ।
 अहङ्कारी० } गु० अभिमानी, दम्भी, मयलूर ।
 अहङ्कृत० }
 अहमित० गु० अहङ्कारयुक्त, मयलूर ।
 अहरेणुका० ना० स्त्री० रेणुका,
 पु० रातदि,
 ५० मम,
 ३५
 शब्द

उडुगण० ना० पु० तारागणः ।
 उडुप० ना० पु० घनई, वेडा ।
 उडिया० ना० स्त्री० उडैसादेश की भाषा ।
 उड्डी० ना० स्त्री० नाव ।
 उडैसा० ना० पु० देशविशेष जहाँ श्रीजगन्नाथ
 पुरोत्तम विराजमान हैं ।
 उड्डान० ना० स्त्री० उड्डान, संस्कृत में नुपुसक ।
 उड्डना० स० क्रि० श्रोदना, ना० पु० श्रोदने
 का वस ।
 उड्डाना० स० क्रि० श्रोदनी, दापना ।
 उत० अव्य० ऊपर, उधर, जिस शब्द के प्रथम
 में यह युक्त हो उसका अर्थ अधिक लिया
 जाता है ।
 उतंग० } यु० ऊंचा, रामायणे यथा (अति
 उतुंग० } उतंग जलनिधि चतुपासा) ।
 उतरना० अ० क्रि० नीचे आना ।
 उतला० यु० उतावल ।
 उताना० यु० उलटा, ऊपर की ओर किये गये ।
 उत्तार० ना० पु० नीचे आना, नीचलाना ।
 उतारना० स० क्रि० नीचे लाना, दूर करना ।
 उतारा० ना० पु० डालू, अपमान, छेड़छोटी,
 पारजाना ।
 उतावल० ना० स्त्री० शीघ्रता, जल्दी ।
 उतावला० यु० बेगी, शीघ्र, फुर्तीलाना ।
 उतावली० ना० स्त्री० शीघ्रता, फुर्ती, यु० फु-
 र्तीली ।
 उताहिल० यु० शीघ्र, जल्द ।
 उत्कट० यु० बरजस्तः, उत्ती समय, तेज अतिक्रम
 उत्कण्ठा० ना० स्त्री० अभिलाषा, चाहना ।
 उत्कर्ष० ना० स्त्री० बढ़ाई ।
 उत्कल० ना० पु० उडैसा देश, उडैसा के
 वासी ।
 उत्क्रम० ना० पु० ऊपर चढ़ना ।
 उत्कृष्ट० यु० अच्छा, श्रेष्ठ, उत्तम ।
 उत्तमगन्धा० ना० स्त्री० मालती ।
 उत्तमांग० ना० पु० शिर, शीरा ।

उत्तमाशा० ना० स्त्री० अफ्रीका के दक्षिण
 की अन्तरीप, केपगुडहोप ।
 उत्तर० ना० पु० प्रश्न का बोधक, जवाब
 दक्षिण के सम्मुख की दिशा, राजाविराट का
 पुत्र ।
 उत्तरकेन्द्र० ना० पु० जिस की भास्कराचार्य
 शास्त्री ने निज प्रश्नोत्तर में समुद्र लिखा है, यह
 स्थान अत्यन्त शीत के कारण अगम्य है ।
 उत्तरकोशल० } ना० पु० अवधदेश ।
 उत्तरकोशला० }
 उत्तरखण्ड० ना० पु० उत्तर का देश ।
 उत्तरा० ना० स्त्री० राजाविराट की कन्या जो
 अभिमन्यु को विवाही थी ।
 उत्तराधिकारी० ना० पु० मरने के पीछे जो
 धनाधिकारी ।
 उत्तराफाल्गुनी० ना० स्त्री० नारह्वानक्षत्र ।
 उत्तराभाद्रपद० ना० पु० धन्वीसवां नक्षत्र ।
 उत्तरायण० ना० पु० माघादि-छः मास ।
 उत्तरार्द्ध० यु० पिछिला आधा ।
 उत्तरापाद० ना० स्त्री० इकीसवां नक्षत्र ।
 उत्तराहा० यु० जो उत्तर दिशा का है ।
 उत्तरी० यु० उत्तर का ।
 उत्तरीय० ना० स्त्री० श्रोदनी, रामचन्द्रिकायां
 यथा (पदपत्र की शुभ घंघरी, मणि नीलहा-
 टक से जरी, युत उत्तरीय विचारिके, भुव-
 डारि दी पग डारिके) यु० उत्तर देश का
 पदार्थ वा मनुष्यादि ।
 उत्तरोत्तर० अव्य० आगे आगे ।
 उत्तानपत्र० ना० पु० दोनों अरण्य ।
 उत्तानपाद० ना० पु० राजा विशेष, ध्रुव
 का पिता ।
 उत्ताव० यु० शीघ्र, जल्दी, बेगी ।
 उत्तीर्ण० यु० पार पहुँचा, निर्मुक्त ।
 उत्तु० ना० पु० उन्नति, घुनई बसादिकी ।
 उत्थान० ना० पु० उठान, उद्योग ।

उत्थापन० ना० पु० उठावना, न धपना
उत्थित० गु० उठा हुआ ।
उत्पत्ति० ना० स्त्री० जन्म, पैदायश ।
उत्पन्न० गु० जन्मा, प्रकटा ।
उत्पल० ना० पु० कमल, कोई ।
उत्पाटन० ना० पु० जड़समेत उखाड़ना ।
उत्पात० ना० पु० अशुभ का सूचक, उपद्रव ।
उत्पादन० ना० पु० जन्मावना, पैदाकरना ।
उत्प्रेक्षा० ना० स्त्री० टीस, राक्षता ।
उत्सर्ग० ना० पु० देवतादि के लिये द्रव्य का त्याग, वितरण, किसी प्रकार की आज्ञा ।
उत्सव० ना० पु० आनन्द, यज्ञ, अर्पण ।
उत्साह० ना० पु० उद्योग, आनन्द ।
उधपन० ना० पु० उखाड़ना, उठाना ।
उधपना० स० कि० उठाना, उखाड़ना ।
उधपित० गु० उठाया गया ।
उधलना० अ० कि० उलटना ।
उधलपुथल० गु० उलट पुलट ।
उधला० गु० झिल्ला, थोड़ा गहिरा ।
उदक० ना० पु० जल, पानी ।
उदघाटी० ना० स्त्री० उदयता, उदयाचलकी घाटी ।
उदधि० ना० पु० समुद्र ।
उदधिनन्द० ना० पु० चन्द्रमा ।
उदनपान्थ० ना० पु० पियावासा, पीथा ।
उदन्वान्० ना० पु० समुद्र, सागर ।
उदमाते० गु० मत्त, मस्त, मलमूर ।
उदय० ना० पु० प्रकटना, रोशनी, उगना ।
उदयगिरि० ना० पु० पर्वत विशेष जहाँ उदयाचल० सुभाँदय होता है ।
उदयास्त० ना० पु० सुभाँदय से सुभाँसावक; उदयाचलसे अस्तावलातक ।
उदर० ना० पु० पेट ।
उदरनि० ना० पु० पेटका बहुवचन भाषा में ।

उद्वृद्धि० ना० पु० जलन्धर रोग विशेष ।
उदरे० गु० पेट ।
उदात्त० ना० पु० ऊँचा स्वर ।
उदान० ना० पु० पंच प्राणमेंसे एक ।
उदार० गु० पु० दाता, सखी ।
उदारता० ना० स्त्री० दातापन, दातव्यता ।
उदास० ना० पु० एकान्त, गु० निराशा, निमोह, दुःखसहसमानज्ञाता, मनमलिन ।
उदासी० ना० पु० एकान्ती, ना० स्त्री० मलिनता, गु० मनमलिन, एक प्रकार के सन्ती का धर्म यथा नानकपंथी, जो मनुष्य शशुभिय रहित संसारमें विचरै ।
उदासीन० गु० जिसका कुल शील नहीं जाना अर्थात् पाहुन, समानवर्ती, गृहस्थाश्रमरहित ।
उदाहरण० ना० पु० द्यन्त, मिसाल ।
उदित० आविर्भूत, प्रकाशित, रोशनी ।
उदीची० ना० स्त्री० उत्तर दिशा ।
उदीच्या० ना० पु० ऐरावती नदी के उत्तर और पश्चिम का देश ।
उदुम्बर० ना० पु० गेलारवृक्ष, तांबाधातु ।
उदुखल० ना० पु० गुगल ।
उदुगार० ना० पु० डकार, वमन, बर्द ।
उदुगारवाची० गु० हर्ष दुःखादि भाव वताने हारा ।
उदुघाटन० ना० पु० कूप से पानी निकालने के लिये डोल रस्सी, चरसा खुलवाया ।
उदाला० ना० पु० कचनार ।
उदालक० ना० पु० एकमुनिका नाम है ।
उदिप्रलोहित० ना० पु० सालचंदन ।
उदीप्त० गु० प्रज्वलित, अतिप्रकाशित ।
उद्देश० ना० पु० अन्वेषण, प्रीतिकी कामना ।
उद्देश्य० निमित्त, व्याकरण में जिसका समाचार कहाँगिये ।
उद्वेग० गु० कुचाल, अभिमान, ना० पु० राजका मख ।
उद्धार० ना० पु० अरुण, द्राग, रक्षा, छुटी ।

कमल० ना० पु० पद्म ।
 कमलज० } ना० पु० ब्रह्मा ।
 कमलभव० }
 कमलवायु० ना० पु० काँवर, रोगविशेष निमित्त
 देह धीर आँही पीली होजाती है ।
 कमला० ना० स्त्री० लक्ष्मी, धी ।
 कमलाकर० ना० पु० तालाव ।
 कमलासन० ना० पु० श्रद्धा ।
 कमलाक्षिणी० ना० स्त्री० सरस्वती ।
 कमलाक्ष० ना० पु० कमलनयन ।
 कमलिनी० ना० स्त्री० प्रथिनी ।
 कमाई० ना० स्त्री० उपार्जन, मासि, पैदायश ।
 कमाऊ० गु० उद्यमी, यत्नी, देहाविशेष पु० ।
 कमाना० स० कि० उपार्जन करना, पैदा
 करना ।
 कमेरा० गु० परिश्रमी, मेहनती ।
 कमोदिनी० ना० स्त्री० कमलविशेष स्त्री उत्तको
 लिखता है अर्थात् पूल ।
 कमोरी० ना० स्त्री० मटकी, हंडी, दुग्धादि ।
 कम्प० ना० पु० कपकपी, धरधराहट ।
 कम्पना० अ० कि० कांपना, धरधराना ।
 कम्पवायु० ना० पु० रोगविशेष निमित्त तारों
 शरीर कम्पा करता है ।
 कम्पाहा० गु० धरधराहा ।
 कम्पित० गु० कांपता भया ।
 कम्पनी० ना० स्त्री० साहिब लोगों के बहुतों का
 मेल या सभा, अंगरेजी शब्द ।
 कम्बल० ना० पु० उनका वस्त्र ।
 कम्बु० ना० पु० शैल, हाथी, कम्बापुर ।
 कम्बुज० ना० स्त्री० हरसिंघाट ।
 कम्बुमालिनी० ना० स्त्री० शैलहोली ।
 कम्बोज० ना० पु० घोडा, रामाविशेष ।
 कम्भारी० ना० स्त्री० शीपवि विशेष ।
 कम्बल० ना० पु० रोम वस्त्र, कम्बल ।
 कर० ना० पु० हाथ, राजधन, महमूल, चिन्हा
 पुष्कर, विपया ।

करक० ना० स्त्री० पीडा, दर्द ।
 करकस० गु० कर्कशा, लडाकू ।
 करका० ना० पु० श्रोता, हिमोपल ।
 कर्कशा० ना० स्त्री० लडाकी ।
 करज० ना० स्त्री० अंगुली, नस ।
 करट० ना० पु० कौया ।
 करटी० ना० पु० रांगा, जा० स्त्री० कर्कपत्नी ।
 करण० ना० पु० साधन, करविशेष ।
 करणी० ना० स्त्री० कर्म, किया, थवई का एक
 - हथियार कररा सम्बन्धी ।
 करणीय० गु० अवश्य कर्तव्य ।
 करतल० ना० पु० हथेली ।
 करतलगत० गु० हाथमें ।
 करताल० } ना० स्त्री० नागा विशेष काठका
 करताली० } हथेली की ताल ।
 करत्ति० ना० स्त्री० कर्त्तव्य, जाल, करणी ।
 करतोया० ना० स्त्री० नदी विशेष जो बंगाले
 में है ।
 करना० स० कि० बनाना, रचना ।
 करनी० ना० स्त्री० करणी, कर्त्तव्य ।
 करपल्लव० ना० पु० अंगुली वा उत्तका छोर ।
 करपृष्ठ० ना० स्त्री० हाथकी पीठ ।
 करयी० ना० स्त्री० स्वाराका पीया ।
 करम० ना० पु० हाथी ।
 करमप्रिय० ना० पु० पल्लव ।
 करभूषण० ना० पु० कंकणादि आभरण ।
 करम० ना० पु० कर्म ।
 करमदो० ना० पु० बहाकरोदा ।
 करमूल० ना० पु० कम्बा ।
 करवार० गु० अल्पपातादि विभ्र प्रभविस्त
 यथा; नन्द यशोमति भाग भडेरी; सुनकी करवार
 टो करेरी ।
 करवाल० ना० पु० तलवार ।
 करवीर० ना० पु० कनैलवृक्ष विशेष ।
 करवीरक० ना० पु० कनैलवृक्ष ।
 करसह० ना० पु० नख, नामून ।

उपाधी० शु० अधर्मी, उपद्रवी, अन्यायी ।
 उपाध्या० ना० पु० ब्राह्मणजाति विशेष ।
 उपाध्याय० ना० पु० अध्यापक, पढ़ानेवाला ।
 उपाना० स० कि० सिरजना, उलाञ्च करना, उ-
 पार्जन करना ।
 उपानत्० ना० पु० जूता ।
 उपान्त्य० ना० पु० अन्त्य अक्षर का पूर्ववर्षादि ।
 उपाय० ना० पु० उद्योग, यत्न, रीति तद्वीर ।
 उपायी० शु० उद्योगी, यत्नी ।
 उपाज्जन० ना० पु० विद्या वा धनादिकाः संग्रह,
 कमाई, प्राप्त ।
 उपाजित० शु० जो प्राप्त भया, कमाया ।
 उपालम्भ० ना० पु० उलाहना ।
 उपास० ना० पु० व्रत, उपवास ।
 उपासक० } शु० जो उपासना करे, सेवक ।
 उपासा० }
 उपासना० ना० स्त्री० सेवा, टहल, अनुवृत्ति देवा-
 दि विषय भावना विशेष ।
 उपास्य० शु० उपासना के योग्य, आरथी ।
 उपेक्षा० ना० स्त्री० धोखा, त्याग ।
 उफना० } अ० कि० उबलना, जोशखाना ।
 उफलाना० }
 उफाल० ना० पु० कूदन, कूदना, कूदना ।
 उवकना० अ० कि० वमन होना, जीमलकनाकी ।
 उवकाई० ना० स्त्री० वमन जीका मलक ।
 उवकाई० अ० कि० वमन, करना, उबलकरना ।
 उवटन० ना० पु० वस्तु आटा वा बेसन वा सर-
 सों गिरसे देहका मेल छुड़ाने है ।
 उवटना० स० कि० उवटन लगाना ।
 उवरना० अ० कि० बचना ।
 उवरा० शु० बचा ।
 उवलना० अ० कि० खलपलाना, सीजना ।
 उवाल० ना० पु० खलपलाइ के पीछे उफाना ।
 उवसना० अ० कि० सड़ना, कुगर्ध करना ।

उवसाना० स० कि० सड़ना ।
 उवारना० स० कि० बचाना, छुड़ाना ।
 उवारु० ना० पु० बचाव, छुड़कारा ।
 उवलाना० स० कि० पकाना, उसीजना ।
 उमक० ना० पु० रीझ, भालू ।
 उमय० सर्व० शु० दो ।
 उमरना० अ० कि० उठना, निकलना, उमड़ना ।
 उमार० ना० पु० उठान, फुलावट, गुमड़ा ।
 उमारना० स० कि० फूलना उठाना ।
 उमौ० ना० पु० दोनों ।
 उमगा० शु० फूलना, उठा ।
 उमगाना० स० कि० फूलाना, उठाना, मन
 बढ़ाना ।
 उमंग० ना० स्त्री० मंगलता, धुन, तुष्या, चाह ।
 उमंगना० अ० कि० उमंगसे आगमना ।
 उमंगी० शु० धुनी, अभिलाषी ।
 उमण्डना० } अ० कि० उभरना, गिरना ।
 उमड़ना० }
 उमरी० ना० स्त्री० गुलरवृक्ष ।
 उमड़ना० अ० कि० उमड़ना ।
 उमा० ना० स्त्री० पार्वती, भवानी ।
 उमानाथ० ना० पु० श्रीमहादेव जी ।
 उर० ना० पु० छाती, गोंदी, हृदय ।
 उरग० ना० पु० साँप, सर्प ।
 उरगना० स० कि० सहना, जागवना, राम-
 चंद्रिकायां यथा (आइ भरथ कहा धौ करे जिय
 भाय गुनो जो दुख देय तो ले उरगो नातसना) ।
 उरग्र० ना० स्त्री० भैंसी ।
 उरगाइ० } ना० पु० गरुड, मयूर और त्योंसा ।
 उरगारि० }
 उरफना० अ० कि० अटकना, लगना ।
 उरला० शु० श्पेरका ।
 उरु० ना० स्त्री० जयका उपरभाग, शु० बहुत ।
 उरु० ना० स्त्री० भैंसी ।

करसम्पुट० ना० पु० हाथजोड़न ।
 करहाट० ना० पु० सिफाकन्द, मैनफल ।
 करहाटक० ना० पु० सिफाकन्द ।
 करान्त० ना० पु० आरा ।
 करान्ती० गु० आरेसे चारनेहारे ।
 कराना० स० कि० बनाना, रचना ।
 करायल० ना० पु० भोजनविशेष ।
 करार० ना० पु० किनारा, गु० भयङ्कर, कराल ।
 करारा० ना० कड़ारा, किनारा ।
 कराल० गु० भयङ्कर, टेढ़ा, ना० श्री० विडंग
 औषधि ।
 कराली० ना० श्री० भयङ्कर, कठिन ।
 करावलि० ना० श्री० किरणों का समूह ।
 कराहना० थ० कि० संसंभरना, दुःखकरना ।
 करिया० ना० पु० केवटों मंसाहारे ।
 करिल० ना० पु० मटार, जिंसका शिर देखा
 नांसका नया पौधा ।
 करी० ना० पु० हाथी ।
 करीर०) ना० पु० वृक्ष-विशेष जो कोंटों-
 करीरक०) वाला होता है ।
 करील०)
 करीप० ना० पु० गोबर की मांदि वा सुत्केहड
 और कोई २ कोयला बताते हैं ।
 करुणा० ना० श्री० दया, किमलती ।
 करुणाकर० गु० दयाकर, दयाकी राशि, को-
 मलता की खानि ।
 करुणाकरना० स० कि० गुण कृदिकर, रोना,
 दया करना ।
 करेरा० गु० दूध, कड़ा, बलवान् ।
 करेरी० ना० श्री० दूध, कड़ा, बलवान् ।
 करेला० ना० पु० तरकारी विशेष ।
 करेत० ना० पु० हाथ-विशेष ।
 करोड़० गु० सैलाल १०००००००० ।
 करोड़ा० ना० पु० उगाहनेवाला, प्रधान ।
 करौदा० ना० पु० वृष वा उसकी फलविशेष ।

कफ० } ना० पु० चींगीरासि विशेष ककड़ा,
 कफट० } गेंगदा ।
 कफट्टुक्किका० ना० श्री० ककरासिनी ।
 कफटा० ना० पु० बेरफलविशेष ।
 कफटाख्या० ना० श्री० ककरासिनी ।
 कफटी० ना० श्री० ककड़ी, पिंडलचूर्ण ।
 कफन्धु० ना० पु० परका वृक्ष का फल ।
 कफल० ना० पु० अजमोद, सूखवामुन ।
 ककेश० गु० कड़ा, कठोर, लड़ाक, असेह ।
 ककदाळुदा० ना० श्री० केतकी ।
 ककार० ना० पु० कुम्हड़ा, रामभा ।
 ककोंज० ना० पु० घोड़ा ।
 ककोंटक० ना० पु० मुख्य-संघ ।
 ककोंटिका० ना० श्री० ककोंड़ी औषधि ।
 कचूर० ना० पु० कचूर ।
 कचूरिका० ना० श्री० हाथकी चूड़ी, कचूरी ।
 कछी० ना० पु० ककगीर, चमचा ।
 कछी० ना० श्री० छोटी कछी ।
 कर्ण० ना० पु० कान, पंतवार, सूर्यसूत, कैमान
 का रोद, वतर ।
 कर्णधार० ना० पु० मांझी, बदनदार ।
 कर्णकूल० ना० पु० कानका श्लेषविशेष ।
 कर्णवेधन० ना० पु० कानका धेदना, कनधेदन ।
 कर्णवेष्टन० ना० पु० कुंठल जो कानमें पहिनेते है ।
 कर्णाट० } ना० पु० दक्षिण भरतखण्डका
 कर्णाटक० } एक भाग विख्यात ।
 कर्णालम्बित० गु० कानतक लाचना ।
 कर्णिकार० ना० पु० किंदवाली औषधि ।
 करणी० ना० श्री० किया, कैम, कैरण, जात ।
 कर्त्तव्य० ना० पु० कर्त्तवित, करन के धीमित्र ।
 कर्त्तव्यता० गु० श्री० चाली, कर्त्तवित ।
 कर्त्ता० } ना० पु० किया में प्रधान होता है,
 कर्त्तार० } करेवाला, सिरजनहारे, प्रभु, भक्तो
 विशेष ब्रह्मा ।
 कर्तृकर्मभाव० ना० पु० कर्त्ता और कर्म का
 सम्बन्ध ।

उरि० ना० स्त्री० सहरी, नीची ।
 उर्द० ना० पु० माप, अन्नविशेष ।
 उर्वरा० ना० स्त्री० उपजाऊ भरती, खेती के योग्य ।
 उर्विज० ना० पु० जो भरतीमें उपजाहे, मंगल ।
 उर्विजा० ना० स्त्री० धीजानकीनी ।
 उर्वशी० ना० स्त्री० मुख्यअक्षरा, मनवर्ती, धुक-धुकी, आभरण ।
 उर्वी० ना० स्त्री० पृथ्वी, धरती ।
 उरमण्डन० ना० पु० कुच, स्तन, चूँची ।
 उरहन० ना० पु० गिखा, शिकायत ।
 उरोज० ना० पु० कुच, स्तन ।
 उवभनि० ना० स्त्री० फँसाव, अटकाना ।
 उवभना० ध० कि० फँसाना, लपटना, स० कि० भगड़ना ।
 उवभाना० स० कि० फँसाना, अटकाना, भिड़ाना, लपटना ।
 उलभेडा० ना० पु० उलभन, फँसाव ।
 उलटना० स० कि० पलटना, फेरना, अ० कि० औंधा होना, उलटिजाना ।
 उलटा० गु० औंधा, पलटा ।
 उलटाना० स० कि० औंधाना, पलटना ।
 उलटापुलटा० गु० गटपट, नीचेऊपर ।
 उलंधना० अ० कि० सहराना ।
 उलथा० ना० पु० उल्था, तर्बुसा, रागिनी विश-
 शेष, नृत्यभेद ।
 उलहना० ना० पु० दोष, निन्दो, गिखा, अ० कि० उगना, सहलहाना ।
 उलाहना० ना० पु० गिखा, शिकायत ।
 उलक० ना० पु० उल्लू, दिवान्ध, बूधपत्नी ।
 उलखल० ना० पु० खोखरी ।
 उलूपी० ना० स्त्री० मङ्गली, मधुवाहनकी माना ।
 उल्का० ना० पु० लूका, अग्नि या तारा जो आकाश से गिरता है वा दीपक का फूल ।
 उल्कापात० ना० पु० ताराछटना, लूकेगिरना, उपद्रवीय कारण होना, आश्चर्य ।

उल्या० ना० पु० उल्था, तर्बुसा, नृत्यविशेष ।
 उलमुक० ना० पु० लूरा, कोयल, जलीलकड़ी ।
 उल्लंघन० ना० पु० अन्वया, वा-भंग करना वा न मानना, लांघिजाना ।
 उल्लाला० ना० पु० छन्दविशेष ।
 उल्लास० ना० पु० मेल, लेश ।
 उल्लू० ना० पु० पक्षीविशेष, मूर्ख, अहमक ।
 उल्लूपन० ना० पु० मूर्खता, अहमकी ।
 उशीर० ना० पु० वृषविशेष की जड़ जिस में गन्धि होता है ब्रस ।
 उशाना० ना० पु० शुक्राचार्य, स्मृतिविशेष ।
 उषू० ना० पु० ऊट ।
 उष्ण० ना० पु० गर्म, तप, तपन, गरमी ।
 उष्णकटिबन्ध० ना० पु० पृथ्वी का मध्यस्थान अर्थात् मध्यरेखा के उत्तर २३ $\frac{1}{2}$ अंश और दक्षिण २३ $\frac{1}{2}$ अंशतक ।
 उष्णज० ना० पु० वनस्पति जो पृथ्वी पर उ-
 गते हैं ।
 उष्णीप० ना० पु० पगड़ी, मुकुट ।
 उसघा० अ० कि० उवलना, पकना ।
 उसरना० अ० कि० टलना, पीटदेना ।
 उसाना० स० कि० उवालना, बुरकाना ।
 उसारा० ना० पु० ओसारा, देवदी ।
 उसास० ना० पु० श्वास, दम ।
 उसासी० ना० स्त्री० फुरसत, कल ।
 उसाहि० गु० कुतमय, वैमौसम ।
 उसीजना० स० कि० उवलना ।
 उसीसा० ना० पु० सिरहाना, तकिया ।
 उस्तर० गु० सैत विनमोल ।
 उहरना० कि० बैठना, दबना ।
 (ऊ)
 ऊंघ० ना० स्त्री० सोवना, रूपकी, नदि ।
 ऊंघना० अ० कि० नौदधाना, रूपकी, अना ।
 ऊंधाई० ना० स्त्री० ऊंघ ।
 ऊंचा० गु० उच, मलद ।
 ऊंड० ना० पु० पशुविशेष ।

कर्तव्यं ना० पु० कर्ताका धर्म अतः कर्तव्यं
 कर्तव्यप्रधानं ना० पु० कर्तव्यप्रधानं प्रथमः कर्त्ता
 प्रधानः है।
 कर्तव्याचक० य० नित प्रथमं कर्त्ताः प्रायान्वित
 कर्त्तव्यं ना० पु० कर्त्तव्यं कर्त्ताः प्रायान्वित
 विरोधः ।
 कर्त्तव्यमक० ना० पु० कर्त्तव्यं कर्त्ताः प्रायान्वित
 कर्त्तव्यनी० ना० पु० कर्त्तव्यं कर्त्ताः प्रायान्वित
 बांधते हैं ।
 कर्त्तव्यी० ना० पु० कर्त्तव्यं कर्त्ताः प्रायान्वित
 द्विकः इति निषेधः ।
 कर्त्तव्यस्त० ना० पु० कर्त्तव्यं कर्त्ताः प्रायान्वित
 कर्त्तव्यर० ना० पु० कर्त्तव्यं कर्त्ताः प्रायान्वित
 कर्म० ना० पु० द्वितीयकारकं कामः भाग्यः प्रारब्ध
 शास्त्रविहित जप यज्ञादि ।
 कर्मकर० य० सेवक, नौकर ।
 कर्मकारण० ना० पु० जप यज्ञादि ।
 कर्मकारक० ना० पु० कारकविशेषः ।
 कर्मच्युत० य० कामसे त्रस्त, क्रियावधः ।
 कर्मनाशा० ना० पु० नदीविशेषः, जो कुम्भी
 और गंगा के मध्य में है ।
 कर्मप्रधान० य० कर्म मुख्य, निरस्त कर्त्ता ।
 कर्ममोग० ना० पु० मारुत का भोग और
 तपस्या, पत्नी विशेषः ।
 कर्मरङ्ग० ना० पु० कर्मरङ्ग ।
 कर्मकाव्य० य० नित क्रिया पदका कर्म विशेषः
 शब्दः ।
 कर्मवाचक० य० कर्मवाचक ।
 कर्मविपाक० ना० पु० कर्म का कलः अत्र
 विशेषः ।
 कर्मसाक्षी० ना० पु० सरतः ।
 कर्मोद्यमी० य० जपतपिया भाग्यवान्, दैवगतः
 कर्मर० ना० पु० वांस ।
 कर्मिणी० ना० पु० कामका, जंघा ।
 कर्मि० ना० पु० कर्मिका कलेवाला ।
 कर्मन्द्रिय० ना० पु० शब्दां निरस्तं कर्म

करते हैं, वह भांचे हैं अर्थात् युदा, लिग, हाथ,
 पांव, मृत ।
 कराना० अ० कि० कर्त्तव्यनाम ।
 कर्त्तक० य० कर्त्तव्यं कर्त्ताः प्रायान्वित
 कर्त्तव्यं ना० पु० निराचर, कन्यादना ।
 कर्त्तव्यर० ना० पु० स्वर्ण, शकं ।
 कर्त्तव्यं ना० पु० प्रमाण, की, धर ।
 कर्त्तव्य० ना० पु० संच ।
 कर्त्तव्यफल० ना० पु० वेदः ।
 कर्त्तव्यी० ना० पु० शी, उल्लाह ।
 कर्त्तव्यित० य० संचाग्या ।
 कर्त्तव्यं ना० पु० शी, चैन, सुख, यन्त्र य० अत्यन्त
 सुन्दर, मीठा, मधुरशब्द, अर्थात् पहिला वा
 पहिला दिन ।
 कर्त्तव्यकण्ठ० ना० पु० कौमुल पर्वी ।
 कर्त्तव्यकृत्ता० ना० पु० नगर विशेषः ।
 कर्त्तव्यकल० ना० पु० कलाहल, शोर, भगवा ।
 कर्त्तव्यकांची० ना० पु० नगर विशेषः ।
 कर्त्तव्यक० ना० पु० अर्थात्, चिक, दोष ।
 कर्त्तव्यका० य० दापी, पापी ।
 कर्त्तव्यकिनी० ना० पु० दुषिता, अर्थात् किनी,
 जिसको कर्त्तक लगे ।
 कर्त्तव्यधौत० ना० पु० साना, चादी ।
 कर्त्तव्यप० ना० पु० रंग, निरस्त बाल ।
 कर्त्तव्यपना० अ० कि० कुदना, इन्द्रित्तोना, कुल-
 पकरना, माही लगाना ।
 कर्त्तव्यपाना० अ० कि० कुदना, इन्द्रित्तोना, कुल-
 पकरना, माडीलगवाता ।
 कर्त्तव्यम० ना० पु० हाथी, कल्प, उत्तलवासां ।
 कर्त्तव्यम० ना० पु० लेखनी यह अर्थात् शब्द है ।
 कर्त्तव्यमलाना० अ० कि० कुलपुलाना ।
 कर्त्तव्यर० ना० पु० कर्त्तव्य, कोकिला ।
 कर्त्तव्यबल० ना० पु० कर्त्तव्य, तोतरी बाते ।
 कर्त्तव्यचिक० ना० पु० रंगिया पत्नी ।

ऊटकटारा० ना० पु० भरमोड़ ।

ऊटकटीला० ना० पु० पीधा विशेष ।

ऊकारान्त० गु० जिस शब्द के अन्त में ऊ-
कार है ।

ऊख० ना० स्त्री० गन्ना वा गन्नोंका खेत ।

ऊखल० ना० पु० बड़ी ऊखली ।

ऊखाड़ी० ना० पु० गन्नों का खेत ।

ऊत० ना० पु० मनुष्य जो संतानहीन मरे,
विरोध, अविवाहित, अतिदुष्ट वा मूर्ख ।

ऊतर० ना० पु० उत्तर, जवाब ।

ऊत्क्रम० गु० विपरीत क्रम, विना मिलान,
बेसिलसिलः ।

ऊदयिलाव० ना० पु० जलजंतु विशेष ।

ऊदा० गु० भूरा ।

ऊदाई० } ना० स्त्री० कपिल भूरापन ।
ऊदाहट० }

ऊधौ० ना० पु० श्रीकृष्ण का एक सखा ।

ऊन० ना० स्त्री० भेड़ी आदि के बाल, थोड़ा,
न्यून ।

ऊनविंश० } ना० पु० उन्नीस ।
ऊनविंशति० }

ऊना० ना० पु० सप्तविंश, धौप ।

ऊनी० गु० जो ऊनसे बना है ।

ऊपर० ना० पु० ऊपर ।

ऊपरिस्थ० गु० ऊपर टहरा भया ।

ऊवट० गु० आषट, अगम्य, कुमार्ग ।

ऊमरि० ना० स्त्री० गूलरिका वृक्ष ।

ऊर्ज० ना० पु० कातिकमास ।

ऊर्ण० ना० पु० मेघादि के लोम, ऊन ।

ऊर्णनाभि० ना० स्त्री० मकड़ी ।

ऊर्णायु० ना० स्त्री० भेड़ी ।

ऊर्ध्व० गु० ऊपर ।

ऊर्ध्वकरंडा० ना० स्त्री० बड़ी सतावरि ।

ऊर्ध्वतिरु० ना० पु० चिरायता ।

ऊर्ध्वपुण्ड० ना० पु० वैष्णवीनिलक ।

ऊर्ध्वरेता० ना० पु० संन्यासी, ऋषि और वि-
तन्द्रिय, जिसका सौप्रसंग में काम पतन न हो ।

ऊर्ध्वश्वास० } ना० पु० ऊपरकी श्वासा ।
ऊर्ध्वसास० }

ऊर्ध्व० अर्ध्व० ऊपर ।

ऊर्मिला० ना० स्त्री० संज्ञा विशेष ।

ऊलुआ० ना० पु० तृण विशेष ।

ऊपण० ना० पु० कार्त्तमिरच और पीपरामूल ।

ऊप्मा० ना० स्त्री० गर्मी, क्रोध, रोष ।

ऊपर० ना० पु० ऊसर ।

ऊपरपा० ना० पु० खरलोन ।

ऊपा० ना० स्त्री० बाणासुर की कन्या ।

ऊपाकाल० ना० पु० प्रातःकाल, तड़का ।

ऊसर० ना० पु० वह धरती जिसमें अन्न आदि
उत्पन्न नहीं होता है ।

ऊह० ना० पु० तक ।

(ऋ.)

ऋक्० } ना० पु० प्रथम वेद ।
ऋग्० }

ऋकारान्त० गु० जिस शब्द के अन्त में ऋ-
कार हो ।

ऋचा० ना० स्त्री० वेदके मंत्र ।

ऋजु० गु० सरल, सीधा ।

ऋजुभुज० गु० सीधरेखा वा भुजा मेंड़ ।

ऋजुभुजक्षेत्र० ना० पु० वह क्षेत्र जो कई
सूधी रेखाओं से घिरा हो ।

ऋण० ना० पु० उधार, कर्तव्य ।

ऋणक० गु० कर्जदार ।

ऋणिया० गु० धरता, करजी ।

ऋणी० पु० कर्जदार ।

ऋतु० ना० स्त्री० वसंतादि ऋः, अर्थात् वसंत ऋः,
श्रीष्म २, वर्षा ३, शरदः ४, हेमन्त ५, शिशिर ६,
और रजः समय, मीसम ।

ऋतुमती० ना० स्त्री० रजस्वला, कपड़ों से ।

ऋतुराज० ना० पु० वसंत बहार ।

कलश० ना० पु० पद जो विवाह आदिमें स्थापित करते हैं, पड़ा, गगरा ।
 कलस० ना० पु० शूल, कलरा ।
 कलसी० ना० पु० छोटकलश; गगरी ।
 कलह० ना० पु० विरोध, लड़ाई; भगडा ।
 कलहंस० ना० पु० रानहंस, मैलाहंस ।
 कलहा० } यु० लड़ाका, भगडालू ।
 कलदारा० }
 कलही० ना० स्त्री० कर्कशा, लड़ाकी ।
 कलत्र० ना० स्त्री० पत्नी, स्त्री विवाहिता ।
 कला० ना० स्त्री० सीलहवां, अंश, डाट ।
 कलाई० ना० स्त्री० पहुंचा, रंगाघृत ।
 कलावत० ना० पु० गवैया, गायक ।
 कलाद० ना० पु० सुनार जाति, यथा नाडीभूमः ।
 स्वर्णकारः कलादोषमकारकः रत्नमरः ।
 कलाधर० ना० पु० चन्द्रमा, नृत्यक, बुहुभी ।
 कलाना० स० कि० भुनाना ।
 कलानिधि० ना० पु० चन्द्रमा ।
 कलाप० ना० पु० समूह, व्याकरण विशेष शृणु०
 तर्कश, आभरण, चन्द्रमा, दुःख, हरिहर भूवन
 भौरों का समूह, आम विशेष ।
 कलापी० ना० पु० मयूर, मोर ।
 कलापशाक० ना० पु० मटरका साग ।
 कलार० } ना० पु० कलवार, सूडी ।
 कलाल० }
 कलि० ना० पु० चौभायुगजो ४६४००० वर्ष का
 होता है वैदिक समय का नाशक; समय कलि-
 युग, युद्ध, पाप, केश, सुमी, तर्कश ।
 कलिकवि० ना० पु० कालिदासादि ।
 कलिका० ना० स्त्री० सरफोका, फली, विना फू-
 लाफूल ।
 कलिकारी० ना० स्त्री० कलिवहारी ।
 कलिंग० ना० पु० इन्द्रयव, तरबूज, कटकजका
 पीधा, देश विशेष, राना विशेष ।
 कलित० यु० बदताभयाः छन्द ।
 कलिद्रुम० ना० पु० चहेरा ।

कलिन्द० ना० पु० तरबूज पर्वत विशेष ।
 कलिमल० ना० पु० पाप, दोष ।
 कलिमलसरि० ना० स्त्री० कर्मनाशानदी ।
 कलियाना० थ० कि० कली निकलना; पूल
 कलिल० ना० पु० केश, संकट, दुःख ।
 कली० ना० स्त्री० कलिका, परी ।
 कलुप० ना० पु० पाप, दोष; युनाई ।
 कलेऊ० ना० पु० नासी रसीई, प्रातःकाल में
 थोडामोजन ।
 कलेजा० ना० पु० अंग विशेष; सुर्मापन;
 हस ।
 कलेवर० ना० पु० देह, तन ।
 कलेवा० ना० पु० कलेऊ चह जो विवाह
 दूल्हाको खिलाते हैं ।
 कलेश० ना० पु० केश ।
 कलोर० ना० पु० थोसर, नंदि नाय ।
 कखोल० ना० स्त्री० खेल, भगनता ।
 कलकी० ना० पु० दशवां अयतार, श्लेष्मान
 जो कलि के अन्त में सम्भल में होगा ।
 कल्प० ना० पु० ब्रह्माका दिन राति, प्रल
 कल्पवृक्ष, सामर्थ्य, विचार, रचना, बदल
 शास्त्र विशेष ।
 कल्पतरु० ना० पु० कल्पवृक्ष ।
 कल्पना० थ० कि० खेदित होना, मान ले
 फर्ज करना, तर्क, लालसा, फण ।
 कल्पान्त० ना० पु० कल्पका अन्त, क्यमित ।
 कल्पित० यु० रचित, विचारित, मानाहुआ ।
 कल्प्याण० ना० पु० कुशल, मंगल; सवती ।
 कल्हर० यु० ऊसर ।
 कल्लाना० थ० कि० जलनि पड़ना, पिराना ।
 कल्लोलिनी० ना० स्त्री० तरंगपुत ।
 कवच० ना० पु० किल्लम, बल्लर, रत्नक, अ
 विशेष ।
 कव्य० ना० पु० छन्द विशेष ।
 कवर्ग० ना० पु० ककारादि पंच अक्षर ।
 कवरी० ना० स्त्री० केशपारा, बेणी, बावरी ।

श्रद्धि० } ना० स्त्री० पार्वतीजी, श्रीपति, पौ-
श्रद्धि० } धा विशेष, धन, सम्पदा ।
श्रुपि० ना० पु० वेदज्ञ, मुनि और तपस्वी ।
श्रुपिपति० ना० पु० श्रुपियों में जो प्रधान,
बहु विद्यानिधान, भागवतधर्मी ।

श्रुपिमित्र० ना० पु० शान्तप्रिय, कर्कशों का
दोस्त, रामचन्द्रिका में विश्वामित्र बोधक ।

श्रुपिराज० }
श्रुपीश० } ना० पु० श्रुपिपति ।
श्रुपीश्वर० }

श्रुपभ० ना० पु० राग, स्वर, विशेष, श्रेष्ठ ।
श्रुत्त० ना० पु० आलू, रौंछ, तारा ।

श्रुत्तपति० }
श्रुत्तराज० } ना० पु० जाम्बवन्त और
श्रुत्तेश० } चन्द्रमा ।

[५]

ए० अन्व्य० ग्यारहवाँ अक्षर, सम्बोधनका सूचक ।
एक० शु० गिनती का प्रथम अंक, अद्वितीय ।
एककाल० शु० समान समय, और एकसमय ।
एककालीन० शु० समानकाल में उत्पन्न भया,
हम उमर ।

एकटक० ना० पु० एक ताकसे देखना ।

एकट्टा० शु० जो एक स्थान में जमाकियों वा
भया है ।

एकतराज्वर० ना० पु० अन्तरिया, तिजरा वा
तिजारी ।

एकतही० ना० पु० एक जगह, ना० स्त्री० मि-
रजाई ।

एकता० ना० स्त्री० एकाई, मेल, समानता ।

एकतान० शु० एकमति, दुविधारहित ।

एकदा० अन्व्य० एकसमय ।

एकरस० शु० पदभाव विकाररहित ।

एकरूप० ना० समभाव ।

एकलौटा० } शु० जो लड़का अपने मातापिता
एकलौता० } का अकेलाहीवे ।

एकवचन० शु० बात एक मुख्य वर ।

एकवर्णात्मक० शु० जिस शब्दमें एक अक्षरहै ।

एकसर० शु० एकमति, दुविधारहित ।

एकसा० शु० समान, बराबर ।

एकसार० समान, एकरस ।

एकक्षत्र० ना० पु० विनाखटके, एकहीराज्य ।

एकत्र० अन्व्य० एकदोर, एकरथान ।

एकत्रता० ना० स्त्री० एकदोर होना ।

एकाई० ना० स्त्री० एकता ।

एकाएकी० अन्व्य० अचानक, एकवार में ।

एकाकार० शु० समान रूप, कलिधर्म, एकजाति,
एकाचार, ब्राह्मणादि का विशेष वर्षों धर्मको स्था-
गिके पशुवादि समान रहना ।

एकाकी० शु० अकेला ।

एकाम्र० शु० एकमन, एकमति, दुविधारहित ।

एकांक० शु० निश्चयकरि, सत्य ।

एकादशी० ना० स्त्री० पक्षकी ग्यारहवाँतिथि ।

एकाधिपति० ना० पु० अनेकदेशोंका एकराजा ।

एकान्त० शु० निराशा, निपट, निर्जनस्थान ।

एकान्तर० ना० पु० एकश्रोत ।

एकान्तरकोण० ना० पु० एकश्रोतका कोना ।

एकान्त० शु० एकमति, एकमार्ग ।

एकारान्त० शु० जिस शब्दके अन्तमें एकारहै ।

एकाक्ष० ना० पु० काक, काना ।

एकैअंक० अन्व्य० निश्चयकरि, सत्य ।

एकैक० शु० प्रत्येक, हरएक ।

एहू० ना० स्त्री० बोकेका दौड़ाने वा चलाने के
निमित्त पाँवके पिछले भागकी ठोकरमारना ।

एही० ना० स्त्री० पाँवका पिछलाभाग ।

एण० ना० पु० पाप, हानि, मृग, हरिण, घट
कपट ।

एणी० ना० स्त्री० हरिणी ।

एणीन० ना० स्त्री० एणीका बहुवाक्य ।

एणभद्र० ना० पु० कस्तूरी, सुरक ।

एतदर्थ० अन्व्य० इसीलिये ।

एतना० शु० इतना, इसकदर ।

एतान० शु० इतने, इसकदर, इसमकार ।

कवचं ना० पु० प्रास लुक्मा ।
 कवि० ना० पु० भाट, श्लोकविद्वन्दकंती, शीयर ।
 कविते० ना० पु० छन्दः पद्यः ।
 कवितां } ना० स्त्री० पद्यः, श्लोकः, छन्दः ।
 कविताई }
 कविमातां ना० स्त्री० शुक्राचारिकी माता ।
 कविपुंगव० ना० पु० बड़ा कवि, अष्टकवि ।
 कविपुत्र० ना० पु० बड़ा कवि ।
 कवीश्वर० ना० पु० बड़ा कवि उत्तमकवि ।
 कशर० ना० पु० कचतार ।
 कशेरू० } ना० पु० कसेरू ।
 कशेरुक० }
 कश्मीर० ना० पु० काश्मीर ।
 कश्यप० ना० पु० ऋषिः, मरीचिः, प्रज्ञापति ।
 कश्यपी० ना० स्त्री० पृथ्वी, धरती, जमीन ।
 कश्यपसे सम्बन्ध रखते ।
 कपाय० यु० कसेला रस ।
 कए० ना० पु० दुःख, पीडा, दर्द ।
 कएनाश० ना० पु० नीलकण्ठ पत्नी जिसको कटनाश कहते हैं ।
 कष्टि० } यु० दुःखित, पीडित, रोजीदः ।
 कष्टी० }
 कस० अर्थ० कसा, कितप्रकार ।
 कसक० ना० पु० यीडा, दुःख ।
 कसकना० अ० कि० दुःखभोगना, दुःखहीनता ।
 कसकसा० यु० नालू मिलाहुआ पदार्थ ।
 कसने० ना० पु० टट्टी, यन्त्रणा ।
 कसना० स० कि० खचना, जाचना, भोजिपूना, तलना, आसमूदाकरना ।
 कसा० यु० खिचाहुआ ।
 कसाई० ना० स्त्री० खिचापट ।
 कसाना० स० कि० खिचाना, जचाना, घी में हुनवाना, तलना ।

कसानं ना० पु० वह पदार्थ जिससे कसाजवि ।
 कसुभिक्र० ना० पु० नीवृत्त ।
 कसेरू० ना० पु० जलका कन्द विशेष ।
 कसेरुक० ना० पु० कसेरू ।
 कसेरुका० ना० स्त्री० पीठकी हड्डी ।
 कसेरा० ना० पु० कासकारक, कासगर, जाति विशेष, वर्तुण बनानेवाला ।
 कसेला० } यु० कपाय, कसेला ।
 कसेला० }
 कसेया० यु० कसनेवाला ।
 कसौटी० ना० स्त्री० सर्पादिपरीचकपापाण ।
 कस्तूरी० ना० स्त्री० मृगमद, मुश्क ।
 कस्मल० ना० पु० पाप, मुर्खा ।
 कस्मयी० ना० स्त्री० कम्भार ।
 कस्मिन् सर्व० कौन ।
 कस्य० सर्व० किसको ।
 कस्यप० ना० पु० कश्यपमुनि विशेष ।
 कहनूति० ना० स्त्री० कहावत, मसल ।
 कहना० स० कि० बोलना, गताना, आना ।
 करना, वर्णन करना ।
 कक्ष० ना० स्त्री० कांख, बगल ।
 कक्षा० ना० स्त्री० ग्रहों की चालका मंडलाकार पथ ।
 कहलाना० स० कि० बुलवाना, गताना, आना ।
 कहा० सर्व० क्या, ना० पु० आज्ञा ।
 कहानी० ना० स्त्री० कथा, किस्सा, वृत्तान्त ।
 कहार० ना० पु० जातिविशेष भीमर ।
 कहावत० ना० स्त्री० नाट, टट्टान, मसल ।
 का० सर्व० किसी, क्या, सन्धार्षी ।
 कां० ना० पु० कंकर ।
 कांख० ना० स्त्री० कंख, बगल, कराह ।
 कांखना० अ० कि० कलाहना, घुरगाना, स० कि० छदना, दुबाना ।
 कांगनी० ना० स्त्री० पांशु विशेष, चीज उखवा ।

पतादृश० गु० ऐसे, इसप्रकार ।

पतावता० अद्य० इसकरके, इसकारण ।

पतावन्मात्र० गु० इतनाही, यही केवल ।

परखड० ना० पु० अखड, रंड़ ।

पलचा०
पलचालुक० } ना० पु० औषधि विशेष
पलचालु० } अर्थान् सुस्वर ।

पला० ना० स्त्री० इलायची ।

पलोई० ना० पु० हे हमारे ईश्वर ।

पच०
पचं० } अद्य० इसप्रकार, और ।
पचम० }

पचमस्तु० अद्य० ऐसाही ही ।

[पे]

पैच० ना० पु० संकोच, खिंच ।

पैचना० स० कि० खिंचना ।

पैठ० ना० स्त्री० बल, मड़ोड़ ।

पैठना० स० कि० मरोड़ना, बलदेना, झु० कि०
बलखाना, मरुड़िजाना ।

पैकाधिपत्य० ना० पु० अद्वितीय-देशाधिपत्य,
पदवी ।

पैकाहिक० ना० पु० अन्तरिया ।

पैक्य० ना० पु० एकता, समानता ।

पैगुन० शु० औगुण ।

पैनमैन० गु० ज्योकार्त्यो ।

पेन्द्रजालिक० ना० पु० नटवर, दिठबंध ।

पेरावत० ना० पु० इन्द्रका-प्राणी ।

पेरावती० ना० स्त्री० नदी विशेष ।

पेचक्रा० ना० स्त्री० ककरासिगी ।

पेश्वर्य्य० ना० पु० विभव, माहात्म्य, सम्पत्ति,
प्रताप, पदती ।

पेश्वर्य्यवान्० } गु० सम्पत्ति करके हुरी-
पेश्वर्य्यशाली० } मित ।

पेसा० गु० इसप्रकार, इसके समान ।

पेहिक० गु० इसलोक के भाग, जो इहाँ ही है ।

[ओ]

ओ० अद्य० सम्बोधन, कर्णार्थ, स्मृति ।

ओठ० ना० पु० ओष्ठ, होठ ।

ओडा० गु० गम्भीर ।

ओधा० गु० ओषां, रस्ती जो छपर में बा-
धते हैं ।

ओक० ना० पु० वर, आश्रय, टिकाना, ना०
स्त्री० उबकाई ।

ओकना० अ० कि० वमन करना, उधाल
करना ।

ओकारान्त० गु० जिसके अन्तमें ओकार है ।

ओखली० ना० स्त्री० गाली, उल्लूख ।

ओघ० ना० पु० समूह, बहुतायत ।

ओछा० गु० छिछोरा, हलका, छोटा ।

ओज० ना० पु० प्रताप, बल, तेज ।

ओक० ना० पु० पचीनी, भोक, पेट ।

ओकड० ना० स्त्री० भोक, धफा ।

ओकडी० ना० स्त्री० पचीनी, छात ।

ओकल० ना० स्त्री० ओट, छुपाव, गु० जो
छुपा है ।

ओका० ना० पु० ओकस, टोनाहा, खेपी-वा
शाक्तधर्मी ।

ओट० ना० स्त्री० आड़, पट ।

ओटना० स० कि० आड़ करनी, बचाना, रेतना,
रईसे बिनाला निकालना, रोकना ।

ओटा० ना० पु० आड़, बैठन ।

ओड़न० ना० स्त्री० ढाल, फरी ।

ओड़ना० स० कि० सहना रोकना ।

ओडा० ना० पु० लांचा, बड़ा टोकरा ।

ओड़ना० स० कि० पहिरना, ना० पु० रजाई,
पट्ट, लोई आदि ।

ओड़नी० ना० स्त्री० किरियों का ओड़ना ।

ओत० ना० स्त्री० बढ़ोतरी, बचती, इतना ।

ओतप्रोत० ना० पु० तानाबाना, चौड़ाई,
लम्बाई में प्रतिष्ठत, पलट पर विवाह ।

ओदन० ना० पु० भात, चावल पके ।

काञ्च० गु० कच्चा, ना० पु० गुदा में रोग विशेष
 ना० स्त्री० शीशा ।
 काञ्जी० ना० पु० जल विशेष भात को असेत्राय
 के बनता है ।
 कांटा० ना० पु० कंठक, स्वर्णादिक तैलनेका यन्त्र
 तुला, प्रथमं गिराहुई वस्तु निकालने को यन्त्र ।
 कांठा० गु० किनारा, अन्त, छोर, समीप ।
 कांड० ना० पु० खण्ड, तीर विशेष ।
 कांड़ी० ना० स्त्री० कड़ी, धरन ।
 कांदू० ना० पु० चीनी पकानेका बड़ाह, भूजोजाति
 विशेष, भुजो ।
 कांदौ० ना० स्त्री० कीच, कीचड़, कादी ।
 कांधना० अ० कि० मानना, स्वीकारकरना ।
 कांधा० ना० पु० कंधा ।
 कांपना० अ० कि० दलदलाना, थरथराना ।
 कांस० ना० पु० तुण्य विशेष ।
 कांसा० } ना० पु० धातुविशेष ।
 कांस्य० }
 कांक्षा० ना० स्त्री० इच्छा, मनोरथो ।
 काई० ना० स्त्री० हरी वस्तु जो तालादि में
 लगती है ।
 काऊ० सर्व० जिसका, किसी को ।
 काक० ना० पु० कौआ, पक्षी विशेष ।
 काकजंघा० ना० स्त्री० पौधा विशेष ।
 काकट्यपुष्पी० ना० स्त्री० महासुयडी ।
 काकतिक्रा० } ना० स्त्री० कागजघा ।
 काकपदी० }
 काकपक्ष० ना० पु० सुल्फ, बायरी, काकुल,
 कौआ के पक्ष ।
 काकभुयुरिड० ना० पु० प्रतिद्ध पक्षी शीराभा-
 यण्य वस्तु ।
 काकर० सर्व० किसका ।
 काका० ना० पु० पिताका भाई, चचा ।
 काकिणी० ना० स्त्री० २० कौडी को कहते हैं,
 खीलवस्तु यथा वराहिकानादशकद्वयं यत्सका

किणीताश्चपणश्चतस्रः तयोर्द्वाराद्रमदहाभिनयो
 द्रमैस्तथापीडशभिश्चतितकः ।
 काकी० ना० स्त्री० काका कीपत्नी, चाची ।
 काकू० ना० पु० व्यंग्यवचन, कर्दावाह ।
 काकादर० ना० पु० सर्प, कौवाका प्रेया ।
 काकोल० ना० पु० विष, हलाहल ।
 काख० ना० स्त्री० कांठ, कच ।
 काखबलाइ० ना० स्त्री० कतारी ।
 काग० ना० पु० काका, कौआ ।
 कागासुर० ना० पु० काकरूपी दैत्य जिसकी
 जीभ श्रीकृष्णचन्द्रजनें तोड़दी थी ।
 काच० ना० पु० कांच, गु० कच्चा ।
 काचक० ना० पु० नांस ।
 काचा० गु० कचा, अशानी ।
 काछ० ना० स्त्री० धोतीका दूसरा तिरा जो
 पंखे को खोचते हैं, कमर, जंघाका ऊपरभाग ।
 काछना० गु० कि० काष्ठमारना, चर्वना, पी
 छना, बघेरना ।
 काछनी० ना० स्त्री० काष्ठविशेष ।
 काछी० ना० पु० सुरज जाति विशेष ।
 काज० ना० पु० कार्य, काम ।
 काजल० ना० पु० कज्जल, अंजन, सुरमा ।
 काजी० गु० कार्य कर्ता, कामी ।
 कांचन० ना० पु० सुवर्ण, सोनाधातु ।
 कांचनपुष्पिका० ना० स्त्री० मूसली ।
 कांचनार० ना० पु० कंचेनार वृक्ष ।
 कांचनी० ना० स्त्री० हल्दी, सोनेकी पुतली
 पर्वती विशयाप्रणामी ।
 कांची० ना० स्त्री० पुरीविशेष, जिसके दो
 भाग हैं एक विष्णुकांची दूसरी शिवकांची ।
 काट० ना० स्त्री० चौरा, मेल, तीक्ष्णता, तेजी
 काटना० स० कि० कतरना, टुकड़े करना, का
 रवाना, लवना, अर्थात् लोनी, चाराकरना,
 रहना, निताना, रोकना, लज्जित, होना,
 छीलना, लज्जितकरना ।

ओदां० गु० गीला, भीगा ।

ओधे० गु० अधिकारी, लागे ।

ओप० ना० स्त्री० सुन्दरता, चर्मचमाहेट, घोट ।

ओपना० स० कि० घोटना, साफकरना ।

ओपनी० ना० स्त्री० वह किसान जिस पर भिला

ओपी० अव्य० उपर, कि, गु० साफ की ।

ओर० ना० स्त्री० कंगरे, मीठी, चिल्ली ।

ओरी० गु० पत्र, पत्ती, मदद, ना० स्त्री०

ओला० ना० पु० जलमय पत्थर और चीनी शकर

ओपधि० ना० स्त्री० जो पोधा फल भ्रूजति के

ओस० ना० स्त्री० जो रात्रि समय छोटी-रूकहा

ओसर० ना० स्त्री० कलोर भैस ।

ओसरा० ना० पु० पारी, बारी, पती

ओसरी० ना० स्त्री०

ओसीसा० ना० पु० उसीसा, सिग्गाना ।

ओहो० अव्य० वाहवाह, आहा ।

ओ० अव्य० ओर ।

ओगी० ना० स्त्री० सुपी, सुगापन, सुपहीई

ओघाना० अ० कि० उलटना, उमडना ।

ओडा० गु० नमरी ।

ओघना० अ० कि० उलटना, उमडना ।

ओधा० गु० उलटा ।

ओधाना० स० कि० उलटाना ।

ओकारान्त० गु० जिसके अन्तमें ओकार है ।

ओघट० गु० अगम्य, जहाँ जाये न सके ।

ओचक० } अव्य० अचानक, नागहान ।

ओचट० } अव्य० अचानक, नागहान ।

ओछ० ना० पु० जइविरोष ।

ओटन० ना० पु० जलाव ।

ओटना० स० कि० जलावा, सुखाना ।

ओत्तानपादि० ना० पु० ध्रुव, मत्तमसिद्ध ।

ओत्कर्ष० ना० पु० श्रेष्ठता, उत्तमता ।

ओत्सुक्य० ना० पु० चिन्ता, व्याकुलता,

पछितावा ।

ओथरो० गु० उथला, कम गहरा ।

ओदात० गु० अघदात, श्वेत ।

ओदार्य० ना० पु० दातापन, उदारता ।

ओदास्तिन्य० ना० पु० विषयो में वैराग्य ।

ओर० अव्य० पुनः, फिर, गु० अधिक, दूसरी ।

ओरस० ना० पु० व्याहृताका पुत्र ।

ओर्ध्वदैहिक० ना० पु० मृतकी किया ।

ओपध० } ना० स्त्री० रोगनाशक द्रव्य, दवा,

ओपधि० } इलाज ।

ओपधिपति० } ना० पु० चन्द्रमा ।

ओपधीश० } ना० पु० चन्द्रमा ।

[क]

क० अव्य० ना० पु० जल, स्रस, अग्नि, शिर,

ककडी० ना० स्त्री० फल या तरकारी विशेष ।

ककरहा० } ना० पु० वाइलडी, वण ।

ककहरा० } ना० पु० वाइलडी, वण ।

ककार० ना० पु० की ।

ककुना० ना० स्त्री० दिसाओर चन्द्रविशेष ।

ककुष्ट० ना० पु० धनिया मसाला, कश्मीर ।

ककोरना० स० कि० खोदना, खरीचना ।

कखरी० ना० स्त्री० फल, जल ।

कखवारी० } ना० स्त्री० कृत्तिका, फोडा ।

कखीरी० } ना० स्त्री० कृत्तिका, फोडा ।

काटमाण्डु० ना० पु० नेपालदेशकीराजधानी।
 काठ० ना० पु० काष्ठ, सूखीलकड़ी।
 काठिन्य० ना० पु० कठिनता, कठोरपन।
 काठियावाड़० ना० पु० देशविशेष।
 काठी० ना० स्त्री० घड़े के ऊपरका काष्ठ का
 आसन, मियान जिसमें तलवार रखते हैं, तल
 देह, डील, लकड़ी।
 काढ़ना० स० कि० निकालना, चमड़ा उबड़-
 ना, कपड़े में फूल वृक्ष बनाना, चालिसिवाली।
 काढ़ा० ना० पु० काष्ठ।
 काण० } शु० एकाग्र, एकनयन।
 काणा० }
 काणी० ना० स्त्री० एक आँसिवाली।
 काण्ड० ना० पु० खण्ड, प्रकरण।
 काण्डरुहा० ना० स्त्री० कुटकी।
 कातना० स० कि० सूत खड़े से बनाना, रूँदा के
 द्वारा।
 कातर० शु० डरपोकना, व्याकुल, ना० पु० जंगल,
 दुर्भिक्ष, कौरव, की-पाटि।
 कातिक० ना० पु० आठवां महीना।
 कातिकी० ना० स्त्री० कातिक की वस्तुआदि,
 कातिककी पूर्वमासी।
 काती० ना० स्त्री० छोटी तलवार, कत्ती।
 कात्यायन० ना० पु० मुनिविशेष, स्मृतिवि-
 शेष।
 कात्यायनी० ना० स्त्री० देवीविशेष, स्मृति-
 विशेष, कात्यायन, वंशी।
 कादम्बिनी० ना० स्त्री० मेघमाला।
 कादर० शु० डरपोकना, व्याकुल।
 कादरता० } ना० स्त्री० भय, डर, डरपोकना।
 कादराई० } पत्नी।
 काधना० स० कि० कांधना, कांधे धरना।
 कान० ना० पु० कण, श्रवण, लान, अर्धक।
 कानन० ना० पु० बगीचा, जंगल, ब्रह्मकीसुख।

कानि० ना० स्त्री० मर्याद, संकोच, अर्ध, लान।
 काना० ना० पु० अंतर की खड़ी लकड़ी, का-
 णा, कड़ाही आदि का गहना।
 कानी० ना० स्त्री० जो एक आँस की है।
 कानीन० शु० नीच, चुद्र, स्त्री० लकड़ी, रामच-
 द्रिकायां अद्यापि आनी नरे वृन्दिकानो।
 कान्त० ना० पु० पति, स्वामी, सुन्दर।
 कान्ता० ना० स्त्री० पत्नी, प्यारी।
 कान्ताहा० ना० स्त्री० प्रियंशु औषधि।
 कान्ति० ना० स्त्री० शोभा, चमक, चौर, सिं-
 चन्द्रमा की एक कला का।
 कान्तिपाषाण० ना० पु० शुक्ल।
 कान्दा० ना० पु० जलका कन्द, कलकंदरा।
 कान्यकुब्ज० ना० पु० देश विशेष, ब्राह्मण
 कान्ह० } ना० पु० श्रीकृष्ण जी का एकनाम।
 कान्हर० }
 कापट्य० शु० शठता, कपट।
 कापथ० ना० पु० अतिमार्ग, कठिनमार्ग।
 कापुरुष० शु० कुसित, मनुष्य, बुरा आदर्मी-
 कुमन, कुकर्मी, नर।
 काम० ना० पु० भोगकार्य, अभिलाष, कामदेव,
 लान, विषय, वधावा, सुन्दर।
 कामक० ना० पु० मेघ।
 कामकलि० ना० स्त्री० दुलार, धार, संगम,
 प्रसंग।
 कामचञ्चुका० ना० स्त्री० पुष्पची।
 कामतरु० ना० पु० कल्पवृक्ष।
 कामद० शु० कामना दाता।
 कामदगो० ना० स्त्री० इन्द्रकी नाय।
 कामद्वती० ना० स्त्री० वसन्तशत्रु, अग्नी।
 कामदेव० ना० पु० मदन, मन्मथ।
 कामधेनु० ना० स्त्री० इन्द्रकी शो, देवगीता।
 कामनी० ना० स्त्री० इच्छा, कामामिलाप, मद्रक

कङ्खा० ना० पु० युद्धमें बढ़ावा देनेकी भावना कहना ।
 कङ्खैत० गु० माट जो बढ़ाव देता है ।
 कङ्गुआ० गु० तीता, तीक्ष्ण, निष्ठुर, खोडा ।
 कङ्गुवाहट० ना० स्त्री० तीक्ष्णता ।
 कङ्गा० गु० कटोर, हट्ट, मगरा, ठीठ, निष्ठुर, ना० पु० लोहेका वा चांदीआदि का भूषण जो हाथमें पहिन्त है ।
 कङ्गाड़ा० ना० पु० नदीका ऊंचा किनारा ।
 कङ्गाह० ना० पु० दुग्धादि आदने के लिये लोहे का पात्र, गुरुनामक का भोग ।
 कङ्गाही० ना० स्त्री० छोटा कङ्गाह ।
 कङ्गी० ना० स्त्री० कांडी, धरनी, धत्री ।
 कङ्गु० ना० स्त्री० खुन्ली, खारिस्त ।
 कङ्गाना० अ० कि० गिफ्ताना, उटना, चितना ।
 कठिलक० ना० पु० लालपुननवा ।
 कढी० ना० स्त्री० भोजन विशेष जो बसुन औ दही से बनता है ।
 कहुआ० ना० पु० उधार, कत्र ।
 कण० ना० पु० धान्य, अनाज, राज्यप्रतिभ्रम्य, जारः ।
 कणा० ना० स्त्री० पीपरी ।
 कणामूल० ना० पु० पीपरामूल ।
 कणासुफल० ना० पु० अकोल औषधि ।
 कणिका० ना० स्त्री० सोनहरी, अणु, लोरा, टुकड़ा, जारः ।
 कणी० ना० स्त्री० छिटक, टुकड़ा, जारः ।
 करटक० ना० पु० कांदा, गोखरु, शङ्ख, कृष्ण, पित्तपापना ।
 करटकलता० ना० स्त्री० खीरा फलविशेष ।
 करटकारि० } ना० स्त्री० छोटीकड़ाई सेफेद
 करटकिनी० } धीकवारिका ।
 करटकफल० ना० पु० कटहल ।
 करटकी० ना० पु० बिल्व, वैलु ।
 करटफल० ना० पु० गोखरुन ।
 करटार० गु० कटीला ।

करटारिका० ना० स्त्री० छोटी सेफेद कटाई ।
 करटिया० ना० स्त्री० आंकड़ी ।
 करठ० ना० पु० गला, घांटी, उपस्थित, मुताप्र ।
 करठगत० गु० गले में जान वा लप ।
 करठमाल० } ना० स्त्री० गलकीमाला, मुख्य
 करठमाला० } रोग जिसमें गला सूझजाता है ।
 करठला० ना० पु० माला जो लड़कों के लिये बहुयन्त्र युत बनते हैं ।
 करठस्थ० ना० पु० मुताप्र ।
 करठा० ना० पु० बड़ी गुरियों का माला ।
 करठाग्र० गु० मुताप्र, जवानी ।
 करठाभरण० ना० पु० गलेका भूषण ।
 करठी० ना० स्त्री० छोटीमाला तुलसीआदि ।
 करठीख० ना० पु० सिंह, व्याघ्र, शेर, कृष्ण ।
 करठ्य० गु० जिन अक्षरों का उच्चारण कंठ से होवे ।
 करडा० ना० पु० उपला ।
 करडी० ना० स्त्री० छोटाउपला ।
 करडुपुष्पी० ना० स्त्री० शंखाहली ।
 करडू० ना० पु० रोगविशेष, स्त्री० जमुहाई ।
 करडूम्र० ना० स्त्री० पवार, औषधि ।
 करडेर० ना० पु० धुनियां, जाति विशेष जो तीर बनते हैं, क्रमानगर ।
 करख० ना० पु० धुनिविशेष ।
 कत० अ० कहां, क्योंकर, किसलिये ।
 कतना० अ० कि० कताजाना ।
 कतरन० } ना० पु० काटना ।
 कतरा० }
 कतरना० स० कि० काटना ।
 कतरनी० ना० स्त्री० कटनी, कैंची ।
 कतराना० स० कि० कटवाना ।
 कतहू० अ० कमी कमी ।
 कताई० ना० स्त्री० कातने का काम, कातने का पेशा ।
 कतार० ना० पु० गोंदाविशेष ।
 कत्त० अ० कहां क्योंकर ।

कामपाल० ना० पु० नलदेवजी ।
 कामघन० ना० पु० जिस वनमें श्वी सदाशिव
 ने कामदेव को जलाया था-।
 कामरी० ना० स्त्री० कमल ।
 कामरूप० ना० पु० इच्छाचारी, सुन्दर, देश
 विशेष ।
 कामरूपी० गु० बहुरुपिया, सुन्दर, कामरूप
 वासी ।
 कामसखा० ना० पु० इन्द्र, वसन्तऋतु ।
 कामांग० ना० पु० आम्रवृक्ष ।
 कामातुर० } गु० मदनमत्त, कामी, शूल-
 कामात्त० } हारा ।
 कामिनी० ना० स्त्री० उत्तम, सुन्दरी, ना० पुण्य
 वृक्ष विशेष, कामातुर स्त्री ।
 कामी० गु० कामातुर, बहुधर्मी, मृतलती माधवी
 वृक्ष ।
 कामुक० ना० पु० स्त्री के सुसम्भ, आसक्ति,
 कामातुर ।
 कामोद० ना० स्त्री० राशिनी विशेष ।
 कामोज० ना० पु० देश जो बंगाल के दक्षिण
 पूर्व है ।
 काम्य० गु० सुन्दर, अच्छा ।
 काम्यकर्म० ना० पु० स्वर्गादि फलों के लिये
 जो कर्म करना ।
 काय० ना० स्त्री० देह, तन ।
 कायक० गु० देही ।
 कायफल० ना० पु० औषध विशेष ।
 कायर० गु० भयमान, डरपोक, हेरा ।
 कायस्थ० ना० पु० जातिविशेष, गु० जो निज
 काया में स्थितही अर्थात् सन्तुष्ट ।
 कायस्था० ना० स्त्री० हर, काकली ।
 काया० ना० स्त्री० देह, तन ।
 कायाकल्प० ना० पु० देहका बदलना ।
 कारक० ना० पु० क्रियाका साक्षर निमित्त ।
 कारज० ना० पु० कार्य, काम ।
 कारण० ना० पु० निमित्त, लिये, सबन, प्रकृति ।

कारणी० गु० कारण, कर्ता ।
 कारवल्ली० }
 कारवेल्ल० } ना० पु० करेला, तरकारी ।
 कारवी० ना० स्त्री० अजमोद, कलीजी ।
 कारागार० }
 कारागृह० } ना० पु० बन्दीघर, जहलखाना ।
 कार० }
 कारकर० } ना० पु० शिल्पकार, धवई ।
 कारुणिक० गु० दयालु, कृपालु ।
 कार्तस्वर० ना० पु० सुवर्ण, कांचन ।
 कार्तिक० ना० पु० कार्तिक ।
 कार्तिकेय० ना० पु० स्वामिकार्तिक ।
 कार्पण्य० ना० पु० दरिद्रता, दीनता ।
 कार्पास० ना० स्त्री० कपास ।
 कार्मुक० ना० पु० धनुष, महानाव वृक्ष ।
 कार्थ्य० ना० पु० प्रयाजन, काम ।
 कार्याण० ना० पु० काड़ी के सोलहपण के
 माप अथवा तोल ।
 काल० ना० पु० मृत्यु, दुर्घट, समय, कल
 काला, धर्मराज, सर्प, सुन्दर, यमराज ।
 कालक० ना० पु० कृष्णता, बीजगणित में प्रमाथ
 का बोधक ।
 कालकूट० ना० पु० विष, हलाहल ।
 कालपोलुक० ना० पु० तदुत्पन्न ।
 कालपर्णी० ना० स्त्री० कालानिर्वात ।
 कालमेषिका० ना० स्त्री० मजीठ, बाकुची ।
 कालमेषी० ना० स्त्री० कालानिर्वात ।
 कालयमन० ना० पु० नाम एक मिलिच्छ का
 जिसको श्रीकृष्णचन्द्र ने भस्म किया था ।
 कालराति० } ना० स्त्री० प्रलयकाल की राति,
 कालरात्रि० } अंधेरीराति, देवी विशेष ।
 कालवाहन० ना० पु० भैसा ।
 कालवृत्तिका० ना० स्त्री० कुम्भी जो पानी में
 होती है ।
 कालशाक० ना० पु० सरफोका ।
 कालसार० ना० पु० तदुत्पन्न वृक्ष ।

कथा० ना० पु० सुदृष्टिः सैरः । ना० का० पु०
 कत्सायल० ना० पु० कालादृष्टिः । ना० का० पु०
 कथक० पु० पौराणिक, पवारियाः कथिकाः ।
 कथन० ना० पु० कथनाः वाक्यं को श्रयोर्ग
 कहना । ना० पु० कथनाः वाक्यं को श्रयोर्ग
 कथना० अर्थः किं कहना । ना० पु० कथनाः
 कथनीय० पु० कहने के योग्य । ना० पु० कथनीय
 कथा० ना० स्त्री० कहानी, वृत्तान्तः पवारा । ना० पु०
 कथित० पु० कहाहुवा । ना० पु० कथित
 कथोपकथन० ना० पु० आलापः, परिस्परं भात
 चांत । ना० पु० कथोपकथन
 कथ्य० ना० स्त्री० हर्षः पु० कहने-योग्य । ना० पु०
 कद० अर्थः कव । ना० पु० कद
 कद्व्या० ना० स्त्री० प्रतिमार्ग, कटिनमार्गः । ना० पु०
 कदन० ना० पु० नाराकः, कथिकः । ना० पु०
 कदम्ब० ना० पु० समूहः, वृक्षविशेष, कदम्बः । ना० पु०
 कदम्बक० ना० पु० समूहः, गिरीह । ना० पु०
 कदर्य० पु० सौम्यः, कथम् । ना० पु०
 कदली० ना० पु० कैलाशवृक्षः । ना० पु०
 कदत्तर० ना० पु० इतिवृत्त वर्षः । ना० पु०
 कदा० अर्थः कव । ना० पु० कदा
 कदाचार० पु० शस्त्र से विपरितः व्यवहारः । ना० पु०
 कदाचित्० अर्थः क्वो० कभी होता-होत
 कदापि० अर्थः शायद । ना० पु० कदापि
 कदेन० ना० पु० दुःख केश । ना० पु०
 कड० ना० स्त्री० कालीनाग की माता, कडुमूषजी
 की स्त्री । ना० पु० कड
 कडू० अर्थः कृषी । ना० पु० कडू
 कत० ना० पु० कण, अणु । ना० पु० कत
 कनक० ना० पु० सोना, धनुर । ना० पु० कनक
 कनकटा० पु० सूया । ना० पु० कनकटा
 कनकाचल० ना० पु० सुपेरुपर्वत जो मनुष्य को
 धरामय है । ना० पु० कनकाचल
 कनखजूरा० ना० पु० गाजर, कीट प्रसिद्ध । ना० पु०
 कनल० ना० पु० भिलावा । ना० पु० कनल
 कनवाई० ना० स्त्री० कान छेदना । ना० पु० कनवाई

केनीगत० ना० पु० आश्विनकृष्णपक्ष में वितीर
 का श्राद्ध । ना० पु० केनीगत
 कनिक० ना० पु० चूत, पित्तानः आदि । ना० पु० कनिक
 कनियाना० स० कि० संकीच से कतरायजानो,
 आंत छुपाना । ना० पु० कनियाना
 कनियाहट० ना० स्त्री० सांच, संकीच । ना० पु० कनियाहट
 कनिष्ठ० पु० छोटो । ना० पु० कनिष्ठ
 कनिष्ठा० ना० स्त्री० पांचवां श्रेयसी, नीचस्त्री । ना० पु० कनिष्ठा
 कनिष्ठिका० ना० स्त्री० पांचवां श्रेयसी । ना० पु० कनिष्ठिका
 कनिहा० पु० धना । ना० पु० कनिहा
 कने० अर्थः पास, साथ । ना० पु० कने
 कनेर० ना० पु० करवीरवृक्ष जिम्का फूल
 फल० देवता को चढ़ता है । ना० पु० कनेर
 कनैया० ना० पु० कर्णवधन, ना० स्त्री० बाली । ना० पु० कनैया
 कनौज० ना० पु० प्राचीन नगर, विश्वप्रदेश । ना० पु० कनौज
 कनौजिया० पु० कनौज देशका बासी । ना० पु० कनौजिया
 कन्त० ना० पु० स्वामी, भर्तार, नियंत्रण,
 मालिक । ना० पु० कन्त
 कन्था० ना० स्त्री० कथड़ी, गूदकी, नीती यथा
 (शनैःकन्था शनैःपन्था शनैःपर्वतसेधनम्,
 शनैःविद्या शनैःवित्तमते पञ्चरानैःशनैः) । ना० पु० कन्था
 कन्द० ना० पु० जड़ विशेष वा जो जड़ में फ
 लता है यथा, मूला, पुंदा, आलू आदि मेष
 धूलि । ना० पु० कन्द
 कन्दरा० ना० स्त्री० सोह, गुफा । ना० पु० कन्दरा
 कन्दराल० ना० पु० अलरीट । ना० पु० कन्दराल
 कन्दर्प० ना० पु० कामदेव । ना० पु० कन्दर्प
 कन्दलकन्द० ना० पु० जिमीकन्द । ना० पु० कन्दलकन्द
 कन्दला० ना० पु० कौचबीज । ना० पु० कन्दला
 कन्दासी० ना० स्त्री० पियावाता । ना० पु० कन्दासी
 कन्दुक० ना० पु० कैलाशवृक्ष वा उत्तम फल, गेद
 कन्ध० ना० पु० कांथा । ना० पु० कन्ध
 कन्धर० ना० पु० गला, मेष । ना० पु० कन्धर
 कन्धा० ना० पु० कांथा । ना० पु० कन्धा
 कन्धियाना० स० कि० कोई वस्तु करि पर
 रखना । ना० पु० कन्धियाना

कालसूत्र० ना० पु० नरक भेद ।
 कालस्कन्ध० ना० पु० तमालवृक्ष ।
 कालक्षेप० ना० पु० समय, कान्ना, इन्द्रा, भोग
 करना, उत्तरान करना ।
 कालह० शु० न्योतिषी; पवित्रत, श्रेणीस्वर, ज्ञाता,
 मुखापत्नी, श्याल ।
 काला० शु० कृष्णवर्ण, श्यामरंग ।
 कालिका० ना० स्त्री० धनियां, मसाला; कालि
 नीरा, देवीविशेष ।
 कालिख्यात० ना० स्त्री० किन्दवाली ।
 कालिन्दी० } ना० स्त्री० यमुनानदी विशेष ।
 कालिन्दी० }
 कालिपङ्क० ना० पु० मलय, चन्दन ।
 कालिया० ना० पु० कालीनाय शु० काला ।
 काली० ना० स्त्री० मसी, देवीविशेष, मिस्र
 देशकी नदी; ना० पु० कालीनाय श्यो-यमुना में
 रहा करता था ।
 कालोदह० ना० पु० यमुनानी में विशेषस्थान ।
 कालपनिक० शु० आरोपित, कल्पना किया गया,
 ना० स्त्री० नदी विशेष जो दक्षिण में है ।
 कावेरी० ना० स्त्री० नदी विशेष ।
 काव्य० ना० पु० पद, श्लोक, छन्द, पुस्तक,
 जिसमें कविता है, शुक ।
 कास० ना० पु० खासी, खासी ।
 कासघ्नी० ना० स्त्री० भारंगी औषधि ।
 काश्मद० ना० पु० कलौजी का सार ।
 काश्मीर० ना० पु० देश, विशेष जो प्रजापति
 उत्तर है, पुराणमूल ।
 काश्मीरी० ना० स्त्री० केश, कम्भाड़ी, का-
 श्मीरदेशवासी ।
 काश्यप० ना० पु० कश्यपकी सन्तान ।
 काश्यपी० शु० सृष्टि का रथवान ।
 काशी० ना० पु० नगर विशेष ।
 काष्ठ० ना० पु० काठ, लकड़ी ।
 काष्ठकेवा० ना० पु० बदर् ।
 काष्ठपाट्या० ना० स्त्री० कुम्भी ।

काष्ठान्तर० ना० पु० काठके भीतर ।
 काष्ठी० ना० स्त्री० कटकरी ।
 कासार० ना० पु० तालाव, भैंसा ।
 कासु० सर्व्य० कितको ।
 काहन० ना० पु० कार्यापन ।
 काहे० सर्व्य० क्यों ।
 काशी० ना० स्त्री० कटकरी ।
 किं० अर्थ० प्रथमवाक्य का द्वितीयवाक्य से
 सम्बन्धकारक ।
 किंशुक० ना० पु० पलाश, दात, टैम् ।
 किंकर० ना० पु० टहलुथा ।
 किंकरो० न्यु० स्त्री० दासी, टहलुन ।
 किंकिणी० ना० स्त्री० कटिबन्ध पंथी समेत,
 काकेश्वर ।
 किम्बयान० ना० पु० घोड़ा ।
 किचकिचाना० अ० कि० दांतपीसना ।
 किचहाना० अ० कि० आँसों में काँचड़याना ।
 किचपिचाना० अ० कि० नष्टवहाना ।
 किंचित् अर्थ० थोड़ा, अल्प, कुछ ।
 किंचिन्मात्र० शु० कुछ, अतिशय ।
 किंचुक० ना० पु० संज्ञाविशेष ।
 किंचुकी० ना० स्त्री० चाली, झुगिया ।
 किंजल्क० ना० पु० सिंफाकन्द ।
 किंठि० ना० पु० सुहर, सुकर, यथा; नराहः शक्ये
 घृष्टिः कालपात्री किरिकिटिः इत्यमरः ।
 किङ्किङ्गाना० अ० कि० कौपसे दांतपीसना ।
 किङ्हा० ना० पु० ऊंगा, शु० बुना ।
 कित० अर्थ० कहाँ, किधर ।
 कितना० }
 कितनी० } शु० प्रमाणका प्रश्नकारक ।
 कितो० }
 कितेक० शु० बहुत ।
 कितै० अर्थ० किधर ।
 कित्ति० ना० स्त्री० कर्ति, यश, रामचन्द्रिकाया
 यथा, अतएव कर्ति तेष भूमि देयमान सेतिये ।

कन्धेली० ना० स्त्री० खैगीर, जो खोईकी उदाते है ।

कन्यका० ना० स्त्री० कुमारी, कन्या ।

कन्या० ना० स्त्री० बेटी, छटी राशि, दश वर्षतक की लड़की ।

कंस० ना० पु० श्रीकृष्णका मामू ।

कन्हई० } ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्रजीका एक
कन्हैया० } नाम ।

कपना० अ० कि० भरथराना ।

कपकपी० ना० स्त्री० भरथराइट, फुरफुरी ।
कपट० ना० पु० छल, फरेम, खोटाई, और भगल ।

कपटभू० ना० स्त्री० मायाभूमि, तिलसमाप्ती जमीन ।

कपटी० गु० छली, खोटा, बहुरूपिय ।

कपडा० ना० पु० वस्त्र ।

कपडौंसेहोना० अ० कि० रजोवर्म होना, अस्तुमती होना ।

कपर्दी० ना० पु० श्रीमहादेवजी, वरगद ।

कपाट० ना० पु० किवाड़, पट ।

कपार० } ना० पु० माथा, लसाट, भाग्य ।
कपाल० }

कपालभृत्० ना० पु० श्रीमहादेवजी ।

कपाली० ना० पु० श्रीमहादेवजी और श्रीभैरवजी ।

कपाल० ना० स्त्री० खईका वृक्ष, कर्पास ।

कपि० ना० पु० वानर, चन्दर ।

कपिकुञ्जर० ना० पु० श्रेष्ठ वानर ।

कपितन० ना० पु० पारस, पीपल ।

कपित्थ० ना० पु० कैयाका वृक्ष ।

कपिध्वज० ना० पु० अश्विन, पाण्डुपुत्र ।

कपिन्द० } ना० पु० मुख्य वानर और श्रेष्ठ
कर्पान्द्र० } वानर ।

कपिपति० ना० पु० सुमान, गु० जो वानरों का राजा होवे ।

कपिपिप्लसी० ना० स्त्री० लालउंगी ।

कपिभूत० ना० पु० पारस, पीपल ।

कपिल० ना० पु० मुनि विशेष, सौम्यशास्त्र के यक्ता, पीतलधातु ।

कपिला० ना० स्त्री० पिंगलवर्षकीगोय, देवका ।

कपिलदेव० ना० पु० आदिश्रवतार ।

कपिल्य० ना० स्त्री० कपाला श्रावधि ।

कपीश० ना० पु० सुग्रीव वानरोंका राजा ।

कपूर० ना० पु० सुगन्धि विशेष, कापूर ।

कपोत० ना० पु० कबूतर परेवा ।

कपोतवर्णा० ना० स्त्री० छोटीइलायत्री ।

कपोताक्ष० ना० पु० नर विशेष ।

कपोतिका० ना० स्त्री० मूली तरकारी ।

कपोल० ना० पु० गाल ।

कफ० ना० पु० सखार, श्लेष्मा, बलगम ।

कफोन्धियज० ना० पु० समुद्रफेन ।

कव० अर्थ० कहा, कदा ।

कवड्डी० ना० स्त्री० गनड्डी खैल विशेष ।

कवन्ध० ना० पु० विनामस्तक की देह और पानी, मेघ, राह, (उभेपूर्वावरेसंभे तिले पश्यामिभारत, उदयास्तमयेसूरी कवन्धेपरि वारित) इतिमहाभारते ।

कवरा० गु० कबूतर, चितला, अबलक ।

कवारू० ना० पु० काम, उद्यम, तरकारी ।

कमी० } ना० पु० अर्थ० कमी, कदापि
कभू० } कधी ।

कमठ० ना० पु० कछुवा ।

कमठा० ना० पु० धनुष, कमान ।

कमठी० ना० स्त्री० कछुई, धनुही ।

कमण्डलु० ना० पु० दियड्यों का जलपात्र, करवा ।

कमनीय० गु० सुन्दर, मनोवन् ।

कमन्दर० ना० स्त्री० सीपी यथा (सुक्ता-स्फोथाधि मंडूकी शुक्ति मौक्तिक मन्दरः) इति निघंटे ।

कमरख० ना० पु० फल विशेष और बेल विशेष ।

किधर० अय्य० कहां।
 किनाय० ना० पु० तट, कुल।
 किनारी० ना० स्त्री० गोदा, मराठी।
 किन्० ना० पु० धाव, अय्य० क्योंतहीं।
 किन्तव० ना० पु० धनराज।
 किन्तु० अय्य० परन्तु, तिसपरसी।
 किन्नर० ना० पु० यक्षदेवता।
 किन्नरी० ना० स्त्री० सारंगी, यक्षिणी।
 किपलता० ना० पु० केया का वृक्ष।
 किम्० सर्व० क्यों, किसप्रकार।
 किमपि० सर्व० क्योंभी, किसप्रकार।
 किमर्थे० सर्व० किसलिये।
 किमाञ्च० ना० पु० सबहुआ, कोच।
 किमि० सर्व० क्यों, किसप्रकार।
 किम्पुरुष० ना० पु० नवखण्ड धरातल में से एक, नामद, कुछेक पौरुषी।
 किंवा० अय्य० अथवा।
 किरकिटी० ना० स्त्री० छोटी लकड़ी।
 किरकिरा० शु० रेतिला, बालुआ।
 किरकिराना० अ० कि० डाना।
 किरण० ना० स्त्री० रश्मि, शुभ्रा।
 किरात० ना० पु० भौल, जातिविशेष, चिरायता।
 किरातक० ना० पु० चिरायता।
 किराना० स० कि० साफ करना, ना० पु० मसाला, औषधि बयोरह।
 किरि० ना० पु० किति-शक्रे।
 किरिच० ना० स्त्री० तलवार टुकड़ा।
 किरिया० ना० स्त्री० शोषक, सौगन्द, सीही किया।
 किरिटी० ना० पु० मुकुट, तान।
 किरिटी० ना० पु० अर्धुन ना० स्त्री० शैला हली औषधि, शु० मुकुटधारी।
 किल० अय्य० निश्चित।
 किलनी० ना० स्त्री० कौटविशेष।
 किलांकिल० ना० पु० यान्तों का शब्द।

किलिम० ना० स्त्री० देवदारु।
 किलकारी० ना० स्त्री० प्रसन्नता से हँसना।
 किलकारीमारना० अ० कि० प्रसन्नहोके जय जयकार करना, खूब हँसना।
 किलकिलाना० अ० कि० चिड़चिड़ाहाना।
 किल्ली० ना० स्त्री० गुनी, कीली।
 किल्विप० ना० पु० पाप, दोष, गुनाह।
 किसलय० ना० पु० नवीनपत्ता।
 किशोर० ना० पु० तरुणधरया अथवा वर्षभक्त का लड़का।
 किसनई० ना० स्त्री० खेतिका काम।
 किसान० ना० पु० जोतार, खेत करनेवाला जाति विशेष।
 कीचड़० ना० पु० बबूल।
 कीच० } ना० पु० कांदा, चहला।
 कीचड़० }
 कीट० ना० पु० कीड़ा।
 कीटनारी० } ना० स्त्री० हंसपादी पोधा।
 कीटसारी० }
 कीटा० ना० पु० कीट, कृमि, किम।
 कीटा० ना० पु० गुलहदी।
 कीना० स० कि० करना।
 कीर० ना० पु० तोतापक्षी यथा कीरशुको सम इत्यमरः।
 कीरत० } ना० स्त्री० कीर्ति, बड़ाई, तारीफ।
 कीरति० }
 कीर्त्तन० ना० पु० पाना, कीर्त्तन, कहना।
 कीर्त्ति० ना० स्त्री० यश, स्तुति, नेकनामी।
 कील० ना० स्त्री० लोहेका कांटा।
 कीलना० स० कि० मन्त्र फूकरकर रोकना।
 कीला० ना० पु० लोहेका कांटा।
 कीलाल० ना० पु० जल, पानी।
 कीश० ना० पु० वानर, चन्द्रधर।
 कु० अय्य० यह अंतर नितःशब्द के प्रथम से संयुक्त होता है उसका अर्थ कभी-बुरा, कभी-निन्दित, कभी-न्यून-होताहै, पृथ्वी, धरतीरा

कुंवर० } ना० पु० कुमार ।
 कुंवारी० }
 कुंवारी० ना० स्त्री० कुमारी ।
 कुभ्राता० ना० पु० विनाभ्याहा लडका ।
 कुभ्रारी० ना० स्त्री० कन्या विना विवाही ।
 कुकन्या० ना० स्त्री० पृथ्वीकी कन्या विशेष श्री
 शीताञ्ज, य० दुष्ट कन्या ।
 कुकर्म० ना० पु० सुराकाम ।
 कुकर्मि० गु० कुकर्म करनेहारा ।
 कुककुट० ना० पु० सुरसा ।
 कुककुटाण्ड० ना० पु० सफेदमांदा, कुककुटका
 धरणा ।
 कुककुटी० ना० स्त्री० सुरभियां, सुरती ।
 कुककुन्द० ना० पु० जंगली करौदा ।
 कुकिया० ना० स्त्री० निन्दिताचरण, सुखकर्म ।
 कुक्यूह० ना० पु० लदापर, सुरापर ।
 कुघाट० ना० पु० बेडौल, बदसूरत, कुत्सितघाट,
 नहीं घाट न ही ।
 कुघात० ना० स्त्री० कुत्समय भारना, सुरीवात ।
 कुकुम० ना० पु० केसर, जाकरान ।
 कुकुमा० ना० पु० गुलाल भले-के लिये जो
 लासका बनता है ।
 कुच० ना० पु० स्तन, चूची, उरोज ।
 कुचन्दन० ना० पु० पतंग-जिससे फपड़ा रंगतेहैं ।
 कुचलना० स० कि० चूरकरना, मसलना ।
 कुचला० ना० पु० श्रौषधि विशेष ।
 कुचिया० ना० स्त्री० लोलकी, कानका अथोभाग ।
 कुचैला० गु० मैला ।
 कुचैना० गु० दुःख, अयसधता ।
 कुच० सर्व० थोड़ा, रेंचक ।
 कुज० ना० पु० मंगल, वृत्तादि, भौमासुर ।
 कुजाति० गुं० नीचजाति, वा नीच ।
 कुजत० गु० धरलेदारवाल, गधुवारिवाल ।
 कुजा० ना० स्त्री० कुन्नी, ताली ।

कुची० ना० स्त्री० कत्तीजा ।
 कुज० ना० पु० वृक्ष लतादि रचित रमणीय
 स्थान, तंगगली, पत्तीविशेष ।
 कुजर० ना० पु० हार्थ, मुख्यधान, रामायण
 यथा, कवि कुंजरहि बोलिलैघायै ।
 कुजिका० }
 कुजी० } ना० स्त्री० ताली, चावी ।
 कुटकी० ना० स्त्री० श्रौषधि विशेष, कीटविशेष ।
 कुटज० ना० पु० इन्द्रयव ।
 कुटना० ना० पु० भड्गा, अ० कि० पिटना
 कुटनाना० स० कि० कुत्सलाना ।
 कुटनी० ना० स्त्री० दूती, नाथिका ।
 कुटाना० स० कि० पिटाना ।
 कुटिल० गु० टेढ़ा, क्रूर ।
 कुटिलता० }
 कुटिलाई० } ना० स्त्री० टेढ़ापन, क्रूरता ।
 कुटी० }
 कुटीर० } ना० स्त्री० मढ़ी, भोपड़ी, एकान्त
 कुटीरा० } स्थान, समिया ।
 कुटुम० ना० पु० कुटुम्ब ।
 कुटुमी० ना० कुटुम्बी ।
 कुटुम्ब० ना० पु० कुनचा, धराना ।
 कुटुम्बी० ना० पु० गृहस्थ, घरवाला ।
 कुटुम्ब० ना० स्त्री० कुमाव, कुचालि, सुरी स्त्री ।
 कुटनी० ना० स्त्री० कुटनी ।
 कुठार० ना० पु० फरसा, कुल्हारा, तवर ।
 कुठारी० ना० स्त्री० कुल्हाड़ी, टांकी ।
 कुठाहर० ना० पु० कुत्समय, वे मीका ।
 कुडकना० } अ० कि० क्रीडयुक्त होकर क-
 कुडकुडाना० } हना, रिसाय के बोलना ।
 कुडना० अ० कि० विलापकरना, कलपना, वा-
 हकरना, हसदकरना ।
 कुडाना० स० कि० सताना, छेड़ना ।
 कुएटन० ना० पु० स्थानावृत्त ।
 कुएटन० गु० लज्जित, गटला, अतान ।

खटीक० ना० पु० जाति विशेष ।
 खट्टा० शु० अम्ल, अम्वत् ।
 खटिक० ना० पु० खटीक, आखेटकी ।
 खट्टु० ना० पु० मनिहार ।
 खट्वा० ना० स्त्री० साट ।
 खट्क० ना० स्त्री० गोशाला ।
 खट्कना० अ० कि० फलफलाना ।
 खट्खट्टाना० स० कि० टकटकाना, खरीया,
 मारना, फलफलाना ।
 खट्खराहट० ना० पु० शब्द होना, आहट ।
 खट्खान० ना० स्त्री० फिसान निसपर, बादि
 बनाते हैं ।
 खट्का० शु० उडा, सीधा, अडा, ऊंचा, ठाडा ।
 खट्काँ० ना० पु० पादुका, कठनई ।
 खट्टिया० ना० स्त्री० खूहीमिठी, दूबिय मिठी ।
 खट्टग० ना० पु० तलवार, गंडा, अमरे यया ।
 गण्डके खट्टगखट्टगिनौ ।
 खण्ड० ना० पु० टुकडा, खाँड, अध्याय, दिशा ।
 खण्डन० ना० पु० दूषण, मिटाना, काटना ।
 खण्डनः० स० कि० दूषणदेना, तोड़ना, वाटना ।
 खण्डनार्थं० शु० काटने के लिये ।
 खण्डनी० ना० स्त्री० काटनेवाली ।
 खण्डपरशु० ना० पु० श्रीमहादेव ।
 खण्डर० ना० पु० ऊनइ, धीराना ।
 खण्डरना० स० कि० काटना, टुकड़े करना ।
 खण्डहल० ना० पु० ऊनइ मकान, धीराना ।
 खण्डित० शु० फाटागया, कमी, अपूर्ण ।
 खण्डितकरना० स० कि० वातकाटना, खण्डना ।
 खतिल० ना० पु० पोस्त वा उसका निरवा ।
 खत्ता० ना० पु० } गहना निसमें धन भरते हैं ।
 खत्ती० ना० स्त्री० }
 खदिर० ना० पु० खैर, करवा ।
 खदेइ० ना० स्त्री० रगेद, अरेर ।
 खदेइना० स० कि० रगेदना, भगाना ।
 खद्योत० ना० पु० सूर्य, तारागण और ज्युट्ट ।
 खट विशेष ।

खन० ना० पु० खण्ड ।
 खनक० ना० पु० मूरा, चूहा ।
 खनकना० अ० कि० पजना, शब्दहोना ।
 खनन० ना० पु० लोदना ।
 खनना० स० कि० लोदना ।
 खपत० शु० जो विकगया, स्त्री० विकव ।
 खपना० अ० कि० विकना, सूतना, टहरना
 पैठना, समाना ।
 खपरा० ना० पु० घरछावने के लिये जो मिट्टी
 के बनेते हैं ।
 खपरी० ना० स्त्री० शिरका ऊपरी भाग ।
 खपरैल० ना० स्त्री० घर जो खपरा से द्यायाहो ।
 खपाच० ना० स्त्री० काठका टुकड़ा ।
 खपाना० स० कि० विकवाना, पैठना, भराना ।
 खपित० शु० जो विकगया, स्त्री० विकव ।
 खपुर० ना० पु० स्वर्ग, आकारा ।
 खप्पर० ना० पु० खोपड़ी, माटी का पात्र-निसमें
 योगी जलादि पीते हैं, अंगेटी ।
 खप्पा० ना० पु० नायां हाथ ।
 खमारु० ना० पु० पैठमें आधि पड़ना, पवराहट
 खम्बा० } ना० पु० स्तम्भ, धूनी,
 खम्म० }
 खम्भा० ना० पु० स्तम्भ, धूनी ।
 खर० ना० पु० खराहट, गधा, घास, कुत्ता
 अन्धा, तीक्ष्ण ।
 खरका० ना० पु० खडक, गोशाला ।
 खरखरा० ना० पु० खरहरा ।
 खरपत्र० ना० पु० मरुवा, सुगन्धित पौधा ।
 खरवर० } ना० स्त्री० घोड़े के दौड़नेका शब्द
 खरभर० } खलपली, शोरगुल, हुल्लह, घोम ।
 खरमञ्जरी० ना० स्त्री० जंग ।
 खरयष्टिका० ना० स्त्री० खिरहटी ।
 खरल० ना० पु० घोषध पिसने का पात्र ।
 खरहरा० ना० पु० घोड़ाआदि मलनेकी वस्तु
 विशेष ।
 खरहार० ना० स० कि० भारना, घुहारना ।

कुरङ्ग० ना० पु० आगिरखनेके लिये कृत्रिमकुरङ्ग,
जलका विशेष स्थान, पति विद्यमान होते जा-
ज पुत्र, गडहा, तालाव ।

कुरङ्गल० ना० पु० कर्णभूषण, घेरा, मंडला मोती ।

कुरङ्गलिया० ना० स्त्री० गोलाई, छन्दविशेष ।

कुरङ्गलित० शु० गोलाकार, कुंडलयुत ।

कुरङ्गली० ना० पु० कचनार, गुरज ।

कुरङ्गी० ना० स्त्री० कोड़ी ।

कुतुप० ना० पु० दिनका आठवां घुहूर्त ।

कुतर्क० ना० स्त्री० नीचविचार, बुरीदलील ।

कुतर्फी० शु० कुतर्क करनेहारा ।

कुतर्ना० स० क्रि० दांतों से काटना ।

कुत्तल० ना० पु० धरातल, रूपजमीन ।

कुतिया० ना० स्त्री० कुत्ताकी स्त्री शु० कूतनेहारा ।

कुतुक० ना० पु० कौतुक ।

कुतूहल० ना० पु० कौतुक, चोप, उतावली,
खेल, हँसी ।

कुत्ता० ना० पु० कूकुर ।

कुत्सा० ना० स्त्री० निन्दा, अवज्ञा ।

कुत्सित० शु० निन्दित, नीच, बुरा, खराब,
निषेधित ।

कुदकना० अ० क्रि० उछलना, कूदना ।

कुदरा० ना० पु० अन्न विशेष, जिससे लकड़ी
चरते हैं ।

कुदराना० अ० क्रि० उछलना, कूदना ।

कुदाना० स० क्रि० उछलाना, फेंदना ।

कुदारि० } ना० स्त्री० मिट्टी लोदने का अस्त्र
कुदला० } विशेष ।

कुदष्टि० ना० स्त्री० पापदृष्टि, बदनजर ।

कुदाल० ना० पु० कचनार ।

कुधानु० ना० पु० लोहा रामयण यथा; पारस
पारस कुधानु सोहाई ।

कुधि० } शु० निर्धुंदि, बुरीगति, बेतमीन ।
कुधी० }

कुन्टी० ना० पु० मनसिल ।

कुनचा० ना० पु० कुण्वा, धराना, खानदान ।

कुनीति० ना० स्त्री० कुचाल, कुरीति, अन्याय ।

कुन्त० ना० पु० पानी, पयन, कमल, माला,
कराल, राजा विशेष ।

कुन्तल० ना० पु० बाल, केश, सूत्रधार, बर्दा,
हल, खेतजोतने का, राजा विशेष, यानर
विशेष, कपटी ।

कुन्तली० ना० पु० चिरपोटा ।

कुन्तिज० ना० पु० मुधिष्ठिरादि पांडव ।

कुन्ती० ना० स्त्री० पांडवोंकी माता ।

कुन्द० ना० पु० श्वेतवर्ण, पुष्प विशेष, उज्वल ।

कुन्दन० ना० पु० उत्तमस्वर्ण, अच्छासीना ।

कुपति० शु० दुष्टपति, दुष्टस्वामी, बुरामालिक ।

कुपथ० ना० पु० कुमार्ग, कुराह, बुरीराह ।

कुपथ्य० शु० जो पदार्थ पाचक न हो वा रोगी
का उपकारी न होवे, बदहजम ।

कुपरामर्श० ना० पु० कुमन्त्रण ।

कुपात्र० शु० अयोग्य, नालायक ।

कुपुरुष० शु० पुरुषार्थ रहित, बुरा ।

कुपूत० ना० पु० कपूत, नालायक लड़का ।

कुप्य० ना० पु० चांदी, रूपा ।

कुप्पा० ना० पु० चर्मका, बड़ापात्र चमड़े का
जिसमें धी आदि रखते हैं ।

कुप्पी० ना० स्त्री० छोटाकुप्पा ।

कुच० ना० पु० कुचका ।

कुचजा० ना० पु० कुञ्ज ।

कुचङ्ग० ना० पु० टेढ़ा ।

कुचङ्गा० शु० कुञ्जा ।

कुञ्ज० शु० कुचका, बकपृष्ठ ।

कुञ्जा० ना० स्त्री० कुचकी, टेढ़ी, कुरी प्रसिद्ध ।

कुघत० ना० स्त्री० निकृष्टवार्ता, बुरीबात ।

कुमंगडल० जा० पु० धरामंडल, राज्य ।

कुमति० ना० स्त्री० मूर्खता, अहमकी शु० उ-
न्मत्त, मूल ।

खरा० यु० चोखा, श्रेष्ठ, अच्छा ।
 खराई० ना० स्त्री० सचर, उत्तमता, सत्ता ।
 खरारि० ना० पु० थीरामचन्द्रनी ।
 खरिक० ना० स्त्री० सड़क, गोराली ।
 खरी० ना० स्त्री० सरसाका पीना, गधी, अच्छी, खड़ी ।
 खरें० यु० खड़े, ठाढ़, अच्छे ।
 खरोट० ना० स्त्री० बकोट, खसोट ।
 खरोचना० } स० कि० नोचना, खसोटना ।
 खरोटना० }
 खर्ज० ना० पु० रागोच्चारणका विशेष स्थान ।
 खर्जर० ना० स्त्री० चांदी, खजूरवृक्ष ।
 खर्जूरिका० ना० स्त्री० पिण्ड, खजूर ।
 खर्जूरी० ना० स्त्री० मसली ।
 खर्पर० ना० पु० पीठ, शिर ।
 खर्व्य० ना० पु० तुच्छ, छोटा, वामन, भेषी ।
 में सौ अर्घ्यको कहते हैं २००००००००००००० ।
 खर्य० ना० पु० मसौदा, टट्टर, सरसरी, चिट्टा, खसरा ।
 खर्याटा० ना० पु० सोते में घुराना ।
 खल० यु० दुष्ट, नीच, तुच्छ ।
 खलता० ना० स्त्री० दुष्टता ।
 खलवल० ना० स्त्री० हलवल ।
 खलवलाना० अ० कि० उवलना ।
 खलवली० ना० स्त्री० खलभर, हुलके ।
 खला० ना० स्त्री० पनुरिया, दुष्टिनि ।
 खलान० यु० खलका बहुवचन ।
 खलारि० ना० पु० श्रीनारायण ।
 खलारु० ना० पु० निचान, पस्ती ।
 खलियान० ना० पु० खलिहान, खसरा ।
 खलियाना० स० कि० खलिना, उधेडनी ।
 खलिहान० ना० पु० अनाज भंडिन वा खुदने का स्थान विशेष पेरू ।
 खली० ना० स्त्री० तिलादि की खुद ।
 खलीता० ना० पु० जेब, फारसी शब्द है ।
 खवा० ना० पु० कथा ।

खस० ना० पु० जातिविशेष ।
 खसकना० अ० कि० गिरपड़ना, गूक हटना ।
 खसकाना० स० कि० सरकाना, हटाना ।
 खसखस० ना० स्त्री० सुगन्धित वृक्षविशेष ।
 खसना० अ० कि० धसना, गिरपड़ना, पड़ना ।
 खसरा० ना० पु० बही, खरी, खुजली ।
 खसाना० स० कि० गिराना, विगाड़ना ।
 खसीमाल० ना० पु० पत्थर विशेष, गिरि ।
 खांचा० ना० पु० दोकड़ा, पिनरा, विशेष ।
 खांड० ना० स्त्री० शकरी, शकर ।
 खांडना० स० कि० छाटना, कटना ।
 खांडा० ना० पु० खडगविशेष ।
 खांसना० अ० कि० खांसना, टोंटा करना ।
 खांसी० ना० स्त्री० खरी ।
 खाग० ना० पु० गेहूँका साग ।
 खाज० ना० स्त्री० खुजली ।
 खाजा० ना० पु० मिठाई विशेष ।
 खाट० ना० स्त्री० चारपाई ।
 खात० ना० पु० गत्त, गड़हा, धूर, गीपर ।
 खात० ना० पु० रोजिनामा, खतबही ।
 ररानेका सुत्ता ।
 खाती० ना० पु० बड़े सरादी ।
 खाद० ना० पु० गोबरदि, घुरा ।
 खाद्य० यु० खाने के योग्य जो वस्तु ।
 खाना० स० कि० भोजन करना, अ० समाना, उपाजन वा भोगकरना, ना० भोजन ।
 खानि० ना० स्त्री० आकर, अशीष, उत्तम स्थान ।
 खानिक० यु० खानों की जो वस्तु ।
 खारका० ना० पु० हुंहरा ।
 खारा० यु० लोना ।
 खारी० यु० कड़वा नमक, लोनीला ।
 खाल० ना० स्त्री० चमड़ा, धोकरनी ।

कुमुद० ना० पु० कुमुद ।
 कुमदिन ना० पु० फूल ।
 कुमार० ना० पु० बालक, रामपुत्र, स्वामि-
 कालिक, कामरहित ।
 कुमारिका० } ना० स्त्री० कन्या, जिसकी रजो-
 कुमारी० } धर्म नहीं भया, साधारण सुता,
 धोकुवारिपौधा ।
 कुमार्ग० ना० पु० कुपथ, बुरा राह ।
 कुमुद० ना० पु० फूल जो राति की तिलता
 है और दिनको सम्पुष्ट होता है उसको श्वेत
 कमलभी कहते हैं और रामदल में वागर विशेष
 था, चांदनी, सुदरहित ।
 कुमुदवन्धु० ना० पु० चन्द्रमा ।
 कुमुदिनी० ना० स्त्री० कमलिनी ।
 कुम्भ० ना० पु० घडा, कलशा, कलशा ।
 कुम्भक० ना० पु० कुम्हार, योगक्रियामें पवन
 पेट वा ब्रह्मण्डमें रोकनेको कहते हैं ।
 कुम्भकर्ण० ना० पु० रावणका छोटा भाई ।
 कुम्भकार० ना० पु० कुम्हार, कुलाल ।
 कुम्भज० } ना० पु० अमरत्यमुनि ।
 कुम्भजात० }
 कुम्भयोनिका० ना० स्त्री० गोमापौधा ।
 कुम्भवीर्य० ना० पु० रीटा ।
 कुम्भा० ना० पु० छोटा कुम्भ ।
 कुम्भिका० ना० स्त्री० कुम्भी ।
 कुम्भिनी० ना० स्त्री० धरती, पृथ्वी ।
 कुम्भी० ना० स्त्री० पौधा जो तालानों में पानी
 पर जमता है, ना० पु० हाथी, कायफल,
 अगस्त्यमुनि ।
 कुम्भीनस० ना० पु० सोंप ।
 कुम्भोपाक० ना० पु० नरकविशेष ।
 कुम्भीर० ना० पु० मगरमच्छ ।
 कुम्भोरुणा० ना० स्त्री० निसेव ।
 कुम्हलाना० ना० कि० सुत्ताना, सूतना ।
 कुम्हार० ना० पु० जो मिट्टी के बर्तन बनाता है ।

कुम्हारी० ना० स्त्री० जन्तुविशेष जो अपना घर
 माटीसे बनाता है ।
 कुयोग० ना० पु० दुष्टयोग, दुःखदायक ग्रह पड़
 जाना, बुरासंयोग, बुराउपाय ।
 कुयोगी० पु० विषय भोगी रामायणे यथा पुत्र
 कुयोगी ज्यों उरगरी, मोहविष्ट नहीं सकत
 उतारी ।
 कुरङ्ग० ना० पु० हरिण, मृग ।
 कुरण्टक० } ना० पु० पियावांसा ।
 कुरचक० }
 कुरमा० ना० पु० कुनवा, घराना ।
 कुरारि० ना० स्त्री० सारसपत्नी ।
 कुरी० ना० स्त्री० समूह, घराना ।
 कुरीति० ना० स्त्री० कुचालि ।
 कुरीर० ना० स्त्री० कुटी, मदी ।
 कुर० ना० पु० राजा विशेष जिसकी सन्तान में
 कौरव और पाण्डव थे, नवखण्ड पृथ्वी में
 से एक ।
 कुरुकेतु० ना० पु० दुर्योधन, युधिष्ठिर, राजा
 परीक्षित ।
 कुरुक्षि० ना० स्त्री० नीचवास्तना, बदहजमी ।
 कुरुपति० } ना० पु० दुर्योधन, युधिष्ठिर,
 कुरुराय० } परीक्षित ।
 कुरुचक० ना० पु० फूलविशेष ।
 कुरुवेश० ना० पु० राजा कुरुक्षी सन्तान ।
 कुरुक्षेत्र० ना० पु० पुर्यक्षेत्र जहां भारत भयाथा ।
 कुरुप० पु० भोजा, बदसूरत ।
 कुरुकुटी० ना० पु० सेमर वृक्ष ।
 कुरुवा० ना० पु० कुन्व ।
 कुर्याल० ना० स्त्री० पत्नी जब आनन्द में आकर
 पंख झाड़ता है ।
 कुल० ना० पु० वंश, वर्ण, घराना ।
 कुलटा० ना० स्त्री० व्यभिचारिणी, जो स्त्री परपति
 रमण करे अर्थात् पतिव्रता नही ।
 कुलत्वा० ना० पु० वह सम्पदा, जो कोई घरवालों
 से उरायके इकट्ठाकरे, पूनी, धन ।

चड़ी० ना० सी० दादा चापल मिलित ।
 वना० अ० कि० तगना, सिचा रहना ।
 वाय० ना० पु० तनाव, विगाड़ ।
 जलाना० स० कि० } सताना, चिदाना,
 सिजाना० अ० कि० } क्रोधित होना ।
 क० ना० सी० विसियाहट ।
 कना० } अ० कि० सिगलाना ।
 कलाना० }
 ककी० ना० सी० करोसा ।
 कसिलाना० अ० कि० हँसना ।
 कजाना० } अ० कि० फूटना, हँपना
 कखाना० } होना ।
 लाट० पु० चंचल, खलनेवाला, चालाक ।
 खाना० स० कि० भोजन कराना, भोगकर-
 चाना, खलकराना ।
 खाना० ना० पु० खलनेकी वस्तु ।
 खी० ना० सी० हँसी, मजाक ।
 खलना० अ० कि० किसलना, हटना ।
 खलाहट० ना० सी० किसलाहट ।
 खियाना० अ० कि० सीस-तिकालना, सर-
 थाना, लनाना, यु० चिड़निष्ठा ।
 खियाहट० ना० सी० विसियानपन ।
 ख० ना० पु० अप्रसन्नता, चितहट ।
 ख० ना० सी० क्रोध, विसियाहट ।
 खना० अ० कि० क्रोधितहोना, दुःखपाना ।
 खा० ना० पु० फलविशेष ।
 खा० ना० सी० चावल जो दूध और खी में
 पकाये जाते हैं ।
 खा० ना० पु० बिरसा भेवा, नगरविशेष ।
 खा० } ना० पु० धानों के लामा ।
 खा० }
 खा० ना० पु० धंया, खरब, दांतका दिखला-
 हट, पीपुषा ।
 खाना० अ० कि० दांत काटना ।
 खा० ना० पु० खलीता, जेब, पैली ।

खजलना० } अ० कि० खजली करना ।
 खजलाना० }
 खजलाहट० ना० सी० गुजलापन, चल ।
 खजली० ना० सी० खाम ।
 खजाना० स० कि० खजलाना ।
 खटकना० स० कि० चपना, कुतरना, सन्देह
 करना ।
 खुटका० ना० पु० सन्देह, शक, खटक ।
 खुरडला० ना० पु० वृत्तकाखिद्र, खोरि ।
 खुट्यागा० स० कि० गहाना, माटी निकलाना,
 चिहित कराना, झंकित कराना ।
 खुनस० ना० सी० रिस, बह ।
 खुनसाना० अ० कि० रितागा, दाहलाना ।
 खुनसी० यु० क्रोधी ।
 खुन्दलना० स० कि० पांव से दवाना ।
 खुमी० ना० सी० कानका भूषण, धीरे ।
 खुर० ना० पु० मशुओं के पदका नख ।
 खुरचन० ना० सी० छीलन ।
 खुरचना० स० कि० छीलना ।
 खुररड० ना० पु० खूटी, देवली ।
 खुर्पा० ना० पु० } धातु छीलने का अक्ष ।
 खुर्पी० ना० सी० }
 खुलना० अ० कि० प्रकटहोना, विधरना ।
 खुच० ना० पु० नाड़ी विशेष ।
 खुट० ना० पु० कोना, कानका मेल ।
 खुटना० ना० सी० औषध विशेष ।
 खुटा० ना० पु० काट का टेकना, मेल ।
 खुटी० ना० सी० छोटा खूटा ।
 खुटना० स० कि० पांव से खोदना, यामारना ।
 खुटी० ना० सी० देवली, खुरखड ।
 खुद० ना० पु० खली, तरहुट यु० घोड़ेका
 नाचना ।
 खिसा० ना० पु० चिद विशेष ।
 खेचर० } ना० पु० पत्ती, अह, तारामण दे-
 खेचारी } वता, विद्याधरादि ।

कुलतारण० ना० पु० पुत्र जो कुलकी खान-
रखे या मङ्गल करके पुरुषों को तारे ।
कुलतिय० ना० स्त्री० पतिव्रता, सती, अथा-
विहारीलाल सप्तशतिकायां, दोहा, कहत न देवर
की क्वत कुलतिय कुलहि उराय, पि नर दिग मः
नारगति शुक्लौ मूखाते जाय ।
कुलद्रोही० गु० जो मनुष्य कुर्म करके वंश को
खिन्नकरे वा जो निजकुलको वैरीहोवे ।
कुलधर्म० ना० पु० वंशान्यवहार, कुलकाधर्म-
कुलपूज० } ना० पु० कुलका देवता वा मॉन्य
कुलपूज्य० } वा पुरोहित ।
कुलवधू० ना० स्त्री० कुलवन्ती, सुतिय ।
कुलबुलाना० अ० कि० कलमलाना, बुलबुलाना,
बुललाना ।
कुलवती० ना० स्त्री० कुलीनस्त्री, पतिव्रता ।
कुलवन्त० } गु० जो अश्वेश्वरमं उत्पन्नभया ।
कुलवान्० }
कुलक्षण० ना० पु० बुरे चिह्न, बुरास्वभाव ।
कुलक्षण० स्त्री० }
कुलक्षणी० गु० } जिसके लक्षण बुरेहों वा है ।
कुला० ना० स्त्री० मनसिल ।
कुलाञ्ज० ना० स्त्री० कूद, फांदनि, जस्त ।
कुलांगना० ना० स्त्री० कुलवान् स्त्री अथवाकुलया ।
कुलाचार० ना० पु० वंशका धर्म, अपने घराने
की रीति ।
कुलाल० ना० पु० कुम्हार ।
कुलाहल० ना० पु० फोलाहल ।
कुलिश० ना० पु० वज्र, हीरा ।
कुली० ना० स्त्री० बड़ीक्याई ।
कुलीन० ना० पु० अश्वेश्वर वा वंश में जो उत्प-
न्नभया ।
कुलीनता० } ना० स्त्री० भलेवंशका आचार
कुलीनाई० } वा बड़पन वा उलति; धर्म ।
कुलीरटंगी ना० स्त्री० ककरासिद्धी ।
कुहा० ना० पु० } मुख में जलकी किरायके
कुहा० ना० स्त्री० } फेंकना

कुहाड़ी० ना० स्त्री० कुटारी जिससे लकड़ी
आदि काटते हैं ।
कुहिया० ना० स्त्री० माटी का छोटा पात्र,
भुरकी ।
कुवल्य० ना० पु० कमल ।
कुवादी० गु० दुष्ट, कुवचनवक्ता
कुचिन्दु० ना० पु० नीचवीर्य, बदबुलका ।
कुचिंहग० ना० पु० बुरा, श्रेयन, वाज
कुचेर० ना० पु० यशराज, कुसुमय ।
कुश० ना० पु० वृषविशेष जो अति पवित्र गिना
जाताहै भीताजी का पुत्र; दैत्यविशेष, पानी,
पृथ्वी के सात द्वीपों में से एक ।
कुशमुद्रिका० ना० स्त्री० कुशकी सुन्दरी अर्थात्
पैती जो यज्ञादिमें पहिनेते हैं ।
कुशल० ना० पु० भलाई, कल्याण, चतुर ।
कुशलता० ना० स्त्री० भलाई ।
कुशलत्व० पु० कल्याण ।
कुशलक्षेम० स्त्री० }
कुशलात० } खैरआकियत ।
कुशली० गु० सुती, प्रसन्न, निपुण ।
कुशासन० ना० पु० कुशका अस्तन ।
कुशील० गु० शील रहित, बेमरुवत ।
कुशेशय० ना० पु० कमल ।
कुष्ठ० ना० पु० कौड़ तोहा ।
कुष्ठकन्तन० ना० पु० पंवार, बूढ़ी ।
कुपेय० ना० पु० लज्ज, तलवार ।
कुष्टसूदन० ना० पु० किरवाली ।
कुष्टी० कौड़ी ।
कुसह्म० ना० पु० बुरे लोगों का साथ ।
कुसुमय० ना० पु० कठिन समय, बुरे दिन,
आफत ।
कुसरात० ना० स्त्री० कुशलात ।
कुसीद० ना० पु० लाभके लिये शब्द देने ।
कुसुदा० ना० पु० कायफल ।
कुसुम० ना० पु० कुसुम फूल, कुसुम ।
कुसुमशर० ना० पु० कामदेव ।

खेटक० ना० पु० अहेर, शिकर और अल-
विशेष ।
खेटिक० ना० पु० अधिक, शिकारी ।
खेत० ना० पु० क्षेत्र, समरभूमि, पुण्यक्षेत्र, वह
भूमि जहां अनादि उपजता है ।
खेतल० ना० पु० आकामण्डल ।
खेती० ना० स्त्री० किसनई, शु० जैताऊ ।
खेद० ना० पु० शोक, दुःख, पश्चात्ताप ।
खेदना० स० क्रि० खदेड़ना, सताना और पीछा
करना ।
खेदित० शु० दुःखित, पीड़ित, सतायागया ।
खेरा० ना० पु० ऊजड़पुर, डीह ।
खेरी० ना० स्त्री० लोहाविशेष, हल ।
खेल० ना० पु० क्रीड़ा, जीवहलाय ।
खेलना० स० क्रि० क्रीड़ाकरना, जीवहलाना ।
खेवक० } ना० पु० नाविक, डांडी और मझाह ।
खेवट० }
खेवना० स० क्रि० डाड़मारना, नावचलाना ।
खेचा० ना० पु० उतराई, भंडा, पादीदेना,
उतारा ।
खेह० ना० स्त्री० राख, धूलि, खाक ।
खेच० ना० स्त्री० उखाड़ ।
खेचना० स० क्रि० ऐंचना, फसना, तानना ।
खेचाखेच० } ना० स्त्री० ऐंचा ऐंची, खेचा
खेचाखेची० } खेची ।
खैर० ना० पु० कल्या ।
खैला० ना० पु० दोहान, नयावैल वा बधड़ा ।
खोआ० ना० पु० खेड, सरखी, दूध जो उजालके
गादा कियानाता है ।
खोखना० अ० क्रि० खोसना ।
खोखी० ना० स्त्री० खोसी ।
खोच० ना० स्त्री० चीर ।
खोचना० स० क्रि० घुसेड़ना ।
खोचा० ना० पु० भराव, ऋक ।
खोड़कल० ना० पु० गड़हा ।
खोता० ना० पु० घोसला ।

खोसना० स० क्रि० दासना, घुसेड़ना ।
खोखला० शु० चांगला, खाली ।
खोखली० ना० स्त्री० ऊपरका मढ़ाव, जो दास
नहीं है ।
खोज० ना० पु० ढूँढ़, यत्न, चिन्त, पहिचान ।
खोजना० स० क्रि० ढूँढ़ना ।
खोट० ना० स्त्री० दोष, अवगुण ।
खोटा० शु० भगली, दोषी, झूठा, प्रथमी ।
खोटार्ह० ना० स्त्री० भगलपन दोष ।
खोदना० स० क्रि० गोड़ना, करकोलना ।
खोना० स० क्रि० गँवाना, उड़ाना ।
खोपड़ा० ना० पु० ललाट के ऊपर का अंग
नारियल की मूरी ।
खोपड़ी० ना० स्त्री० मस्तकके ऊपरका भाग
दिसका ।
खोपर० ना० पु० शिर ।
खोपरा० ना० पु० खोपड़ा ।
खोपरी० ना० स्त्री० खोपड़ी ।
खोपा० ना० पु० नारियल का गोला, जुड़ा ।
खोरि० ना० स्त्री० दोष, ग्लानि ।
खोरी० ना० स्त्री० गली, मार्ग, दोष, ग्लानि ।
खोल० ना० स्त्री० कांठी, टकना, दोहर, गंदा ।
खोलना० स० क्रि० प्रकट करना, विधाना;
उधेड़ना, लंगर उठाना ।
खोह० ना० पु० गुफा, गड़हा, कन्दरा ।
खोह० } ना० स्त्री० तिलक ।
खोरि० }
खौलना० अ० क्रि० उबलना ।
ख्यात० शु० प्रसिद्ध, प्रतिष्ठित, मशहूर ।
ख्याति० ना० स्त्री० यश, धाक, शुहरत ।
ख्यात्यापन्न० शु० कीर्तिमान्, नामी ।
ख्याल० ना० पु० क्रीड़ा खेल ।

(ग)

गँवाना० स० क्रि० खोना, उड़ाना, बहाना ।
गंचार० ना० पु० गांवकाभासी, कुपड़ा ।
गगन० ना० पु० आकाश, आसमान ।

कुसुमाकरं ना० पु० अस्त, कर्तु ।

कुसुमितं शु० फुलेहुये, प्रफुलितः ।

कुसुम्भं ना० पु० पुष्पविशेष जिसका बहुतलाल रंग कपड़ेपर आता है ।

कुहरं } ना० पु० कुहासा, कुहरा
कुहरां }

कुहरामं ना० पु० विलाप ।

कुमुकं ना० स्त्री० कोकिला को शब्द वा स्वर ।

कुहकनां अ० कि० वां किलाकी रीति से बोलना ।

कुहू० ना० स्त्री० प्रसन्नता, समावस ।

कुक्षां } ना० स्त्री० कौत्सि ।
कुक्षिं }

कुक्षां ना० पु० कूप, चाह ।

कुक्षारं ना० पु० आशिवन, सातवां महीना ।

कुक्कं ना० स्त्री० आवास, शब्द, शौर, ।

कुक्कनां अ० कि० आह मारना, विलाप करना, स० कि० घड़ी को कुन्नी से फरना ।

कुक्करं ना० पु० कुत्ता ।

कुक्कू० ना० पु० रूपोत्कर्ष शब्द ।

कुचनां स० कि० छेदना, घसड़ना, खुदना, कुचिलना ।

कुचीं ना० स्त्री० तृणविशेषकी वस्तु जिससे भीतम बना करत है वा बालों की वा धार किसी वस्तुकी ।

कुजनां अ० कि० बोलना ।

कुटं ना० पु० कपट, पर्वत, गोप, राजा, जिसका गांठा बनता है, जो निज अस्तिस प्रणहाने पथा, निहाई, ना० स्त्री० भौडती शु० मिथ्या, विकट ।

कुदनां स० कि० कुचलना, पीसना, पीटना, दवाना ।

कुट्टरवाहिनीं ना० स्त्री० निसात ।

कुटाथं ना० पु० विकटार्थ ।

कुट्टिं शु० व्यङ्ग्यचन ।

कुट्टीं शु० दूती, कुट्टनी, पीटीहई ।

कुवां ना० पु० स्नाइन, करकट ।

कुडुं शु० मूर्त, उन्नत ।

कूतं ना० पु० अटकल, अन्दाजे ।

कूतनां स० कि० मोल ठहराना, अटकलना, अन्दाजना, ठीक करना ।

कूदनां अ० कि० फांदना, उछलना ।

कूपारं ना० पु० समुद्र ।

कूबरीं ना० स्त्री० कंसकी दासी; जिसकी कृष्णचन्द्रने शुक्रन किया था वा काठकी टुकनी जो साधुओं के पास होती है शु० देवी ।

कूरं शु० कपटी, कठोर टेदा ।

कूदनं ना० पु० कूदना, खेलना ।

कूलं ना० पु० तीर किनारा, तट ।

कूलद्रुमं ना० पु० किनारेका वृक्ष विशेषार्थ, मृगु, सामिप्य ।

कूलां ना० पु० एक औरका चूतड़ ।

कूलीं ना० स्त्री० एक औरका पुट्टा ।

कूप्पाण्डं ना० पु० कुम्हड़ा, लोका ।

कूप्पाण्डकीं ना० स्त्री० कुम्हड़ा, सचड़ा ।

कूप्पाण्डां ना० स्त्री० देवी विशेष ।

कुकवाडुं ना० पु० मुर्गा ।

कूच्छोपवासं ना० पु० चान्द्रायणादि व्रत ।

कूतं शु० कियागया, बना, करवृत्ति ना० पु० यज्ञ, भाग्य, उपकार ।

कूतघ्नं शु० जो मनुष्य उपकार को नहीं माने, शुण न माने, यज्ञध्वंसी, पातकी ।

कूतघ्नतां } ना० स्त्री० हित करने से उ-
कूतघ्नताईं } लटा करे ।

कूतघ्नीं शु० कूतघ्न, किये को मटे ।

कूतनिन्दकं शु० कूतघ्न ।

कूतयुगं ना० पु० प्रथम युग सत्ययुग जो १७२००० वर्षका होता है ।

कूतवर्मां ना० पु० यादवविशेष ।

कूतज्ञं शु० जो उपकार मानताई, शुणवादी ना० पु० कुत्ता ।

गगनचक्र० ना० पु० पर्वी, देवता, प्रहादि ।
 गगरी० ना० स्त्री० कलशा, घड़ा ।
 गंगा० ना० स्त्री० भार्गवरथी नदी प्रसिद्ध ।
 गंगांयमुनी० ना० स्त्री० कर्णभूषण विशेष ।
 गंगाद्वार० ना० पु० गंगोत्तरी, हरद्वार ।
 गंगाधर० ना० पु० श्रीमहादेवजी ।
 गंगासागर० ना० पु० गंगा और समुद्र का संगम जहाँ कपिलदेव का स्थान है ।
 गंगेरुकी० ना० स्त्री० गंगेरुधा ।
 गंगोत्तरी० ना० स्त्री० गंगाजी के प्रकाश का स्थान जो वंद्रीनाथ के आसन्न है ।
 गंगोदक० ना० पु० गंगाजल ।
 गच्च० ना० स्त्री० चूना, लेट ।
 गच्चपच्च० ना० स्त्री० उलट पलट ।
 गच्छु० ना० पु० सुकाम, चाल ।
 गज० ना० पु० हाथी, दो हाथों की माप ।
 गजकेसर० ना० स्त्री० नागकेसर ।
 गजकृष्णा० ना० स्त्री० गजपीपरि ।
 गजगामिनी० यु० जिसकी हाथीकीसी चाल हो ।
 गजगाह० ना० पु० भ्रुव्यसहित हाथीका भूषण ।
 गजगौनी० यु० गजगमनी ।
 गजचिर्मटी० ना० स्त्री० इन्द्रवारुणी ।
 गज्जही० अ० कि० गरजता है ।
 गजदन्त० ना० पु० हाथी का दांत ।
 गजपति० ना० पु० हाथियों का स्वामी अर्थात् राजा वा जिसके हाथी हों ।
 गजपाटल० ना० पु० कज्जल ।
 गजपाल० ना० पु० महावत, श्रीलवान् ।
 गजपिप्पली० ना० स्त्री० गजपीपरि ।
 गजभिषक्० ना० पु० सौंठि ।
 गजमुख० ना० पु० गणेशजी, हाथी का मुँह ।
 गजमोती० ना० पु० मोती जो हाथी के मस्तक में होता है ।
 गजरा० ना० पु० गानरकापत्ता, फूलोंकी माला ।
 गजवदन० ना० पु० गणेशजी ।

गजवृसा० ना० पु० कैलाचल ।
 गजानन० ना० पु० गणेशजी, हाथी का मुख ।
 गजाशन० ना० पु० पीपल, पीपरि ।
 गज्ज० ना० पु० रोगविशेष जो शिरमें होता है ।
 गज्जा० यु० जिसके शिरमें गंज रोग होवे, ना० पु० गांजा, भांग, रोगविशेष ।
 गज्जित० यु० नशायागया ।
 गजपट० ना० स्त्री० उलट, पुलट, मिलित ।
 गटी० ना० स्त्री० समूह, रामचन्द्रिकायां यथा सब जात फटीं दुल्ल कीं दुपटीं कपटीं न रहै जहँ एक घटीं, निघटीं रुचि भीच घटीं दु घटीं जगजाव यतीन कीं छूटीं चटीं, अथ शोध कि बेरीं कटीं विकटीं निकटीं प्रकटीं गुग ज्ञान गटीं, चहुँ ओर न नाचत मुक्ति नदी गुण धून जटीं जटि पंचवटीं ।
 गट्टा० ना० पु० कलाई, मिठाई प्रसिद्ध ।
 गट्टा० ना० पु० बड़ोगठरी ।
 गठना० अ० कि० जुड़ना, मिलना ।
 गठरी० ना० स्त्री० मोठ, मोठरी, झुण्ड ।
 गठाना० स० कि० सिलवाना, पैकन्दलगवाना ।
 गठिया० ना० पु० गोन, यु० गाँठवाला ।
 गठोला० } यु० गाँठवाला, गठाहुआ ।
 गठिहा० }
 गडक० } ना० स्त्री० मखली वा मखली वि-
 गडका० } शेष ।
 गडगड़ाना० स० कि० गरजना ।
 गडरिया० ना० पु० जाति विशेष जो भेड़ें पालते हैं ।
 गड़न० ना० स्त्री० धसन, दलदल ।
 गड़ना० अ० कि० धसना, पैठना, छिदना ।
 गड़बड़० ना० पु० गटपट, उलट पलट, हल चल ।
 गड़बड़ा० ना० पु० खलबली, मरोड़ा, यु० लड़-
 बड़ा, धनराया भया ।
 गड़बड़ाना० अ० कि० धनराना, खलबलाना ।
 गड़बड़ाहट० ना० स्त्री० हड़बड़ाहट, भय ।

कृतज्ञता० ना० स्त्री० गुणवाद, उपकार मानना,
अहसान मानना ।

कृतान्त० ना० पु० यमराज, सिद्धान्त ।

कृतार्थे० शु० कृतकार्य, निहाल, अंशधारी, मुक्त ।

कृति० ना० स्त्री० काम करना ।

कृत्तिका० ना० स्त्री० तीसरा नक्षत्र ।

कृत्तिमरुक्ता० ना० पु० कांच ।

कृत्तिमंतार्त्त० ना० पु० रसीत ।

कृत्तिवासा० } ना० पु० श्रीमहादेवजी ।
कृत्तिवासा० }

कृत्या० ना० स्त्री० देवी, विशेष राक्षसी ।

कृत्स्न० शु० अशेष ।

कृदन्त० ना० पु० जो शब्द धातु से बना है ।

कृपण० शु० सूय, कंजूस, अदाता ।

कृपणता० ना० स्त्री० सूमी, कंजूसी, अदातृत्व ।

कृपा० ना० स्त्री० दया, मेहरबानी, रहम ।

कृपाण० ना० पु० खट्ट, तलवार ।

कृपालु० शु० दया शील, दयावन्त, रहीम ।

कृमि० ना० पु० कीड़ा ।

कृमिघ्न० ना० पु० विदह श्रीयधि ।

कृमिजग्घा० ना० पु० काला अयुध ।

कृश० शु० दुर्बल, क्षीण, लडा ।

कृशत० ना० स्त्री० दुर्बलता, क्षीणता ।

कृशाङ्गी० शु० जिसके अंग खिंचे हुये हैं ।

कृशानु० ना० पु० अग्नि, आगि ।

कृषाण० } ना० पु० किसान खेतीवाला ।
कृषिक० }

कृषिकर्म० ना० पु० हलजातना, खेती करना ।

कृषी० ना० स्त्री० खेती, किसानई ।

कृषीवल० ना० पु० किसान, कृषाण ।

कृष्ण० ना० पु० श्रीकृष्ण, श्यामसुन्दरजी, काला,
जीरा, कालातीतर, कालाहरिण, शु० श्याम,
कालारंग ।

कृष्णगन्धा० ना० पु० सहिजन वृक्ष ।

कृष्णता० ना० स्त्री० छुपची, श्यामता ।

कृष्णपत्त० ना० पु० बंदी, अधेरा पाल ।

कृष्णफला० ना० स्त्री० बाकुची, बड़ाकरीदा ।

कृष्णभद्रा० ना० स्त्री० कुटकी ।

कृष्णवीर्य्य० ना० पु० तरवृज ।

कृष्णवृत्तिका० ना० स्त्री० कम्भारी ।

कृष्णसार० ना० पु० कालाहरिण ।

कृष्णा० ना० स्त्री० नदी विशेष, जो दक्षिण
भरतखण्ड में है, पीपरी, यमुनाजी ।

कृष्णाग्रज० ना० पु० श्रीवलदेवजी ।

कृष्णागह० ना० पु० काला अयुध ।

कृष्णाफल० ना० पु० स्याहमिर्च ।

कृष्णार्पण० शु० भगवान्हेत ।

कृष्णोपकुल्या० ना० स्त्री० पीपरी ।

कृष्मरी० ना० स्त्री० कम्भारी ।

कृत्रिम० शु० बनायाहुआ, रचित ।

क्रे० अर्थ० संबन्धबोधक ।

क्रेकयी० ना० स्त्री० भरतजी की माता ।

क्रेकड़ा० ना० पु० ककट, गैगटा ।

क्रेकप० ना० पु० राजा वा देश विशेष ।

क्रेकरा० ना० पु० क्रेकड़ा ।

क्रेका० ना० स्त्री० मोरप्वनि, मोरोंका शब्द ।

क्रेकी० ना० पु० मोर, मयूर ।

क्रेतकी० ना० स्त्री० केवड़ा वृक्ष वा पुष्प विशेष ।

क्रेतिक० शु० थोड़े, दोचार, कितना ।

क्रेतु० ना० पु० नवमग्रह, पुच्छलतारा, पताका
भण्डा वा भण्डा ।

क्रेतुकि० ना० पु० आकाश, पुष्पविशेष, सूर्य,
चन्द्रमा, कामदेव, छन्द ।

क्रेतुमाल० ना० पु० पृथ्वी नवराखण्डों में से एक
का नाम ।

क्रेन्द्र० ना० पु० मरकत, गोलाकार वा वृत्त-
रेखका यह मध्यस्थान जहाँ से परिधि तक
जितनी रेखा खींची जावे वह सप्त परस्पर
तुल्यहो ।

क्रेयूर० ना० पु० आभूषण केयर ।

क्रेरि० ना० पु० केला वृक्ष, ना० स्त्री० केलि ।

गड्हा० ना० पु० गन्त, गड्हा, ताल ।
 गड्डिया० ना० स्त्री० खलार, खालीखेत, गाँह ।
 गड्ड्या० ना० पु० टोंडीवाला लोथ ।
 गड्डीना० स० क्रि० छेदना, खंसना ।
 गड्ढ० ना० पु० फोट, किलघ ।
 गड्ढना० स० क्रि० ठोकना, बनाना ।
 गड्ढनि० ना० स्त्री० बनावट ।
 गड्ढवार० शु०-मोटा, गाढ़ा, गड्ढवाल ।
 गड्ढवाल० शु०-किलेदार, गड्ढकारक ।
 गड्ढा० ना० पु० गड्हा, गार ।
 गड्हाई० ना० स्त्री० गहने आदि की चन्नावाँचि बनवाने का काम ।
 गड्डी० ना० स्त्री० छोटा गड् ।
 गड्ढेला० ना० पु० पृथ्वी में खोदाभया गड्हा ।
 गड्ढैया० ना० स्त्री० छोटा पोतरा, शु० गड्ढेहांस ।
 गण० ना० पु० समूह महादेव के गणोंको झुण्ड ।
 गणक० ना० पु० देवज्ञ, ज्योतिषी, हिसाबी ।
 गणना० ना० स्त्री० पढ़पाठ, गिनती, शुमार ।
 गणनाथ० ना० पु० गणनायक ।
 गणनायक० }
 गणपति० } ना० पु० गणेशजी, गृहनाथ ।
 गणराज० }
 गणराज० }
 गणाधिप० }
 गणिका० ना० स्त्री० वेरया, पतुरिया, जड़ी ।
 गणित० ना० पु० अंकविद्या, हिसाब ।
 गणितकार० ना० पु० गणक ।
 गणेश० ना० पु० पार्वती के पुत्र आदि देवता ।
 गण्ड० ना० पु० नेत्रोंके नीचे का भाग, गाल ।
 गण्डक० ना० पु० गोंडा पशु, नदविशेष ।
 गण्डदूचा० ना० स्त्री० गण्ड, दूब ।
 गण्डमाला० ना० पु० कान के नीचे फोड़ा का रोग विशेष ।
 गण्डा० ना० पु० वेरा, चारिकोड़ी वा पैसा

वा खपया, बालकादि के गले में बांधने के लिये अभिमन्त्रित सूत ।
 गण्डासा० ना० पु० अश्वविशेष ।
 गण्डासी० ना० स्त्री० छोटा गण्डासा ।
 गण्डिका० ना० स्त्री० नदी विशेष ।
 गण्डी० ना० स्त्री० बेरा जिसमें शीरामन्त्रजी सीताजी को बैठल गये थे ।
 गण्डीर० ना० पु० रेंहुड, वृक्ष ।
 गण्डीर० ना० पु० ऊत, गचा, यथा स्थानों मधुनृषीगण्डीरी-मधुपत्रक इति निबन्धः ।
 गण्डुल० शु० प्रफुला ।
 गण्डुप० ना० स्त्री० पानी का कुहा ।
 गण्य० शु० जो गिनाजाया ।
 गत० शु० प्राप्त, अतीत, व्यतीत, निकृष्ट ।
 गतागत० ना० पु० उलटफेर ।
 गतार्थ० शु० एकके जानने से अन्यको जानना ।
 गति० ना० स्त्री० चाल, सुक्ति, दिशा, ज्ञान, गमन, दिशा, क्रिया, कर्म ।
 गते० अर्थ्य० होले धीमे ।
 गत्ते० अर्थ्य० गति ।
 गत्यर्थ० शु० जिसका अर्थ गति है या जिससे गतिका अर्थ पाया जावे ।
 गथ० ना० पु० माल, दाम ।
 गद्द० ना० पु० रोग, आस्त्र ।
 गदका० ना० पु० पटा, दंडविशेष ।
 गदकारी० ना० स्त्री० शुद्धदी, रोगकारकवस्तु ।
 गदला० ना० पु० देवरा, मैला ।
 गदलाई० ना० स्त्री० मैलापन ।
 गदशशु० ना० पु० बैच हकीम ।
 गदा० ना० स्त्री० सोंटा, लाठी, गुर्ज ।
 गदाधर० शु० लाठीवाला, गदा बांधनेवाला, ना० पु० विशेष श्रीकृष्णचन्द्रजी का नाम ।
 गदायुद्ध० ना० पु० लाठीकी लड़ाई, गदाकी लड़ाई ।
 गदारि० ना० पु० बैच, तवीव ।

केलि० } ना० स्त्री० कीड़ा, विहार, ऐश-
केली० } आराम ।

केवट० ना० पु० मलाह, खेपक ।

केवडा० ना० पु० पुष्प वा वृक्षविशेष ।

केवल० अव्य० मात्र, फलतः गु० एकही ।

केवली० ना० स्त्री० जन्मपत्नी ।

केवा० सर्व० कोई ।

केश० ना० स्त्री० बाल ।

केशफला० ना० स्त्री० बेरी वृक्ष वा उसका फल
यथा शिम्बुच्छदा केशफला सीनीरिका, इति
निघण्टुः ।

केशर० ना० पु० केशर, नागकेशर ।

केशरंजन० ना० पु० भंगरा पीथा ।

केशरी० ना० पु० हनुमान्जी के पिता, सिंह ।

केशव० ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्रका एक नाम ।

केशवर्षी० ना० स्त्री० बालोंकी लट ।

केशाकेशी० ना० पु० परस्पर बालों को पकड़
के लड़ना वा लड़ाना ।

केशी० ना० पु० दैत्यविशेष जिसकी श्रीकृष्ण-
चन्द्र ने बध कियाथा गु० बालोंवाला ।

केशरिया० गु० केशरसे रंगाभया, पीला ।

केहरि० } ना० पु० सिंह, शेर, व्याघ्र ।
केहरी० }

के० सर्व० कितना, अनेक ।

कैचली० ना० स्त्री० संपन्न स्त्री ।

कैटभ० ना० पु० दैत्यविशेष ।

कैत० ना० पु० कैथाना वृक्ष ।

कैतव० ना० पु० चिरायता, छल ।

कैथ० } ना० पु० वृक्षविशेष ।
कैथा० }

कैथी० ना० स्त्री० नागरीका एक प्रकारका लेख
जो कायरों ने कल्पना किया है ।

कैरव० ना० पु० फूल, श्वेतकमल ।

कैल० ना० स्त्री० थंकर, गामा ।

कैलाश० } ना० पु० पर्वतविशेष, जहाँ शिवजी
कैलास० } और कुबेर आदि यज्ञगण रहते हैं ।

कैव० ना० पु० कदम वृक्ष ।

कैवर्त्त० ना० मल्लाह, फहार, धीमर, केवट ।

कैवल्य० ना० पु० मोक्ष, मुक्ति ।

कैशिक० ना० स्त्री० बालोंकी लट ।

कैसा० सर्व० किस प्रकार ।

कैहूँ० भवि० कि० करूंगा वा कहुंगा ।

को० अव्य० कर्मणिस्त्रक द्वितीयाका, सर्व्व कीन ।

को० सर्व्व० अनिश्चय, एक, ना० पु० कमल
विशेष ।

कोऊ० सर्व्व० कोई जोहो ।

कोचना० सर्व्व० कि० छेदना, चुभाना ।

कोपल० ना० पु० नयेपत्ते, गुच्छा ।

कोक० ना० पु० ग्रन्थ विशेष जिस में स्त्री प्र-
संग की प्रतिपादकता का वर्णन है, फूल ।

कोकनद० ना० पु० लाल कमल ।

कोकर्ण० ना० पु० अतसगन्ध ।

कोका० ना० पु० चकई चकवा, दूधगाई, फूल
पिण्डतजूर ।

कोकिल० } ना० स्त्री० पक्षीविशेष कोकिल ।
कोकिला० }

कोकी० ना० स्त्री० चकई ।

कोख० } ना० स्त्री० कुचि ।
कोखा० }

कोखगन्ध० गु० मांस, बन्ध्या ।

कोख० ना० स्त्री० कोख, कुचि ।

कोछा० } ना० स्त्री० गोदी, ओदने की गोली ।
कोछी० }

कोट० ना० पु० गढ़, किल्ल, नगर ।

कोटर० ना० पु० वृक्षकी खोह ।

कोटवी० गु० गंगी स्त्री०, ना० स्त्री० मापासुरक
महतारी ।

कोटा० ना० पु० राजपूताने का नगर विशेष ।

कोटि० ना० स्त्री० एक घोरकी भुज, पहिल
पस, किराह, सी सात ।

कोटरी० ना० स्त्री० छोटा कोटा ।

कोटा० ना० पु० पटाहुद्या एक नहा घर ।

गदेलाना० ना० पु० मोटा विद्योना वा जितमें बहुत
 रई भरकर पहिन्ते है ।
 गदगद० गु० हर्षवान्, शोक वा धानन्दमें मगना ।
 गदर० गु० अधपका ।
 गद्दी० ना० स्त्री० तफिया वा बिलौना वा आसन
 वा राना का सिंहासन, जातिविशेष ।
 गद्य० ना० पु० छन्दविना काव्य, वार्तिक ।
 गघ्रा० ना० पु० गदहा ।
 गन्त० ना० पु० गण ।
 गनना० स० कि० गिनना, शुमारकरना ।
 गन्ध० ना० पु० कदमवृक्ष, स्त्री० वास, वृष ।
 गन्धक० ना० पु० श्रीषधिविशेष ।
 गन्धगर्म० ना० पु० बेलवृक्ष ।
 गन्धमादत० ना० पु० पर्वतविशेष ।
 गन्धमूलक० ना० पु० कचूर ।
 गन्धमुल्लिनी० ना० स्त्री० कचूरभेद ।
 गन्धमूली० ना० स्त्री० रासना ।
 गन्धराज० ना० पु० चन्दन सुगन्धित, विशिष्ट
 पुष्प ।
 गन्धर्व्व० ना० पु० देवता, स्वर्ग के गायक ।
 गन्धर्व्वनगर० ना० पु० सामान्य गन्धर्व्वलोक
 विशेष मुख्य आकाशमें जो विषु विचित्र की
 मूर्ते दृष्टि आती है जब देरतक देखने से आँस
 तिरमिरा जाती है ।
 गन्धर्व्वहस्तक० ना० पु० बेलवृक्ष ।
 गन्धयह० ना० पु० वायु, पवन, हवा ।
 गन्धसार० ना० पु० चन्दन ।
 गन्धा० ना० पु० नागदीन, कदमवृक्ष ।
 गन्धान० ना० पु० सुवर्ण, सोना ।
 गन्धायुश्मा० ना० पु० गन्धक ।
 गन्धार० ना० पु० रागका स्वरविशेष ।
 गन्धारी० ना० स्त्री० इयौधनकी माता, श्वास
 जो यामात्र में प्रकाशित होती है ज्ञानतरंग
 यथा, गन्धारी यामात्र निवासी, हस्तनिहा
 दक्षिण दिवासी ।
 गन्धि० ना० स्त्री० बाल, वृष, गन्धक ।

गन्धिका० ना० स्त्री० आहूबर ।
 गान्धकारिणी० ना० स्त्री० लजारू ।
 गन्धिलुब्ध० गु० जो सुगन्धि के लालचमें हो ।
 गन्धी० ना० पु० अत्तार, सुगन्धित तैल बेचने
 हारा ।
 गघ्ना० ना० पु० ऊख, गांहा, खंड ।
 गप० } ना० स्त्री० बक, बकवक ।
 गपशप० }
 गप्पी० गु० बकवादी ।
 गमस्ति० ना० स्त्री० किरण, ज्योति ।
 गभीर० गु० गम्भीर ।
 गभुजारे० गु० छेदेदार बाल, पैदायशीबाल ।
 गमन० ना० पु० चलन ।
 गमनागमन० ना० पु० जाना आना ।
 गमनी० ना० स्त्री० चलनेवाली ।
 गमनीय० गु० चलने के योग्य, चलनेवाला ।
 गम्भीर० गु० गहिरा, प्रवगाह ।
 गम्भीरता० ना० स्त्री० गहराई ।
 गम्य० गु० जानेके योग्य, मिलनहार ।
 गय० } ना० पु० हाथी ।
 गयन्द० }
 गया० ना० स्त्री० नगर वा तीर्थविशेष जहाँ
 हिन्दूलोग पुण्यों की पिण्ड देते है ।
 गयाली० ना० पु० गयावाल, गयाके भाषण्यी ।
 ग्यारस० ना० स्त्री० एकदशी ।
 ग्याह० गुं० दश और एक ।
 गर० ना० पु० रोग, विष, गला ।
 गरगराना० अ० कि० कुलीकरना, गरजना ।
 गरजना० अ० कि० घड़घड़ाना, शब्दकरना ।
 गरल० ना० पु० विष, हलाहल ।
 गरह० ना० पु० गठियावायु ।
 गरामरी० ना० स्त्री० देवदाली ।
 गरारी० ना० स्त्री० रस्सी वा सूत बरतकायुद्ध,
 कूपसे जल निकालनेकी गोल काठकी वस्तु ।
 गरिमा० ना० स्त्री० गुरुता, गरवई, अहंकार
 आठ सिद्धिमेंसे एकका नाम ।

कोडि० ना० स्त्री० कोस ।
 कोठी० ना० स्त्री० महाजनों वा राजाओं वा ठाकुरों की बैठक का स्थान ।
 कोढ़ना० स० कि० लोढ़ना ।
 कोड़ा० ना० पु० चातुक ।
 कोढ़० ना० पु० कुष्ठ, रोगविशेष ।
 कोढ़ना० थ० कि० दुःखताहेना ।
 कोड़ी० ना० पु० कुष्टी ।
 कोण० ना० पु० कोना, दिन, पृथ्वी ।
 कोद० ना० स्त्री० धोर, पत्त, तरफ ।
 कोदरड० ना० पु० शिवजी का धनुष धनुष ।
 कोद्व० ना० पु० कोदी, थम विशेष ।
 कोना० ना० पु० जो दो सूची रखीया के मिलान से बनता है परन्तु वे रखा एक सूध में न ही ।
 कोपे० ना० पु० क्रोध, गुस्साह ।
 कोपना० थ० कि० क्रोधित होना, गुस्साकरना, ना० स्त्री० स्त्री ।
 कोपर० } ना० पु० पत्र विशेष ।
 कोपल० }
 कोपान्वित० थ० कोपपुत, गुस्से से भरा ।
 कोपी० थ० कोपान्वित, कोही ।
 कोपीन० ना० स्त्री० लंगोटी, लंगोटी ।
 कोमल० थ० नम्र, नया, भोला, नरम ।
 कोमलता० ना० स्त्री० नरमी, भोलापन ।
 कोयल० ना० स्त्री० पत्नी, विशेष, पुण्य विशेष ।
 कोयला० ना० पु० अगारें बुझाभया ।
 कोर० ना० स्त्री० कगर, छोर धार ।
 कोरक० ना० पु० कर्ली ।
 कोरडी० ना० स्त्री० छोटी शलायची ।
 कोरा० थ० विनाधोया कपड़ा, विना लिखा ।
 कोराज० मिष्टी का नया पात्र जो काम में न आया हो ।
 कार० ना० स्त्री० कोटि, किराह ।
 कोरी० ना० स्त्री० नई, ना० पु० जातिविशेष ।

कोर्थ० सर्व० किरा हेतु, किस लिये ।
 कोल० ना० पु० शकर, नीचजाति विशेष, खात गली जो लम्बी संकेतही ।
 कोलचल्लिका० ना० स्त्री० कैथापे वृक्ष ।
 कोला० ना० स्त्री० पीपरि ।
 कोलाफल० ना० पु० महुया वृक्ष ।
 कोलाहल० ना० पु० कलकल, रौला, शोर ।
 कोलिका० ना० स्त्री० कालीमिरच ।
 कोलियाना० स० कि० गोदी में रेंगा ।
 कोल्हू० ना० पु० जिस्से सेल निकालते है वा ऊपर परते है ।
 कोचिद० थ० पण्डित, गुणी ।
 कोश० ना० पु० कमल, मध्यभाग ।
 कोशल० ना० पु० कुशल, देशविशेष ।
 कोशलपति० ना० पु० दशरथ, अतिमिचन्द्र, अथथ भूप ।
 कोशलपुर० ना० पु० }
 कोशलपुरी० ना० स्त्री० } श्री अयोध्याजी ।
 कोशलाधीश० ना० पु० कोशलपति श्री-
 कोशलेश० रामचन्द्रजी ।
 कोप० ना० पु० अविधान, अय्यार, अय्य, लदादि की जाति, लुरतका अखाना, अखाना ।
 कोष्ट० ना० पु० खात, कोठा, थोक ।
 कोष्टक० ना० पु० तस्ता ।
 कोस० ना० पु० २ मीलका वा २००० दंडका ।
 कोशना० स० कि० शापदेना, इरामानना ।
 कोह० ना० पु० क्रोध, दुःख डार, पेठमें आग लगना, दिलजलना ।
 कोहनी० ना० स्त्री० बाह के बीचकी गांठि ।
 कोहाव० ना० पु० डारखाना ।
 कोही० थ० कोथी, रामायण यथा, कर-कुठार में अकरण कोही । अग्रे अपराधी, यदुकोही ।
 कौ० अय्य० का ।
 कौ० अय्य० का ।
 कौआ० ना० पु० कर्ग ।
 कौंध० ना० पु० प्रकार, प्रताप ।

गड्हा० ना० पु० गर्त, गड्हा, ताल ।
 गडिया० ना० स्त्री० खलार, सालीखित, गाँह ।
 गडुआ० ना० पु० टोटीवाला लोटा ।
 गडोना० स० कि० छेदना, खोसना ।
 गडु० ना० पु० कोट, किल्ला ।
 गडुना० स० कि० टोकना, बनाना ।
 गडुनि० ना० स्त्री० सनापट ।
 गडुवार० यु० मोटा, गाढ़ा, गडवाला ।
 गडुवाल० यु० किलेदार, गडका रक्षक ।
 गड्हा० ना० पु० गडहा, गार ।
 गड्हाई० ना० स्त्री० गहने आदि की बनेवाई का
 बनवाने का काम ।
 गड्डी० ना० स्त्री० छोटा गड़ ।
 गड्ढेला० ना० पु० पृथ्वी में खोदाभया गड्ढा ।
 गड्ढैया० ना० स्त्री० छोटा पोखरा, यु० गड्ढेहार ।
 गण० ना० पु० समूह महादेव के गणों का कुण्ड ।
 गणक० ना० पु० देवज्ञ, ज्योतिषी, हिसाबी ।
 गणना० ना० स्त्री० पत्रपात, गिनती, शुमार ।
 गणनाथ० ना० पु० गणनायक ।
 गणनायक० }
 गणपति० } ना० पु० गणेशजी, गूथनाथ ।
 गणराज० }
 गणराज० }
 गणाधिप० }
 गणिका० ना० स्त्री० बेश्या, पतुरिया, जूही ।
 गणित० ना० पु० अंकविद्या, हिसाब ।
 गणितकार० ना० पु० गणक ।
 गणेश० ना० पु० पार्वती के पुत्र आदि देवता ।
 गण्ड० ना० पु० नैर्वाके नीचे का भाग, गाल ।
 गण्डक० ना० पु० गेडा पशु, नदविशेष ।
 गण्डदूर्वा० ना० स्त्री० गण्ड, दूब ।
 गण्डमाला० ना० पु० कान के नीचे फाँड़ा का
 रोग विशेष ।
 गण्डा० ना० पु० घेरा, चारिकोड़ी वा पैसा

वा रुपया, बालकादि के गले में बांधने के लिये
 अभिमन्त्रित सूत ।
 गण्डासा० ना० पु० अन्नविशेष ।
 गण्डासी० ना० स्त्री० छोटा गण्डासा ।
 गण्डिका० ना० स्त्री० नदी विशेष ।
 गणडी० ना० स्त्री० घेरा जिसमें श्रीरामचन्द्रजी
 सीतानी को बैठाए गये थे ।
 गणडीर० ना० पु० सेहुडा वृक्ष ।
 गणडीर० ना० पु० ऊख, गन्ना, यथाः कृष्ण
 रामो मधुनृथानरडीरो मधुपनक इति निर्घटः ।
 गण्डुल० यु० प्रफुला ।
 गण्डुप० ना० स्त्री० पानी का कूहा ।
 गण्य० यु० जो गिना जाय ।
 गत० यु० प्राप्त, अतीत, व्यतीत, निकट ।
 गतागत० ना० पु० उलटफेर ।
 गतार्थ० यु० एकके जानने से अन्यको जानना ।
 गति० ना० स्त्री० चाल, मुक्ति, पदशा, ज्ञान,
 गमन, दिशा, क्रिया, कर्म ।
 गते० अव्य० होले धीमे ।
 गत्ते० अव्य० गाते ।
 गत्यर्थ० यु० जिसका अर्थ गीत है या जिससे
 गतिका अर्थ पाया जावे ।
 गथ० ना० पु० माल, दाम ।
 गद० ना० पु० रोग, आरज ।
 गदका० ना० पु० पटा, दंडाविशेष ।
 गदकारी० ना० स्त्री० गुदगुदी, रोगकारकवस्तु ।
 गदला० ना० पु० ढंकरा, भैला ।
 गदलाई० ना० स्त्री० भैलापिन ।
 गदशत्रु० ना० पु० वैद्य हकीम ।
 गदा० ना० स्त्री० सोटा, लाठी, गुर्जे ।
 गदाधर० यु० लाठीवाला, गदा बांधनेवाला,
 ना० पु० विशेष श्रीकृष्णचन्द्रजी का नाम ।
 गदायुद्ध० ना० पु० लाठीकी लड़ाई, गदाकी
 लड़ाई ।
 गदारि० ना० पु० वैद्य, तबीब ।

धना० य० क्रि० प्रकाशाहोना, चमकना ।
 धा० ना० पु० विजली ।
 दिव्याला० ना० पु० सर्पविशेष, धनी, नदी
 विशेष जिसको शरयू कहते हैं ।
 दी० ना० स्त्री० छोटा रात, धन, कुमारी ।
 णप० ना० पु० देवराक्षस ।
 तुक० ना० पु० कौतूहल, परिहास, तर्माशा ।
 तुकिया० } यु० परिहास, तर्माशनी ।
 तुकी० }
 तुहल० ना० पु० कुतूहल ।
 तन० सर्व० प्रश्नबोधक ।
 तन्ता० ना० स्त्री० कुन्ती ।
 तन्ती० ना० स्त्री० रघुका चौपथ ।
 तन्तैय० ना० स्त्री० पाएव विशेष ।
 तपोन० ना० पु० कौपीन, लंगोटी ।
 तमारी० ना० स्त्री० देवाविशेष ।
 तमुदा० ना० स्त्री० चन्द्रिका, व्योति, पुस्तक
 विशेष ।
 तर० ना० पु० कंबल, लुकमा ।
 त्रयपाण्डु० ना० पु० कौरव, थोरपाण्डव ।
 त्रय० ना० पु० कुनरान की सन्तान ।
 त्रय० ना० पु० पुनिविशेष ।
 त्रोल० ना० पु० लुकमा, मास, नेवाला, धर्म वि-
 शेष, उ० कुलीन ।
 त्रिला० ना० पु० फोटरी आदिके पांजरका कोना
 श्रेकवारा ।
 ती० ना० स्त्री० गोदी ।
 ती० ना० पु० कृत्ता, यथा, कौशियुसार-
 मेयश्च, कुवकरो, मृगदेशकः इत्यमरः ।
 तीलेली० ना० पु० गन्धक ।
 तीरे० ना० पु० कूटवा ।
 तीर्य० पु० जो कुंठर सम्बन्धी ही ।
 तीश्या० ना० स्त्री० जम कुशल, इंधीराम-
 चन्द्रजीकी माता ।
 तीशिक० ना० पु० विश्वामित्रमुनि, इन्द्रमुग्धुल,
 उलूक, पत्नी, दण्ड ।

कौशिकी० ना० स्त्री० नदीविशेष ।
 कौशेय० पु० पाटी वस्त्र ।
 कौसीस० ना० पु० कमल ।
 कौस्तुभमणि० ना० स्त्री० मणिविशेष जिसको
 विष्णुजीने उरपर धारण किया है ।
 क्या० सर्व० प्रश्नबोधक ।
 क्यारी० ना० स्त्री० बागों वा खेतों में बनेती है ।
 क्यो० }
 क्योकर० } अर्थ० किसलिये, किसप्रकार ।
 क्योकि० }
 ककच० ना० पु० करील वृक्ष ।
 ककुध्वसा० ना० पु० महादेवगी ।
 ककुभुज० } ना० पु० देवता जो यज्ञ में खति
 ककुभुज० } है ।
 कतिमालक० ना० पु० किरवाला ।
 कम० ना० पु० परिपाटी, रीति, सिलसिला,
 मिलाप, धीरे-धीरे ।
 कामकाम० ना० पु० धीरे धीरे, दर्ज दर्ज ।
 कामुक० ना० स्त्री० सुपारी ।
 कामिकुम्भ० ना० स्त्री० इन्द्रतीरथा ।
 कामलक० ना० पु० कंठ यथा उद्गमके लक्ष्य
 महांगः करभः शिशुः इत्यमरः ।
 कथ्यात्० } ना० पु० राक्षस, कथामांसभची ।
 कथ्यात्० }
 कान्ति० ना० स्त्री० चमक, शोभा, दीप्ति,
 प्रकाश ।
 क्रिया० ना० स्त्री० व्यवहार, काम, धर्म,
 नित्यकर्म, यज्ञ, उपाय, मरनेके पीछे शास्त्रोक्त
 कर्म ।
 क्रियाद्योत० पु० कर्त्तव्य, दशाकी सूचक ।
 क्रियान्वयित्व० ना० पु० क्रिया पदकी चार
 सम्बन्ध रतना ।
 क्रोडा० ना० स्त्री० केलि, लीला ।
 कृति० पु० माललिया ।
 क्रीपमान० पु० किये हुए वा खूबक किये-
 कृद्ध० पु० रिसवरा, क्रोधित, खफा ।

गदेला० ना० पु० मोटा विछौना वा जिसमें बहुत
 रुई भरकर पहिनेते हैं ।
 गद्गद्० शु० हँसवान्, शोक वा ध्यानन्तर्गमन ।
 गद्दर० शु० अल्पका ।
 गद्दी० ना० स्त्री० तक्रिया वा विछौना वा आसन
 वा राजा का सिंहासन, जातिविशेष ।
 गद्य० ना० पु० छन्दविना काव्य, वार्तिक ।
 गधा० ना० पु० गद्दा ।
 गन० ना० पु० गण ।
 गनना० स० क्रि० गिनना, शुमारकरना ।
 गन्ध० ना० पु० कदमवृक्ष, स्त्री० नास, वृष ।
 गन्धक० ना० पु० श्लेषविशेष ।
 गन्धगर्म० ना० पु० बेलवृक्ष ।
 गन्धमादन० ना० पु० पर्वतविशेष ।
 गन्धमूलक० ना० पु० कचूर ।
 गन्धमूल्किनी० ना० स्त्री० कचूर भेद ।
 गन्धमूली० ना० स्त्री० रासना ।
 गन्धराज० ना० पु० चन्दन सुगन्धित, विशिष्ट
 पुष्प ।
 गन्धर्व० ना० पु० देवता, स्वर्ग के गायक ।
 गन्धर्वनगर० ना० पु० सामान्य गन्धर्वलोक
 विशेष मुख्य आकाशमें जो चित्र विचित्र की
 मूर्तें दृष्टि आती हैं जब देरतक देखने से आस
 तिरभिरा जाती है ।
 गन्धर्वहस्तक० ना० पु० बेलवृक्ष ।
 गन्धर्वह० ना० पु० वायु, पवन, हवा ।
 गन्धस्तार० ना० पु० चन्दन ।
 गन्धा० ना० पु० नामदीन, कदमवृक्ष ।
 गन्धान० ना० पु० सुवर्ण, सीना ।
 गन्धाधुश्मा० ना० पु० गन्धक ।
 गन्धार० ना० पु० रागका स्वरविशेष ।
 गन्धारी० ना० स्त्री० दुर्गोपनकी माता, रवात
 जो वामाक्ष में प्रकाशित होती है ज्ञानतरंग
 यथा, गन्धारी वामाक्ष निवासी, हस्तकनिहा
 दक्षिण दिग्वासी ।
 गन्धि० ना० स्त्री० नास, वृष, गन्धक ।

गन्धिकान् ना० स्त्री० आहूनेर ।
 गान्धकारिणी० ना० स्त्री० लज्जारू ।
 गन्धिलुब्ध० गु० जो सुगन्धि के लालच में हो ।
 गन्धी० ना० पु० अत्तार, सुगन्धित तेल बचने
 हारा ।
 गन्ना० ना० पु० ऊल, गांहा, खंड ।
 गप० } ना० स्त्री० बक, बकबक ।
 गपशप० }
 गप्पी० शु० बकवादी ।
 गमस्ति० ना० स्त्री० किरण, ज्योति ।
 गमीर० शु० गम्भीर ।
 गभुम्भारे० शु० छत्तेदार बाल, पैदायशीबाल ।
 गमन० ना० पु० चलन ।
 गमनागमन० ना० पु० जाना आना ।
 गमनी० ना० स्त्री० चलनेवाली ।
 गमनीय० शु० चलने के योग्य, चलनेवाला ।
 गम्भीर० शु० गहिरा, अवगाह ।
 गम्भीरता० ना० स्त्री० गहराई ।
 गम्य० शु० जानके योग्य, मिलनेहार ।
 गय० } ना० पु० हाथी ।
 गयन्द० }
 गया० ना० स्त्री० नगर वा तीर्थविशेष जहाँ
 हिन्दूलोग पुरुषों को पिण्ड देते हैं ।
 गयाली० ना० पु० गयावाल, गयाके भाषण ।
 ग्यारस० ना० स्त्री० एकदरती ।
 ग्यारह० गु० दश और एक ११ ।
 गर० ना० पु० राग, विष, गला ।
 गरजाराता० अ० क्रि० कुञ्जीकरना, गरजना ।
 गरजना० अ० क्रि० धड़काना, शब्दकरना ।
 गरल० ना० पु० विष, हलाहल ।
 गरह० ना० पु० गडियावाण ।
 गरामरी० ना० स्त्री० देवदाली ।
 गरारी० ना० स्त्री० रस्ती या घत बटनेका यन्त्र,
 कूपसे जल निकालनेकी गोल काठकी यस्तु ।
 गरिमा० ना० स्त्री० श्रुता, गन्धर्व, अद्भुत
 आठ सिद्धि मेंसे एकका नाम ।

क्रूर० गु० कठोर, निष्ठुर, कपटी, टेढ़ा ।
 क्रूरकर्मा० ना० स्त्री० ऊँचाहोली ।
 क्रूरचार० ना० पु० शनैश्चर, मंगल, आदित्यवार ।
 क्रोध० ना० पु० कोप, गुस्साह, भैरवविशेष ।
 क्रोधातुर० } गु० कोपी, क्रोधमें अन्ध, क्रोधमें
 क्रोधान्ध० } मस्त ।
 क्रोधा० गु० कोपी, गुस्सा भराभया ।
 क्रोश० ना० पु० कोस, दोमाल, दो-हजार द-
 षडकी माप ।
 क्रोष्टा० ना० पु० गीदड़, शृगाल ।
 क्लिशित० } गु० दुःखित, पीड़ित, रंजीदः ।
 क्लिष्ट० }
 क्लीय० ना० पु० नपुंसक, हिजड़ा ।
 क्लेद० ना० पु० गीलापन ।
 क्लेदित० गु० भीगाभया, तर ।
 क्लेश० ना० पु० दुःख, पीड़ा, रंज ।
 क्लेशित० गु० दुःखित, पीड़ित ।
 क्लिप्त० अन्व० कहीं ।
 क्लृप्त० ना० स्त्री० पिच्छलचर ।
 क्लृण० ना० पु० कौआ ।
 क्लृथ० ना० पु० कादाजोरोगीकोपिलायाजाता है ।

[ख]

खं० } ना० पु० आकाश, स्वर्ग, घर, शून्य, रन्ध्र
 ख० } इन्द्रिय ॥
 खंखारना० अ० कि० खांसना ।
 खंगना० अ० कि० कमहोना, घटना ।
 खंगलना० } स० कि० धोना, अनवासना ।
 खंगारना० }
 खग० ना० पु० पत्नी, मह, सूर्यादि, मेघ, पवन,
 देवता और तारागण ।
 खगकेतु० }
 खगनाथ० }
 खगनायक० } ना० पु० सूर्य, चंद्रमा, गरुड़ ।
 खगनाह }
 खगपति० }

खगमाला० ना० पु० पक्षियों का समूह,
 गण ।
 खगहा० ना० पु० गेंडा, बाज, बुरी ।
 खगेन्द्र० } ना० पु० गरुड़, चंद्रमा ।
 खगेश० }
 खगोल० ना० पु० आकाशमण्डल ।
 खग० ना० पु० वीर, बहादुर ।
 खचना० स० कि० रेतवा करना, जड़ना ।
 खपर० ना० पु० खच्चर, पशुविशेष,
 महादि ।
 खचा० } गु० जड़ाऊ, खिचाहुआ ।
 खचित० }
 खजुरिया० } ना० स्त्री० वृक्षविशेष ।
 खजूर० }
 खजूरि० }
 खञ्ज० गु० लंगड़ा, ना० पु० लंजन ।
 खञ्जन० ना० पु० पत्नीविशेष जिसे
 वा खिरखिन्दा भी कहते हैं ।
 खञ्जनक० ना० पु० ममोला, खंजन ।
 खञ्जरि० } ना० पु० लंजन ।
 खञ्जरी० }
 खट० ना० स्त्री० साट ।
 खटक० ना० पु० खटका ।
 खटकना० अ० कि० शब्द होना,
 लगना, शंकाकरना ।
 खटका० ना० पु० सन्देह, शंका, पाँवक ।
 खटकाना० स० कि० आहटदेना, शब्दक
 खटखटाना० अ० कि० टकठकाना ।
 खटछपर० ना० पु० छप्परखट ।
 खटपट० ना० पु० भ्रगडा, लड़ाई ।
 खटमल० ना० पु० खटमेंका कीड़ा ।
 खटाई० ना० स्त्री० अम्ल, खटापन,
 खटाका० ना० पु० शब्द, चटाका ।
 खटास० ना० पु० खटापन, जन्तु विशेष
 खटिका० ना० स्त्री० सेलखड़ी ।
 खटिया० ना० स्त्री० छोटी साट ।

गरी० ना० स्त्री० नारियलका यदा, उठली ।
 गरु० ना० पु० गला ।
 गरुड० ना० पु० पत्नी जो श्रीविष्णुका वाहन है ।
 गरुडाम्रज० ना० पु० सूर्य का स्थान ।
 गरुता० ना० स्त्री० शुकता, बद्धपन ।
 गरुमान्० ना० पु० गरुड, सफेद हंस ।
 गरुव० गु० भारी, बोझिल ।
 गर्ग० ना० पु० मुनिविरोध जो यदुवाशिष्वा के पुरोहित थे ।
 गर्गज० ना० पु० दीजा, बद्ध ।
 गर्ज० } ना० पु० उत्कट शब्द, नाइराडा-
 गर्जन० } हट ।
 गर्त्त० ना० पु० गढ़ा ।
 गर्हभ० ना० पु० गदहा ।
 गर्भ० ना० पु० पेट, आधान, हमल ।
 गर्भकरक० ना० पु० कटहल ।
 गर्भकर० ना० पु० पतिजिया यथा पुत्रजावः
 गर्भकरः इति निघण्टुः गु० गर्भकारक ।
 गर्भदास० ना० पु० मीलकी दासी वा बेटा ।
 गर्भपात० गु० पेटका गिरना, हमलगिरना ।
 गर्भपाता० ना० पु० रीठा ।
 गर्भव्रत० ना० स्त्री० पेटसे गर्भिणी, गाम्भिनी ।
 गर्भस्त्राव० ना० पु० गर्भपात ।
 गर्भित० गु० गर्भ अर्थात् पेट में रहनेवाला ।
 गर्व० ना० पु० अहङ्कार, दम्भ, गरूर ।
 गर्वव्रत० गु० स्त्री० अहङ्कारिणी ।
 गर्हित० गु० अहङ्कारी, मगरूरी ।
 गर्हित० गु० निन्दित ।
 गल० ना० पु० गला, कासी ।
 गलकना० अ० कि० गलना ।
 गलका० ना० स्त्री० कौदा विशेष, स्वदाविशेष ।
 गलगण्ड० ना० पु० गण्डमाला ।
 गलगल० ना० पु० चकोतरा, पत्नीविशेष ।
 गलना० अ० कि० पिघलना, बुझना ।

गलफटाकी० ना० स्त्री० बड़ाई, धमपड ।
 गलफड० } ना० पु० गाल वा आलोकामास ।
 गलफडा० }
 गलवाह० ना० स्त्री० गोदी ।
 गलसुई० ना० स्त्री० तकिया, सिराहना ।
 गलस्तनी० ना० स्त्री० बकरी ।
 गला० ना० पु० कंठ, शब्द ।
 गलाघोटना० स० कि० नट्टी दिवाना, कंठ तोड़ना ।
 गलाना० स० कि० पिघलाना ।
 गलाघ० ना० पु० पिघलाव ।
 गलित० गु० पतित, द्रव्यभूत, भग्ने ।
 गलियाना० स० कि० बुराकहना, गालीदिना, बरस भोजन कराना वा औषध धूसतना ।
 गली० ना० स्त्री० छोटा मार्ग ।
 गंव० ना० स्त्री० दांव, घात, मौक्य, लोभ ।
 गवन० ना० पु० गमन ।
 गवरि० } ना० स्त्री० पविता ।
 गवरी० }
 गवलद० ना० पु० भसा ।
 गवादिनी० ना० स्त्री० इन्द्रवाक्या ।
 गवादा० ना० पु० कसई, स्त्रोत्र ।
 गवादास० ना० पु० झरोखा, मुख्य वानर ।
 गवधुका० ना० स्त्री० गोरुघ्रा ।
 गवैया० ना० पु० गायक, गतिवाला ।
 गव्य० गु० जो गाय से सम्बन्ध रखता हो यथा दुग्ध आदि ।
 गसना० अ० कि० बन्धना, धरना, रुकना ।
 गहगह० गु० घना, जोरसे ।
 गहन० ना० पु० भारी, ग्रहण, पकड़ना, दुःख निष्कल, वन ।
 गहना० स० कि० पकड़ना, ग्रहणकरना, ना० पु० जेवर, गिरवा, भूषण ।
 गहनी० ना० स्त्री० सनभरास कालीपत्नी ।
 गहरा० ना० पु० गम्भीर ।
 गहरु० ना० पु० ढील, देर ।

गहवर० } शु० धानरा, रोवासा, घना, कठिन ।
 गहर० }
 गा० अन्व० गया ।
 गांजा० } ना० पु० वृक्षविशेष की पत्ती वा रस ।
 गांभा० } आदि ।
 गांठना० स० कि० बांधना, वशमें लाना, सी-
 वना ।
 गांठि० ना० स्त्री० मन्थि, गिरह ।
 गांड़० ना० स्त्री० गुदा, कूल, पुट्टी मिट्टी की जो
 रूप में लगते हैं ।
 गांड़र० ना० स्त्री० वृषविशेष ।
 गांड़ा० ना० पु० इक्षु, गन्ना, ऊत ।
 गांड़ू० ना० पु० भवेसिया, लतियां, चुडी ।
 गांव० ना० पु० ग्राम, पुर ।
 गांवना० स० कि० गाना ।
 गांसना० स० कि० विरमाना, घेरना, बरमाना,
 परोना ।
 गांसी० ना० पु० तीरका फल, लोहा जो तीर में
 लगाते हैं ।
 गागर० ना० स्त्री० नगरी, कलशी, घड़ा ।
 गांगेय० ना० पु० भीष्म, सुवर्ण ।
 गाण्ड० ना० पु० वृक्ष ।
 गाज० ना० स्त्री० भाग, फेना, विच्छिन्नी,
 वज्र ।
 गाजना० अ० कि० हृषिकेशना, गरुजना ।
 गाजर० ना० स्त्री० मूल, विशेष ।
 गाजायाजा० ना० पु० नानाप्रकार से ब्राना
 का शब्द ।
 गाड़० ना० पु० गुड़हा, गुड़दा, गुर्त ।
 गाड़ना० स० कि० तोपना, समाधि देना, मिट्टी
 देना, लगाना ।
 गाड़ा० ना० पु० घात, गड़हा, गाड़ी ।
 गाड़ी० ना० स्त्री० छकड़ा, लदी, रथ ।
 गाड़ू० ना० स्त्री० जंजाल, विपत्ति ।
 गाढ़ा० अ० मोटा, चतुर, कठिन, जा० पु०
 कपडा विशेष ।

गाएडीघ० ना० पु० नाम उसधनुषका है जो
 अग्निदेव ने अर्धनको दिया है ।
 गाएडीघधर० ना० पु० अर्धन, पाण्डपुत्र ।
 गात० ना० पु० शरीर, तनु, देह ।
 गाता० ना० पु० क्रायन्न जिस से पुस्तककी जिल्द
 बनाते हैं ।
 गातां० ना० स्त्री० एकप्रकार की चादरका बांधना;
 पट्ट, ऊर्ध्ववस्त्र ।
 गात्र० ना० पु० शरीर, देह ।
 गाथक० ना० पु० गायक ।
 गाथना० स० कि० गूंधना, गाना ।
 गाथा० ना० स्त्री० कथा, समाचार ।
 गाद० ना० स्त्री० तरछट, गाँद ।
 गादी० ना० स्त्री० गद्दी ।
 गाधि० ना० पु० विश्वामित्र के पिता ।
 गाधिनन्द० ना० पु० विश्वामित्रमुनि ।
 गाधिसुत० } ना० पु० विश्वामित्रमुनि ।
 गाधेय० }
 गान० ना० पु० गीत, राग, भजन ।
 गाना० स० कि० अलापना, तानभरना ।
 गान्धार० ना० पु० राजाविशेष, रागका स्वर
 विशेष ।
 गाम० ना० पु० गृभ ।
 गाभा० ना० पु० केली के वृक्षका नयापत्र, नया,
 पत्ता ।
 गामिन० ना० स्त्री० गंभिणी ।
 गाम० ना० पु० गांव ।
 गामी० गु० चलेनेवाला, रमनेवाला ।
 गाम्भीर्य० ना० पु० गंभीरता ।
 गाय० ना० स्त्री० गौ ।
 गायक० ना० पु० गवैया, गानेवाला ।
 गायत्री० ना० स्त्री० मन्त्र विशेष, छन्द, कथा,
 महासिद्धि ।
 गायन० ना० पु० गवैया, गानेवाला ।
 गाइ० ना० स्त्री० गाली ।
 गाइना० स० कि० तिथीज्ञाना धोना ।

घुटाना० स० कि० मुटाना, चिकना करना ।
 घुङ् ना० पु० घोडा ।
 घुङ्कना० स० कि० दक्काना, धमकाना, फिङ्कना ।
 घुङ्की० ना० स्त्री० धमकी, फिङ्की ।
 घुङ्चडा० ना० पु० अश्ववार, सवार ।
 घुङ्गहल० ना० स्त्री० चौपहिया गाड़ी जिस में गाड़े मचते हैं ।
 घुन० ना० पु० कीट विशेष, होला ।
 घुना० शु० जिस में घुन लग गया ।
 घुनाक्षर० ना० पु० घुन कृत अक्षर ।
 घुनिया० शु० घना, कपटी ।
 घुमरी० ना० स्त्री० तिमिरी ।
 घुमाना० स० कि० फिराना, फेरना, बहकाना ।
 घुरकना० स० कि० घुङ्कना ।
 घुरूका० ना० पु० भीमसेन का पुत्र जो हिडिम्बी से उत्पन्न था जिस की घटीकच भी कहते हैं ।
 घुलना० अ० कि० गलना, पिघलना, नम्र हो जाना, दुबल होना ।
 घुलाना० स० कि० पिघलाना, गलाना ।
 घुलावट० ना० स्त्री० पिघलावट ।
 घुसना० अ० कि० पैठना ।
 घुसपैठ० ना० स्त्री० पड़व ।
 घुसाना० स० कि० पिलाना, पैठाना ।
 घुसेड़ना० स० कि० ठोसना, खोसना ।
 घुंगनी० ना० स्त्री० उतना, खना, गेहूँ ।
 घुंगर० ना० पु० सहरोपे हुये बाल ।
 घुंगी० ना० स्त्री० घोषी, छोटा घोषा ।
 घुंघट० ना० पु० ओढ़ना, नक़ाब ।
 घुंघर० ना० पु० घुंगर ।
 घुंघरू० ना० पु० नूपुर ।
 घुंटना० स० कि० निगलना, लोलना ।
 घुंस० ना० स्त्री० बड़ा चूहा ।
 घुंसा० ना० पु० घुसा, थपड़, मुका ।

घूँ ना० पु० पक्षीविशेष, पाखंडक ।
 घूट० ना० पु० पानी की लिलावट ।
 घूटना० स० कि० घूटना ।
 घून० ना० पु० डेप, कपट, झोह, लाग ।
 घूना० शु० कपटी, झोही ।
 घूमना० अ० कि० फिरना, चकरदेना, लौटना ।
 घूर० ना० पु० खाद, कूड़ा, ताक ।
 घूरची० ना० स्त्री० उलझेड़ा ।
 घूरना० स० कि० ताकना, क्रोध से देतना ।
 घूस० ना० स्त्री० घूस, अंकोर, रिशवत ।
 घूसत० ना० पु० उल्लू का वचा ।
 घूसा० ना० पु० थपड़, मुका, मुकी ।
 घूणा० ना० स्त्री० घिन, ग्लानि ।
 घूणि० ना० स्त्री० किरण ।
 घृत० ना० पु० घी ।
 घृताची० ना० स्त्री० मुख्य अक्षरा ।
 घृताकू० शु० चिकना ।
 घृष्टि० ना० पु० शकर, धाराह ।
 घेंटा० ना० पु० } शकर का वचा ।
 घेंटी० स्त्री० }
 घेगा० } ना० पु० गले में रोगविशेष ।
 घेघा० }
 घेतला० ना० पु० जूती विशेष ।
 घेर० शु० रूंधा, घूमडमाव, गोलाकार, ना० पु० फेर ।
 घेरना० स० कि० रूंधना, गांसना ।
 घेरा० शु० जो रोंका गया, ना० पु० कुंडल, मंडल, दावा ।
 घेवर० ना० पु० मिठाई विशेष ।
 घोगा० ना० पु० शंख वा घोषा जन्तु वि० जन्तु का घर विशेष ।
 घोसला० ना० पु० पक्षी का घर, खोता ।
 घोकना० } स० कि० रटना, खाद करना ।
 घोखना० }
 घोषी० ना० स्त्री० वय विशेष जो कम्बल आदि से बनाते हैं ।

गार्हपत्य० ना० पु० अग्निभेद ।
 गारा० ना० पु० भौति बनानेके लिये बनाई हुई मिट्टी ।
 गारी० ना० स्त्री० गाली ।
 गारुडि० सांप, सांपका विष, कारनेवाला सूर कव्ये यथा, हाव भाव गारुडी पुकारत थावत लहरि नजात फहीरी ।
 गारुत्मत० ना० पु० पत्ता ।
 गाल० ना० पु० कपोल, रुखसार, वात ।
 गालव० ना० पु० मुनि विशेष ।
 गाला० ना० पु० रुई की फली, धुनी हुई रुई का गोला ।
 गाली० ना० स्त्री० अपमान का बोधक वाक्य, उलली ।
 गाह० ना० पु० ग्राह ।
 गाहक० ना० पु० सरदार ।
 गाहना० स० कि० हूँदना, दाबना, थाहलगोना, माँडना ।
 गाहा० शु० गाथा, अत्रगाह, कथा ना० पु० छन्दविशेष ।
 गाहिनाहि० शु० दूँदिके दूँदिके ।
 गाही० ना० स्त्री० पांव, माही, धाही, हुई ।
 गिजाई० ना० स्त्री० कीटविशेष ।
 गिचिपिचिया० ना० पु० कचपिचिया ।
 गिड़गिड़ाना० स० कि० विविधाना, खुरामुद करना ।
 गिद्ध० ना० पु० पत्ती विशेष, किरगिस ।
 गिनती० } ना० स्त्री० गणित,
 गिन्ती० } गिन्ती, शुमार ।
 गिन्दुक० ना० पु० गेंद ।
 गिन्ना० स० कि० गणन, गिन्तीकरना ।
 गिरगिट० ना० पु० सरट, कुकलास ।
 गिरना० थ० कि० पड़ना ।
 गिरपड़ना० थ० कि० कूदपड़ना, झुकपड़ना ।
 गिरा० ना० स्त्री० सरस्वती, कीर्तिदेवता, वाणी ।
 गिराना० स० कि० शोधना, पटकनी, छलकाना ।

गिरि० ना० पु० अदि, पर्वत, पहाड़ ।
 गिरिकद्रक० ना० पु० महा नीव ।
 गिरिज० ना० पु० शिलाजित ।
 गिरिजा० ना० स्त्री० पार्वती ।
 गिरिज्ञानन्द० ना० पु० गणेशजी ।
 गिरिधर० } शु० पर्वत उदानेवाला ना० पु०
 गिरिधारी० } श्रीकृष्णचन्द्रजी, श्रीहनुमान् ।
 गिरिनाथ० ना० पु० श्रीशिवजी, समेर, हिमाचल, हिमालय ।
 गिरि० ना० पु० लड़का ।
 गिरिराज० ना० पु० श्रीशिवजी, हिमालय, गोवर्द्धन, समेर, श्रीकृष्णजी ।
 गिरिचर० ना० पु० पर्वत, पहाड़ ।
 गिरिच्छृष्ट० ना० स्त्री० गेरु ।
 गिरिसाहय० ना० पु० शिलाजित ।
 गिरीश० ना० पु० श्रीसदाशिव, समेर, हिमालय ।
 गिलट० ना० स्त्री० नसों की गांठ ।
 गिलहरी० ना० स्त्री० जीव विशेष जो वृक्षोपर रहता है ।
 गिलोय० ना० स्त्री० गुरच ।
 गीजना० स० कि० मलना ।
 गीत० ना० पु० राग, गान ।
 गीता० ना० पु० कथा, अध्यात्मज्ञान, वा जिस पुस्तक में अध्यात्मज्ञान होवे, यथा भगवद्गीता, रामगीता ।
 गीदड़० ना० पु० शृगाल, सियार ।
 गीर्वाण० ना० पु० अमर, देवता ।
 गीला० शु० श्रोदा ।
 गीष्पति० ना० पु० बृहस्पति ।
 गुग्गुलु० ना० पु० गुग्गुली ।
 गुंगा० } शु० गुंगा, बाबला ।
 गुणा० }
 गुच्छा० ना० पु० पौद, घोंच, बाल, पोडा ।
 गुजरात० ना० पु० देशविशेष ।

घोणा० ना० स्त्री० नाक, नासिका, यथा (कौषि
 घ्राणं गन्धवहा घोषा नासा च नासिका) इत्यमरः ।
 घोट० ना० स्त्री० चिकनाहट, श्रोत्र ।
 घोटक० ना० पु० घोड़ा, यथा (घोटेके वीति
 तुरगतुरंगाश्वतुरंगमाः) इत्यमरः ।
 घोटना० स० क्रि० मलके चिकना करना, सु-
 रटना ना० पु० पापाण्यआदिकी वस्तु जिससे
 चिकनाते हैं ।
 घोटा० ना० पु० काष्ठादिकी वस्तु जिससे घो-
 टते हैं ना० स्त्री० सुपारी ।
 घोड़ा० ना० पु० अश्व, तुरंग ।
 घोर० ना० पु० शब्द, भय धडका शु० भया-
 नक, कठिन, कड़ा ।
 घोरनिद्रा० ना० स्त्री० सुखनींद, बड़ीनींद ।
 घोरफटा० ना० स्त्री० गोह ।
 घोल० ना० पु० मट्टा, द्राव्य ।
 घालना० स० क्रि० मिलाना ।
 घोप० ना० पु० अहीरों का गांव, गोप, खाल ।
 घोपणा० स० क्रि० अग्यास करना, गाद-करना,
 प्रसिद्ध रूप से जनाना ।
 घोपा० ना० स्त्री० सौंफ, विडंग ।
 घोस० ना० पु० घोपण ।
 घोसी० ना० पु० खाल, अहीर ।
 घौड़ि० } ना० स्त्री० शुद्धा, खवीर ।
 घौरि० }
 घ्राण० ना० पु० नाक, गन्धिका ग्रहण ।
 घ्राणेन्द्रिय० ना० स्त्री० नासिका, नाक ।
 [च]
 चंवर० ना० पु० चमर ।
 चक० ना० पु० चकवा, पर्वी, जिस भूमि पर अ-
 पना अधिकार हो ।
 चकचका० शु० स्वच्छ, निर्मल, तेजोमय ।
 चकड़वा० ना० पु० चकड़स, श्रान्त ।
 चकता० ना० पु० चिह्न, निशान ।

चकती० ना० स्त्री० फाक, शंखला, पंचद ।
 चकनाचूर० ना० पु० कतरन, छीलन, चूर,
 चूर्ण ।
 चकलस० ना० स्त्री० चकड़वा, मगनती, तमाशा ।
 चकलसी० शु० चकड़वावाला, मग्न ।
 चकला० ना० पु० वेश्या का घर, वस्त्रविशेष ।
 जो पाट और सूत से बनता है, देश को राण्ड
 जिसमें कई परगना होते हैं, शु० चौड़ा ।
 चकलाई० ना० स्त्री० सौड़ाई ।
 चकवा० ना० पु० राजहंस जाति के पक्षी
 विशेष ।
 चकवी० ना० स्त्री० चकवा की स्त्री ।
 चका० ना० पु० पहिया, चक्र, कुलाल जिसपर
 बर्तन बनाता है ।
 चकाचौध० ना० स्त्री० टटिका तिरमिराना ।
 चकाचू० } ना० पु० चकचूह ।
 चकाचूह० }
 चकित० } शु० अचम्भित, भूलाभया, तथुच्युवमें ।
 चकृत० }
 चकोतरा० ना० पु० गलगल, फलविशेष ।
 चकोर० ना० पु० पक्षी विशेष ।
 चकचै० ना० पु० राजा चक्रवर्ती ।
 चका० ना० पु० दही, गोड़ी का पहिया ।
 चकान० शु० गाढ़ा, जमाहुआ ।
 चकास० ना० पु० मुर्तियों का घर ।
 चक्री० ना० स्त्री० दलैती, जिससे आग पीसते हैं ।
 चक्कू० ना० पु० छुरी जाक ।
 चक्र० ना० पु० अस्त्रविशेष, पहिया, गोल वृ-
 मण, सुदर्शन, कुम्हार का चाक ।
 चक्रह० ना० पु० तगर श्लेषध ।
 चक्रधर० } ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्र जी, शु०
 चक्रपाणि० } जो चक्र बांधता हो ।
 चक्रवर्ती० ना० पु० त्रारिमण्डल का राजा,
 सार्वभौमराजा ।
 चक्रवाक० ना० पु० चकवा ।

गुह्य० गु० द्विपा, पौशोदः ।
 गुह्यक० ना० पु० यत्, कुबेर के दूत ।
 गुह्यकपति० ना० पु० कुबेर ।
 गुह्यस्थल० ना० पु० एकान्तरस्थान वा, द्विपा
 श्रेय, यथा, मग ।
 गुंज० ना० स्त्री० गुंजा, बुंबुची ।
 गुंजरना० अ० कि० दहाडना, गुंजना ।
 गुंजान० अ० गाडा, मोटा, पना, फारसी का
 शब्द है ।
 गुंजार० ना० पु० शब्द, दहाड; गुंज ।
 गुंजारना० अ० कि० हूंकना; गुंजना, शब्द
 करना ।
 गुटकना० अ० कि० कू कू करना, कपोत का
 बोलना, निगलना ।
 गुटका० ना० पु० पुस्तक विशेष, वस्तुविशेष
 जिसको योगी मुख में रखकर लोप होनाति है
 मिठाईविशेष, चांदी की वस्तुविशेष जो मृतक
 की क्रिया में लगताहै, छोटी पोथी ।
 गुटकाना० स० कि० कपोतका बुलाना ।
 गुटकी० ना० स्त्री० हाथ पांव समेटना ।
 गुटिका० ना० स्त्री० गोली ।
 गुठली० ना० स्त्री० फलका बीज ।
 गुड० ना० पु० ईपका जमाहुआ रस, मिषासः ।
 गुडगुडाना० अ० कि० गुडगुडाना ।
 गुडगुडी० ना० स्त्री० छोटा हुका ।
 गुडपुत्रक० ना० पु० ऊत, गचा ।
 गुडपुष्प० } ना० पु० मट्टया ।
 गुडफूल० }
 गुड़ा० ना० पु० श्रेय, दात ।
 गुडाकेश० ना० पु० अर्जुन, सदाशिवजी ।
 गुडाना० स० कि० खुदाना, खुदवाना ।
 गुडिया० ना० स्त्री० शिलोना, कपडोंकी पुतली ।
 गुडुची० ना० स्त्री० गुरच ।
 गुड्डी० ना० स्त्री० कनकीया ।
 गुड्डी० ना० पु० छिपनेका स्थान ।

गुण० ना० स्त्री० विशेषण, स्वभाव, प्रवीणता;
 विद्या, डौल, कृपा, रस्ती, धनुषकी पंचचरित्र
 यहसान ।
 गुणक० ना० पु० जिस श्रंक्ष से गुणन करे ।
 गुणद० गु० गुणदाता, लाभकारी ।
 गुणन० ना० पु० गुणाकरना, जरब ।
 गुणना० स० कि० विचारना, गुणन करना ।
 गुणवता० ग० माला० गुणवान् ।
 गुणवाचक० गु० गुण मतनिवाला ।
 गुणवान्० गु० प्रवीण, पुस्यवान् ।
 गुणज्ञ० गु० गुणी, ज्ञाता, चतुर ।
 गुणी० गु० प्रवीण, पुस्यवान्, विद्वान्, विचारी
 ना० पु० संपत् ।
 गुण्य० ना० पु० जिस श्रंक्ष को गुणा करे ।
 गुथना० अ० कि० पिराना ।
 गुथवां० गुथाहुआ ।
 गुद० ना० स्त्री० मलस्थान, गांड, यदा ।
 गुदगुदाना० स० कि० सहलाना, सुलहलाना ।
 गुदगुदाई० }
 गुदगुदाहट० } ना० स्त्री० सहलाहट सरसरी ।
 गुदगुदा० }
 गुदड़ी० ना० स्त्री० तागाहुआ वर, गुनरी,
 चौक, वाजार ।
 गुदा० ना० स्त्री० मलस्थान, गांड ।
 गुदाभजन० } ना० पु० गांड मारना, शं-
 गुदमदन० } लाम ।
 गुन० ना० पु० गुण ।
 गुनगाहक० ना० पु० गुनका चाहने वा जानने
 वाला, विद्याका प्रतिपालक ।
 गुनगुनाना० अ० कि० भोका गरमहोना और
 नाकसे बोलना ।
 गुनवन्त० } गु० गुणवान् ।
 गुनवान्० }
 गुनह० ना० पु० दोष, पाप, कर्म, रामायण
 यथा, गुनह लपखवर हमपर रोपु, कतहू सुघारि ते
 बड़ दोष ।

चक्रमदन० ना० पु० पवार, कौच, नीलः।
 चक्रपूह० ना० पु० चक्राकार सन्यका, गढ़
 बनाकर समर करना।
 चक्रलक्षणा० ना० स्त्री० गुरच।
 चक्रा० ना० स्त्री० समूह, गिरीह, टोली।
 चक्राकार० गु० पहिया के डोल।
 चक्रित० श० चक्रित, भ्रमित।
 चक्री० ना० स्त्री० चकला, गाथका की मंडली
 ना० पु० साँप, कुम्हार।
 चख० ना० पु० चख, नेत्र।
 चखना० स० कि० जांचना, स्वादलेना, खाना।
 चखाचखी० ना० स्त्री० विगाड़, लड़ाई, फूट।
 चंग० ना० स्त्री० छड़ी, बागा, पतंग।
 चंगा० गु० भला, अच्छा, सुखी।
 चंगेर० ना० स्त्री० फूट रखने का पात्र, कटरी।
 चंगेरा० ना० पु० } खांचा, खांची, कटरा,
 चंगेरी० ना० स्त्री० } फटरी।
 चचा० ना० पु० पिता का भाई, चाचा।
 चची० ना० स्त्री० चचाकी स्त्री।
 चचुलाड० ना० पु० जचड़ा, तरकारी।
 चचोरना० स० कि० सूजी-वस्तुका चूसना।
 चंचनाना० स० कि० दीसना, क्रोधित, होना,
 ऊंकलाना।
 चंचनाहट० ना० स्त्री० दीस, ऊंकलाहट।
 चंचरीक० ना० पु० भौरा।
 चंचल० श० अस्थिर, चपल, कम्पाहा, खिलाड़,
 नारा।
 चंचलता० ना० स्त्री० अस्थिरता, चपलता।
 चंचला० ना० स्त्री० विजली, क्रीधा, चरम।
 चंचलाई० ना० स्त्री० दिवाई।
 चंचलाहट० ना० स्त्री० अस्थिरता, दिवाई।
 चंचु० ना० पु० चोंच, शुक, मची।
 चट० अन्व० तुरन्त, उसी समय।
 चटक० ना० स्त्री० बसक, भड़का, चिदा, गु०
 बुद्धिमान्, जालाक, बेगी।

चटकना० ना० पु० धप्पा, थ० कि० फटना,
 धड़कना, तड़कना।
 चटका० ना० पु० भौरा, गरमोथा पत्ती, पत्ती-
 टोथा, चट्टी, दरका।
 चटकाना० स० कि० चटकी बनाना, फटकारना,
 फाड़ना, चीरना।
 चटकारन० स० कि० पशुआदि के चलाने में
 सुलसे टिक टिक करना।
 चटकाहट० ना० स्त्री० चमक, भड़क, ना० पु०
 चिदियों का शब्द।
 चटकीला० ना० पु० } चमकीला, भड़कीला,
 चटकीली० ना० स्त्री० } नमकीन।
 चटगाँव० ना० पु० नगर जो बंगाले के पूर्व है।
 चटनी० ना० स्त्री० खाने के लिये खट्टी बनाई
 हुई वस्तु, चाटने की वस्तु।
 चटपट० अन्व० तुरन्त, उसी समय।
 चटपटाना० अ० कि० व्याकुलहोना, फड़फड़ाना,
 किसी वस्तु के लिये जी चलाना।
 चटपटाहट० ना० स्त्री० व्याकुलता।
 चटपटियां० गु० फुर्तीला, चालाक।
 चटपट्टी० ना० स्त्री० उतावली, हड़बड़ी।
 चटवाना० स० कि० चटाके खिलाना।
 चटसार० } ना० स्त्री० पाठशाला, मदसैह।
 चटसाल० }
 चटाई० ना० स्त्री० बिछाना विशेष।
 चटाक० ना० पु० धड़ाक, भड़का, एकाएक।
 चटाका० ना० पु० धड़ाका, चूमा लेनेका शब्द।
 चटाचट० श० दोहराय विहराय के जो शब्द।
 चटाना० स० कि० चटवाना।
 चटियां० ना० पु० शिष्य, चला, गु० चाटने
 वाला।
 चट्टी० ना० स्त्री० ध्यान, स्थिरता, गताई, राम-
 चन्द्रिकायां यथा (सच जात घटी इत की
 दुपटी कपटी न रहे जहँ एक घटी । तपटी
 रचि मीछ घटीहु घटी जग जीव यतनि कि
 सूटी चटी)।

गुनानि० ना० स्त्री० मनमें कल्पना करना ।
 गुनी० गु० गुणी ।
 गुन्थनि० ना० स्त्री० गूथनी, पोहापट ।
 गुप्त० शु० लुका, छिपा ।
 गुप्तार० ना० पु० छिपना, लुकना, लुकाव ।
 गुप्तारघाट० ना० पु० अर्थोप्याजी में स्थान विशेष ।
 गुप्ती० ना० स्त्री० खड्गविशेष जो संदिग्ध में रखते हैं ।
 गुफा० ना० स्त्री० खोह, कन्दरा ।
 गुभाना० स० क्रि० चुभाना, गाड़ना ।
 गुमट्टी० ना० स्त्री० कपड़ा विशेष, कलशी ।
 गुमर्ह० ना० स्त्री० बड़प्पन, गौरापन ।
 गुरु० ना० पु० आचार्य, शिक्षक, बृहस्पति, पुरोहित, ऋिमानिक अक्षर, गु० भारी, बड़ागुरु ।
 गुरुतर० गु० अत्यन्तभारी, अत्यन्तमान्य ।
 गुरुता० ना० स्त्री० बड़प्पन, आचार्यता ।
 गुरुपाक० ना० पु० जो वस्तु बहुत देर में पके ।
 गुरुमुख० ना० पु० जिसने गुरु किया हो, शिक्षा वा इष्टदेवका मन्त्र गुरुसे लिया, चेला ।
 गुरुमुखहोना० अ० क्रि० चेलाहोना, गुरु से इष्टदेवता का मन्त्र पाना ।
 गुरुचाइन० ना० स्त्री० गुरुकी पत्नी ।
 गुरुघार० ना० पु० बृहस्पतिवार जुमैरारात ।
 गुर्जर० ना० पु० गुजराती वा गुजरातदेश विशेष ।
 गुर्वादित्य० ना० पु० जब सूर्य और बृहस्पति एक राशि के होजाते हैं वह समय ।
 गुर्विणी० ना० स्त्री० गभेवती, हामिल ।
 गुल० बुभाना, दीपकका ठंडाहोजाना ।
 गुलगुला० ना० पु० पकवान विशेष ।
 गुलाई० ना० स्त्री० गोलता, गोलाई ।
 गुलाघ० ना० पु० वृक्ष वा उसके फूलोंका रस, तृच ।
 गुलाल० ना० पु० अनीर वृक्षा जो प्रियतमके ऊपर डालते हैं ।

गुलिक० ना० पु० माती ।
 गुलिया० ना० स्त्री० शिरक पीछे का गहरा ।
 गुलेल० ना० स्त्री० धनुष जिसमें गुंडा चलाते हैं ।
 गुल्याल० ना० पु० गुल्ले ।
 गुल्फ० ना० स्त्री० फीली, एडिक ऊपरका भाग ।
 गुल्म० ना० पु० रोग विशेष, गुलाब, झोड़ ।
 गुह्या० ना० पु० गुल्लेला, माटीका छोटीगोला ।
 गुह्याला० ना० पु० फूलविशेष यह रान फारसी काहै ।
 गुवाक० ना० पु० सुपारी का वृक्ष ।
 गुवालियर० ना० पु० देश वा नगरविशेष ।
 गुष्टि० ना० स्त्री० सम्मति, सलाह, मित्रता ।
 गुह० ना० पु० स्वामिकार्तिक, निपाद, मूल ।
 गुहना० स० क्रि० गूथना ।
 गुहा० ना० स्त्री० गुफा, कन्दरा ।
 गुहाना० स० क्रि० गुथवाना ।
 गुहारि० ना० पु० ताड़कासर, ना० स्त्री० सहायता, सहाय, मदद ।
 गु० ना० पु० गूह, विद्या ।
 गुगा० गु० मूक, जो बात न करसके, ना० पु० वृषादि या डाट, मिटाई विशेष ।
 गुंज० ना० स्त्री० शब्द, भिनभिनाहट ।
 गुंजना० अ० क्रि० गुंजरहना, भिनभिनाना ।
 गुंधना० } स० क्रि० परोना, लडियाना ।
 गुंदना० }
 गुंदनी० ना० स्त्री० वृक्षविशेष का फल जो पश्चिम में श्रीष्मकाल में होताहै ।
 गुंधना० स० क्रि० सानना, गूथना, पिना ।
 गुंजर० ना० पु० नीचजाति विशेष ।
 गुंजरी० ना० स्त्री० गुंजरकी स्त्री, गूहना विशेष जो पांव में पहिनाजाता है ।
 गुड़० गु० सूदम, कटिन, गुध, भीतर ।
 गुड़गिरा० ना० स्त्री० गुसवाणी, गोलवात कटिन वचन ।
 गुड़ता० ना० स्त्री० सूदमता, कटिनता, छिपाव ।

चटोरा० गु० रसिया, पेद्र, अवीरज ।
चट्टा० ना० पु० चटसाली बालक ।

चट्टान० ना० पु० पत्थरका छोटाभाग वा
टुकड़ा ।

चट्टावट्टा० ना० पु० खिलौना विशेष ।

चड्० ना० पु० वृद्धकी डाली तोड़ने का शब्द ।
चड्चड्० गु० चटाचट, विक्री ।

चड्चडाना० अ० कि० फटना, तड़कना ।

चड्चडिया० ना० पु० बक्री ।

चड्ई० ना० स्त्री० पश्चिम में तैयारी को कहते
हैं और अथर्व में कूप गहिराने को ।

चढ़ता० ना० पु० लाभ, बढ़ती ।

चढ़ताहोना० अ० कि० निकलता होना, सरस
होना ।

चड़ना० स० कि० आरोग्य करना, बिलगना,
उठना, धावा करना, सवारहोना ।

चड़वैया० गु० चढ़नेवाला, यथा घुड़चढ़ा ।

चढ़ाई० ना० स्त्री० चढ़ाव, धावा ।

चढ़ाना० स० कि० आरोग्य करना, बिलिदान
करना, उठाना, डोल वा धनुष का तानना वा
कसना ।

चढ़ाव० ना० पु० चढ़ाई, भाव ।

चढ़ेत० } ना० पु० चढ़वैया ।

चढ़ता० } ना० पु० चढ़वैया ।

चढ़ावा० ना० पु० जूता जो रस्सी से चढ़ा
रहता है ।

चणक० } ना० पु० चना, अन्नविशेष ।

चणा० } ना० पु० चना, अन्नविशेष ।

चण्ड० गु० प्रबल, प्रचण्ड, भयंकर विशेष ।

चण्डांशु० ना० पु० सूर्य ।

चण्डागुप्त० ना० स्त्री० कौच बीज ।

चण्डाल० ना० पु० चांडाल, अतिनीच, कुकर्म ।

चण्डालिन० } ना० स्त्री० चांडालकी स्त्री ।

चण्डाली० } ना० स्त्री० चांडालकी स्त्री ।

चण्डिका० } ना० स्त्री० दुर्गादेवी ।

चण्डी० } ना० स्त्री० दुर्गादेवी ।

चण्डोल० ना० पु० पालकीविशेष, पत्नीविशेष,
खिलौना विशेष ।

चतु० गु० चारि ।

चतुर० गु० निपुण, सुनारी, प्रवीण, स्थाना, धूस,
ना० पु० कौश्या ।

चतुरई० } ना० स्त्री० बुद्धिमानी, स्थानपण,
चतुरता० } धूर्तता ।

चतुरंग० ना० पु० चारिअंग की ।

चतुरंगसैन्य० ना० स्त्री० चारिप्रकारकी सैन्य
अर्थात् हाथी १ घोड़ा २ रथ ३ पदाति ४ ।

चतुरंगुल० गु० चारिअंगुल, स्त्री० किरवाली ।

चतुरञ्ज० गु० चौकट ।

चतुरा० गु० चतुर ।

चतुराई० ना० स्त्री० चतुरता ।

चतुरानन० ना० पु० ब्रह्मा ।

चतुरवस्था० ना० स्त्री० चारिअवस्था, अर्थात्
जामत्, स्वप्न, सुषुप्ति, तुरीय, अथवा चाल्या,
मौद, युवा, वृद्ध ।

चतुराश्रम० ना० पु० चारि आश्रम, अर्थात्
ब्रह्मचर्य्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, संन्यासी ।

चतुरासं० ना० स्त्री० चारों ओर ।

चतुरासी गु० अस्ती और चार ८४ ।

चतुरासीयोनि० गु० चौरासी योनि अर्थात्
(दोहा) नभ ६ जलचर दश १० व्योमचर द्वावि
ग्यारह ११ वनबीस २० ये चौरासी ८४ नामिते
(मनुज चारि ४ पशु तीस ३०) ।

चतुरपवेद० ना० पु० चारि उपवेद, अर्थात्
धनुर्वेद, गन्धर्ववेद, आयुर्वेद और धर्मशास्त्र ।

चतुर्थ० गु० चौथा ।

चतुर्थावस्था० ना० स्त्री० बुढ़ापा, मृत्युकाल ।

चतुर्थी० ना० स्त्री० चौथ, चौथी तिथि ।

चतुर्दश० गु० चौदह १४ ।

चतुर्दशविद्या० ना० स्त्री० चौदहविद्या, अर्थात्
ब्रह्मज्ञान १ रसायन २ वैद्यक ३ व्योतिष ४ व्या-
करण ५ धनुर्विद्या ६ कौक ७ जलतरण ८

गूढपत्र० ना० पु० करील, नागफली ।
 गूढपा० } ना० पु० सांप, यथा, कुंडलीगूढपा
 गूढपात्० } चक्षुःश्रवाः काकोदरः कर्णा इत्यमरः ।
 गूढार्थ० शु० गुप्तार्थ, कठिनार्थ ।
 गूढद० ना० पु० पुराना कपडा ।
 गूढा० ना० पु० भेजा, फलका सारांश ।
 गूप० शु० गुप्त, छिपा ।
 गूमडी० ना० स्त्री० } गांठि ।
 गूमडा० ना० पु० }
 गृजन० ना० पु० प्याज, लहसुन, गांजा, गाजर
 वा गाजरका साग यथा, लशुनं गृजनं नासिं महा
 कन्दरसोनकः इत्यमरः पलांडविद्वराहचक्राकं
 आमकुक्कुटलशुनं गृजनं च यमुक्त्वा चांद्रायणं चरेत्,
 इति सरोजसुन्दरे ।
 गृध्र० ना० पु० गिद्ध ।
 गृष्टि० ना० स्त्री० पाराहीकन्द ।
 गृह० ना० पु० घर ।
 गृहकन्या० ना० स्त्री० धीकन्या ।
 गृहगोधिका० ना० स्त्री० विस्तुइया, छिपकली ।
 गृहस्थ० ना० पु० दूसरा आश्रम, परवाली ।
 गृहस्थाश्रम० ना० पु० गृहस्थका व्यवहार ।
 गृहस्था० ना० स्त्री० गृहस्थ का धर्म ।
 गृहिणी० ना० स्त्री० परणी, भार्या, जोड़, चौखट ।
 गृही० ना० पु० गृहस्थ ।
 गृह्य० शु० जो ग्रहण करने के योग्य है ।
 गूँदक० ना० पु० गूँदा ।
 गूँद० ना० स्त्री० खेलनेके लिये फणके वा सत आदि
 का गोला ।
 गूँगटा० ना० पु० केकड़ा, सरतान ।
 गूँगली० ना० स्त्री० बोदली ।
 गूँगुआं ना० पु०; तकिया; सिरहाना; और टेंडी-
 के दारलोयां ।
 गेरू० ना० स्त्री० गैरिक, लाल मिट्टी ।
 गेरुआ० शु० गेरुका रंगमया ।

गेरुई० ना० स्त्री० जो गेरुओं में सरदाके फारण
 गेरुरंग का रोग होजाता है शु० गेरुका रंग ।
 गेह० ना० पु० घर, तलारा, चाह ।
 गेहूँ० ना० पु० अन्नविशेष ।
 गेहूँआ० शु० गेहूँके रंग, ना० पु० घास विशेष ।
 गैडा० ना० पु० जन्तु विशेष जिसकी हड्डी अति
 पवित्र होती है उसकी अंगूठी, छत्ते, और तर्पण
 करने के पवित्र अर्थ का पात्र बनता है ।
 गया० ना० स्त्री० गाय ।
 गैरिक० ना० स्त्री० गेरू, पर्वतकी लालमिट्टी ।
 गैरेय० ना० पु० शिलान्जीत ।
 गैल० ना० स्त्री० गांठ, मार्ग ।
 गो० ना० पु० पद, कूप, जल, यत्र, स्वर्ग, स्वर्ग,
 छन्द, ना० स्त्री० गाय, किरण, इन्द्रियां दस ।
 गौडली० ना० स्त्री० वृक्ष विशेष ।
 गौद० ना० पु० लासा, चेष ।
 गौदनी० ना० स्त्री० नरकट विशेष ।
 गौदा० ना० पु० मिट्टी का गिलावा, चिड़िया के
 मुलानेके लिये लोई वा पेड़ा ।
 गोई० स० कि० मू, छिपार, छिपी, ना० स्त्री० दौ
 बैलादि के जोड़ को कहते हैं ।
 गोकण्डी० ना० स्त्री० नेरीवृक्ष वा फल ।
 गोकर्ण० ना० पु० वितस्ति, मृगविशेष, खच्चर,
 गी का कान, सांप और शिवजीका स्थान
 प्रसिद्ध ।
 गोकर्णनाथ० ना० पु० श्रीशिवजीका तीर्थ-
 विशेष ।
 गोकुल० ना० पु० नगरीविशेष, गोकुल ।
 गोकुलेश० ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्र ।
 गोखुस० ना० पु० गोखर, भूषण विशेष ।
 गोचना० स० कि० पकड़लेना, गेहूँ चना ।
 गोचर० ना० पु० समझ, इन्द्रियज्ञान, सु०
 समझ ।

नाडीज्ञान २ वाहन फेरन १० नृदक्ष्य ११
 जप १२ तस्करो १३ स्वरज्ञान १४ ।
चतुर्वंशरत्न० ना० पु० चौदहवर्ष अर्थात् अ-
 मृत १ चन्द्रमा २ लक्ष्मी ३ धनुष ४ अन्व-
 न्तरि ५ पुराव्रत ६ कौस्तुभमणि ७ उच्चैःश्रवा =
 शङ्ख ८ अप्सरा ९ कामधेनु १० कल्पद्रुम ११
 मदिरा १२ विष १४ ।
चतुर्वंशमनु० ना० पु० चौदहमनु अर्थात् स्वा-
 यम्भुव १ स्वरोचिष २ उत्तम ३ तामस ४
 रवेत ५ चाक्षुष ६ वैवस्वत ७ सावर्णि ८ दत्त-
 सावर्णि ९ ब्रह्मसावर्णि १० अर्हमसावर्णि ११
 रुद्रसावर्णि १२ देवसावर्णि १३ इन्द्रसाव-
 णि १४ ।
चतुर्वंशलोक० ना० पु० चौदह लोक अर्थात्
 सप्तस्वर्ग और सप्त पाताल, भू १ भुवः २
 स्वः ३ महः ४ जन ५ तप ६ सत्य ७ अत-
 ल ८ वितल ९ सुतल १० रसातल ११ तला-
 तल १२ महातल १३ पाताल १४ ।
चतुर्वंशी० ना० स्त्री० चौदहवीं तिथि, चौदस ।
चतुर्भुज० ना० पु० विष्णु, नारायण, शु० चारि-
 मुखावाला, वा चारिमैत्रों का खेत ।
चतुर्भुजक्षेत्र० ना० पु० चौमिड्डा खेत ।
चतुर्भुजी० ना० स्त्री० देवीविशेष ।
चतुर्भोजन० ना० पु० चारिप्रकारका भोजन,
 अर्थात् भोज्य १ भक्ष्य २ लेषा ३ शोष्य ४ ।
चतुर्मुख० ना० पु० ब्रह्मा ।
चतुर्भुक्ति० ना० स्त्री० चारिभुक्ति अर्थात् सा-
 लोक्ष्य १ सामीप्य २ सारूप्य ३ सायुज्य ४ ।
चतुर्थोनि० ना० स्त्री० चारियोनि, अर्थात् स्वेद-
 ज १ अर्धेज २ उद्विज ३ जरायुज ४ ।
चतुर्वेद० ना० पु० चारिवेद अर्थात् ऋग्वेद १
 यजुः २ साम ३ अथर्ववेद ४ ।
चतुर्वेदी० ना० पु० चौवे, चारिवेदवाली ।
चतुर्वर्ग० ना० पु० चारिवर्ग अर्थात् चारिकल ।
चतुर्वर्ण० ना० पु० चारिवर्ण अर्थात् मांसण,
 क्षणिय, वैश्य, शूद्र ।

चतुर्वर्चाद्य० ना० पु० चारिप्रकारों को बोना, अ-
 र्थात् तत १ वितत २ धन ३ शिखर ४ ।
चतुर्वर्हा० ना० पु० चतुर्भुज ।
चतुर्विंश० शु० चौबीसवां ।
चतुर्विंशति० शु० चौबीस २४ ।
चतुर्विंशाह० ना० पु० चारिप्रकारों के विवाह,
 अर्थात् राजापत्य १ अर्ष २ गान्धर्व ३ रा-
 क्षसी ४ ।
चतुष्कोण० शु० चौकोन, चौकोना ।
चतुष्पदधर्म० ना० पु० चारिपद धर्म के,
 अर्थात् विद्या १ सत्य २ तपस्या ३ दान ४ ।
चतुष्फल० ना० पु० चारिफल, अर्थात् अर्थ १
 धर्म २ काम ३ मोक्ष ४ ।
चतुष्पाद० ना० पु० पशु, चारिपदवाला ।
चतुस्सहस्र० शु० चारिहजार ४००० ।
चतुस्संहिता० ना० स्त्री० चारिसंहिता, अर्थात्
 माद्री १ भागवती २ वैष्णवी ३ सौरि ४ ।
चत्ता० ना० पु० अन्नविशेष ।
चन्द्र० ना० पु० चन्द्रमा ।
चन्द्रन० ना० पु० गन्धसार, गंधराज, स-
 न्दल ।
चन्द्रवा० ना० पु० मेघडग्गुर ।
चन्द्रा० ना० पु० चन्द्रमा प्रजविलासि यथा
 (देवति रही खिलौना चन्द्रा, आरि न कोनिय
 बालगोविन्दा) ।
चन्द्रिया० ना० स्त्री० टट्टी, चाँदि, छोटी
 रस्ती ।
चन्द्र० ना० पु० चन्द्रमा, चाँद ।
चन्द्रक० ना० पु० कण्डू, मयूर, नथ में लगी
 बरतु ।
चन्द्रकला० ना० स्त्री० चन्द्रमा का सोलहवा
 भाग, अथवा की धोती विशेष ।
चन्द्रकान्त० ना० स्त्री० मणिविशेष ।
चन्द्रग्रहण० ना० पु० चन्द्रमा का गहन ।
चन्द्रघण्टा० ना० स्त्री० देवीविशेष ।
चन्द्रचूड० ना० पु० श्रीमहादेवजी ।

गोचरी० ना० स्त्री० दर्शा, प्रकट ।
 गोजर० ना० पु० कनखजूरा ।
 गोजिका० } ना० स्त्री० गोभी ।
 गोजिहा० }
 गोठ० ना० स्त्री० चोंपड़्यादि खेलनेकी युटिका
 अमलपत्ती, किनारी ।
 गोटा० ना० पु० किनारी ।
 गोटी० ना० स्त्री० शीतला; माता चेचक ।
 गोड़० ना० पु० पांव पिडली, गुं खुदाव ।
 गोड़ना० स० क्रि० खोदना, खुरचना ।
 गोड़िया० ना० पु० कहार, जाति विशेष ।
 गोड़ी० ना० स्त्री० चोरी ।
 गोण० ना० पु० लोधा, आखा, बौरा ।
 गोत० } ना० पु० गोय ।
 गोता० }
 गोती० ना० पु० गोवर, गोमल, गुं गोधवाला ।
 गोद० ना० स्त्री० कनियां, गोदी, राशि ।
 गोदना० स० क्रि० चोंकना, चिह्नदेना ।
 गोदा० ना० पु० निशान, चिह्न, दबका ।
 गोदाघरी० ना० स्त्री० नदीविशेष, जो दक्षिण
 में है ।
 गोदी० ना० स्त्री० अंकवार, कौला, कनियां ।
 गोदोहनी० ना० स्त्री० दोहनी ।
 गोधन० ना० पु० गोबर, गायका धन, गोमलकी
 प्रतिमा जो दीवाली की बनाते हैं ।
 गोधूम० ना० पु० गेहूँ, गौह ।
 गोधूलि० } ना० स्त्री० सायझाल, सन्ध्या ।
 गोधौरा० }
 गोन० } ना० स्त्री० गोण ।
 गोनी० }
 गोप० ना० पु० ग्वाल, कण्ठका भूषण, छिपा ।
 गोपग्वाल० ना० पु० अहीर ।
 गोपद० ना० पु० गायका खुर ।
 गोपन० ना० पु० छिपाने, लुप्त ।
 गोपनीय० } गुं छिपाने के योग्य ।
 गोप्य० }

गोपाचल० ना० पु० ग्वालियर ।
 गोपाल० ना० पु० ग्वाल, अहीर, श्रीकृष्णचन्द्र ।
 गोपालपुर० ना० पु० मथुराजी वा जहाँ गंगा
 जी और गोमती का संगम भया है ।
 गोपिका० } ना० स्त्री० ग्वालों की स्त्रियां ।
 गोपी० }
 गोपीनाथ० ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्रजी ।
 गोवर० ना० पु० गायकीं विष्टा, गोमल ।
 गोवर्गनेश० गुं मोटा, भद्रा, भौंडा ।
 गोवरी० ना० स्त्री० मिट्टी और गोबर मिली
 हुआ खोपने के लिये बनाते हैं ।
 गोभी० ना० पु० कच्ची, नईशाखा ।
 गोभी० ना० स्त्री० पौधा विशेष, अंतरकारी
 विशेष ।
 गोमका० ना० पु० कुम्हड़ा, यथा पुष्पफला
 महाफला गोमका राजककटी इति निष्येत् ।
 गोमती० ना० स्त्री० नदीविशेष ।
 गोमय० } ना० पु० गोबर ।
 गोमल० }
 गोरटी० ना० स्त्री० गौरीस्त्री, सुन्दरी ।
 गोरमदायन० ना० पु० इन्द्रधनुष जो वर्षा में
 निकला करता है और सूर्य के सम्मुख होता
 है, रामचन्द्रिकायाम्, धनु है यह गोरमदायन
 नाहीं । शरधार वह जलधार वृषाहीं ।
 गोरस० ना० पु० इन्द्रियाका स्वाद, दूध, दही
 मद्य, चाब्रयादि ।
 गोरसदायन० ना० पु० गोरमदायन ।
 गोरसी० ना० स्त्री० दोहनी ।
 गोरक्ष० ना० पु० नारंगी ।
 गोरा० गुं गौर, उज्वल ।
 गोरी० ना० स्त्री० उत्तम स्त्री, सुन्दरी ।
 गोरू० ना० पु० गाय बैल ।
 गोरोचन० ना० पु० गाय के मूत्र से उत्पन्न शीत
 वस्तु, गाय के शिर में से उत्पन्न औषध वि-
 शेष ।
 गोल० गुं गोल, त्वरलीला, ना० पु० मृदका ।

चन्द्रभागा० ना० स्त्री० चिनाव नदी जो पंजाब में है ।

चन्द्रमाल० ना० पु० श्रीमहादेवजी, गणेशजी ।

चन्द्रमल्लिका० ना० स्त्री० इलायची ।

चन्द्रमा० ना० पु० चांद, मुनिविशेष ।

चन्द्रमुखी० शु० मिस्रका सुप्त चन्द्रमा सरीला है अर्थात् अतिसुन्दरी ।

चन्द्रमौलि० ना० पु० श्रीमहादेवजी, गणेशजी ।

चन्द्रवधू० } ना० स्त्री० चारवधूटी कौड़ा जो
चन्द्रवधूटी० } लालमकरीसा होता है, रोहिर्णा ।

चन्द्रवंशी० शु० जो चन्द्रमा से उत्पन्न भये त्रिविक्रम जातिविशेष अर्थात् सोमवंशी ।

चन्द्रचाला० ना० स्त्री० छोटी कटाई, नदी इलायची ।

चन्द्रसिता० ना० स्त्री० कपूर ।

चन्द्रशेखर० ना० पु० श्रीमहादेवजी, पर्वत ।

चन्द्रहार० ना० पु० गलेका गहना विशेष ।

चन्द्रहास० ना० पु० खड्ग, तलवार, राजाविशेष ।

चन्द्रहासा० ना० स्त्री० शरच ।

चन्द्रहासी० ना० स्त्री० छोटी कटाई ।

चन्द्रा० शु० मण्डला, गुंजा, बुद्धिमान् ।

चन्द्रातप० ना० पु० चांदनी, चन्द्रिका ।

चन्द्राना० अ० कि० सूतना, सुरभाना ।

चन्द्रायण० ना० पु० व्रत चान्द्रायण जो एक महीने १ एक मास भोजन में शुक्रपक्ष कृष्णपक्ष में बढ़ाने घटाने की रीति से होता है ।

चन्द्रिका० ना० स्त्री० चांदनी, वाकूची औषध, पुस्तकविशेष, चकोर ।

चन्द्रोदय० ना० पु० चन्द्रमा का उदय, औषध विशेष ।

चपकन० ना० स्त्री० अंगरस विशेष, फारसी शब्द ।

चपकना० अ० कि० मिलजाना, बैठिजाना, सटना, चिपटजाना, लसिजाना ।

चपकाना० स० कि० मिलाना, बैठाना, चिपटाना ।

चपटना० अ० कि० चंपटा होना, लपटना ।

चपटा० शु० बैठना, लपटा ।

चपटाना० स० कि० बैठाना, मिलाना ।

चपटी० ना० स्त्री० दो स्थानों परस्पर प्रसंगित, मिलाहुई वस्तु ।

चपचपट्ट० ना० पु० ताते समय सुत में का शब्द ।

चपड़ा० ना० पु० सातविशेष ।

चपड़ाऊ० शु० निर्लेखन, टीठ, ना० पु० जो पीले दवे ।

चपड़ान० स० कि० खोटा करना, टीठकरना ।

चपना० अ० कि० लज्जित होना, आधीन होना, मसलजाना, दबजाना ।

चपनी० ना० स्त्री० टकना, टपना, छोटा ।

चपरास० ना० स्त्री० पैदल के लिये स्वामीका चिह्न ।

चपरासी० ना० पु० चपरास बाधनहार, दूत ।

चपल० शु० चंचल, उज्वल, सुन्दर, ना० पु० पारा ।

चपला० ना० स्त्री० कौधा, विजली ।

चपाती० ना० स्त्री० फुलका, यह शब्द फारसी है ।

चपाना० अ० कि० थोपना, लज्जित करना ।

चपेट० ना० स्त्री० } धप्पा, थप्पड़, धोलेसे जो
चपेटा० ना० पु० } विपत्ति आनावे ।

चप्पा० शु० चारि अथवा का प्रमाण ।

चप्पी० ना० स्त्री० देहका दावना वा मलना ।

चवाई० ना० स्त्री० कुचलाई, चर्वण, शु० निन्दक, दूषक, देषिक, नुकली ।

चवाउ० ना० पु० बतकहाउ, कहासुनी ।

चवाना० स० कि० फ्राचिलना, चावना ।

चवायिन० ना० स्त्री० निन्दायुत, निन्दक ।

चाचिक० ना० स्त्री० चाव औषध ।

गोलक० ना० पु० पति के मरने के उपरान्त
 जारजात, पुत्र, आत्मा पर ।
 गोलकुराडा० ना० पु० नगर विशेष दक्षिण में है ।
 गोलता० ना० स्त्री० गोलाई ।
 गोलरूप० शु० गोलकार ।
 गोला० ना० पु० गोल वस्तु, साता, धरन, लोहे
 का पिण्ड, जंगली कवृतर और नारियलका शूदा ।
 गोलाई० ना० स्त्री० परिधि, घेरा, गोलापन ।
 गोलाकार० शु० गोलरूप ।
 गोलाध्याय० ना० पु० सिद्धान्तशिरोमणि का
 एक प्रकरण ।
 गोलिका० ना० स्त्री० पति के मरने के उपरान्त
 जारजात कन्यका, गोलाई ।
 गोली० ना० स्त्री० छोटागोला ।
 गोलीक० ना० पु० शीकृन्धचन्द्रका, विशेष
 स्थान ।
 गोलोमा० ना० स्त्री० वन आषय ।
 गोचना० स० क्रि० छिपाना, भूत, किया, गोई ।
 गोचर्दन० ना० पु० पर्वत विशेष जो मज्ज में है ।
 गोविन्द० ना० पु० कृन्धचन्द्र, वेदलम्ब ।
 गोविन्दचन्द्रिका० ना० स्त्री० पुस्तक विशेष ।
 गोशाला० ना० स्त्री० गाय बैल रहनेका घर ।
 गोष्ट० } ना० स्त्री० नापनू, मेल, सम्मतः
 गोष्टी० } सलाह ।
 गोष्पद० ना० पु० गायका खुर ।
 गोसाई० ना० पु० ईश्वर, तपी, सन्तोका मार्ग ।
 गोसैयां० ना० पु० ईश्वर, परमात्मा ।
 गोस्तनी० ना० स्त्री० दाख, छेपरा ।
 गोह० ना० स्त्री० निस्खरपा के डौलका जीव ।
 गोहरा० ना० पु० उपला ।
 गोहार० ना० स्त्री० हुलङ्क, रीला, सहायता,
 मदद ।
 गोह्रं० ना० पु० गेहूँ, गोधूम, अन्न विशेष ।
 गोह्रन्न० ना० पु० सर्प विशेष ।
 गोक्षुर० ना० पु० गोक्षुर, पीधा विशेष ।

गोघ्न० ना० पु० वंश, घराना संज्ञा, पर्वत ।
 गोघ्रात० } ना० पु० निजकुल का मनुष्य
 गोघ्रवध० } मारना ।
 गोत्रज० ना० पु० गोत्री, सम्बन्धी, अपने
 घराने का ।
 गोत्रा० ना० स्त्री० धरती ।
 गोत्री० ना० स्त्री० गोत्रज ।
 गौ० ना० स्त्री० गाय ।
 गौं० ना० स्त्री० दाव, घात, आँसर, लाभ ।
 गौंगीर० शु० घाती, दाव खेलनेहारा ।
 गौगोड़० ना० पु० जब गाय ब्यानी दूध नहीं
 देती है तब ग्वाल उसकी योनि में हाथ डालकर
 खड़ी करत है ।
 गौड़० ना० पु० देशविशेष, ब्राह्मण विशेष, क
 यस्थ जाति विशेष ।
 गौड़िया० ना० पु० गौड़देशवासी, चैतन्य का
 शिष्य ।
 गौड़ी० ना० स्त्री० शङ्की मदिरा, जहाँ गाया
 खड़ी होती हैं ।
 गौण० शु० जो मुख्य नहीं, अर्थात् अप्रधान ।
 गौतम० ना० पु० मुनि विशेष, पर्वत विशेष ।
 गौथन० ना० पु० गायका स्तन ।
 गौदन्ती० ना० पु० हस्ताल वा आँप विशेष ।
 गौदान० ना० पु० गायका दान ।
 गौना० ना० पु० विवाह करके धोड़े दिनों में
 स्त्री को अपने घर लाना ।
 गौनहा० } ना० पु० गौने में दूहाह के साथी ।
 गौनहार० }
 गौमला० ना० पु० गौरोवन ।
 गौर० ना० पु० धवदूध, जाति विशेष, विद्वान्
 शुकवर्ण ।
 गौरक० ना० पु० तीतरपक्षी, गेरु ।
 गौरएड० ना० पु० गौरा ।
 गौर्या० ना० स्त्री० भवानी, पार्वती ।

चवेना० ना० पु० } भूनाहुआ अक्षर ।
 चवेनी० ना० स्त्री० }
 चव्य० } ना० स्त्री० चाप, शीपय ।
 चव्यन० }
 चमक० ना० पु० डक ।
 चमक० ना० स्त्री० चटक, भलक, भडक ।
 चमकता० शु० उजागर, उजला ।
 चमकना० अ० कि० भलकना, लौकना, भाग्य
 उदयहोना, क्रोधितहोना ।
 चमकाना० स० कि० भलकाना, लुकाना, घुमा-
 ना, नचाना, फलाना ।
 चमकाव० ना० पु० } चमक, भडक ।
 चमकाहट० ना० स्त्री० }
 चमकीला० शु० चमकने हारा, चमकदार ।
 चमकौना० ना० पु० चमकाने वाला ।
 चमगादड़० ना० पु० } राति का उड़नेवाला
 चमगीदर० ना० पु० } पक्षी दिवांध जो वृक्षों
 चमगुदड़ी० ना० स्त्री० } में उलटा टंगता है ।
 चमगुदरी० ना० स्त्री० }
 चमगादड़० ना० पु० }
 चमगुदरी० ना० स्त्री० }
 चमचमात० ना० पु० चमकित ।
 चमचमाना० अ० कि० चमकना, झुनझुनाना ।
 चमचमाहट० ना० स्त्री० चमकाहट ।
 चमड़ा० ना० पु० चर्म, ताल ।
 चमत्कार० ना० पु० अचम्भा, भडक, चमकती,
 ऐश्वर्य ।
 चमत्कारी० शु० भडकीला, भाग्यशाली ।
 चमर० ना० पु० चवर, सुरभि गायकी पुंल ।
 चमरई० ना० स्त्री० चमारपन, चमार का काम ।
 चमरी० ना० स्त्री० सुरभि ।
 चमार० ना० पु० चर्मकार, नीचजाति, विशेष ।
 चमारिन० } ना० स्त्री० चमार की स्त्री ।
 चमारी० }

चमू० ना० स्त्री० सैन्य, फौज ।
 चमूप० }
 चमूपति० } ना० पु० सेनापति, सिपहदार ।
 चमूपाल० }
 चमेटा० ना० पु० चपेटा ।
 चमोटा० ना० पु० } चमड़ा जिसपर नाहें छुरा
 चमोटी० ना० स्त्री० } किराने हैं ।
 चम्पई० शु० गारजी रंग ।
 चम्पक० ना० पु० वृक्षविशेष जिसका फूल पीला
 सुगन्धित होता है ।
 चम्पत० ना० पु० भागना ।
 चम्पतहोना० अ० कि० भागनाना, छुपना ।
 चम्पा० ना० पु० चम्पक ।
 चम्पाकली० ना० स्त्री० चम्पाकी कली के समान
 गहना विशेष गले में पहिन्ते हैं ।
 चम्बू० ना० पु० जलपात्र विशेष जिससे देवता
 को जल चढ़ाते हैं ।
 चम्बेली० ना० स्त्री० वृक्ष वा उसका फूल ।
 चय० ना० पु० समूह, ढेर, श्रंश ।
 चयन० ना० पु० आनन्द, कुशल, वेम ।
 चर० ना० पु० चारा, याद, दूत, शु० जिस को
 चलने की शक्ति हो, वा जो चलने व उठने के
 योग्य हो यथा नर नारि पशु पक्षी आदि, चारा ।
 चरक० ना० पु० वैद्य विद्या का अर्थ विशेष,
 कोद ।
 चरकटा० ना० पु० चारा काटनेवाला ।
 चरका० ना० पु० श्वेतकुष्ठ विशेष, सफेद कोद ।
 चरकी० शु० कोदी ।
 चरचना० स० कि० देह में चन्दन लगाना,
 चर्चना ।
 चरचर० ना० पु० गप, बक ।
 चरचराना० अ० कि० चटकना, मरमराना ।
 चरचेली० शु० बकी, बकवादी ।
 चरण० ना० पु० पांव, श्लोक, आदिका एकदप

गौरव० ना० पु० बड़प्पन, युक्ताई ।
 गौरा० ना० पु० चटक, चिड़ा, स्त्री० पार्वती ।
 गौरिया० ना० स्त्री० चिड़िया ।
 गौरिला० ना० स्त्री० पृथ्वी, धरती ।
 गौरी० ना० स्त्री० रागिनीविशेष, हल्दी, रात,
 पार्वती, तुलसी, गौरोचन ।
 गौशाबा० ना० स्त्री० गाइयों का स्थान ।
 ग्रथित० यु० बंधाहुआ, पिरोयाहुआ ।
 ग्रन्थ० ना० पु० पुस्तक, पोथी, शास्त्र ।
 ग्रन्थकार० ना० पु० ग्रन्थकर्ता, कवि ।
 ग्रन्थनि० ना० पु० महापुण्ड्री, केलापत्र ।
 ग्रन्थि० ना० स्त्री० गांठि ।
 ग्रन्थिक० ना० पु० पीपरामूल ।
 ग्रन्थिमान्० ना० पु० हरषिवाङ्ग ।
 ग्रन्थिल० ना० पु० कोकईवृक्ष, कराल ।
 अस्त० यु० शब्द जो चयाय के कहा गया, खोया
 गया, घिराहुआ ।
 अह० ना० पु० सूर्यादि नवग्रह, घर ।
 अहण० ना० पु० हाथ में लेना, अंगीकार, जन्मदा,
 सूर्य का गहन ।
 अहस्थापन० ना० पु० नवग्रहों को वैद्यय के
 उनको आवाहन करना ।
 अहीता० यु० ग्रहण करनेहारा ।
 आम० ना० पु० गांव, पुर, स्त्रीवात, समूह,
 रामचन्द्रिकायां, गिरिआम लै लै हरिआम मारि,
 मनीषिनी पत्रदन्ती विदारि ।
 आमनर० ना० पु० गौवार गांववासी ।
 आम्य० यु० गांव में जो उत्पन्नभया ।
 आमीण० ना० पु० गांव में बसनेहारा, गौवार ।
 आव० ना० पु० पत्थर, पर्वत ।
 आस० ना० पु० कौर, लुकमा ।
 आसक० यु० घरनेवाला, रोकनेहार ।
 आसना० स० कि० घेरना, रोकना ।
 आसित० यु० घेरागया, नोक ।
 आह० ना० पु० मगर ।
 आहक० यु० ग्रहण करनेहार, अंगीकारकर्ता ।

आही० यु० आहक, लेनेवाला, स्त्री० नाकिन ।
 आह्य० यु० जो ग्रहण करने के योग्य है ।
 आघां० ना० स्त्री० गला, बदन, गलका पृष्ठभानि ।
 आघ्म० ना० स्त्री० तपन, गरमी ।
 आघेय० ना० पु० गलका गहना, हसली, माला
 आदि ।
 आलानि० ना० स्त्री० शृष्णा, खान, पकाई ।
 आल० } ना० पु० पशुपालक, अहार ।
 आला० }
 आलानि० ना० स्त्री० अहारिनि ।
 आँह० अर्थ० समीप, पास ।
 आँहा० ना० पु० नगर, व. गांवका आसपास ।

(घ)

अंधोरना० } स० कि० मथना, मिलाना, धोना ।
 अंधोलना० }
 अंधरी० ना० स्त्री० लहंगा ।
 अघट० ना० पु० देह, मन ।
 अघटक० ना० पु० मथत्य, विचवेयां, संदेही ।
 अघटज० ना० पु० अंगस्य मुनि ।
 अघटना० अ० कि० मंदाहोना, कमहोना, योग्यहोना ।
 अघटनीय० यु० जो घटने के योग्य है ।
 अघट्योनि० ना० पु० अंगस्य मुनि ।
 अघटा० ना० स्त्री० मेघोका उमडना, मेघ, ओड़,
 घटा, मनुककड़ी ।
 अघटाटोप० ना० पु० पालका वा रथका आच्छादन,
 गिलाफ, चारों ओर से घेरना ।
 अघटना० स० कि० कम करना ।
 अघटाव० ना० पु० कपती ।
 अघटाचना० स० कि० घटना ।
 अघटिका० ना० स्त्री० घड़ी, घड़ती, ऐंही के ऊपर
 का भाग ।
 अघटित० यु० योग्य, गम्य ।
 अघटिया० यु० आँड़े, मोलका, सस्ता, घाटि देनेहारा,
 धोला देनेहारा, कपटी ।
 अघटी० ना० स्त्री० हति, हानि, कमी, घड़ी ।

चरणपीठ० ना० पु० खड़ाऊं ।
 चरणामृत० } ना० पु० लल रजिस्मेन्देवता
 चरणोदक० } वा-युः वा-प्राणोदि-के पांव
 धोयेगये हों ।
 चरती० शु० जो ब्रत नहीं करता, ब्रतीगहीं ।
 चरन० ना० पु० चरण ।
 चरना० अ० कि० गुग्गुना, फिरना ।
 चरनी० ना० स्त्री० धान वा कठरा, जिन्में बेल
 भूसा खाते हैं ।
 चरन्धी० ना० स्त्री० चौथड़ी ।
 चरपरा० शु० तीता, कडुआ, तीक्ष्ण, फुर्ताला ।
 चरपराना० अ० कि० परपराना ।
 चरपराहट० ना० स्त्री० परपराहट ।
 चरपरिया० शु० मनचला, सुधड़ ।
 चरमर० शु० पिछला ।
 चरवाई० ना० स्त्री० चरई ।
 चरवाहा० ना० स्त्री० रखवारा, चरनिहारा ।
 चरस० ना० पु० मादक वस्तु, मोठ, पुरखट ।
 चरसा० ना० पु० अघौड़ी, खाल ।
 चरई० ना० स्त्री० चराने के दाम, चराने का
 काम ।
 चर्राक० शु० चरनेहारा, पशु ।
 चराचर० ना० पु० चल-अचल सर्वाव निर्वाच
 जन्तु ।
 चरानं० ना० पु० तराई ।
 चराना० स० कि० गुग्गुना ।
 चराव० ना० पु० खेत वा धरतीजो चरने के
 योग्य ।
 चरावना० स० कि० चराना ।
 चरित० ना० पु० चरित्र ।
 चरितार्थ० ना० पु० कृतार्थ ।
 चरित्र० ना० पु० स्वभाव, शील, वृत्तांत ।
 चरुआ० ना० पु० भांडा ।
 चर्चक० शु० चर्चा करनेहारा, वादी ।
 चर्चना० स० कि० विचारना, समझना, पूजना,
 पहिचानना ।

चर्चरो० ना० स्त्री० छन्दविशेष, कृती, विनी ।
 चर्चा० ना० स्त्री० पस्ताव, मतकहाव ।
 चर्चित० शु० लगाया हुआ, कहा हुआ ।
 चर्म० ना० पु० चमड़ा ।
 चर्मकार० ना० पु० चमार ।
 चर्मपात्र० ना० पु० चर्मडा का डोल, मशक
 चर्मवस्त्र० ना० पु० चमड़ा का वस्त्र
 श्रोतन ।
 चर्या० ना० स्त्री० तपस्या करने में धुनि
 धवा रहनि ।
 चर्वण० ना० पु० दांतों से पीसना, चबना ।
 चर्स० ना० पु० चरसा ।
 चल० शु० जो स्थिर न हो ।
 चलत० शु० चलति ।
 चलदल० ना० पु० पीपल ।
 चलन० ना० पु० चालि, व्यवहार ।
 चलनता० ना० स्त्री० निरुनहार, स्वप्ती ।
 चलना० अ० कि० जाना, पिदाहना, पहना
 चलनी० ना० स्त्री० हांगी, शु० चल्ती ।
 चलत्रिचल० ना० पु० चूक, मूल, भ्रम ।
 चलविधरा० शु० अडियल, मचला ।
 चलयौवन० ना० पु० चलायमान यौवन ।
 चलसुगन्धा० ना० स्त्री० शोचरालोन ।
 चलाचल० ना० पु० }
 चलाचली० ना० स्त्री० } दौड़ धूप ।
 चलान० ना० स्त्री० भेजाव ।
 चलाना० स० कि० दौड़ाना, भगाना, छोड़ना
 बढ़ाना, अग्यास डालना, सिललाना ।
 चलायमान० शु० जो स्थिर न हो, लोल ।
 चलाव० ना० पु० चलन ।
 चलित० शु० जो चलता है ।
 चलित्री० शु० खिलाड़ी, चपल ।
 चलू० ना० पु० आचमन ।
 चप० ना० पु० नेत्र, आसि
 चपक० ना० पु० पियाला, जिसमें गजलादि
 पीते हैं ।

अश्यादि० ना० स्त्री० पूर्यो आदि ।
 अश्यादिना० अ० कि० गरजना ।
 अश्या० ना० पु० कुम्भ, घट, कलरा मिट्टीका ।
 अश्याया० ना० स्त्री० कुल्हिया, मधुमक्खी का
 छत्ता, कोर, पियाली ।
 अश्यायाल० ना० पु० मगर, आह, पश्या ।
 अश्यायाली० गु० पश्या वजनेहार ।
 अश्यायी० ना० स्त्री० साठिपल, समय मापने का
 यन्त्रविशेष ।
 अश्याची० ना० पु० } तिकटी, तिपाई, पानी
 अश्याची० स्त्री० } का घड़ा रखने के लिये
 काष्ठ रचित बस्तु ।
 अश्या० गु० घना ।
 अश्याटा० ना० स्त्री० बाना विशेष, अश्यादिपद ।
 अश्याटालिक० ना० स्त्री० मधुककड़ी पश्या ।
 अश्याटाली० ना० स्त्री० छोटा पश्या ।
 अश्यात० ना० पु० घटा, मेष, गु० घना, हट्ट,
 विस्तार, मृत्ति ना० पु० लोहार का
 हथौड़ा ।
 अश्याक० ना० पु० सेंभालू पीथा ।
 अश्यागरज० ना० पु० गरजन, गु० ऊँचा शब्द ।
 अश्याघनाना० अ० कि० भनभनाना, भंहराना ।
 अश्याघोर० ना० पु० घटा, घेरा, घन गरजना ।
 अश्यातनघर्ण० गु० जिसका घर्ण मेष के समान
 हो, ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्रजी ।
 अश्यारस० ना० पु० जल, पानी ।
 अश्याश्यामं० ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्रजी, गु० का
 ली घटा ।
 अश्यास० ना० पु० पकी विशेष ।
 अश्यासार० ना० पु० कपूर, जल, चन्दन ।
 अश्याना० गु० पिचपिच, बहुत ।
 अश्यासन० ना० पु० भेसा ।
 अश्याहा० ना० पु० नागरमोथा ।
 अश्यानेरा० गु० बहुत, अधिक ।
 अश्यानेराना० अ० कि० व्याकुल होना, हड़बड़ाना ।
 अश्यानेराहट० ना० स्त्री० व्याकुलता, हड़बड़ी ।

अश्याएड० ना० पु० गुब्बे, अश्याकार, मसूर ।
 अश्याएडी० गु० अश्याकारी, मसूर ।
 अश्याएली० ना० स्त्री० रीला भाई ।
 अश्यासान० ना० पु० गुद, लड़ाई ।
 अश्याधम० गु० कचाकच ।
 अश्यामाना० स० कि० धूप दिलाना, धूप में लड़ा
 होना ।
 अश्यासान० ना० पु० अश्यासान ।
 अश्यामोई० ना० पु० वृत्तविशेष ।
 अश्यार० ना० पु० गृह, मकान ।
 अश्यारनई० ना० स्त्री० चौपड़ा, बेड़ा ।
 अश्यारना० स० कि० गदना ।
 अश्यारनी० ना० स्त्री० स्त्री ।
 अश्यारघार० ना० पु० घराना ।
 अश्यारघारी० ना० स्त्री० गृहरथ ।
 अश्याराना० ना० पु० कुटम्ब, घर के खोपड़ा ।
 अश्यारामी० ना० पु० हथैया ।
 अश्यारी० ना० स्त्री० संपटे हुये कपड़ों की गड्डी,
 तह लगे हुये कपड़े, घड़ी ।
 अश्यारीला० गु० घर का पालनू ।
 अश्यारीदा० } ना० पु० छोटा घर जो लड़के
 अश्यारीर० } खिलने के लिये बनाते हैं वा जिस
 अश्यारीशरा० } में खिलौना रखते हैं ।
 अश्यारघर० ना० पु० चकी आदि का शब्द ।
 अश्यारघरा० ना० स्त्री० धामरा ।
 अश्यारमं० ना० पु० प्रवेद, जलन, धूप, धाम,
 काल ।
 अश्यारण० ना० पु० घिसना, रगड़ना ।
 अश्यारुआ० ना० पु० रुक वा घात जो तेल से
 अधिक लिया जाता है ।
 अश्यारि० ना० स्त्री० गुच्छ, गुंथा ।
 अश्यासन० ना० पु० घर्षण ।
 अश्यासना० स० कि० घिसना, रगड़ना ।
 अश्यासियारा० ना० पु० घात काउनेहार ।
 अश्यासियारिन० ना० स्त्री० घसियारिणी
 नौमी ।

सक० ना० स्त्री० पीडा, दोष।
 सकता० अ० कि० स्त्रीसना, गड़ना।
 सका० ना० पु० लालसा, मम, चाट।
 सना० अ० कि० मसकना, कसकना, गड़ना।
 हकना० अ० कि० चहचहाना।
 हकार० ना० स्त्री० सहचहाहट।
 हकारना० अ० कि० चहचहाना।
 हचहाना० अ० कि० पत्तियों का बोलना।
 हचहाहट० ना० स्त्री० पत्तियों का शब्द।
 हटी० ना० स्त्री० दो नखों से दवाना; अर्थात्
 चुटकी काटना।
 इला० ना० पु० स्त्रीचङ्ग।
 हेये० अव्य० चाहिये।
 हु० शु० चारि, ४ अव्य० चाहो।
 हुआ० ना० पु० चारोंधोर।
 चक० } शु० चारोंधोर, लंग भंग।
 दिश० }
 युग० ना० पु० चारोंयुग।
 तु० ना० पु० नेत्र, आंख।
 शुभ्रवा० ना० पु० साँप, नाग।
 पुप० ना० पु० शैरवविशेष।
 ० ना० स्त्री० पीडाविशेष।
 उ० ना० पु० आनन्द, मंगल, खुशी।
 उ० शु० आनन्द में लामयुत।
 इ० ना० स्त्री० टेक, झुम।
 इ० ना० पु० चन्द्रमा।
 इनी० ना० पु० उजासा, ह्योति।
 इना० ना० स्त्री० चाँदकी ज्योति, सफेद
 बेलना।
 इनीचौक० ना० पु० चौड़ा मार्ग।
 हा० ना० पु० विहरी, पन्ती, चन्दा।
 ही० ना० स्त्री० रूपा, रजत।
 ० ना० स्त्री० मन्दूक की कल, काठ।
 ला० स० कि० गोसना, जोड़ना।
 त० } ना० पु० एक जिसपर कुम्हार बसते
 ना० } बनाता है; पहिया।

चाकी० ना० स्त्री० चकी।
 चाखना० स० कि० स्वादलेना, भुजासना।
 चाचा० ना० पु० पिताका भाई, चाचा।
 चाची० ना० स्त्री० चाचा की स्त्री।
 चाञ्चल्य० ना० पु० अस्थिरता।
 चाट० ना० स्त्री० चसका, लालच, पदार्थ।
 चाटक० ना० पु० भगर, त्रिधा, तिलरम, इन्द्र
 जाती।
 चाटकी० शु० चाटक जाननेहारा।
 चाटना० स० कि० जीभसे रसखीजना, चमड़ना
 चमड़ करना।
 चाटी० ना० स्त्री० मधनियां।
 चाणक० ना० पु० कररा, भद्रकाव, क्रोधकारक
 वार्त्ता।
 चाणक्य० ना० पु० राजाविशेष का मंत्री
 नीतिमय।
 चाण्ड० } ना० पु० राजाकंसका मनु।
 चाणूर० }
 चाण्डाल० शु० निर्दयी, अभिर्भावनाति।
 चाण्डूल० } ना० पु० पत्नी विशेष।
 चाण्डोल० }
 चातक० ना० पु० पर्पाहा पत्नी।
 चातर० ना० पु० महाजाल।
 चातुर० शु० तुर; चारि, बुद्धिमान्।
 चातुरी० ना० स्त्री० धूर्तता, चालाकी, बुद्धि
 मानी।
 चातुर्य० ना० पु० चतुराई।
 चातुर्वर्ष्यदेश० ना० पु० देश, जहाँ चारोंवर्ष
 में श्रावण, श्रावण, वैशख, श्राद्ध रहते हैं।
 चातुक० ना० पु० पंगोहा।
 चान्द्रमास० ना० पु० कृष्णपक्ष प्रतिपदा से
 नि पूर्णिमापर्यन्त।
 चान्द्रायण० ना० पु० व्रत जिसमें भोजन प्र-
 तिदिन एकमात्र घटते हैं तथा चन्द्रमा प्रतिदिन
 घटता है।
 चाप० ना० धतू, कमान, आबीसेव।

घसीटना० स० कि० खींचना, कढ़ेलना ।
 घसीटा० स० कि० जो कढ़ेला गया ।
 घसीला० गु० कृष्णस्थान, जहाँ घास हो ।
 घहराना० अ० कि० गरजना ।
 घाई० ना० स्त्री० घात, अंगुली का मुख्यस्थान, लूठ वा लह का चीरा ।
 घाई० ना० स्त्री० थोर, पहर ।
 घाघ० ना० पु० प्राचीन, चतुर, गु० बाजीगर, इन्द्रजालिक ।
 घाघरा० ना० पु० लहंगा, पौधाविशेष, नद विशेष ।
 घाट० ना० पु० नदी वा तालाब में उतरने वा स्नान करनेका स्थान; कर्णाटकदेशका पर्वत, जौल, घटी, गु० न्यून ।
 घाटा० ना० पु० चढ़ाव, घटी ।
 घटिया० ना० पु० घाट परका ब्राह्मण, जो स्नान करनेवाले के कपड़े बचाते हैं ।
 घाटी० ना० स्त्री० पर्वतों में संकेत मार्ग ।
 घात० ना० स्त्री० दवा, मार, दाव, हत्या, थोट ।
 घातक० गु० हत्याारा, शत्रु, मारनेवाला ।
 घाता० ना० पु० रूक, मोल वा तौल से अधिक लेना ।
 घातिनी० ना० स्त्री० हत्यारिन, मारनेवाली ।
 घाती० गु० दांव लेनेवाला, मारनेवाला ।
 घातुक० गु० अपकारी, निष्ठुर, हत्याारा ।
 घान० ना० पु० उखली वा चक्की आदि में जितना एक बार ढालते हैं; विवाह में कर्मी विशेष ।
 घानी० ना० स्त्री० तिल आदि, फोहड़, चकी ।
 घाघड़ा० } गु० व्याकुल, हेरान ।
 घाघरा० }
 घाम० ना० पु० धूप ।
 घामड़० गु० भोला, उल्लू, अहमक ।
 घायल० गु० हथियार लगने से जिसके घाव भया ।

घाल० ना० स्त्री० घुराई, बिगाड़ ।
 घालक० गु० अधिक, हस्तके, मारनेवाला ।
 घालन० ना० पु० इनन, बघन, मारण ।
 घालना० स० कि० बिगाड़ना, उजाड़ना, घुसेड़ना, मारना, पटकना ।
 घालित० गु० माराहुआ, उजाड़ाहुआ ।
 घाघ० ना० पु० चीरा; जरूम ।
 घास० ना० स्त्री० कृष्ण, खर ।
 घासी० } गु० घासवाला ।
 घासू० }
 घिघिआना० अ० कि० आधीना करना, सड़खाना, जिगजिगी करना ।
 घिचपिच० गु० घना, आसपास ।
 घिन० ना० स्त्री० घृणा, असह, तसफ़्फ़ुकुन ।
 घिनाना० अ० कि० कुदना, असह, देखके ऊचना ।
 घिनौना० गु० जिस को देखकर घिन, जावे ।
 घिया० ना० स्त्री० घुराई, तरकारी विशेष ।
 घिरना० अ० कि० घरे में पड़ना, उमरडना ।
 घिरनी० } ना० स्त्री० गरी, गिरी, कपोत विशेष, तरली ।
 घिरणी० }
 घिराना० स० कि० घेरा करवाना ।
 घिसना० स० कि० रगड़ना, सियाना, स० कि० मलना ।
 घिसाना० स० कि० रगड़ना, मलाना ।
 घिसाव० ना पु० } रगड़, रगड़ावट ।
 घिसावट० स्त्री० }
 घिसियान० स० कि० घसीटना ।
 घीकुवार० ना० स्त्री० शोध पौधा-विशेष ।
 घुघुची० ना० स्त्री० बेलिविशेषकाफल वा बीज ।
 घुघुरू० ना० पु० चौरासी, पीया ।
 घुटुआ० ना० पु० जानु गांठि; पांव की ।
 घुएडी० ना० स्त्री० बल आदि की, मोल, बस्तु यथा अंगरस में होती है ।
 घुटना० ना० पु० टेवना, जानु, अ० कि० घिसना, सांस रुकजाना ।

चापकर्ण० ना० पु० रोदा, पनच कमान की ।
 चापन० ना० पु० दावन, रामायणे यथा—
 (मुनिवर शयन कीन्ह तप जाई, लगे धरणा
 चापन दोड भाई) ।
 चापक्षेत्र० ना० पु० धनुषाकार क्षेत्र ।
 चाप्य० ना० पु० कूट ।
 चापना० स० कि० दांतसे कुचलना, कुचलना ।
 चावी० ना० स्त्री० कुन्नी ।
 चाम० ना० पु० चर्म ।
 चामर० ना० पु० चमर, छन्दविशेष ।
 चामीकर० ना० पु० सुवर्ण, सोना ।
 चामुण्डा० ना० स्त्री० योगिनीभेद, देवी विशेष ।
 चाम्पेय० ना० पु० चम्पवृक्ष ।
 चाय० ना० पु० चोप, हर्ष, स्वाद ।
 चार० गु० गिन्ती ४ ना० पु० दूत, पदाति ।
 चारिखानि० ना० स्त्री० स्वेदनादि ।
 चारण० } ना० पु० गचवैया, भांड, भाट,
 चारन० } प्रेय्य ।
 चारा० ना० पु० वनरपति, पशुभोजन, फारसी
 शब्द है ।
 चारी० गु० चलनेवाला, ना० स्त्री० चुसली,
 चराई, चारि ।
 चारु० गु० सुन्दर, अच्छा, ना० पु० पदमाक्री ।
 चारुपर्णी० ना० स्त्री० गन्धपसारन ।
 चारुफल० ना० पु० शंखर, दास ।
 चार्वाक० गु० वेदवाद्य, नास्तिक विशेष ।
 चाल० ना० स्त्री० गति, चलन, रीति ।
 चालना० स० कि० भाड़ना, आखा करना ।
 चालनी० ना० स्त्री० आटा छानने का पात्र ।
 चाला० ना० पु० गौना, सफर, सायत ।
 चाळी० ना० पु० मिसकारी, हीलावाज ।
 चाव० ना० पु० चाय, चारिअंगुल की माप,
 बांस विशेष ।
 चावल० ना० पु० तण्डुल, विरन ।
 चाप० ना० पु० नीलकण्ठ पक्षी, लहटोरवा, यथा
 (लोहपृष्ठस्तु कंकः स्वाद्य चापः किकीदि

दिः इत्यमरः) रामायणे (चारा चाप धाम
 दिशि लेई, मनौ सकल मंगल कहि देई) ।
 चास० ना० स्त्री० हलचलाना ।
 चासना० स० कि० हलचलाना ।
 चासा० ना० स्त्री० हलवाहा ।
 चाह० ना० स्त्री० इच्छा, प्रेम, रीझ, छोह ।
 चाहक० ना० पु० स्त्री० छोही, हितकारी ।
 चाहत० ना० स्त्री० चाह ।
 चाहना० स० कि० प्रेम करना, इच्छा करना,
 प्रार्थना करना, मांगना ।
 चाहिये० अव्य० अवश्य ।
 चाहिता० गु० प्यारा, मन भावित ।
 चाहिती० ना० स्त्री० प्यारी ।
 चाहो० अव्य० अधवा ।
 चिक० ना० स्त्री० पीड़ाविशेष, परदह ।
 चिकटा० ना० पु० टसर का कपड़ा विशेष ।
 चिकटा० गु० चिकट ।
 चिकना० ना० पु० तेल वा घृत गु० उजला,
 सुन्दर, तिलहा, अजितेन्द्रिय, चंचला, और
 चिकनियां ।
 चिकनाई० ना० स्त्री० चर्बी, भा० वा० चंचलहट,
 शोष, झलक ।
 चिकनाना० स० कि० उज्वल करना,
 शोषना ।
 चिकनाहट० ना० स्त्री० उज्वलता, शोष,
 सुन्दरता ।
 चिकवा० ना० पु० जाति विशेष जो मीठ
 बेचता है ।
 चिकार० ना० पु० शोर, चिलाहट, चंचे ।
 चिकारना० अ० कि० चंचे करना, नाकदिना
 शोर करना, चिल्लाना ।
 चिकारा० ना० पु० मृग विशेष, छोटी सारंगी ।
 चिकित्सक० ना० पु० वैद्य, तबीब ।
 चिकित्सा० ना० स्त्री० वैदई, तिवानत ।
 चिकुर० ना० पु० बाल, केश ।
 चिकोरना० स० कि० चिल्लोरना, चोंचियाना

चिकोरा० गु० तरल, बंचक ।
 चिक० ना० स्त्री० मकरी, अजा, काश्यप, यया
 (पहरी खेती चिक धन घर विधियन मूदवारि,
 येते पर जो नहि नरी जइ करै अधवारि,)
 चिकट० गु० चिकटा, मलिन ।
 चिकण० गु० चिकना ।
 चिकहा० ना० पु० चिकवा, वृजकस्ताप ।
 चिकार० ना० पु० शोर, विल्लाहट ।
 चिगडा० ना० पु० }
 चिगडी० ना० स्त्री० } भीगा ।
 चिगनी० ना० स्त्री० }
 चिगा० ना० पु० } मुरगी का बच्चा ।
 चिघाड़० ना० स्त्री० किलकार, कूक ।
 चिघाड़ना० य० कि० किलकारना ।
 चिघाड़ा० ना० पु० चिघाड़ ।
 चिचडी० ना० स्त्री० किलनी ।
 चिचिआना० य० कि० विल्लाना, मिमियाना ।
 चिआ० ना० स्त्री० अमिलीवृक्ष ।
 चिट० ना० स्त्री० खोर, धन्नी ।
 चिटकारा० ना० पु० खीटा, चिह्न ।
 चिट्टा० गु० गौरा, सफेद, ना० पु० एक रूपया ।
 चिट्टा० ना० पु० दिन-दिनका लेखा वा कमाई वा
 रोजानामा ।
 चिट्टी० ना० स्त्री० पत्र, पाती ।
 चिह्न० ना० स्त्री० ग्लानि, चिन्नायट ।
 चिह्नचिह्ना० गु० खुन्साहा, भजनभना, ना० पु०
 पायाविशेष ।
 चिह्ना० य० कि० कुंकलाना, शिजना, त्रिसि-
 याना ।
 चिह्नपडा० गु० चरपरा, तीता, तीक्ष्ण, कडआ ।
 चिह्ना० ना० पु० कट्टक ।
 चिहाना० स० कि० सिजाना, सताना, वै-
 ङना ।
 चिहिया० ना० स्त्री० गौरिया, पत्नी ।
 चिह्नीमार० ना० पु० नलिया, बधिक ।

चिरिड० ना० स्त्री० व्यय विशेष ।
 चित० ना० पु० चित, चैतन्य, गु० सृष्टालेटना
 चितकवरा० गु० चितला, कवरा, अबलक ।
 चितना० य० कि० रंगा जाना ।
 चितला० गु० कवरा, चितकवरा ।
 चितचन० ना० स्त्री० दृष्टि, दीठि ।
 चितचना० य० कि० देखना ।
 चितहट० ना० स्त्री० खींच, चित हट जाना ।
 चिता० } ना० स्त्री० सरा, मृतक के दाह
 चिताखा० } देने का स्थान ।
 चिताना० स० कि० जताना, सुचेत करना ।
 चिताभस्म० ना० स्त्री० चिता की राख ।
 चिताचना० स० कि० जताना, सचेत करना ।
 चिताचनी० ना० स्त्री० जतावनी, चिह्न ।
 चितेरा० ना० पु० चित्रकार, मुसव्विर ।
 चितौना० स० कि० देखना, विलोकना ।
 चित्त० ना० पु० मन, हृदय, सुधि ।
 चित्ता० ना० पु० औपथ, पौधाविशेष ।
 चित्ती० ना० स्त्री० चिह्न, लहसुन, सर्पविशेष,
 कोई जो रगड़ के चिकनी होगई ।
 चित्र० ना० पु० मूर्ति, रूप, अग्नि, मित्र, दोनों
 अरएड, शुरु, बंदर पत्नी ।
 चित्रक० ना० पु० चीता, पशु, चित्रसारी ।
 चित्रकन्दक० ना० पु० सिर्माकन्द ।
 चित्रकार० ना० पु० मुसव्विर, चितेरा ।
 चित्रकारी० ना० स्त्री० चित्रकार का काम, मुस-
 व्विरी ।
 चित्रकाय० ना० पु० नाथ, शेर, गुलबघा ।
 चित्रकूट० ना० पु० पर्वत विशेष ।
 चित्रकेतु० ना० पु० राजा विशेष ।
 चित्रगुप्त० ना० पु० यमराज भेद, यम के यहाँ
 घुरे भलेका लेतक ।
 चित्रदेवी० ना० स्त्री० इन्द्रवारुणी ।
 चित्रपत्त० ना० पु० तीतर पत्नी ।
 चित्रमानु० ना० पु० सूर्य, अग्नि
 चित्रभपत्त० ना० पु० कटूमरि ।

छापना० स० कि० छापाकरना, चिह्नदेना।
 छापा० ना० पु० चैत्यवाका तिलक, मुद्रा।
 छापाविद्या० ना० स्त्री० जिसके द्वारा अनेक पुस्तकें छापी जाती हैं, सव पुस्तु जानी जाती है।
 छाम० गु० इपला, हलका।
 छाया० ना० स्त्री० परदाई, छाह, पिराच, भूत।
 छायामट० ना० पु० रागिनीविशेष।
 छायाधर० ना० पु० वृत्तादि।
 छायापाद० ना० पु० छाया के परिमाण के समयका स्थिरकरना।
 छार० ना० स्त्री० छार, देखा जो बड़ा है।
 छारछुयोला० ना० पु० सुगन्धिवस्तु विशेष।
 छारी० ना० पु० छारी, श्रीमहादेवजी।
 छारू० ना० पु० निनावं।
 छाल० ना० स्त्री० बकला, दलका।
 छाला० ना० पु० फफोला, चमड़ा, खाल, फुका।
 छालियां० ना० स्त्री० सुपारीविशेष।
 छावना० स० कि० छाना।
 छावनी० ना० स्त्री० पलटनके रहनेका स्थान, लेन छानिका काम।
 छाह० ना० स्त्री० छाई।
 छिहनी० ना० स्त्री० छड़ी, कमची।
 छिक्का० ना० स्त्री० छीक।
 छिकिका० ना० स्त्री० नकछिकनी, पौधा।
 छिगुनी० } ना० स्त्री० कनिष्ठिका, कनगरिया।
 छिगुली० }
 छिचड़ा० ना० पु० घावका नया चमड़ा।
 छिचड़ला० ना० पु० दुबला, चमचिचड़।
 छिड़ड़ा० ना० पु० ससिड़ी, छेवर।
 छिल्ला० गु० उथला।
 छिल्लाई० ना० स्त्री० उथलाई।
 छिल्ली० ना० स्त्री० खलविशेष, थोड़ीगहरी।
 छिल्लोडा० गु० थोडा, हलका, नीच।
 छिटकना० अ० कि० फैलाना, विथरना।

छिटकनी० ना० स्त्री० विही जो किवाड़ों में लगती है।
 छिटकाना० स० कि० फैलाना, विथराना।
 छिटकी० ना० स्त्री० छर्ना, छोट।
 छिटकना० स० कि० छोटना, विथराना।
 छिटकाना० स० कि० छिटवाना, सिंचाना।
 छिटकाव० ना० पु० संच, सिंचाव।
 छिटना० अ० कि० चिदना, डूखी होना।
 छिटाना० स० कि० चिदाना, चिदवाना, डूखाना।
 छितनिया० } ना० स्त्री० डलिया।
 छितनी० }
 छितरना० अ० कि० विथरना, फैलना।
 छितराना० स० कि० विथराना, फैलाना।
 छिति० } ना० स्त्री० चिति, धरती, जमीन।
 छिती० }
 छिदना० अ० कि० विधना, गड़ना, स० कि० रोकना, रोकने का काम करना।
 छिदनी० ना० स्त्री० छेदने की वस्तु।
 छिदाना० स० कि० छेदकराना, रोकना।
 छिद्र० ना० पु० छेद।
 छिन० ना० पु० छण, लहमा।
 छिनकना० स० कि० नाक स्वच्छकरना।
 छिनला० ना० पु० व्यभिचारी, परस्त्रीगामी।
 छिनयाना० स० कि० छोर किसी से सिंचवाना।
 छिनाल० ना० स्त्री० व्यभिचारिणी, कुलदा।
 छिनाला० ना० पु० व्यभिचार, कुलदापन।
 छिनेक० ना० पु० छणैक।
 छिन्न० गु० लथित, क्षीण, दुबल।
 छिन्नभिन्न० गु० अलग २, तितर नितर।
 छिन्ना० ना० स्त्री० शरच; महासुरदी।
 छिपकली० ना० स्त्री० गृहगोपिका, टिकटिकी।
 छिपका० ना० पु० छिपकाव।
 छिपना० अ० कि० लुकना, गुप्तहोना।
 छिपा० गु० लुका, गुप्त, अमकट।
 छिपाना० स० कि० गुप्तकरना, लुकाना।

चित्रविचित्र० गु० अनेक रंग का है।
 चित्रशाला० } ना० स्त्री० जिस स्थान में
 चित्रसारी० } बहुत चित्र होवे, नगाइजाता,
 नफारजाता।
 चित्रा० ना० स्त्री० लौहवां नक्षत्र, इन्द्रवारुणी।
 चित्रांगद० ना० पु० राजा विशेष।
 चित्राफल० ना० पु० इन्द्रवारुणी।
 चित्रित० गु० चित्रयुक्त, चित्र किया गया।
 चित्रिणी० ना० स्त्री० चित्रविचित्र, भगवती
 का नाम है।
 चित्री० ना० स्त्री० चित्रसारी ना० पु० चितापत्र।
 चिथड़ा० ना० पु० गुदका, लता।
 चिथड़िया० गु० गुदड़िया।
 चिथाड़० ना० पु० फाड़ चीर, लथाड़।
 चिथाड़ना० स० क्रि० फाड़ना, चीरना।
 लथाड़ना० चि० चि० फाड़ना, चीरना।
 चिदाकाश० ना० पु० परमात्मा चैतन्य आ-
 काश में।
 चिनग० ना० स्त्री० मूत्रने में जलने पड़ना।
 चिनगाना० अ० क्रि० टीसना, चिल्लाना।
 चिनगारी० } ना० स्त्री० लूका आदि का
 चिनगी० } धोया सा फूल।
 चिनचिर्नाना० अ० क्रि० चिखाना, शोरकरना।
 चिन्त० ना० स्त्री० चिन्ता।
 चिन्तन० ना० पु० अभ्यास, चिन्तन।
 चिन्तना० अ० क्रि० अभ्यास करना।
 चिन्ता० ना० स्त्री० शोक, डर, जोखिम, संदेह,
 भावना।
 चिन्ताना० स० क्रि० अभ्यास करना।
 चिन्तामणि० ना० स्त्री० मणि विशेष।
 चिन्तित० गु० शोचा, भावित, विचारित।
 चिह्न० ना० पु० लक्षण, पहिचान।
 चिन्हार० ना० पु० चिन्हा, पहिचान।
 चिन्हारी० ना० स्त्री० चिन्हा, पहिचान।
 चिहित० गु० जो पहिचान गया, चिह्नयुक्त।
 चिपकना० अ० क्रि० लगना, सटना।

चिपकाना० स० क्रि० लगाना, सटाना, चिपटाना।
 चिपचिपा० गु० लसलसा, लिजलिजा।
 चिपचिपाना० अ० क्रि० लसलसाना।
 चिपटना० अ० क्रि० चिपटना, लिपटना।
 चिपटा० गु० लगाहुआ, चिपाचिपा।
 चिपटाना० स० क्रि० चपटाना, चिपी लगाना,
 लपटाना।
 चिपड़ी० ना० स्त्री० गोहरी।
 चिप्पक० गु० छिन्नलाना, ना० पु० पचीपि-
 शप।
 चिप्पा० ना० पु० चीप।
 चिप्पी० ना० स्त्री० जहाँ कागज आदि फटा
 जाता है वहाँ लगाई जाती है, छोटी चीप।
 चिवुक० ना० स्त्री० टोड़ी।
 चिमटना० अ० क्रि० चिपकना, लपटाना।
 चिमटा० ना० पु० स्यूटा, लोहे की वस्तु जो
 सुनार और लोहार आदि रखते हैं।
 चिमटाना० स० क्रि० लिपटाना।
 चिमटा० } गु० लचीला, कड़ा।
 चिमड़ा० }
 चिमड़ाई० ना० स्त्री० कड़ापन, एंटाई।
 चिमड़ाना० स० क्रि० कड़ा करना, अ० क्रि०
 कड़ा होना, एंटाजाना।
 चिमड़ाहट० ना० स्त्री० चिमड़ाई, एंटाई।
 चिमड़ी० ना० स्त्री० चिमड़ा।
 चिमसा० ना० पु० सरस पानी का।
 चिर० अव्य० बहुत, बहुत काल।
 चिरंजी० } ना० पु० आशीर्वाद, विशेष अ-
 चिरंजीव० } धातु बहुत जीवन होवे।
 चिरंजीवी० गु० बहुतदिनी, ना० पु० कीर्त्त।
 चिरकाल० अव्य० नित्य, सदा।
 चिरकुट० ना० पु० चिट।
 चिरकुटिया० गु० गुदड़िया।
 चिरचिरा० ना० पु० शीप व पौधाविशेष।
 चिरचिराना० अ० क्रि० चरचराना।
 चिरचिराहट० ना० स्त्री० कनकनाहट।

छिपाव० ना० पु० लुकावट, लुकाव, गोपन ।
 छिप्र० ना० स्त्री० शीघ्र, शिताबी ।
 छिप्रोद्भवा० ना० स्त्री० गुरुच ।
 छिमा० ना० स्त्री० क्षमा ।
 छिमाजोग० गु० समायोग्य ।
 छियालीस० गु० चालीस और छः ४६ ।
 छियासठ० गु० साठ और छः ६६ ।
 छियासी० गु० अस्सी और छः ८६ ।
 छिलका० ना० पु० बकला, फलादिके ऊपरकी लचाविशेष ।
 छिलना० अ० कि० रगड़ना, उधड़ना ।
 छिलाना० स० कि० कठवाना, रगड़ाना ।
 छिलैया० ना० पु० छीलनेहारा ।
 छिलौरा० ना० स्त्री० अंगुलीकी कोरपर फुडिया धिनही ।
 छीं० अर्थ० तुच्छकरने का वाक्य ।
 छींक० ना० स्त्री० सिनक, प्रसिद्ध, अतसः ।
 छींकना० अ० कि० मलाएडसे पयन उतरना ।
 छींका० ना० पु० रस्ती का जाल जिसमें वस्तु रखके लटका देते हैं ।
 छींछड़ा० ना० पु० चमड़े के समान अल्पमांस ।
 छींजना० अ० कि० घटना, गिरना ।
 छोट० ना० स्त्री० छिटकी, छोट ।
 छोटना० स० कि० विथराना, पानी छिड़कना ।
 छींनना० स० कि० झटकलाना, खींचना ।
 छीप० ना० स्त्री० छाई, लहसुन, जिस लकड़ी में बड़िशका सूत बांधते हैं, सींग से टकेलना ।
 छीपना० स० कि० पानी छिड़क देना, छीप निकालना, बख छापना ।
 छीपी० ना० पु० बख, छापनेहारा ।
 छीमी० ना० स्त्री० फली, धिलका ।
 छीलन० ना० पु० काटना, कतरना ।
 छीलना० स० कि० काटना, कतरना, धिलका उतारना, छीलना ।
 छुंगलिया० ना० स्त्री० धगुनी ।

छुछकारना० स० कि० तुच्छ करके निकालना, हुलकारना ।
 छुछवाना० स० कि० गाड़ना, पूकना ।
 छुटकारा० ना० पु० हड़वा, उद्धार ।
 छुटखेलना० अ० कि० लुम्पापन करना ।
 छुटखेला० गु० लुच्चा, बदमारा ।
 छुटना० अ० कि० उद्धारहोना, निकलना ।
 छुटाना० } ना० स्त्री० सुधी, छुटी ।
 छुटानी० }
 छुटापा० ना० पु० छुटाई, छोटान ।
 छुटी० ना० स्त्री० छुटकारा, उद्धार, रस्सत ।
 छुड़वाना० स० कि० छुटकारा कराना ।
 छुतहरा० गु० जो अपवित्र होगया, नापाक ।
 छुद्र० गु० छुद्र, नीच, हलका, नकबिकनी ।
 छुद्रघण्टिका० } ना० स्त्री० छुद्रघण्टिका, ता
 छुद्रमेखला० } गड़ी करधनी ।
 छुद्रा० ना० स्त्री० पतुरिया, बोहारा, अंगूर, कटारि पीधा, नीच स्त्री, नदी ।
 छुधा० ना० स्त्री० भूख ।
 छुपना० अ० कि० लुकना, गुप्तहोना ।
 छुपाना० स० कि० लुकाना, छिपाना ।
 छुपा० गु० लुका, गुप्त, छिपा, अग्रकट ।
 छुरा० ना० पु० बड़ीछुरी, बालमूँडनेका अस्त्र ।
 छुरिका० ना० स्त्री० पालक का साग, छुरी ।
 छुरी० ना० स्त्री० चाकू, खेड़ा, चाकू ।
 छुलकना० } अ० कि० थोड़ा थोड़ा
 छुलछुलाना० } मूतना ।
 छुलाना० स० कि० छुपाना, छिलाना ।
 छुलाना० स० कि० उजलाना ।
 छुहारा० ना० पु० वृक्ष वा उसका फलविशेष ।
 छुहावट० ना० स्त्री० लगावट ।
 छुवाना० स० कि० स्पर्शकराना, छुलाना ।
 छुई० ना० स्त्री० दूधिया मट्टी, लडियामट्टी ।
 छुकी० ना० स्त्री० मूच्छड़ ।
 छुछला० गु० बौदला, बावला ।
 छुछा० गु० शय्य, खोसला, खाली ।

चिरना० अ० कि० फटना ।
 चिरन्तन० शु० पुराना, प्राचीन ।
 चिरवाना० स० कि० फड़वाना, चिरना ।
 चिरांद० ना० स्त्री० जलतट्टय चमड़े की कुवा-
 सना ।
 चिराना० स० कि० फड़वाना ।
 चिरायु० गु० बहुत जीवन ।
 चिरु० शु० बहुत ।
 चिरुकाल० गु० बहुत दिन, चिरकाल ।
 चिरुकोलीन० गु० बहुतदिनी ।
 चिरौजी० ना० स्त्री० शुष्कफल विशेष ।
 चिरौरी० ना० स्त्री० विनती, खुशामद ।
 चिलक० ना० स्त्री० चमक, भड़क, दर्द ।
 चिलकना० अ० कि० चर्मकना, भूलकना और
 फोड़ा आदिका पिराना ।
 चिलचिम० ना० पु० मछली ।
 चिलचिलाना० अ० कि० चीलना, चित्राङ्गना ।
 चिलम० ना० स्त्री० तमाकू आगे भरने का
 पात्र ।
 चिलमची० ना० स्त्री० पात्र विशेष जिस में घूँह
 हाथ धोने का पानी रहता है, चिलम के नीचे
 रखनेकी वस्तु ।
 चिलचवन० ना० स्त्री० चिक, भंभरी ।
 चिलघल० ना० पु० वृक्षविशेष ।
 चिल्लड़० ना० पु० चीलड़, चिलुआ ।
 चिल्लाना० अ० कि० पुकारना, चिवाङ्गना ।
 चिल्लाहट० ना० स्त्री० पुकार, चिपार ।
 चिल्ली० ना० स्त्री० भोजनविशेष जो अण्डे से
 बनाते हैं, उल्लू ।
 चिहटना० अ० कि० चिपटना, लगना ।
 चिहुर० ना० पु० बाल, केश ।
 चीन्दी० ना० स्त्री० चीन्दी की विशेष ।
 चीक० ना० स्त्री० कीच ।
 चीखुर० ना० पु० गिलहरी ।
 चीतना० स० कि० चाहना ।

चीतल० ना० पु० जंगली जनुविशेष, गु
 चितना ।
 चीता० ना० पु० वेदुआ, व्याध, चाह, मुक्ति ।
 चीथना० स० कि० चियाङ्गना, फाङ्गना ।
 चीन० ना० पु० देश विशेष जो उत्तर पूर्व में है ।
 चीनी० ना० स्त्री० खांड़विशेष शु० चीनदेशी ।
 चीनीय० गु० चीनके मनुष्यादि ।
 चीन्ह० ना० स्त्री० पहिचान, चिह्न ।
 चीन्हना० स० कि० पहिचानना ।
 चीन्हा० ना० पु० पहिचान, चिन्हार ।
 चीर० ना० स्त्री० बलका, टुकड़ा सारा, खोच,
 ओढ़नी ।
 चीरना० स० कि० फाङ्गना ।
 चीरम० ना० स्त्री० चिरौजी ।
 चीरा० ना० पु० फाड़, धाव, पुष्पापन, पगड़ी ।
 चीरी० ना० स्त्री० भोगुर ।
 चील० ना० स्त्री० चीलह, मछी जिसका मुकान
 पर बैठके चिल्लाना अयुभ है ।
 चीलड़० }
 चीलर० } ना० पु० डाल, पञ्जाबिया, चीलह ।
 चीलहर० }
 चुआन० ना० स्त्री० जल के निकलनेकी भूमि ।
 चुआना० स० कि० टपकना, कूप में जल
 निकालना ।
 चुकती० ना० स्त्री० निपटारी ।
 चुकना० अ० कि० समाप्तहोना, निपटना,
 टहरना ।
 चुकाई० ना० स्त्री० चुकता ।
 चुकाना० स० कि० निपटाना, टहराना ।
 चुकौता० ना० पु० निपटारा, टहराव ।
 चुफिका० ना० स्त्री० अमिलोवृक्ष ।
 चुगना० अ० कि० घुंमना, घुगना ।
 चुगी० ना० स्त्री० अन्नका कद, महसूल ।
 चुचकारना० स० कि० चोचलाकरना और
 चुमकारना ।
 चुचकारी० ना० स्त्री० चुमकारी ।

छुछी० ना० स्त्री० कुरित, अपमाना, नीच, खाली ।
 छुट० ना० स्त्री० बटो, छुड़ाव, भूषणकी चमक ।
 छुटना० अ० कि० छुटना, निकलना ।
 छूत० ना० स्त्री० अपवित्रता, नापाकी ।
 छुना० स० कि० स्पर्श करना ।
 छेक० ना० स्त्री० रोक ।
 छेकना० स० कि० रोकना ।
 छेकवैया० ना० पु० रोकवैया ।
 छेकाव० ना० पु० रकाव ।
 छेड़० ना० स्त्री० लिजावट, दुखाव ।
 छेड़ना० स० कि० लिजाना, दुखाना ।
 छेद० ना० पु० छिद्र, मुख, सूराल ।
 छेदक० ना० पु० छेदकर्ता, वेधक ।
 छेदन० ना० पु० छेद, वेधन ।
 छेदना० स० कि० वेधना, वंशमाना ।
 छेना० ना० पु० सिरसा, छेवना ।
 छेनी० ना० स्त्री० छेवनी, छेदनी ।
 छेम० ना० स्त्री० छेम, कुशल ।
 छेमझरी० ना० स्त्री० छेमझरी, भला चाहने वाली ।
 छेरी० ना० स्त्री० बकरी ।
 छेल० } ना० पु० बकरा ।
 छेलक० }
 छेय० ना० पु० पाख, फायदा, चिराव ।
 छेयना० स० कि० छेटना, काटना, फाड़ना ।
 छेयनी० ना० स्त्री० काटनी, टांकी ।
 छेया० ना० पु० पुस्तकमें ठहरावके स्थानका चिह्न ।
 छेय० ना० पु० छेव, छेत ।
 छेयफल० ना० पु० छेयभल ।
 छैया० ना० पु० छाकरा ।
 छेल० } शु० वांका, चिकनियां,
 छेलचिकनियां } अफइत ।
 छेला० }
 छाभा० ना० पु० जमी ।
 छाकड़ा० } ना० पु० लडका ।
 छाकरा० }

छाछो० ना० स्त्री० अर्नी, गौदी ।
 छाटा० गु० कनिष्ठ, लघु, अल्प ।
 छाटारि० ना० स्त्री० थोड़ाई, छोटापा ।
 छाड़ना० स० कि० त्यागना, छमाकरना ।
 छोड़ा }
 छोड़ाव० } ना० पु० छुटकारा, छुटी, उद्धार ।
 छोड़ावा० }
 छोड़ावना० स० कि० छुटकारा करना, उद्धार करना ।
 छोड़ौती० ना० स्त्री० छुटो, छुट ।
 छोनी० ना० स्त्री० पृथ्वी, धरती, छाषि ।
 छोप० ना० पु० एकवार, रंगभरन, भिरना ।
 छोपन० स० कि० भरदना, रंगदेना ।
 छोरो० ना० पु० किनारा, कगर, तिरा ।
 छोरना० स० कि० छोड़ना ।
 छोरा० ना० पु० लडका ।
 छोराछोरी० ना० पु० लडका, लडकी ।
 छोरी० ना० स्त्री० लडकी, पुत्री ।
 छोलना० स० कि० छीलना ।
 छोलनी० ना० स्त्री० छोलनेका धर, धुपी ।
 छोह० ना० पु० स्नेह, प्रेम, दया ।
 छोहरा० ना० पु० लडका ।
 छोहा० शु० स्नेही, प्रेमी, चाइक ।
 छोफन० ना० शु० बघार ।
 छोफना० स० कि० बघारना ।
 छोफन० ना० पु० भपटा भपटी करनेहार ।
 छोफना० स० कि० भपटा भपटी करना ।
 छोना० ना० पु० जन्तुका बच्चा, बच्चा ।
 छोनी० ना० स्त्री० छावनी, छपरनदी करना ।
 छोरो० ना० पु० सुएडन ।
 छोरोक० ना० पु० नाई, नाऊ ।
 छोरोकर्म० ना० पु० सुएडना, बालसुएडना, हजामत बनवाना ।
 (ज)
 ज० अर्थ० शब्द के अन्तमें संयुक्त होकर उत्पत्ति का बोधक होताई ।

सुञ्च० ना० पु० सुनिवेश ।
सुञ्चक० ना० स्त्री० भेड़ी, सुंचक, ऊर्णावृत्तिनिपट्टः ।
सुञ्चद० ना० पु० चूचा, बड़ी चूची ।
सुटकी० ना० स्त्री० नीच; सुमयी, सुष्टीभरः अन्न,
 पांवकी अंगुलीका गहना ।
सुटकुला० ना० पु० ठटोली, मत्ताक ।
सुटला० ना० स्त्री० चोटी ।
सुटाना० }
सुटालना० } स० कि० धावकरना, दूध पिलाना
सुटावना० } गाय इत्यादिका ।
सुडुवा० ना० पु० पूड़ा जो धान कूटके बनाते हैं ।
सुडुख० } ना० स्त्री० प्रेतिनी, फू-
सुडुलिया० } हड़ ।
सुनत० } ना० स्त्री० परत, तह, तोड़ ।
सुनन० }
सुनना० स० कि० कपड़ोंका तोड़ना वा इकट्ठा
 करना, छांटना, टूंगना, बानना ।
सुनरी० ना० स्त्री० लालरंगी हुई धोदनी ।
सुनवाना० } स० कि० टूंगाना, बिनवाना, छट-
सुनाना० } वाना, कपड़ोंका तह लगवाना ।
सुनावट० ना० स्त्री० सुनत ।
सुनी० ना० स्त्री० चूनी ।
सुनौटा० ना० पु० } पात्र जिसमें पात तम्बाकू
सुनौटी० ना० स्त्री० } खानिके लिये चूना रखते हैं,
 युद्धमें सेन्यको धाड़सदेना, कौजमें से चलवानों
 को धावा के लिये छांटना, जेठसुदी एकादशी को
 पैरके पारजाना जो काशीनीमें प्रचलितरीति है ।
सुनौटिया० शु० पश्चिम में बैंगनीरंग को कहते हैं ।
सुनौती ना० स्त्री० तलाक, शर्त, बदनकी बात,
 निशानी, चिन्हारी, स्मारकवस्तु ।
सुन्धला० शु० त्योंधा, न्यनरोगी ।
सुन्धलाना० अ० कि० त्योंधाहोना ।
सुन्धा० शु० त्योंधा, चिमधा ।
सुन्ना० स० कि० सुनना ।
सुन्नी० ना० स्त्री० छोटामाणिक ।

सुप० }
सुपका० } गु० मीनी, अचोल ।
सुपचाप० }
सुपसुपाना० अ० कि० सुपचाप रहना ।
सुपइना० स० कि० चिकनाना, मलना ।
सुपड़ी० गु० चिकनी, चिकना ।
सुप्प० ना० पु० }
सुप्पी० ना० स्त्री० } मौनता, खामोशी ।
सुप्पा० गु० मौन, सुपका, अचोल ।
सुभकी० ना० स्त्री० इचकी, गोतामारना ।
सुभना० अ० कि० गइना, हसना, बिथना,
 छिदना, पेटना ।
सुभाना० स० कि० सुसेइना, छेदना, पेटना ।
सुमाना० स० कि० चूमादेना वा दिलवाना ।
सुम्कार० ना० पु० }
सुम्कारी० ना० स्त्री० } सुम्कारी ।
सुम्कारना० स० कि० सुचकारना ।
सुम्बक० ना० पु० लोहे का आकषक पत्थर ।
सुम्बन० ना० पु० चूमा स्नेहपरा होकर अंग
 में थोड़ा स्पर्श करना ।
सुरकुट० ना० पु० सुकनी, चूर्ण ।
सुरगना० अ० कि० चें चें करना ।
सुराना० स० कि० चोरी करना ।
सुरुगना० अ० कि० बकना, बड़बड़ाना ।
सुल० ना० स्त्री० खुजलाने की इच्छा ।
सुलसुल० ना० पु० चंचलाहट ।
सुलसुलाना० स० कि० खुजलाना, बुदबुदना ।
सुलसुली० ना० स्त्री० चंचलाहट ।
सुलसुला० गु० चंचल, रँगिला ।
सुलसुलाना० अ० कि० चंचल होना ।
सुलसुलाहट० ना० स्त्री० सुलसुलापन ।
सुलसुलिया० शु० सुलसुला ।
सुलहार० ना० स्त्री० कामातुरी ।
सुलहार० ना० पु० कामातुर ।
सुल्ल० ना० पु० एकहाय का समुद्र, सुष्टीभर ।
सुसकर० ना० पु० पिवकर ।
सुसनी० ना० स्त्री० चूचनी ।

जकड़ना० स० कि० कसना, बांधना ।
 जकड़बन्द० ना० पु० चकड़वाई ।
 जग० ना० पु० जगत्, संसार, यज्ञ, जौर जहाँ जासके ।
 जगद्यक्षु० ना० पु० सूर्य ।
 जगजगा० ना० पु० पीतलकी पच्ची ।
 जगजगाहट० ना० स्त्री० चमचमाहट ।
 जगजीवन० ना० पु० पानी, ईश्वर ।
 जगण० ना० पु० गणविशेष ।
 जगत्० ना० पु० संसार, दुनियां, टेक ।
 जगता० गु० जा सोता नहीं, अनीदा ।
 जगती० ना० स्त्री० धरती, पृथ्वी, लोग ।
 जगत्प्राण० ना० पु० पवन, ईश्वर ।
 जगदम्बा० ना० स्त्री० आदिशक्ति, देवी, भवानी;
 जगत्की माता ।
 जगदादि० ना० पु० पृथ्वीका आरम्भ ।
 जगदाधार० ना० पु० शेष, दिग्गज, गौआदि, ईश्वर ।
 जगदीश० ना० पु० परमात्मा, विष्णु, शिव
 राजाधिराज ।
 जगधर० ना० पु० शेषजी ।
 जगना० अ० कि० नौदसे उठना, चेतना ।
 जगन्नाथ० ना० पु० पुरुषोत्तम, उडैसा देश में
 श्रीकृष्णचन्द्रजी ।
 जगन्मित्र० गु० सबका दोस्त, सबका मित्र ।
 जगन्मित्रता० ना० स्त्री० सबकी मित्रता रखना ।
 जगमगा० गु० चमकीला ।
 जगमगाना० अ० कि० चमकना, भूमकना ।
 जगयोनि० ना० पु० ब्रह्मा ।
 जगबल्लभा० ना० स्त्री० वेश्या, पतुरिया ।
 जगह० ना० स्त्री० ठौर, धरती, समाई, गुजायरा ।
 जगाजोति० ना० स्त्री० चटक, भड़क ।
 जगाना० स० कि० सोतेसे उठाना ।
 जगेश्वर० ना० पु० जगेश्वर ।
 जघन० ना० पु० उररखल ।
 जघन्य० गु० नीच ।
 जङ्गम० ना० पु० चलनेवाला, वेपथारी, गु० जो

चलने की सामर्थ्य रखता है, बैरागी ।
 जंगल० ना० पु० तन, अरख्य ।
 जंगला० ना० पु० रागिनीविशेष ।
 जंगली० ना० पु० बगैला, वनवासी ।
 जघ० ना० पु० जांघ, रान ।
 जंघा० ना० स्त्री० जांघ, जात ।
 जचना० अ० कि० अटकला ज्ञाना, परीक्षा हेतु ।
 जचाना० स० कि० अटकलकराना, कसवाना,
 परीक्षा कराना ।
 जचावट० ना० स्त्री० परीक्षा, जांच ।
 जंजाब० ना० पु० उलझेडा, दुःख, क्लेश ।
 जंजाली० गु० क्लेशी, दुःखदाता ।
 जट० ना० स्त्री० जटा ।
 जटना० स० कि० चिपटजाना, मूडना ।
 जटा० ना० स्त्री० बिगड़ेहुये बाल, भूश्रीरा ।
 जटाधारी० गु० जटा रखनेवाला ।
 जटामांसी० ना० स्त्री० छड़चौपवि ।
 जटायु० ना० पु० गृध्रविशेष ।
 जटित० गु० जड़ाहुथा, जड़ाऊ ।
 जटिल० गु० पुराना, जटाधारी ।
 जटी० ना० पु० बरगद वृक्ष, शिवजी ।
 जठर० ना० पु० पेट, उदर ।
 जठरानल० ना० पु० पेटकी अग्नि ।
 जेठरा० गु० बड़ा, जेठा ।
 जेठरी० ना० स्त्री० बड़ी, बूढ़ी ।
 जड़० ना० स्त्री० मूल, गु० मूल, स्थावर, नि-
 जाँव, दुष्ट, निशाचर ।
 जड़न० ना० स्त्री० जड़ने का काम ।
 जड़ना० स० कि० लगाना, जोड़ना ।
 जड़पेड़० ना० स्त्री० समूचापेड़, अर्थात् सब ।
 जड़वट० ना० स्त्री० स्तम्भ ।
 जड़हन० ना० पु० धान जो कातिक अगहन में
 काय जाता है ।
 जड़ाई० ना० स्त्री० जड़ने का काम वा जड़ने
 का पैसा ।
 जड़ाऊ० मण्डिपुक्तादि से जड़ाभया, जड़ाहुथा ।

चुहचुहा० गु० जो गहिरा रंगागया ।
 चुहचुहाना० थ० कि० गहिरा रंगाजाना, प-
 वियों का शब्द जो प्रातःकाल होता है ।
 चुहल० ना० स्त्री० चर्चा, चहलचहल ।
 चुहला० गु० ठोस, हँसोड़ा ।
 चुंगी० ना० स्त्री० चुंगी ।
 चुंची० ना० स्त्री० कुच, भिटनी, धन ।
 चुंटा० ना० पु० पृथ्वीं रहनेहारा जन्तु विशेष ।
 चुंटी० ना० स्त्री० छोटा नटा वा उसकी रीं ।
 चुक० ना० स्त्री० मूल, भ्रम, पौधा विशेष गु०
 सदाविशेष ना० पु० औषध विशेष ।
 चुकना० थ० कि० भूलना, धोता देना ।
 चुका० ना० पु० सदा साग ।
 चुची० ना० स्त्री० चुची ।
 चुड़० ना० स्त्री० सोने वा चांदी की वस्तु जो
 विषवा पहिनती है, ना० पु० कड़ा विशेष जो
 हाथी के दांतों में पहिनाने हैं, साट की पट्टी
 का सिरा वा नोक ।
 चुड़ा० ना० पु० संस्कार की रीति से प्रथम सु-
 रजन, लाख की चूड़ी, लताट के ऊपर बंधेहुये
 केश, चर्वण विशेष ।
 चुड़ाकरण० } ना० पु० सुरजन ।
 चुड़ाकर्म० }
 चुड़ामणि० ना० स्त्री० कंकण की मणि ।
 चुड़ी० ना० स्त्री० शियोंके हाथमें पहिननके लिये
 जो चांदी वा लाख वा कांचकी बनती हैं ।
 चुत० ना० स्त्री० योनि, आग्न ।
 चुतड़० ना० पु० नितम्ब, जेघाका उपरिभाग, पुड़ा ।
 चुतिया० ना० पु० उल्लू, अहमक ।
 चुन० ना० पु० आटा, पित्तान ।
 चुना० ना० पु० चूर्ण, वा जो पानमें लगाते हैं,
 मिट्टी वा पत्थर वा कंकर वा सीप जली हुई
 थ० कि० टपकना, रसियाना, छनना ।
 चुनी० ना० स्त्री० दलाहुया उड़दयादि, खुदी ।
 चुमकपत्थर० ना० पु० चुंबक ।
 चुमना० स० कि० चुमालेना, मन्धी लेना ।

चूमा० ना० पु० मीठी, मन्धी ।
 चूर० ना० स्त्री० चुकनी, चूर्ण ।
 चूरन० ना० पु० चूर्ण ।
 चूरना० स० कि० चूर्ण करना ।
 चूरा० ना० पु० रेतन, बूरा, चूड़ा ।
 चूरी० ना० स्त्री० बहुत धी पड़ीहुई रोटी, बूड़ी ।
 चूर्ण० ना० पु० रेणु, चुकनी ।
 चूल० ना० स्त्री० एक लकड़ी का सिरा जो दूसरी
 लकड़ीमें डालते हैं, किवाड़के खंड नांचे ऊपरके ।
 चूल्हा० ना० पु० } आग रखने वा रोटी पकाने
 चूल्ही० ना० स्त्री० } की वस्तु ।
 चूसना० स० कि० पीलेना, मुड़कना ।
 चूहड़ा० पु० ना० मेहतर, मंगी ।
 चूहड़ी० ना० स्त्री० मंगिनि ।
 चूहा० ना० पु० मूरा, मूयक ।
 चूही० ना० स्त्री० छोटा मूरा, उसकी स्त्री ।
 चूची० ना० स्त्री० वस्तु जिसमें सुई रखते हैं ।
 चूचकरना० थ० कि० चुड़कना ।
 चूड़ा० ना० पु० यौवन, छोटा ।
 चंप० ना० पु० वृक्षका फल वा लासा ।
 चेटक० ना० पु० सेवक, नौकर, भगरविद्या ।
 चेटकी० ना० पु० इन्द्रजाल, ख्याल दिखानेहारा,
 ना० स्त्री० दासी, सेवकिन ।
 चेटी० ना० स्त्री० दासी, लौंडी ।
 चेत० ना० पु० स्मरण, होश, याद, सुधि ।
 चेतक० गु० चेत करनेहारा, चेत में हो ।
 चेतका० ना० स्त्री० सरा, चिता, रामचन्द्रिकाया,
 मनो चेतका में सनी सत्त धारी ।
 चेतकी० ना० स्त्री० हर् ।
 चेतना० स० कि० स्मरण करना, ध्यानलगाना,
 विचारना, सुधि में आना ना० स्त्री० बुद्धि ।
 चैता० गु० चेत करनेहारा ।
 चेरा० ना० पु० चिला, चाकर, सेवक ।
 चेराई० ना० स्त्री० दासत्व, सेवकाई ।
 चेरी० ना० स्त्री० चैली, दासी ।
 चेरे० ना० पु० चेराका बहुवाक्य ।

जङ्गाना० स० कि० जङ्गवाना, जाङ्ग खाना ।
जङ्गाव० ना० पु० जङ्गनेका काम ।
जङ्गावर० ना० स्त्री० जाङ्ग के कपड़े ।
जङ्गित० गु० जङ्गित, जाङ्गहुआ ।
जङ्गिनी० गु० स्त्री० जङ्ग स्त्री, दुष्टिनी ।
जङ्गिया० ना० पु० जङ्गनेवाला, जाङ्गी, सुनार ।
जङ्गी० ना० स्त्री० श्रौषधि; पौषिक जङ्ग ।
जत० ना० स्त्री० रीति, डील ।
जतन० ना० स्त्री० यत्न, तदबोर ।
जतनी० ना० स्त्री० यत्नी; तदबोर करनेवाला ।
जताना० स० कि० बुझाना, चिताना, बताना ।
जतारा० ना० पु० वंश, घराना, पीढ़ी ।
जती० ना० गु० यती, सन्यासी, शान्त ।
जतु० ना० स्त्री० लात ।
जतुआ० ना० पु० लड़ीका खूब ।
जथा० अर्थ० व्यथा, ना० पु० समूह ।
जथार्थ० अर्थ० यथार्थ, सच ठीक ।
जद० अर्थ० यदा, जब ।
जदु० ना० पु० यदु ।
जदुनाथ० }
जदुनाथक० } ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्रजी ।
जदुपति० }
जदुवंशी० गु० यदुवंशी ।
जद्यपि० अर्थ० यद्यपि ।
जन० ना० पु० मुख्यलोग, नौकर ।
जनक० ना० पु० पिता, श्रीमताजी के पिता ।
जनकपुर० ना० पु० पिताका गाँव या नगर, तिर-
हुत नगर ।
जन्ता० ना० स्त्री० लोग वा लोगों का समूह,
मनुष्यता, आदिमियत ।
जनन० ना० पु० जन्म, उत्पत्ति ।
जनना० अ० कि० जन्महानि ।
जननी० ना० स्त्री० माता, महतारी ।
जनरथ० ना० पु० लोगोंका सन्ध ।
जनलोक० ना० पु० लोक विशेष, जिसमें साधु
लोग मरने के पीछे भास करत हैं ।

जनायित्री० ना० स्त्री० माता, जननी ।
जनघासा० ना० पु० जहाँ बरात-ठहरती है ।
जनश्रुति० ना० स्त्री० सन्देश, समाचार ।
जनहाई० }
जनहार० } अर्थ० मनुष्य, मनुष्यसहित, प्रत्येक,
हरएक ।
जना० ना० पु० लोग, मनुष्य, गु० पुत्र उत्पन्न
हुआ, भया ।
जनाई० ना० स्त्री० जो स्त्री लड़का जन्माती है, दिखाई ।
जनाजात० अर्थ० जनहाई ।
जनार्ती० गु० कन्याके ओरके बराती, बराती लोग ।
जनाना० स० कि० उत्पन्न कराना, जन्माना,
चिताना, दिखाना ।
जनाईन० ना० पु० श्रीकृष्णजी ।
जनाव० ना० पु० जताव, लाताव ।
जनिका० ना० पु० इत्थं जिसका दोषकार अर्थहोवे ।
जनित० गु० उत्पन्न भया, उपजा ।
जनी० ना० स्त्री० दाती, बहू, व्यानी ।
जनु० ना० पु० जन्म, उत्पत्ति, अर्थ० मानी ।
जनक० अर्थ० जाना ।
जनेऊ० ना० पु० यज्ञोपवीत ।
जनेत० ना० पु० बरात ।
जनेवा० ना० स्त्री० तृणविशेष, कांथासोटी ।
जनेश० ना० पु० राजा ।
जनी० ना० पु० जनेऊ ।
जन्ता० ना० पु० तारखीबिने का यन्त्र ।
जन्ताना० स० कि० दवाना, निचोड़ना ।
जन्तार० ना० पु० यन्त्र ।
जन्तु० ना० पु० जीवधारी, जूदजीव ।
जन्तुक० ना० पु० हाँस ।
जन्तुहनन० ना० पु० विडंग श्रापधि ।
जन्म० ना० पु० उत्पत्ति, पैदायश ।
जन्मदाता० ना० पु० पिता ।
जन्मदिन० ना० पु० वर्षबन्धन, वर्षगाँठ ।
जन्मना० अ० कि० उपजना, पैदाहाना ।
जन्मपत्री० ना० स्त्री० जन्मकुण्डली, लग्नकुण्डली,
जायचह ।

चेला० ना० पु० लौंढा, दास, शिष्यः ।
 चेली० ना० स्त्री० लौंढी, दासी, शिष्या ।
 चेचली० ना० स्त्री० रेशमी वस्त्र विशेषः ।
 चेष्टा० ना० स्त्री० शरीरका व्यापार, उद्योग, अन्यासात् ।
 चैत० ना० पु० चैत्रमास ।
 चैतन्य० शु० चोक्त, सुचेत, प्राणी, जीवितत्वात् ।
 पु० आत्मा, परमात्मा ।
 चैतन्यता० ना० स्त्री० चोक्तता, सुचेतता, ईश्वरता ।
 चैन० ना० पु० सुप्त, फल, जातना, बोना ।
 चैनी० शु० जाती बोई धरती, सुप्त करनेहारा ।
 चैला० ना० पु० ईधन के लिये चौरिलकड़ीकाटुकका ।
 चैत्र० ना० पु० प्रथम मास, चैत ।
 चोँकना० स० क्रि० चुभाना, गड़ाना ।
 चोंगा० ना० पु० नली, नलूथा, डल्लू, निषण ।
 चोंच० ना० स्त्री० टोंट, चंचू ।
 चोंचला० ना० पु० चोचला ।
 चोंटना० ना० पु० जिससे जोटी गूथते हैं, चोटी ।
 चोँथना० स० क्रि० बकोटना, नोचना ।
 चोंप० ना० स्त्री० चाह, इच्छा, हुलास ।
 चोत्रा० ना० पु० सुगन्धिद्रव्यविशेष, फली, टपक ।
 चोत्राडु० ना० पु० पहाड़िया, जातिविशेष ।
 चोकर० ना० पु० आटेकी भूसी, रई, रवा ।
 चोखा० शु० खरा, शुद्ध, सधा, तीक्ष्ण, सूक्ष्म ।
 चोखाई० ना० स्त्री० खराई, शुद्धता, सचाई ।
 चोखी० ना० स्त्री० खरी, गानेबजानमें शुद्धस्वर ।
 चोगा० ना० पु० खाना जो छोटी चिड़ियाको लिलोते है ।
 चोचला० ना० पु० चुचकारी, गांवसाँ, फुसलाहट ।
 चोट० ना० स्त्री० धाव, चपेट, पछाड़, पटकना, धाव, धोखा ।
 चोटाना० ना० पु० बड़ा, जूसी ।
 चोटियाना० स० क्रि० चुगलना, छेड़नाकरना ।
 चोटी० ना० स्त्री० शिखा, शिखर, कोटी ।
 चोटाना० ना० पु० चोर ।
 चाट्टी० ना० स्त्री० चौर स्त्री, जोरकी स्त्री ।
 चोथ० ना० पु० छोथ, गोबर ।

चोथना० स० क्रि० फाड़ना, तोड़ना ।
 चोन्धला० शु० सुभला ।
 चोन्धलाना० अ० क्रि० सुन्धलाना ।
 चोन्धी० ना० स्त्री० सुन्धी, सुन्धी ।
 चोप० ना० स्त्री० चोंप, भग्नता, लह ।
 चोपना० अ० क्रि० चाहना, इच्छाकरना ।
 चोभा० ना० पु० कील, कीला ।
 चोभी० ना० स्त्री० छोटी चोभा ।
 चोया० ना० पु० द्विलका, देवसाँ, सुगन्धवस्तुविशेष ।
 चोर० ना० पु० चोँटा, टंग, तस्कर, डाकू ।
 चोरटी० ना० स्त्री० चोरनार ।
 चोरमहीचिनी० ना० स्त्री० आतिथुईना खेल ।
 लुकालुकारी ।
 चोराना० स० क्रि० चोरीकरना ।
 चोरी० ना० स्त्री० ठगई, उकती ।
 चोल० ना० पु० मजौट ।
 चोलना० ना० पु० बड़ा कुता, अगस्ता ।
 चोला० ना० पु० शरीर, जामा, अगस्ता, वस्त्रविशेष ।
 चोली० ना० स्त्री० अगिया ।
 चोवा० ना० पु० चोत्रा ।
 चोव्य० शु० चूस्ने के योग्य वस्तु, आभूषण ।
 चौ० ना० पु० पिछले दाँत, लोहा जो नागल के गुनियर लगावहता है, शु० चार ।
 चौअधी० ना० स्त्री० सपयेका चौथाभाग ।
 चौक० ना० स्त्री० किन्नक, भटक, और एकएक जानना ।
 चौक्रना० अ० क्रि० किन्नकना, जमाना ।
 चौकेल० ना० पु० किन्नकारा, बुनेला ।
 चौगा० ना० पु० फुसलाहट, छल ।
 चौगी० ना० स्त्री० फुसलाहट ।
 चौतरा० ना० पु० चौतरा, तबूतरा ।
 चौतीस० शु० तीस और चार ।
 चौथ० ना० स्त्री० आस, तिराभराना ।
 चौथियाना० अ० क्रि० धराना, व्याकुलहोना ।
 चौरी० ना० स्त्री० चमर, दास, धोई ।

जन्मभूमि० ना० स्त्री० } उत्पत्तिका घर वा
जन्मस्थान० ना० पु० } स्थान ।

जन्माना० स० क्रि० उपजाना, पैदाकराना ।

जन्मान्तर० ना० पु० और जन्म ।

जन्मान्तरीय० गु० अगले जन्मका उपार्जित ।

जन्मान्ध० गु० जन्मका अन्धा ।

जन्मोत्सव० ना० पु० जन्महोने का आनन्द,
कृष्णजन्मोत्सव ।

जन्यजनकभाव० ना० पु० उत्पन्न कियाहुआ
और उत्पन्न कीहुई वस्तु इनका सम्बन्ध ।

जप० ना० पु० पाठ मन्त्रादिका उच्चारण ।

जपन० ना० पु० मन्त्रउच्चारण पाठ ।

जपना० स० क्रि० मन्त्रादिका उच्चारण ।

जपन्ता० गु० जापक ।

जपमाला० ना० स्त्री० जपनेकी माला ।

जपा० ना० पु० हुड़हुड़ का फूल ।

जपी० गु० जापक ।

जरीतपी० ना० पु० अर्घक, भजनीक ।

जव० अन्य० यदा ।

जवड़ा० ना० पु० जभा ।

जवहा० गु० अकड़ा, अनाड़ी ।

जवहिया० गु० कुरूप ।

जभा० ना० पु० जवड़ा ।

जम० ना० पु० यम, मृत्युगण ।

जमअनुजा० ना० स्त्री० यमुनागी ।

जमक० ना० पु० यमक, पहिला शब्द छन्दका ।

जमकना० अ० क्रि० बनना, निभना, ठहरना ।

जमकाना० स० क्रि० बनाना, ठहराना, बैठाना ।

जमघट० ना० पु० मण्डली, भोड़ ।

जमजम० अन्व० निरन्तर, सदा ।

जमदग्नि० ना० पु० परशुराम के पिता ।

जमदूत० ना० पु० यमदूत ।

जमधर० ना० पु० कटर ।

जमना० अ० क्रि० उगना, ठहरना, जमनाना ।

जमराज० ना० पु० यमराज ।

जल० गु० दो, २ ।

जमहाई० ना० स्त्री० आलस्यवशा हेकर घुल
का पसारना ।

जमहाना० अ० क्रि० जमहाई लेना ।

जमाई० ना० स्त्री० जामाता, दामाद ।

जमाना० स० क्रि० उगाना, बांधना, इच्छा
करना, बटोरना, बैठाना ।

जमालगोटा० ना० पु० औषधि विशेष ।

जमाव० ना० पु० भोड़, बहुताता ।

जमावट० ना० स्त्री० बँधावट ।

जमी० ना० स्त्री० रात, यमी, यमुनाजी ।

जमोगना० स० क्रि० सहजाना ।

जमोघ० } ना० पु० जमविशेष जो लड़कों को
जमोघा० } लगता है ।

जमना० अ० क्रि० बढ़ना, पनपना ।

जम्बाल० ना० पु० सियाल, बाल ।

जम्बीर० } ना० पु० नींबू ।
जम्बीरक० }

जम्बु० ना० पु० गीदड़, शृगाल, यमुनावृत्त ।

जम्बुक० ना० पु० गीदड़, शृगाल ।

जम्बुमाली० ना० पु० प्रहस्तका पुत्र, राक्षसविशेष ।

जम्बूद्वीप० ना० पु० पृथ्वी के सात द्वीपों में से
एकका नाम ।

जम्भमेदी० ना० गु० इन्द्र ।

जम्भल० } ना० पु० जम्भीरी नींबू ।
जम्भार० }

जय० ना० स्त्री० पराभव करना, उन्नति, सु-
जिन्ता, जयति, आशिष ।

जयजयकार० ना० पु० पराभव हाना, शत्रुका
बड़ाई का वा जीतिका बोधक ।

जयजयवन्ती० ना० स्त्री० रागिनी विशेष ।

जयदाक० ना० पु० ढोलविशेष ।

जयत० ना० पु० वृत्तविशेष ।

जयति० क्रि० जीतिहो ।

जयनगर० ना० पु० राजपूताने की राजधानी ।

जयन्त० ना० पु० इन्द्रका पुत्र ।

जयन्ती० ना० स्त्री० दुर्गादेवी, वृत्तविशेष ।

चौक० ना० पु० युद्धका, वाजार, हाट, कटरा,
धामन, चारिका समूह, वेदी पूजा ।

चौकड़ा० ना० पु० दो मोती का बाला, चारिका
समूह ।

चौकड़ी० ना० स्त्री० कूद, उदाल, मोती का
बाला जो पुन्य पहिनेते है ।

चौकना० शु० चौकस, चेतन्य ।

चौकभरना० स० कि० चौक पूरना ।

चौकल० ना० पु० चारिकला, चारिद्रकला ।

चौकला० ना० पु० मियानी, पालकी ।

चौकस० शु० सावधान, सुचेन, सुर्ता, निपुण,
पूरानाल ।

चौकसाई० ना० स्त्री० सुचेता, सुर्ता ।

चौकसी० ना० स्त्री० धुन, रक्षा ।

चौका० ना० पु० स्त्रीपाहुआ स्थान, चारिकने
का स्थान, आगे के चारि दांत चारि पूरीयादि
का एक चौका ।

चौकी० ना० स्त्री० काष्ठका चौकीना आसन,
कुसी, पहरा, पहराका स्थान, फारसी शब्द है ।

चौकीना० } शु० चौकीना ।
चौकीर० }

चौखट० ना० पु० डारके चारों ओर का काठ ।

चौखूटा० शु० जिसके चारों ओर समान है ।

चौगाड़ा० ना० पु० लम्बी, खरगोश, शरा ।

चौगान० ना० पु० जेनहीन, निर्जन स्थान, खेल
विशेष फारसी शब्द में ।

चौगानी० ना० स्त्री० हुके की सांधी नली ।

चौगुण० } शु० चारि भेरका ।
चौगुना० }

चौघड़ा० ना० पु० चारिपटका पात्र ।

चौचा० ना० पु० चारोओर, चारों तरफ ।

चौच० ना० पु० चौच, टोट ।

चौड़ा० शु० चकला ।

चौड़ाई० ना० स्त्री० } पाठ, चकलाई, भड़ाई ।
चौड़ान० ना० पु० }

चौड़ाना० स० कि० चकलाना, कैलाना ।

चौडोला० ना० पु० पालकी विशेष ।

चौतरा० ना० पु० चवतरा, फारसी शब्द है ।

चौतारा० ना० पु० चारिताराका बांजीविशेष ।

चौताल० ना० पु० रागिनी विशेष, वाजाविशेष,
तालविशेष ।

चौतुक० ना० पु० चौबोला छन्द ।

चौथ० ना० स्त्री० चतुर्था, चौथियाई ।

चौथा० शु० चतुर्थे ।

चौथाई० ना० स्त्री० चौथामांग, चतुर्थीश ।

चौथि० ना० स्त्री० ४ तिथि ।

चौथिया० ना० पु० चौथ सेनहार ।

चौथिपाई० ना० स्त्री० चौथाई ।

चौथी० ना० स्त्री० चतुर्थी ।

चौदन्त० शु० बलवन्त, चारिदांतका ।

चौदन्ती० ना० स्त्री० बहाद्री, शरमापन ।

चौदस० ना० स्त्री० चौदहवीं तिथि, चतुर्दशी ।

चौदह० शु० चतुर्दश १४ ।

चौदानियां० ना० पु० चारि मोती का

चौदानी० ना० स्त्री० बाला ।

चौधर० शु० बलवन्त ।

चौधराई० ना० स्त्री० चौधरी का काम ।

चौधरी० ना० पु० जाति का प्रधान, सुखिया,
प्रधान, वाजारका, सुखिया ।

चौपट० शु० उजाड़, सरपट ।

चौपड़० ना० स्त्री० खेल जो पैसेसे खेलाजाताहै ।

चौपतिया० } ना० स्त्री० छोटी पोथी, पीथ

चौपत्ती० } विशेष ।

चौपहला० ना० पु० चारिपटका

चौपाई० ना० स्त्री० चारिपटका छन्द ।

चौपाड़० } ना० पु० बेटक, परविशेष ।

चौपार० }

चौपाला० ना० स्त्री० पालकी विशेष ।

चौपाय० ना० पु० लीला ।

चौवार० ना० पु० चौपाड़ ।

चौवारा० ना० पु० इसारा, भ्रमन ।

चौघीस० शु० मोत और चार २४ ।

जयन्तीपुर० ना० पु० शिवहृत् से देश कोमपर
 का देश जिसको जयन्ता कहते हैं ।
 जयवेर० गु० जितने वार ।
 जयमान० } गु० जयकरनेहारा, जीतनेवाला ।
 जयवन्त० }
 जयवान्० }
 जयवती० ना० स्त्री अग्नि की जिह्वाविशेष
 गु० जीतनेहारी ।
 जयः० ना० स्त्री हर्ष, विष्णुकान्ता भाग, देवीविशेष ।
 जयी० गु० जय करनेहारा ।
 जर० ना० पु० जड़ उवर विशेष ।
 जरण० ना० पु० जरा सुकेद, जलन ।
 जरन० थ्र० कि० जलन ।
 जरना० थ्र० कि० जलना ।
 जरा० ना० स्त्री बुढ़ापा, वृद्धावस्था ।
 जरांस० ना० पु० ब्यरांश ।
 जराना० स० कि० जलाना ।
 जरायजरी० गु० स्त्री जड़ाऊ ।
 जरायु० ना० स्त्री क्रीष, पेट, कुत्ति ।
 जरायुज० ना० पु० जो क्रीष से उत्पन्नहो, जो
 किल्ली से उत्पन्नहो अर्थात् मनुष्यादि ।
 जरासन्ध० ना० पु० मगधका राजा जरानाम
 राक्षसी से जोड़ागया ।
 जर्जर० गु० निर्बल, जांजर, जीर्ण ।
 जर्जरी० ना० पु० लहसुन ।
 जल० ना० पु० पानी ।
 जलधालि० ना० पु० पानीका भँवर ।
 जलकन्द० ना० पु० सिंघाड़ा ।
 जलकामा० ना० स्त्री ऊंधाहोली ।
 जलक्रीडा० ना० स्त्री पानी में का खेल ।
 जलकुकड० ना० पु० पतहूची, सु-
 जलकुफुट० } शक्ति ।
 जलखानि० ना० पु० मेघ, समुद्र, नदी ।
 जलसोजक० ना० पु० बिलगोना ।
 जलचर० गु० जलमनु, पनिहा, जल के चरने
 हारे जन्तु ।
 जलचरेश० ना० पु० भगर, मच्छ, माह ।

जलज० ना० पु० कमल, गु० जो कुछजलमेंउपजे
 जलजन्त० ना० पु० जल में रहनेहारे जीव ।
 जलजन्त्र० ना० पु० बग्घा, फ्यारह, जलयन्त्र ।
 जलजला० गु० महाक्रोधी ।
 जलजलाना० थ्र० कि० आग हो जाना, सुंन-
 लाना ।
 जलजलाहट० ना० स्त्री० क्रोध, क्रोध, सुंभलाहट ।
 जलजात० ना० पु० कमलादि ।
 जलजान० ना० पु० नाव, जहाज ।
 जलामधु० ना० स्त्री० मुलहठी ।
 जलतरंग ना० पु० बाजाविशेष जलकीलहरि ।
 जलतरंगी० ना० स्त्री० बाजाविशेष बजानेवाला ।
 जलतरण० ना० पु० तैरना, नाव वा जहाज
 चलाने की विद्या ।
 जलथल० ना० पु० जल और स्थल ।
 जलद० ना० पु० मेघ ।
 जलधर० ना० पु० मेघ, समुद्र ।
 जलधार० } ना० स्त्री० पानीकी धारा ।
 जलधारा० }
 जलधि० ना० पु० समुद्र ।
 जलन० ना० पु० ज्वलन, तप, क्रोध ।
 जलना० थ्र० कि० बरना, दहकना ।
 जलनिधि० ना० पु० समुद्र ।
 जलनीम० ना० पु० औषधि विशेष ।
 जलन्धर० ना० पु० रोगविशेष - निसमें गेनी
 पानी बहुत पीता है, राजा विशेष ।
 जलपाई० ना० स्त्री० वृद्धविशेष ।
 जलपान० ना० पु० पानी पीना, कलेवा ।
 जलपुट० ना० पु० पानी का बर्तन ।
 जलथल० थ्र० जो जलन में नाशहोगया ना० पु०
 पान, केवल ।
 जलमय० ना० पु० जलार्णव, प्रसय ।
 जलमानुष० ना० पु० मनुष्यरूपी जलमनु ।
 जलमार० ना० पु० विष, जहर ।
 जलमाल० ना० स्त्री० नदी ।
 जलराशि० ना० पु० समुद्र ।

चौबे० ना० पु० चतुर्वेदी, जातिविशेष, मधुरा-
 तीर्थ के पुरोहित ।
 चौमासा० ना० पु० बरसात, परहिल ।
 चौमुख० ना० पु० ब्रह्मा, चौमुखी दीवट, चारों ओर ।
 चौमुखा० ना० पु० पटविशेष, चारमुखकी दीवट ।
 चौमुखी० ना० स्त्री० मद्रास का फल ।
 चौर० ना० पु० चोर ।
 चौरकर्म० ना० पु० चोरी ।
 चौरंग० ना० पु० दांवविशेष, बैल आदि के चारों
 पांव एक चपेट में कटना ।
 चौरभय० ना० पु० चौरोंका डर ।
 चौरस० शु० समान, एकसां ।
 चौरसाना० स० कि० समान करना ।
 चौरसाई० ना० स्त्री० साधारं, समानता ।
 चौरा० ना० पु० चवृतरा, चौरा ।
 चौरानथे शु० नव्वे और चार ६४ ।
 चौरासी० शु० अस्सी और चार ८४ ।
 चौराहा० ना० पु० मार्ग चारों ओर जानेका ।
 चौराी० ना० पु० चौवार धोईहुई लाख ।
 चौलडा० ना० पु० } चारि लडकीं माला वा
 चौलडी० ना० स्त्री० } कोई वस्तु ।
 चौला० ना० पु० अन्नविशेष ।
 चौलाई० ना० स्त्री० रागविशेष ।
 चौवा ना० पु० पशु, चतुष्पाद ।
 चौवाई० ना० स्त्री० आंधी, भूकड ।
 चौसठ० शु० साठि और चार ६४ ।
 चौसर० ना० पु० चार लडकाहार, चौपड ।
 चौहट्ट० } ना० पु० चौग्राह, चौसठका वा
 चौहट्टा० } चार ।
 चौहत्तर० शु० सत्तर और चार ७४ ।
 चाहान० ना० पु० रजपूत जातिविशेष ।
 च्युत० शु० पतित, भ्रष्ट, बदला ।
 च्युतता० ना० स्त्री० पवन, बदल ।
 च्युति० ना० स्त्री० वीनि, युद्ध ।
 च्युः शु० पद ६ ।

छरुडा० ना० पु० गाड़ी, शकट ।
 छकडाना० स० कि० चौधियाना, चकराना ।
 छकना० अ० कि० सन्तुष्ट होना, भरना तुष्टहाना,
 दुःखित, व्याकुल ।
 छकाई० ना० स्त्री० तुष्टि, सन्तुष्टता ।
 छकाना० स० कि० सन्तुष्ट करना, तुष्टकरना,
 पेटभर भोजन कराना ।
 छकाहु० ना० स्त्री० धण्ड, शु० छःदांत का
 पशु आदि ।
 छक० ना० पु० छः का समूह, खल विशेष, जाल
 सहित धिंजरा ।
 छगरी० ना० स्त्री० बकरी ।
 छगल० ना० पु० बकरी ।
 छंगुली० ना० स्त्री० कनिष्ठिका, पांचवीं अंगुली ।
 छछुन्दर० } ना० स्त्री० मूरा जो रातको निक
 छछुंदर० } लताहै और कुवासित होताहै ।
 छज० शु० भाइखण्ड ।
 छज्जा० ना० पु० बरामदह ।
 छज्जी० ना० स्त्री० सज्जी ।
 छज्जन० ना० पु० दाढ़विशेष ।
 छञ्जाना० अ० कि० सर्वसनाना, सर्वदादेना,
 चरपराना ।
 छटना० ना० पु० चलनाविशेष, अ० कि०
 घटना, विछुडना, भिन्नभिन्न होना ।
 छटा० ना० स्त्री० उजाला, चमचमाहट, पिजली
 कौधा शु० चुनाहुआ, छटाहुआ ।
 छटांक० ना० स्त्री० सेरका सोलहवां भाग ।
 छटाना० स० कि० चुनवाना ।
 छटे० ना० पु० उजेले का बहुवाक्य शु० चुनेहुये,
 चुनेहुये अलगभये ।
 छट्ट० ना० स्त्री० पछी, छट ।
 छट्टी० ना० स्त्री० छठवीं, पछी, जन्मने के पीछे
 छठे दिनका व्यवहार ।
 छठ० ना० स्त्री० पछी, छट्टी ।
 छठी० ना० स्त्री० छट्टी, छठ ।
 छड्ड० ना० पु० मालिकी लकड़ी, उगार, बांटी और

जलरुह० ना० पु० कमल ।
 जलचैया० ना० पु० जलानिहारा ।
 जलशायी० ना० पु० विष्णु, नारायण ।
 जलशयनी० ना० स्त्री० जल में सोना; जल में रहना, तपस्याविशेष मत्स्य ।
 जलसूत० ना० पु० नहरथा ।
 जला० ना० स्त्री० मौल ।
 जलाकार० ना० पु० जलका आकार ।
 जलाना० स० क्रि० बालना; दाहना ।
 जलबला० } गु० चिचिडा, कोधी ।
 जलाभुना० }
 जलार्णव० ना० जल प्रलय, जलका समुद्र ।
 जलावन० ना० पु० ईधन ।
 जलाशय० } ना० पु० तालाब, पोखर ।
 जलाश्रम० }
 जलाश्रय० ना० पु० जल के भरोसे ।
 जलिया० ना० पु० कहार, धमिर, मछुआ ।
 जलेयी० ना० स्त्री० मिठाई विशेष ।
 जलेश० ना० पु० वरुणदेव, समुद्र ।
 जलोद० ना० पु० धीरोद, मेघ ।
 जलोदर० ना० पु० जलधर ।
 जलौका० ना० स्त्री० जाँक ।
 जल्पना० स० क्रि० बकना, निज बड़ाईकरना ।
 अस्वार्थ वात कहना ।
 जल्पाक० गु० बकनादी, निजबड़ाई करनेहारा ।
 जव० ना० पु० यव, जौ, जल्दी ।
 जवन० ना० पु० यवन; घोड़ा ।
 जवस्था० ना० स्त्री० हर ।
 जवनष्टे० ना० पु० लहसन ।
 जवा० ना० पु० अश्ली की गांठि में चिह्न पुष्प विशेष ।
 जवाहा० ना० स्त्री० अजवाइन ।
 जवाद० ना० स्त्री० केसर ।
 जवाधिक० ना० पु० घोड़ा ।
 जवानी० ना० स्त्री० अजवाइन, खुरासानी ।

जवानिक० } ना० पु० अजवाइन ।
 जवासाहा० }
 जवाखारु० ना० पु० औषधि, तृणविशेष ।
 जवासा० ना० पु० कांटीलाविशेष ।
 जस० ना० पु० यश ।
 जसत० } ना० पु० धातु विशेष ।
 जसता० }
 जसयत० }
 जसयति० }
 जसवन्त० } गु० कीर्त्तिमान्, प्रतिष्ठित, यशो, यशस्वी ।
 जसस्वी० }
 जसी० }
 जसुमति० } ना० स्त्री० नन्दरानी, यशोदा ।
 जसोदा० }
 जसोमति० }
 जहर्पमी० ना० स्त्री० काल वीज ।
 जत्र० अव्य, जहां, यत्र ।
 जहु० ना० पु० मुनि विशेष ।
 जहुसुता० ना० स्त्री० गंगानी ।
 जहां० अव्य० जत्र, यत्र, जिसस्थान में विशेष ।
 जहीं० अव्य० जिसकी जगह ।
 जा० सर्व० जिस ।
 जाई० गु० जनी, ना० स्त्री० बेटी ।
 जांगर० ना० पु० पिण्डली समेत जांच, बुधना ।
 जांच० ना० स्त्री० जंघा, जाउ ।
 जांघिया० ना० पु० कधना ।
 जांच ना० स्त्री० अटकल, परत, कस ।
 जांचना० स० क्रि० कसना, परतना, देखना, दुहराना, ठीककरना, परीक्षाकरना ।
 जांता० ना० पु० पात्राणका यन्त्र जिसमें गेह पीसते हैं, चकी ।
 जाकड़० ना० पु० जाकड़, बन्धक, राहना ।
 जाकर० ना० पु० जिसहाथ में सर्व बिसका ।
 जाग० ना० पु० निद्राका त्याग, सज ।
 जागत० ना० स्त्री० चौकसाई ।
 जागतीज्योति० गु० अद्भुत पराकमी ।
 जागना० स० क्रि० नींदसे उठना, चिंतना ।

छर, आस में सकंद दाग ।
 छड़ना० स० कि० चावलों का छटना ।
 छड़ा० शु० शकला ना० पु० कान वा पाँव में
 पहिरने का भूषण ।
 छड़ाना० स० कि० चावल साककरना ।
 छड़िया० ना० पु० ओड़ीनाल, आसबिरदार
 ना० स्त्री० छोटीगली, कोलिया ।
 छड़ियाना० स० कि० छड़से मारना ।
 छड़ी० ना० स्त्री० बेंत, बांसकी सूती लकड़ी,
 बिकुनी ।
 छड़ीला० ना० स्त्री० जटामांसी ।
 छरण० ना० पु० तप ।
 छरटना० अ० कि० दुबलहोना, घटना, निकलना ।
 छरटवाना० स० कि० छिलका उतरवाना ।
 छरटाई० ना० स्त्री० धाने का काम ।
 छरटाव० ना० पु० कहीं, धानेका कूटना ।
 छरडना० स० कि० छोड़ना, तजना, चलाना ।
 छरडना० स० कि० छुड़ाना ।
 छरिडत० शु० छोड़नाया ।
 छरडुआ० ना० पु० छूट छोड़ ।
 छरडौती० ना० स्त्री० छुटी, छोड़ना ।
 छत० ना० स्त्री० घरके ऊपरकी गच वा पाटन ।
 छतकुम्भक० ना० स्त्री० कनेर, कन्देल, यथा
 करवारा श्वेतपुष्पा, अश्वहा छतकुम्भकः इति
 निघण्टुः ।
 छतना० ना० पु० छत्ता ।
 छति० ना० स्त्री० हानि, घटा, छता ।
 छत्तर० ना० पु० छत्र ।
 छत्ता० ना० पु० मधुमालीकाघर, बरौका घर ।
 छत्तीस० शु० तीस और छः ३६ ।
 छत्तीसी० ना० स्त्री० छिनाल, घुघरी, चालाकी ।
 छद० ना० पु० पत्ता, पुनर्नवा औपधि ।
 छदन० ना० पु० पत्ता ।
 छदाम० ना० स्त्री० डकन, पैसे की चौधारी ।
 छद्व० ना० पु० कपट, छल, फरेव ।
 छधिकार० ना० स्त्री० मजीठ, शु० धालिन ।

छनना० अ० कि० टपकना, निचूरना, साफहोना ।
 छनाक० ना० पु० छन, माटीका भुँडा टूटने
 का शब्द ।
 छनाफा० ना० पु० नुरन्त जलजाना पानी का
 आगमें ।
 छनिक० ना० पु० क्षणिक ।
 छन्द० ना० पु० पद्य, रचना, गायत्र्यादि ।
 छन्दगति० ना० स्त्री० छन्दों की चाल ।
 छन्दना० अ० कि० गटना, बन्धना ।
 छन्दबन्द० ना० पु० छलवल, छल ।
 छन्दी० शु० छली, कपटी ।
 छन्ना० ना० पु० कपड़ा दूध आदि धाननेका ।
 छन्नी० ना० स्त्री० छोटा छन्ना, भूषणविशेष ।
 छन्नू० शु० धाननेहारा ।
 छप० ना० पु० जलमें कुछवस्तु गिरनेका शब्द ।
 छपई० ना० स्त्री० छः पदका छन्द ।
 छपकली० ना० स्त्री० जन्तुविशेष ।
 छपकाना० स० कि० पानी डालना ।
 छपकी० ना० स्त्री० जन्तुविशेष ।
 छपना० अ० कि० छापाहीना, लुकना ।
 छपरा० ना० पु० छपर ।
 छपरिया० ना० स्त्री० छोटी छपर ।
 छपरी० ना० स्त्री० छपरा ।
 छपाई० ना० स्त्री० छापने का काम वा पसा ।
 छपाका० ना० पु० जल में मारने से जो शब्द ।
 छपाना० स० कि० छपवाना, छिपाना ।
 छप्पन० शु० पचास और छः ५६ ।
 छप्पर० ना० पु० तृणका छत ।
 छप्परखट० ना० पु० नङ्गापलग जिसके ऊपर
 कपड़ाकी पोशिरा होती है ।
 छपड़ा० ना० पु० टोकराविशेष ।
 छपीला० शु० रूपवान्, सुन्दर ।
 छपीस० } शु० बीस और छः २६ ।
 छपीस० }
 छम० शु० समर्थ ।
 छमकट० शु० कपटी, झिनला और व्यभिचारी ।

जागरण० ना० पु० नौदकाल्याग, रातिकी
व्रतादि में जागना ।

जागल० ना० पु० श्याम, अमर ।

जागा० ना० पु० जातिविशेष ।

जागू० ना० पु० जागने द्वारा ।

जाग्रत० ना० स्त्री० स्वप्न और सुषुप्ति से भिन्न
अवस्था ।

जागली० ना० पु० विधारा ।

जाचक० ना० पु० याचक, मांगनेहारा ।

जाचना० स० क्रि० मांगना, चाहना ।

जाचा० यु० मांगा, चाहा ।

जाच्यमान० यु० मांगा वा चाहामया, अधमदान ।

जाजक० ना० पु० भांभू वा दोलकवजानेहारा ।

जाजा० ना० स्त्री० कलौजी ।

जाजामन्ती० ना० स्त्री० जयजयवन्ती ।

जाट० ना० पु० राजपूतों में जातिविशेष ।

जाठ० ना० स्त्री० कोरहकी धुरी ।

जाड़० ना० स्त्री० मसूड़ा ।

जाड़ा० ना० पु० शीत, ठंड, शीतकाल ।

जाड़ी० ना० स्त्री० दांतों की पाति ।

जाह्य० ना० पु० जड़ता, शीतलता, मूढ़ता ।

जात० ना० स्त्री० जाति, यात्रा, मेला, यु० जना ।

जातक० यु० पुत्र, वचा ।

जातकर्म० ना० पु० जन्म संस्कारविशेष यथा
छठी आदि ।

जातना० ना० स्त्री० पीड़ा, दुःख, दण्ड, वेदना ।

जातपात० ना० स्त्री० पीड़ी, वंशावली ।

जातरूप० ना० पु० सुवर्ण, कर्चिन ।

जातवेद० ना० पु० अग्निदेव ।

जाति० ना० स्त्री० वर्ष, क्रौम, एक रूप से बहुत
से पियड़ों में समानधर्म, यथा पशुत्व, मनुष्यत्व,
उत्पन्न ।

जातिकोष० ना० स्त्री० जावित्री ।

जातिपत्री० ना० स्त्री० जावित्री विरादरी की
चिह्नी ।

जातिग्रष्ट० यु० पापादि के कारण जो जाति से
निकालागया वा निकलगया ।

जातिवाचक० यु० जिस संज्ञा से जातिमात्रका
बोधहोवे यथा पशु, पक्षी ।

जातिस्त्रुज० ना० पु० जायफल ।

जाती० ना० स्त्री० मालती, जावित्री, पुष्पविशेष ।

जात्यायत० यु० जिस वेषकी आमनेसामनेकी
भुजा तुल्य और चारों कोण सम हैं ।

जात्यत्रिभुज० ना० पु० त्रिकोण जिसका एक
कोण समकोणहो ।

जात्रा० ना० स्त्री० यात्रा, चलना ।

जात्री० ना० पु० यात्री, जानेवाला ।

जान० ना० पु० विमान, सवारी, याहनादि, डीठ,
बुन्द, शान, सब यु० ज्ञानी ।

जानकी० ना० स्त्री० श्रीसीताजी ।

जानपहिचान० ना० पु० चिन्हार, गुलाकत ।

जाना० अ० क्रि० चलना ।

जानु० ना० पु० घुटना, गांठि ।

जानो० अव्य० समझा, अ० क्रि० जाना ।

जानना० स० क्रि० पहिचानना, समझना ।

जाप० ना० पु० जप, पाठ ।

जापक० } यु० जप करनेहारा ।

जापी० }

जाच० ना० पु० दाठी ।

जाची० ना० स्त्री० छोटी दाठी ।

जाम० ना० पु० पहर ।

जामदग्न्य० ना० पु० परशुराम, जमदग्निकेसव ।

जामन० ना० पु० वृक्ष वा उसका फलविशेष,
जाड़न, जमावन ।

जामवन्त० ना० पु० शङ्खोका प्रधानविशेष ।

जामवन्ती० ना० स्त्री० कृष्णचन्द्रकी स्त्री ।

जामा० ना० पु० एकांतक परिहर्नेकावस्य विशेष ।

जामाता० } ना० यु० बेटी का पति ।

जामातु० }

जामिनी० ना० स्त्री० राति, यामिनी, जमन
देशकी भाषा वा वस्तु ।

छमछमाना० अ० कि० चमकना, झलकना, बजना ।

छय० ना० पु० छय ।

छयरोग० ना० पु० छयरोग ।

छर० ना० स्त्री० जूतामांसी, फड़, दसड़, जलदी, शिताबी ।

छरछोची० ना० स्त्री० झड़ि किरने का स्थान ।

छरस० ना० पु० पटरस ।

छरी० ना० स्त्री० छड़ी ।

छर्दायन० ना० पु० खीरा ।

छर्दि० ना० स्त्री० यमन, थोकना ।

छर्ना० ना० पु० लोहियादिकी छोटी छोटी गोली ।

छल० ना० पु० कपट, ठगई, धोखा, धांधल, मिथा ।

छलकना० अ० कि० निकलजाना, टलकना ।

छलकाना० स० कि० गिरादेना ।

छलकारी० गु० कपटी, ठग दगाबाज ।

छलांगना० अ० कि० कुदकना ।

छलछिद्र० ना० पु० कपट, छल ।

छलछिद्री० गु० कपटी, छली ।

छलना० स० कि० छलकरना, ठगना, भटकना ।

छलनी० ना० स्त्री० चूल्नी ।

छलांग० ना० स्त्री० कुदका, फलांग ।

छलावा० ना० पु० लका, जाग, रौतानी ।

छलिया० } गु० कपटी, ठग, प्रपची ।

छली० } गु० कपटी, ठग, प्रपची ।

छल्ला० ना० पु० अगली में पहिरने का गहना ।

छवा० ना० स्त्री० पड़ी पात्रकी ।

छवि० ना० स्त्री० शोभा, चमक, सुन्दरता ।

छविमीर० ना० पु० कात ।

छवीला० गु० सुन्दर, शोभायमान ।

छवेया० ना० पु० छानेहरा ।

छाई० ना० स्त्री० छीप ।

छां० ना० स्त्री० छाया ।

छांट० ना० स्त्री० खूद, सीढ़ी झीलनी ।

छांटन० ना० स्त्री० टुकड़ी, धरनी ।

छांटन० स० कि० यमन करना, फनना, अलग करना ।

छांड़० ना० स्त्री० किनारा, नदी का किनारा, नदी का सोता ।

छांड़ना० स० कि० छोड़ देना ।

छांड़ ना० स्त्री० पगहा, पैकड़ा ।

छांड़ना० स० कि० बांधना ।

छांड़ा० ना० पु० भाग, अंश, हिस्सा ।

छांवं० } ना० स्त्री० छाया, परछाई ।

छांड़० } ना० स्त्री० छाया, परछाई ।

छांहारा० गु० छायावाच ।

छाक० ना० स्त्री० कलेवा ।

छाकना० स० कि० कृपका जल पछाना, पैसम भोजन वा कोई वस्तु खाना ।

छाग० ना० स्त्री० चकरा ।

छागल० ना० पु० कुभी, बकरी, वा बकरी की लाल ।

छागी० ना० स्त्री० बकरी ।

छागलांगी० ना० स्त्री० विधारा ।

छाछ० ना० पु० मट्टा, मथां देही ।

छाछी० } ना० पु० मट्टा, मथां देही ।

छाज० ना० पु० सूर ।

छाजना० अ० कि० छाता, फचना, सनना ।

छाजित० गु० फाभित, लाभकारी ।

छात० ना० स्त्री० छत ।

छाता० ना० पु० छत, छतरी ।

छाती० ना० स्त्री० छोटाछाता, उर, चूड़ी ।

छात्र० ना० पु० विद्यार्थी, शिष्य, चेला ।

छादन० ना० पु० कपास ।

छान० ना० स्त्री० ठठरी, ठाठ, छपर, विचार ।

छानना० स० कि० निवारना, स्वच्छ करना, दूदना, विचारना ।

छानधीन० ना० स्त्री० विचार, जांच ।

छानवे० गु० नखे श्रीर छः ९६ ।

छानस० ना० पु० जोकर, भूमी, बुरा ।

छाना० स० कि० छानना, छायाकरना, पाटना, छपर बनाना, ठहराना ।

छानी० ना० स्त्री० छपर ।

छाप० ना० स्त्री० मुद्रा, मुहर अपना चिह्न ।

जायपत्री० ना० स्त्री० जावित्री ।
 जायफल० ना० पु० फलविशेष ।
 जाया० ना० स्त्री० पत्नी, स्त्री, भार्या, यु० जनी ।
 जार० ना० पु० उपपति, यार, दूसरापति ।
 जारज० } ना० पु० विजन्मा, संकरवर्षा ।
 जारजात० } उपपतिजात, यारकाजन्माया ।
 जारन० ना० पु० जलावन ।
 जारना० स० कि० जखना, फूंकना, दाहना ।
 जारख० ना० पु० काष्ठविशेष ।
 जाल० ना० पु० मिमसे मखलीआदि पकड़ने हे
 भंकरा, माया, पातण्ड, भेंवर, फांसी ।
 जालगि० अन्व० मिम लिये, सर्प० जिसके
 लिये ।
 जालरन्ध्र० ना० पु० भ्रूगोला, जाली का ।
 जाला० ना० पु० जिसको मकड़ी बनाती है, घटा,
 मोतियाबिन्दु ।
 जालिका० ना० स्त्री० भंकरा ।
 जालिनी ना० स्त्री० सुरहरी, देवदाली ।
 जालिया० ना० पु० छलिया, जालवाला ।
 जाल० ना० स्त्री० बहुत धिद्रों की लिङ्की प्राः
 कपडा आदि ।
 जालौन० ना० पु० बुन्देलखण्डका नगरविशेष ।
 जाचक० ना० पु० आलता, महावर, सेंदुर ।
 जाचका० ना० पु० स्त्री० लौंग ।
 जाचनी० ना० स्त्री० अजयाम्बु ।
 जाचा० ना० पु० उपद्वीपविशेष ।
 जाचां० ना० पु० दोपुत्र जो एकहीसाथ उत्पन्नहों ।
 जाचालि० ना० पु० मुनिविशेष ।
 जावित्री० ना० स्त्री० वृक्षविशेष की छाल ।
 जासु० सर्व० जिससे, जिसको ।
 जाह्वी० ना० स्त्री० गंगाजी ।
 जाहि० सर्व० जिसको ।
 जाही० ना० स्त्री० जही, जोती ।
 जिगजिगिया० यु० चारलूमी करनेवाला ।
 जिगजिगी० ना० स्त्री० लपट, सपट, चारलूमी ।

जिगना० ना० पु० वृक्षविशेष ।
 जिगीपा० ना० स्त्री० हिसका, जयकी इत्या ।
 जिगणी० ना० पु० जिगना ।
 जिजिया० ना० स्त्री० बडीबहन, चुची ।
 जिठनिया० } ना० स्त्री० जेठकी स्त्री ।
 जिठानी० }
 जितना० ना० पु० } परिमाण वा अथधि वा
 जितनी० स्त्री० } संख्या का बोधक ।
 जितयोनि० ना० पु० हरिण ।
 जिता० } यु० परिमाण वा अथधि वा संख्या
 जितक० } बोधक ।
 जितेन्द्रिय० } ना० पु० जिसने इन्द्रिया को
 जितेन्द्री० } बरा किया है ।
 जिधर० अन्व० यत्र, जहाँ ।
 जिन० ना० पु० श्रापविशेष ।
 जिभारा० यु० गपी, जो फटार वात कहता है ।
 जिम० अन्व० जिमि, यथा, जैसे ।
 जिमाना० स० कि० खिलाना ।
 जिमि० अन्व० यथा० जैसे ।
 जिय० } ना० पु० आत्मा, प्राण, जान ।
 जियरा० }
 जियानी० स० कि० खिलाना, प्राणदान देना ।
 जियावन० स० कि० जियाना ।
 जियौट० यु० स्त्री० शरता, शर, योद्धा ।
 जिलाना० स० कि० प्राणदान देना, जीता करना ।
 जियाना० स० कि० जिमाना, खिलाना ।
 जिण्णु० ना० पु० अरुन, इन्द्र ।
 जिस० सर्व० सम्बन्ध में आता है ।
 जिहि० सर्व० जिमि ।
 जिह्म० ना० पु० कपट, मूढ़ता ।
 जिह्मकर० यु० कपटी, छली ।
 जिह्मन० ना० पु० जाण, तीर ।
 जिह्मग० ना० पु० सप, साप ।
 जिह्मता० ना० स्त्री० अधिक वाता की शक्ति ।

जिह्वा० ना० स्त्री० रसना, जीभ ।
 जिह्वाप्र० ना० पु० मुलाप्र, जवानी ।
 जिह्वासा० ना० स्त्री० जानने की इच्छा ।
 जिह्वासी० } यु० अभिलाषी, जानने की इच्छा
 जिह्वासु० } रसनेहारा ।
 जिह्वास्य० यु० जानने के योग्य है ।
 जी० ना० पु० जीव, प्राण, मर्यादा का सूचक ।
 जीका० ना० स्त्री० जीविका ।
 जीगुराना० स० कि० सिकोइता ।
 जीत० ना० स्त्री० जय, फतह ।
 जीतना० स० कि० जय करना, हराना ।
 जीतव० ना० पु० आत्मा, हिया, जिन्दगी ।
 जीतवन्त० } ना० पु० जिसकी जय हुई
 जीतवैया० } जयमान ।
 जीता० गु० प्राणधारी अर्थात् मरानहीं ।
 जीति० ना० स्त्री० जय, जीत ।
 जीतिया० ना० स्त्री० सुदकों के जीने के लिये
 रियों का अतिविशेष ।
 जीतू० ना० पु० जयवन्त, जीतवैया ।
 जीना० थ० कि० जीता रहना ।
 जीभ० ना० स्त्री० जिह्वा, रसना, जवान ।
 जीभारा० यु० गर्भा, बकी ।
 जीभी० ना० स्त्री० जीभ का मूल उतारने की
 वस्तु ।
 जीभना० स० कि० खाना, भोजन करना ।
 जीभार० यु० जी हनने के योग्य है, निज इच्छा
 मानेहारा ।
 जीमूत० ना० पु० मेष, देवदाली ।
 जीरक० ना० पु० जीरा सफेद ।
 जीरन० यु० जीर्ण, पुराना ।
 जीरा० ना० पु० शीघ्रि विशेष का बीज ।
 जीर्ण० यु० बृहदा, पुराना, रुद्धा, जानर ।
 जील० ना० स्त्री० गले में अति तीक्ष्णस्वर ।
 जीव० ना० पु० प्राण, शरीरादि का धारक, बृह-
 रसति, चन्द्रमा मन्दागित्री ।

जीवस्त्वानि० ना० पु० ईश्वर, अनादि पुरुष ।
 जीवगर० } गु० यर्षा, पीडा,
 जीवट० } दृढ़ता ।
 जीवदा० ना० पु० प्राण, प्रियतम ।
 जीवत० गु० जति ।
 जीवदान० ना० पु० रक्षाकरना, प्राण बचाना-
 जीवधारि० ना० पु० प्राणी, हेवात् ।
 जीवन० ना० पु० जीविका, जन्म से मृत्युतक
 का काल, जल ।
 जीवनमूल० ना० स्त्री० जीविका मूल, ह्यात
 की जड़ ।
 जीघना० थ० कि० जीतारहना ।
 जीघनि० ना० स्त्री० } समी-
 जीघनिया० ना० स्त्री० } वनवृद्धी ।
 जीघन्त० गु० जीता ।
 जीघन्ती० ना० स्त्री० समीघनवृद्धी, शरच ।
 जीघमद्गा० } ना० स्त्री० समीघन
 जीघवर्दिनी० } वृद्धी ।
 जीघा० ना० स्त्री० जीघन्ती, जो चापके एकामसे
 द्वितीयाप्रतक ।
 जीविका० ना० स्त्री० वृत्ति, निर्वाह का उपाय
 जीह० ना० स्त्री० जीभ, रसना ।
 जीहारना० थ० कि० निराश होना, डर से दण
 रहना ।
 जुआ० ना० पु० छलकर्म, फीटविशेष, माची ।
 जुआरि० ना० स्त्री० अत्र विशेष ।
 जुआरी० ना० पु० सूतकर्मी, छलकारी, डूध ।
 जुग० ना० पु० युग ।
 जुगति० ना० स्त्री० युक्ति, श्लेषद्वयर्थ ।
 जुगती० यु० छली, चतुर, ठगोल, द्रव्यार्थ बोल-
 नेहारा, उपायी ।
 जुगनी० ना० स्त्री० } मक्खी जो रातको चमक-
 जुगनू० ना० पु० } तीहे, गलेका शूषण विशेष ।
 जुगघना० स० कि० रक्षाकरना, बचाना ।
 जुगवैया० ना० पु० जुगघनेहारा ।

टापा० ना० पु० स्त्रिया ।
 टापू० ना० पु० द्वीप, जमीरह ।
 टाभर० ना० पु० छोटी झील ।
 टारना० स० क्रि० टालना ।
 टाल० ना० स्त्री० टालमटोल, छलकरके काल कानना, भ्रमवा लकड़ी आदिका ढेर, टाल, मलयुद्ध करने में छल ।
 टालटोल० ना० पु० टालमटोल ।
 टालना० स० क्रि० छल करके बात फेरना या बदलना वा उड़ाना, हड़ाना ।
 टालमटोल० ना० स्त्री० चकरमकर, हीलाबाजी ।
 टाला० ना० पु० टाल ।
 टिकटिकी० ना० स्त्री० चिपकली ।
 टिकठी० ना० स्त्री० काठकी तिपाई या चौपाई, चरथी ।
 टिकना० अ० क्रि० रहना, ठहरना ।
 टिकली० ना० स्त्री० बिन्दी जिसको छियां टिकुली० माथेपर लगाती हैं ।
 टिकाऊ० गु० टहराऊ, चलाऊ ।
 टिकाना० स० क्रि० रखना, ठहराना, अटकाना ।
 टिकाव० ना० पु० टहराव, अटकाना ।
 टिकासर० ना० पु० टिकनेकी जगह, टिकाव ।
 टिकासां० गु० टिकनेद्वारा, ठहरनेवाला ।
 टिकिया० ना० स्त्री० बाटी, अगाकड़ी, छोटीरोटी, किसी वस्तुको बाटके गोलाकार चपटी वस्तु बनाना ।
 टिकोर० ना० पु० लोबदी, लोपड़ी ।
 टिकड़० ना० पु० अंगकड़ा, कड़ी गोलरोटी ।
 टिकर० विशेष ।
 टिकली० ना० स्त्री० टिकली ।
 टिकी० ना० स्त्री० टिकिया ।
 टिघलना० अ० क्रि० पिघलना, गलना ।
 टिघलाना० स० क्रि० पिघलाना, गलाना ।
 टिटकारना० स० क्रि० टिकटिक करके पशुको चलाना वा हांकना ।

टिटकारी० ना० स्त्री० टिकटिक करना ।
 टिट्टीहरी० ना० स्त्री० पत्नीविशेष ।
 टिट्टिम० }
 टिट्टा० ना० पु० } उड़ता कीड़ा ।
 टिट्टी० स्त्री० }
 टिपका० ना० पु० रंगका चिह्न जो श्रेणुलीसे लगा है ।
 टिपरा० ना० पु० टीका विषय ।
 टिप्पस० ना० स्त्री० अभिमान, दाव ।
 टिभाना० स० क्रि० प्रतिदिन थोड़ीसी जीविका देना ।
 टिभाव० ना० पु० प्रतिदिन थोड़ीसी जीविका ।
 टिमटिम० ना० पु० सर्राय, शब्द ।
 टिमटिमाना० अ० क्रि० झलझलाना, जगमगाना ।
 टिहरा० ना० पु० छोटागांव, पुरवा ।
 टिहरी० ना० स्त्री० छोटीसी बस्ती ।
 टीट० ना० स्त्री० करील का फल ।
 टीक० ना० स्त्री० शिर वा गलेका गहना ।
 टीका० ना० पु० तिलक, टिपन, माथेका गहना विशेष, अर्थ कहना वा लिखना, ब्याह में कन्या की ओरसे लगनबन्धन के लिये प्रथम जो कुछ जाता है, राव्याभिषेक ।
 टीटली० ना० स्त्री० शीपधिविशेष ।
 टीट्टी० ना० स्त्री० टिट्टी ।
 टीप० ना० स्त्री० ऋषापत्र, तमसुक, तास की संचना, स्वर उड़ाना, दबाहट ।
 टीपटाप० ना० स्त्री० बनावट, सजावट ।
 टीपना० स० क्रि० दाबना, ट्योलना, निचीटना, बिन्दी लगाना, लिखना ।
 टीला० ना० पु० ढाल, प्रहाड़ी ।
 टीस० ना० स्त्री० पीड़ा, टपक, धड़क ।
 टीसना० अ० क्रि० टीसमारना, धमकनु, धड़कना ।

जुगाना० स० कि० यत्न करना, किसी के उप-
कार हेतु उपकार करना।

जुगालना० स० कि० पायुराना, पायुरकरना।

जुगाली० ना० स्त्री० पायुर।

जुगुप्सा० ना० स्त्री० निन्दा, कुत्सा।

जुगुप्सित० शु० निन्दित, कुत्सित।

जुग्मावट० ना० पुं० युद्ध वा समरभाव।

जुग्मावना० स० कि० युद्ध में मरवा डालना।

जुटना० अ० कि० भिड़ना, मिलना, सटना।

जुटाना० स० कि० भिड़ाना, मिलाना।

जुटैया० ना० पुं० भिड़ैया, लडाका।

जुठारना० स० कि० चूड़ा, करना।

जुड़ना० अ० कि० मिलजाना, सटिजाना।

जुड़ाई० ना० स्त्री० जोड़ने का पैसा, जोड़ने का
काम और जुकाम, श्लेष्मा, ठंड।

जुड़ाना० स० कि० मिलाना, मिलवाना, अ०
कि० ठडाना, सुस्ताना, दम लेना।

जुड़िया० } ना० पुं० दो लड़के जो एक
जुड़िया० } साथ उपजे।

जुताई० ना० स्त्री० खेत जोतने का काम वा जो-
तने का पैसा।

जुताना० स० कि० हल चला के खेत डुरुस्त
कराना।

जुतियाना० स० कि० जूतों से मारना।

जुद्ध० ना० पुं० युद्ध।

जुधिष्ठिर० ना० पुं० बुधिष्ठिर।

जुन्हरी० ना० स्त्री० जुआर।

जुन्हाई० ना० पुं० चन्द्रमा, स्त्री० चांदनी।

जुन्हार० ना० स्त्री० अन्न विशेष जुआर।

जुन्हैया० ना० स्त्री० चांदनी, चन्द्रमा।

जुरादेना० स० कि० पाना।

जुराना० अ० कि० धीरज होना, स० कि० पु-
कड़ा होना, पाना।

जुरावना० शु० जो पाने के योग्य है, मिलनहार।

जुरुआ० ना० स्त्री० जोरू, पत्नी।

जुरना० अ० कि० मिलना, प्राप्त होना, सटना,
भिड़ना, एकट्टा होना।

जुस० ना० पुं० धूल।

जुवती० ना० स्त्री० युवती, जवान श्रावत।

जुवराज० ना० पुं० युवराज, बलीशहद।

जुवा० गुं० युवा० ना० पुं० जूए, जूआ।

जुवार० ना० पुं० अन्न विशेष।

जुवारी० ना० पुं० जुआरी, जूपी।

जुहार० ना० पुं० सलाम, प्रणाम।

जू० अव्य० जी।

जूआ० ना० पुं० गाड़ी वा हलका काठ जिसमें
बैल मचते हैं, माची, बूत, जूए।

जूआट० ना० पुं० जूआ।

जूआरी० ना० पुं० जुआ खेलने में चतुर।

जू० ना० स्त्री० चालक।

जूक० ना० पुं० युद्ध, समर।

जूकना० अ० किं० लड़ना, लड़ाई में एकट्टा
अर्थात् लड़मरना।

जूट० ना० पुं० झुरड।

जूठ० ना० पुं० खायामया।

जूठन० ना० स्त्री० भोजन के पीछे शेष रहना।

जूठा० शु० जूठ, खायामया।

जूड़० शु० ठंडा, शीतल, ना० पुं० शीत।

जूड़ा० ना० पुं० ठंडा, शीत, शिरके पीछे गांठ
दिये हुये बाल।

जूड़ी० ना० स्त्री० अन्तरिया, जाड़े का रोग।

जूता० } पनही, चमड़े की पादुका।

जूता० }

जून० ना० पुं० समय, काल, वक्त।

जूना० ना० पुं० तृणकी, रस्सी, एंटी हुई धारा।

जूप० ना० पुं० जूआ।

जूपी० शु० जुआरी।

जूरा० ना० पुं० बालों की गांठि, चांटी।

जूरी० ना० स्त्री० समूह, जूरी।

जूस० ना० पुं० परेह, रोगी का पेश्य, शोरवा।

जूह० ना० पुं० समूह, जूआ।

दुक० पु० थोड़ा; अल्प, जरा ।
 दुकड़ा० ना० पु० एक खण्ड, चिट
 दुकसा० पु० थोड़ासा ।
 दुंगा० ना० पु० छोटी पूँछ ।
 दुचा० } ना० पु० लुचा, गुण्डा, लपका, तुच्छ ।
 दुचा० }
 दुजा० ना० पु० नन्हा ।
 दुएदुक० ना० पु० स्योनावृक्ष ।
 दुएदुनाना० अ० कि० गुनगुनाना, धीरज से
 अलापना, धीरे धीरे बजाना ।
 दुण्ड० ना० पु० हाथ कटा, डाली कटा वृक्ष ।
 दुण्डा० पु० हाथ कटा, लूला, अर्पाक ।
 दुण्डियाचढ़ाना० स० कि० हाथ पीछे बांधना ।
 दुण्डो० ना० स्त्री० नाभि, पु० जिस छोटी हाथ
 कटा वा टूटा हो ।
 दुसकना० } अ० कि० रोकना, कूटना ।
 दुहुकना० }
 दुं० ना० पु० वायु सङ्केत का शब्द अर्थात् पादने
 का शब्द ।
 दुंगना० स० कि० चिंचियाना, चिचोरना, खुद
 कना ।
 दुंही० ना० स्त्री० नाभि, टूट ।
 दुका० } ना० पु० डकड़ा, डालक का एक
 दुका० } शब्द ।
 दुट० ना० स्त्री० खंखन, फूटना, टोटा, लिखने में
 जो झूलके ऊपर लिखा दिया, श्रुति ।
 दुटना० अ० कि० हुमकना, दौड़ना, चढ़ाई, करना,
 फूटना, फटना, फतराहोना, गड़का फूटना, पत्तीका
 ऊपरसे नीचे उतरना ।
 दुटा० पु० फूटा, डकड़े भया, ना० पु० टोटा
 न्यूनता ।
 दुम० ना० स्त्री० थोड़ी मात, भ्रूणविशेष, छतरी ।
 दुमटाम० ना० पु० कुछ थोड़ी बति ।
 दुसा० ना० पु० चाकका फल, मदारका फल ।
 दुसी० ना० स्त्री० सोपल, कली ।

दुंगरा० ना० पु० } मधुलीविशेष ।
 दुंगरी० स्त्री० }
 दुंटा० ना० पु० करील वा कपास का पका फल,
 फुली ।
 दुंटर० ना० पु० फलविशेष, आंसका दीदा वंश
 दुया अर्थात् आंसका निकाम होना ।
 दुंटा० ना० पु० } करीलका बड़ा पका फल,
 दुंटी० स्त्री० } व्यर्थभाषण, कटिरोम
 विशेष, कटि, धैलका कोषा ।
 दुंठ्रा० ना० पु० नरी, सांसी, नरेटी गलेकी
 पोंगली, हड्डी ।
 दुंते० ना० पु० चंचे, किलकिलाहट ।
 दुई० ना० स्त्री० आड़, धूनी कि० पैनी करी ।
 टेक० ना० स्त्री० धूनी, अड़, टेकनी, प्रतिज्ञा ।
 टेकन० ना० स्त्री० आड़, धाम ।
 टेकना० स० कि० आड़ना, धामना, सहारा
 — लगाना ।
 टेकनी० ना० स्त्री० टेकन, धूनी ।
 टेकर० } ना० पु० टीला, ऊंचा ।
 टेकरा० }
 टेढ़० ना० स्त्री० बकता, कज ।
 टेढ़ा० पु० बक जो सधा नहीं है ।
 टेढ़ाई० ना० स्त्री० बकता, बाकपन, कज ।
 टेढ़ी० ना० स्त्री० गुर्वे, अड़ेकर, हट, बाकी ।
 टेनी० ना० स्त्री० छोटा दण्ड जो थूँडी रखते हैं ।
 टेम० ना० स्त्री० दीपक की जलन वा लप वा
 जोति ।
 टेर० ना० स्त्री० स्वर, लय, पुकार ।
 टेरना० अ० कि० पुकारना, खलकारना, अ
 लापना ।
 टेलना० स० कि० पेलना, घुसेड़ना ।
 टेव० ना० स्त्री० चाल, भाट, स्वभाव ।
 टेवकिया० ना० स्त्री० छोटी टेवकी ।
 टेवकी० ना० स्त्री० धूनी, स्वभाव्यामभल ।
 टेचना० स० कि० वादना, वाद रखना, वा
 रखाना ।

जूही० ना० स्त्री० पुत्र का वृत्त विशेष ।
 जे० सर्व० जो, सय ।
 जेट० ना० स्त्री० डेर ।
 जेट० ना० पु० पतिका बड़ाभाई, ज्येष्ठ ।
 जेटरा० शु० पहिलौटा, पतिका बड़ाभाई ।
 जेटा० शु० पहिलौटा, बड़ा, कुसुम का पहिलारंग ।
 जेटानी० ना० स्त्री० जेटकी स्त्री ।
 जेटी० शु० बड़ी ।
 जेटीमधु० ना० पु० मुलहठी ।
 जेटीत० ना० पु० जेटका पुत्र ।
 जेता० } शु० जितना ।
 जेतिक० }
 जेच० ना० पु० खलीता, पाकट, फारसी शब्द है ।
 जयमान० शु० जीतनेवाला, जयमान ।
 जेर० ना० पु० सेरा ।
 जेशड़ा० ना० पु० रस्ता, डेर ।
 जेवना० स० कि० खाना, भोजन करना ।
 जेवनार० ना० स्त्री० खाना, भोजन, यज्ञ ।
 जेवरी० ना० स्त्री० रस्सी, डेरि ।
 जेहर० ना० पु० स्त्रियों का भूषण विशेष ।
 जेत० ना० पु० वृत्त विशेष, रागिनीविशेष ।
 जैन० ना० पु० नास्तिकों का मत विशेष ।
 जैनी० शु० जैन मतवाला, सरावक, सरौगी ।
 जैमाला० ना० स्त्री० जयमाला, जीति की माला ।
 जैमिनि० ना० पु० मुनि विशेष ।
 जैमिनी० शु० ब्रह्मवादी ।
 जैसा० अव्य० यथा ।
 जैहें० अ० कि० जायेंगे ।
 जो० सर्व० यह शब्द सम्बन्ध का बोधक है अव्य० यथा, यदि ।
 जोभारभाटा० ना० पु० समुद्र के जलका चढ़ाव उतार ।
 जोह० ना० स्त्री० जोरू, इलहन ।
 जो० अव्य० जो, यदि, जैसा, ज्यों ।

जौक० ना० स्त्री० जलौका, रक्तपा, जलजंतु ।
 जौकर० अव्य० जिसप्रकार ।
 जौही० अव्य० जिससमय ।
 जोख० ना० स्त्री० तोल ।
 जोखना० स० कि० तोलना ।
 जोखिम० ना० स्त्री० चिन्ता, शंका, घटी
 जोखिमी० ना० पु० जोखिम उठानेहारा ।
 जोखों० ना० स्त्री० जोखिम ।
 जोग० ना० पु० योग ।
 जोगमाया० ना० स्त्री० मायारूपीशक्ति जो योगियों में है जिसकरके वे कहते हैं कि हम अपना स्वरूप अपने वश रहें ।
 जोगवत० कि० परखत, राखत, रचत ।
 जोगा० शु० योग्य ।
 जोगाभ्यास० ना० पु० जोग का अभ्यास ।
 जोगिन्० ना० स्त्री० जोगिन्, जोगी की स्त्री ।
 जोगिनी० ना० स्त्री० देवी की सहचरी ।
 जोगिया० ना० पु० जोगी शु० रंग विशेष ना० स्त्री० रागिनी विशेष ।
 जोगी० ना० पु० योगी, शान्त ।
 जोगेश्वर० ना० पु० योगेश्वर, तपस्वी, पुंजारी विशेष श्री महादेवजी, श्रीविष्णुनारायण ।
 जोग्य० शु० योग्य, उत्तम, अच्छा ।
 जोजन० ना० पु० योजन, चारकोट ।
 जोट० ना० पु० साथ, जोड़ी शु० सम ।
 जोटा० ना० पु० जोड़ा ।
 जोड़० ना० पु० मेल, गांठ, धेगली, मीसान ।
 जोड़ती० ना० स्त्री० लेखा, गिनती ।
 जोड़न० ना० पु० सोहागा, सांठन, जामन ।
 जोड़ना० स० कि० मिलाना, एकट्ठा करना, लगाना, संकलन करना, धन बढ़ोरना, बनाना, गांठना ।
 जोड़ा० ना० पु० युग्म, दूसरा, जुता, धोती, एक बार पहिनने के कपड़े ।
 जोड़ाई० ना० स्त्री० जोड़ने का काम या पैसा

टैवा० ना० पु० जम्पपत्री, का. देखना वा चिकित्सा
लना, चाट ।

टैहरा० ना० पु० छेदागांव, पुरवा ।

टैहला० ना० पु० विवाह की रीति ।

टोभारि० ना० स्त्री० दुआई ।

टौटा० ना० पु० पटाका, भुरा, पोड़, वास्तु की
पुड़िया, पांत्का पोड़ ।

टौटी० ना० स्त्री० पचीला, मारी ।

टोक० } ना० स्त्री० अटकवाय, कवाय
टोकटाक० } छेड़ाइ ।

टोकना० स० कि० पड़ना, रोकना, बाहलगाता
भुरी छिटे से देखना ।

टोकरा० ना० पु० डौरा, बलिया, झोथा ।

टोकरी० ना० स्त्री० डौरी, बलिया ।

टोकाटोकी० ना० स्त्री० रुकान, प्लवापक, छेड़-
घाड़ ।

टोडका० ना० पु० मोहनी लटका, वशीकरण ।

टोडरु० ना० पु० धूस, विशेष ।

टोटा० ना० पु० घटी, हानि, न्यूनता ।

टोड़ी० ना० स्त्री० रागिनी विशेष ।

टोना० ना० पु० जाड़, वशीकरण, स० कि० टूट-
येलना ।

टोनहा० ना० पु० नटवा, थोभा, बन्दे, लादुगर ।

टोनहारि० } ना० स्त्री० नटिनी, लादुगरी ।

टोनही० } ना० स्त्री० नटिनी, लादुगरी ।

टोनहैया० } ना० स्त्री० नटिनी, लादुगरी ।

टोप० } ना० पु० कानतक शिरदकने का ब्रह्म
टोपा० } विशेष ।

टोपी० ना० स्त्री० शिर दकने का वस्त्र-विशेष ।
कुलाइ ।

टोरा० ना० पु० भीतिमें पानी के बचाव के लिये
थाइलागाकर छोले अथवा छन्ना निकालने की
वस्तु, दोड़ा ।

टोल० ना० स्त्री० समा, संगति ।

टोबा० ना० पु० सुएड, बसी का मुहल्ला ।

टोली० ना० स्त्री० टोल, समूह ।

टोहना० स० कि० हुंदा, टोलना ।

टोना० ना० पु० टोना ।

[ठ]

ठरि० अ० कि० ठहराई, मुकररकी ।

ठकठक० ना० पु० बहुत परिश्रम का कार्य,
गड़ता, शब्द विशेष ।

ठकठकाना० स० कि० ठोकना, लटखाना ।

ठकठकिया० ना० पु० बलेड़ा, भगड़ा ।

ठकठेला० ना० पु० धकापकी, भगड़ा बलेड़ा ।

ठकठौथा० ना० स्त्री० पनसोई ।

ठकुरसोहाती० ग० सुलदेवी बातकहना, श्रोता
के मनभावित वार्ता करना ।

ठकुराई० ना० स्त्री० ईश्वरता, प्रधानता, राज्य ।

ठकुरायन० ना० स्त्री० ठाकुरकी स्त्री, रात्री ।

ठग० ना० पु० नाठकटा, चोर, प्रतारक, धोखा-
देनेहारा ।

ठगई० ना० स्त्री० प्रतारण, चोरी, ठगई ।

ठगना० स० कि० छलना, चोराना, धोखादेना ।

ठगनी० ना० स्त्री० ठगकी स्त्री, चोटी ।

ठगई० ना० स्त्री० प्रतारण, चोरी, छल ।

ठगाना० स० कि० छलाना, चोरीकरण ।

ठगिन० ना० स्त्री० ठगिनी ।

ठगिया० ना० पु० ठग, प्रतारक, चोर, छली ।

ठगौरी० ना० स्त्री० ठगई ।

ठघरा० ना० पु० बलेड़ा, भगड़ा ।

ठठ० ना० पु० भीड़, मंडली ।

ठठक० ना० स्त्री० रुकान, अटकवाय, दर-डिगाव ।

ठठकना० अ० कि० रुकना, अटकना, आरचनी
में होजाना, डिगना ।

ठठना० स० कि० मताना, सनाना, दुस्तकराना
अ० कि० पिटना, मरिजाना ।

ठठरा० ना० पु० आड़, घेरा ।

ठठरी० ना० स्त्री० ठाट, स्त्री, दुमल शरीर ।

जोड़ी० ना० स्त्री० युग्म, दूसरा ।
 जोत० ना० स्त्री० उजाला, प्रकाश, ज्योति, हल
 प्रवाह, किरण, टेम, दृष्टि ।
 जोतना० स० क्रि० नांधना, हथे में लगाना,
 हलाई करना, सेत बनाना ।
 जोतमान्० गु० ज्योतिष्मान्, चमकदार ।
 जोतार० ना० पु० हलवाहा, किसान ।
 जोति० ना० स्त्री० जोत, प्रकाश, तारा, युति,
 श्रान्तिआदि भी ईश्वर ।
 जोतिप० ना० पु० ज्योतिप, नञ्म ।
 जोतिपी० शु० ज्योतिपी, नञ्मी ।
 जोतिःस्वरूप० गु० तेजस्वी, एक नाम श्रीभग-
 वान् का है ।
 जोती० ना० स्त्री० तराजू के पल्ले की रस्ती, स-
 डाऊं की रस्ती ।
 जोत्स्ना० ना० स्त्री० चन्द्रिका, चन्द्रकला ।
 जोत्स्नी० ना० स्त्री० राति, रैन, मिशा ।
 जोधन० ना० पु० लड़ाई, समर ।
 जोधा० ना० पु० योद्धा ।
 जोन० } ना० स्त्री० यौनि ।
 जोनि० }
 जोन्ह० ना० पु० चन्द्रमा, ज्ञानिनी ।
 जोयन० ना० पु० यौवन, छाती, स्तन ।
 जोयनवती० शु० यौवनवती ।
 जोयनमा० } ना० पु० जोवन, यौवन ।
 जोयना० }
 जोय० ना० स्त्री० पत्नी, भाष्या, जारू ।
 जायसी० गु० ज्योतिपी ।
 जोरू० ना० स्त्री० पत्नी, भाष्या, बीबी ।
 जोलां० ना० पु० धूल, धोला ।
 जावत० क्रि० चाहत, देखत ।
 जोवना० स० क्रि० देखना, ताकना ।
 जासी० ना० पु० ज्योतिपी, ज्ञानि विशेष ।
 जोहना० स० क्रि० बाट देखना, हुदना ।
 जो० ना० पु० अज्ञविशेष, यव, अव्य० जब, यदि ।

जौतुक० ना० पु० यौतुक, दायना ।
 जौन० सर्व० जा ।
 जौलौ० अव्य० जवतक ।
 ज्या० ना० स्त्री० माता, पृथ्वी, कर्मानकार ।
 ज्याना० स० क्रि० पालना, मिलाना ।
 ज्येष्ठ० ना० पु० जठका महीना, बड़ाभाई, गु-
 थैष्ठ, उत्तम ।
 ज्येष्ठा० ना० स्त्री० १ = अठारहवां नक्षत्र ।
 ज्योति० ना० स्त्री० जोति, लालनन्दन ।
 ज्योतिर्गण० ना० पु० तारागण ।
 ज्योतिप० ना० पु० विद्या विशेष, शास्त्रविशेष,
 हल्मनञ्म ।
 ज्योतिपी० ना० पु० ज्योतिपरास्त्र का ज्ञाता,
 नञ्मी, परिष्ठत ।
 ज्योतिष्मती० ना० स्त्री० मालकंगनी ।
 ज्योतिष्मान्० गु० प्रतापी, तेजस्वी ।
 ज्योत्स्ना० ना० स्त्री० चांदनी ।
 ज्योनार० ना० स्त्री० खाना, पाक, भोजन ।
 ज्वर० ना० पु० तप, ताप, बुखार ।
 ज्वरविनाशिनी० ना० स्त्री० गुरच, मर्जित ।
 ज्वरा० ना० स्त्री० मृत्यु, मौत ।
 ज्वरान्तक० ना० पु० विरायता ।
 ज्वलन० ना० स्त्री० जलन, आगिकी जीभविशेष ।
 ज्वार० ना० पु० अन्न विशेष ।
 ज्वारी० ना० पु० जुधारी ।
 ज्वाला० ना० स्त्री० आंच, लौ, लपक, आग ।
 ज्वालामुखी० ना० स्त्री० स्थान विशेष जिस में
 अग्नि सदैव प्रव्वलित रहती है ।
 [भ]
 भंखाड़० ना० पु० विना पत्ते के लुई ।
 भंभट्ट० ना० पु० भगड़ा, धकराहट ।
 भंभट्टी० गु० कठिन, भगड़ा ।
 भंभना० गु० विडविडा ।
 भंभनाना० अ० क्रि० इनडनाना, बजना और
 पड़पड़ाना ।

ठोस० गु० टाठां, जो खोलला नहीं है।

ठोसना० स० कि० टांसना

ठोसाई० ना० स्त्री० टांटाई, टटता

ठौर० ना० स्त्री० रथान, जगह ।

[ड]

डकराना० अ० कि० डूकमार के रोना

डकार० ना० स्त्री० उट्टार, श्वाशुरीय ।

डकारना० अ० कि० डिकारना; हुंकारना

डकैत० ना० पु० डकू, चोर, चटमारा

डकैती० ना० स्त्री० चोरी, चटमारी; डक

डकौत० ना० पु० कणसेकरकी जातिविशेष

डकौतिया० जिसका बाप ब्राह्मण और महतारी ग्वालिनि थी ।

डग० ना० पु० चलावा, फाल, पद, डेग ।

डगडगाना० अ० कि० हिलना, चमचमाहट, से चलना ।

डगना० अ० कि० हिलना, डिगना

डगमग० गु० चंचल, चलायमान

डगमगाना० अ० कि० खडखडाना; हिलना

डगर० ना० स्त्री० मार्ग, सडक, पैदा ।

डगरना० अ० कि० हिलना, किरना

डगरा० ना० पु० वांसका, बनाया हुआ

डग्गा० ना० पु० दुर्वल घोड़ाविशेष ।

डङ्क० ना० पु० चमक, विच्छ, आदि का विषयक

डङ्का० ना० पु० टका, धोसा, नक्कारह ।

डङ्किनी० ना० स्त्री० डाकिनी ।

डङ्कियाना० स० कि० डकमारना, चमकना ।

डङ्कीला० गु० जिस जन्तुके डङ्कही ।

डटना० अ० कि० डटना, भिडना, तकना, बनेना ।

डटैया० ना० पु० टटनेवाला ।

डट्टना० अ० कि० जलमाना, पुनेमाना

डट्टमुण्डा० गु० दादीरहित

डट्टियल० गु० दादीवाला

डट्टुआ० गु० जलाहुआ, जलगाया

डट्टाई० गु० जलाहुआ, जलगाया

डट्टाड० ना० पु० बाह, बुजा, व्यायाम करना, साधनविशेष, डट्टाड ।

डट्टाडवत० ना० स्त्री० दण्डवत् प्रणाम विशेष, पायलागी ।

डट्टाडा० ना० पु० सोंटा, सीढ़ीका पीया, दण्ड ।

डट्टाडिया० ना० पु० स्त्रियों के पहिरेका बंध विशेष और बाजारका कट उगाइनेहारा ।

डट्टाडी० ना० स्त्री० चेंदी, चेट, तराजूकेपल्लोमें लगानेका काष्ठ, संन्यासी, इरातिघाई आदि की नली, डट्टाडी ।

डट्टाडीर० ना० स्त्री० भारी, लकीर, लील ।

डट्टाट्टना० अ० कि० पुकारना, डाटना, सरपट डौडना ।

डट्टाफ० ना० पु० बाजा विशेष ।

डट्टाफारना० अ० कि० डूकमारना, विलखना ।

डट्टाफाली० ना० पु० डफ बजानेहारी ।

डट्टाव० ना० पु० डवल, पराक्रम, जिव, चमकी । जिससे डट्टावनाते हैं ।

डट्टावका० ना० पु० टटका, कूपकाजल, गु० मोटा ।

डट्टावड्याना० अ० कि० भरना, जैसे थाल आदि से भरयाती है ।

डट्टावरा० ना० पु० सीलीभूमि, लिपार, धपरह ।

डट्टावरिया० गु० लव्हा, वायांहाथ, चामहया ।

डट्टावना० स० कि० डवाना ।

डट्टाव्या० ना० पु० बड़ी डिविया ।

डट्टाव्यू० ना० पु० लोहका कच्चा ।

डट्टावड्या० ना० पु० डटना की गांठ ।

डट्टावडु० ना० पु० बाजा विशेष ।

डट्टावडुमध्य० ना० पु० डट्टावडुका मध्यभाग, साकनाय जो अपने से दो बड़े स्थलिक भागों को मिलावे ।

डट्टावडु० ना० पु० भय, भीत, शोका

डट्टावडुना० अ० कि० भयखाना

डट्टावडुपना० अ० कि० भयखाना

भक्तनाहट० ना० स्त्री० चिह्नचिह्नहट, झनकार ।
 भक्तावायु० ना० पु० प्रचण्डपवन, आंधी ।
 भक्ताना० अ० क्रि० धूपभे कृष्णवर्ण होना, स०
 क्रि० शमिसे पाविधोना, सुस्ताना ।
 भक्त० ना० पु० क्रांथ ।
 भक्तभोरी० ना० स्त्री० छानाछानी ।
 भक्तना० अ० क्रि० बकना, बकवककरना, हाय
 हाय करना ।
 भक्तरी० ना० स्त्री० बौहेनी ।
 भक्ताभक्त० गु० झलाभल ।
 भक्तोर० ना० स्त्री० टोंग, विपत्ति, बौछार ।
 भक्तोरना० स० क्रि० चलाना, जैसे आंधीमें भड़की ।
 भक्तोरा० ना० पु० भ्रमास, वायुसमेत भड़की, ।
 बौछार ।
 भक्तोलना० स० क्रि० डलाना ।
 भक्तड० ना० पु० आंधी, चौपारी ।
 भक्तो० ना० पु० विना प्रयोजन बकवादी ।
 भक्तना० अ० क्रि० भंस्तना ।
 भक्तडना० अ० क्रि० लड़ना, मिरना ।
 भक्तडा० ना० पु० लड़ाई, रगडा ।
 भक्तडाना० स० क्रि० भगडा करना, लड़ाना ।
 भक्तडालिन् ० गु० लड़कास्त्री ।
 भक्तडालू० ना० पु० लड़का ।
 भक्ता० ना० पु० भंगा ।
 भक्तुला० ना० पु० कुत्ता ।
 भक्त० ना० पु० लम्बीदाई ।
 भक्तकारना० स० क्रि० दबकाना, दबाना ।
 भक्तला० ना० पु० मिठोईविशेष ।
 भक्तभर० ना० पु० कभर ।
 भक्तभरी० ना० स्त्री० भरोहरा ।
 भक्तभो० ना० स्त्री० आर्डासमेत आंधी ।
 भक्त० गु० उतावली, प्रच्य० शीघ्र ।
 भक्तफ० ना० स्त्री० लसोट, उमल ।
 भक्तकना० स० क्रि० लसोटना, निम्कोटना, अ०
 क्रि० दुबला होनाना ।

भटका० गु० जो भटकेसे मारागया, फाड़गया,
 ना० पु० लांच, रतोट ।
 भटकाना० स० क्रि० भटका लगाना ।
 भटपट० अच्य० तुरन्त, शीघ्र ।
 भट्टास० ना० पु० भड्डाक, बौछार ।
 भट्टिति० अच्य० तुरन्त, शीघ्र ।
 भट्ट० ना० स्त्री० भड्डी, तालाविशेष, तालकी
 कल ।
 भट्टन० ना० स्त्री० टपकन, जैसे फल टपककर
 गिरते हैं, बत्ताकी टेम का फूल ।
 भट्टना० अ० क्रि० टपकना, गिरना, पतनाहोना,
 निकलना, छनना, नापतपजना ।
 भट्टप० ना० स्त्री० कट्टाहट, हमला ।
 भट्टपना० अ० क्रि० लड़ना, हमलाकरना ।
 भट्टपाभट्टपी० ना० स्त्री० लड़ाई, दपटदपटी ।
 भट्टपाना० स० क्रि० लड़ाना ।
 भट्टवेर० ना० पु० }
 भट्टवेरी० ना० स्त्री० } जंगलविर ।
 भट्टघाना० स० क्रि० भड़ाना ।
 भट्टाक० } ना० पु० उतावली, फुत्ती, हड़-
 भट्टाका० } बड़ी ।
 भट्टाभट्ट० अच्य० चटपट ।
 भट्टाना० स० क्रि० झाड़ दिलवाना, भाड़फूक
 कराना ।
 भट्टी० ना० स्त्री० लगानारुद्धि, और ऊपरी प्राप्ति ।
 भट्टीता० ना० पु० फलादिका घन्तममय ।
 भट्टडा० ना० पु० प्यना, पताफा ।
 भट्टडूला० गु० पत्तोंमें घना वृक्ष, नालों में घना
 शिर ।
 भट्टक० ना० पु० धातु की दो वस्तु मिटने का
 शब्द ।
 भट्टकना० अ० क्रि० भट्टकनाना ।
 भट्टकार० ना० स्त्री० भक्तकार, टनकार ।
 झनकारना० स० क्रि० बताना ।
 भट्टधा० ना० पु० धानाविशेष ।
 भट्टप० अच्य० भट्ट, तुरन्त, शीघ्र ।

हरयोक् ० गु० हरनेवाला, भयवान् ।
 हरवेया ० गु० भयवान्, हेठा, हरयोक् ।
 दराऊ ० गु० भयंकर ।
 दराक ० गु० भयवान् ।
 दराना ० } स० कि० भय देना, भयं सि-
 दरावना ० } खाना ।
 दरी ० ना० स्त्री० मांसकी चोटी, छोटादुकड़ा,
 देता ।
 दरीला ० गु० मांस चोटियावाला ।
 दरीना ० गु० दराऊ ।
 दलवा ० ना० पु० टोकरा ।
 दलवाना ० स० कि० भोकवाना, गिरवाना,
 पुसड़ाना ।
 दला ० ना० पु० नका दुकड़ा वा देला टोकरा ।
 दलिया ० ना० स्त्री० छोटी टोकरा ।
 दली ० ना० स्त्री० छोटा दुकड़ा वा देला,
 पुपारी ।
 उस ० ना० स्त्री० तराजू रस्ती, दरा ।
 उसना ० स० कि० काटना, चमकना, डक-
 याना ।
 उसना ० ना० पु० विद्योना ।
 उहक ० ना० पु० गुमना, खोह, चोरगडहा, लालच,
 विगाह, डोक ।
 उहकना ० अ० कि० डोकना, लालच करना,
 निगड़ना ।
 उहकाना ० स० कि० निराश करना, खलवाना,
 विगाड़ना ।
 उहडहा ० गु० प्रफुल्लित, खिलोहया, चेतन्यना ।
 उहडहाना ० अ० कि० खिलना, फूलना ।
 डांक ० ना० पु० जगजगा, विष्णु आदिका डकना ।
 डांग ० ना० स्त्री० लोटी, पहाड़की चोटी ।
 डांगर ० गु० दुर्बल, ना० पु० दुर्बलपण,
 मूली
 का फूलाहुया पत्ता ।
 डांटना ० स० कि० ताड़ित करना, पुडकना ।
 डांठल ० ना० पु० }
 डांठी ० ना० स्त्री० } हण्टी, ताँट ।

डांड ० ना० पु० बदला, दुह, ताड़ना, नावलेवने
 का अन्न, चापू रीद, डखीर ।
 डांडना ० स० कि० बदला लेना, दण्डलेना ।
 डांडा ० ना० पु० मंड, सियाना, धूरा ।
 डांही ० ना० स्त्री० लेवनेहारा, लेवेया ।
 डामाडोल ० ना० पु० इधर से उधर रवइना ।
 डांवरू ० ना० पु० शेरका बच्चा ।
 डांस ० ना० पु० डंक, मच्छड़ ।
 डाक ० ना० स्त्री० टप्पा, अन्तरराहितगमन, डाकिनी
 का पति, डाका, डाक ।
 डाकना ० स० कि० बमनकरना, उछालकरना ।
 डाका ० ना० पु० चोरोंका धवा ।
 डाकिनू ० } ना० स्त्री० जयन्, पुडैल, यो-
 डाकिनी ० } गिनी भेद ।
 डाकिया ० ना० पु० डाक, डाक लेजानेवाला ।
 डाकी ० गु० हाऊ, पेट ।
 डाकू ० ना० पु० उकैत, चोर, चडमार ।
 डाट ० ना० स्त्री० बुडक, धमक, दूदी ।
 डाटना ० स० कि० काटना, कोपसे देखना ।
 डादू ० ना० स्त्री० पिछले दांत ।
 डाही ० ना० स्त्री० ठूठीपर के बाल ।
 डाघ ० ना० पु० परंतला, कच्चा नारियल, तुंग
 विशेष ।
 डावर ० ना० पु० हाथ धोनेका पात्र, गोल तालान,
 भावर ।
 डाम ० ना० पु० कुशा, चाव दर्भ ।
 डामर ० ना० पु० धूना, राल ।
 डायनू ० ना० स्त्री० डाकिनी ।
 डार ० ना० स्त्री० डाली, डाल ।
 डारना ० स० कि० डालना ।
 डारिम ० ना० पु० दाड़िम, अनारफल ।
 डाल ० ना० स्त्री० डाली, शाखा, टहनी ।
 डालना ० स० कि० फेंकना, पुसेइना, भोंकना ।
 डाला ० ना० पु० डोला, बड़ीडाली ।
 डाली ० ना० स्त्री० टहनी, शाखा फलादिका निद,
 पुण्यादि रखने के लिये बाँसका पात्र ।

भूपकना० स० कि० भूलना, पंखा हिलाना,
थ० कि० लपकना, भूपटलेना, पलकमारना ।

भूपकाना० स० कि० पलकमारना, मटकाना ।

भूपकी० ना० स्त्री० लपक, मटकी, नौद ।

भूपट० ना० स्त्री० लपक, चढाई, ढांट ।

भूपटना० थ० कि० लपकना, चढि दौडना ।

भूपट्टा० ना० पु० धावा, दौड, लपक ।

भूपट्टामारना० स० कि० भूपटलेना ।

भूपलाना० स० कि० खंगालना, धोना ।

भूपभूपी० ना० स्त्री० उतावली, हडबडी ।

भूपात० ना० स्त्री० स्फूर्ति, जलदी ।

भूपाना० थ० कि० भूपकीलेना, ढपाना ।

भूपास० ना० स्त्री० फूही, भौसी ।

भूपासिया० गु० छली, थपमी ।

भूयकाना० स० कि० धावरा करना ।

भूविधा० ना० पु० भूयणविशेष ।

भूयुझा० गु० जिस कुत्ते वा बकरे के बाल बड़े
बड़े हों, कुकाहुआ ।

भूव्या० ना० पु० लटकना ।

भूमक० ना० स्त्री० चमक ।

भूमकडा० ना० पु० चटकीला, भटक ।

भूमकना० थ० कि० चमकना, नाचना ।

भूमका० ना० पु० प्रताप, शान ।

भूमकी० ना० स्त्री० भूमक, भूलक, चमक ।

भूमभूम० अव्य० लगातार ।

भूमभूमना० थ० कि० चमकना ।

भूमरभूमर० अव्य० बूद बूद से ।

भूमाका० ना० पु० झड़ी, बेगताई ।

भूमाभूम० अव्य० भूमभूम ।

भूमपा० गु० भूपाहुआ, टकाभया, ना० पु० चंगुल ।

भूर० ना० पु० सीता, भरना, झड़ी, जलना ।

भूरना० ना० पु० सीता, भरना, भरनेवाला ।

भूरोखा० ना० पु० भूमरी, लिङ्की ।

भूमर० ना० पु० भूमर ।

भूर्ना० ना० पु० सीता झड़नेका कपडा, नूडत,
छेदका छूप विशेष, थ० कि० झड़ना, गिरना ।

भूल० ना० स्त्री० झोप, जलजलाहट, थोमडी,
उभ्यता ।

भूलक० ना० स्त्री० चमक, उजोला ।

भूलकना० थ० कि० चमकना ।

भूलका० ना० पु० फोला, फोला ।

भूलकाना० स० कि० चमकाना, उच्चल
करना ।

भूलकी० ना० स्त्री० दृष्टि ।

भूलभूल० ना० पु० चमक, लटक ।

भूलभूलाना० थ० कि० चमकना, प्रोषित
होना ।

भूलभूलाहट० ना० स्त्री० चमक, परपराहट ।

भूलता० स० कि० भूपकना, थ० कि० सुधरना ।

भूलमल० ना० पु० चमक ।

भूलहाया० गु० वसवासी, ज्वलित ।

भूलाभूल० गु० ज्योतिष्मान्, स्त्री० भूलक ।

भूलाघोर० गु० चमकीला, झड़कीला, ना० पु०
चमकार ।

भूलाना० स० कि० सुधारना, जोडना ।

भूलार० ना० पु० झाड़ी ।

भूप० ना० पु० मछली, मत्स्य ।

भूपकेतु० ना० पु० कामदेव, प्रयुम्नजी ।

भूाई० ना० स्त्री० परछाई, लहसुन, सुखपर-
श्यामता होजाना ।

भूांक० ना० पु० ताकना, हिरण्य वा पत्तियों
का झुण्ड ।

भूांकड० ना० पु० झाड़ी ।

भूांकना० स० कि० करकेदेखना, ताकना ।

भूांकाभूांकी० ना० स्त्री० देखादासी, ताका
ताकी ।

भूांख० ना० पु० हिरण्यविशेष ।

भूांभ० ना० स्त्री० बड़ा मंजीरा, भगडा ।

भूांभट० ना० पु० भगडा, रंगडा ।

भूांभा० ना० पु० कांठविशेष, भगडा ।

भूांभिया० गु० कपोती, अलेडिया ।

डासन० ना० पु० विद्याना ।
 डासना० स० कि० विद्याना ।
 डाह० ना० पु० द्रोह, देय, पेटमें आगिपड़ना ।
 डाहना० थ० कि० बेरीहोना, द्रेषिवनना ।
 डाही० ना० स्त्री० द्रोही, द्रेषी, कलेजेपर आगि
 जलना, मन्दाग्नि ।
 डिगना० थ० कि० हिलना, लहकना, हटना,
 टलना, चलायमान होना ।
 डिगना० स० कि० हिलाना, चलाना ।
 डिग्ना० स० कि० देखना, दुकीलगाना ।
 डिठियारा० यु० देखनेवाला, द्रष्टा ।
 डिग्दर० ना० पु० समुद्रफेन ।
 डिग्दुभ० ना० पु० साँप ।
 डिग्दमि० ना स्त्री० उमरू ।
 डिगिया० ना० स्त्री० टरुने समेत काठका नील
 पात्रविशेष ।
 डिब्बा० ना० पु० बड़ीडिबिया ।
 डिब्बा० ना० स्त्री० डिबिया ।
 डिम्भ० ना० पु० दम्भ, पातरण्ड, अहङ्कार ।
 डिम्भी० यु० पातरण्ड, दम्भी ।
 डींग० ना० पु० बड़ाई, अपनी बड़ाई ।
 डींगमारना० थ० कि० निज बड़ाई करना ।
 डीठ० } ना० स्त्री० दृष्टि, नज़र ।
 डीठि० }
 डील० ना० पु० तड़, कद ।
 डीला० ना० पु० डेला मिट्टीका टुकड़ा ।
 डीह० ना० पु० खड़ा, उजाड़गांव ।
 डीहा० ना० पु० डीला ।
 डुक० ना० पु० मुक्का, घूसा ।
 डुकरचा० ना० पु० बुद्धा, बुद्धा ।
 डुकरिया० ना० स्त्री० बुद्धिया ।
 डुगडुगाना० थ० कि० डंका बजाना, तिम
 तिमाना ।
 डुवकी० ना० स्त्री० बुद्धकी, गोता ।
 डुवाना० स० कि० बोलना, डुबोना ।
 डुवाव० ना० पु० जलस्थान जो बूझने के योग्य है ।

डुवोना० स० कि० बोरना, डुबाना ।
 डुरियाना० स० कि० किराना, रस्सी में कंधे के
 ले चलना ।
 डुवना० थ० कि० हिलना, चलना ।
 डुखाना० स० कि० हिलाना, चलाना ।
 डूंगर० ना० पु० पहाड़, भृष्टादि, बर्जाविलोच
 यथा, चण्डी में सब खोदि 'वहावे', डूंगर को
 परनाम मिटावे ।
 डूच० ना० पु० डुवकी ।
 डूचना० थ० कि० डुवकी मारना, बूझना, उध
 कना, चिन्तामें होना ।
 डूचा० यु० बूझाभया ।
 डुग० ना० पु० डग, फलास ।
 डेढ़० यु० एक और आधा ।
 डेढ़गति० ना० स्त्री० नाचविशेष ।
 डेरा० ना० पु० देश, घर, तम्बू, यु० भेगा ।
 डेल० } ना० पु० डेला ।
 डेला० }
 डेवदा० यु० एक और आधा, डेदगुणा ।
 डेवदाना० स० कि० डेवदा करना वा लेना ।
 डेवदा० ना० स्त्री० देहली ।
 डेहुड़० ना० स्त्री० बन्दूकों की बादि देगना ।
 डेहुड़ी० ना० स्त्री० डेवदा ।
 डैन० ना० पु० पंख, पक्ष ।
 डैना० ना० पु० डाल ।
 डोई० ना० स्त्री० काठकी कर्ची ।
 डोंगा० ना० पु० छोटी लकड़काठकी
 डोंगी० ना० स्त्री० } नाव ।
 डोंडी० ना० स्त्री० डिंदोरा ।
 डोरा० ना० पु० दो सुतका साँप ।
 डोकर० } यु० बुद्धा, बुद्धा ।
 डोकरा० }
 डोकरि० ना० स्त्री० बुद्धी ।
 डोव० ना० पु० दूब ।
 डोवा० ना० पु० ताल, पातरा, मुच्छी ।

भांभी० ना० स्त्री० खल विशेष ।
 भांपना० स० कि० दांपना, छुपाना ।
 भांवराना० शु० काला ।
 भांवली० ना० स्त्री० चौचला, हावभाव ।
 भांवा० ना० पु० अत्यन्त पकी ईट ।
 भांलना० स० कि० उभारना ।
 भांसा० ना० पु० फुसलाव, धोखा ।
 भांसी० ना० पु० बुदबलखण्ड में नगर विशेष ।
 भांसु० ना० पु० फुसलाव, धोखाना ।
 भांऊ० ना० पु० छोटा वृक्ष विशेष ।
 भांग० ना० पु० केना ।
 भाभा० ना० पु० मादक वस्तु ।
 भाड० ना० पु० छायावृक्ष जो पीतलआदि का
 बनता है ।
 भाडखण्ड० ना० पु० वन, बैननाथ के पास
 का वन विशेष, शु० भयइला, छज ।
 भाइन० ना० पु० बुहारन, कचरा, कर्कट, कूड़ा,
 पौछन ।
 भाइना० स० कि० बुहारना, फर्चकरना, पट-
 कना, निकालना ।
 भाइन्त० अव्य० सभी ।
 भाड़ा० ना० पु० यह, मलकाल्याग, हगना ।
 भाड़ी० ना० स्त्री० वधना, वन, जंगल ।
 भाहू० ना० स्त्री० बढेनी, चुहारी ।
 भापा० ना० पु० टोकरी विशेष ।
 भावा० ना० पु० चमके का पात्र, तेल, धी मापने
 के लिये ।
 भामा० ना० पु० भांवा ।
 भार० ना० पु० आगकी लव, शबाला, सन, अव्य०
 कइथाहट ।
 भारि० अव्य० सब, तमाम, कमाल ।
 भारी० ना० स्त्री० थाली, भाड़ी, दी-शुलका
 जलपात्र विशेष ।
 भारल० ना० पु० कइथाहट, बड़ी टोकरी, भातुका
 सुधारना ।
 भारना० स० कि० विक्राना, थोपना, जोरना ।

भालर० ना० स्त्री० आंचल, शुद्धे ।
 भालरा० ना० पु० सीता, गु० बदाहुआ ।
 भिभक० ना० स्त्री० चौक, भडक, डर भय ।
 भिभकना० अ० कि० चौकना, भडकना, डरना ।
 भिभका० गु० चौकाहुआ, भयवान् ।
 भिभकाना० स० कि० भडकाना, डराना, चौ-
 काना, भयकाना ।
 भिभकी० ना० स्त्री० भडकी, चौक, डर ।
 भिभ्भा० ना० पु० जिगनावृक्ष, फूटीकौड़ी ।
 भिभ्भाणी० ना० स्त्री० जिगनावृक्ष ।
 भिभ्भा० ना० स्त्री० फूटीकौड़ी ।
 भिडक० ना० स्त्री० धमकी, भुवकी, गटकी ।
 भिडकना० स० कि० प्रडकना, दबकाना, धम-
 काना, भटकादना ।
 भिडकाभिडकी० ना० स्त्री० भगडा, भिगडी ।
 भिडकी० ना० स्त्री० सुडकी ।
 भिनहट्टा० } शु० सुलता ।
 भिनहट्टा० }
 भिरभिर० गु० जो पतलीधार से बहता, पतला ।
 भिरभिरा० गु० तपहु पतला ।
 भिरभिराना० अ० कि० बहना, तिरतिराना ।
 भिलगा० ना० पु० खाटकी पुरानी और टूटी
 रस्ती की बिनापट, शु० पुरानीलाट ।
 भिलगा० ना० पु० मदाति विशेष ।
 शिलम० ना० स्त्री० युद्ध में पहिरने के लिये लोहे
 की कुर्ती, टोपपर लोहेका कटोरा, बल्तर ।
 शिलमिल० ना० पु० बार विशेष ।
 शिलमिलाना० अ० कि० लहराना, चिनगी
 निकलना ।
 शिलिका० ना० स्त्री० भांयूर ।
 शिल्डी० ना० स्त्री० भांयूर, अति सूक्ष्म चमड़ा,
 खर्सी ।
 शींकना० अ० कि० पक्षिताना, शोक्ति शोना,
 पानक में थाना ।
 शींगट० ना० पु० भांगी, पटनी ।
 शींगा० ना० पु० जलकीट प्रसिद्ध ।

डोम० } ना० पु० जातिविशेष ।
 डोमड़० }
 डोमिनी० ना० स्त्री० डोम की स्त्री ।
 डोर० ना० स्त्री० रस्ती ।
 डोरा० ना० पु० सीने का रत, रस्ता, धागा,
 धार, लगाव ।
 डोरिया० ना० पु० सती, मालदई, कपड़ाविशेष ।
 डोरी० ना० स्त्री० रस्ती ।
 डोल० ना० पु० पानी भरने के लिये लोहे वा
 चमड़े का पात्र विशेष, जन्माष्टमी में कृष्णजन्म
 के लिये मण्डप विशेष ।
 डोलची० ना० स्त्री० छोटा डोल ।
 डोलना० अ० कि० हिलना, टलना, फिरना,
 झूलना ।
 डोला० ना० पु० पालकीविशेष ।
 डोडी० ना० स्त्री० पालकीविशेष, जो स्त्रियों के
 लिये है ।
 डोजा० ना० पु० गीजन, मचान ।
 डोडा० ना० स्त्री० डोडी, मनादी ।
 डोड़ी० ना० स्त्री० डेवदी, खोदी, य० खोदा ।
 डोल० ना० पु० प्रकार, द्य, च्यात, स्वरूप,
 प्रकार ।
 डपोड़ा० य० डेवड़ा ।
 डपोड़ी० ना० स्त्री० डेवदी, गु० डेवगुणा ।
 [ड]
 डक० ना० पु० तौल विशेष ।
 डकना० स० कि० डपना, छुपना, ना० पु०
 दापने की वस्तु विशेष ।
 डकनी० ना० स्त्री० चपनी ।
 डकार० ना० स्त्री० टकार, टकार ।
 डकेल० ना० पु० रेल, धरान ।
 डकेलना० स० कि० टेलना, रिलना, फोकना ।
 डकेलू० ना० पु० टकेलनेहारा ।
 डका० ना० पु० बीजा विशेष ।
 डग० ना० पु० चाल, लक्षण, निरान ।

दट्टा० ना० पु० टैप ।
 दड़कौचा० ना० पु० जंगलीकीआ, दालू ।
 दड़चा० ना० पु० पत्तीविशेष ।
 दएदोरना० स० कि० दूँदना ।
 दएदोरा० ना० पु० राजा की थोरसे कोई
 आशा सुनाने को वाजा बजाके कहना ।
 दएदोरिया० ना० पु० टंदारा बगानेहारा ।
 दनमनना० अ० कि० गिरपड़ना ।
 दनमनी० य० स्त्री० गिरपड़ीहुई ।
 दपदपाना० स० कि० दोलको पीटना ।
 दपना० अ० कि० छिपना ।
 दय० ना० पु० डोल, रूप, चाल, रीति, बनावट,
 हथौथी ।
 दवरा० य० गंदला, मैला ।
 दवीला० य० सर्जिला, सुडोल ।
 दवुआ० ना० पु० पैसा ।
 दमलाना० अ० कि० डगराना ।
 दलकना० अ० कि० डगराना, फिरना, बहना ।
 दसका० य० चौधना, भुका, छलका ।
 दलकाना० स० कि० चौधाना, बहाना ।
 दलना० अ० कि० गिरना, पिछलना, पीटना,
 छलकना, डगरना, झुकना, भरजाना ।
 दलमलाना० अ० कि० डगमगाना ।
 दलाना० स० कि० सांचे में दासना, बहाना ।
 दलैत० ना० पु० दाल तलवार बांधनेहारा ।
 दयाना० स० कि० गिरवाना, उजड़वाना ।
 दहना० } अ० कि० गिरपड़ना, उजड़ना ।
 दहपड़ना० }
 दई० य० अर्द्ध २३ ।
 दांकना० स० कि० टांपना, छुपाना ।
 दांग० ना० स्त्री० कन्दला, शिखर ।
 दांचा० ना० पु० टाड, घर, सांचा, खाट का
 घरा ।
 टांपना० स० कि० टांकना, छुपाना ।
 टांसना० स० कि० दांपना ।
 टांसा० ना० पु० लिप, दांप ।

शीगुर० ना० पु० शीघ्र विशेषः, सुरखराजः ।
 भीण० }
 भीन० } ए० सूक्ष्मः, पतला, बारीकः ।
 शीना० }
 शीहका० ना० स्त्री० शीघ्रः क्रोडः ।
 शील० ना० स्त्री० बहुत बड़ा जलाराध, बड़ा
 तालः ।
 शीसी० ना० स्त्री० फूही, फुहार, छोटी बुंदें ।
 शुकना० अ० कि० निहुरना, चलना, काधित
 होना, व्याकुल होना ।
 शुकाना० स० कि० निहुराना, लचाना, काधित
 करना, अ० कि० क्रोधित होना ।
 शुकचट० ना० स्त्री० चलावट, निहुराई ।
 शुक्लाना० अ० कि० चिड़चिड़ाना, जल-
 जलाना ।
 शुठलाना० } स० कि० भूटा करना, मिथ्या
 शुठलना० } मतलाना, अशुद्ध करना ।
 शुरड० ना० पु० मंडल, समूह, अखांड ।
 शुरडा० ना० पु० पताका, भंडा ।
 शुरडी० ना० स्त्री० शूडी, बूबोंका समूह ।
 शुरन० ना० पु० योड़ी समानता ।
 शुरनकुनाना० ना० पु० तिलाना विशेषः ।
 शुरनशुना० ना० स्त्री० पजनी ।
 शुरमका० ना० पु० कानका भूषण विशेषः, फूल वा
 फतका गुच्छा, फूल विशेषः ।
 शुरमुट० ना० पु० भाड़, मंडला, शुरमक ।
 शुरपना० अ० कि० सुखना स० कि० सुखाना ।
 शुरपने० ए० सुख ।
 शुररियाना० स० कि० सिकाना, सोहना पाकना,
 उच्चल करना ।
 शुरी० ना० स्त्री० शरीरके मांसका सिकाई ।
 शुरनी० अ० कि० कुहलाना, सुखना ।
 शुरलकाना० स० कि० जलादेना, सुलतानी ।
 शुरलता० अ० कि० लटकना, डलना ।
 शुरलकुली० ना० स्त्री० कानके मात ।
 शुरलसना० अ० कि० सुसलना, जलजाना ।
 शुरलसाना० स० कि० सुलसाना, जलादेना ।

शुला० ना० पु० पहिरने का बेल विशेषः ।
 शुभल० ना० पु० कौध का आवेशः ।
 शूटर० ना० स्त्री० भूमि जिसमें वर्षों में दो बार
 अन्न बोते हैं ।
 शूठनशाठन० ना० पु० छूटा, घिसा ।
 शूठ० ए० मिथ्या अशुद्ध ।
 शूठा० ए० मिथ्यवादी, झूठहवा, ना० पु०
 उच्छिष्ट खाना खायेक रहगया ।
 शूना० ना० पु० पकानोरियल, महीन बत्ते, चूने
 में ईधन और आग रखना ।
 शूमक० ना० स्त्री० कुमट ।
 शूमशूम० ना० पु० घन, लटक लटक ।
 शूमना० अ० कि० लहरना, हिलाना, ऊबना,
 उमडना, धिरना ।
 शूरना० स० कि० कूटना, पड़से फल भङ्गना,
 सुलना ।
 शूरा० गु० सूरा, सुरभाया हुआ ।
 शूल० ना० स्त्री० बैलादि पशुओं का छोड़ना ।
 शूलना० अ० कि० डोलना, हिलना, लटकना,
 ना० पु० छन्द विशेषः ।
 शूला० ना० पु० हिवाला, दांस वृक्ष ।
 शूक० ना० स्त्री० दकेल, धका, शूकोई ।
 शूकना० स० कि० दकेलना, फेंकना, ईधन भाई
 में डालना ।
 शूटा० ना० पु० शिरके पीछे के बाल, भूल का
 शूटी० ना० स्त्री० हिलाना ।
 शूपडा० ना० पु० मई छपरका छोटा
 शूपडी० ना० स्त्री० पर ।
 शूपा० ना० पु० फलका गुच्छा, बाल, धिराव ।
 शूरा० ना० पु० गुच्छा ।
 शूक० ना० स्त्री० शूक ।
 शूका० ना० पु० शूका, टोकर, ठेस, शूकोरा ।
 शूस० ना० पु० खोता, शूक, बड़ापेट-नास
 शूसा० ना० पु० शूसा, बड़ापेट, बड़ापेट-नास

ढाक० ना० पु० पलाशकावृक्ष, सुहरत, छुपाव, गुण
 का विष उतारने में, एक प्रकारका काना ।
 ढाका० ना० पु० बंगालेका नगर विशेष ।
 ढाया० ना० पु० उदीचन्धन, दद्या ।
 ढाटी० ना० स्त्री० कसन, यन्त्रणा, फांदा जो घोंघे
 के मुखपर बांधते हैं ।
 ढाढ़स० ना० स्त्री० धीरज, सुरमापन, दिलासा,
 शान्ति, भरोसा ।
 ढाढ़िन० ना० स्त्री० ढाढ़ी की स्त्री ।
 ढाढ़ी० ना० पु० जातिविशेष जो व्रजाति और
 गति हैं ।
 ढाना० स० क्रि० गिराना, उजाड़ना ।
 ढावर० पु० मैला, गंदला ।
 ढावा० ना० पु० जाल, ओरी, ओलती ।
 ढार० ना० स्त्री० भाति, कानका गहना, विशेष ।
 ढारना० स० क्रि० ढालना ।
 ढारी० पु० भरी हुई ।
 ढारू० पु० ढालू ।
 ढाल० ना० पु० उतारू, ना० स्त्री० फरी ।
 ढालना० स० क्रि० संचि में उतारना, कभीधाना,
 विगाड़ना ।
 ढालवा० पु० उतारू, जो संचि में उताराया ।
 ढालू० पु० उतारू, बेंड़ा, विगाड़, संचिका उतार-
 रना ।
 ढाहना० स० क्रि० गिराना, उजाड़ना ।
 ढाहा० ना० पु० नदीका कराड़ा ।
 ढिग० ना० स्त्री० प्राप्त, समीप ।
 ढिठाई० ना० स्त्री० चंचलता, यस्ताहीनता ।
 ढिड़िम० ना० पु० ट्यहीरि, पवी ।
 दिवका० ना० पु० उमार, उमडा ।
 दिमदिमी० ना० स्त्री० संजरी विशेष ।
 दिहड़० } पु० आलसी, सुते ।
 दिह्वर० }
 दीठ० } पु० चंचल, निरवधि, अदब, भीतील
 दीठा० } मगर ।
 दिठोदे० पु० भीतावी वा चंचलतासे ।

दील० ना० स्त्री० आसक्त, विलम्ब, देर, धृष्ट ।
 दीलाई० ना० स्त्री० शायिलता, आसक्त ।
 दीहा० ना० पु० यीला ।
 दुकना० अ० क्रि० झुकना, शिरझुकना ।
 दुकी० ना० स्त्री० ताक ।
 दुरना० अ० क्रि० किरना, लुडकना ।
 दुलना० अ० क्रि० डलना, दरना, मरना ।
 दुलार० ना० स्त्री० उठवाने का पैसा वा काम ।
 दुलधाना० } स० क्रि० उठवाना, घलकाना ।
 दुलाना० }
 दूआ० ना० पु० तूदा, मेंद, मिट्टीका पिण्ड ।
 दूँदडाँड़० ना० पु० खोज, झाड़ी, झड़ी ।
 दूँदन० ना० पु० खोज ।
 दूँदना० स० क्रि० खोजना, तलाशकरना ।
 दूँदार० ना० पु० देराविशेष ।
 दूँदिया० ना० पु० जैन लोगों में मिलारी, उ
 दूँदनेवाला, दूँदाव ।
 दूक० ना० स्त्री० दूकी, ताक, पैद ।
 दूकना० अ० क्रि० बन्द करना, मूचना, छुपि
 पास आना, पटना ।
 दूसर० ना० पु० जातिविशेष ।
 दूकली० ना० स्त्री० कूपसे जल निकालने
 यन्त्र ।
 दूँका० ना० पु० } कुटने का यन्त्र ।
 दूँकी० ना० स्त्री० }
 दूँदस० ना० पु० तिकरीविशेष ।
 दूँडी० ना० स्त्री० पोस्ताका झूल ।
 दूँहा० ना० पु० गर्भ, गर्भता, बडपेट, खोली
 का बीच, गदरा ।
 दूँक० ना० पु० पचीविशेष ।
 दकुली० ना० स्त्री० रहट, सरली ।
 देद० ना० पु० चमारकी जातिविशेष, कौआ ।
 देदी० ना० स्त्री० कानका गहनाविशेष ।
 देर० ना० पु० रात, डाल, बहुतात ।
 देरा० ना० पु० भेगा, जिससे बांधी पड़ते हैं ।
 देरी० ना० स्त्री० बीयदेर ।

भोडिगं ना० पु० प्रेतभेद ।
 भोडीं ना० स्त्री० चोटी ।
 भोलं ना० स्त्री० कपड़ की सकोड़ वा चुन्नत, बच ।
 भोलां ना० पु० धला, अक्षीय ।
 भोलीं ना० स्त्री० धैली ।
 भौरां गु० सविला, पीला ।
 भौसनां अ० कि० बहुत जलजाना ।
 भौसां गु० जो बहुत जलजया ।
 भौड़ं ना० पु० भगड़ा ।
 भौरीं ना० स्त्री० खेतकी घास ।
 [ट]
 टकं ना० स्त्री० स्वभाव, ताक, टट्टे ।
 टकटकीं ना० स्त्री० धूर, ताक ।
 टकनां अ० कि० सिलना, सिलजाना ।
 टकरानां स० कि० टकर सिलवाना, टकर मारना, अ० कि० टटोलना ।
 टकवानां स० कि० सिलवाना, सिलाना ।
 टकसालं ना० पु० स्थान, जहाँ रुपया आदि बनाया जाता है ।
 टकसालियां } ना० पु० टकसाल का काम
 टकसालीं } करनेहारा ।
 टकां ना० पु० दो पैस ।
 टकाईं ना० स्त्री० सिलाई, कर ।
 टकीं ना० स्त्री० ताक, टुकी ।
 टकुआं ना० पु० तफला, तकुआं ।
 टकेतं } गु० धनवान, मालदार ।
 टकेतां }
 टकोरं } ना० पु० चुचकारी, चुमकारी, अति
 टकोरां } छोटा कचा, आँव, डोल बनाने की
 गति वा शब्द ।
 टकोरनां स० कि० सेंकना, ततारना ।
 टकौनां ना० पु० टका ।
 टकरं ना० स्त्री० टोकर, देखाडली, शिरसे शिर लहाना, निसे भेदे लहाने हैं ।
 टखनां ना० पु० गुल्फ, गुटना ।
 टघलनां अ० कि० पिघलना ।

टघलानां स० कि० पिघलाना ।
 टंकं ना० पु० चार मारो की तौल, लहना ।
 टंकणं ना० पु० सोहागा ।
 टंकोरं ना० स्त्री० धनुष के रोदे का शब्द ।
 टंकोरनां स० कि० धनुष की पनच भाड़ना ।
 टंगनां अ० कि० लटकना ।
 टंगड़ीं ना० स्त्री० टांग, गोंड़ ।
 टण्डं गु० सूय, कृपण ।
 टटकां गु० नया, नवीन, ना० पु० उतारा-पुतारा ।
 टटकीं ना० स्त्री० नई, नवीन, ताकी ।
 टटवानीं ना० स्त्री० छोटी घोड़ी ।
 टटियां ना० स्त्री० टट्टी, भाँप, द्वार बन्द करने की जो तुषादि की बनती है ।
 टट्टीहरां } स्त्री० पक्षीविशेष ।
 टट्टीहरीं }
 टट्टुआं ना० पु० छोटा घोड़ा ।
 टट्टरं ना० स्त्री० छोटी घोड़ी ।
 टटोलनां स० कि० टटोलाई करना, अँगुलियों से देवाना ।
 टट्टीं ना० स्त्री० चांदी, वाड़ ।
 टट्टरं } ना० पु० बड़ी टट्टी ।
 टट्टां }
 टट्टीं ना० स्त्री० टट्टिया, फराकिया ।
 टट्टू ना० पु० छोटा घोड़ा ।
 टट्टां ना० पु० बसेड़ा, लड़ाई, लटपटी ।
 टपं ना० पु० बूद फंद, बूद ।
 टपकं ना० स्त्री० पीड़ा, टपकने का शब्द ।
 टपकनां अ० कि० टपकाना, घुना, छुना, रिसना, टीसना ।
 टपकां ना० पु० पानी की बूद, फल, जो बूद से पककर गिरता है यथा आँव ।
 टपकानां स० कि० चुयाना, धाननारसाना ।

ढेला० ना० पु० मायिका बौदा ।
 ढेलाचीथ० ना० स्त्री० मादिकी चौथ ।
 ढैया० ना० स्त्री० अडेया ।
 ढैयादेकर० यु० जो उज्जयाया ।
 ढोवा० ना० पु० पत्र वा लोहारम फल वा फूल जो
 ढोटे लींग लाते है ।

ढोक० ना० स्त्री० दण्डवत्, निवास ।
 ढोकना० स० कि० गीना, धुंरना ।
 ढोका० ना० पु० पत्थर आदिका टुकड़ा, ढेर ।
 ढोटा० ना० पु० लडका ।
 ढोना० स० कि० खजाना, उठाना ।
 ढोर० ना० पु० गायगोशू ।
 ढोरा० ना० पु० तांत्रियों जो मुसलमान बनाते है ।
 ढोरी० ना० स्त्री० ढोरी चौप ।
 ढोल० ना० पु० बाना विशेष ।
 ढोलक० ना० पु० छोटा ढोल ।
 ढोलकिया० ना० पु० ढोलबजानेहारा ।
 ढोलकी० ना० स्त्री० छोटीढोल ।
 ढोलन० ना० पु० धारा, रसिया ।
 ढोलना० ना० पु० ढोल के समानपंक्ति विशेष ।
 ढोला० ना० पु० धोकरा, रागविशेष ।
 ढोलिया० } ना० पु० ढोल बजानेहारा ।
 ढोलित० }
 ढोबी० ना० स्त्री० दासी पानका परिमाण ।
 ढौचा० यु० सादेचार ।
 ढौरी० ना० स्त्री० जेरी, दहक, चौप ।

[त]

तह० अर्थ० तलक, लग, ना० स्त्री० दधि, तलक ।
 तज० अर्थ० तौभी, तथापि, तदपि ।
 तक० अर्थ० तलक, लग, ना० स्त्री० दधि, तलक,
 तराज, तलई ।
 तकतक० ना० पु० पशु आदि चलाने का शब्द ।
 तकना० स० कि० तक लगाना, अ० कि० दधि
 देना ।
 तकला० ना० पु० तुरुआ

तकली० ना० स्त्री० अटन, परेता ।
 तकचाहा० ना० पु० रबक, चौकीदार, पहरे ।
 तकाना० स० कि० दुकी लगाना, लगाना ।
 तकिया० ना० स्त्री० सिरहाने की वस्तु
 विशेष ।
 तकुआ० ना० पु० सूत कातने के लिये लोहेकी
 शलाका जो चरले में लगती है ।
 तक० ना० पु० मट्टा, छाछ ।
 तखडी० } ना० स्त्री० तुला, तराजू ।
 तखरी० }
 तखान० ना० स्त्री० बर्दा ।
 तगण० ना० पु० जिसके अन्तका अक्षर लड़होता
 है, गण विशेष ।
 तगना० स० कि० तागा डालना ।
 तगई० ना० स्त्री० सिलार, सिलारिका पैसा ।
 तगाना० स० कि० तागा डलाना, सिलाना ।
 तग्गा० ना० पु० सीते के लिये बनाया हुआ
 सूत ।
 तगडी० ना० स्त्री० करधनी ।
 तंगा० ना० पु० दो पैसा ।
 तचना० अ० कि० गर्म होना ।
 तचाना० स० कि० गर्म करना वा कराना ।
 तच्छरीर० ना० पु० उसका शरीर ।
 तज० ना० पु० औषधि, वृक्ष विशेष ।
 तजन० ना० स्त्री० धोइन, त्यागना ।
 तजना० स० कि० त्यागना, धोइना ।
 तजिय० अर्थ० धोइयते ।
 तज्जन० ना० पु० उसका मत्स्य ।
 तट० ना० पु० तीर, पास, किनारा ।
 तटस्थ० यु० तीरवासी ।
 तटिनी० ना० स्त्री० तटदी ।
 तट्टीका० ना० पु० इसका टीका ।
 तट्ट० ना० पु० पत्र ।
 तट्टक० ना० स्त्री० तट्टे देई भाकर ।
 तट्टकना० अ० कि० फटना, धुंरना ।
 तट्टका० ना० पु० प्रातःकाल, भोर ।

टपना० अ० कि० भूलना, कूदना ।

टपाना० स० कि० भुलाना, फंदवाना, फुद-
वाना ।

टपशा० ना० पु० टाकभर, डाकघर, मैदान, जहाँ
तक गोली जाती है, रागिनीविशेष ।

टभक० ना० स्त्री० जो शब्द पानी गिरने से किसी
गढ़े वा बर्तन में होता है ।

टभकना० अ० कि० चूना, टभकहोना, पोलना ।

टर० ना० स्त्री० शेखी, ऐंठ गु० भतवाला,
अचेत ।

टरटर० ना० स्त्री० बकबक ।

टरटराना० स० कि० बकबक करना ।

टरटरी० ना० स्त्री० बकबकी ।

टरना० अ० कि० डलना, टलना, हटना ।

टराना० स० कि० टलवाना, हटाना ।

टरां० गु० मगरा, दुष्ट, बषी, बलवान् ।

टराना० स० कि० बकबक करना, मगराना, ए-
ठके बात करना ।

टलजाना० } अ० कि० हटाना, जाता
टलना० } रहना ।

टलप० ना० स्त्री० टुकड़ा, छांट ।

टलमलाना० अ० कि० डगमगाना, ललवाना ।

टलाटली० ना० स्त्री० मिप, हीलावाजी ।

टलाना० स० कि० हटाना, छिपाना ।

टवगं० ना० पु० टकारादि पांचअक्षर ।

टसक० ना० स्त्री० चमक, दीप्त ।

टसकना० अ० कि० हिलना, चसकना, चटना ।

टसकाना० स० कि० हिलाना, चसकाना ।

टसना० अ० कि० मसकना, फटना ।

टहक० ना० स्त्री० गांठकी पीड़ा ।

टहकना० अ० कि० डुलना, पीड़ापाना ।

टहटह० } ना० पु० छुदरता, नवीन ।

टहटहा० }
टहना० ना० पु० शाखा, डाल ।

टहनी० ना० स्त्री० शाखा वाली ।

टहल० ना० स्त्री० गृहरथी, सेवा, काम ।

टहलना० स० कि० हवाखाना, बाहर फिरना ।

टहलनी० ना० स्त्री० गृहरथिनी, दासी, लोड़ी ।

टहलाना० स० कि० चलाना, फिराना, हवा-
खिलाना ।

टहलुआ० ना० पु० सेवक, दास, परिश्रमी ।

टहलुई० ना० स्त्री० दासी, लोड़ी ।

टहो० ना० पु० जन्मते पुत्रका शब्द ।

टहोका० ना० पु० धूसा, चपेटा ।

टांक० ना० पु० टंक ।

टांकना० स० कि० सीवना, लिखना ।

टांका० ना० पु० लपकी, तपची, साठन, जोड़न

टांकी० ना० स्त्री० चट, लसरा, कुदरा, कुल्हाड़ी

टांकू० गु० टांकेहार ।

टांग० ना० स्त्री० ऐंहीसे घुटने तक का नाम

लटकवा ।

टांगन० ना० पु० पहाड़ी पीड़ाविशेष ।

टांगना० स० कि० लटकाना, हिलगाना ।

टांगी० ना० स्त्री० टांकी ।

टांच० } गु० हठीला, टेढ़, कुजाति, कुजड़ा

टांचहा० }
टांट० ना० स्त्री० चांदी ।

टांटा० गु० पीदा, कड़ा, ठोस, कम ।

टांठाई० ना० स्त्री० पीदाई, कड़ाई ।

टांड० ना० पु० मचान ।

टांडा० ना० पु० खप, मनिजार की वस्तु ।

टाट० ना० पु० सनका विनाहुआ विधान

अजाइ ।

टाटक० गु० टटका ।

टाटा० ना० पु० टांटा, बड़ी टट्टी ।

टाटी० ना० स्त्री० टट्टी ।

टाड़ी० ना० स्त्री० छोटी कुल्हाड़ी ।

टानना० स० कि० तानना, खंचना ।

टाप० ना० स्त्री० पीड़े के खुरका शब्द, जो
की अगले खुरोंकी मार ।

टापना० अ० कि० टापमाना, हूदना ।

तडके० अर्थ० संवेदना ।
 तडतडाना० अ० क्रि० रिसाना, निरभिराना,
 फटने का शब्द ।
 तडप० ना० स्त्री० चटक, झपट, उच्चक, उ-
 तावली ।
 तडपना० अ० क्रि० तलफाना, धड़कना, खुदे-
 कना, फटफटाना, हाथ पांव पटकना ।
 तडपाना० स० क्रि० तलपाना, धड़काना ।
 तडपीला० अ० पु० फुर्तीला, चटपटिया ।
 तडफ० ना० स्त्री० व्याकुलता, धड़क ।
 तडफडाना० अ० क्रि० धड़कना, घबराना ।
 तडफडाहट० ना० स्त्री० व्याकुलता, घबराहट ।
 तडफना० अ० क्रि० व्याकुल होना, फटफटाना ।
 तडफाना० स० क्रि० तडपाना ।
 तडा० ना० पु० टापू, द्वीप ।
 तडाक० अ० भड़कीला, चमकीला ।
 तडाका० ना० पु० मारेना का शब्द, चटाका ।
 तडाग० ना० पु० तालाब, पोखरा ।
 तडाडा० ना० पु० जलकी धारा, तरङ्ग ।
 तडाया० ना० पु० चटक, धड़क ।
 तडावा० ना० पु० दूहा, घनाव ।
 तडित् ना० स्त्री० विजली ।
 तडित्वान् ना० पु० मेघ ।
 तड्डल० ना० पु० तड्डल, चांबल ।
 तत् अर्थ० वहः सो, तीन, समूह-ना० पु०
 ईश्वर ।
 तताना० स० क्रि० गर्म, करना ।
 ततेडा० ना० पु० पानी, गर्म करने का पात्र
 विशेष ।
 तत्कन्द० ना० पु० अदरक, यंत्राहिकन्द ।
 तत्काल० अर्थ० उसी समय ।
 तत्कार्य० ना० पु० उसी उसी काम में ।
 तत्ता० अ० पु० गर्म, ज्वलित, क्रोधी ।
 तत्पर० अ० आसक्त, जंबुद, निपुण, समेत ।
 तत्फल० ना० पु० पीछे वृत्त, भगमीपरि, ज्ञान
 वृत्त, उसका फल ।

तत्त्व० ना० पु० सार, प्रकृति, यथार्थ, मूल, सत-
 भाव जो किसी से बना नहो ।
 तत्त्ववल्का० ना० स्त्री० मुरहरी ।
 तत्त्वज्ञ० अ० मनुष्यादि जो बोलसके, बातके
 तत्त्व वस्तु जाननेहारा, यथा ब्रह्मवेत्ता ।
 तत्त्वज्ञान० ना० पु० ब्रह्मज्ञान, अर्थात्मज्ञान ।
 तत्क्षण० अर्थ० उसीसमय, तुरन्त, उद्योग ।
 तत्र० अर्थ० तहां ।
 तथा० अर्थ० तिसी प्रकार, तैसा, वैसाही ।
 तथाच० अर्थ० जैसे, इनांचिः ।
 तथापि० अर्थ० तौभी ।
 तद् अर्थ० तब तिससमय ।
 तदनन्तर० अर्थ० तिसके पीछे ।
 तदनु० अर्थ० तेहि अइसार, तिसपीछे ।
 तदा० अर्थ० तब, तहां ।
 तदपि० अर्थ० तौभी ।
 तद्गत० अ० उस में गयाहुया ।
 तद्गति० ना० स्त्री० उसकी दशा, उसकी प्राय
 तद्गुणविशिष्ट० अ० वहगुण जिसमें है ।
 तद्द्वि० ना० पु० उसके यज्ञका हेतु ।
 तद्भय० ना० पु० उसके डर ।
 तद्भावबोधक० अ० उसभावका बोधक ।
 तद्धी० अर्थ० तिसी समय, तभी ।
 तन० ना० पु० शरीर, देह, पुत्र, और विस्तार ।
 तनक० अ० थोड़ा, अल्प ।
 तनय० ना० पु० पुत्र, लड़का, सुत ।
 तनया० ना० स्त्री० पुत्री, कन्या, सुता ।
 तनापा० ना० पु० जवानी, तरुण्य ।
 तनी० ना० स्त्री० अंगरख का बन्धन, तनया ।
 तनु० ना० पु० शरीर, देह ।
 तनुक० अ० थोड़ा, अल्प ।
 तनुजा० ना० स्त्री० तनया, पुत्री ।
 तनुत्राण० ना० पु० बख्तर, कवच ।
 तनुदरी० ना० स्त्री० स्त्री, नारी, अबला ।

तनूच्छ० ना० पु० शरीर के बाल ।
 तनोति० अ० कि० विस्तारकर ।
 तन्त० ना० पु० तार, सुत, मिडि, तुरन्त, सन्तान,
 औषधि, तदनीर ।
 तन्तनाना० अ० कि० पिनपिनाना, मधाना ।
 तन्तनाहट० ना० स्त्री० नमचाहट, जलन से जो
 पीदा ।
 तन्तु० ना० पु० सूत, तार ।
 तन्तुना० ना० पु० ततुना, तार ।
 तन्त्र० ना० पु० ताटका, लटका, शास्त्रोक्त मन्त्र
 शिष्यकृत ग्रन्थ विशेष, वीणा ।
 तन्त्री० शु० तन्त्रका करनेवाला, गानेवाला ।
 तन्त्रीनाद० ना० पु० वीणाका शब्द ।
 तन्द्रा० ना० स्त्री० यकई, अम, मून्धी ।
 तन्द्री० ना० स्त्री० भौह, झुकुटी ।
 तन्दुल० ना० पु० चावल ।
 तन्ना० अ० कि० लिचना, फलना ।
 तन्नाना० अ० कि० पिनपिनाना, कथितहोना ।
 तन्नेत्र० ना० पु० उसकी आंखि ।
 तन्मय० शु० उसमें भराहुआ ।
 तन्मात्र० अन्व० केवल, वह ।
 तन० ना० स्त्री० ताप, उष्ण, ना० पु० तपस्या
 मायका महीना ।
 तपत० ना० स्त्री० उष्ण, शु० गर्म, तत्ता ।
 तपन० ना० पु० उष्ण, ज्वलन, सूर्य, और भि-
 लावागृह ।
 तपना० अ० कि० ऐश्वर्यवान् होना, उष्णहोना,
 अतितेजयुतहोना ।
 तपनीय० ना० पु० सूर्य ।
 तपलोक० ना० पु० स्वर्गविशेष, लोक विशेष ।
 तपसी० ना० पु० तपस्वी ।
 तपस्य० ना० पु० फागुनमास, यथा मधुस्तथा
 माघ सप्तक च शुक्रःशुचिश्चाधनभो नभस्यौ
 तथेपु ऊञ्जेश्च सिंहस्सहस्यौ तपस्तपस्याविति
 तेकमेण १ ।
 तपस्या० ना० स्त्री० तप, योग, ईश्वरभजन ।

तपस्विनी० ना० स्त्री० तपस्या करनेहारी स्त्री ।
 तपस्वी० ना० पु० तपस्या करनेहारा योगी ।
 तपा० ना० पु० अचक, योगी, जोगी ।
 तपाना० स० कि० गर्म करना तताना, धरपना ।
 तपास० ना० स्त्री० किरण, धूप, परिश्रम दीह
 धूप ।
 तपिच्छु० ना० पु० तापिच्छ, तमाल वृक्ष ।
 तपी० ना० पु० तपा, मुनि ।
 तपेश्वर० }
 तपेश्वरी० } ना० पु० तपी, मुनि ।
 तपोधन० }
 तपोधना० ना० स्त्री० मुण्डी, और तपोधन की
 स्त्री, तपेश्वरिन स्त्री ।
 तपोमय० शु० तपस्यायुक्त ।
 तप्त० शु० तत्ता, गरम, तपत ।
 तप्तांग० ना० पु० ज्वर विशेष, देहगरम ।
 तप्य० अन्व० तिससमय ।
 तयो० }
 तभी० } अन्व० तिसीसमय ।
 तम० } ना० पु० अन्धकारका गुण; अंधेरा तमो-
 तमः } गुण, राहुमह, क्रोध, अज्ञान, अति, प-
 दांत में बहुतातका बोधक ।
 तमक० ना० स्त्री० गर्व, घमण्ड, मुखका लाल
 होना, झुन्हाहट, दर्द ।
 तमकना० स० कि० मुखलाल होना, दहकना,
 दगदगाना, निष्कारणक्रोध ।
 तमका० ना० पु० धूपकीमार, बहुतगर्मा ।
 तमचुर० ना० पु० कुक्कुट, सुरगा ।
 तमतमाना० अ० कि० मुल में लाली होना,
 दगदगाना ।
 तमस० ना० पु० तम, मनु विशेष ।
 तमस्विनी० ना० स्त्री० राति, रैन ।
 तमारि० ना० पु० सूर्य ।
 तमाल ना० पु० वृक्ष विशेष, तिलक जो च-
 न्दन से बनाते हैं ।

अपित० गु० हर्षित, धीरजवान् ।
 अहि० सर्व० तुम्हका ।
 अश्व० तप, तो ।
 अस्ना० अ० क्रि० धूपके कारणः से-शिभिर्ज्ञ
 होना ।
 अल० ना० पु० जाल, परिमाण की किया ।
 अलना० स० क्रि० जोखना, परिमाण करना ।
 अलवार० } ना० स्त्री० तौलने का काम या
 अलवार० } पैसा ।
 अलाना० स० क्रि० जोखवाना ।
 अलिया० } ना० स्त्री० पात्रविशेष ।
 अली० }
 अही० अर्थ० अमी ।
 अहू० अर्थ० तथापि ।
 अहू० गु० जिसकी त्यागदिया ।
 अग० ना० गु० छुड़ाव, वैराग्य ।
 अगन० ना० पु० तजन, विराग, छोड़ने ।
 अगना० स० क्रि० छोड़ना, तजना ।
 अगो० गु० वैरागी, छोड़ेहुये ।
 अग्य० गु० जो त्यागने के योग्य है ।
 अयो० अर्थ० तेसे, इस प्रकार, एकही समय में ।
 अयोधा० गु० बुधता ।
 अयोनार० ना० स्त्री० चतुराई, चालाकी ।
 अयोनारी० ना० स्त्री० स्त्री जो अपना काम, वही
 चतुरता से स्वस्थ बनाती है ।
 अयोरुस० ना० पु० दो वर्ष पहिले ।
 अयोरु० ना० स्त्री० मध्ये की सकोड़, घुमनी ।
 अयोरुचदाना० अ० क्रि० क्रोधित होना ।
 अयोहार० ना० पु० पर्व, पवनी, आनन्दकादिगु ।
 अत्रपा० ना० स्त्री० लाज, हया ।
 अत्रय० गु० त्रि, ३ ।
 अत्रयईया० ना० स्त्री० तीन, ईया अर्थात् पुत्र,
 सम्पत्ति, पत्नी ।
 अत्रयगंगा० ना० स्त्री० तीनगंगा अर्थात् मंदाकिनी,
 भागीरथी, प्रभावती ।

अत्रयताप० ना० स्त्री० तीनताप अर्थात् दैहिक,
 दैविक, भौतिक ।
 अत्रयपाचक० ना० पु० तीन अग्नि अर्थात् आह-
 वनीय, दक्षिणाग्नि, गार्हपत्य अथवा जठरानल,
 दाधानल, बद्धवानल ।
 अत्रयरेखा० ना० स्त्री० तीनरेखा अर्थात् त्रि-
 चादि, तीन लकीर ।
 अत्रयरोग० ना० पु० तीन रोग अर्थात् मान,
 पित्त, कफ ।
 अत्रयतनु० ना० पु० सूर्य ।
 अत्रयोदृशी० ना० स्त्री० तेरस ।
 अत्रयम्बक० ना० पु० श्रीशिवजी ।
 अत्रसित० गु० डरता हुआ, भयवान् ।
 अत्रस्त० गु० वायर, डरपोक, नामर्द ।
 अत्राण० ना० पु० रक्षा, निस्तार, उद्धार ।
 अत्राणकर्त्ता० गु० रक्षक ।
 अत्राणी० गु० आणकर्त्ता, रक्षक ।
 अत्रात० गु० वचायागया, रक्षित ।
 अत्राता० रक्षक, पालक ।
 अत्रास० ना० पु० भय, डर ।
 अत्रासक० गु० भयदायक, डरलदाना ।
 अत्रासा० } गु० भयवान्, डराहुआ ।
 अत्रासित० }
 अत्राह० } अर्थ० दया चाहने का शब्द, परचा-
 अत्राहि० } ताप का शब्द ।
 अत्रि० गु० तीन, ३ परंतु यह शब्द विशेष के
 आगे योगहोता है यथा, त्रिभुवन, त्रिपुर ।
 अत्रिश० गु० तीसवां ३० ।
 अत्रिशति० गु० तीस, ३० ।
 अत्रिक० } ना० पु० गोखर ।
 अत्रिकटु० }
 अत्रिकाल० ना० पु० तीनकाल अर्थात् भूत, भवि-
 य, वर्तमान अथवा प्रातःकाल, मध्याह्न, मय्या
 अत्रिकुट० ना० पु० मिठाई ।
 अत्रिकुटां० ना० पु० सौंड, मिरच, पांपर ।
 अत्रिकुटं० ना० पु० पर्वत विशेष जिसपर लकड़ें ।

तमालपत्र० ना० पु० तमाकू ।
 तमिस्र० ना० पु० तम, अन्धकार ।
 तमी० ना० स्त्री० रात, निशा ।
 तमीचर० ना० पु० निशाचर, चोर, उल्लू,
 चमगौदड़ ।
 तमोगुण० ना० पु० मनोवृत्ति विशेष वा दोष
 जिससे काम क्रोधादि उपजते हैं ।
 तमोल० ना० पु० ताम्बूल, पान ।
 तमोलिन० ना० स्त्री० तमोली की स्त्री ।
 तमोली० ना० पु० जाति विशेष, जो पान
 बेचते हैं ।
 तम्बू० ना० पु० रावटी, पाल, कपड़े का कोटा ।
 तम्बूल० ना० पु० ताम्बूल ।
 तम्बेरम० ना० पु० तम्बेरम, हाथी ।
 तर० अव्य० तल, पदान्त में अधिकता का चिह्न,
 बहुतात का सूचक ।
 तरई० ना० स्त्री० तारा, नक्षत्र ।
 तरकारी० ना० स्त्री० भार्जी ।
 तरंग० ना० पु० लहर, उमंग, ललक ।
 तरंगिनी० } ना० स्त्री० नदी ।
 तरंगिनी० }
 तरंगी० ना० पु० बहुरंगी, लहरी ।
 तरण० ना० पु० मुक्तिमय, पारहोना, उद्धार ।
 होना ।
 तरणि० ना० पु० सुरज, नाव ।
 तरणी० ना० स्त्री० नाव, तरनी ।
 तरन० ना० पु० तरण ।
 तरफना० अ० क्रि० तड़कवाना ।
 तरवृज्ज० ना० पु० हिन्दवाना, फल विशेष ।
 तरल० अ० चञ्चल, तीव्र आँखा, ना० पु० धारा
 बृत्त ।
 तरलता० ना० स्त्री० चञ्चलता, तेजी ।
 तरला० ना० पु० नास विशेष, अ० जो सम से
 नीचला वा दूसरे से नीचला ।
 तरलाई० ना० स्त्री० तरलता ।
 तरेव० ना० पु० वृत्त ।

तरघर० ना० पु० बड़ा वृक्ष ।
 तरस० ना० पु० शीघ्र, जल्दी, शालिच, दया,
 कृपा, कल्क ।
 तरसना० अ० क्रि० जी लगाकर रहना, लतचा-
 ना, दयालुहोना, परीजना ।
 तराई० ना० स्त्री० दलदल, चराश्रो, नीचान ।
 तरान्० ना० पु० उगाही, प्राप्त ।
 तराना० स० क्रि० पारकराना, पेराना, बचाना ।
 तरि० } ना० स्त्री० नाव, नौका ।
 तरी० }
 तरीन० ना० स्त्री० तरीका बहुवचन, नावें ।
 तरु० ना० पु० वृक्ष ।
 तरुण० अ० युवा, जवान ।
 तरुणता० } ना० स्त्री० यौवन, किशोर,
 तरुणाई० } जवानी ।
 तरुणी० ना० स्त्री० युवती, जवान स्त्री ।
 तरेडा० ना० पु० टेंटी से पानी का गिरना ।
 तरया० ना० पु० तारागण, तारा, कविवाक्ये
 यथा (दोहा - यथा तरेया प्रातः के सत्र नृपमये
 उदास, लखिदिनमाषि कर राम धवि सङ्गाना
 बहुआस) ।
 तरोस० ना० पु० किनारा, बिहारीलाल सप्त-
 शतिकायां (श्यामसरति करि राधिका तर्कति
 तरणिजातीर, अशुनकरत तरोस को सितक स-
 रौहीनीर) ।
 तरौना० ना० पु० कर्ष भूषण विशेष, बिहारीलाल
 सप्तशतिकायां (लसत श्वेत सारी टप्यो ताल
 तरौनाकान, पखो मनौ सरसरि सलिल रविप्रति
 विम्ब बिहान) ।
 तर्क० ना० स्त्री० बुद्धिसे विवेचना, अत्रमानौक्ति
 न्यायशास्त्र, दलील ।
 तर्कण० ना० पु० कूदन, नई बात बताना, शङ्का
 करना ।
 तर्कित० अ० शङ्कित, लेपित, तर्क कियाया ।
 तर्की० ना० स्त्री० तरपतिया, ताड़पत्र रचित
 कानका भूषण विशेष ।

त्रिकोण० ना० पु० तीनकोन, तीनकोनेवाला
सिंघाड़ा ।

त्रिगुण० ना० पु० तीनवेर, तीनगुण अर्थात् सा-
त्विक, रजस, तामस ।

त्रिजग० ना० पु० तीनलोक, तिर्यग् ।

त्रिजगयोनि० ना० पु० पशु पक्षी आदि ।

त्रिज्वा० ना० स्त्री० व्यासार्द्ध, आधाविस्तार ।

त्रिदन्ता० ना० पु० महामेदा ।

त्रिदश० ना० पु० देवता, गु० तेरह, १३ ।

त्रिदशकश्यपस्त्री० ना० स्त्री० तेरहकश्यप की
स्त्री, अर्थात् दिति, अदिति, कद्रु, विन्ता, श्रीवा-
मा, भानुयोगेश्वरी, श्रोणतिलका, पत्नेत्रिका,
पवनवती, मेधावती, कतकदेश्या, बन्ध्या, क-
नकमाला । १३ ।

त्रिदोष० ना० पु० तीनदोष अर्थात् कफ, वात
और पित्त ।

त्रिदशालय० ना० पु० स्वर्ग ।

त्रिदिव० ना० पु० स्वर्ग ।

त्रिधा० गु० तीनठाम, तीनप्रकार ।

त्रिध्वनि० ना० स्त्री० तीनध्वनि अर्थात् मधुर,
मंद, गर्भीर ।

त्रिनयन० } ना० पु० श्रीसदाशिव ।
त्रिनेत्र० }

त्रिनेत्रा० ना० स्त्री० भवानी विशेष ।

त्रिपथगा० ना० स्त्री० श्रीगंगाजी ।

त्रिपद्० ना० पु० } तिपाई ।
त्रिपदी० ना० स्त्री० }

त्रिपर्णा० ना० स्त्री० शालपर्णी ।

त्रिपादिका० ना० स्त्री० हंसपादी ।

त्रिपु० ना० पु० मोसा, धातु विशेष ।

त्रिपुंसी० ना० स्त्री० इन्द्रवारुणी ।

त्रिपुटा० ना० स्त्री० हंसपादी ।

त्रिपुटी० ना० स्त्री० नितांत ।

त्रिपुराङ्ग० ना० पु० शाकामतका तिलक जो आका
होता है, वैष्णवमतका तिलक जो ठाड़ा होता है ।

त्रिपुर० ना० पु० त्रिलोक, देवविशेष ।

त्रिपुरारि० ना० पु० श्रीमहादेव जी ।

त्रिपुस० ना० पु० खोरा ।

त्रिपौलिया० ना० पु० तीन द्वारका मणि ।

त्रिफल० ना० पु० तीनफल अर्थात् शोणक,
हड़, बहेड़ा ।

त्रिभंगा० गु० तिरछा खड़ाहाना ।

त्रिभंगी० ना० पु० छन्द विशेष, श्रीकृष्णचन्द्रके
का एक नाम ।

त्रिभुज० गु० तीन भुजाका, त्रिकोना ।

त्रिभुवन० ना० पु० तीन लोक अर्थात् स्वर्ग,
मर्त्य, पाताल ।

त्रिमुहानी० ना० स्त्री० त्रिवेणी ।

त्रिय० } ना० स्त्री० अबला, पत्नी, नारी ।
त्रिया० }

त्रिलोक० ना० पु० त्रिभुवन, और ऊर्ध्व मण्ड-
पथः वा उत्तम मध्यम और नीच ।

त्रिलोकी० ना० पु० तीनलोकका सङ्घटन ।

त्रिलोह० ना० पु० पीतल ।

त्रिशंकु० ना० पु० राजा विशेष ।

त्रिशूल० ना० पु० महादेवका अस्त्र विशेष ।

त्रिसन्ध्या० ना० स्त्री० तीन सन्ध्या अर्थात्
प्रातःकाल, मध्याह्न, सन्ध्या ।

त्रिसन्ध्यास्वरूप० ना० पु० रक्त, शुक्ल, श्याम ।

त्रिस्रोता० } ना० स्त्री० श्रीगंगाजी ।
त्रिस्रोता० }

शुटि० ना० स्त्री० टूट, न्यूनता ।

श्रेता० ना० पु० युग विशेष ।

श्रेराशिक० गु० तीनराशि का गणित ।

श्रोटक० ना० पु० छन्द विशेष ।

श्रोण० ना० पु० तूण, तरकरा ।

त्वं० सर्व० नू ।

त्वक्० ना० स्त्री० छाल, स्पर्शन्द्रिय, सास ।

त्वचा० ना० स्त्री० छिलका, बकला, सास ।

त्वची० ना० पु० नांस, गु० त्वचाधारी ।

त्वदंघ्रि० ना० पु० तुम्हारे चरण ।

तकुल० ना० पु० ताड़का फल ।
 तर्का० ग्र० धारा जो बहुत शीघ्र बहती है ।
 तर्जना० ना० पु० कोप ।
 तर्जना० अ० क्रि० कोपकरना, कूदना ।
 तर्जनी० ना० स्त्री० अंगुष्ठके पासकी अंगुली ।
 तर्कयना० य० जो बहुत धिकना गालादि से जो
 टपकता है, अ० क्रि० सचाय भरना, गलफटा
 भी करना ।
 तर्तराहट० ना० स्त्री० सचाय, गीदड़भबकी,
 गलफटाकी ।
 तर्पण० ना० पु० शिवादिके निमित्त जलदानदिना,
 मंगल, हुलास ।
 तर्पना० अ० क्रि० बड़बड़ाना, खुनसाना, कुड़-
 कुड़ाना ।
 तर्परा० ना० पु० शीमता ।
 तर्परिया० ना० पु० स्रग्, तलवार बाधने-
 हारा ।
 तर्सा० ना० स्त्री० दया, कृपा, रहम ।
 तर्सा० अ० क्रि० परसा के अंगे का दिन ।
 तल० ना० पु० अधोभाग, पाताल विशेष, दृष्टि ।
 तलक० अ० क्रि० तक, लग ।
 तलछट० ना० स्त्री० निचोड़, मेल, खुद ।
 तलतलाना० स० क्रि० हिलाना ।
 तलना० स० क्रि० धी ज्ञा तलमें भुनाना ।
 तलपट० य० मलमट, चौपाट ।
 तलफना० अ० क्रि० तरफना ।
 तलमलाना० अ० क्रि० ललचाना ।
 तलवरिया० ना० पु० तर्वरिया ।
 तलवार० ना० पु० स्रग्, तरवार ।
 तला० ना० पु० पैदा, धाई, जतीके नीचे का
 भाग, पक्ष, देवता ।
 तलातल० ना० पु० पाताल विशेष ।
 तला० ना० स्त्री० तला, युफनी, निस्पर्सी ।
 तला० ना० पु० पाँच के नीचे का भाग ।
 तला० ना० पु० पाँच के नीचे का भाग ।
 तले० अ० क्रि० नीचे ।

तलया० ना० स्त्री० छोटातालवा ।
 तल्प० ना० स्त्री० शय्या, सेज, विस्तर ।
 तल्लाला० ना० स्त्री० उसकी लीला ।
 तवर्ग० ना० पु० तरादि पाँच अक्षर ।
 तवलकार० ना० पु० लकार तरालिखाइया ।
 तपना० स० क्रि० भागदेना, बांटना ।
 तथित० य० मानित, मायागया ।
 तसला० ना० पु० खानापकनिकापात्र विशेष ।
 तस्कर० ना० पु० चोर ।
 तस्करता० ना० स्त्री० }
 तस्करत्व० ना० पु० } चोरी ।
 तस्करी० ना० स्त्री० }
 तस्मिन्० सर्व० तौनिमें, उसमें ।
 तस्य० सर्व० उसका ।
 तस्व० ना० पु० माप विशेष, फारसी शब्द है ।
 तर्षा० अ० क्रि० तिसस्थान, उस जगह ।
 तर्ष्या० य० पहिले ।
 तर्षी० अ० क्रि० तिसी वा उस स्थान ।
 तत्क० ना० पु० मुख्यताप ।
 तत्त० य० ज्ञाता, ज्ञानी, स्वरूप जाना ।
 ता० सर्व० उसको ।
 ताशत ना० पु० यन्त्र, गण्डा ।
 ताई० ना० स्त्री० चाची ।
 ताऊ० ना० पु० बड़ा चचा ।
 तांगा० ना० पु० गाड़ी विशेष जो सनी
 नहीं है ।
 तांत० ना० स्त्री० चमड़े की रस्ती ।
 तांतयांधना० स० क्रि० नका का उपाना ।
 तांता० ना० पु० पाँति, पंक्ति, तार ।
 तांती० ना० पु० धुनिया, विहना, पटकार ।
 तांवडा० ना० पु० ताँवेका वर्षा, माणिक्य के
 समान शूद्रापथर ।
 तांथा० ना० पु० भात विशेष ।
 ताक० ना० पु० दृष्टि, डकी ।
 ताकना० स० क्रि० देखना, अंकन, धरना ।
 ताकयाक० ना० स्त्री० टीक समय, दृष्टिलगना ।

वदीय० सर्व० तुम्हारी, रामायण यथा (ज-
दीयभक्तिसंयुतं) ।

वरा० ना० स्त्री० उतावली ।

[थ]

थई० ना० स्त्री० वश्रादि का देर ।

थंय०
थंया० } ना० पु० स्तम्भ, धूनी, स्तम्भ ।
थंभ०

थंमना० थ० कि० ठहरना, रुकना, संभलना ।

थक० ना० पु० थका ।

थकथक० गु० लथपथ ।

थकना० थ० कि० मॉदा होना, हारना ।

थका० गु० मॉदा, हारा ।

थकाना० स० कि० मॉदा करना, हराना ।

थकित० गु० थका, जो रुक गया, अचम्भित ।

थका० ना० पु० चकान ।

थन० ना० पु० गौ आदि का रतन ।

थनी० ना० स्त्री० घोड़े का दोप विशेष ।

थनैला० ना० पु० थनका रोगविशेष ।

थनेसरी० ना० पु० कुतूहल के आसण ।

थपक० ना० पु० थाप ।

थपड़ा० ना० पु० थप्पड़, चपेटा ।

थपड़ी० ना० स्त्री० ताली ।

थपना० स० कि० स्थापना, बैठाना, थ० कि०
स्थापित होना, बैठजाना ।

थपा० गु० स्थापित, बैठयाहुथा ।

थपाना० स० कि० स्थापित करना, बैठाना ।

थपेड़ा० } ना० पु० चपेटा ।
थपेड़०

थमना० थ० कि० रुकना ।

थम्यना० } थ० कि० रुकना ।
थंमना०

थर० ना० पु० सिंह, और शेरका खोह ।

थरथर० गु० कम्पा ।

थरथराना० थ० कि० कांपना, कम्पाना ।

थरथराहट० } ना० स्त्री० कपकपी, कम्पाहट ।
थरथरी०

थरहरना० } थ० कि० कांपना, कम्पना,
थरहराना० } हलहलाना ।
थरीना०

थल० ना० पु० भूमि, स्थल ।

थलकना० थ० कि० थडकना, तलपना ।

थलथलकरना० } थ० कि० हिलना, यथा
थलथलाना० } स्थूल मनुष्य का मास हि-
लता है ।

थलचर० } गु० मनुष्यादि ।
थलचारी०

थलिया० ना० स्त्री० भोजन करनेका पीतलादि
का पात्र ।

थली० ना० स्त्री० घर, पांडुर ।

थवई० ना० पु० राज, मीमार, घरकारी ।

थहराना० थ० कि० कांपना ।

थांग० ना० स्त्री० चोरों की मॉदि ।

थांगी० ना० पु० चोर, धनिक ।

थांम० ना० पु० स्तम्भ ।

थांमना० स० कि० टेकना, आइना, अटकाना,
रोकना, सहायता करना ।

थांचला० ना० पु० वृष आदि का थाला ।

थाकना० थ० कि० थकना ।

थाका० गु० थका ।

थाती० } ना० स्त्री० धरोहर, अमानत, सीपा ।
थाथी०

थान० ना० सारा कपडा, अर्थादि के रहने का
स्थान, मुद्रा, कल, मकान, ठिकाना ।

थाना० ना० पु० रत्नों का स्थान, बाँसों का देर ।

थानी० ना० पु० स्थान का स्वामी, यागी ।

थाप० ना० स्त्री० धौल, थप्पड़, पशु का पांव,
मर्याद, बैठक ।

थापना० स० कि० थोपना, धौलियाना, ना०
पु० व्यवहारविशेष स्थापन करना ।

ताग० ना० पु० सूत, धागा ।
 तागना० स० कि० सीवना, सूत डालना ।
 तागा० ना० पु० सूत, धागा ।
 ताजक० ना० पु० व्योतिष का ग्रन्थ विशेष ।
 ताजन० ना० पु० कोड़ा ।
 ताटंक० ना० पु० कर्णभूषण विशेष ।
 ताड़० ना० पु० वृक्ष विशेष, ना० स्त्री० पदि-
 चान ।

ताड़क० ना० पु० ताड़, ताड़ने हारा ।
 ताड़न० ना० पु० फिड़की, दंड, डंड ।
 ताड़ना० स० कि० पदिचानना, वृक्षना, अष्टकल-
 ना, दण्डदेना, मारना ।

ताड़नीय० गु० ताड़ना करने के योग्य ।
 ताड़का० ना० स्त्री० सुबाहुकी माता, राखी ।
 ताड़ित० गु० ताड़न दियागया, मारागया ।
 ताड़ी० ना० स्त्री० ताड़कारस ।
 ताण्डव० ना० पु० ताण्डव, नृत्यविशेष ।
 तात० ना० पु० पिता, गुरु, मित्र, पुत्र, भाई, शत्रु,
 सेवकादिका बोधक, गु० तत्ता, गरम,
 उष्ण ।

तातनी० } सर्व्व० उसकी, उसका ।
 तातनो० }
 तातें० } सर्व्व० तिससे, उससे, तिसकारण ।
 ताते० }
 तात्कालिक० गु० उसी समयका ।
 तात्पर्य्य० ना० पु० अभिप्राय, प्रयोजन, मतलब
 हासिल ।

तादात्म्य० ना० स्त्री० तत्स्वरूपता ।
 तादस० गु० वैसाही ।
 तान० ना० स्त्री० रागका जो उच्चारण, स्वर ।
 तानसेन० ना० पु० रागी विशेष ।
 ताना० ना० पु० ब्रह्मका लम्बावृत्त ।
 तानी० गु० रागी, भवैया, ना० स्त्री० तानी ।
 तांत्रिक० ना० पु० सिद्धान्तका ज्ञानने हारा ।
 विद्वान्, तन्त्रशास्त्रज्ञ ।
 तान्ना० स० कि० कंसना, खोचना, फैलाना ।

ताप० ना० स्त्री० उष्णता, तप, च्वर, मनका दुःख
 दण्ड ।

तापती० ना० स्त्री० नदी विशेष ।
 तापना० स० कि० थोच लेना, धमाना ।
 तापस० ना० पु० तपस्वी, शान्त ।
 तापिच्छ० } ना० पु० तंदुवा वृक्ष, तमाल ।
 तापिस्त० }
 तापी० ना० स्त्री० नदी विशेष जो विन्ध्य
 दक्षिण ओर है ।

तापीय० ना० पु० सोनामक्खी ।
 तापूस० ना० पु० तमालपत्र ।
 ताप्य० ना० पु० सोनामक्खी ।
 ताफता० ना० पु० रेशमी, कपड़ा जिसका धू-
 छाई कहते हैं ।

तामचीनी० ना० स्त्री० तांबा जिसमें और धातु
 भी जड़ाहोवे ।

तामड़ा० ना० पु० तांबेके रंगकी मणि ।
 तामपुष्प० ना० पु० कुन्भी ।
 तामरस० ना० पु० कमल ।
 तामल० ना० पु० देशविशेष ।
 तामलकी० ना० स्त्री० भूय रा ।
 तामस० ना० पु० तमोगुणका कार्य, काम, कौष ।

तामसिक० } गु० तमोगुण युक्त, कौषी ।
 तामसी० }
 तामसी० ना० स्त्री० रात, कौषी ।
 तामह० सर्व्व० उसमें ।
 तामा० ना० पु० तांबा ।

तामिली० ना० स्त्री० भाषा विशेष ।
 तामेश्वर० ना० पु० तांबेकी बंग ।
 ताम्बूल० ना० पु० पान ।
 ताम्र० ना० पु० तांबा ।
 ताम्रचूड़० ना० पु० मुरगा, करौदा ।
 ताम्रवर्ण० ना० पु० हरिन, तांबेकारंग ।
 ताम्रवल्ली० ना० स्त्री० मँजीठ ।
 ताम्रसार० ना० पु० लालचन्दन ।

थापा० ना० पु० पशुके पांवका निह, थपा ।
थापित० गु० बैठायागया, स्थापित, नियत भया,
मुकरर हुआ ।

थापी० ना० स्त्री० थापने का शब्द, क्रांतीवस्तु
विशेष जिससे छत पीटते हैं ।

थाम० ना० पु० धम्म, धूनी ।

थामना० स० क्रि० रोकना, पकड़ना ।

थार० } ना० पु० बड़ी धाली ।
थाल० }

थाला० ना० पु० धांवला, धाल ।

थाली० ना० स्त्री० भोजन करने का पात्रविशेष ।

थावर० ना० पु० स्थावर, वृक्षादि, अचल ।

थाह० ना० स्त्री० नदी की तली, नदी में वह
स्थान जहां पैदल उतर जावे ।

थाहा० ना० पु० नदीका स्थान जो गहिरा न हो ।

थाही० ना० स्त्री० थाहपना गु० जो गहरी न हो ।

थिति० ना० स्त्री० स्थिति, थिरता, पालन ।

थिर० गु० स्थिर, अचल, कयम ।

थिरकना० अ० क्रि० चमत्कार करके नाचना ।

थिरकाना० स० क्रि० चमत्कार से नचना ।

थिरकी० ना० स्त्री० चमत्कार, हुमाव ।

थिरता० ना० स्त्री० } स्थिरता, अचलता ।
थिरत्व० ना० पु० }

थिरा० ना० स्त्री० पृथ्वी, धरती ।

थिराना० स० क्रि० बैठना, ठहराना, अ० क्रि०

बैठना, ठहरना, पानी की मिट्टी का बैठजाना ।

थीर० गु० सुखित, स्थिर, मन्दा ।

थुकथुकाना० अ० क्रि० कुयासनादि धिनकी वस्तु

देसकर थुकना वा कुट्टि दूर करने के लिये

थुकना ।

थुकाना० स० क्रि० थुक किकवाना और निन्दा

करना ।

थुथुकारना० स० क्रि० तुच्छ करके किसीकी बाहर

करना ।

थुथुनी० ना० स्त्री० शकरादि का मुल ।

थुथाना० स० क्रि० भौंह टट्टी करना ।

थूक० ना० पु० मुलमें का पानी ।

थूकना० स० क्रि० मुलमें से पानी फकना ।

थूणी० ना० स्त्री० धूनी ।

थूतडा० ना० पु० }

थूथन० ना० पु० }

थूथना० ना० पु० }

थूथनी० ना० स्त्री० }

थूनी० ना० स्त्री० धरन, टेकन ।

थूहर० ना० पु० वृक्षविशेष ।

थेईथेई० ना० स्त्री० चहलबहल ।

थेगली० ना० स्त्री० कपड़े में जोड़, पैन्दी ।

थेवा० ना० पु० नग ।

थैला० ना० पु० }

थैलिया० ना० स्त्री० }

थैली० ना० स्त्री० }

थोक० ना० पु० समूह, ढेर, एकभाग, यज्ञ
महला ।

थोड़० ना० पु० फले केल के गर्म ।

थोड़ा० गु० अल्प, कम ।

थोथला० गु० भोता, मांय ।

थोथा० ना० पु० औषधिविशेष, फलरहित, गु०

छूटा, पोपला, नदसरत, कुभयडा ।

थोप० ना० पु० पालकी के बांस के अन्न
भूषण, छाप ।

थोपना० स० क्रि० टेकना, छापना, गजना
बदोरना ।

थोपियाना० अ० क्रि० बुदियाना, फिरभार

थोपी० ना० स्त्री० धप्पा ।

थोष० }

थोम० } ना० स्त्री० लदी का टेकन

थोहर० ना० पु० थूहर ।

थौना० ना० पु० गौने के पीछे स्त्री की निदा ।

[६]

द० अर्थ० यह अक्षर जब शब्द के अन्त

ताम्राक्ष० ना० पु० कौयल ।
 तार० ना० पु० वानर विशेष, मोतीमाला, निर्मली,
 मोती, उच्चस्वर, ताह ।
 तारक० ना० पु० मुक्तिदाता, रांगाशक्ति, युक्त,
 उच्चारकरनेहारा, जो पारलगाव, मन्त्र विशेष दैन्य
 विशेष ।
 तारकारि० ना० पु० स्वाभिकार्त्तिक ।
 तारका० ना० स्त्री० देवदाली ।
 तारकूट० ना० पु० रूपा, पीतल ।
 तारकेश्वर० ना० पु० सदाशिवजी ।
 तारण० ना० पु० उच्चार करनेहारा, उच्चार का
 करना, छक्तिदाता, तारनेहारा ।
 तारणीय० गु० तारनेहारा, योग्य, उच्चार करने
 लायक ।
 तारतम्य० ना० पु० न्यूनधिक, थोड़ा, बहुत ।
 तावर्थ० ना० पु० उसका अर्थ, उसके लिये ।
 तारना० स० क्रि० उतारना, पारकरना, मुक्ति
 देना ।
 तारा० ना० पु० नक्षत्र, ना० स्त्री० नेत्रका पुत-
 ली, अक्षुदकी महतारी ।
 तारागण० ना० पु० नक्षत्रों का समूह ।
 तारापथ० ना० पु० आकाश ।
 तारिका० ना० स्त्री० पुतली, नक्षत्र ।
 तारिणी० ना० स्त्री० उच्चार करनेहारी ।
 तारुण्य० ना० स्त्री० तरुणता, जवान, युवा ।
 तारु० ना० पु० ताल ।

गुरुमन्त्री शकुन्तीभासपत्नियो इत्यमरः ।
 ताल० ना० पु० ताड़वृक्ष, तालाव, हरताल, ना०
 स्त्री० करताल, रागका परिमाण, मद्ययुक्त में
 बाहुपर बाहु पटकना ।
 तालखजुही० ना० स्त्री० दुपहरियां वृक्ष ।
 तालध्वज० ना० पु० श्रीवल्लभजी ।
 तालपत्नी० } ना० स्त्री० मूसली श्रीपति ।
 तालमूलिका० }

तालवृन्त० ना० पु० ताड़का पर्याय ।
 तालव्य० ना० पु० जो अक्षर तालुमें उच्चारण
 किये जावे यथा त, थ, द, ध, न, ल, र ।
 ताला० ना० पु० कुकल, ढार बन्द करने का
 यन्त्र ।
 तालांक० ना० पु० श्रीवलदेवजी ।
 ताली० ना० स्त्री० कुंजी, चाबी, दोनों हाथों को
 आपस में मारने से जो शब्द होता है ।
 तालीस० ना० पु० वृक्ष विशेष ।
 तालु० } ना० पु० मुलमें ऊपरका भाग ।
 तालू० }
 ताव० ना० पु० ताप, क्रोध, बल चटक, ऐंठ,
 कापतका तसता, कस ।
 तावत् अर्थ० इत्ता, यथातक, तवतक ।
 तावना० स० क्रि० गरमकरना, कसना, ऐंठना ।
 ताश० } ना० पु० गंजीफह, लम्पा, पारसीहै ।
 तास० }
 तासु० } सर्व्य० उसको उसका ।
 तासुकी० }
 ताहि० सर्व्य० उसको ।
 ताहिरी० ना० स्त्री० भोजन विशेष ।
 तिकातिक० ना० पु० गांधी आदि के बेल चलाने
 में यह शब्द बोलानाताहै ।
 तिकुरी० ना० स्त्री० तिहाई, तीसरा ।
 तिकोनिया० गु० तीन कोणका पदार्थ ।
 तिका० ना० पु० मांसका खोया टुकड़ा ।
 तिक्र० गु० तीता, चरपरा, ना० पु० चिरायवा ।
 तिक्रका० ना० स्त्री० चिरपेटा ।
 तिक्रचक्रा० ना० स्त्री० छुटकी ।
 तिक्रा० ना० स्त्री० कालीमिरच, खारा ।
 तिखरा० गु० तिवारा, तिहरा ।
 तिखराकरना० स० क्रि० तीनपर जोतना ।
 तिखारना० स० क्रि० ठहराना, राचकरना, यत्नसे
 पूछना तीनपर जोतना ।
 तिगुण० } गु०, तिसका तीनगुण है, तिहर
 तिगुना० } राना ।

आता है तब उसका अर्थ देनेहारा होनाता है
यथा सुखद अर्थान् सुख देनेहारा ।
दरि० ना० पु० देव, भगवान्, जहा, स्त्री, मिठाई
निशेप ।
दरश० ना० पु० मन की मकड़ी, दांत ।
दरशन० ना० पु० दांतों से काटन ।
दरश्री० ना० पु० शऊर, सर्प ।
दरस० ना० पु० कृता, सिंह, बांस ।
दरखन० ना० पु० दक्षिण ।
दरगढ़० ना० पु० धका, टका, डंका, राह ।
दरगहा० ना० पु० पैदा ।
दरगहाना० स० कि० चलाना, दौहाना, डग-
राना ।
दरगदगा० शु० चमकीला ।
दरगदगाना० अ० कि० चमकना, चहकना, तम-
तमाना ।
दरगदगाहट० ना० खी० चमक ।
दरगधना० स० कि० जलाना, डेङना, सताना,
डंटना, धुशकारना ।
दरगला० ना० पु० नरि भरा अंगरस्ता ।
दरगध० शु० जो जलगाया ।
दरगधा० शु० जला, तिथिविशेष, वारविशेष, मास
युक्त तिथि ।
दरगल० ना० पु० चौकीविशेष, बहुतात ।
दरगा० ना० पु० बरतड़ा, रौला ।
दरगत० शु० रोला वा बरतड़ा करनेहारा ।
दरगना० अ० कि० अङ्कना, सामना करना ।
दरगण० ना० पु० लाठी, शासन, डांड, पड़ी, छ-
डती, जमाना ।
दरगक० ना० पु० रानाविशेष, गु० दरगकती ।
दरगधर० } ना० पु० यमराज, मु० देखे
दरगधारी } बांधनेहारा ।
दरगमान० गु० दुःखदाता, दरगदाता, ना० पु०
यमराज ।
दरगवत्० ना० स्त्री० दरग कि० समान रूपके
प्रणाम करना ।

दरगडादरगडी० ना० पु० आपस में लाठीसे लड़ना ।
दरगडायमान० ना० पु० दरगडकी नाई सखा ।
दरगडत० गु० दरग लियागया, सताया गया,
पीडित, शिखा कियागया ।
दरगडी० ना० पु० तपेश्वरी, गु० दुःखरूपी, डांडी ।
दरगड्य० गु० दरग देनेके योग्य ।
दरगवन० { ना० पु० दन्तधावन, मित्तवाक ।
दरगवन० }
दरगना० ना० पु० पीधाविशेष ।
दरगली० ना० स्त्री० छोटे २ दांत ।
दरगत० ना० पु० दन्त ।
दरगत्त० गु० जो दियागया ।
दरगत्रेय० ज्ञा० पु० हरि अथवा, मुनिविशेष ।
दरगरीक्षेत्र० ना० पु० भृगुमुनि का स्थान पट-
ना के पास है ।
दरगियाल० } ना० पु० दादाकापर, पुरोपे ।
दरगियाला० }
दरगडा० ना० पु० मच्छड आदि के काटने की
सृजन ।
दरग० ना० पु० दादुरोग ।
दरगधि० ना० पु० दही, समुद्र ।
दरगधिकांदो० ना० पु० जन्माष्टमी के दूसरे दिन
का पर्वानन्द ।
दरगधिमुख० ना० पु० लड़का बहुत कम उमर
वालय, वानरविशेष जो रामदल में था ।
दरगधिरिपु० ना० पु० अगस्त्यमुनि ।
दरगधिवल० ना० पु० सुभीत का पुत्रविशेष ।
दरगधिसुत० ना० पु० चन्द्रमा आदिक ।
दरगधीचि० ना० पु० मूल्यराज, मुनिविशेष ।
दरगज० ना० पु० देव, राक्षस ।
दरगजपति० } ना० पु० देवों का राजा ।
दरगजरज० }
दरगजाधिप० }
दरगजारि० ना० पु० देवता, भीमारक्ष ।
दरगजेश० } ना० पु० देवों का राजा ।
दरगजेश्वर० }

तिग्म० ना० पु० पीपरि ।

तिजरा० ना० पु० } अन्तरिया तीसरे दिन
तिजरी० ना० स्त्री० } जाड़ा और विषमका
तिजारी० ना० स्त्री० } आना ।

तिखुका० ना० पु० घास, घासका टुकड़ा ।

तित० अथ्य० तिधर, तत्र ।

तितना० ना० पु० } गु० प्रमाण वा अन्धि
तितनी० ना० स्त्री० } वा निश्चय बोधक ।

तितरधितर० गु० भिन्न भिन्न, संगफूटजाना ।

तितरी० } ना० स्त्री० कीट विशेष जो उ-
तितली० } डता है ।

तिथि० ना० स्त्री० चन्द्रकला की क्रिया से उपल-
ब्धिकाल, दिन, तारीख ।

तिथिपत्र० ना० पु० पत्रा, जन्त्री ।

तिथिक्षय० ना० पु० तिथिका अन्वय, हानि ।

तिदरा० ना० पु० }
तिदरी० ना० स्त्री० } तीनद्वार का स्थान ।

तिधारा० ना० पु० पौधा विशेष, तीन धारका
संनम ।

तिनकना० अ० क्रि० धड़कना, फड़फड़ाना,
टीमना ।

तिनका० ना० पु० डाँड़ी वा टहनी वा घासका
छोटाटुकड़ा ।

तिन्तिणी० ना० स्त्री० अमिली वृक्ष ।

तिन्दुक० ना० पु० तेंदुवा, तमालवृक्ष ।

तिन्दुला० ना० स्त्री० पीपरि ।

तिन्नी० ना० स्त्री० चावल वा उसका पौधा
विशेष ।

तियारा० गु० तीनवेर ना० पु० तीन दरका ।

तिव्वत० ना० पु० देश विशेष जो हिमालय के
उत्तर में है ।

तिमि० ना० स्त्री० मछली, अथ्य० तसे, उरी
विधि ।

तिमिगिल० ना० पु० मात्स्य, मछली ।

तिमिर० ना० पु० अन्धकार, अज्ञान ।

तिमिरहर० ना० पु० सूरज ।

तिय० } ना० स्त्री० घोषिता,
तियां० } स्त्री, नारि ।

तिरकोना० गु० तीनकोनवाला पदार्थ ।

तिरखुंटी० ना० स्त्री० तीनकोने का अथ्य वि-
शेष ।

तिरछा० गु० टेढ़ा, आड़ा, हठीला ।

तिरछाना० स० क्रि० टेढ़ा करना, अ० क्रि०
हठीला होना, हठकरना ।

तिरछी० गु० टेढ़ी, बांकी ।

तिरतिराना० अ० क्रि० रिसाना, झिरझिराना ।

तिरना० अ० क्रि० पेरना, तैरना ।

तिरपद० ना० पु० }
तिरपदी० ना० स्त्री० } तिपाई, तीनपद ।

तिरपन० गु० पचास और तीन, ५३ ।

तिरपौलिया० ना० पु० धनुषाकार के तीनद्वार
का स्थान ।

तिरफल० ना० पु० त्रिफला, तीन फल का
अर्थात् आंवला, हर, चंदेड़ा ।

तिरभंगा० गु० तिरछा खड़ाहाना ।

तिरभंगी० ना० स्त्री० छन्द विशेष ना० पु०
श्रीकृष्णचन्द्रजी का एक नाम ।

तिरस्कार० ना० पु० निन्दा, भेजना, अपमान,
अपमान ।

तिरसठ० गु० साठि और तीन, ६३ ।

तिरहुत० ना० पु० देश विशेष, नगर विशेष ।

तिरोधान० ना० पु० पोशाक, आच्छादन, वस्त्र ।

तिरोहित० गु० छुपाहुथा, गुप्त, ना० पु० मि-
थिला देश ।

तिमिरी० ना० पु० तेलकी बुंद जो पानीपर बहती
है थर थरा ।

तिमिराना० अ० क्रि० भूलना, लहरना, थर
थराना, चमकना अथा तेलकी बुंद पानीपर ।

तिमिराहट० ना० स्त्री० थरथराहट, फर-
फराहट ।

तिमिरी० ना० स्त्री० घुमड़ी ।

दन्त० ना० पु० दांत, दशन ।
 दन्तकाष्ठ० ना० पु० दंतन करना, दंतन ।
 दन्तधानी० ना० पु० धनियां ।
 दन्तवीज० ना० पु० अनार ।
 दन्तशठ० ना० पु० माई औषधि, जंभारी ।
 दन्तशूल० ना० पु० दांतोंकी पीड़ा ।
 दन्तिका० ना० स्त्री० बड़ी छत्रावर ।
 दन्ती० ना० पु० हाथी ।
 दन्तीफल० ना० पु० पिस्ता ।
 दन्तुर० } गु० जिसके दांत होट से न टूके वा
 दन्तेल० } जिस जन्तु आदि के बड़े २ दांतहों
 दन्तैल० } हनड़ा, हविला ।
 दन्त्य० गु० जिन अक्षरों का उच्चारण दांतसे हो-
 ता है यथा, त थ द ध न ल स ।
 दन्दनाना० अ० क्रि० विरामना, निडर बैठना ।
 दन्ना० ना० पु० इन्द्रिय, लिंग, गु० निडर ।
 दन्नापेल० गु० व्यभिचारी, अतिनिश्चक ।
 दपट० ना० स्त्री० दौड़, झपट, डांट ।
 दपटना० अ० क्रि० दौड़ना, डांटना ।
 दयटाना० स० क्रि० दौड़ाना, डांट दिखाना ।
 द्यकना० अ० क्रि० छिपना, घात में बैठना ।
 द्यकर० ना० स्त्री० कल ।
 द्यकाना० स० क्रि० धमकाना, डांटना, लु-
 काना ।
 द्यकी० ना० स्त्री० दांव, छिपकी ।
 द्यकीला० } गु० घुसड़, दक्कनेहारा ।
 द्यकील० }
 द्यंग० } गु० कुशील, कुटंगा ।
 द्यंगा० }
 दबना० अ० क्रि० नीचे होना, कुचिलना, क्रानि
 करना, मानना ।
 दबा० ना० पु० दांव, घात ।
 दबाना० स० क्रि० दबना, निचोड़ना, डांटना ।
 दबाव० ना० पु० पराक्रम, आधीनता, धीक,
 अदवा ।
 दबीला० ना० पु० औषधिविशेष, बैठा, चपू ।

दवेपांव० अर्थ० होले, धीमे ।
 दवेल० ना० पु० प्रजा, आधीन ।
 दवोचना० स० क्रि० दवापबलना ।
 दम० ना० पु० मनको निज यशस्वता घप-
 इन्द्रियों को रोकना, दौना सुगन्धि ।
 दमक० ना० स्त्री० चमक, दहक, फलक, दाह ।
 दमकना० अ० क्रि० झलकना, चमकना ।
 दमहा० ना० पु० सम्पत्ति, दौलत ।
 दमही० ना० स्त्री० पैसे का आठवां भाग ।
 दमदमाना० स० क्रि० हिलाना ।
 दमन० ना० पु० सरमा, नागदौन, पुन विरोध,
 अधीनता, नाराज, दमयन्ती ।
 दमनीय० गु० दमन के योग्य, दमन कारक, जो
 इनेहारा, रामायणे, (कुँवरि मनोहरि-निर्दि-
 बड़ि कीरति अति कमनीय, पावनहार-विरो-
 जतु रच्यो न धनु दमनीय) ।
 दमयन्ती० ना० स्त्री० राजा नल की भार्या ।
 दमाना० स० क्रि० लचकाना, निहराना, छु-
 याना ।
 दमामा० ना० पु० डंका, धोता ।
 दम्पति० } ना० पु० स्त्री पुरुष ।
 दम्पती० }
 दम्भ० ना० पु० अहङ्कार, घमण्ड, पालण्ड, घ-
 वनाव ।
 दम्भी० गु० अहङ्कारी घमण्ड, पालण्ड, घ-
 दम्भ्य० गु० शास्य, ना० पु० खेता ।
 दया० ना० स्त्री० कृपा, करुणा, दान, वितरण ।
 दयायुक्त० } गु० कृपावन्त, मिलनसार, दान-
 दयालु० } मायावन्त, मेहरमान ।
 दयावन्त० }
 दयावान्० }
 दयाशील० }
 दर० ना० पु० मोल, भाव, शील, वेद, इड, पीडा ।
 दरकना० अ० क्रि० चिरजाना, फटना ।
 दरका० ना० पु० दरार, फटाव ।
 दरकाना० स० क्रि० फाड़ना, चीरना ।

तिर्यकपति० } ना० पु० शङ्ख, सिंह ।
 तिर्यगपति० }
 तिञ० ना० पु० पीया विशेष, जिसके वीरु से तेल निकालते हैं, शरीर में काला चिद्र विशेष, लक्ष ।
 तिल० ना० पु० राखाट में विहित चन्दनादिका टीका, पीना, खली, अर्थ करना, अर्थ, वृक्ष विशेष गु० शिरोमणि ।
 तिलकुट० ना० पु० तिल और मिठाई विशेष ।
 तिलगा० ना० पु० तिलगा, सिपाही ।
 तिलगी० ना० स्त्री० गृही, पत्रंग ।
 तिलचट्टा० ना० पु० कीटविशेष ।
 तिलचावली० ना० स्त्री० तिल और चावली की मिलीनी, काले और सफेद वाली की मिलीनी ।
 तिलचूरी० ना० स्त्री० मिठाई विशेष ।
 तिलङ्गा० ना० पु० } तीन लङ्का; भूषण वि-
 तिलङ्गी० ना० स्त्री० } शेष ।
 तिलपर्णा० ना० स्त्री० चन्दन ।
 तिलपिष्टक० ना० पु० पीना, तिलकी खली ।
 तिलवर० ना० पु० पक्षी विशेष ।
 तिलमेद० ना० पु० पोस्त का विरवा ।
 तिलहा० गु० तेलिया ।
 तिलुथा० ना० स्त्री० पिलर ।
 तिलोत्तमा० ना० स्त्री० मुख्य अक्षरा ।
 तिष्ठना० अ० क्रि० टहरना, स्थिरहोना, विराजना ।
 तिष्ठित० गु० टहराहुआ ।
 तिष्य० ना० स्त्री० आठवां नक्षत्र, पुष्य ।
 तिसका० सर्व्य० उमकां, जिसका ।
 तिसरायत० ना० पु० मध्यवर्ती शेरियत, हिन्दुओं की, अपनापतरहित ।
 तिस्रुत० ना० पु० औषध विशेष ।
 तिहत्तर० गु० सत्तर और तीन, ७३ ।
 तिहरा० गु० तियुष्ण, तिलङ्गा ।
 तिहराना० स० क्रि० तिहरा करना ।

तिहरावट० ना० स्त्री० तियुष्ण करने का काम ।
 तिहरे० सर्व्य० तिहारे ।
 तिहाई० ना० स्त्री० तीसरा भाग ।
 तिहायत० ना० स्त्री० तिसरायत ।
 तिहारा० ना० स्त्री० }
 तिहारे० ना० पु० } सर्व्य० तेरी, तेरे ।
 तिहारो० ना० पु० }
 तिहु० गु० तीनी, तीन ।
 तिहुपुर० }
 तिहुलाक० } ना० पु० तीनोंलोक
 तीखा० गु० तीक्ष्ण, चरपरा ।
 तीखी० गु० सूक्ष्मस्पर्, पैनी ।
 तीखुर० ना० पु० श्वेत वस्तु, मिमका व्रत के दिन फलाहार करते हैं ।
 तीछन० गु० तीक्ष्ण, तीव्र, तेज ।
 तीज० ना० स्त्री० तृतीया ।
 तीजा० गु० तीसरा, मृतक के तीसरे दिन का काम व तीसरा दिन ।
 तीजिया० } ना० स्त्री० श्रवण सुदी तीन का तीजे } त्यौहार ।
 तीत० गु० तीता ।
 तीतर० ना० पु० पक्षीविशेष ।
 तीतरी० ना० स्त्री० तितरी, पतंगविशेष ।
 तीता० गु० कड़वा, पड़पड़ा, तीता ।
 तीन० गु० त्रि, ३ ।
 तीनतेरह० गु० तितर तितर ।
 तीय० ना० स्त्री० अचला, स्त्री ।
 तीयल० ना० स्त्री० स्त्री के पहिरने के तीनों बख ।
 तीर० ना० सञ्ज वा नदी का तट, अर्घ्य देना, पास ।
 तीरथ० ना० पु० पुण्यस्थान, यात्रा ।
 तीरथराज० ना० पु० प्रयोग ।
 तीरथ० ना० पु० तीरथ ।
 तीली० ना० स्त्री० पिंजड़ा की कामी ।
 तीम्य० गु० अत्यन्त कड़वा, तीना, पैनी ।

दरकी० शु० स्त्री० कटी ।
 दरदर० ना० पु० शिर, सिंदूर ।
 दरदरा० शु० अथदूरा, अपपिता ।
 दरश० } ना० पु० दर्श, देखना ।
 दरस० }
 दरसी० ना० स्त्री० मसली विशेष ।
 दराता० ना० स्त्री० हंसिया, कटनी ।
 दरार० } ना० पु० दरका, चीर ।
 दरारा० }
 दरि० ना० स्त्री० मोल, भाव ।
 दरिद्र० ना० पु० } दीनता, कंगालता, नि-
 दरिद्रता० स्त्री० } र्द्वनता ।
 दरिद्री० शु० दीन, कंगाल ।
 दरी० ना० स्त्री० लोह, गुंफा, विघ्नीना विशेष ।
 दरीभूख० ना० पु० पर्वत, पहाड़ ।
 दरीन० ना० स्त्री० दरीका बहुवचन ।
 दुर्दुख० ना० पु० मंदक ।
 दुर्प० ना० पु० अहङ्कार, अभिमान, मान ।
 दुर्पक० ना० पु० कामदेव ।
 दुर्पण० ना० पु० आदर्श, सुकुर, शीशा ।
 दुर्पणी० ना० स्त्री० दुर्पण ।
 दुर्पणीय० शु० सुन्दर, दिलनीट, सुधरा, अच्छा ।
 दुर्पणोदर० ना० पु० चौरस दुर्पण का पेट ।
 दुर्पी० शु० अभिमान, मानी ।
 दुर्म० ना० पु० कुरा, घास ।
 दुरी० ना० पु० दारा ।
 दुरीना० अ० क्रि० निरु, आगे बढ़ना, बेधकक
 आगे चलना ।
 दुर्विका० ना० स्त्री० गोभी ।
 दुर्वी० ना० स्त्री० कर्वा ।
 दुर्वीकार० ना० पु० सांप ।
 दुर्श० ना० पु० दृष्टि, परिवा, प्रतिपदा ।
 दुर्शक० शु० दिसनीट, देखनेवाला ।
 दुर्शकता० ना० स्त्री० दर्शन, दिसावट ।
 दुर्शन० ना० पु० दृष्टि, भेट ।
 दुर्शकारी० शु० सुन्दर ।

दर्शनी० ना० स्त्री० दुपडी विशेष जिसको देखते
 ही रुपया दिया जाये ।
 दर्शी० शु० देखनेवाला ।
 दख० ना० पु० पत्ता, बड़ी कौज, देर, मोर-
 पंत ।
 दलक० ना० स्त्री० गलतक ।
 दलकना० अ० क्रि० गलकना ।
 दलदल० ना० पु० भसाव, पांक, कौचक ।
 दलदलाना० अ० क्रि० कांपना, धरपारना ।
 दलदलाहट० ना० स्त्री० धरधराहट, कम्प ।
 दलन० ना० पु० नारान, दो टुक करनेका काम
 विशेष ।
 दलना० स० क्रि० दो टुक करना ।
 दलवादल० ना० पु० मेघों का समूह ।
 दलवाना० स० क्रि० दो टुक करना ।
 दलवैया० ना० पु० दलनेहार ।
 दलाना० स० क्रि० दलवाना ।
 दखिद्र० ना० पु० } दरिद्र ।
 दखिद्रता० स्त्री० }
 दखिद्री० शु० दरिद्री ।
 दखित० शु० दो टुक कियानया, आभा ।
 दखिया० ना० पु० अथकुटा, अथपिता ।
 दखिहन० ना० पु० जो अन्न दाल के काम आता
 है यथा-उरद आदि ।
 दली० गु० दो टुक की गई, ना० पु० बूझ ।
 दल्लेता० ना० पु० } छोटी चर्का ।
 दल्लेती० ना० स्त्री० }
 दव० ना० पु० वन की आग, भात, दावा ।
 दवागि० }
 दवाग्नि० } ना० पु० वन की आग ।
 दवानल० }
 दवारि० }
 दश० गु० दस, १० ।
 दशकण्ठ० ना० पु० सनप ।
 दशगात्र० ना० पु० मृतक कर्म विशेष ।
 दशदिक्पात्र० ना० पु० दश दिशापात यथा-

तीसरा० गु० तृतीय ।
 तीसी० ना० स्त्री० अलसी, जिसका तेल निकालते हैं ।
 तीक्ष्ण० ना० पु० मरुधा, मिरच, गु० प्रइपडा, तत्ता, क्रोधी, भाङ्गिया, पेना, तीता ।
 तुक० ना स्त्री० पद, सम्बन्ध ।
 तुफला० ना० पु० }
 तुफली० ना० स्त्री० } छोटी पतंग विशेष ।
 तुकल० ना० पु० }
 तुका० ना० पु० बाण जिसकी नोक नहीं है, झंझा फर्त ।
 तुगावंशी० }
 तुकाक्षीरी० } ना० पु० वंशरोचन ।
 तुंग० गु० ऊंचा, लम्बा, समूह ।
 तुंगवृक्ष० ना० पु० नारियल ।
 तुच्छ० गु० शय्य, कुरसित, अपमानी ।
 तुड़ाना० स० कि० तोड़ना ।
 तुण्ड० ना० पु० चौंच, मुँह ।
 तुतरा० गु० जो तुतलाता है ।
 तुतराना० अ० कि० अधूरा बोलना, जैसे बालक बोलते हैं ।
 तुतला० गु० तुतरा ।
 तुतलाना० अ० कि० तुतराना ।
 तुथ्य० }
 तुथिक० } ना० पु० नीलापोंथा ।
 तुनतुनाना० अ० कि० सराई देना ।
 तुन० ना० पु० वृक्षविशेष ।
 तुन्दिल० गु० तोंदिल, बड़ी तोंदका ।
 तुन्न० ना० पु० तुत, ट्टा ।
 तुपक० ना० पु० बन्दूक ।
 तुपकिया० ना० स्त्री० छोटी बन्दूक ।
 तुम० सर्व्य० मध्यमपुत्र का सूत्रक वा वाचक ।
 तुमतमौ० सर्व्य० तुम्हारा ।
 तुमाई० ना० स्त्री० तुमाने का पैसा ।
 तुमाना० स० कि० धुनवाना ।
 तुमुल० ना० पु० रौला, डुल्लड ।

तुम्या० ना० पु० लोका, कट ।
 तुम्बिका० } ना० स्त्री० ताँका, कट, बनाने
 तुम्बी० } की तैली जो मदारी लोग रहते हैं ।
 तुम्ई० ना० स्त्री० तरकारी विशेष ।
 तुम्क० ना० पु० तुम्क, देशविशेष ।
 तुम्ग० }
 तुम्ग० } ना० पु० घोड़ा ।
 तुम्गम० }
 तुम्गाहा० ना० स्त्री० असंगन्ध ।
 तुम्त० }
 तुम्त० } अव्य० शीघ्र, अभी ।
 तुम्पना० स० कि० साँगा, टंकना विशेष ।
 तुम्ही० ना० स्त्री० बाना विशेष नरसिंहा ।
 तुम्ई० ना० स्त्री० तोशक, रजाई ।
 तुम्नाना० अ० कि० छुड़ाना, छुड़ाना, मर्यादा से बाहर चलना, बहिचलना ।
 तुम्पाइ० ना० पु० इन्द्र ।
 तुम्रिय० ना० पु० घोड़ा ।
 तुम्री० ना० पु० घोड़ा ना० स्त्री० तुम्ही ।
 तुम्रीय० ना० पु० मुक्तवस्था, मुक्ति, मोच लीप ।
 तुम्रुक० }
 तुम्रुक० } ना० पु० यवन, देश विशेष ।
 तुम्त० }
 तुम्तफुत्त० } अव्य० तुम्त, शीघ्र ।
 तुम्ताव० }
 तुम्ताफुत्ती० }
 तुम्त० गु० तुल्य ।
 तुम्तना० अ० कि० तुलापरचढ़ना, तुल्यहाना ।
 तुम्तसा० } ना० स्त्री० छोटी वृक्ष जिसकी पत्ती
 तुम्तसी० } विष्णु वा शालग्राम की चढ़ाते हैं ।
 तुम्तसीदास० ना० पु० प्रसिद्ध भक्त श्रीरामायण भाषा बनानेवाले ।
 तुम्तना० ना० स्त्री० वराज, अपनी देहकी नरपद दान देना, सातवीं राशि विशेष ।
 तुम्ताना० स० कि० तोलाना, तुलापर चढ़ाना ।

इन्द्र, १ अग्नि, २ यम, ३ नैर्ऋति, ४ वरुण, ५ वायु, ६ कुबेर, ७ ईशान, ८ मन्ना, ९ अनन्त, १० ।

दशदिशा० } ना० स्त्री० दशधोर अर्थात् पूर्व,
दशदिशि० } आग्नेय, दक्षिण, नैर्ऋत्य, पश्चिम,

वायव्य, उत्तर, ईशान, अध, ऊर्ध्व, १० ।

दशन० ना० पु० दांत ।

दशम० गु० दसवां ।

दशमांश० ना० पु० दसवां भाग ।

दशमी० स्त्री० दसवीं तिथि ।

दशरथ० ना० पु० श्रीरामचन्द्रजी के पिता ।

दशहरा० ना० पु० ज्येष्ठ वा आश्विन शुक्लपक्ष की दसवीं तिथि ।

दशा० ना० स्त्री० अवस्था, व्यवस्था, नति ।

दशांश० ना० पु० दसवांभाग, १० ।

दशांगुल० ना० पु० फलाविशेष अर्थात् खरवृक्षा ।

दश० गु० दस, १० ।

दसन० ना० पु० दशन, दांत ।

दसम० गु० दशम, दसवां ।

दशरथ० ना० पु० दशरथ ।

दसहरा० ना० पु० दसहरा ।

दसी० ना० स्त्री० घृत; दशां, गाड़ी की फट्ट ।

दसीला० गु० सुलकी दशा में रहनेहार ।

दसोखा० ना० पु० पंखका झाड़ना ।

दशोद्धार० ना० पु० शरीर के दशोद्धार अर्थात्
आंत, कान, नाक, मुख, लिंग, गुदा, चांदि,
परन्तु चांदिरहित केवल नवोद्धार ठीक है ।

दसौधी० ना० पु० भाट बरदेत ।

दस्यु० ना० पु० वैर, चोर ।

दस्युवृत्ति० ना० स्त्री० चोरी ।

दह० ना० पु० गहराव ।

दहक० ना० स्त्री० दाह, चमक ।

दहकना० अ० क्रि० जलना, पड़िताना, सत्यानाश
होना ।

दहकाना० स० क्रि० जलाना, विगाड़ना, प-
श्चात्तापकराना, गर्माना ।

दहन० ना० पु० धनि ।

दहन०
दहना० } अ० क्रि० जलाना, बरना ।
दहनो० }

दहलाना० अ० क्रि० दवना, कांपना ।

दहलाना० स० क्रि० दवाना, कम्पाना ।

दहसेरा० ना० पु० दससेर का तीख ।

दहा० गु० जलनया वा जलाहुआ ।

दहाड़ना० अ० क्रि० गरीना, यथा शरकासद ।

दहाना० स० क्रि० जलाना ।

दहिना० गु० दक्षिण, सीधा, सहायक ।

दही० ना० पु० गोरस, दधि, गु० चतुर्ग ।

दहेंडी० ना० स्त्री० दहीकी हांडी ।

दहेड़० ना० पु० पत्ती विशेष ।

दहेल० ना० पु० पत्ती विशेष ।

दह्यो० ना० पु० दही, स० क्रि० जलाया ।

दक्ष० ना० पु० निपुण, चतुर, ब्रह्मा का पुत्र
जिसको ब्रह्माने दक्षिणांगुष्ठसे उत्पन्न किया था,
स्मृति विशेष ।

दक्षन० ना० पु० दक्षका बहुवचन भाषा में
प्रचलित है यथा देव देवत और लोक लोक
आदि ।

दक्षसुत० ना० पु० प्रचेता ।

दक्षसुता० ना० स्त्री० दक्षकी कन्याविशेष, सुती
दक्षिण० गु० खरा, उदित, सूर्य का वामभाग
दहिना, दक्षिन ।

दक्षिणअक्षांश० ना० पु० रेखाभूमि के दक्षिण
केन्द्रतक जो माप है ।

दक्षिणकेंद्र० ना० पु० जिसके चारोंओर दिग्
समुद्र है या जिसको हिन्दू शास्त्र बङ्गवानल क
हते हैं ।

दक्षिणखण्ड० ना० पु० विन्ध्यपर्वत के दक्षिण
का देश विशेष ।

दक्षिणा० ना० स्त्री० कर्म करवाने के निमित्त
ब्राह्मण को दान देना, कार्य का धेतरन ।

तकुवा ठीक कराना ।
 तुलित० गु० तुलाहुआ, तुलापर चढ़ाया गया ।
 तुली० ना० स्त्री० मोदीसीक, चित्र लिखने की कलम ।
 तुल्य० ना० पु० समान, बरानद, उदृश ।
 तुल्यता० ना० स्त्री० समानता, बराबरी ।
 तुवर० ना० पु० तिल ।
 तुवरी० ना० स्त्री० फटकरी ।
 तुप० ना० पु० धानादि का झिलका ।
 तुपार० ना० पु० शीत, पाला, हिम ।
 तुष्ट० गु० प्रसन्न, तुष्ट, सन्तोषी ।
 तुष्टता० ना० स्त्री० प्रसन्नता, तुष्टि, सन्तोष ।
 तुष्टित० गु० प्रसन्नित, सन्तोषित ।
 तुसार० ना० पु० तुषार ।
 तुहिन० ना० पु० तुसार, तुषार, हिम ।
 तुहो० सर्व० तुम्हको ।
 तू० सर्व० मध्यमपुरुष का एक वचन ।
 तूतांकरना० स० कि० तुकारना ।
 तूकाना० स० कि० अर्थ तब करना ।
 तूद्यो० गु० सन्तोषित ।
 तूण० } ना० पु० वाण रखने का धर;
 तूणार० } तरकरा ।
 तूनाई० ना० स्त्री० दंडीदार मिट्टी का बर्तन ।
 तूतिया० ना० पु० नीलाधोथा ।
 तूबदि० ना० स्त्री० तुम्बी ।
 तूमना० } स० कि० रुई को हाथ से बगाना ।
 तूसा० }
 तूर० ना० पु० नकारह ।
 तूरक० ना० पु० जलपिप्यल ।
 तूरना० स० कि० तोड़ना ।
 तूरी० ना० पु० धर्रा ।
 तूण० ना० पु० शीघ्र, जल्द ।
 तूर्य० ना० पु० नकारह, गमाइ ।
 तूल० ना० स्त्री० निर्बीज कपास अर्थात् रुई तुल्य ।
 तुलनीय० ना० पु० कदम वृक्ष ।
 तुलिनी० ना० पु० सेमर वृक्ष ।

तूर० ना० पु० राजपूतों में जातिविशेष ।
 तूण० ना० पु० घास ।
 तूणराज० ना० पु० नागियल, उल्ल, तालवृक्ष ।
 तूणवत्० गु० घास के समान निकम्मा ।
 तूणावत्त० ना० पु० दैत्यविशेष, बौझरा, घास का भंवर ।
 तूणोदक० ना० पु० घास पानी ।
 तूतीय० गु० तीसरा ।
 तूतीया० ना० स्त्री० तीज, तीसरीतिथि, तीसरी ।
 तूतीयान्त० गु० जिस के अन्त में तूतीया क विह है ।
 तूतीयांश० ना० पु० तीसरा भाग ।
 तूस० गु० सन्तुष्ट ।
 तूति० ना० स्त्री० भोजनादि करके सन्तोष ।
 तूद्यता० } ना० स्त्री० निसोत ।
 तूद्यत्त० }
 तूपा० ना० स्त्री० प्यास ।
 तूपात्त० गु० पिपासाकरके व्याकुल ।
 तूपावन्त० } गु० पिपासाशक्त, प्यासा ।
 तूपित० }
 तूष्णा० ना० स्त्री० प्यास, लालच, अभिलाषा ।
 ते० अर्थ० से, सर्व, वे, ये ।
 ते० सर्व० तू, अर्थ० से ।
 तैतालीस० गु० चालिस और तीन, ४३ ।
 तैतीस० गु० तीस और तीन, ३३ ।
 तैदुआ० ना० पु० चीना विशेष, वृषविशेष ।
 तैदू० ना० पु० वृक्ष वा उसका फलविशेष ।
 तैईस० गु० बीस और तीन, ३३ ।
 तेज० ना० पु० दहक, प्रताप, बल, अग्नि ।
 तेजअति० ना० पु० सूर्य, भाषा में प्रचलित है ।
 तेजपात० ना० पु० तनका पत्ती ।
 तेजमान० } गु० प्रतापी, चमकीला, चमत्कारी ।
 तेजवन्त० }
 तेजवल० ना० पु० घोषाधि विशेष ।
 तेजवल्ली० } ना० स्त्री० तेजवल ।
 तेजस्थिनी० }

दक्षिणाग्नि० ना० पु० अग्नि विशेष ।
 दक्षिणायन० ना० पु० कर्कटकान्ति से धनुः
 संक्रान्ति तक का काल ।
 दक्षिणीय० गु० दक्षिण देशके मनुष्यादि ।
 दा० धन्य० पदान्त में दाताका अर्थ सूचक यथा
 सुखदा अर्थात् सुखदाता ।
 दाह० ना० स्त्री० दूध भिलाने हारी ।
 दाऊ० ना० पु० बड़ा चचा, श्रीवलदेवजी का
 एक नाम ।
 दांड० ना० पु० दरंड, चम्पू ।
 दांडा० ना० पु० रीति, धूर्त, सिवाना ।
 दांडमैदा० ना० पु० सिवाना, धोर, धूरा ।
 दांडी० ना० पु० नाभिक, नाव चलाने हारा,
 ना० स्त्री० दरडी तुलाआदि की ।
 दांत० ना० पु० दन्त, दशन ।
 दांतन० ना० पु० दन्तधावन, काष्ठ, दान ।
 दांतपीसना० अ० क्रि० किचकिचाना ।
 दांताकिलकिल० ना० स्त्री० भगवा, नखड़ा ।
 दांती० ना० स्त्री० आराके दांत ।
 दांब० ना० पु० घात, अयसर, होड़, बारी ।
 दाख० ना० पु० अयूर, सुनका ।
 दाण० ना० पु० चिह्न यह शब्द फारसीका है ।
 दाणना० स० क्रि० चिह्नकरना, जोड़ना, यह
 शब्द यामिनी भाषा का है ।
 दाहिम० ना० पु० अनार ।
 दाड़ी० ना० स्त्री० टोंडीपरके बाल ।
 दातन० ना० पु० दन्त ।
 दातव्य० अ० देनेकेयोग्य, दातापन ।
 दातव्यता० ना० स्त्री० दातापन, देणहारी ।
 दाता० अ० पु० धर्मात्मा, देनेहारा, दयालु ।
 दातार० अ० दाता ।
 दात्र० ना० पु० दांती विशेष ।
 दाद० ना० पु० रोग विशेष, ददु ।
 दादमर्दन० ना० पु० ददु, मर्दन, औषधि विशेष ।
 दादा० ना० पु० पिताका पिता, बड़ा भाई ।
 दादी० ना० स्त्री० पिताकी माता ।

दाडु० ना० पु० दादरोग विशेष ददु ।
 दादुर० ना० पु० मेढक ।
 दादू० ना० पु० महापुरुष विशेष जिसने अ-
 पना पन्थ चलाया जो जातिका बिहना था ।
 दाधना० स० क्रि० दग्धना ।
 दान० ना० पु० पुण्यार्थ धनका त्याग, भूर, सै-
 रात ।
 दानपत्र० ना० पु० पुण्यार्थ धनादि का दान-
 पत्र, माफीनामा ।
 दानव० ना० पु० दैत्य, असुर ।
 दानवारि० ना० पु० देवता, श्रीविष्णुजी ।
 दाना० ना० पु० अश्वदिके खाने का अन्न ।
 दानी० अ० दाता, संती ।
 दाप० ना० पु० क्रोध, अभिमान ।
 दापक० गु० क्रोधी, अभिमानि ।
 दावना० स० क्रि० दवाना ।
 दाम० ना० पु० रुपया, पैसा, ना० स्त्री० मासा,
 रस्ती, गु० पैसे का चौबीसवां भाग, मोल ।
 दामवती० ना० स्त्री० माला ।
 दामासाही० ना० स्त्री० यथार्थ भाग की कर्त्त-
 व्यता ।
 दामिनी० ना० स्त्री० बिहारी, कीर्षा ।
 दामी० ना० स्त्री० यथार्थ निहारी ।
 दामोदर० ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्रजी का एक
 नाम, वर्द्धमान देशका एक नदी, गु० जिसके
 पेटक माला हो ।
 दाम्बिक० गु० दम्भी, पातखंडी, अभिमानि ।
 दाय० ना० पु० पैतृक धन ।
 दायक० ना० पु० देनेहारा ।
 दायज्ञा० ना० पु० व्याहका दान, यौतुक ।
 दाय० ना० स्त्री० दावा, कृपा ।
 दार० ना० स्त्री० दारा, काष्ठ, दाह ।
 दार्वीनी० ना० स्त्री० काष्ठ विशेष ।
 दारा० ना० स्त्री० स्त्री, पत्नी, जीरु ।
 दारिका० ना० स्त्री० लकड़ी, लकड़ी ।

- तेजस्कर० ना० पु० वीर्यं घटानेहारा; अथ्य,
पुष्टि ।
- तेजस्वी० } यु० प्रतापी, दीप्तिमान्, तेज वा
तेजोमय० } प्रकाश से युक्त ।
- तेता० गु० तितना ।
- तेमन० गु० आदा, गोलाई, व्यजन ।
- तेरस० ना० स्त्री० त्रयोदशी ।
- तेरह० गु० दश और तीन, १३ ।
- तेरस० ना० पु० तीसरा वर्ष, त्योस्त ।
- तेल० ना० पु० चिकना, चिकनाहट, तिलादि
का रस ।
- तेलिन्० ना० स्त्री० तेली की स्त्री ।
- तेलिया० ना० पु० तेलकासा रंगविशेष ।
- तेली० ना० पु० तेलकार जाति विशेष ।
- तेवर० ना० स्त्री० घुमनी, घुमड़ी गु० तीतडा ।
- तेवराना० अ० क्रि० घुमड़ी में होना, गिर-
पड़ना ।
- तेवरी० ना० स्त्री० घुमड़ी, घुमनी दृष्टि ।
- तेवहार० ना० पु० पर्व, त्योहार ।
- तेह० ना० पु० क्रोध, भाँक, बहादुरी, साहस ।
- तेहर० ना० स्त्री० स्त्रीके पाँचका गहनाविशेष ।
- तेहा० ना० पु० तेह ।
- तेही० अव्य० अभी, सर्व्व, उसको ।
- तैतिल० ना० पु० करणविशेष ।
- तैरना० स० क्रि० पैरना ।
- तैल० ना० पु० तेल ।
- तैलकार० ना० पु० तेली ।
- तैलंग० ना० पु० कर्णाटक देश वा उसके
वासी ।
- तैलंगा० ना० पु० तैलंगदेश के लोग, और
अगरतों के प्यादे ।
- तैसा० गु० तिसके समान; अव्य० स्थाकर ।
- तो० अव्य० तब, नदा, निस्तंदेह, सर्व्व, तुम्ह ।
- सौं० अव्य० याकर ।
- तौद० ना० पु० बड़ा पेट ।
- तौदी० ना० स्त्री० नाभि ।
- तौद्वैल० } गु० जिसका पेट बड़ा है ।
तौद्वैलां० }
- तौही० अव्य० तभी, उसी समय में ।
- तोकह० सर्व्व० तुम्हको ।
- तोड़० ना० पु० फूट, नदी की धारा का बह,
दही का पानी ।
- तोड़जोड़० ना० स्त्री० बात बनाना ।
- तोड़ना० स० क्रि० फोड़ना, रुपया, मुनाना, इ-
कड़ा करना ।
- तोड़ख० ना० पु० कड़ा, खगौरा हाथ के ।
- तोड़वाना० स० क्रि० फोड़वाना, टुकड़ कराना,
रुपया मुनवाना वा मुनाना ।
- तोड़ा० ना० पु० चटका, सहस रुपयों की धैली,
रंजक में आगि लगानेकीवस्तु, चरबी, गलेती
सांकर, धचीका टुकड़ा ।
- तोड़ाना० स० क्रि० तोड़वाना ।
- तोतला० गु० हकला ।
- तोतलाना० अ० क्रि० हकलाना ।
- तोता० ना० पु० शुक, सुगा ।
- तोपना० स० क्रि० टापना, गाड़ना ।
- तोपाना० स० क्रि० गड़वाना ।
- तोचड़ा० ना० पु० धैली जिसमें घोड़े की दाँत
दिया जाता है ।
- तोमर० ना० पु० बाण, तीर, छन्द विशेष ।
- तोय० ना० पु० जल, पानी ।
- तोयनिधि० ना० पु० समुद्र, जलधि ।
- तोयपिप्पली० ना० स्त्री० जलपीपल ।
- तोर० ना० पु० दहल विशेष, सर्व्व तरा ।
- तोरण० ना० पु० फूलाकी माला जो आनंद
या त्योहारके दिन बांधते हैं ।
- तोरी० ना० स्त्री० ककरी विशेष ।
- तोल० ना० स्त्री० तोल ।
- तोलक० } ना० पु० बाट जो बारह माश भर
तोलां० } होताहै वा सोलह माश भर ।
- तोप० ना० पु० हथ, रुमि, धीरज ।
- तोपक० गु० हथदाता, धीरजदाता ।

दारिद्र० ना० पु० दरिद्र ।
 दारिदी० } गु० दारित्री ।
 दारित्री० }
 दारिद्र० ना० पु० दरिद्रता ।
 दारी० ना० स्त्री० लौंडी जी लूटकरके लाई है ।
 दाह० ना० पु० काष्ठ, वृक्ष विशेष ।
 दाहक० ना० पु० श्रीकृष्णजी का रथवान ।
 दाहगत० शु० काष्ठान्तर, काष्ठ के भीतर ।
 दाहजचिघ्न० ना० पु० काठकी पुतली ।
 दाहण० शु० भयानक, असभ्य, कठिन, ना० पु०
 चीता औपधि ।
 दाहनारि० ना० स्त्री० काठकी पुतली ।
 दाहफल० ना० पु० चिलगोजा ।
 दाहमय० शु० जो काष्ठ से निर्मित ।
 दाहहृदिद्रा० ना० स्त्री० दाहहृदी ।
 दाहू० ना० स्त्री० औपधि, मद; यह शब्द यामिनी
 भाषा का है ।
 दाहूडा० ना० पु० } मदिरा, मद ।
 दाहूडी० ना० स्त्री० }
 दारौ० ना० पु० दाड़िम, अनार, विहारीलाल सप्त-
 शतिकार्यां (सुभर भलो तुव शुण गणन पचये
 कपट कुचाल, कर्षोधी दारौ लौहिये, दरकत नहि
 नैदलाल) ।
 दाह्य० ना० पु० दहता ।
 दार्वा० } ना० स्त्री० रसीत ।
 दार्ध० }
 दार्वी० ना० स्त्री० दाहहृदी ।
 दाल० ना० स्त्री० चनेआदि अन्न के दो खंड ।
 दालिद्र० ना० पु० दरिद्र ।
 दालित्री० शु० दरित्री ।
 दाव० ना० पु० दाव, घात, पंच, होड़, कुल्होड़ी
 विशेष, वन ।
 दावन० ना० पु० गहन, चलावन, कुचलन ।
 दावना० स० कि० दावना ।
 दावरि० ना० स्त्री० रसीत ।
 दावा० ना० पु० दाई का स्वामी, देवा ।

दावाग्नि० } ना० पु० वन में उपन के जो क
 दावानल० } ग्नि वनको जलावे, वनको शोध
 दाशरथि० ना० पु० धारामचन्द्रादि ।
 दास० ना० पु० शूद्र, सेवक, नौकर ।
 दासता० ना० स्त्री० लौंडीपना, सेवका ।
 दासा० ना० पु० हथुया, कड़ी के नीचेका लु
 जो भीतर रखते हैं ।
 दासी० ना० स्त्री० चेली, लौंडी, सेविका ।
 दास्य० ना० पु० दासता ।
 दाह० ना० स्त्री० जलन, दहक ।
 दाहक० शु० जलानवाला, ना० पु० अग्नि ।
 दाहना० स० कि० जलाना ।
 दाहिना० गु० दक्षिण, सीधा, सहायक ।
 दाक्षायणी० ना० स्त्री० देवी विशेष ।
 दाविक० ना० पु० सिंघाड़ा ।
 दिक्० ना० पु० दिग्, दिशा, ओर, तरफ ।
 दिक्पाल० ना० पु० दिग्पाल, दिशा
 मालिक ।
 दिखलाना० स० कि० दिखाना ।
 दिखाई० ना० स्त्री० सुभाई, लताई ।
 दिखाऊ० गु० सुन्दर, दिखनेवा, सर्जिली ।
 दिखाना० स० कि० सुझाना, लखाना, बताना ।
 दिखाव० ना० पु० फडकाव, डीमटाव, हल
 दिग्० ना० स्त्री० दिशा, ओर, तरफ ।
 दिग्वान् } ना० पु० रखवाण, पहलू ।
 दिग्वार० }
 दिग्दाल० ना० पु० दिशादाल, किसी दिशि
 जाने के लिये बुरादिन, यथा सोमवार शनिदि
 पूर्ण को, बृहस्पति दक्षिण को, शुक रवि
 पश्चिम को, मंगल बुध उत्तर को ।
 दिग्मथर० गु० बखरीन, नग्न, परमहंस ।
 दिग्गीश० ना० पु० इन्द्रादि ।
 दिग्गज० ना० पु० एक दिशाका रक्षक हाथी ।
 दिग्गी० ना० स्त्री० बड़ा पोतरा ।
 दिग्पाल० ना० पु० इन्द्रादिदिशा ।
 दिग्भाग० ना० पु० दिशाका भाग, देश ।

दिव्यजय० ना० स्त्री० सप्त दशोका जीतना ।
 दिग्जयी० ना० पु० जो सब दिशाओं को जीते ।
 दिग्भाग० ना० पु० दिग्भाग, देश ।
 दिग्ना० ना० पु० चरमा, उपनेत्र, ऐनक ।
 दिग्दण्ड० ना० पु० मूल विशेष ।
 दिग्ति० ना० स्त्री० दैत्यमाता, कश्यप की स्त्री ।
 दिग्तिमुत्त० ना० पु० अक्षर, दैत्यहिरण्याद्यादि ।
 दिग्ना० ना० पु० सूर्योदयसे सूर्यास्त तक का काल, रात्रि ।
 दिग्कर० ना० पु० सूर्य ।
 दिग्दानि० गु० बड़ा दाता, दानप्रतिपालक ।
 दिग्पति० ना० पु० सूर्य ।
 दिग्प्रति० शब्द० प्रतिवासर, हररात्रि ।
 दिग्माणि० ना० पु० सूर्य ।
 दिग्मान० ना० पु० दिनका परिमाण ।
 दिग्नाई० ना० स्त्री० दाढ़, संहृथा ।
 दिग्मार० ना० पु० डेन्मार्क देश के लोग ।
 दिग्नी० शु० बहुत दिनका, पुराना ।
 दिग्निश० ना० पु० सूर्य ।
 दिग्नेला० गु० दिनी, पुराना ।
 दिग्नाया० ना० पु० दीपक, चिराग ।
 दिग्नासलाई० ना० स्त्री० दिया जलाने के लिये बसु विशेष ।
 दिग्नावाना० स० क्रि० देना धातु की प्रेरणाधिक क्रिया, दिलाना ।
 दिग्नावाली० ना० पु० दिहाके वाली ।
 दिग्नावैया० ना० पु० दिलवानेहार ।
 दिग्नावाना० स० क्रि० दिलवाना ।
 दिग्नालीप० ना० पु० राजा विशेष ।
 दिग्नास्त्री० ना० पु० नगर विशेष जो भूतकाल में भगवान् लखड़ी राजधानी था ।
 दिग्नाशः ना० पु० स्वर्ग, आकाश ।
 दिग्नावस्पति० ना० पु० स्वर्गका राजा, इन्द्र ।
 दिग्नावस० ना० पु० वासर, दिन ।
 दिग्नावह० ना० पु० प्रत्यपवन ।

दिवा० ना० पु० दिन ।
 दिवाकर० ना० पु० सूर्य ।
 दिवान्ध० ना० पु० जो दिनमें नहीं देखसका यथा उलूक, चमगादड़ आदि ।
 दिवाला० ना० पु० ऋणभरने में अक्षमार्थ ।
 दिवारी० } ना० स्त्री० कार्तिक मासकी अमावस
 दिवाली० } का त्योहार, दीपमालिका ।
 दिविपद० ना० पु० देवता ।
 दिवेश० ना० पु० इन्द्र ।
 दिवौकस० ना० पु० देवता ।
 दिव्य० गु० शपथ, स्वच्छ, उज्वल, ना० स्त्री० लींग ।
 दिव्यतना० ना० स्त्री० अप्सरा ।
 दिव्यदृष्टि० ना० स्त्री० उज्वल दृष्टि अलौकिक ज्ञान ।
 दिव्यघसन० } ना० पु० उज्वलवस्त्र, स्वच्छ
 दिव्यघस्त्र० } कपड़े, साफ पोशाक ।
 दिव्यस्थान० ना० पु० उज्वल मकान, पवित्र स्थान ।
 दिव्यज्ञान० ना० पु० उज्वल ज्ञान, अलौकिक ज्ञान ।
 दिशा० } ना० स्त्री० पूर्वदिशा, ओर, तरफ ।
 दिशा० }
 दिशाशूल० ना० पु० दिग्शूल ।
 दिशि० ना० स्त्री० दिशा ।
 दिशिनाथ० ना० पु० दिशापाल ।
 दिशिप० } ना० पु० दिग्पाल ।
 दिशिपाञ्च० }
 दिष्ट० ना० पु० भाग्य, प्रारब्ध ।
 दिसावर० ना० पु० देसावर ।
 दिहरा० ना० पु० देवालय ।
 दिहली० ना० स्त्री० ल्योदी, चौखट, देहली ।
 दीखना० श्० क्रि० दिखाईदेना ।
 दीठा० शु० देखने-हारा ।
 दीठ० } ना० स्त्री० दृष्टि दर्शन ।
 दीठि० }

धनिद्या० ना० स्त्री० तेईसवां नक्षत्र ।
 धनी० पु० लक्ष्मीवान्, मालदार, ना० पु० मा-
 लिक, स्वामी ।
 धनुः० ना० पु० धनुष और नवीं राशि, चारि
 हाथका प्रमाण, भिलावा ।
 धनुषट० ना० पु० चिरांगी ।
 धनुर्द्धर० ना० पु० जिस मनुष्य के पास धनुष
 रहताहो, विशेष अहंम ।
 धनुर्विद्या० ना० स्त्री०, युद्धविद्या और नाण्य
 ज्ञान, तीरन्दाजी ।
 धनुष० ना० पु० कमान, कमटा ।
 धनुषाकृति० } ना० पु० धनुष के डीले ।
 धनुषाकार० }
 धनुषी० } ना० स्त्री० छोटा, धनुष, धनु की
 धनुही० } कमठी ।
 धनेश० ना० पु० पर्वी विशेष, कुम्भर शु० धन-
 चक्र ।
 धन्य० शु० प्रशंसाके योग्य, सुखी ।
 धन्ययासक० ना० पु० जवाता ।
 धन्यवाद० ना० पु० स्तुति, कृतज्ञता, शुभ मा-
 नना ।
 धन्यवादी० शु० कृतज्ञ, पूत, शुभगायक ।
 धन्या० ना० स्त्री० नदी विशेष ।
 धन्याक० ना० पु० धनिया ।
 धन्वन्तरि० ना० पु० वैद्यविशेष जो स्वर्ग ना-
 सियों के वैद्य हैं ।
 धन्वाया० ना० स्त्री० जवाता ।
 धन्वी० पु० धनुर्द्धर ।
 धप० } ना० पु० चपेट, चपड़, छलता ।
 धप्पा० }
 धक्का० ना० पु० कपड़े में जो सीस, कपड़े का
 दात ।
 धमक० ना० स्त्री० भयका दृक्क शब्द, परों का
 शब्द विशेष ।
 धमकना० ध० कि० डीतना, धड़कना, जगम-
 गाना, स० कि० पटकना ।

धमका० ना० पु० बड़ीधूप, सांत, भारी वस्तु के
 गिरने का शब्द ।
 धमकाना० स० कि० भिड़कना, बांटना ।
 धमकाहट० } ना० स्त्री० धड़की, बाट ।
 धमकी० }
 धमधूसड़० शु० मोटा, स्थूल ।
 धमन० ना० पु० नदकुल ।
 धमनी० ना० स्त्री० नारी, नली ।
 धमाका० ना० पु० तोप विशेष जो हाथी पर
 रखते हैं भारी वस्तु गिरनेका शब्द ।
 धमाकौकड़ी० ना० स्त्री० रौला, बलेझा ।
 धमाधम० ना० पु० पानपीटनेका शब्द, लगातार
 पीटना ।
 धमार० } ना० पु० तालविशेष या भीतविशेष ।
 धमाल० } जो हवा में गति हैं ।
 धमिना० ना० पु० सांप विशेष ।
 धमोका० ना० पु० खंजरी विशेष ।
 धमिहू० ना० पु० केशपारा, बेणी ।
 धर० ना० स्त्री० धरती, ना० पु० भड़ ।
 धरक० ना० स्त्री० धड़क ।
 धरका० ना० पु० धड़का ।
 धरणि० } ना० स्त्री० पृथ्वी, धरती, जमीन ।
 धरणी० }
 धरणीधर० ना० पु० शेषादि, सांप ।
 धरती० ना० स्त्री० पृथ्वी, जमीन ।
 धरधरा० ना० पु० बड़ाका ।
 धरज० ना० स्त्री० कड़ी ।
 धरना० स० कि० रखना, सोपना, पकड़लेना
 ना० पु० किसी के द्वारपर बड़ना ।
 धरनी० ना० स्त्री० धरणी, धरन ।
 धरनैत० ना० पु० धरना, देनेवाला ।
 धरपना० स० कि० दसाना, उपटना, कपटना ।
 धररुह० ना० पु० वृक्ष, पौधामात्र जो पृथ्वीपर उगे ।
 धरयना० स० कि० धिसना, टगड़ना ।
 धरहर० ना० स्त्री० सहाय, मदद, सहजराय

दीधिति० ना० स्त्री० किरण ।
 दीन० शु० कंगाल, अर्धीन, दुखी ।
 दीनता० } ना० स्त्री० दरिद्रता, अधीनता,
 दीनताई० } शरीर ।
 दीनदयालु० शु० दीनप्रतिपालक, शरीरपरवर,
 दीनोंपर दया करनेहारा ।
 दीनपाल० } शु० दीनदयालु, दीना का
 दीनप्रतिपालक० } पालने हारा ।
 दीनयन्धु० }
 दीना० स० कि० देना, दीनमहा ।
 दीनानाथ० शु० दीनपाल, दीनदयालु ।
 दीप० ना० पु० दिया, चिराग, दीप ।
 दीपक० ना० पु० दीप, दिया, राग विशेष, अ-
 जवाहन ।
 दीपदान० ना० पु० दिया जलाना ।
 दीपनी० ना० स्त्री० वटपत्री ।
 दीपनीवा० } ना० स्त्री० अजवाहन ।
 दीप्य० }
 दीपमाला० } ना० स्त्री० दिवाली ।
 दीपमाखिका० }
 दीपसुत० ना० पु० काजल ।
 दीपि० स० कि० दीप देकर ।
 दीपिका० ना० स्त्री० दीपकका प्रकाश ।
 दीपित० शु० दीपदिया गया ।
 दीप्त० शु० प्रज्वलित, प्रकाशित ।
 दीप्ति० ना० स्त्री० चमक, प्रकाश ।
 दीर्घ० शु० लम्बा, गुरु, क्रिमातिक अक्षर ।
 दीर्घक० ना० पु० श्वेतगीरा, सफेदगीरा ।
 दीर्घकोलक० ना० पु० अंकोल ।
 दीर्घजंघ० ना० पु० ऊंट ।
 दीर्घजिह्वा० ना० स्त्री० राजा विरोचन की
 कन्या ।
 दीर्घदण्ड० ना० पु० अरण्ड, एरण्ड, रण्ड ।
 दीर्घदर्शी० शु० अमरशोभा, दूरअन्देशी ।
 दीर्घपत्तक० ना० पु० सहस्रन, पुनर्नवा ।
 दीर्घपत्ता० ना० स्त्री० चिरपोंछ ।

दीर्घपुष्पक० ना० पु० मदार, आरु ।
 दीर्घपृष्ठ० ना० पु० साप ।
 दीर्घमूल० ना० पु० जवाभा, शाहसरी ।
 दीर्घमूलक० ना० पु० विधारा ।
 दीर्घसूत्री० ना० पु० जो बिलम्बसे कामकरे ।
 दीवट० ना० स्त्री० दीपक रखने का आकर ।
 दीवली० ना० स्त्री० छोटा दिया ।
 दीवा० ना० पु० दीपक, दिया ।
 दीसना० स० कि० देखना ।
 दीसा० स० कि० भू, देता, देखता ।
 दी

दशरथाहि दिग्मालन उपहार) ।

दीक्षा० ना० स्त्री० मन्त्र का ग्रहण, उपदेश ।
 दीक्षित० शु० दीक्षा कियागया, ना० पु०
 हण जाति विशेष ।
 दु० गु० दो, २ ।
 दुः अन्व्य शब्दको आदि में निषेध वा निन्द
 का सूचक ।
 दुःकर्णी० ना० स्त्री० किरवाली ।
 दुःख० ना० पु० पीडा केश, कष्ट, व्यथा ।
 दुःखडा० ना० पु० आपदा, दुर्गति ।
 दुःखदाई० शु० दुःखदाता ।
 दुःखदाता० शु० दुःख देनेहारा ।
 दुःखना० अ० कि० पीडा होना ।
 दुःखाना० स० कि० दुःख देना ।
 दुःखित० }
 दुःखिया० } शु० पीडित, क्लेशित, अमान
 दुःखियारा० } कंगाल ।
 दुःखियारी० }
 दुःखी० }
 दुःखशील० शु० जिसका स्वभाव दुःख हो ।
 दुःप्रघर्षिणी० ना० स्त्री० श्वेत फरस ।
 दुःसमय० ना० पु० विपत्तिकाल ।
 दुःस्पर्शा० ना० स्त्री० जवाभा ।
 दुःकर० ना० पु० दोनों हाथ ।

कृत प्रह्लाद चरित्रे यथा (यहि संसार असार
महँ राम नाम श्रुतिसार, रविसुत पुर धरहरकरे-
नरहरि नाम उदार) ।

धरा० ना० स्त्री० धरती, पृथ्वी, कि० भू० खस्ता,
पकड़ा ।

धरातल० ना० पु० पृथातल, रूप, जमीन ।

धराधर० ना० पु० शेषादि ।

धराना० अ० कि० ऋषी होना, सं० कि० रख-
वाना; पकड़ना, लदाना ।

धरासुर० ना० पु० ब्राह्मण ।

धरित्री० ना० स्त्री० पृथ्वी, भूमि ।

धरोहर० ना० स्त्री० धाती, सौंप, अमानत ।

धरौना० ना० पु० पुनर्विवाह ।

धर्त्तव्य० गु० ब्राह्म ।

धर्त्ता० ना० पु० ऋषी, धारणिक ।

धर्त्तर० ना० पु० धर्त्ता, जिस के फल में विप
होता है ।

धर्म० ना० पु० न्याय, कीर्ति, पुण्य, व्यवहार,
चाल, गुण, काम, मज्जहम ।

धर्मकूप० ना० पु० काशीनी में स्थान विशेष ।

धर्ममूल० ना० पु० वेद शास्त्र, ग्रन्थ ।

धर्मराज० ना० पु० यमराज, नीतियुत राजव्य,
राजा युधिष्ठिर ।

धर्मशाला० ना० स्त्री० धर्म विचारने का स्थान ।

धर्मशील० ना० गु० भक्तिमान्, कीर्तिमान्,
साधु ।

धर्माधिकार० ना० पु० पुण्यकर्म की पदवी
भयंकर का काम ।

धर्माधिकारी० गु० जो पुण्यकर्म का सिर-
ताज हो ।

धर्मात्मा० गु० कीर्तिमान्, साधु, ना० पु० ईश्वर-
रत्न में जो तीसरा है उसका नाम ।

धर्माध्यक्ष० गु० न्यायी, विचारकर्त्ता ।

धर्मावतार० ना० पु० धर्मका अवतार ।

धर्माज्ञा० ना० स्त्री० धर्मकी आज्ञा ।

धर्मिष्ठ० } गु० धर्ममें निरतकी निहाई, पुण्यात्मा ।
धर्मी० }

धर्मण० ना० पु० धांसन, रगड़ना ।

धर्मना० स० कि० कोपना, रगड़ना ।

धवल ना० पु० शुक्लवर्ण ।

धवलाख्य० ना० पु० पिशाच ।

धवलागिरि० ना० पु० पर्वत विशेष ।

धसकना० अ० कि० गड़ना, धसाना ।

धसन० ना० पु० धसान, धसने की अवस्था ।

धसना० अ० कि० धसड़ना, धुमना, धिरना,
पैटना ।

धसान० ना० पु० दलदल, गड़ना, धसान ।

धसाना० स० कि० धुसेड़ना, धुसेड़वाना, धस-
खना, पैटवाना, पिशाना ।

धसाव ना० पु० धसान ।

धांधल० ना० पु० नटखटी, फरफद, फास ।

धांधली० गु० अगडाल, नटखट ।

धांगर० ना० पु० जाति विशेष ।

धांयधांय० ना० स्त्री० तांपाई शब्द धजास ।

धांसना० स० कि० खांसना, खोलना ।

धांसी० ना० स्त्री० खांसी, खोली ।

धाई० ना० स्त्री० दूध पिलाने हारी ।

धाक० ना० स्त्री० ठाक, प्रताप, कीर्ति, भय-
र, टाक ।

धागा० ना० पु० सूत, डोरा ।

धाता० ना० पु० ब्रह्मा, सूर्य ।

धातु० ना० पु० तांबा आदि, वीर्य, क्रियावत्
शब्द मसदर ।

धातुमाक्षिक० ना० पु० सोनामन्त्री ।

धातुसाधित० गु० जो धातु से बनाया गया ।

धातिवतर० गु० धातु से रहित ।

धान० ना० पु० अन्न विशेष ।

धाना० अ० कि० दौड़ना, टहलकरना, सं० कि०
पूजना, अर्चन ।

धानी० ना० स्त्री० धान विशेष, धान के तट
रंग विशेष ।

दुकान० ना० पु० दोनों कान, हाट ।
 दुकाल० ना० पु० विपत्तिबाल, इषित ।
 दुकूल० ना० पु० रेशमी वस्त्र विशेष, दोनों
 तट ।
 दुख० ना० पु० दुःख ।
 दुखद०
 दुखदा० } गु० दुःखदाई, कष्ट देनेवाला ।
 दुखदाई० }
 दुखदाता० }
 दुखत्रय० ना० पु० तीन दुख अर्थात् दैविक,
 दैहिक, भौतिक, अथवा कष्ट, पित्त और वात ।
 दुखारी० }
 दुखित० } गु० दुखिया, पीड़ित ।
 दुखिया० }
 दुखियारा० }
 दुखियारी० }
 दुखी० }
 दुखेन० ना० पु० दुःखयुत, दुःखकरके ।
 दुखर० ना० स्त्री० चियारी, कैंची जो छपर में
 लगाते हैं ।
 दुखन० } गु० दुःख, दोहरा, दुना ।
 दुखना० }
 दुग्ध० ना० पु० दूध ।
 दुग्धिका० ना० स्त्री० दुग्धिया, पीया ।
 दुग्धिनी० ना० स्त्री० कढ़ई तौनी ।
 दुग्धी० ना० स्त्री० दुग्धिया पीया, सड़ई ।
 दुचित० } गु० निसका मन दो घोर लगाहो ।
 दुचिता० }
 दुचिताई० ना० स्त्री० चिन्ता, दुविधा, श्रम ।
 दुचिता० गु० दुचित ।
 दुत० अव्य० दूर ।
 दुतकार० ना० पु० उराहना, भिड़क ।
 दुतकारना० स० कि० सांसना, कुत्तेको डाँटना ।
 दुतकारी० ना० स्त्री० मांस, ताइन ।
 दुताना० स० कि० दवाना, डाँटना ।
 दुति० ना० स्त्री० चटक, भड़क, सुन्दरता ।

दुतिवन्त० } ना० गु० भड़कीला, चमकदार,
 दुतिवान् } सुन्दर, सूर्य चन्द्रादि यथाई, राम
 चन्द्रिकायां यथा (दुतिवन्त को विपदा, अति
 कीर्ती, परणी कह इन्दू क्यू गदि दीर्ही) ।
 दुदही० } ना० स्त्री० श्रौषधि पीया विशेष ।
 दुही० }
 दुधा० ना० स्त्री० दोजगह, दोप्रकार ।
 दुधार० } गु० दूध देनेहार, दो धार की ।
 दुधारो० }
 दुधौल० गु० दूध देनेहारी ।
 दुन्दुभि० ना० स्त्री० नकार, निशान, देख
 विशेष निसको बालि ने माराया ।
 दुपट्टा० ना० पु० थोड़ने का वस्त्र विशेष ।
 दुपद० ना० पु० दो पाँववाला अर्थात् मनुष्य ।
 दुपहरिया० ना० स्त्री० पुष्प विशेष ।
 दुपध्रा० ना० स्त्री० सन्देह, अयइ ।
 दुपला० गु० दुर्वल ।
 दुपलाई० } ना० स्त्री० दुर्वलता ।
 दुपलापा० }
 दुधिधा० ना० स्त्री० सन्देह, झगंच, शक ।
 दुधिधि० ना० स्त्री० दोतरह, दोप्रकार ।
 दुमुद्य० ना० पु० राक्षस विशेष, दोमुखवाला ।
 दुमाव० ना० पु० इमिधा ।
 दुमापिया० } गु० दो भाषाओं का जाननेवाला ।
 दुमापी० }
 दुर० अव्य० शब्द के प्रथम में संयोगिक अव्ययः
 निसका अर्थ कु, पठिन, ना० स्त्री० कानना,
 भ्रूण जो लड़के पहिन्ते हैं ।
 दुरतिक्रम० गु० कठिन, मुश्किल ।
 दुरद० ना० पु० हाथी ।
 दुरध्व० ना० स्त्री० कुमार्ग, बुरी राह ।
 दुरना० थ० कि० छुपना, सुकना ।
 दुरदृ० ना० पु० मन्दमाय ।
 दुरन्त० गु० परान्त, यतिन, अन्तहीन ।
 दुराचार० गु० निसका न्यवहार निन्दित है ।

धानुक० ना० पु० धनुहार, कामन्दार और जातिविशेष ।

धानिय० ना० पु० धनिया ।

धान्य० ना० पु० धनिया, धान, धन, माल ।

धान्यक० ना० पु० धनिया ।

धाप० ना० स्त्री० हाथ से दो तिहाई का माप, जहांतक मनुष्य एक सांस में दौड़सके ।

धाम० ना० पु० घर, स्थान, तैज, तन, किरण, ज्योति, वैकुण्ठ, ब्रह्म ।

धामा० ना० पु० बैतकी टीकरा ।

धामिन्० ना० पु० सूर्य ।

धाय० ना० स्त्री० धाई ।

धायमारजा० अ० कि० पुकार के रोना, दौड़के मारना ।

धार० ना० स्त्री० लकीर, बहाव, अस्त्र की बाढ़ ।

धारक० ना० पु० ऋणी ।

धारण० ना० पु० धारणे की अवस्था, मानलेना, स० कि० धारना, मंजूर करना ।

धारणा० स० कि० रत्नना, संभालना, धरना, ना० स्त्री० योगकर्मविशेष ।

धारना० स० कि० धारणा ।

धारस० ना० स्त्री० दाहिंस, धारज ।

धारा० ना० स्त्री० प्रवाह, बहाव, रीति ।

धारावाहिक० शु० विच्छेद बिन्दु ।

धारि० ना० स्त्री० डाकूकी सेना ।

धारित० गु० जो धारण किया गया ।

धारी० ना० स्त्री० लकीर, पोथा विशेष ।

धात्तराष्ट्र० ना० पु० कालाहंस, यथा—राज हस्तास्तुतेचञ्चरथैर्लोहितैःसिताः । मलिनैर्मङ्गिका ल्यास्तेधार्तराष्ट्रैःसितैः । इत्यमरः धतराष्ट्र को पुत्र संयोधन ।

धाव० ना० पु० पोथाविशेष, दौड़ ।

धावच्छाः० ना० पु० दौड़नेवाला खरगोश ।

धावन० ना० पु० सन्देहाया, दूत, हरफारह ।

धावना० अ० कि० दौड़ना, फिराकरना, चढ़ना, खड़ना, अर्चना ।

धावनी० ना० स्त्री० दूती, छोटी कपड़ी, श्वेत ।

धावमान० गु० दौड़ताभया ।

धावा० ना० पु० दौड़, चढ़ाई, वृत्तविशेष ।

धाह० ना० स्त्री० शराय, कूक ।

धात्री० ना० स्त्री० धरती, सरस्वती, धाई, ना० पु० धावला ।

धिकू० अ० अ० निन्दा का बोधक शब्द फिट, लानत, कुञ्ज न मये ।

धिकार० ना० पु० फिटकार, निन्दा, शाप, लानत ।

धिकारना० स० कि० निन्दाकरना, फिटकारना, लानत करना ।

धिकारी० गु० शापित, निन्दित, फिटकारी ।

धिन्० अ० अ० धिक् ।

धिया० ना० स्त्री० बेटी, पुत्री ।

धिरयो० कि० धमकाया, डंटा ।

धिराना० स० कि० धमकाना, डांटना ।

धिपण० ना० पु० ब्रह्मा, बृहस्पति ।

धिपणा० ना० स्त्री० बुद्धि ।

धी० ना० स्त्री० बुद्धि, बेटी ।

धीति० ना० स्त्री० प्रतीति, विश्वास, कविवाक्य यथा—मोहिन्द्रावैद्ययससि त्कृतेनललहितजाय, धीतिलालतेरोकहा दधिनुराय ब्रमस्ताय ।

धीम० ना० पु० डील, कामलता ।

धीमर० ना० पु० कहारजातिविशेष ।

धीमा० पु० डीला, कामल, मय्यम ।

धीमाई० ना० स्त्री० डील, धारज, उलती ।

धीमान्० शु० बुद्धिमान्, चतुर ।

धीमेधीमे० अ० अ० हीलेहीले ।

धीय० ना० स्त्री० बुद्धि, कन्या ।

धीर० गु० डाला, सन्तोषी, जीवटा, रिपर, ना० पु० धीरज ।

धीरज० ना० पु० धैर्य, रिगगा, साहस, सन्तोष ।

दुराचारी० गु० जिसका व्यवहार निन्दित है ।
 दुरात्मा० गु० पापी, दुष्ट ।
 दुराघर्ष० गु० अडर, अभय, अशंक ।
 दुराना० स० कि० दुपाना, लुफाना ।
 दुराराध्य० गु० कष्टसे सेवने के योग्य ।
 दुरारोह० ना० पु० ताड़वृक्ष ।
 दुरालभा० } ना० स्त्री० जवासा ।
 दुरात्मभा० }
 दुराव० ना० पु० छुपाव, छल ।
 दुराशा० ना० स्त्री० कुत्सितआशा, दुष्टवृष्णा ।
 दुरित० ना० पु० पाप दोष ।
 दुरी० ना० स्त्री० खेल्ने दो पड़ना वा दूथा ।
 दुरुस्वा० गु० जिसकी दोनों ओर एकसां होवे,
 यह शब्द फारसी का है ।
 दुरेफ० ना० पु० भैरा ।
 दुर्ग० ना० पु० गढ़, घाट, किला, अगम ।
 दुर्गति० ना० स्त्री० कुगति, घुरीअवस्था, नरक,
 दरिद्रता ।
 दुर्गन्ध० ना० स्त्री० } दुर्गन्धि, बाप, कु-
 दुर्गन्धि० ना० स्त्री० } बास ।
 दुर्गन्धा० ना० स्त्री० पियाज, गु० कुवासित ।
 दुर्गम० गु० औषट, गम्भीर, अगम्य, कठिन ।
 दुर्गमता० ना० स्त्री० गम्भीरता, औषटता ।
 दुर्गा० ना० स्त्री० भगवती विशेष ।
 दुर्गामी० गु० कुगामी, कुमार्गी, बदचलन ।
 दुर्घट० गु० जो कष्टसे, हासके, कृपाट, औषट ।
 दुर्जन० ना० पु० शत्रु, गु० दुष्ट, अपकारी ।
 दुर्जनता० } ना० स्त्री० शत्रुता, अपकारी-
 दुर्जनताई० } इष्टता ।
 दुर्जय० गु० बलवान् शत्रु, जो पराभव न होसके ।
 दुर्देशा० ना० स्त्री० दुर्गति, विपत्ति ।
 दुर्नाम० ना० पु० बदनाम, अपयश ।
 दुर्नामी० गु० बदनाम-अपयशी, अपकीर्ती ।
 दुर्नाव० ना० पु० राक्षस विशेष, कुत्सितनाद ।

दुर्नीति० ना० स्त्री० कुचाल, अनीति, अन्याय ।
 दुर्बल० गु० दुर्बल, निर्बल, अतमर्थ ।
 दुर्बलता० ना० स्त्री० निर्बलता, अतमर्थ ।
 दुर्भगा० गु० अभागिनी स्त्री, जिसका स्वामी
 प्यार नहीं करता है ।
 दुर्भाग्य० गु० प्रारब्धहीन, अभागी ।
 दुर्भाव० ना० पु० दुरास्वभाव ।
 दुर्मिक्ष० ना० पु० अकाल, काल, कुसम्प ।
 दुर्मति० ना० स्त्री० कुबुद्धि, मूर्खता ।
 दुर्मद० गु० मस्त, मदगलित मत्त, सिद्धी ।
 दुर्मनी० ना० स्त्री० दुर्वास ।
 दुर्मुख० ना० पु० नागविशेष वानरों का एक राजा
 गु० कठोर भाषी ।
 दुर्मूल्य० गु० महंगा ।
 दुर्याग० ना० पु० बहुतेरे बापकों का समूह कुल-
 गति ।
 दुर्योधन० ना० पु० राजा, कौरवापीरा ।
 दुर्लभ० गु० जो दुःखसे मिले, अनोखा ।
 दुर्लक्षण० ना० पु० अशुभ चिह्न ।
 दुर्लचन० ना० पु० घुरीबात, गाली ।
 दुर्लवण० ना० पु० बुरारूप, कुवर्ण, चांदी ।
 दुर्लवणता० ना० स्त्री० कुरूपता, चांदी ।
 दुर्वाक्ष्य० } ना० पु० घुरीबात, गाली ।
 दुर्वाच्य० }
 दुर्वाद० ना० पु० कुत्सितवाची, घुरीबात ।
 दुर्वासा० ना० पु० घुरीविशेष ।
 दुर्बुद्धि० ना० स्त्री० मूर्खता, कुबुद्धि, नाशानी ।
 दुर्बुद्धी० गु० नादान, कुबुद्धि, मूर्ख ।
 दुर्बुद्धी० ना० स्त्री० ककर चाल, घोड़ेकी एक-
 कारकी चाल विशेष ।
 दुर्बुद्धा० ना० पु० } दोलहा, दुग्ग ।
 दुर्बुद्धी० ना० स्त्री० }
 दुर्बुद्धी० ना० स्त्री० पशुका पिछले दाँपोंकी
 रना ।
 दुर्बुद्धा० ना० पु० बर, बनरा, दुर्बुद्धा ।
 दुर्बुद्धिन० ना० स्त्री० नरबह, यधु, बना बनरी ।

धीरर्जा० गु० दृढ, सन्तोषी, स्थिर ।
 धीरता० ना० स्त्री० धैर्य, स्थिरता, साहस ।
 धीरा० गु० कामल, सन्तोषी, साहसी, विचार-
 शील ।
 धीरिया० ना० स्त्री० वेद ।
 धीरी० ना० स्त्री० नेत्रकी पुतली ।
 धीरु० गु० दृढ, धीरर्जा, बहादुर ।
 धीवर० ना० पु० धीमर, कैवर्त्त ।
 धुंगार० ना० पु० झौंकन, वधार ।
 धुंगारना० स० कि० वधारना, झौंकना ।
 धुंधकार० ना० पु० अंधेरा ।
 धुंधकारना० अ० कि० धुवां समेत आग का
 जलना ।
 धुंधारना० अ० कि० अन्वाहोना ।
 धुंधला० गु० अन्धा, अन्धला, ना० पु० अंधरा ।
 धुंधलाई० ना० स्त्री० अंधेरा, अंधलाई ।
 धुंधेला० गु० छली, ठग ।
 धुकड़ी० ना० स्त्री० छोटी धैला पेसा रखने की
 होती है ।
 धुकधुकी० ना० स्त्री० कंठका भूषणविशेष, घघ-
 राहट, सन्देश, ध्यान ।
 धुत्ता० ना० पु० धूत्ता ।
 धुन० ना० स्त्री० चसका, लौ, अग्रास, परिश्रम,
 दहक, उमंग ।
 धुनकना० स० कि० तुमना, धुनना ।
 धुनना० स० कि० तुमना, पीटना, मारना ।
 धुनियां० ना० पु० विहना, तुमनेत्राला ।
 धुन्ना० स० कि० धुनना ।
 धुमला० गु० अन्धा, अन्धा, अंधेरा ।
 धुमलाई० ना० स्त्री० अंधियारा ।
 धुर० ना० पु० आरम्भ, अवधि, पास, बोझ ।
 धुरपद० ना० पु० गीतविशेष ।
 धुरसांभ० ना० स्त्री० गोधूली, सायंकाल ।
 धुरंधर० गु० घुरी धनेवाला, ना० पु० धव-
 वृष ।
 धुरवा० ना० पु० मध, काव्येयथा, धुधुधारे

धुरवा चहु पाता, समुक्ति परे नहि शक्ति
 अकासा ।
 धुरव्य० ना० पु० मेघ ।
 धुरियाना० स० कि० मट्टियाना, धूललगाना, धूल
 फेंकना ।
 धुरी० ना० स्त्री० काष्ठ वा लोहि की वस्तु जिसपर
 पहिया चिरता है ।
 धुलना० अ० कि० स्वच्छहोना, पाकहोना,
 धोना ।
 धुलवाना० स० कि० धुलाना ।
 धुलाई० ना० स्त्री० वस्त्र धोने का काम वा
 पैसा ।
 धुलाना० स० कि० मैल निकलाना, वस्त्र की
 स्वच्छ करवाना ।
 धुलेंडी० ना० स्त्री० होलीका दूसरा दिन ।
 धुस्सा० ना० पु० लोह, ऊर्णवत्प्रविशेष ।
 धूआं० } ना० पु० धुवां, धूम ।
 धूवा० }
 धूवारा० ना० पु० धुआं निकलने का स्थान ।
 धुधरा० ना० पु० अंधेरा ।
 धूत० गु० धूत्त ।
 धूति० ना० स्त्री० ठग, छली, यथा-तुलसी उ-
 वर सेवकहि सके न कलियुग धूति ।
 धूना० ना० पु० राल ।
 धूनी० ना० स्त्री० धुवां, आग जो साधु लोग
 तापते हैं गु० स्थिर ।
 धूप० ना० स्त्री० धाम, सुगन्धि, द्रव्य जो पूजा
 में जला के चढ़ाते हैं, वृक्षविशेष वा उसका
 काष्ठविशेष ।
 धूपना० स० कि० राललगाना, धूपजलाना ।
 धूपित० गु० धूप दियागया ।
 धूम० ना० पु० धुवां ना० स्त्री० रौला, नलेडा,
 ज्वाला, भौद ।
 धूमकेतु० ना० पु० अग्नि ।
 धूमधाम० ना० पु० धुवांका घर, इहा, राल,
 ननाद ।

दुखार्हं ना० स्त्री० शोभनेका यत्न विशेष ।
 दुखारं ना० पु० प्यार, स्नेह ।
 दुखारा० ना० पु० } गु० प्यारयुत, प्यारा,
 दुखारो० स्त्री० } प्यारो, लाडिल, लाडिली
 दुवारं ना० पु० द्वार ।
 दुविद् ना० पु० धानर विशेष ।
 दुधे० ना० पु० मास्यजाति विशेष ।
 दुशाला० ना० पु० पाटवस्त्र विशेष ।
 दुस्करं गु० जोकष्टसे क्रियानाय ।
 दुष्कर्म० } ना० पु० कुकर्म, पाप ।
 दुष्कृत० }
 दुष्कर्मो० गु० कुकर्म, पापी ।
 दुष्टं गु० सुरा, उत्पाती, नीच, कठिन ।
 दुष्टता० ना० स्त्री० नीचता, पाप, झुठई ।
 दुष्टजन्तु० ना० पु० सर्पादि, मूमी जानवर ।
 दुष्टा० ना० स्त्री० बिनाल, सापिन, पापिन ।
 दुस्तरं गु० जोतरने के योग्य न होने, कठिन,
 श्रम्य ।
 दुस्पर्शा० ना० स्त्री० छोटी कटई ।
 दुसहं } गु० जो सहा न जाये, असह्य ।
 दुस्सहं }
 दुहना० स० कि० दूधनिकाटना, निचोड़ना ।
 दुहनी० ना० स्त्री० पात्र जिसमें दूधदुहते हैं ।
 दुहार्हं ना० स्त्री० न्यायके लिये पुकार हाय हाय,
 शपथ, किरिया, कसम ।
 दुहार्हतिहार्हं ना० स्त्री० कर्षवार दुहार्हकरना ।
 दुहाना० स० कि० दूध निकलवाना ।
 दुहारं ना० पु० दूध दोहने वाला ।
 दुहित्वा० ना० स्त्री० कन्या, पुत्री ।
 दुहेला० गु० कठिन, भारी ।
 दुभा० ना० पु० दोका अन्न ।
 दुज० ना० स्त्री० द्वितीया तिथि ।
 दुजावरं ना० पु० जिसने दो विवाह किये ।
 दुजा० गु० दूसरा ।
 दुतं ना० पु० समाचार पहुँचानेहारा, संदेशिया,
 हरकारह, शेतान, पैगम्बर ।

दूतता० ना० स्त्री० चालाकी, तोड़फोड़ और
 दूतका काम ।
 दूती० ना० स्त्री० कुटनी ।
 दूधं ना० पु० दूध, गोरस, चीर ।
 दूधियां गु० दूधकासा, ना० पु० अनेक पौधों
 का नाम जिनका रस दूध कासा होता है ।
 दूधीं गु० दूधका, इधैला, ना० पु० आहार,
 मांछी, दुधिया पौधा ।
 दूना० गु० द्विगुण, दोहरा ।
 दूधं ना० स्त्री० दूधी, घास विशेष ।
 दूवरं गु० कठिन दुबैल ।
 दूधियां ना० स्त्री० तृण की हरियारी ।
 दूरं ना० स्त्री० अन्तर, बीच, दूर, व्यवधान,
 अन्ध० परे ।
 दूरगमं ना० पु० गदहा ।
 दूरतरं गु० बहुत दूर ।
 दूरदर्शकं ना० पु० दूरबीन, यन्त्र, गु० दूरका
 देखने वाला, अपशोची ।
 दूरदर्शीं ना० पु० धिक्की, दूरअंदेश ।
 दूरदृगं ना० पु० गिर ।
 दूरचीनं ना० स्त्री० दूरकी वस्तु देखने का यन्त्र,
 गु० दूरका देखने हारा शब्दकारसी का है ।
 दूरमूलं ना० पु० जवासा ।
 दुर्घां ना० स्त्री० तृण, विशेष, दूधघास ।
 दूषकं गु० दोष लगानेहारा, दूषणकर्ता, डोकने
 वाला, विटोकरनेहारा ।
 दूषणं ना० पु० निशाचर विशेष, दोष ।
 दूषितं गु० दोष लगायागया, दोष युत ।
 दूष्यं गु० निन्दित, कुत्सित ।
 दूसरां गु० दूजा, अन्य ।
 दृगं ना० तु० नयन, नेत्र, आंख ।
 दृगञ्जलं ना० पु० नयनकार, पलककी चाल ।
 दृढं पौदा, अचल, फटा, मजबूत ।
 दृढतां ना० स्त्री० } पौदाई, पौकल, पायदारी ।
 दृढत्वं ना० पु० }

धूमपुष्पा० ना० स्त्री० अग्नि जिह्वा विशेष ।
 धूमयोनि० ना० पु० मेघ, बादल ।
 धूमर० }
 धूमरा० } गु० भद्रमैला, धूमला, धुवां का
 धूमल० } रंग ।
 धूमला० }
 धूमशिखा० ना० पु० अग्नि ।
 धूमशीघ्रा० ना० स्त्री० अग्निजिह्वा विशेष ।
 धूमा० गु० धूमला ।
 धूमी० गु० उत्पाती जिसकी धूम होरही ।
 धूम्र० ना० पु० धुवां, ऊट ।
 धूम्रपान० ना० पु० धुवां का पीना ।
 धूम्रपानयंत्र० ना० पु० हुका ।
 धूम्रयोनि० ना० पु० मेघ, बादल ।
 धूम्राक्ष० ना० पु० राक्षस विशेष ।
 धूर० ना० स्त्री० धूल ।
 धूरा० ना० पु० जो रोमी के हाथ पांव, आदि में
 रगड़ते हैं ।
 धूरि० ना० स्त्री० धूलि ।
 धूरी० ना० स्त्री० धूरी ।
 धूर्ति० गु० नटखट, राठ, टग, ना० पु० धूर्त ।
 धूर्तता० ना० स्त्री० टगई, शठता ।
 धूल० }
 धूलि० } ना० स्त्री० रज, रेणु, लाक ।
 धूसना० सं० क्रि० ठाँसना, भरना, दबाना ।
 धूसर० गु० मिट्टी लगाये हुये ना० पु० जाति
 विशेष ।
 धूसरि० ना० स्त्री० धूलि ।
 धूहा० ना० पु० धोना, पंजी आदि के धराने
 के लिये खेतमें गाड़ते हैं, वृद्ध ।
 धूक० }
 धूग० } अर्थ० धिक् ।
 धूत० गु० जो धारण कियाजाय, वृत्तान्त ।
 धूतराष्ट्र० ना० पु० दुयोधन का पिता ।
 धूति० ना० स्त्री० दृढ़ता कामों में धीरज ।

धृष्ट० गु० विशारद, चतुर, परिपूर्ण, पण्डित, शाली ।
 धौगमुष्टी० ना० स्त्री० धूसमधूसा ।
 धेनु० ना० स्त्री० गाय वा बल्लडासमेत गाय,
 दुधर गाय ।
 धेनुक० ना० पु० स्वरूपी दैत्य विशेष ।
 धेनमति० ना० स्त्री० गोमती नदी ।
 धेला० ना० पु० अथला ।
 धेली० ना० स्त्री० अथेली, आधा रुपया ।
 धैर्य० ना० पु० धीरता, धीरज ।
 धैर्यवान्० गु० धीरजी, सन्तोषी ।
 धैवत० ना० पु० रांगका स्वर विशेष ।
 धोआ० ना० पु० फलकी भंडाली ।
 धौई० ना० स्त्री० भिगोई हुई दाल ।
 धौवाला० ना० पु० धुवानिकलने का मार्ग ।
 धोक० ना० स्त्री० देवता के आगे झुकना, आइ
 तकिया ।
 धोकड़० गु० महाबली ।
 धोखा० ना० पु० भ्रम, धल, धांधल ।
 धोतरा० ना० पु० धूर्त, पातखंडी ।
 धोती० ना० स्त्री० कटि में पहिरने का बरू
 विशेष ।
 धोना० सं० क्रि० पतारना, फीचना ।
 धोप० ना० स्त्री० खड्ग विशेष ।
 धोच० ना० स्त्री० पडालन, धोनेका काम ।
 धोविन० ना० स्त्री० धोवीकी स्त्री ।
 धोषी० ना० पु० कपडा धोनेवाला ।
 धोरी० ना० स्त्री० मुख्यतः जो गाड़ी में सब
 से पहिले मचाया जाता है ।
 धौ० ना० पु० वृक्ष विशेष ।
 धौं० अर्थ० अथवा, वा, मार्ग, या ।
 धौंक० ना० स्त्री० हुकाइट, कारी, आरा ।
 धौंकना० सं० क्रि० धौंकनी से आगिफूकना ।
 धौंकनी० ना० स्त्री० धौंकी खलती जिससे
 आगिकी प्रचण्ड करत है, निगाती ।
 धौंका० ना० स्त्री० धौंकनी ।

दृढाना० स० कि० पोढ़ा करना ।
 दृश्य० गु० जो देखने के योग्य है, जो देखाना है ।
 दृष्ट० गु० जो देस्ता गया, प्रकट ।
 दृष्टिच्छूट० ना० पु० पहेली ।
 दृष्टान्त० ना० पु० उपमा, उदाहरण, मिसाल ।
 दृष्टि० ना० स्त्री० दर्शन, नजर, दीर्घ, आंख ।
 दृष्टिमोचर० गु० जो आंख के सामने हो ।
 दृष्टद्वेद० ना० पु० पापाप्य भेद ।
 दृष्टमर्म० ना० पु० पन्ना, रत्न ।
 देखाड़ा० ना० पु० दीमकका बनाया हुआ घर ।
 देखना० स० कि० लगाना, दृष्टिकरना, बिलो-
 कना ।
 देखवैया० ना० पु० देखनेहारा ।
 देनेलेन० ना० पु० व्यवहार ।
 देना० स० कि० देनालना, सौंपना ।
 देमारना० स० कि० पटकना, फेंक देना ।
 देय० } गु० देनेके योग्य ।
 देयमान० }
 देर० } ना० स्त्री० बिलम्ब, दील ।
 देरी० }
 देव० ना० पु० देवता, मेघ, देना ।
 देवऋषि० ना० पु० देवर्षि, नारदमुनि ।
 देवक० ना० पु० देवकी का पिता, देवता, गु०
 देनेहारा ।
 देवकांडर० ना० पु० चनसर ।
 देवकी० ना० स्त्री० श्रीकृष्ण की माता ।
 देवकुसुमा० ना० स्त्री० लीला ।
 देवगरी० ना० स्त्री० रागिनी विशेष ।
 देवगृह० ना० पु० देवालय, चौहरा ।
 देवठान० ना० स्त्री० देवोत्थानी कार्तिकमुदी एका-
 दशी को ये त्योहार होता है ।
 देवतरु० ना० पु० कल्पवृक्ष, काकद्वंद्व ।
 देवता० ना० पु० देव, सर, करिश्तह ।
 देवताण्ड० ना० पु० देवदासी ।
 देवदत्त० ना० पु० संभाविशेष, गु० जो देवता
 का दिया हुआ है ।

देवदास० ना० पु० वृक्ष वा काठ विशेष ।
 देवधुनि० ना० स्त्री० अंगगानी ।
 देवनागरी० ना० स्त्री० हिन्दी के यथार्थ अक्षर
 देवनारि० ना० स्त्री० देवता की स्त्री ।
 देवपूजक० ना० पु० देवता की पूजा करनेवाला,
 मौलिक, मूर्तिपूजक ।
 देवपूजा० ना० स्त्री० देवता का पूजन ।
 देवधू० ना० स्त्री० देवता की पत्नी, रागरानी,
 सीतानी, रामचन्द्रिकायां, देवधूजबई हरिल्यालो-
 यों तबही तजि ताहि न थाया ।
 देवमुनि० ना० पु० नारदजी ।
 देवर० ना० पु० पतिका छेयागई ।
 देवराणी० ना० स्त्री० देवर की स्त्री, देवताओं
 देवराणी० की रानी अर्थात् इन्द्राणी, रामचन्द्रि-
 कायां । देवराजा लिये देवराणी मनापुत्र संसु-
 भूलोक में सोहियो ।
 देवरिपु० ना० पु० दैत्य, निशाचर ।
 देवर्षि० ना० पु० नारदमुनि ।
 देवृ० ना० पु० देवर ।
 देवल० ना० पु० मन्दिर, ठाकुरद्वारा, चौहरा,
 गया, गुलसी देवल देवको लागे लाखे करोरि,
 कागधभांगइगिभलो महिमा मई न थोरि ।
 देववल्लभा० ना० स्त्री० केशर, जाकरान ।
 देववाणी० ना० स्त्री० संस्कृत ।
 देववृक्ष० ना० पु० कल्पवृक्ष ।
 देवसर० ना० पु० मानसरोवर ।
 देवश्रेणी० ना० स्त्री० सुरहरी, देवता का
 समूह ।
 देवस्त्री० ना० स्त्री० देवता की पत्नी ।
 देवस्थान० ना० पु० देवालय, देवता का घर ।
 देवस्व० ना० पु० देवता का धन ।
 देवा० ना० पु० देवता, देनेहारा ।
 देवांगना० ना० स्त्री० देवी, देवतामा ।
 देवारि० ना० पु० दैत्य, निशाचर ।
 देवाल० ना० पु० देनेहारा ।

धौताल० गु० धनवान्, बलवान्, सुरमा, दुर्जन ।
धौताली० ना० स्त्री० धन, बल, सुरमापन, दु-
ष्टता ।

धौन० ना० पु० चारि पंसेरी का परिमाण ।

धौल० ना० पु० दौड़, धंकी ।

धौसा० ना० पु० बड़ाडंका ।

धौसिया० ना० पु० दौड़करनेहारों का प्रधान ।

धौर० ना० पु० कपोत की जाति विशेष ।

धौरा० गु० धौला ।

धौल० ना० स्त्री० टोप, धण्ड ।

धौलध्वपा० ना० पु० धपाधणी ।

धौला० गु० श्वेत, सफ़ेद ।

धालाई० ना० स्त्री० उज्वलता, गौराई ।

धौलाना० } स० कि० धण्ड मारना, मु-
धौलियाना० } कियाना ।

ध्या० ना० पु० विचार, सोच, चिन्ता ।

ध्यानी० गु० विचारवान्, सोची ।

ध्याना० } स० कि० सोचना, विचारना, मा-
ध्याचना० } नना, मजना, माना यशका ।

ध्रुव० ना० पु० धुरी, योग राग विशेष, दैत्य वि-
शेष, उत्तर दक्षिणकेन्द्र स्थान में प्रायश्चर एक
तारा उत्तानपादका पुत्र भक्त विशेष, गु० शिष्ट,
अचल, सनातन, निश्चय ।

ध्रुवतारा० ना० पु० उत्तर दक्षिण केन्द्र में प्राय-
श्चर एकतारा ।

ध्रुवन्द्या० ना० स्त्री० श्रीगंगाजी ।

ध्रुवपद० ना० पु० ध्रुवपद गीत विशेष ।

ध्रुवमत्यर्थत्र० ना० पु० कुतुबनुमा ।

ध्रुवा० ना० स्त्री० शालपर्णी, कील, लगीव ।

ध्वंस० ना० पु० नाश ।

ध्वंसोली० ना० स्त्री० काफोली ।

ध्वज० ना० स्त्री० झण्डा, पताका, ध्वजा ।

ध्वजिनो० ना० स्त्री० सेना, फौज ।

ध्वजा० ना० स्त्री० पताका ।

ध्वनि० ना० स्त्री० शब्द, बानका शब्द ।

ध्वनित० गु० संक्षेप से कथित ।

ध्वनी० ना० स्त्री० नदी, गु० शब्दक ।

ध्वन्यात्मक० गु० शब्दविशेष, जिसमें वर्ष वि-
वरण हो ।

ध्वस्त० गु० भ्रष्ट, खराब ।

ध्वान० ना० पु० शब्द ।

ध्वान्त० ना० पु० अधियारा, काव्ययथा, यथा
ध्वान्त विश्वस आदित्य करी, तथा देवि वि-
ग्नोष शोकप्रहारी ।

(न)

न० ध्व्य० अ० नहीं ।

नक्र० ना० स्त्री० नाक ।

नकचढ़ा० गु० क्रोधो, विडचिड़ा ।

नकछिकना० ना० स्त्री० पाँधा विशेष ।

नकटा० गु० नाक कटा ।

नकड़ा० ना० पु० नाकमें रोग विशेष ।

नकतोड़ा० गु० हँसोड़, धूर्त ।

नकसीर० ना० स्त्री० नाक की शिरा ।

नकार० ध्व्य० ना० पु० अस्वीकार ।

नकारना० स० कि० नकार करना, मुकरना ।

नकुल० ना० पु० न्यौला सांपका बँरी, खुली ।

पांडका पांचधा पुत्र ।

नकुआ० ना० पु० नाक, आण ।

नकेल० ना० स्त्री० काठ की वस्तु विशेष जो
ऊंटकी नाकमें पहिनाते हैं ।

नकी० ना० पु० प्राँसे या तासका इका ।

नकी० ना० स्त्री० नाकसे बोलना, जप में एक
बदना गण्डे से ।

नकीमूठ० ना० स्त्री० धृतविशेष, बुआविशेष ।

नककु० गु० अपयशी, बदनाम ।

नक्र० ना० पु० कुम्भार, भंगार, नाका ।

नख० } ना० पु० अंगुलियों के अग्रपर का

नखर० } अस्थिभाग, नाखून, नह ।

नखरेखा० ना० स्त्री० खसोट, बँकोट ।

नखियाना० स० कि० खसोटना, बँकोटना ।

नखी० गु० नखधारी, नखवाला, पट्ट ।

देवालय० ना० पु० देवस्थान, देवता का घर ।
 देवाला० ना० पु० दिवाला ।
 देवालिया० शु० जिसका दिवाला निकल गया ।
 देवाली० ना० स्त्री० दिवाली, दिवारी ।
 देवालेई० ना० स्त्री० दंगलन ।
 देवी० ना० स्त्री० देवता की स्त्री, भगवती, सरहरी
 चौपधि ।
 देवेन्द्र० ना० पु० देवाधिराज अर्थात् इन्द्र ।
 देवोत्थान० ना० स्त्री० कार्तिक शुक्लपक्ष की
 तिथि जिसमें विष्णुनांद से उठते हैं वा कार्तिक
 शुक्ल एकादशी ।
 देव्यालय० ना० पु० देवी का मन्दिर ।
 देव्याश्रय० ना० पु० देवी की सहायता ।
 देश० ना० पु० पृथ्वी का खण्ड विशेष, लोक रा-
 गिनी विशेष, मुल्क, विलायत ।
 देशपति० ना० पु० राजा, बादशाह ।
 देशभाषा० ना० स्त्री० देशकी बोली ।
 देशमात्र० शु० सर्वत्र, सब देश ।
 देशाचार० ना० पु० देशकी रीति ।
 देशाटन० ना० पु० देशों में फिरना ।
 देशाधि० }
 देशाधिप० } ना० पु० राजा, बादशाह ।
 देशाधिपति० }
 देशाधीश० } ना० पु० देशका रक्षक वा राजा ।
 देशाध्यक्ष० }
 देशान्तर० ना० पु० दूसरा देश ।
 देशावर० ना० पु० परदेश, अन्यदेश ।
 देशी० गु० जो देशका है ।
 देह० ना० स्त्री० तन, शरीर ।
 देहरा० ना० पु० चौहरा, देवालय ।
 देहली० ना० स्त्री० चौलत्र, खोड़ी ।
 देही० शु० शरीर, ना० पु० जीव, प्राण ।
 देजा० ना० पु० कन्यादान, यौतुक ।
 देन्य० ना० पु० अहुर, दितिजात ।

दैत्यगुरु० }
 दैत्यपुरोधा० } ना० पु० शुक्राचार्य ।
 दैत्यपुरोहित० }
 दैत्यपूज्य० }
 दैत्याचार्य० }
 दैत्यारि० ना० पु० देवता, श्रीविष्णुजी ।
 दैदाप्य० शु० प्रकाशित, रोशान ।
 दैदाप्यमान० शु० प्रकाशित, चमकीला ।
 दैन्य० ना० पु० दीनता ।
 दैय० ना० पु० देव, ईश्वर ।
 दैया० ना० स्त्री० माता ।
 दैव० ना० पु० आरम्भ, ब्रह्मा, देवके आधीन ।
 दैवगति० ना० स्त्री० कर्मकीचाल, ब्रह्माकीगति ।
 दैवतामणि० महामिदा ।
 दैवयोग० ना० पु० कर्मप्रभाव, इतिफाकन ।
 दैघवादी० शु० आलसी, भाग्याधीन ।
 दैघन्न० ना० पु० गणक, ज्योतिषी ।
 दैवात्० }
 दैवी० } अन्य० अकस्मात्, नागहान ।
 दैविक० शु० जो देवता करके हीवे ।
 दो० शु० दूसरी संख्या २ ।
 दोऊ० शु० दोनों ।
 दोक० ना० पु० बखेड़ा, दोषका घोड़ा ।
 दोचर० शु० दुहरा, दूसरा ।
 दोजीवा० ना० स्त्री० गर्भिणी ।
 दोभा० ना० पु० द्विगवर ।
 दोदना० स० क्रि० मुकरना ।
 दोना० ना० पु० दोना, पत्तों का पात्र, पुण्य
 विशेष ।
 दोनाली० ना० स्त्री० बन्दूक दोनालकी ।
 दोघर० इ० दोघर, दुहरा ।
 दोमुहा० ना० पु० दो मुलका राय ।
 दोय० शु० दो २ ।
 दोल० ना० पु० डोल ।
 दोष० ना० पु० निन्दा, अशुभ, पूर, अनराध,

नग० ना० पु० अगुटी का पाषाणविशेष, मणि, पर्वत, वृष, धाम ।
 नगचाइ० ना० स्त्री० अर्धाई ।
 नगचाना० अ० कि० पास आना ।
 नगचाहट० ना० स्त्री० नगचाई ।
 नगदौता० ना० पु० पौधा विशेष ।
 नगन० ना० पु० हार्पा, गुं नाम ।
 नगभिन्नक० ना० पु० पाषाण भेद ।
 नगर० ना० पु० राहर, पुरी, ग्राम ।
 नगरकोट० ना० पु० कोटकाण्डो ।
 नगरनारी० ना० स्त्री० गणिका, वेश्या ।
 नगरवर्ती० ना० पु० नगरवासी ।
 नगरवासी० यु० पुरी वा राहरका वासी ।
 नगरी० ना० स्त्री० छोटा नगर, वस्ती ।
 नगा० ना० स्त्री० नारी, स्त्री ।
 नग्न० } यु० दिगम्बर, वस्त्रहीन ।
 नंग० }
 नंगा० }
 नगी० ना० स्त्री० नग्न स्त्री ।
 नचचाना० स० कि० नचाना, नाचकराना ।
 नचवैया० ना० पु० नाचने हारा ।
 नचाना० स० कि० नाचकराना ।
 नट० ना० पु० डीठबन्दों वा नाचनेहारोंकी जाति विशेष, कौतुकी, स्वामी ।
 नटखट० यु० धूर्त, कपटी, छली, फरफन्दिया ।
 नटखटी० ना० स्त्री० धूर्तता, कपट, छल, फरफन्द ।
 नटत० कि० अस्वीकार करता है, नाचता है ।
 नटना० अ० कि० नमानना, अस्वीकारकरण ।
 नटनागर० ना० पु० चतुर नट, डीठबन्द, योन्हा ।
 नटभूषण० ना० पु० हरताल, नटकाभूषण ।
 नटवर० } ना० पु० डीठबन्द, योन्हा ।
 नटवा० }
 नटसाल० ना० पु० दूयाकांठ ।

नटिन० } ना० स्त्री० नटकी स्त्री ।
 नटिनी० }
 नटी० ना० स्त्री० वेश्या, नाचनेहारी ।
 नटुआ० } ना० पु० नटवा ।
 नटुवा० }
 नठना० अ० कि० नशाना, विगाड़ना, स० कि० नाराना, विगाड़ना ।
 नत० यु० नम्र० ना० पु० तगर, औपधि, चव्य० नतक, नहीं तो ।
 नतर० अ० नही तो ।
 नतांगी० ना० स्त्री० फकरासिन्धी ।
 नति० ना० स्त्री० प्रसाम, नमस्कार ।
 नतिनी० ना० स्त्री० नातिन, दीहिनी ।
 नतैत० ना० पु० नातेदार, सम्बन्धी, गौतित ।
 नथ० ना० स्त्री० नाकमें का गहनाविशेष, नथुनी ।
 नथना० अ० कि० छिदना, फसना, ना० पु० नथना ।
 नथनी० ना० स्त्री० नाथने का अर्थ विशेष, नथुनी ।
 नथी० यु० छिदी, फसी ।
 नथुआ० ना० पु० छिदुआ ।
 नथुई० ना० स्त्री० छिदुई ।
 नथुना० ना० पु० नाकका मार्ग ।
 नद्० ना० पु० ब्रह्मपुत्रादि जलप्रवाह विशेष ।
 नदिया० ना० स्त्री० छोटी नदी, ना० पु० नगर विशेष ।
 नदी० ना० स्त्री० जो जलकी धारा पर्वतादि से निकलकर देशान्तरों में होकर समुद्र में जावे जैसे गंगा और सिन्धु आदि ।
 नदीफान्ता० ना० स्त्री० फाकनधा बूटी ।
 नदीला० ना० पु० नांद ।
 ननद० } ना० स्त्री० ननदी, पतिकी बहिन ।
 ननादिया० }
 ननदी० ना० स्त्री० पतिकी बहिन ।
 ननिहाल० ना० पु० नानाकार वा धराना ।

काम क्रोधादि, कलंक ।

दोषक० गु० निन्दक, अपयुष्णी, पापी ।

दोषना० सं० क्रि० दोषदेना वा दोषलगाना ।

दोषित० } गु० कलंकित, पापी, अपयुष्णी, अ-
दोषी० } पराधी ।

दोहच्छद ना० पु० दोनों हाथोंका देमारना ।

दोहता० ना० पु० नाती ।

दोहता० ना० स्त्री० नातिनी, नातिन ।

दोहद० ना० पु० स्नेह, प्रीति, हित, गर्भ ।

दोहन० ना० पु० रसका खींचना ।

दोहन० } सं० क्रि० दूहना, गारना ।
दोहना० }

दोहनी० ना० स्त्री० दूहने का पात्र ।

दोहरा० गु० द्वियुष्ण, दोलङ्ग ।

दोहराव० ना० पु० दोहराने का काम ।

दोहा० ना० पु० छन्द विशेष ।

दोहाई० ना० स्त्री० दुहाई ।

दोहान० ना० पु० दो वर्ष का गौका बच्चा,
खेला ।

दौड़० ना० स्त्री० बहुत शीघ्र चलने की चाल,
धावा ।

दौड़धूप० ना० स्त्री० जतन, परिश्रम ।

दौड़ना० अ० क्रि० बहुत शीघ्रचलना, धावा ।

दौड़ाक० ना० पु० दौड़नेहारा ।

दौड़ादौड़ी० ना० स्त्री० वेगावेगी ।

दौड़ाना० सं० क्रि० शीघ्र चलाना ।

दौड़ाहा० ना० पु० संदेशिया, अगुथा ।

दौहित्र० ना० पु० नाती, नवासा ।

दौहित्री० ना० स्त्री० नातिनी, नवासा ।

धुमणि० ना० पु० सूर्य ।

धत० ना० पु० जथा, जप ।

धौरानी० ना० स्त्री० देवकी स्त्री ।

द्रम्म० ना० पु० १६ पणका ।

द्रव० गु० नहता हुआ, घुला ।

द्रविड० ना० पु० देश विशेष ।

द्रवित० गु० नहता हुआ, घुपायुत, नम्रतामय ।

द्रवौ० }
द्रवहू० } अ० क्रि० दया करो ।

द्रव्यजन्यभाव० गु० वस्तु और वस्तु रचित
पदार्थका सम्बन्ध ।

द्रष्टा० ना० पु० देखनेवाला ।

द्रावक गु० घुलाने हारा, कृपालु ।

द्राघन० ना० पु० निर्मली ।

द्राघिड० ना० पु० कचूर, द्रघिड देशका भाषा
या लोग ।

द्राघिडी० ना० स्त्री० छोटी इलायची, द्राघिड
देशकी भाषा वा वासी वा वस्तु ।

द्रापी० ना० पु० सहागा ।

द्राघ्ता० ना० स्त्री० अंगूर, दाख ।

द्रुत० ना० पु० जल्द, शीघ्र ।

द्रुपद० ना० पु० राजा विशेष ।

द्रुपदी० ना० स्त्री० द्रौपदी, पाण्डवोंकी स्त्री ।

द्रुम० ना० पु० वृक्ष, पेड़ ।

द्रुमलिक० ना० पु० राक्षस विशेष ।

द्रुहिण० ना० पु० मूढा ।

द्रोण० ना० पु० कालाकाम, वारिज, पर्वतविशेष
द्रोणाचार्य्य ।

द्रोणपुष्पी० ना० स्त्री० गूमा, पीथा ।

द्रोणाचार्य्य० ना० पु० कौरव और पाण्डवोंका
गुरु ।

द्रौपदी० ना० स्त्री० पाण्डवोंकी स्त्री, द्रुपदकी
पत्नी ।

द्रोह० ना० पु० वैर, शत्रुता, अदावत ।

द्रोहिया० } ना० पु० शत्रु, वैर, मुहूर्त ।
द्रोही० }

द्रुन्ध० ना० पु० युगल, जोड़ा, रागदोषादि, क-
लह, दुःस्वभाव ।

द्रादश० गु० बारह १२ ।

द्रादशउपवन० ना० पु० बारह उपवन अर्थात्
शान्तनुकुण्ड, रोषाकुरण्ड, गोवर्द्धन, परमन्दर,
वरसाना, संकेत, नन्दपाट, चौरपाट, ललराम-

स्थल, नन्दगाँव, गोकुल, चन्दनवन १२ ।

द्रादशमातु० ना० पु० बारह सूर्यनाम ।

नन्द० ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्र के कथित पिता,
वेद्य, नौ ६ ।

नन्दन० ना० पु० देव उपवन, देववन, चन्दन,
लङ्का, शु० आनन्ददाता ।

नन्दलाल० ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्रजी ।

नन्दिग्राम० ना० पु० वस्तीविशेष, जहाँ भरत-
जी तपस्या करते थे ।

नन्दिनी० ना० स्त्री० पार्वती, पुत्री, पत्नी की
बहिन, प्रियंगु, सौंठि, हर् ।

नन्दो० ना० पु० शिवजी का वाहन ।

नन्दीगण० ना० पु० शिवजी का गण ।

नन्दीघोष० ना० पु० रथ जो, अग्निदेवने अर्जुन
को दियाथा ।

नन्दोई० ना० पु० पतिकी बहिन का स्वामी,
ननद का पति ।

नन्दोला० ना० पु० नांद ।

नन्दोसी० ना० पु० नन्दोई ।

नन्हा० शु० छोटा, लघु ।

नपुंसक० ना० पु० स्त्री, हीजड़ा, मोर ।

नपुंसकलिङ्ग० ना० पु० तीसरालिङ्ग ।

नभः० ना० पु० आकाश, आश्रय और श्रावण
मास ।

नभग० शु० पत्नी, नक्षत्र, ग्रह, देवता ।

नभगनाथ० ना० पु० गरुड़, चन्द्रमा ।

नभगामी० शु० पत्नीआदि, नभग ।

नभगेश० ना० पु० नभगनाथ, गरुड़, चन्द्रमा ।

नभश्चर० ना० पु० आकाश में उड़ने हार,

यथा पत्नी, तारागण, ग्रह, देवता ।

नभस्वर० ना० पु० भाद्रपद ।

नभस्वत० ना० पु० पवन, वायु ।

नभः० ना० पु० नमस्कार, त्याग ।

नमत० शु० प्रणाम करते ।

नमन० शु० सट्टा, समान ।

नमस्कार० ना० पु० प्रणाम, सम्मान का
बोधक ।

नमस्कारी० ना० पु० लनारू ।

नमस्य० शु० नमस्कार के योग्य ।

नमामि० क्रि० नमस्कार करता है ।

नमित० शु० नीचे शिर किये, शिरमुकाये नम-
स्कार करते ।

नमो० ना० पु० नमस्कार वा प्रणाम करता है,

दोहा, नमोनमो शुक्रदेवजी करोप्रणाम अतः

तुव प्रसाद स्वरभेद को, चरणदास बरलत ११

इतिस्वरोदये ।

नम्र० शु० विनयी, मिलनसार, आर्धान, नर्म ।

नम्रता० ना० स्त्री० आर्धानता, विनय, नमी ।

नय० ना० पु० नीति, कानून ।

नयन० ना० पु० नेत्र, आँसू ।

नयनश्रमिय० ना० पु० नेत्रोंका श्रमृत, यथा,

श्रीगुरुपदरजमंडलश्रमन, नयनश्रमियदशदोषति

भंजन । इतिरामायणे ।

नया० शु० नवीन, ताजा ।

नर० ना० पु० मनुष्य, पुरुष, पुंस ।

नरक० ना० पु० पापों के भोग फल का स्थान,
दैन्य विशेष जिसे भीमाडर भी कहते हैं ।

नरकट० ना० पु० सरकण्डा, तृणविशेष, गिन-

की चटाई बनती है ।

नरकसी० ना० स्त्री० हलक, गला ।

नरकुल० ना० पु० नरकट ।

नरपति० ना० पु० मनुष्यों का रक्षक, राजा ।

नरपुर० ना० पु० मर्त्यलोक ।

नरवाहन० } ना० पु० कुबेर, यक्षराज ।

नरयानी० } ना० पु० कुबेर, यक्षराज ।

नरसिंहा० ना० पु० बाजा विशेष, तुरही ।

नरसिंघिया० ना० पु० नरसिंहावजानेहारा ।

नरसिंह० ना० पु० विष्णुका चौथाश्रवतार ।

नरसो० अन्व० धीताहुत्या चौथादिन, चौथादिन

आनेवाला ।

नरहृद० ना० पु० पिण्डली की हड्डी ।

नरहरि० ना० पु० नरसिंहजी, कवि विशेष ।

नरहृदिदास० ना० पु० गोसाई, तुलसीदास

के सद्युक्त ।

अथीत् विष्णुः शक्रः अथेमा, धाता, पूषण,
 त्वष्टा, विवश्वान, सविता, भग, वरुण, अशु-
 माणि, तेजश्चति ।
 द्वादशभानुकला० ना० स्त्री० बारह सूर्य की
 कला अर्थात् तापिनी, धापिनी, धूम्र, मरीची,
 ज्वलिनी, रुचि, रुचिनिम्न, भोगदा, विश्वावो-
 धिनी, धारिणी, चमा ।
 द्वादशघ्न० ना० पुं० बारहवन ब्रजके अर्थात्
 मधुवन, तालवन, वृन्दावन, कुमुदवन, कामवन,
 कौटवन, चन्दनवन, खोडवन, महावन, खदिर-
 वन, बेलवन, भाण्डार ।
 द्वापर० ना० पुं० तीसरायुग जो ८६४००० वर्ष
 का होता है ।
 द्वार० ना० पुं० धरकामूल, दरवाजा ।
 द्वारपाल० } गु० ज्योतीवन, द्वारकार-
 द्वारपालक० } क ।
 द्वारा० अर्थ० कारण से वसीला, मारफत ।
 द्वारावती० ना० स्त्री० द्वारिका ।
 द्वारिका० ना० स्त्री० नगर प्रसिद्ध जो गुज-
 रात में है ।
 द्वारिकार्धाश० } ना० पुं० श्रीकृष्णचन्द्रजी ।
 द्वारिकानाथ० }
 द्वारी० ना० पुं० द्वारपाल ।
 द्विगुण० गु० दूना, दोहरा ।
 द्विज० ना० पुं० पत्नी, दांत, ब्राह्मण, नक्षत्र,
 कौशा ।
 द्विजदोष० ना० पुं० ब्रह्महत्या ।
 द्विजनायक० ना० पुं० ब्राह्मण ।
 बरुह, चन्द्रमा, सिंह ।
 द्विजन्मा० ना० पुं० ब्राह्मण ।
 द्विजपति० ना० पुं० द्विजनायक ।
 द्विजपत्नी० ना० स्त्री० ब्राह्मणी ।
 द्विजप्रिया० ना० स्त्री० सोमवती, ब्राह्मणी ।
 द्विजराज० ना० पुं० द्विजनायक ।
 द्विजा० ना० स्त्री० छोटी इलायची ।
 द्विजांगिका० ना० स्त्री० कुटकी ।

द्विजाति० ना० पुं० द्विज, ब्राह्मण ।
 द्वितीय० गु० दूसरा ।
 द्वितीया० ना० स्त्री० दून, दूसरीतिथि, दूसरी ।
 द्वितीयान्त० गु० जिसके अन्त में द्वितीयाका-
 प्रत्यय होवे ।
 द्वित्व० अर्थ० दोहरा करना ।
 द्विधा० अर्थ० दोप्रकार ।
 द्विपद० ना० पुं० मनुष्य ।
 द्विरसन० ना० पुं० सांप ।
 द्विरागमन० ना० पुं० गौना, चलोआ ।
 द्विरुक्ति० ना० स्त्री० पुनर्भक्ति, फेरफेरकहना ।
 द्विरूप० ना० पुं० भौरा ।
 द्विचन० ना० पुं० द्विल संख्यायुक्त, जोशब्द,
 जिसका भाषा में प्रयोग नहीं है ।
 द्विविद्० ना० पुं० वानर विशेष ।
 द्विपद्म० गु० द्वादश वा अष्ट ।
 द्विस्वभाष० ना० पुं० द्विविधा ।
 द्विभ्रिश्यक्ष्ण० ना० पुं० बचीस लक्षण अ-
 र्थान् सुकृत, स्वरूप, शील, सत्य, पराक्रम, शु-
 ष्यात्मा, अभ्यास, वरविद्या, सुमान, परमज्ञान,
 शास्त्रज्ञान, परस्त्रीत्याग, पूर्यता, लोकेश, दास
 विभाग, पुष्टविद्या, प्रियवाद, सतंग, अकाम
 गुणपूर्ण, मातृभक्ति, पितृभक्ति, गुरुभक्ति, मिते-
 न्द्रिय, दातृत्व, धर्मात्मा, देवपूजन, अल्पनिद्रा-
 स्वल्पाहार, स्वच्छता, पुष्टता, धीरज ३२ ।
 द्वीप० ना० पुं० राष्ट्र पृथ्वी का एक एक जो जलसे
 घिरा हुआ है, पृथ्वी के समस्त एकों में से एक ।
 द्वीपवती० ना० स्त्री० नदी ।
 द्वीपशत्रु० ना० पुं० छतावर, सतावर ।
 द्वीपसम्भवा० ना० स्त्री० पियड सज्जर ।
 द्वीपिका० ना० स्त्री० सतावर, छतावर ।
 द्वीपा० ना० पुं० सिंह, शेर ।
 द्वेष० ना० पुं० बैर, द्रोह, ईसा, ईर्ष्या ।
 द्वेषी० ना० पुं० रातु, बैर, ईसाक ।
 द्वै० गु० दो, २ ।

नरान्तक० ना० पु० नरोंकाकाल, दैत्यविशेष ।
 नरिया० ना० स्त्री० छोटी नाली, खपरा ।
 नरो० ना० स्त्री० चर्म विशेष लोहे का यंत्र
 विशेष, जिसमें बीने का सूत रखते हैं ।
 नरुख० गु० पुलिंग ।
 नरेट० ना० पु० }
 नरेटा० ना० पु० } सांती, नली, नटई
 नरेटी० ना० स्त्री० }
 नरेन्द्र० } ना० पु० राजा, बहुतेदेश का प्र-
 नरेश० } तिपालक ।
 नरोत्तम० गु० अश्वामतुष्य ना० पु० श्रीकृष्णजी ।
 नर्त्तक० ना० पु० नाचनेहारा ।
 नर्त्तकी० ना० स्त्री० नीच, नाचनेवाली ।
 नर्त्तन० ना० पु० नाच, नृत्य ।
 नर्मदा० ना० स्त्री० नदी विशेष ।
 नल० ना० पु० मुख्य वानर, मुख्यराजा, कुबेर
 का पुत्र, नङ्कुल, फोफी, खोखल ।
 नलकूबर० ना० पु० कुबेर के बालक ।
 नलपुरष्टिक० ना० पु० कलिहारी ।
 नला० ना० पु० उदर में स्थान विशेष ।
 नलिका० ना० स्त्री० नली, नाई ।
 नलिन० ना० पु० कमल ।
 नलिनो० ना० स्त्री० बहुत नलिनका संयोग
 स्थान वा कमलिनो ।
 नली० ना० स्त्री० नरेटी, फोफी, नाख, नरहड-
 लोहे का यंत्र जिसमें सूत रखकर बिनते हैं ।
 नलुभा० ना० पु० भारी बांसका एक मोड़ जो
 पाया आदि रखने के काम आताहै ।
 नव० गु० गिनती विशेष, अनया ।
 नवखण्ड० ना० पु० पृथ्वी के नौ भाग अर्थात्
 भरतखण्ड, इलायत्त, किपुरूप, भद्र, केतुमाल,
 हिरण्य, रम्य, हरि, कुरुखण्ड ।
 नवजल० ना० पु० प्रथम वर्षा, नया पानी ।
 नवयौवना० ना० स्त्री० यौवनवती ।
 नवद्वार० ना० पु० शरीर के नौ द्वार अर्थात्
 श्रोत्र २ कान २ नाक २ मुख, गुदा, लिंग ।

नवधा० गु० नौप्रकार ।
 नवधामस्ति० ना० स्त्री० नौ प्रकार की भक्ति
 अर्थात् सत्संग, हरिकथा, शुकसेवा, हरिगुण-
 गान, वेदपाठ, सज्जनधर्म, समभाव, लाभ-
 लाभसम, हरिशरण ।
 नवधामजन० ना० पु० नौ प्रकारका भजन
 अर्थात् हरिगुण श्रवण, हरिगुण कीर्तन, हरि-
 स्मरण, हरिपदसेवन, हरिअर्चन, हरिपदचन्दन,
 दास्यभाव, मित्रभाव, आत्मज्ञान ६ ।
 नवनाटिका० ना० स्त्री० नौरवासा अर्थात्
 इडा, पिंगला, सुषुम्णा, पथस्विनी, कूड,
 गंधारी, शंखिनी, पूषा, अलम्बुषा ।
 नवनि० ना० स्त्री० भुक्तनि, प्रणाम ।
 नवनिधि० ना० स्त्री० कुबेर का धन ।
 नवनीत० ना० पु० मक्खन, नेत्र, मसका ।
 नववधू० ना० स्त्री० नईवधू, नई दुल्हन ।
 नवपाला० ना० स्त्री० नवयौवना ।
 नवम० गु० नवां १ ।
 नवमांश० ना० पु० नवांभाग ।
 नवमी० ना० स्त्री० नवांतिथि, नवां ।
 नवरंग० ना० पु० कामदेव, नयारंग, नीरंग ।
 नवरत्न० ना० पु० बाहुमें पहिरने के लिये भूषण
 विशेष ।
 नवरस० ना० पु० नयारस वा नौप्रकारारस
 अर्थात् शृंगाररस, वीररस, वीभत्स; शान्तरस;
 भद्ररस, करुणारस, अद्भुत, हास्य, भयानक ६-१ ।
 नवल० गु० सुन्दर, नया, ना० पु० केड़ापौधा ।
 नवला० ना० स्त्री० नवपाला, नवयौवना ।
 नवा० ना० गु० नया ।
 नवाडा० ना० पु० नाव विशेष ।
 नवाना० स० कि० कुम्हना, कुम्हना, त्रौहरा,
 आधीनकराना ।
 नवानो० प्र० कि० रमना, भटकना ।
 नवारी० ना० स्त्री० पुण्य विशेष वा उत्कृष्ट ।
 नवासी० गु० अस्सी थीर नौ ६ ।

द्वैत० ना० पु० संदेह, भेद, दुशुनाहट ।

द्वैतवादा० ना० पु० भेदवादी ।

द्वैध० ना० पु० संदेह, दोखण्ड ।

द्वैधीकरण० ना० पु० छेदन ।

द्वैमानुर० ना० पु० श्रीगणेशजी ।

द्वैमधुक० ना० पु० सुलहदी ।

द्वैप० ना० पु० द्वैप ।

द्वयर्थ० गु० जिस में दो प्रकारके अर्थहैं ।

द्वयत्तर० गु० जिस में दो अक्षरहैं ।

[ध]

धंधलाना० स० क्रि० छलना, धोखेदिना ।

धंधक० गु० बहुचिन्तक, धंधेवाला, धंधक ।

धंधा० ना० पु० काम, धंधा ।

धंधार० गु० उदास, एकान्ती ।

धंधारी० ना० स्त्री० उदासी, अकेलापन ।

धंसना० अ० क्रि० धसना, गड़ना, बैठजाना ।

धकधक० ना० पु० धक, भयसे कलेजा का-

पना ।

धका० ना० पु० टकेल, भोक, ठेला ।

धकाधकी० ना० स्त्री० ठेलाठेली ।

धगाडा० } ना० पु० यार, लड़क्या ।

धगाडा० }

धज० ना० पु० चाल, आसन, डील, रूप, टाट,

सामान, साजसाज ।

धजमंग० ना० पु० नपुंसकी ।

धजा० ना० स्त्री० पताका, धजा ।

धजीला० गु० धनसे चलने वाला, समीचा ।

धजी० ना० स्त्री० पुराने कपड़े का टुकड़ा ।

धड़० ना० पु० देह, शिरसे नीचका तंत ।

धड़क० ना० स्त्री० फड़क, भय, धड़धड़ाहट ।

धड़कना० अ० क्रि० फड़कना, हिलना, धक-

धकना ।

धड़का० ना० पु० भय, संदेह, दुविधा, धड़क ।

धड़काना० स० क्रि० डराना, धड़धड़ाना, अ-

क्रि० धड़कना ।

धड़ा० ना० पु० यथा, पत्र, तील, जीत ।

धड़ाका० ना० पु० धायाधाय, हड़हड़ाहट शब्द-
होना ।

धड़ी० ना० स्त्री० लकीर, पांचसेर की तील वा
मितना एकवार तोलाजावे ।

धत० ना० पु० हापी चबाने का शब्द ।

धतूरा० ना० पु० पौधा विशेष ।

धसूरिया० गु० झलिया, बहुशुभिया ।

धधकना० अ० क्रि० भगकना, धामधाम स-
लना ।

धन० ना० पु० द्रव्य, अर्थ, सम्पत्ति, लक्ष्मी,
शुक्र ।

धनक० ना० स्त्री० गोटसे बनीवस्तु जो-डेपी
आदि में लगाते हैं ।

धनकटी० ना० स्त्री० कपड़ा विशेष, धान कटने
का समय ।

धनक्षय० ना० पु० अग्नि, अर्धन, पाखंडपुत्र,
पवन ।

धनन्तर० ना० पु० धनन्तरि ।

धनद० ना० पु० कुबेर, धनका दाता ।

धनपति० ना० पु० कुबेर, गु० धनी ।

धनवन्त० } गु० द्रव्यवान्, लक्ष्मीवान् ।

धनवान्० }

धना० ना० स्त्री० स्त्री, नारी, ना० पु० भूक

विशेष ।

धनाकुला० ना० स्त्री० रासना ।

धनाल्य० गु० धनवान, मालदार ।

धनाध्यक्ष० ना० पु० धनका स्वामी, कुबेर ।

धवान्ध० गु० जो धनके कारण अन्धा अर्थात्

अहंकारी होरहाहो ।

धनार्जन० ना० पु० द्रव्य का उपार्जन ।

धनाशा० ना० स्त्री० अर्थ की धारा ।

धनासरी० } ना० स्त्री० रागिनी विशेष ।

धनासिरी० }

धनिक० ना० पु० महामन, श्रेयकादाता ।

धनिया० ना० पु० नीज विशेष, ना० स्त्री०

नारि ।

नवी० ना० स्त्री० रस्ती जिससे गाय के पाँव दूध
 दूधते समय बांधते हैं ।
 नवीन० शु० नया, ताजा ।
 नवीनता० ना० स्त्री० नवापन ।
 नवोद्भा० ना० स्त्री० नई स्त्री, नवयौवना ।
 नवोद्भिद० ना० पु० अक्षुर, अक्षुधा ।
 नव्य० शु० नया, नवीन, उपरा ।
 नव्ये० शु० नवदहाई ६० ।
 नश्वर० शु० नाशवान्, विनाशी, भूठ ।
 नशावा० कि० मियाया, नारा दिया ।
 नखत० ना० पु० नखत्र, तारागण, तारा ।
 नष्ट० शु० जिसका नारा होगया, अष्ट ।
 नष्टता० ना० स्त्री० अष्टता ।
 नष्टा० ना० स्त्री० व्यभिचारिणी ।
 नस० ना० स्त्री० नाझा, रंग ।
 नसाना० स० कि० नाशकरना, बिगाड़ना ।
 नसी० ना० स्त्री० फालिका अग्रभाग, वा फाला-
 जो लोहे का हल में लगता है ।
 नस्य० शु० साहनासिक, हुलास जो नासिका से
 संपते हैं ।
 मह० ना० पु० मह, नाखून ।
 महक० शु० दुबला, पतला, सुखय ।
 महट्टा० ना० पु० बकोट खतोद ।
 महनी० ना० स्त्री० नहनी, कखानी विशेष ।
 महर्वा० ना० पु० रोग विशेष ।
 महर्नी० ना० स्त्री० नहाकाटने का अश्रु विशेष ।
 महलाना० स० कि० स्नान करना, नहाना ।
 महान० ना० पु० स्नान ।
 महाना० अ० कि० स्नान करना ।
 महारहमुह० अव्य० विनाशाय ।
 महारु० ना० पु० चमड़े का टुकड़ा ।
 महियर० ना० पु० स्त्रीकी सपुत्राल वा मुँका ।
 मह्री० अव्य० निषेध, न ।
 महत्र० ना० पु० तारा, तारागण ।
 ना० अव्य० नहीं ।

नाई० अव्य० प्रकार, सदरा, समान ।
 नाइन० ना० स्त्री० नाईकी जोरु ।
 नाई० } ना० पु० नापित, जातिविशेष, साँक ।
 नाऊ० }
 नाक० ना० पु० आकार, स्तर्ग, स्त्री, नासिका ।
 नाकड़ा० ना० पु० नाक में रोगविशेष ।
 नाकपति० ना० पु० इन्द्र ।
 नाकनटी० ना० स्त्री० अक्षरा, परी ।
 नाका० ना० पु० मार्ग वा पड़े का अन्त, धुरी-
 धेद, गुली, नक्र, जलजन्तु विशेष ।
 नाकिन० ना० स्त्री० नाककी स्त्री ।
 नाग० ना० पु० साँप, पन्न, हार्थी, दुष्टनर, सुस-
 वापुभेद ।
 नागउरग० ना० पु० सीसा, धातु ।
 नागकन्या० ना० स्त्री० कन्या जो पातालमें
 रहती है सुलोचना, मेघनादकी वीवी ।
 नागकेसर० ना० पु० पुष्प विशेष ।
 नागगर्म० ना० पु० सिन्दूर बन्दन ।
 नागचास्पेय० ना० पु० नागकेसर ।
 नागज० ना० पु० सिद्ध बंदन ।
 नागदन्ती० ना० स्त्री० इन्द्र वारुणी ।
 नागदमनी० ना० स्त्री० नागदौन ।
 नागदौन० ना० पु० पौधा, मन्थ्रा ।
 नागन० ना० स्त्री० साँपिनी ।
 नागनी० ना० स्त्री० पान, नागकी स्त्री ।
 नागपंचमी० ना० स्त्री० श्रावणशुक्लपंचमी वा
 पर्व विशेष ।
 नागपत्नी० ना० स्त्री० साँपिन, नागिन ।
 नागपाश० } ना० पु० पाँसा वा बन्धन
 नागपास० } विशेष ।
 नागपुर० ना० पु० नगर विशेष, नागलोक ।
 नागफाँस० ना० स्त्री० फाँसी विशेष ।
 नागबला० ना० स्त्री० गैरुध्या ।
 नागबली० ना० स्त्री० नागबलि ।
 नागबलि० ना० स्त्री० पानआदि ।
 नागभाषा० ना० स्त्री० प्राकृत भाषा जो पा-

तालके रहने हारे बोलते हैं ।
 नागमाता० ना० स्त्री० कद्रु, मनसिल ।
 नागर० ना० पु० गुजराती भाषणकी जाति वि-
 शेष, नागरोज्ज्वल अर्थात् चतुर, और पानी,
 और, सौटि ।
 नागरंग० ना० पु० नारंगी ।
 नागरमोथा० ना० पु० सुगन्धि तृण विशेष का
 मूल ।
 नागरि० } ना० स्त्री० चतुर स्त्री, नागरकी
 नागरिन० } स्त्री ।
 नागरिपु० ना० पु० ग्याला, मार, गकड़, सिंह ।
 नागरी० ना० स्त्री० संस्कृत के अक्षर, लघु स्त्री ।
 नागल० ना० पु० हल, सित जौतने का ।
 नागा० ना० पु० संन्यासी, नस्वर ।
 नागाहा० ना० स्त्री० नागदीन ।
 नागारि० ना० पु० नागरिपु ।
 नागास्तन० ना० पु० सहस्रपाह राजाविशेष ।
 नागिन० } ना० स्त्री० सापकी स्त्री ।
 नागिनी० }
 नागौर० ना० पु० मारवाड़ देशके पातका प्रदेश ।
 नाघना० } स० कि० लावना, पारजाना ।
 नांघना० }
 नाच० ना० पु० नृत्य ।
 नाचना० अ० कि० नाचकरना, कूटना ।
 नाज० ना० पु० अन्न, अनाज ।
 नाट० ना० पु० नासा ।
 नाटक० ना० पु० ग्रन्थविशेष ।
 नाटा० अ० डिगना, टनी ।
 नाटिका० ना० स्त्री० नाडी ।
 नाटी० ना० स्त्री० घोड़ी, डिगनी ।
 नाटि० ना० स्त्री० नारा, विनारा ।
 नाठी० अ० नारागी ।
 नाहु० ना० स्त्री० भ्रिता, नाती ।
 नाडिका० ना० स्त्री० एकवडी ।
 नाडी० ना० स्त्री० पेटकी नस, रोगपरौला के
 लिये हाथ में की एकरग, खासा, नस, नली ।

नाडीतिक्र० ना० पु० चिरायता ।
 नाडीधम० ना० पु० सानार, स्वर्णकार ।
 नाडीमण्डल० ना० पु० नाडिया का समूह ।
 नाडीज्ञान० ना० पु० रोगपरौला, और श्वासा
 का ज्ञान ।
 नात० ना० पु० सम्बन्ध, रिश्ता, विरादरी ।
 नातर० } अन्वय० नान्यथा, नहीं तो ।
 नातद० }
 नाता० ना० पु० सम्बन्ध ।
 नातिन० ना० स्त्री० कन्या की कन्या, बेडा की
 बेटी ।
 नाती० ना० पु० बेटीका पुत्र, बेडा का पुत्र,
 रामायणे यथा, उत्तमकुल पुलस्तिके नाती,
 शिवविंशति, पूजेबहुभाती ।
 नाथ० ना० पु० स्वामी, प्रभु, ना० स्त्री० बैल
 की नाककीरस्सी, धाव की बत्ती ।
 नाथना० स० कि० छेदना, बैल के नाकमेंरस्सी
 मालना ।
 नाथित० अ० जो नाथागया ।
 नाद० ना० पु० शब्द, गरज, गीत, राग ।
 नादना० स० कि० आरम्भ करना ।
 नादिया० ना० पु० नन्दी, पशु विशेष जो जो-
 गियोंके पास होता है ।
 नाधना० स० कि० जुये में लगाना, आरम्भ
 करना ।
 नाधा० ना० पु० ताजाव, वा नदी में से पानी
 निकालने का गदा ।
 नानक० ना० पु० शिकसों का ग्रन्थ विशेष ।
 नाना० ना० पु० माताका पिता, अ० अनेक,
 बहुत, समूह ।
 नानाकार० अ० बहुत रूपके, अनेकप्रकारके ।
 नानाकारण० ना० पु० अनेकप्रकार के कारण ।
 नानाप्रकार० } अ० अनेक प्रकार ।
 नानाभाति० }
 नानारूप० ना० पु० अनेक रूप ।

नीलरक्त० ना० पु० नीलम ।
 नीललोहित० ना० पु० श्रीमहादेव जी ।
 नीलवर्ण० शु० श्यामरंग, आकाशी रंग ।
 नीला० शु० जो नीलरंग का है ।
 नीलाई० ना० स्त्री० श्यामता, नीलापन ।
 नीलाइक० ना० पु० नीलगाव, रोमा ।
 नीलाथोथा० ना० पु० तृतीया ।
 नीलाम० ना० पु० विक्री, विक्रय ।
 नीलाम्बर० ना० पु० नील वर्ण वस्त्र, और श्री-
 बलदेव जी ।
 नीलान्त० ना० पु० पियावांसा ।
 नीलोत्पल० ना० पु० नीलकमल ।
 नीलोपल० ना० पु० नीलम ।
 नीवा० ना० पु० सुगाह, मन्दार ।
 नीसारना० स० कि० विसारना, निकालना ।
 नीहार० ना० पु० शिशिर, धौस, कुदिरा ।
 नूत० } शु० नया, नवीन ।
 नूतन० }
 नूत० }
 नूचा० ना० पु० तमाकू विशेष ।
 नून० ना० पु० खीन ।
 नूनी० ना० स्त्री० छेदि-बालक का लिंग ।
 नूपुर० ना० पु० स्त्रियों के पैरका गहनेना यथात्
 विड्या वा नेवर वा पायजय ।
 नृग० ना० पु० राजा विशेष जिसको श्रीकृष्णचन्द्र
 ने सद्य तनु से उदार किया था ।
 नृत्य० ना० पु० नाच, नाचना ।
 नृत्यक० } शु० गु० नाचनेवाला ।
 नृत्यकारी० }
 नृद्वेष० }
 नृद्वेषता० }
 नृप० } ना० पु० राजा, नदिराह ।
 नृपति० }
 नृपाल० }
 नृसखी० शु० दुष्ट, कुशादी ।

नृसिंह० ना० पु० नीचा विष्णु का अवतार और
 मनुष्यों का शिरोमणि ।
 ने० अन्व० सकर्मकक्रिया के भूतकाल में कर्ता के
 अन्त में यह चिह्न आता है, यथा, उस ने
 मारा ।
 नेई० ना० स्त्री० नीच दौवारकी, भीतर की जड़ ।
 नेई० } शु० तनिक, अल्प, थोड़ा ।
 नेकु० }
 नेग० ना० पु० विवाह में जो दान दिया जाता है
 अथवा जो नेगी नाऊ पाते हैं वा जो प्रद्वारी
 गांव में पाता है ।
 नेटा० ना० पु० पोंडा, रेंडा ।
 नेठमी० शु० स्थिर, एकटामी, कायम ।
 नेतक० ना० पु० नङकुल ।
 नेता० ना० पु० नीचकावृत्त ।
 नेति० अन्व० नाइति, नहीं ।
 नेती० ना० स्त्री० रस्ती जो मथानी में बांधते हैं
 घूत जो नाक में डालकर घुसमें निकालकर नाक
 को स्वच्छ करते हैं, उसका नाम ।
 नेम० ना० पु० नियम, संयम, प्रण, शौच ।
 नेमी० शु० संयमी, नियमी, प्रथी ।
 नेरे० अन्व० निफट ।
 नेव० ना० स्त्री० भीतिकी जड़ अन्व० नाइम ।
 नेवतना० स० कि० न्योतादेना, भोजन के लिये
 किसी को बुलाना ।
 नेवता० ना० पु० बुलाना, निमन्त्रण ।
 नेवताना० स० कि० न्योता दिखाना ।
 नेवर० ना० पु० छोड़े के पांवका रोग विशेष
 भूषण विशेष ।
 नेवल० } ना० पु० नकुल जन्तु विशेष ।
 नेवला० } सांप का घेरी होता है ।
 नेह० ना० पु० स्नेह, प्रीति, तेल ।
 नेहा० शु० स्नेही, ना० पु० मित्र ।
 नेत्र० ना० पु० नयन, आँसू, पट, कटरी, शान ।
 नेत्रपुत्रिका० ना० स्त्री० आँसू की पुतली ।
 नेत्रलोत० ना० पु० वन्सुधा ।

नानार्थ० ना० पु० अनेक अर्थ ।
 नानाविधि० यु० अनेक प्रकार ।
 नानी० ना० स्त्री० माता की माता ।
 नान्द० ना० स्त्री० नाद, मिट्टी का बड़ा बरतन विशेष ।
 नान्दिया० ना० पु० शिवका वाहन, वृषभ ।
 नान्दीमुख० ना० पु० श्राद्ध विशेष, जो पुत्र जन्म के पछे होता है वा विवाहादि में ।
 नान्धना० स० कि० आरम्भ करना ।
 नान्यतर० }
 नान्यथा० } अन्वय० अन्यथा नहीं, असत्यनहीं ।
 नाप० ना० स्त्री० माप, परिमाण ।
 नापना० स० कि० मापना, परिमाण करना ।
 नापित० ना० पु० नाई, हज्जाम ।
 नाभि० ना० स्त्री० पेटके मध्यका स्थान, टोंडी, तोंदी, ना० पु० राजाविशेष ।
 नाम० ना० पु० श्रुति, यश, विख्याति, संज्ञा ।
 नामकरण० ना० पु० संस्कार विशेष, नाम रखना ।
 नामानि० ना० पु० नामका बहुवचन ।
 नामी० यु० प्रसिद्ध, कीर्तिमान् विख्यात, यशी, मशहूर ।
 नायक० ना० पु० मुखिया, प्रधान, स्वामी, सुन्दर रीति से गायक वा नर्तक बनजारों का प्रधान ।
 नायका० ना० स्त्री० नायिका ।
 नायिन० ना० स्त्री० नाई की जोरू ।
 नायकी० ना० स्त्री० नायक की स्त्री, धर्मी, धिया कुटनी ।
 नार० ना० स्त्री० नारि, नाल, झुण्ड, भौवा ।
 नारक० ना० पु० नरक ।
 नारकी० यु० नरक निवासी, नरकी ।
 नारंगक० ना० पु० }
 नारंगी० ना० स्त्री० } फल विशेष ।
 नारद० ना० पु० मुनि विशेष ।
 नारा० ना० पु० नाला, कमरबन्द ।

नाराच० ना० पु० बाण, तीर ।
 नारायण० ना० पु० श्रीभगवान् ।
 नारायणी० ना० स्त्री० सधमी, धतार, बाँस ।
 नारायण सम्बन्धी ज्योति विशेष ।
 नारि० ना० स्त्री० अबला, नाई, जिस में बाल का घूत रखकर मुनते हैं, सन्दूक बिना कंठ, बाँसका पोर जिसमें खीन पानी आदि भरते बेल गाय आदिको पिलाते हैं ।
 नारिकेर० }
 नारिकेल० } ना० पु० फल विशेष ।
 नारियल० }
 नारियली० ना० पु० नारियल का हुक्का ।
 नारी० ना० स्त्री० अबला, स्त्री, नाईसारं विशेष, जिसे करमुआ कहते हैं ।
 नाल० ना० पु० कमलादि की दण्डी, नाई, फोंफा नल, नली ।
 नालकी० ना० स्त्री० पालकी विशेष ।
 नाला० ना० पु० जल निकलने का मार्ग ।
 नालिसिद्धक० ना० पु० सभालू ।
 नाली० ना० स्त्री० घुहरी खोया नाला, जिसमें में दण्डे करते हैं, जिसकाटको उधते हैं ।
 नाव० ना० स्त्री० नौका, तरनी ।
 नाचना० स० कि० झुकाना, डालना, नवाना ।
 नाचरि० ना० पु० निवारा, जलक्रीड़ा ।
 नाविक० ना० पु० माँकी, नाव वा जहाज खोलने हारा, मसाह, कपतान ।
 नाशक० यु० नाशकरनेहारा, मिटानेहारा ।
 नाशन० ना० पु० मिटावन, मेटन ।
 नाशना० स० कि० मिटाना, ध्वंसकरना, नाशना ।
 नाशपाती० ना० स्त्री० फल विशेष ।
 नाशा० ना० स्त्री० नासिका ।
 नाशासंभेदन० ना० पु० नकलीकन, पीथा ।
 नाशिका० ना० स्त्री० नासिका, नाक ।
 नाश० ना० पु० सुधनी, हुलास ।
 नाशना० स० कि० भागना, स० कि० नारी करना ।

नेत्राम्बु० ना० पु० आँसू ।
 नेत्रोपमा० ना० स्त्री० बादाम, आँसूकी उपमा ।
 नैर्ऋत्य० ना० पु० पश्चिम और दक्षिण का
 कोण, राक्षस ।
 नैकट्य० ना० पु० निकटता ।
 नैक० यु० थोड़ा, अल्प ।
 नैजाना० अ० कि० झुकना, निहुरना ।
 नैन० ना० पु० नैन, पगड़ा ।
 नैपाल० ना० पु० तांवा, देश विशेष, नीति का
 प्रतिपाल ।
 नैपाली० ना० पु० मनसिल, नेपालवासी ।
 नैपुण० यु० निपुण ।
 नैपुण्य० ना० पु० निपुणता ।
 नैमित्तिक० यु० समथी, निमित्तका ।
 नैमित्तिकदान० ना० पु० सम्युपाय देना ।
 नैया० ना० स्त्री० नावखोटी, खेवट, बाँड़ी ।
 नैयायिक० न्य० पु० न्यायशास्त्र का ज्ञाता,
 तार्किक ।
 नैर्मल्य० ना० पु० निर्मलता ।
 नैवेद्य० ना० पु० देवता के भोजन की समुपमा,
 गुडार्पण ।
 नैष्ठिक० यु० विश्वासी, निष्ठापुत्र ।
 नैहर० ना० पु० स्त्री० को मैकापी ।
 नो० अव्य० नहीं ।
 नोखा० } यु० अन्वटा, अजायब ।
 नोको० }
 नोच० ना० पु० बकोट, घुटकी ।
 नोचना० स० कि० बकोटना, घुटकी सेना ।
 नोन० ना० पु० लोन ।
 नोना० स० बांधना,
 नोनापानी० ना० पु० लवणानु, समुद्रका जल ।
 नोनिया० ना० पु० सोनिया ।
 नोय० कि० इहो समय भाग्यके पावसांधना ।
 नोका० न० स्त्री० नाव ।

नौखण्ड० ना० पु० पृथ्वी के नौ खण्ड ।
 नौगरी० ना० स्त्री० नवगरी ।
 नौछावर० ना० पु० निचावर ।
 नौढ़ना० अ० कि० झुकना, निहुरना, अधीत
 होना ।
 नौढ़ाना० स० कि० झुकाना, निहुरना ।
 नौतना० स० कि० नेवतना ।
 नौता० ना० पु० नेवता ।
 नौमासा० ना० पु० गर्भ से नव मास का
 उत्सव ।
 नौमि० कि० नमस्कार करताई ।
 नौमी० ना० स्त्री० नवमी, नवी तिथि ।
 नौरतन० ना० पु० नवरत्न ।
 नौल० ना० पु० नवल ।
 नौसादर० ना० पु० औपधि विशेष ।
 न्यकार० ना० पु० कुस्ता ।
 न्यग्रोध० ना० पु० नगद का वृक्ष ।
 न्यस्त० यु० सौपाभया, सौपित ।
 न्याय० ना० पु० धर्म, विचार, तर्कशास्त्र, विरोध
 फैसला ।
 न्यायक्र० ना० पु० न्याय करनेहारा ।
 न्यायशास्त्र० ना० पु० तर्कशास्त्र ।
 न्यायी० ना० पु० न्यायक, न्यायशास्त्र का ज्ञाता,
 नूनेहारा ।
 न्यार० ना० पु० चारा ।
 न्यारा० यु० अन्वटा, निराला, अन्वटा ।
 न्यारिया० यु० सचता, चौकस ।
 न्यून० यु० छोटा, घाट, हीन, कम ।
 न्यूनफाण० ना० पु० छोटा कोना ।
 न्यूनता० ना० स्त्री० } घटती, कमी ।
 न्यूनत्व० ना० पु० }
 न्यूनवय० यु० कम उमर ।
 न्यूनार्धक० ना० पु० छोटा वृद्धा ।
 न्यौतना० स० कि० नेवतना ।
 न्यौता० ना० पु० नेवता ।
 न्यौताना० स० कि० नेवताना ।

न्याला० ना० पु० जन्तु, विशेष ।
 न्वस्नांभडा० ना० स्त्री० निस्त ।
 [प] ।
 पकड़० ना० स्त्री० महण, गिरिफ्त ।
 पकड़ना० स० कि० गोचनी, रोकना ।
 पकड़ाना० स० कि० ग्रहण, करीना ।
 पकना० अ० कि० रंधाना, पकाहीना ।
 पकवाई० ना० स्त्री० पकाने का काम वा यंत्र ।
 पकवान० ना० पु० पाक जो धी में पकाया गया
 यथा पूरी, समोसा आदि मिठोई ।
 पकवाना० स० कि० रंधाना, पका कराना,
 चुराना ।
 पका० गु० पकाना ।
 पकाई० ना० स्त्री० पूराई, सिद्धता, तैयारी ।
 पकाना० स० कि० पकवाना, पकाकरना
 रांधना, चुराना ।
 पकाव० ना० पु० पाकियाई, पुस्तनी ।
 पकाइ० ना० पु० ।
 पकाडी० ना० स्त्री० ।
 पकाडी० ना० स्त्री० ।
 पक० } गु० रांधा, रंधा, पूरा, खडा,
 पका० } तैयार ।
 पख० ना० पु० पख ।
 पखडी० ना० स्त्री० फूल की पत्ती ।
 पखरीडा० ना० पु० पानिपर लगाया हुआ रथको
 या रथको पत्र ।
 पखवार० ना० पु० पख १५ दिनका प्रमाण ।
 पखो० ना० पु० पख, पख, शानदीपके यथा
 (पतामोरधारे जेदा शीश सेहे) ।
 पखान० ना० पु० पापाय, दाहा (ज्यो पनिहारी
 जेवरी रसिककद पयान तुलसी रसना रामकड
 पाए कितिक अठमात्) ।
 पखारना० स० कि० धोना ।

पखारे० स० कि० धोना ।
 पखाल० ना० पु० चमड़ेका जूलापान जो बेलपर
 लादकर लाते हैं ।
 पखावज० ना० पु० होल वा बडा मुदंग ।
 पखावजी० ना० पु० पखावजे बजातेहारा ।
 पखेइ० } ना० पु० पत्ती, परिन्द ।
 पखेरू० }
 पखेस० ना० पु० झपा, चिह्न ।
 पखोर० ना० पु० टोकर, लातकी डेल ।
 पखोरन० ना० पु० पखोर का बहुवचन ।
 पखोरना० स० कि० टोकर मारना, लात का
 धका लगाना ।
 पग० ना० पु० पदा पांव, पैर ।
 पगडी० ना० स्त्री० सिरबन्द, दस्तार, शिरपर
 बांधने का वस्त्रविशेष ।
 पगदण्डी० ना० स्त्री० छोटी वा संक्षेपवाहक ।
 पगना० अ० कि० किसी रसमें डूबना वा पकना
 वा मनलगाना ।
 पगला० गु० मूर्ख, सिद्धा, बेविलास ।
 पगहा० ना० पु० बडीरसीना ।
 पगहिया० } ना० स्त्री० छोटापगहा ।
 पगही० }
 पगा० गु० किसी रसमें डूबना, ना० स्त्री०
 नदी ।
 पगार० ना० पु० भीति बनाने के लिये मीठी
 मिठी वा पांयतक पानी का थाना ।
 पगारनि० ना० स्त्री० छुडैरी रामचन्द्रिकायां यथा
 (अति उच्च अतारनि जनी पगारनि जनु चिन्ता-
 मथि नारि)
 पगिया० ना० स्त्री० पगडी ।
 पगु० ना० पु० पग, पांव ।
 पगुराना० अ० कि० जुगली करना ।
 पंक्र० ना० पु० पाती मिली मिठी, बंध ।
 पंकज० ना० पु० कमल ।
 पंक्ति० ना० स्त्री० प्रांति, संतर, क्रवार ।
 पंख० ना० पु० पखतन, पर, पख ।

निगड्० ना० पु० कटिवन्धन, बेड़ी पेंकड़ी काठ ।
निगत० गु० नंगा ।

निगन्दना० स० कि० तागना ।

निगन्दा० ना० पु० } तागने का काम ।
निगन्दाई० ना० स्त्री० }

निगम० ना० पु० वेद, नीच, जहाँ जा न सके ।

निगमनदी० ना० स्त्री० श्रीगंगाजी ।

निगमनिवासी० ना० पु० ब्रह्मा वेदनिवासी ।

निगर० ना० पु० दीर्घ बड़ा ठोस ।

निगलना० स० कि० लालना, घूटना ।

निगाली० ना० स्त्री० हुका पीने की नली,
फुकनी ।

निगुण० गु० निर्युग ।

निगूढ० अतिअगम, दुर्गम, अतिकठिन, अप्रकट,
गुप्त ।

निगोटा० ना० पु० अकर्म, चाण्डाल ।

निगुर० गु० ठोस ।

निग्रह० ना० पु० त्याग, रोक, धिन, चिह्न, कुपय-
दण्ड ।

निग्रही० गु० ताड़नेहारा, रोकने-हारा ।

निघटत० कि० घटतेही ।

निघटना० अ० कि० घटना ।

निघटाना० स० कि० घटवाना ।

निघटी० कि० भू० घटी वा बहुत-घटगई ।

निघरट० ना० पु० औषधि-वर्षन, रोगपरीक्षा ।

निघरघटा० ना० पु० दुलखना, हर्दाई करना,
दिठाई करना ।

निचय० ना० पु० समूह ।

निचिन्त० गु० चिन्ता रहित, अचिन्त, अशोच ।

निचिन्ताई० ना० स्त्री० प्रमाद, सुभीता,
बेतकके ।

निचोड़० ना० पु० काम का पूरा होना वा कुछ
शोरहना ।

निचोटना० स० कि० दवाना गारना, चूसलेना ।

निचोड़० गु० चुटोरा, गाऊप ।

निचोलनि० ना० स्त्री० चोतनी, रफा-
वख ।

निछावर० ना० स्त्री० उतारा, बलि ।

निज० गु० आप निश्चय, जकड़ ।

निजका० गु० अपना ।

निजगति० ना० स्त्री० अपनी दशा वा चाल ।

निजगुरु० ना० पु० अपना-गुरु ।

निजतन्त्र० गु० निज-इच्छा, स्ववशा ।

निजपति० ना० स्त्री० अपनी प्रतिष्ठा, ना० पु०
अपना स्वामी ।

निजवर्त्ती० गु० निजाश्रित, स्वतन्त्र ।

निजसन्धि० ना० स्त्री० अक्सर, निजसमय ।

निजस्थान० ना० पु० अपना-घर वा स्थान ।

निजानन्द० ना० पु० अपने-हस्त में निज
में मग्न ।

निजाश्रित० गु० स्ववशा, निगवशा, अपना
निज भरोसे ।

निभाना० स० कि० निरखना, भांकना ।

निभोटना० स० कि० खसोटना, भटकना ।

निझोल० गु० झोलरहित, अभीर सुडोल, बल-
ने हारा ।

निडुर० गु० कठोर, निर्दय, स्नेही विनयीति ।

निडुरता० } ना० स्त्री० कठोरता, निर्दयता ।

निडुराई० }

निडर० गु० निर्भय, अशंक ।

निढाल० } गु० स्थावर, अचल ।

निढोल० }

नित० अव्य० नित्य, प्रतिदिन ।

नितनव० गु० नितनया ।

नितप्रति० अव्य० नित्य, प्रतिदिन ।

नितम्ब० ना० पु० नूतन, कटिके पीछे का नया
चला भाग ।

नितम्बिनी० ना० स्त्री० युवती, स्त्री, औरत ।

नितान्त० अव्य० अत्यन्त, अधिक ।

नित्य० अव्य० नित्यप्रति, सदा, सत्य, पवित्र,
अपर ।

पंखा० ना० पु० बेना, विजना ।
 पंखिया० गु० बल्लिडिया, भगडाल ।
 पंखी० ना० पु० पंखा छोटा, छोटा पंखा,
 परन्द ।
 पंगत० } ना० स्त्री० पंक्ति, श्रेणी, धारी ।
 पंगति० }
 पंगुला० गु० लंगड़ा ।
 पचक० ना० स्त्री० सूत ।
 पचकना० अ० कि० सूतना, सूजन उतरना ।
 पचखना० गु० पांचखण्ड वाला ।
 पचघरा० ना० पु० घर विशेष जिसमें पांच
 घर हों ।
 पचतोरिया० } ना० पु० बलाविशेष अर्थात्
 पचतोलिया० } सारी थोढ़ने की ।
 पचना० अ० कि० सड़ना, गलना, भस्महोना;
 परिश्रम करना ।
 पचपचाना० अ० कि० गीला वा दीला वा भीगा
 होना, पसीजना, सड़ना ।
 पचपन० गु० पचास और पांच, ५५ ।
 पचमिल० गु० मिश्रित, मिलित ।
 पचमेल० गु० पचमिल ।
 पचस्पचा० ना० स्त्री० दारुहल्दी ।
 पचलडा० ना० पु० } गु० जिसमें पांचलड हों ।
 पचलडी० ना० स्त्री० }
 पचलोना० ना० पु० औषधि विशेष ।
 पंचाडालना० स० कि० पचाना, सड़ाना; और
 सायजाना, हजमकरना ।
 पचानधे० गु० नम्बे और पांच ६५ ।
 पचाना० स० कि० पचाना, सड़ाना, हजम
 करना ।
 पचास० गु० पांच दहाई, ५० ।
 पचासी० गु० अस्सी और पांच, ६५ ।
 पचीस० गु० बीस और पांच, २५ ।
 पचीसी० ना० स्त्री० खेल विशेष ।
 पचूका० ना० पु० पिचकारी ।
 पचत्० कि० पचताई, डुलपता है; पकताई ।

पचोतर० } ना० पु० सैकड़ा पाँच पाँच सेना,
 पचोतरा० } पाँच रुपये सैकड़ा ।
 पचौनी० ना० स्त्री० शोक, मोक्ष ।
 पघर० ना० स्त्री० फणी, ठेक ।
 पच्छम० } पु० पश्चिम ।
 पच्छिम० }
 पछुइना० } अ० कि० गिरजाना, हटजाना,
 पछरना० } आधीन होना ।
 पछताना० स० कि० पश्चात्ताप करना, पीछे को
 शोधना, अफसोस करना ।
 पछतावा० ना० पु० पश्चात्ताप, शोच ।
 पछुना० ना० पु० गौंठी, सोदवाई, चीरा, ब्रह्म
 विरोध ।
 पछनी० ना० स्त्री० शरीर के चमड़े में चीरा
 करना ।
 पछुरा० गु० गिरपड़ा पीछे को हटा ।
 पछुवा० ना० पु० पवन जो पश्चिम से आता है ।
 पछाड़ु० ना० स्त्री० पटकन, पटकने का काम ।
 पछाड़ना० } स० कि० गिरादेना, आधीन
 पछारना० } करना, पटकना ।
 पछाह० ना० पु० पश्चिम ।
 पछुयाना० स० कि० पीछा करना ।
 पछियाव० ना० पु० पश्चिम का पवन ।
 पछाड़ु० ना० स्त्री० फटकन, फटकाव, फटकने
 का काम ।
 पछोइना० } स० कि० फटकना; सुपमें लालके
 पछोरना० } उछालना ।
 पजोड़ा० गु० निकम्मा, पाजी ।
 पंच० गु० पांच ५ ना० पु० जाति के चौपरी,
 काप्योदि के विचारक, सभा, ५ मंडप, इमान
 का रोदा ।
 पंचक० ना० स्त्री० विद्या, रोदह पांचकरना ।
 पंचकोश० ना० पु० पांचोश अर्थात्, अक्षय,
 प्राणमय, मनोमय, विज्ञानमय, आनन्द ।
 पंचगव्य० ना० पु० पांच पदार्थ जो गाय से प्राप्त
 होते हैं अर्थात् दूध, दही, घी, गोमूत्र, गोमूत्र ।

नित्यकर्म० ना० पु० स्नानपूजादि कर्तव्य कर्म
शुक्लकर्म ।
नित्यता० ना० स्त्री० सदापन, सदैव ।
नित्यदान० ना० पु० प्रतिदिनदेना, सत्यदान,
सात्त्विकदान ।
नित्यानन्द० ना० पु० सर्वदाकाल आनन्द ।
निधम्भ० ना० पु० स्तम्भ, पीलपाया ।
निधरा० शु० फर्चा, फर्छा ।
निधारना० स० कि० उडेलना, फर्छा करना ।
निदाग्धिका० ना० स्त्री० श्वेत छोटी कटई ।
निदरहि० कि० निन्दाकर, नामाने ।
निदरना० स० कि० निन्दा करना ।
निदरि० अ० कि० निरादरकरके, अपमानकर ।
निदाघ० ना० पु० शीघ्र, गर्मी ।
निदान० अर्थ० अन्त, पीछे, पूरा, निपट ना० पु०
रोगपरीक्षा, औषधि कथन, अन्तविचार, कारण ।
निदेश० ना० पु० आज्ञा, अनुशासन, कीर्ति-
मोरनिदेशानिमित्त, देउदवायनागतरेपेट, इतिप्र-
सादचरिषे सहजरागकाव्ये ।
निद्रा० ना० स्त्री० औषाई, नींद ।
निद्रारि० ना० पु० विरायता ।
निद्रालु० शु० स्वभाववरा, जो अधिक सोवे ।
निद्रित० शु० निदासा, सोबासा ।
निधङ्क० शु० निर्भय, अव्य० अचानक ।
निधन० ना० पु० मृत्यु, नाश, धनहीन ।
निधरक० शु० निधङ्क ।
निधान० ना० पु० स्थान, घर, धन, आधार,
नाडा ।
निधि० ना० स्त्री० कुबेरका एक रत्न, सम्पत्ति, ना०
पु० समुद्र, शु० नीह ।
निधिजात० ना० पु० चन्द्रमा आदि ।
निधिसुता० ना० स्त्री० थीलक्ष्मी जी ।
निनन्द० } ना० पु० राक्ष, पश्या, खनि ।
निनाद० }
निनाया० ना० पु० खटमल ।

निनायी० ना० पु० विशेष, रोगविशेष ।
निन्दक० शु० निन्दा करनेहारा, नाँदनेहारा ।
निन्दकाई० ना० स्त्री० निन्दकता, निन्दा ।
निन्दना० स० कि० दोषदेना, फलफलगाना ।
निन्दनीय० निन्दा के योग्य ।
निन्दा० ना० स्त्री० दोष, फलक, घुरा कहना ।
निन्द्य० शु० निन्दा के योग्य ।
निनाया० ना० पु० रोगविशेष ।
निनानघे० शु० एकौनशत, ६६ ।
निपट० अर्थ० निरातिर, अधिक, बहुत, अति,
सरासर, सर्व ।
निपटना० अ० कि० चुकना, पूराकरना ।
निपटाना० स० कि० चुकाना, पूराकरना, टह-
राना, निबड़ना ।
निपटारा० ना० पु० निवेदा, फैसला ।
निपटारू० ना० पु० निवेरू ।
निपात० ना० पु० मृत्यु, नाश, गिरना ।
निपाता० कि० नाश किया, मिटाया ।
निपान० ना० पु० जलाराय, दोहनी ।
निपुण० शु० प्रवीण, चतुर, दाना ।
निपूता० शु० जिसके सन्तान नहीं ।
निफल० शु० निर्धै, फलरहित ।
निचटेरा० ना० पु० निस्तोक, छुटनी ।
निघडना० अ० कि० निपटना, होचुफना ।
निघन्ध० ना० पु० बन्धेन, इकरार शु० जो
टहर गया ।
निघन्धन० ना० पु० बन्धन, टहराव ।
निघन्धित० शु० जो टहरगया, बन्धित ।
निघल० शु० निर्बल, लाचार बुद्धा ।
निघाह० ना० पु० समाप्त, निवेदा, निवाह, बात
का पूरा करना ।
निघाहू० शु० टिकाऊ ना० पु० निपटारू ।
निघेड़ना० स० कि० निपटाना ।
निघेड़ा० ना० पु० निचटेरा, निपटारा ।
निघेड़ि० शु० निघाह ।
निम० ना० पु० तुल्य, बराबर ।

पंचज्योतिषा० ना० पु० पांचप्रकार की ज्योतिषा
 अर्थात् भोज्य, मह्य, लोभ, चोच्य, धेय, श्रुति
 पंचतत्त्व० ना० पु० पांचतत्त्व अर्थात् आकाश,
 वायु, अग्नि, जल, मिट्टी, १५ ।
 पंचतन्त्र० ना० पु० पांचतंत्र अर्थात् वशीकरण,
 मारण, उच्चाटन, मोहन, आकर्षण ।
 पंचत्व० गु० मनु ।
 पंचदश० गु० पन्द्रह, १५ ।
 पंचदशानर्थ० ना० पु० पन्द्रह अनर्थ अर्थात्
 चोरी, हिंसा, मिथ्या, दम्भ, काम, क्रोध, विरम-
 रण, वैर, अमतीति, भेद, भय, खेद, चिन्ता,
 लोभ, सर्वपदार्थ, १५ ।
 पंचनखी० ना० स्त्री० गौह ।
 पंचपल्लव० ना० पु० पांच वृक्षों की पत्तीयाडली ।
 पंचपात्र० ना० पु० पूजाका पात्रविशेष ।
 पंचपुराणलक्षण० ना० पु० पुराण के पांच ल-
 क्षण अर्थात् सर्ग, प्रतिसर्ग, वंश, मन्वन्तर, वंशानु-
 चरित ।
 पंचप्राण० ना० पु० पांचप्राण अर्थात् प्राण, अ-
 धान, उदान, समान, व्यान, ५ ।
 पंचभूत० ना० पु० पंचतत्त्व ।
 पंचम० गु० पांचवां, रागका स्वरविशेष ।
 पंचमाशु० गु० पांचवामाशु ।
 पंचमी० ना० स्त्री० पांचवां तिथि, व्याकरण में
 पांचवांकारक ।
 पंचमुख० ना० पु० श्रीमहादेवजी ।
 पंचम्यन्त० गु० जिसके अन्तमें पंचमीका प्रत्ययहै ।
 पंचवक्त० ना० पु० श्रीमहादेव जी ।
 पंचविंश० } गु० पचीस, २५
 पंचविंशति० }
 पंचविंशतितम० गु० पचीसवां ।
 पंचविंशप्रकृति० ना० स्त्री० पचीस प्रकृति
 अर्थात् अस्थि, मांस, त्वक्, रोम, नाटिका, धीर्य,
 मूर्ध, रक्त, पचा, सार, भ्रूव, प्यास, नोद, क्रान्ति,
 निहलम् ।

आलस्य, दीहना, चलना, पसारना, समेटना,
 कूदना, राग, द्वेष, खान, भय, मोह, २५ ।
 पंचनख० ना० पु० सिंह, व्याघ्र ।
 पंचधियो० गु० सक्का वैरी, दुष्ट ।
 पंचशर० कामदेव ।
 पंचशाखा० ना० पु० हाथ ।
 पंचसूक्ष्मवायु० ना० पु० पांचसूक्ष्म वायु अर्थात्
 नाग, कूर्म, कृकल, देवदत्त, धनेजय ।
 पंचांगुल० ना० पु० दोनों अरखड, पांचअंगुल
 पंचांगुली० ना० स्त्री० पांच अंगुली अर्थात्
 अंगुष्ठ, तर्जनी, मध्यमा, अनामिका, कनिष्ठिका ।
 पंचाध्यायी० ना० स्त्री० श्रीमद्भागवत के रास-
 मण्डल के पांच अध्याय का समुदाय ।
 पंचानन० ना० पु० श्रीमहादेवजी, सिंह ।
 पंचामृत० ना० पु० दही, दूध, घी, मधु, शक्कर
 की मिलोनी जो देवता हेतु बनाते हैं ।
 पंचायत० ना० स्त्री० बहुत मनुष्यों की मति वा
 मनुष्यों का समूह जिसमें अगुआ नियतया जाता
 है, वा जातिकी समा वा समुदाय ।
 पंचाल० ना० पु० देश विशेष ।
 पंचालिका० ना० स्त्री० वेश्या, पशुरिया ।
 पंचाली० ना० स्त्री० वेश्या, द्रोपदी ।
 पंचावन० गु० पंचपन, ५५ ।
 पंचास० गु० पचास, ५० ।
 पंचास्य० ना० पु० श्रीमहादेव जी, सिंह, गु०
 पांच मुखवाला ।
 पंचीकरण० } गु० पांचकक्रियाहुआ, वा पांच
 पंचीकृत० } पांच क्रियागया ।
 पंजी० ना० पु० पची, चिड़िया ।
 पंजर० ना० पु० पांजली, पांजर, पिंजरा ।
 पंजरगत० गु० पिंजरे में ।
 पंजाब० ना० पु० देशविशेष जिसमें पांच नदि-
 यां हैं अर्थात् सतलज, व्यास, रावी, चिनाब,
 महलम् ।

निभना० अ० कि० निवाहोना, पारहोना ।
 निभाना० स० कि० निवाहोना, पारकरना ।
 निमकी० ना० स्त्री० लोनका निम्बू ।
 निमकौड़ी० ना० स्त्री० नींबूका फल ।
 निमन० गु० ठोस, पोदा, सुन्दर ।
 निमनाई० ना० स्त्री० पोदाई ।
 निमनाना० स० कि० पोदाकरना, संभालना ।
 निमंत्र० } ना० पु० न्योता ।
 निमंत्रण० }
 निमाना० गु० भोला, मैदान ।
 निमि० ना० पु० राजाविशेष ।
 निमित्त० ना० पु० कारण, लिये, भाग, हेतु ।
 निमिप० ना० पु० थोड़ादर, पलक, चाल ।
 निमिपमात्र० ना० पु० अत्यन्त थोड़ाकाल ।
 निमीलन० ना० पु० मृत्यु, रूपकी, पलक ।
 निमेप० ना० पु० पलक, विपल ।
 निम्न० गु० नीचास्थान, नीचान, अधो ।
 निम्नगा० ना० स्त्री० नदी ।
 निम्ब० ना० पु० नींबू वृक्ष ।
 निम्बक० ना० पु० निम्बू ।
 निम्बरक० ना० पु० नींबू, वा महानींबू ।
 निम्बू० } ना० पु० नींबू ।
 निम्बूक० }
 नियत० गु० जो दृक्काय, सुकर, कायम ।
 नियन्ता० ना० पु० स्वामी, अध्यक्ष, सारथी, नि-
 यतकर्ता ।
 नियम० ना० पु० प्रण, वचन, अंगीकार, जो
 कुछ धर्म की क्रियाकर, यथावत ।
 नियमित० गु० निश्चित, प्रणकिया गया ।
 नियमन० ना० पु० नीम वृक्ष, रोक ।
 नियर० } अर्थ० समीप, पास ।
 नियरे० }
 नियराई० ना० स्त्री० समीपता, निकटता ।
 नियामक० ना० पु० नाबिक, नियन्ता ।
 नियुक्त० गु० नियोजित, स्थापित ।
 नियुत० गु० दरालात, १०००००० ।

नियोग० ना० पु० प्रण, आज्ञा, तथा मुहूर्त
 करना ।
 नियोजन० ना० पु० स्थापन, आज्ञा ।
 नियोजित० गु० स्थापित, रक्ता ।
 निर० अर्थ० निः ।
 निरस्थना० स० कि० देखना, विलाकना ।
 निरंकार० गु० निराकार ।
 निरंकुश० गु० स्वच्छाचारी, निबर ।
 निरंजन० गु० निर्मल, राग रहित, अविश-
 रहित, ना० पु० ईश्वर ।
 निरत० गु० अति प्रीतिमय, लीन ।
 निरतक० ना० पु० नचवैया ।
 निरर्थ० गु० झूठ, निष्प्रयोजन, बेकार्यदर ।
 निरन्त० गु० अन्तररहित, अपरम्पार, ना० पु०
 आकारा, ईश्वर ।
 निरन्तर० अर्थ० नित्यप्रति, जिसमें वियोग नहीं
 सत्य, अन्तर विन ।
 निरन्ध० गु० द्रष्टा, देखने वाला ।
 निरपराध० } गु० अपराध रहित, निर्दोष ।
 निरपराधी० }
 निरस्थु० गु० जलरहित ।
 निरथ० ना० पु० नरक, दोषक ।
 निरर्थक० गु० टोला, प्रमादी, अनरति, अर्थ-
 रहित, निष्प्रयोजन ।
 निरवग्रह० गु० स्वच्छन्द, स्वतन्त्र ।
 निरवद्य० गु० आनन्दित, अकथ्य ।
 निरवारण० ना० पु० उधारन, बचाव, सु-
 भावत ।
 निरवारणा० स० कि० खोलना, खोडना ।
 निरस० गु० रसहीन, फीका, बदनसह ।
 निरस्त० गु० त्यागित, जिसका अस्त न हो ।
 निरख० गु० असहीन ।
 निरस्थ० गु० त्यागने के योग्य, त्यागकिये ।
 निरो० गु० केवल, सारा, ठिठ, रूखा ।
 निराकांक्षी० ना० पु० निस्पृह, आकांक्षाहित ।
 निराकार० गु० आकारहीन, यथा ईश्वर ।

पंजाबी० गु० पंजाब देशका मनुष्य वा वस्तु ।
 पंजीती० ना० स्त्री० औषधिविशेष, जो प्रमा-
 लता है ।
 पट० ना० पु० कपड़ापद्धति, गिरने वा मारने का
 शब्द, द्वार का किनाड़ा आदि टकन, गु० उलटा
 पुलड़ा पत्र ।
 पटकन० ना० स्त्री० पड़ाइ चौड़ा ।
 पटकना० स० कि० देमारना, पटकदेना, अ०
 कि० चरचराना, फटना, ना० पु० कड़ा ।
 पटका० ना० पु० कर्षणी, कमरे बांधने का क-
 पड़ा ।
 पटकाजाना० अ० कि० दबका, पतितहोना,
 गिरना ।
 पटकाना० }
 पटकारना० } स० कि० पटकना, देमारना ।
 पटकीदेना० }
 पटचर० ना० पु० पुराना वस्त्र, यथा पटचरं
 जीर्णवस्त्रमित्यमरः ।
 पटङ्गा० ना० पु० सिला बैठने के लिये कांठका
 आसन, चौकी, पीढ़ी, पीड़ा, तरुता ।
 पटतर० ना० पु० तुल्य, सदरा, वरानि ।
 पटन० ना० पु० पटने का काम ।
 पटना० स० कि० छतका बगना, टपनी, भर-
 जाना, भरना, भरपाना, ना० पु० नगर
 विशेष ।
 पटनी० ना० पु० नैया ।
 पटपट० ना० पु० भुनने का वा मारने का वा
 पीटने का शब्दविशेष, चटचट ।
 पटरा० ना० पु० पट्टा, ऊनड़ा ।
 पटरानी० ना० स्त्री० रानी, शाहजादी ।
 पटरा० ना० स्त्री० छोटापटरा, यदीया, लपेता ।
 टल० ना० पु० अन्नक, अवरक, टकन, समूह ।
 पटवा० ना० पु० जातिविशेष, पट्टा ।
 पटवाना० स० कि० पट्टना, भरवाना ।
 पटवारा० } ना० पु० धरती का लेता
 पटवारी० } लगानेहारा ।

पटा० ना० पु० गूदफा, पीका, पीड़ा, पटतिया ।
 पटाक० ना० पु० घडाक, धाराका ।
 पटाका० ना० पु० यद्दर, आतशबाती
 विशेष, धडाका ।
 पटाना० स० कि० भरना, जेसा गोर से
 लगाना, मिट्टी से सीपना ।
 पटपट० ना० पु० चयानट ।
 पटाव० ना० पु० सजाव, मराने, पट्टा लो-
 डार वा छतपर जालते दे ।
 पट्टिया० ना० स्त्री० पट्टी ।
 पट्टीना० ना० पु० पक्षीविशेष ।
 पट्टीमा० ना० पु० वेत छापने का बड़ा पट्टा ।
 पट्टीलना० स० कि० मारना, पीटना, आर्षनि-
 करना ।
 पट्टु० गु० चतुर, निपुण, ना० पु० वरु, नुक-
 त्रिकनी, गु० हट्टर ।
 पट्टता० ना० स्त्री० चतुराई, निपुणता, हट्टरता ।
 पट्ट्या० ना० पु० पाट, सनु ।
 पट्टेर० ना० पु० प्रभावविशेष, गौदी ।
 पट्टेरा० ना० पु० वृद्धाविशेष ।
 पट्टेल० ना० पु० लड़काने का काम, प्रभुत्व, क-
 र्मी, जातिमें प्रधान, महापट्ट की पट्टी ।
 पट्टेला० ना० पु० नायविशेष, ना० स्त्री० सरावन ।
 पट्टेला० ना० स्त्री० छोटा पट्टेला ।
 पट्टेला० ना० पु० पट्टा ।
 पट्टीतन० ना० पु० पट्टेन ।
 पट्टोर० ना० पु० रेशमीबज, पाट ।
 पट्टोल० ना० पु० पतंबला ।
 पट्टोहिया० ना० पु० उल्ल ।
 पट्टौनी० ना० स्त्री० नैया, पट्टी ।
 पट्टु० ना० पु० पट्टा पत्र ।
 पट्टन० ना० पु० नगर, पुर ।
 पट्टवख० ना० पु० रेशमी कपड़ा ।
 पट्टा० ना० पु० घोड़ेकी पट्टी, कूचे के गले में बा-
 धनेका चमड़ा, कानों परके रखेहुये बाल

निरादर० गु० आदररहित, अवज्ञायुत, वा अ
वसा करने हारा ।
निराधार० गु० सहारा रहित, आधार हीन ।
निरामिय० गु० मांसरहित भोजन ।
निराम्बु० गु० आलम्बरहित, अवसम्बहीन ।
निरालस्य० गु० आलस्य हीन, कामकानी, मि
हन्ती, उपायी ।
निराश० गु० भरोसारहित, आशा टूटगर्द ।
निराहार० गु० भोजनहीन, विनकुञ्जसायें ।
निरिच्छा० } गु० इच्छारहित विन इच्छा,
निरिच्छित० } मिसको कुछ चाहे नहीं ।
निरीश० गु० स्वामीरहित, जिसका मालिक न
हो पतिहीन, ना० पु० जीव अर्थात् ईश नहीं ।
निरिह० गु० चेष्टारहित यथा ईश्वर ।
निरिक्षण० ना० पु० ताक, दृष्टि ।
निरुत्तर० गु० उत्तरहीन, लागवाव ।
निरुपाधि० गु० निःश्रयोजन ।
निरुपम० } गु० उपमा हीन, दृष्टान्त रहित ।
निरुपमा० }
निरुपाधि० गु० उपाधि रहित, नेसटके ।
निरुपाय० गु० उपायहीन, विना उपायकिये ।
निरूप० गु० रूपहीन, निराकार ।
निरूपण० ना० पु० दृष्टि, निर्णय, जवाव, विस्तार,
पूर्वक कथन ।
निरूपित० गु० जो विस्तारपूर्वक कहा गया वा
निर्णय किया गया, निश्चययुत, स्थापित ।
नेरेपना० स० कि० पिशांकना, भांकना ।
नेरोग० } गु० निरोग, भला चारा, रोग
नेरोगी० } रहित ।
नेरोघ्र० ना० पु० घेरना, फांसना ।
नेरगत० गु० निकला ।
नेरगता० गु० निकलकर, ना० स्त्री० निकली ।
नेरगम० ना० पु० जहाँ जाय न सके, अगम ।
नेरुण० गु० गुण हीन, निकम्मा, मूर्ख ।
नेरुण्डी० ना० स्त्री० सभाजू ।
नेरुण्ट० ना० पु० सूचीपत्र ।

निर्घात० ना० पु० वज्र, शब्द ।
निर्घृणा० गु० निर्दया कठोर ।
निर्घोष० ना० पु० ध्वनि, शब्द ।
निर्जेर० ना० पु० देवता, जो वृदा न हो ।
निर्जन० गु० मनुष्य हीन, जनरहित ।
निर्जननदी० ना० स्त्री० श्रीगंगानी ।
निर्जल० गु० जलहीन, सूखा, पायाय ।
निर्जाघ० गु० जिसमें जीव नहीं है यथा मिट्टी,
पत्थर आदि, मृतक ।
निर्जांस० गु० सार, सिद्धान्त ।
निर्भर० ना० पु० भरना ।
निर्भरिणी० ना० स्त्री० नदी ।
निर्णय० ना० पु० निश्चय, ठिकाना, न्याय,
झगड़ा मिटाना ।
निर्णीत० गु० निश्चित, निर्णय किया गया ।
निर्दंड० }
निर्दय० } गु० जिसमें दया नहीं है, कठोर
निर्दया० } बेरहम ।
निर्दयी० }
निर्दिष्ट० गु० जो अच्छी विधि देखा गया वा
निरूपित हुआ वा वर्षन हुआ ।
निर्दोष० } गु० दोषहीन, थकलकी, अदोष ।
निर्दोषी० }
निर्द्वन्द्व० गु० विना झगड़ा, नेसटके ।
निर्धन० गु० धनहीन, दरिद्री ।
निर्धार० } ना० पु० निश्चय, निर्णय ।
निर्धारण० }
निर्धारित० गु० निश्चित, निर्णीत ।
निर्वेश० गु० वंशरहित, असन्तान, लावल्द ।
निर्वेशु० गु० बन्धु रहित, अकेला ।
निर्वल० गु० लाचार, बुराई, जिसकी सामर्थ्य
नहीं है ।
निर्वश० गु० वंश रहित, असमर्थ ।
निर्वोज० गु० वीज रहित, पुत्रहीन ।
निर्वुद्धि० गु० बुद्धिहीन, मूर्ख ।

खिलतमं अर्थात् खेत आदि की सनद ।
 पट्टी० ना० स्त्री० पाटी, बंधनी, पनकपत्र
 किसी स्थान आदिका भाग, शीराकाष्ठ ।
 पट्टू० ना० पु० मनात की चादर, कर्णपत्र
 विरोप ।
 पट्टु० ना० स्त्री० नवयोवना, थोड़े दिन की
 बकरी ।
 पट्टा० ना० पु० नवयोवित, पाटा, कुश्ती लड़ने
 हारा, रागविरोप, निमका, सेनापताही ।
 पट्ट० ना० पु० पदन्त ।
 पट्टकायन० ना० स्त्री० पाटक की पत्नी ।
 पट्टन० ना० स्त्री० पट्टन ।
 पट्टवाना० } स० कि० भगवाना
 पट्टाना० }
 पट्टिया० ना० स्त्री० नवयोवना की छवि
 बकरी ।
 पट्टाना० ना० पु० पट्टाना ।
 पट्टानी० ना० स्त्री० पट्टाना ।
 पट्टना० अ० कि० गिरना, देना करना, धारणी,
 करना, खिदना ।
 पट्टपट्टाना० अ० कि० बड़बड़ाना, घटीसता ।
 पट्टाना० स० कि० गिराना, लिखाना ।
 पट्टापट्टु० अर्थ० बारबार मार ।
 पट्टापाना० स० कि० सहज से पाना, कोई
 वस्तु मार आदि में पाना ।
 पट्टाव० ना० पु० टट्टाव, टिकाव, टिकास, टिकने का स्थान, सेता, भीड़ ।
 पट्टाचना० स० कि० पट्टाना ।
 पट्टिया० ना० स्त्री० भैस की बखिया ।
 पट्टोस० ना० पु० समीपता, निकटता ।
 पट्टोसिन्नु० ना० स्त्री० पट्टोसिनकी स्त्री, समीप
 वाली स्त्री ।
 पट्टोसी० ना० पु० निकटवासी, पट्टोस, रहने
 हारा ।
 पट्टन० ना० स्त्री० पट्टन का मारी ।
 पट्टना० स० कि० बांचना, पाठकरना, जपना ।

पट्टन्त० ना० स्त्री० अद्याप, संस्था, वियोग
 पट्टन्ति० } टोटका ।
 पट्टा० गु० चतुर, परिद्धत, बुद्धिमान् ।
 पट्टाना० स० कि० शिवा, देनी, सिखवाना, न
 ताना ।
 पट्टिन० ना० पु० मत्स्यविरोप, मछलीविरोप ।
 पट्टथ० } गु० पट्टन के योग्य ।
 पट्टथमान० }
 पट्टण० ना० पु० प्रतिज्ञा, अवस्था, कर्मा, माल
 चार काकिया अर्थात् बीसगण्डा कौड़ी ।
 पट्टाडो० ना० पु० पुनोरी, देवालय का प्रधान ।
 पट्टिडत० गु० विद्वान्, शुश्रुवान्, पट्टा, बुद्धि-
 मान् ।
 पट्टिडताई० ना० स्त्री० पंडितकाकाम वा वियोगी ।
 पट्टिडतायन० ना० पु० पंडितकी जोर ।
 पट्टिडथायन० ना० स्त्री० पट्टि की जोर ।
 पट्टुव्वी० ना० स्त्री० जलपत्ती, सुप्रीवी ।
 पट्टुखी० ना० स्त्री० कपोतांकृति पत्तीविरोप,
 फावतह ।
 पट्टुरी० ना० स्त्री० पत्तीविरोप ।
 पट्टग० ना० पु० पत्ती, चिडिया ।
 पट्टन० ना० पु० छोटा उड़नेवाला जंतु, तुफल
 विरोप, लकड़ीविरोप, रंगविरोप, सूर्य, पत्ती,
 अग्नि, वृत्रविरोप ।
 पट्टगा० ना० पु० पिगारी, जंतु पतंगविरोप ।
 पट्टभट्टु० अ० पत्तोंका गिरजाना, ना० स्त्री०
 श्रतुविरोप ।
 पट्टन० ना० पु० पट्टकन, पट्टाड, गिरन ।
 पट्टना० अ० कि० पट्टना गिरपट्टना ।
 पट्टला० गु० डवला, भीना, जो गादा नही ।
 पट्टलार० ना० स्त्री० दुर्बलता, दुसलापट्ट ।
 पट्टवार० ना० पु० केनहर, नाव के पिछाने
 पट्टवाल० } का लड़विरोप ।
 पट्टत्रि० ना० पु० पत्ती, चिडिया ।
 पट्टा० ना० पु० चिड, निरान ।
 पट्टाका० ना० स्त्री० धना, छापी मंत्री ।

निर्वृम्भ० गु० जो समझ में न आवे, मूर्ख।
 निर्भय० गु० अभय, निडर।
 निर्भर० गु० पूर्ण, पूरा।
 निर्भ्रम० गु० ममता रहित।
 निर्भ्रल० गु० मलहीन, स्वच्छ, शुद्ध, साफ।
 फर्षी।
 निर्भ्रलता० ना० स्त्री० पवित्रता, स्वच्छता, सफाई।
 निर्भ्रली० ना० पु० बीज विशेष जिससे पानी को स्वच्छ करते हैं।
 निर्माण० ना० पु० धनावट, रचना, बनाना, कर्त्तव्य, सार।
 निर्मात्य० ना० पु० प्रसाद, निवेदित वस्तु, स्वच्छता, शुद्धता।
 निर्मित० गु० रचित, बनाया गया, निर्माण किया गया।
 निर्मूल० गु० हीन मूल, बिना जड़।
 निर्मोह० } गु० मोहरहित, उदासी।
 निर्मोही० }
 निर्यास० ना० पु० शिलाजीत, वृक्षका रस अर्थात् गोंद, काथ।
 निर्याण० ना० पु० यात्रा, प्रस्थान।
 निर्लेज्ज० गु० लज्जा रहित, बेहया, नकटा।
 निर्लिप्त० गु० स्पर्शहीन, जो लिप्त नहीं है।
 निर्लेप० } गु० जिसका चिह्न नहीं वा लेश।
 निर्लेश० } नहीं, बिना लाग, सर्व।
 निर्लोभ० गु० लोभ रहित, दाता।
 निर्बन्ध० गु० छूटा हुआ।
 निर्वाण० ना० पु० मोक्ष, अपवर्ग, लय, गुण, वैकुण्ठवासी, मोक्ष-होगया।
 निर्वाणसुख० ना० पु० मोक्ष, मुक्ति, वैकुण्ठवास।
 निर्वाधा० गु० बाधा रहित, अकटक।
 निर्वाह० गु० निवाह।
 निर्वाहक० गु० निग्रह करनेहारा।
 निर्विकल्प० गु० भेद रहित, अतक्य, कल्पना हीन।

निर्विकार० गु० विकारहीन, निर्वाध, श्रोत्र।
 निर्विघ्न० गु० विघ्नरहित, सानन्द, निर्वाधा।
 निर्वृत्ति० ना० स्त्री० मुक्ति, मृत्युआनन्द, सुख, मार्ग, तरीक, पन्थ।
 निर्घर० गु० धर भाव हीन।
 निर्व्याज० गु० अचल, अस्वारथ।
 निर्व्याधि० गु० व्याधि हीन, अरोग, अकटक।
 निहर० ना० पु० हरनेवाला।
 निलज० गु० निर्लेज्ज, लज्जाहीन।
 निलय० ना० पु० घर।
 निवान० गु० नीचान।
 निवाना० स० कि० नवाना।
 निवार० ना० स्त्री० कोर, पट्टी सूतकी।
 निवारक० गु० बचानेवाला, रोकनेवाला।
 निवारण० ना० पु० सिपेध, रोक, बचाव।
 निवारना० स० कि० रोकना, बचाना, बरमाना।
 निवारत० कि० बचावत, रोकत, बर्जत।
 निवारि० कि० बचाव कर, रोक, बरजि।
 निवारित० गु० बचायागया, बर्जोगया।
 निवाचना० स० कि० नवाना।
 निवास० ना० पु० बसने का स्थान, वास, घर।
 निवासी० ना० पु० बसनेहारा, रहनेवाला।
 निविहृ० गु० अधिक, सघन, गिहायत।
 निवृत्ति० अ० कि० अफटि, कृदि।
 निवृत्ति० ना० स्त्री० रहाव, रुकावट, विधाम, चैन।
 निवेदन० ना० पु० प्रार्थना, विनती, अर्ज।
 निवेदनपत्र० ना० पु० अर्जा, विनयपत्र।
 निवेदित० गु० अर्पित, विनय किया गया।
 निवेशन० ना० पु० विवाह, शादी।
 निशंक० गु० निडर, निस्सदेह, विन प्रयास।
 निशा० ना० स्त्री० रात्रि।
 निशाकर० ना० पु० चन्द्रमा।
 निशागम० ना० पु० रात्रिका आगम, सन्ध्या सांक, शाम।

पताल० ना० पु० पाताल ।
 पति० ना० स्त्री० प्रभु, स्वामी, इन्द्रजित, सुलोक्यति ।
 पतित० यु० अष्ट, दोषी, जो गिरगया ।
 पतिदेव० } ना० स्त्री० पतिव्रता स्त्री, राम-
 पतिदेवता० } चन्द्रिकायां, वृ पतिदेवकी श्रु-
 वेटी, तेरी यम मृत्यु कहावत चेटी ।
 पतिमा० ना० स्त्री० प्रतिमा ।
 पतिया० ना० स्त्री० पत्नी, चिट्ठी ।
 पतियाना० स० क्रि० प्रतीति करना, भरोसा
 रखना ।
 पतियारा० ना० पु० भरोसा, प्रतीति, विश्वास ।
 पतिव्रता० ना० स्त्री० साध्वी, कुलवन्ती और
 सुधर्म स्त्री ।
 पतीरी० ना० स्त्री० चढाई विशेष ।
 पतील० यु० पनला ।
 पतीला० ना० पु० बड़ी बटलोई, तीली, तसला ।
 पतीली० ना० स्त्री० छोटा पतीला ।
 पतुकी० ना० स्त्री० छोटी कराही, पत्ती का
 पात्र ।
 पतुरिया० ना० स्त्री० वेश्या, गणिका ।
 पतुरिया० ना० स्त्री० पतोह, बह ।
 पतोह० } ना० स्त्री० बह, पुत्रकी स्त्री ।
 पतोह० }
 पतौरा० ना० पु० सेंडाकी पत्ती ।
 पतौचा० ना० पु० पत्ती ।
 पत्तन० ना० पु० निगर ।
 पत्तर० ना० पु० पत्र, वक्र ।
 पत्तल० ना० स्त्री० पत्तीकापात्र (भोजनके लिये) ।
 पत्ता० ना० पु० पात, दल, भगली, गहनाविशेष ।
 पत्ती० ना० स्त्री० पंती, भंग ।
 पत्थर० ना० पु० पाषाण शिला ।
 पत्नी० ना० स्त्री० माया, विवाहितानारी ।
 पत्यारो० ना० पु० पतियारा ।
 पत्र० ना० पु० पत्ता, चिट्ठी, पत्तर, चाँदी सान
 आदि का पत्र ।

पत्ररथ० ना० पु० पत्नी, चिट्ठी ।
 पत्रा० ना० पु० तिथिपत्र, पत्र ।
 पत्रांक० ना० पु० पत्रकी संख्या ।
 पत्रिका० ना० स्त्री० चिट्ठी, पत्र ।
 पत्री० ना० स्त्री० चिट्ठी, पत्नी, वृत्त, बाण
 कमल ।
 पथ० ना० पु० मार्ग, नाट, राह ।
 पथरकला० ना० पु० बन्दूकविशेष ।
 पथरचटा० ना० पु० पाषाणविशेष ।
 पथराना० अ० क्रि० पत्थर होजाना, कड़ा
 होना ।
 पथरी० ना० स्त्री० किरकिर, धाक, कुरी
 चकमकका पत्थर जो मूत्रको बंदकरता
 है, वृटीविशेष, पत्तीका भीतरांगविशेष ।
 पथरीला० यु० मूमि जिसमें बहुत पत्थरहो ।
 पथिक० यु० पु० चढाई, मुसाफिर, राह ।
 पथ्य० ना० पु० रोगीका आहार, सामग्री, उप-
 कारी, वस्तु, सुफीद ।
 पथ्या० ना० स्त्री० हड़ ।
 पद० ना० पु० चरण, पांव, अधिकार, महिमा,
 पति, स्थान, शब्द, स्वरूप, कलिमा ।
 पदग० } यु० पैदल, पियादा ।
 पदचर० }
 पदच्युत० यु० महिमासे जो अष्ट अधिकार से
 बदलजाना, बदलना ।
 पदज० ना० पु० पांवकी अंगुली ।
 पदना० ना० पु० } पदकर, पाद, दरपोक-
 पदनी० ना० स्त्री० } ना ।
 पदपट्टी० ना० स्त्री० एकप्रकारका कपड़ा ।
 पदपत्र० ना० पु० पुद्गलमूल, कमल के पत्ती
 अधिकारका पत्र ।
 पदपीठ० ना० पु० खड़ाऊँ, जूता ।
 पदम० ना० पु० पत्र ।
 पदवी० ना० स्त्री० पति, पंशोकानाम, आखर,
 मार्ग, अधिकार ।

निशाचर० ना० पु० राक्षस, चोर, उलूकादि,
 चन्द्रमा आदि नक्षत्रान् ।
 निशाचर० ना० पु० निशाचर ।
 निशि० ना० स्त्री० निशा ।
 निशिचर० ना० पु० निशाचर ।
 निशिनाथ० ना० पु० चन्द्रमा, चाँदी ।
 निशिमुख० ना० पु० सन्ध्य, सोमक ।
 निशिमानु० ना० पु० चन्द्रमा ।
 निशीथ० ना० पु० आधीरात ।
 निशीश० ना० पु० चन्द्रमा, चाँदी ।
 निश्चय० ना० पु० निश्चय, विश्वास, सु० दीर्घ ।
 निल० यु० रियर, अचल ।
 निश्चित० यु० निर्णयित ।
 निश्चिन्त० यु० चिन्तारहित, विनालोकके ।
 निश्चेष्ट० यु० चेष्टारहित, मूर्खित ।
 निश्छिद्र० यु० निर्दोष, छेदरहित ।
 निःश्रेणी० ना० स्त्री० निसेनी, सीदी, जीना ।
 निश्श्वास० ना० पु० श्वास, श्वायवायु ।
 निश्शेष० यु० श्रेयः, समस्त, सब ।
 निपाद० ना० पु० गानि में पहिला स्वर, चाण्डो-
 ल संकरवर्णा, फेवट, मंसाह ।
 निपिद्ध० यु० जो कसैव्यनहीं वर्जित ।
 निपिद्धता० ना० स्त्री० निवारण, कसैव्य रहित,
 इकार ।
 निपेद० ना० पु० अद्भुत, दुविधा ।
 निपेध० ना० पु० इकार, निवारण, कसैव्य
 रहित ।
 निपेधित० यु० वर्जित, निवारित ।
 निष्क० ना० पु० होरा, १६, दम्भक प्रमाण ।
 निष्कण्टक० ना० पु० उपाधिरहित, बेधुंइक ।
 निष्कपट० यु० सत्य, सधा, छलहीन, भोला ।
 निष्कर्ष० ना० पु० निश्चय ।
 निष्कारण० यु० विना प्रयोजन, ने सुतरा ।
 निष्कवल० यु० एकही, सत्यकर ।
 निष्क्रमण० ना० पु० संस्कार विशेष ।

निष्ठ० यु० स्थापित, तत्पर, उत्तम, उत्कर्ष ।
 निष्ठमति० ना० स्त्री० उत्तमशुद्धि, उत्तमज्ञान ।
 निष्ठा० ना० स्त्री० विश्वास, भरोसा ।
 निष्ठुर० यु० निष्ठुर, निर्दय, फटोर, श्रेणीति ।
 निष्ठुरता० ना० स्त्री० } कठोरता, निर्दयता,
 निष्ठुरत्व० ना० पु० } निष्ठुरता ।
 निष्पाप्ति० ना० स्त्री० सिद्धि, समाप्ति ।
 निष्पन्न० यु० कृत, बना, सिद्ध ।
 निष्पादन० ना० पु० सत्पादन ।
 निष्पाप० } यु० पापरहित, निर्दोष ।
 निष्पापी० }
 निष्प्रपञ्च० यु० छलहीन ।
 निष्प्रयोजन० यु० व्यर्थ, विनाप्रयोजन ।
 निष्फल० यु० फलहीन, वृथा, बेफायदह ।
 निस० ना० स्त्री० निशा ।
 निसक० यु० अस्तक, पौन्यरहित ।
 निसंक० यु० निश्शंक ।
 निसंकट० यु० संकटरहित ।
 निसन्धि० यु० टोस, सन्धिरहित ।
 निसरना० अ० क्रि० निकसना ।
 निसांस० यु० आहभरना ।
 निसांसी० यु० तंग, हेरान ।
 निसान० ना० पु० रूथ, नकारह ।
 निसास० ना० पु० विश्वास ।
 निसि० ना० स्त्री० निशि ।
 निखित० यु० पेनी, तेज, नादिरार ।
 निसेनी० ना० स्त्री० सीदी, जीना ।
 निसोत० ना० पु० औपधि विशेष, यु० टोस ।
 निस्तार० ना० पु० शक्ति, मोच, उद्धार ।
 निस्तारा० ना० पु० निपटारा ।
 निस्तारना० स० क्रि० निस्तार करना ।
 निस्तेज० यु० श्रुतापहीन, तेजरहित ।
 निस्तोक० ना० पु० चुकौता, निपटारा ।
 निस्पंद० ना० पु० निश्चेष्ट, हिताव ।
 निस्पृह० यु० सालसाहीन ।
 निस्थ० यु० निर्धन, दरिद्री ।

पदवृत्त० ना० पु० शब्द, जो दो शब्दोंसे मिलित हो ।
पदस्थ० ना० गु० जो अपनी पदवीपर स्थिर है ।
पदत्राण० ना० पु० जूता ।
पदास० ना० पु० परकीमास, चरणका पात ।
पदाति० ना० पु० पैदल, पियादह, सेवक ।
पदाना० तं कि० वायु, घोड़ाना, छराना, तिल, में हराना ।
पदाभिपिक्क० ना० पु० राज्यस्थान में जो अधिकृत हो ।
पदार्थ० ना० पु० वस्तु, अथवा वस्तु और शब्द का अर्थ, द्रव्य १ गुण २ क्रम ३ सामान्य ४ विशेष ५ समवाय ६ अभाव ७, ये सात ।
पदिक० ना० पु० जड़क चौकी, हीरा ।
पदुत्तम० ना० पु० सधवलोन, उत्तमपदवी ।
पदोडा० गु० पाद, पदक, डरपाक ।
पहराग० ना० पु० पतंगवृत्त ।
पदली० ना० स्त्री० पांडुरवृत्त ।
पद्धति० ना० स्त्री० पदवी, मार्ग, दस्तूर, रीति ।
पद्म० ना० पु० कमल, चिह्न जो चरणादि में होता है, विष्णु का अस्यविशेष, सीनील, १०००००००००००००००० ।
पद्मक० ना० पु० पद्मक, मुख्य सौ ।
पद्मककटा० ना० पु० कमलगट्टा ।
पद्मनाभि० ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्रका एक नाम ।
पद्मराग० ना० पु० लालमणि, माणिक ।
पद्मा० ना० स्त्री० लक्ष्मी, माहीं, नदीविशेष ।
पद्माकर० ना० पु० कमलयुक्त तालाव, सधृष्ट, धनवान् ।
पद्माह० ना० पु० कमलगट्टा ।
पद्मावती० ना० स्त्री० पुस्तक विशेष, पश्मिनी, छन्दविशेष, नदीविशेष ।
पश्मिनी० ना० स्त्री० कमलिनी, उत्तम स्त्री ।
पशी० ना० पु० हाथी ।
पथ० ना० पु० रत्नक, छन्द, नरम ।

पधारना० अ० कि० विदाहीना, जाना, स्थिर करना ।
पन० ना० पु० पण, अयरथावीधक यथा, माल, पन, पानी ।
पनघट० ना० पु० पानी भरनेका घाटा ।
पनच० ना० स्त्री० रोदह, चिह्न ।
पनचकी० ना० स्त्री० वह चकी जो पानीसे चलते हैं ।
पनचोरा० ना० पु० पात्रविशेष ।
पनपना० अ० कि० मोटा होनाना, प्रफुल्लित होना ।
पनपनाहट० ना० स्त्री० सनसनाहट ।
पनभस्ता० ना० स्त्री० पानी और भातकी मिलनी ।
पनघ० ना० पु० दोस ।
पनवार० ना० पु० पौधाविशेष, राजपूतों में जातिविशेष ।
पनचारा० ना० पु० पत्तल ।
पनचारी० ना० स्त्री० जिस स्थान में पान उपजता है ।
पनस० ना० पु० कटहल ।
पनसल्ला० ना० पु० पियाऊ, जहाँ पधिकानि की पानी शिलाते हैं ।
पनसा० गु० फीका, अलौना, ना० पु० छालादा ।
पनसारा० ना० पु० अथवि, किरानी आदि ।
पनसारी० ना० पु० किरानी बेचनेवाला ।
पनसाल० ना० पु० पनसल्ला ।
पनसोई० ना० स्त्री० छोटी नाबविशेष ।
पनहा० ना० पु० पता, चिह्न, छुराग, चौड़ाने बखका ।
पनहाना० अ० कि० दूध उतरना, पहराना ।
पनहारा० ना० पु० पनभरा ।
पनहारिन् } ना० स्त्री० पानी भरनेवाली
पनहारी० } स्त्री ।
पनही० ना० स्त्री० जूती ।

निस्वना० गु० ध्वनि, शब्द ।
 निस्सन्देह० गु० सन्देहरहित, वेत्तदके ।
 निहंग गु० तंगा, अचिन्त ।
 निहत्था० गु० औहथा, अस्त्र रहित, लूला, हाथ
 रहित ।
 निहाई० ना० स्त्री० लोहेकी वस्तु विशेष जिसपर
 सोना आदि गढ़ते हैं ।
 निहानी० ना० स्त्री० रज, कपड़े ।
 निहार० ना० पुं० अन्यकार, कुहिरा, रामायण
 यथा, जिमिनिहार में दिनकरदुरा, दष्टि ।
 निहारना० स० कि० देखना, विलोकना, भाकना ।
 निहारां० स० कि० देखा ।
 निहुरना० अ० कि० लचना, सुकना, दबना ।
 निहुराना० स० कि० लचाना, सुकाना, दबाना ।
 निहोर० } ना० पुं० कृपा, उपकार, विनती,
 निहोरा० } फुसलाहट, खुशामद ।
 निःक्षिप्र० गु० जो निःक्षिप्त, कियाजावे, त्यागित ।
 निःक्षेप० ना० पुं० परित्याग, धरोहर ।
 नींद० ना० स्त्री० औषाई, निद्रा ।
 नींदना० अ० कि० सोना, स० कि० मुकुरनी ।
 नींदू० ना० पुं० सोवैया ।
 नींब० ना० पुं० वृक्ष विशेष, निम्ब ।
 नींबू० ना० पुं० लीमू, फल विशेष ।
 नीक० गु० भला, अच्छा ।
 नीका० } गुं० सुन्दर, भला, अच्छा ।
 नीकी० }
 नीच० गु० छोटा, कर्मात्ता, हिन, कुलित, निकम्मा ।
 (तले, हेठ)
 नीचगामी० गु० जो नीचेजावा है, यदाग्रज ।
 नीचा० गु० ऊँचे के विरुद्ध, नसेप ।
 नीचाई० ना० स्त्री० चौदाई, नीचापन ।
 नीचे० अर्थ० तले ।
 नीठ० गु० तुम्हारा ।
 नीति० ना० स्त्री० उचित, व्यवहार, नीति,
 कानून ।

नीतिज्ञ० गु० धार्मिक, न्यायी ।
 नीद० ना० स्त्री० नींद ।
 नीदना० स० कि० नामानना, शुकजाना ।
 नीप० ना० पुं० क्रुदमवृक्ष ।
 नीपुर० ना० पुं० लिह ।
 नीषी० ना० स्त्री० कोखी, जो सियाबागो बांधती है ।
 नीबू० ना० पुं० निम्बू ।
 नीम० ना० पुं० नींव ।
 नीमन० गु० निमन ।
 नीमावत० ना० स्त्री० नीमानन्दसंन्यासीका पत्न्य ।
 नीर० ना० पुं० जल, पानी ।
 नीरज० ना० पुं० कमल, जो जलनावहो ।
 नीरथ० गु० निरर्थ, निष्कल ।
 नीरद० ना० पुं० मेवा ।
 नीरधर० ना० पुं० मेवा, त्रमुद ।
 नीरस० गु० निरस, रसहीन, फीका ।
 नीरोग० गु० निरोग, आरोग्य ।
 नीरोगी० गु० जंगा, भला, रोगहीन ।
 नील० गु० कृष्णवर्ण विशेष, काला, ना० पुं०
 वस्तु विशेष जो बृक्के अन्तों से बनती है मुख्य
 वानर सौ लखे, १००००००००००००००० ।
 नीलक० गु० नीला, ना० पुं० नीलरंग का हरिय
 विशेष, वीजगणित में विशेष प्रमाण ।
 नीलकरठ० ना० पुं० पत्नी विशेष, मोर, बंदिनी
 और शीरोकरजी ।
 नीलगवय० ना० पुं० नीलगव, रोफ ।
 नीलगाव० ना० पुं० रोफ ।
 नीलता० ना० स्त्री० }
 नीलत्व० ना० पुं० } श्यामता, कालापन ।
 नीलपर्वत० ना० पुं० विन्ध्यका एकभाग, जो
 उड़ीता के दक्षिण है, हरिद्वार के समीप तीर्थ
 विशेष ।
 नीलपुष्पी० ना० स्त्री० विन्धुकान्ता, अलसी ।
 नीलवर्ही० ना० स्त्री० नीलकी वर्दी ।
 नीलम० }
 नीलमणि० } ना० पुं० मणि विशेष ।

पनारा० } ना० पु० मोरी, नावदान, वद-
 पनाला० } री ।
 पनला० ना० स्त्री० छोटा पनला ।
 पनिया० ना० पु० पानी, जलका साँप ।
 पनियाना० ना० कि० साँचना, भिगोना, अन्न
 कि० पानी भर आना ।
 पनियाला० ना० पु० कलविशेष ।
 पनीहा० ना० पु० जलजन्तु ।
 पन्ध० ना० पु० मार्ग, मत, धर्म, अहंन, विचार
 पन्था० ना० पु० पन्ध ।
 पन्थान० ना० पु० मार्ग, वाट, सड़क ।
 पन्थी० ना० पु० हरी, माया, जीव, ईश्वर,
 अभिमन्यु, पथिक, मतावलम्बी ।
 पन्नग० ना० पु० साँप ।
 पन्नगपति० ना० पु० शेष, सर्पराज ।
 पन्नगारि० ना० पु० गरुड, मोर, नेवला ।
 पन्ना० ना० पु० रत्नविशेष, पत्र ।
 पन्नी० ना० स्त्री० सुवर्ण इत्यादि का बहुत सुवस्-
 पत्र ।
 पपड़ा० ना० पु० टुकड़ा, चूर ।
 पपड़िया० ना० स्त्री० छोटा पपड़ा ।
 पपड़ियाकथ० ना० पु० स्वेत कथा ।
 पपड़ी० ना० स्त्री० देवली, बिलका, परत, पाक
 विशेष ।
 पपड़ीला० पु० परतीला, पपड़ीदार ।
 पपनी० ना० स्त्री० परनी ।
 पपरा० ना० पु० पपड़ा ।
 पपरी० ना० स्त्री० पपड़ी ।
 पप्रीहा० ना० पु० चहेमा, तुमती, मची, विशेष
 जो कभी पानी नही आदिका नहीं पीता है ।
 पपैया० ना० पु० खिलौना, विशेष, वृद्धविशेष
 वा उसका कल ।
 पय० } ना० पु० दूध, पानी, अमृत, शेष अन्न ।
 पयः० } ऊपर, तौमी ।
 पयद्० ना० पु० मेघ, नाय ।
 पयोधि० ना० पु० समुद्र ।

पयोधि० ना० पु० चौरसमुद्र अर्थात्
 पयोनिधि० } दूध वा जलका समुद्र ।
 पयस्विनी० ना० स्त्री० विदारीकन्द, दुधाराण
 आदि, स्वास जो नाय कानम प्रकाशित है ।
 पयान० } ना० पु० चोला, विदा ।
 पयाना० }
 पयार० ना० पु० तुषविशेष ।
 पयोधर० ना० पु० स्तन, चूची, मेघ, तुषविशेष,
 मदारवृक्ष, पर्वत, समुद्र, राजा ।
 पर० पु० दूसरा, दूर, पराया, शिरोमणि, पर, अन्न,
 ऊपर, दोरा, उपरान्त, तपर ।
 परकना० अ० कि० सथना, अन्व्यासी हाना ।
 परकाज० ना० पु० परायाकार्य, आर का
 काम ।
 परकाजी० पु० पराया काम करनेवाला वा
 शोचनेवाला, परार्थी ।
 परकाना० स० कि० सधाना, सिखाना ।
 परकाय० पु० दूसरेका, आनका ।
 परकीया० ना० स्त्री० पराई स्त्री वा परपुत्र
 त स्त्री ।
 परख० ना० स्त्री० परीक्षा, तजकवा ।
 परखना० स० कि० परीक्षा करना, जानना ।
 परखार० ना० स्त्री० परखनेका काम वा उपरका
 पैसा ।
 परखाना० स० कि० परीक्षाकराना, जांचवाना ।
 परखा० } पु० परीखक, परखनेहार ।
 परखैया० }
 परखा० ना० पु० परीक्षा, इस्तहान ।
 परखून० ना० पु० आटा दालि आदि ।
 परखुनिया० ना० पु० बनिया, परखून बेचने
 हारा ।
 परची० ना० पु० परीक्षा, परखकरना, इस्तहान ।
 परछिद्र० ना० पु० पराया छेद, पराया भेद ।
 परजंक० ना० पु० खाट, सेज ।
 परजा० ना० स्त्री० प्रजा ।

परत० ना० पु० लड़, पपड़ा, तह ।
 परतत्र० ना० पु० पराधीन जो और के कर्तव्य है ।
 परतल० ना० पु० ट्राइबल ।
 परतला० ना० पु० डान, जिसमें तिलवार रख-
 ता है ।
 परता० ना० पु० परेता, चरती, बाढ़ ।
 परती० ना० स्त्री० पंजर, पड़ाई धरती वा क-
 पड़े से पवन करके बना साफ करना ।
 परतीत० ना० स्त्री० प्रतीत, निश्चय ।
 परदादा० ना० पु० दादाका बाप ।
 परदादी० ना० स्त्री० दाद की माता ।
 परदार० } ना० स्त्री० पराई स्त्री ।
 परदारा० }
 परदेश० ना० पु० आनदेश, विदेश ।
 परदेशी० पु० अन्यदेशी, अनजान, विदेशी ।
 परद्रोह० ना० पु० पराधर, आनका विरोध ।
 परद्रव्य० ना० पु० परायाधन ।
 परधन० ना० पु० पराया द्रव्य, परायाधन ।
 परन० ना० पु० प्रण, प्रतिज्ञा, परण ।
 परनाना० ना० पु० नाना का बाप, प्रमातामह ।
 परनाला० ना० पु० } मोरी, नानदान,
 परनाली० स्त्री० } नाला ।
 परन्तु० अव्य० किन्तु, लेकिन ।
 परपंच० ना० पु० प्रपंच, छल, धोखा, कपट ।
 परपंचो० पु० प्रपंची, छली, कपटी, लपाटी ।
 परपराना० अ० कि० चरपराना ।
 परपराहट० ना० स्त्री० चरपराहट ।
 परपुष्टा० ना० स्त्री० कोयल पर्या ।
 परपूरन० पु० परिपूर्ण, भरपूर ।
 परपठ० ना० पु० हुण्डकी उतारा ।
 परब० ना० पु० पर्व, उत्सव, अर्थात् त्यहार ।
 परवल० पु० प्रवल ।
 परम० पु० उत्कृष्ट, श्रेष्ठ, अत्युत्तम, बड़ा ।
 परमल० ना० पु० सर्वोच्च विशेष ।

परमविरत० पु० योगेश्वर, सिद्ध, अतिलीन ।
 परमहंस० ना० पु० योगी विशेष ।
 परमज्ञान० ना० पु० शुद्ध विज्ञान ।
 परमा० ना० स्त्री० शोभा, कांति ।
 परमाणु० ना० पु० अत्यन्त सूक्ष्मवस्तु ।
 परमात्मा० ना० पु० परब्रह्म, भगवान्, ईश्वर ।
 परमान्न० ना० पु० पायस, चार ।
 परमायु० } ना० स्त्री० जीवनकाल, मृत्यु,
 परमायुष० } आयु ।
 परमार्थ० ना० पु० कार्य वा व्यवहार जो सब
 से उत्तम है, कीर्ति, प्रयत्नत्व वस्तु ।
 परमार्थो० पु० भक्त, कीर्तिमात्र उत्तमकार्य ।
 परमीश० } ना० पु० परमात्मा, सर्वोप-
 परमेश्वर० } रित्य, ईश्वर ।
 परमेष्ठी० ना० पु० मन्त्रा ।
 परमोधु० मूर्च्छना, बेहोशी ।
 परम्परा० ना० स्त्री० क्रमागत, प्राचीन ।
 परलोक० ना० पु० स्वर्ग, मरने के पीछे जो
 लोक ।
 परवर० } ना० पु० पलवल, सरकारी विशेष ।
 परवल० }
 परवंश० } पु० अस्थाधीन, पराधीन ।
 परवस० }
 परब्रह्म० ना० पु० परमेश्वर ।
 परशाद० ना० पु० प्रसाद ।
 परशु० ना० पु० फरसा ।
 परशुधर० } ना० पु० त्रिशु नारायण का
 परशुराम० } छटा अवतार ।
 परश्व० अव्य० परसी ।
 परस० ना० स्त्री० छुआवट ।
 परसना० स० कि० छूना, परोसना ।
 परसिया० ना० पु० हसिया ।
 परसी० ना० पु० मन्ची भाए, रामचंद्रिकाया
 यथा, बंक हिये न प्रभा सरसीसी, कदम काम
 कद परसीसी, कामना कामनि डोरि गसीसी,
 मोनमनुष्यन की बनसीसी, कि० छड़, मिला ।

पाला० ना० पु० शीत, जाड़ा, कोहर, हिम ।
 पालागन० ना० पु० पांचखुर्चा, प्रथम ।
 पालाश० ना० पु० टांक का वृक्ष, शु० हरित ।
 पालि० ना० स्त्री० मागधी, प्राकृत भाषा जिस
 को स्वाम आदि देशके पण्डित सीखते हैं ।
 पालिक० ना० पु० पालक, स्वयं ।
 पालिकोण० ना० पु० परिधि का कोना ।
 पालित० शु० पाला गया, रचित ।
 पालिन्द्री० ना० पु० नोमा, यमा, पोषा ।
 पाली० ना० स्त्री० बंगाल देशमें तोलने आदि
 का यन्त्र, जिस स्थान में पत्नी लड़ते हैं ।
 पाल्य० ना० पु० पालने के योग्य ।
 पावक० ना० पु० अग्नि, कुसुम्भि ।
 पावड़ा० ना० पु० पांवड़ा ।
 पावन० ना० पु० पाक, पवित्र, जल ।
 पाचना० स० कि० पाना ।
 पाचरी० ना० स्त्री० लड़ाई ।
 पाचस० ना० स्त्री० वर्षातु, बरसात ।
 पाश० ना० पु० पासा, फांस ।
 पाशा० ना० पु० पासा ।
 पाशुमव० ना० पु० खारी, खेत ।
 पापण० ना० पु० पापाणभेद ।
 पापण्ड० ना० पु० वेदविद्वद्, अतिद्वयत्मा,
 कपट वा कपटी ।
 पापण्डता० ना० स्त्री० अपनिन्दा, कपट ।
 पापण्डी० शु० कपटी, वेदविद्वद्, डरात्मा ।
 पापाण० ना० पु० पत्थर ।
 पास० अव्य० समीप, निकट, ना० पु० पासा ।
 पासपति० ना० पु० वरुण देव ।
 पासी० ना० स्त्री० कांसी, ना० पु० वरुणदेव,
 नीचजाति विशेष, कांसी डालने द्वारा ।
 पाहन० ना० पु० पत्थर ।
 पाहनकामि० ना० पु० एक कांडा होता है, जो
 पत्थर में अपना घर बनाता है ।
 पाहर० ना० पु० चौकीदार, पहरेवा ।

पाहि० अव्य० दयाचाहना, पाहि, रक्षाकरो ।
 पाही० ना० स्त्री० आनगांव में खेती वा आनगांव
 की आसामी, अव्य० पास ।
 पाहुन० ना० पु०
 पाहुना० ना० पु०
 पाहुनी० स्त्री० } यतिपि, महिमान ।
 पिंड० गु० प्रिय, ना० पु० स्वामी, प्रीतम ।
 पिक० ना० पु० कोकिल, कायल ।
 पिकप्रिय० ना० पु० आम्रवृक्ष, आम ।
 पिकवयनी० } गु० मिसत्री का स्वर पिकके
 पिकधनी० } समान हो ।
 पिकवल्लभ० ना० पु० आम्रवृक्ष ।
 पिघलना० अ० कि० टिपलना, गलना ।
 पिघलाना० स० कि० टिपलाना, गलाना ।
 पिगल० ना० पु० छन्द शास्त्रका नाम, नाम वि-
 शेष, न्योला, कांच, गु० वर्ष विशेष ।
 पिगला० ना० स्त्री० श्वास विशेष जो दहिने पुट
 में नासिका के प्रकाशित होती है ।
 पिंगारा० ना० पु० पालना, हिंडोला ।
 पिचकना० अ० कि० दचना, निचड़ना, सिप-
 टना ।
 पिचकारना० स० कि० दवाना, समेटना,
 कोरना ।
 पिचकारी० ना० स्त्री० पचका, धमकला, जिस
 में रंगादि भरके छोड़ते हैं ।
 पिचपिचा० गु० पिलपिला, टीला ।
 पिचिका० } ना० पु० पिचकारी ।
 पिचुका० }
 पिचुमन्द० ना० पु० नीचका वृक्ष ।
 पिछलन० ना० पु० किसलना, विसलना ।
 पिछलना० अ० कि० हटना, किसलना ।
 पिछला० शु० पिछाड़ी वा पीछिका ।
 पिछलाना० स० कि० पीछे करना वा पीछे
 करना ।
 पिछवाड़ी० ना० पु० } पीछा, पीछेकारथान ।
 पिछवाड़ी० स्त्री० }

परस्त० ना० पु० रोग विशेष ।
 परस्तिया० } गु० जिसको परस्तरोगहो।
 परस्ती० }
 परसो० अव्य० अगिला वा पिछला, तीसरादि ।
 परस्पर० अव्य० आपुस में ।
 परहित० ना० पु० परायणकाम, परस्वार्थ ।
 परत्र० अव्य० परलोक में ।
 परा० अव्य० जिस शब्द के प्रथम में यह मिलता है उसका अर्थ कभी प्रभुता, कभी उलटाई, कभी अहंकार, कभी अधिकई आदि होता है, ना० पु० श्रेणी, पंक्ति, क्रतार ।
 पराक्रम० ना० पु० सामर्थ्य, पौरुष ।
 पराक्रमी० पु० सामर्थी, बलवान् ।
 पराग० ना० पु० फूलकी रज वा धूलि ।
 परामुख० ना० पु० विमुख, मुत्तफिरा ।
 पराजय० ना० पु० पराभव, भंगल, हार ।
 पराजयी० पु० पराजय करनेवाला ।
 पराजित० पु० जिसका पराजय हुआ, जो हार गया ।
 पराजिता० ना० स्त्री० विष्णुकान्ता, पौधा ।
 पराठा० ना० पु० एकप्रकार की रोटी विशेष ।
 परात० ना० पु० बड़ीधोली, प्रात ।
 परातिक्ला० ना० पु० लाल पुनर्नवा ।
 पराती० ना० स्त्री० परात, थाल ।
 पराधीन० पु० जो निजवश में नहीं है, अखतव ।
 पराना० अ० क्रि० भागना, पंजरियाना ।
 परानी० ना० पु० प्राणी, जीवधारी ।
 पराज० ना० पु० और का अर्थ अर्थात् दूसरे को कमाई वा लागत का भोजन ।
 पराभव० ना० पु० पराजय, निरादर, हार ।
 पराभूत० पु० जो पराजय होगया, जो हरिगया ।
 परामर्श० ना० पु० विचार, मंत्र, उपदेश ।
 परामोधना० ना० पु० फुसलाहट ।
 परायण० ना० पु० किसी काममें मनकी लगावट होनी, पु० गटपट, तत्पर ।

पराया० गु० और का, द्वितीय का ।
 परारा० गु० पराया ।
 परालब्धि० ना० स्त्री० भाग्य, देवगति, द्वितीय जन्म अर्थात् पिछले जन्म कर्म का फल भोग ।
 परावती० ना० स्त्री० कागनशा-वृत्ति ।
 परावह० ना० पु० मुख्य पवन ।
 पराशर० ना० पु० वेदव्यासजी के पिता गुण विशेष ।
 परास० ना० पु० पलात वा रस्ती जो उसरी छाल से बनती है ।
 परासर० ना० पु० पराशर ।
 परास्त० पु० खराब, नष्ट, तहबाला ।
 पराह० ना० स्त्री० भागभाग, दशलाग ।
 पराह्ण० ना० पु० दोपहर दिन चढ़े के उपरान्त ।
 परि० अव्य० अति, पास, जिस शब्द की आदि में यह युक्तहोता है उसका अर्थ कभी ज्ञां दश कभी भाग, कभी त्याग, कभी अवधि, आ कभी अधिक आदि होजाता है ।
 परिकर० ना० पु० कमरफट ।
 परिक्रमा० ना० स्त्री० प्रदक्षिणा ।
 परिखा० ना० स्त्री० खाई ।
 परिगणन० ना० पु० मापना, गिनना ।
 परिग्रह० ना० पु० पड़ोसी, निकटवासी ।
 परिघ्न० ना० पु० वज्र, पर्वत, नाथ, सूर्य, चांद, शेष, जल और च्योड़ा ।
 परिचय० ना० पु० मेल-मिलाप, ज्ञान-परिचान ।
 परिचर० ना० पु० परिधिस्थ, परितेवक ।
 परिचर्या० ना० स्त्री० सेवा, खिदमत ।
 परिचारक० ना० पु० सेवक, डंडेरिया, जमादार ।
 परिचारी० ना० स्त्री० दासी, सेवकिन ।
 परिच्छिन्न० ना० पु० परिमित, छीन, चीप ।
 परिच्छेद० ना० पु० विभाग, अघ्याय, पर्व ।

पिछाड़ी० ना० स्त्री० पीछे के पैर बांधने की रस्ती पश्चात्, पीछे ।

पिछान० ना० स्त्री० पहिचान ।

पिछाने० गु० जानेहुये, पहिचाने भये ।

पिछूत० अव्य० पीछे, उपरान्त ना० पु० घरका पिछवाड़ा ।

पिछेत० ना० पु० घरका पिछवाड़ा ।

पिछौरा० ना० पु० चहर, दुपटा ।

पिछौरी० ना० स्त्री० छोटा पिछौरा ।

पिंजर० } ना० पु० पत्नी आदि रखनेका घर
पिंजरा० } जो काठ वा लोहादिका बनता है ।

पिंजल० ना० पु० तीतर, पत्नी ।

पिंजूपा० ना० पु० कानका मेल ।

पिट० ना० पु० नङ्कुल ।

पिटना० अ० क्रि० मारखाना ।

पिटारा० ना० पु० कपड़ा आदि रखने का डब्बा जो तृणादि का होता है ।

पिटारिया० } ना० स्त्री० छोटा पिटारा ।
पिटारी० }

पिंड० ना० पु० तन, देह, गोलवस्तु, आदिको गोलाकार अन्न, जो चावलदि के मृतक हेतु देते हैं, क्षेत्र, रेत, गांव ।

पिंडफला० ना० स्त्री० कड़ई तोमड़ी ।

पिंडाली० ना० स्त्री० फोली ।

पिंडा० ना० पु० पिण्डा, टुकड़ा, मैनफल ।

पिंडारा० ना० पु० लुटेरा, चालाक ।

पिंडाराव० ना० पु० मैनफल ।

पिंडालुका० ना० पु० पिण्डालु ।

पिंडालू० ना० पु० फलविशेष, औषधि ।

पिंडी० ना० स्त्री० महादेवजी के लिंगका ऊपरी भाग, पिण्डली, बालू से बनाई हुई, छोटी वेदी ।

पिंडीमुस्त० ना० पु० नागरमोथा ।

पिंडुक० ना० पु० धूप ।

पिण्डोल० ना० पु० माटी विशेष, पातना ।

पिण्याक० ना० पु० पीना, खली ।

पितर० ना० पु० पूर्व, पितृ ।

पितराई० ना० स्त्री० पितृ के तीनि पीढ़ा के सम्बन्धी, पीतलका मुर्चा ।

पितरौ० ना० पु० माता, पिता ।

पितरौला० ना० पु० पितृ पूजने का पात्र ।

पितराना० अ० क्रि० पितराई से विगड़ना ।

पिता० ना० पु० जनक, बाप ।

पितामह० ना० पु० ब्रह्मा, पिता का पिता, दादा, आज्ञा ।

पितामही० ना० स्त्री० पिताकी माता, दादी ।

पितिया० ना० पु० चाचा, बापका भाई ।

पितु० ना० पु० पिता, बाप ।

पितृ० ना० पु० पिता, देवता, पुर्या ।

पितृघातक० ना० पु० जो पुत्र पिता का बरी होवे ।

पितृपति० ना० पु० धर्मराज ।

पितृपत्न० ना० पु० आश्विन मासका कृष्णपक्ष कनागत ।

पितृव्य० ना० पु० बड़ाचचा, पिता का भाई ।

पितृऋण० ना० पु० पिताका ऋण ।

पित्त० ना० पु० शरीरका धातु विशेष, सफ़रा ।

पित्तलोह ना० पु० पीतल ।

पित्ता० ना० पु० शरीर का भीतरी अंग जिसमें पित्त रहताहै, क्रोध, कलेजा, जहरा ।

पित्तिनी० ना० स्त्री० शालपर्णी ।

पित्तपापडा० ना० पु० औषधि, प्रौधाविशेष ।

पिधान० ना० पु० आच्छादन, ढकना, पोशाक ।

पिन० ना० पु० शर्मा, शब्द ।

पिनकी० ना० स्त्री० पीनकवाला ।

पिनपिनाना० अ० क्रि० टंकारना, टुनटुनाना ।

पिनहाना० अ० क्रि० पहिराना ।

पिनाक० ना० पु० श्रीमहादेवजी का घट्टा बना विशेष ।

पिनाकी० ना० पु० श्रीमहादेवजी ।

पिना० ना० पु० पीना, खली ।

पिणी० ना० स्त्री० चावल आदि का लहर ।

परिजन० ना० पु० परिवारके लोग, निकटवासी ।
 परिणाम० ना० पु० अन्त, समाप्ति, अवस्थान्तर
 की प्राप्ति ।
 परिणाद० गु० विशाल, मोटा, स्थूल ।
 परितः० अव्य० चारों ओर सर्वत्र ।
 परिताप० ना० पु० सन्ताप, दुःख, शोक, पीडा ।
 परितोष० ना० पु० सन्तोष, प्रसन्नता ।
 परित्राण० ना० पु० रक्षा, रक्षवाली, पालना ।
 परित्राता० गु० रक्षक, पालनेवाला ।
 परित्यक्त० गु० जो सर्वप्रकारत्यागित ।
 परित्याग० ना० पु० जो भलीभांति त्याग ।
 परिदेवन० ना० पु० विलाप, शोक, रोना ।
 परिधन० } ना० पु० कपडापरिधनेके, रामायण,
 परिधान० } जटा मुकुट परिधन, गुनि, चौरा ।
 परिधि० ना० स्त्री० घेष्टनकीमाप, मण्डल, घेरा ।
 परिधेय० गु० पहिरायागया ।
 परिनेन० } ना पु० विवाह, नाम भाला, परि-
 परिनेन० } ननिवेशन, परिनेन, उद्वाह, जूल,
 विवाह ।
 परिपक्व० गु० पक्का, पट्ट ।
 परिपन्थी० गु० घेरी, शत्रु ।
 परिपाक० गु० पक्का, ना० पु० समाप्ति और
 अन्त ।
 परिपाटी० ना० स्त्री० अनुक्रम, उक्तम, रीति,
 दसूर ।
 परिपिष्टक० ना० पु० सीसा धातु ।
 परिपूरण० } गु० समस्त, सम्पूर्ण, सर्व, सप ।
 परिपूरन० }
 परिपूर्ण० }
 परिवाह० ना० पु० मुख्य पवन ।
 परिभद्र० ना० पु० नीबवृक्ष ।
 परिभव० ना० पु० पराभव, अनादर, बदनामी ।
 परिभाषा० ना० स्त्री० व्याकरणादि शास्त्र का
 संकेत ।
 परिभ्रमण० ना० पु० किरना, घूमना ।
 परिभृत० ना० पु० कौकिला, अश्वत्था सेवक,

यथा, वनप्रियाः परिभृतः कौकिलापिकइत्यपि,
 इत्यमरः रामचन्द्रिकायां, देतोः शुभगिरिवरः स-
 कल शोभनवर फूलवरण बहु फरनिकर, संगतरभ
 ऋष जन केशरिकेनन मनहुं धरनि सुमीव धरे,
 संगशिवा विराने गज सुतगाने परिभृतबोले चित्त
 हरे; शिरशुभचन्द्रकधर परम दिगम्बर मानोहर
 ओहिराज धरे, इस छन्द में श्लेष है इस लिये
 परिभृत के दोनों अर्थ सिद्ध हैं ।
 परिमाल० ना० पु० सुगन्धित, सुवास ।
 परिमाण० ना० पु० परिच्छेद करना, बाट,
 बटवारा ।
 परिमित० गु० जो नापागया, मिलाहुआ ।
 परिधत्त० ना० पु० बदल, एराकेरी, भागाभाग ।
 परिधत्तन० ना० पु० बदला, एराकेरी करना ।
 परिवाद० ना० पु० गाली, उलाहन, निन्दा ।
 परिवार० ना० पु० घराने के लोग, पोष्यजन,
 वंश ।
 परिदृढ़० ना० पु० स्वामी, नायक, मालिक ।
 परिवृत्त० गु० चारों ओर से घिराहुआ ।
 परिवेष० ना० पु० घेरा, गोला, परिधि ।
 परिवेषण० ना० पु० लपेटना, भोजन का
 परोमना ।
 परिवोष्टित० गु० जो लपेटागया, घेरागया ।
 परिव्राजक० ना० पु० संन्यासी ।
 परिव्राजी० ना० स्त्री० भ्योई, पोधा, सुएडी ।
 परिशोध० ना० पु० ऋषको शुकापदेना ।
 परिश्रम० ना० पु० आयास, श्रम, थकान, केश,
 मिहनत ।
 परिश्रमी० गु० कामकाजी, धुनी, मिहनती ।
 परिष्कार० ना० पु० शोभा, आभूषण ।
 परिष्कृत० गु० शोभित, आभूषित ।
 परिहरना० स० कि० त्यागना, छोड़ना, खेलेना ।
 परिहार० ना० पु० अयशा, अपमान, शीट
 राजपूतों में जानि विरोध ।

पिपासा० ना० स्त्री० प्यास; तृषा ।
 पिपासित० यु० प्यासा, तृषित ।
 पिपील० ना० स्त्री० चींटी; रामायणे यथा,
 निमि पिपील चह सागर धाहा ।
 पिपीलक० ना० पुं० चींटी ।
 पिपीलका० }
 पिपीलिका० } ना० स्त्री० चींटी ।
 पिप्पल० ना० पुं० पीपल वृक्ष ।
 पिप्पली० ना० स्त्री० पीपली ।
 पीय० ना० पुं० प्रिय, प्रीतम, स्वामी, पति ।
 पियाना० स० कि० पिलाना ।
 पियार० ना० पुं० प्यार; लाव, दुलार ।
 पियारा० यु० प्यारा, लाइला, दुलारा ।
 पियाल० ना० पुं० चिरोनी, धान वा कोदी की
 पात ।
 पियासी० ना० स्त्री० मखली विशेष, तृषि-
 ते स्त्री ।
 पिरकी० ना० स्त्री० फुड़िया ।
 पिराना० थ० कि० दुसना, दर्द होना ।
 पिराना० स० कि० ग्रंथना, तागना, छेदना ।
 पिलई० ना० स्त्री० तापतिछी ।
 पिलचना० थ० कि० चिपटना, लिपटना ।
 पिलना० स० कि० धावाकरना, घुसइना; थ०
 कि० पिटना ।
 पिलपिला० यु० चिपचिपा, दीला, नम्र ।
 पिलपिलाना० स० कि० दीलाकरना, नम्र कर-
 वाना ।
 पिबपिलाहट० ना० स्त्री० कोमलता, दीलापन ।
 पिलार० ना० स्त्री० पीने के बदले देना वा
 पीने का काम ।
 पिलाना० स० कि० पानकरना, घुसइवाना ।
 पिलया० ना० पुं० पिल्ल, कीट ।
 पिला० ना० पुं० कुत्ते का बच्चा ।
 पिली० ना० स्त्री० कुत्ते की बच्ची ।
 पिल्ल० ना० पुं० कीट विशेष ।
 पिशाच० ना० पुं० प्रतविशेष, भूत ।

पिशाचग्रस्त० यु० जिस को पिशाच लगा है ।
 पिशाची० ना० स्त्री० प्रतिनी, पिशाचकी पत्नी ।
 पिशितोदन० ना० स्त्री० केसर ।
 पिशुन० यु० दुष्ट, कठोर, घुराल ।
 पिशुनता० ना० स्त्री० दुष्टता, कठोरता, घु-
 राली ।
 पिसाई० ना० स्त्री० पीसने का काम वा पैसा ।
 पिसान० ना० पुं० थारा, चूत ।
 पिसाना० स० कि० पिसवाना, बुकवाना ।
 पिसू० ना० पुं० पिरश, छोटा जन्तु विशेष ।
 पी० यु० प्रिय, ना० पुं० स्वामी, प्रीतम ।
 पीक० ना० स्त्री० पान के रसयुक्त थूक ।
 पीच० ना० स्त्री० माइ ।
 पीचू० ना० पुं० फल विशेष ।
 पीछू० ना० स्त्री० माइ ।
 पीछा० ना० पुं० पिछला भाग, पिछाही पड़ना ।
 पीछे० अव्य० पश्चात्, निदान ।
 पीटना० स० कि० कूटना; मारना ।
 पीठ० ना० पुं० पृष्ठ, देहका पिछला भाग, आ-
 सन विशेष ।
 पीठमार० ना० पुं० शंकोल ।
 पीठा० ना० पुं० भोजन विशेष ।
 पीठी० ना० स्त्री० धोई और पीसी हुई उरद की
 दाल, पीठ ।
 पीठीता० ना० पुं० पत्रका पृष्ठ ।
 पीड़० ना० स्त्री० दुःख, वेदन, दया ।
 पीड़क० यु० पीड़ादायक ।
 पीड़ना० थ० कि० पीड़ित होना, स० कि०
 दण्ड देना ।
 पीड़ा० ना० स्त्री० दुःख, वेदन, दर्द ।
 पीड़ाकर० यु० पीड़ादायक ।
 पीड़ित० यु० दुःखित, क्लेशित, रंजादह ।
 पीड़ा० ना० पुं० पटरा, मक्खिया ।
 पीड़ावन्ध० ना० पुं० पुस्तकों की धारि का स-
 माचार विशेष, दीवारह ।
 पीदी० ना० स्त्री० छोटापीदा, वेशकी परम्परा ।

परिहास० ना० पु० जंग वाक्य, हँसी, टट्टा,
-खिली, कौतुक ।

परी० ना० स्त्री० तैल भाँड़े से निकालने का पात्र
विशेष, पारसी-भाषा में अमरा की कहते हैं ।

परीच्छिन्न० पु० दूसरे की इच्छा अनुसार ।

परीक्षक० ना० पु० परीक्षा करते हाता ।

परीक्षा० ना० स्त्री० जांच, खोज, इस्तहान ।

परीक्षित० पु० जो जांचा गया, परीक्षा किया
गया, ना० पु० अछेनका पोता, राजा विशेष ।

परु० ना० पु० पोर, गाँठ ।

परुप० पु० कठोर, ना० पु० कुवचन, आली,
निरसवचन, असह वचन ।

परुपाक्षर० ना० पु० कुवचन, असहवचन ।

परुप० } ना० पु० फालसा वृक्ष
परुपक० }

परे० अर्थ उधर ।

परेक्षा० ना० पु० पछितावा ।

परेतना० स० कि० अथरेना ।

परेतराह० ना० पु० जमराज ।

परेता० ना० पु० अथरेन, चरखी ।

परेवा० ना० पु० कवच, प्रतिपत्तिविधि ।

परेश० ना० पु० श्रीमगवान ।

परेह० ना० पु० पलेव ।

परोपकार० ना० पु० पराया स्वारथ करना ।

परोपकारी० पु० जो पराया उपकार करे ।

परोस० ना० पु० निकट, पास, समाप्त, पड़ोस ।

परोसना० स० कि० भोजन-पाली आदि में
रखना ।

परोसा० ना० पु० पाक जो किसी की भेजना
देवे ।

परोसी० ना० पु० निकटवासी, पड़ोसी ।

परोसैया० ना० पु० परोसनेवाला ।

परोहन० ना० पु० वाहन, रथ, नहल, घोड़ा,
आदि ।

परोहा० ना० पु० चरस, मोठ ।

परोक्ष० ना० पु० वनवासी, वानप्रस्था, उ० युद्ध

अयोचर ।

पर्चा० ना० स्त्री० परीक्षा ।

पर्चाना० स० कि० भेटकरयाना, बातचीत करना,
मुलगाना, जलाना ।

पर्चूनिया० ना० पु० आयादाल, बेचनेवाला ।

पर्चानी० ना० स्त्री० आयादाल-बेचनेवाली ।

पर्छती० ना० स्त्री० छोटी धपरिया जो-मार्दवी
भातिपर डालते हैं ।

पर्छी०

पर्छीई० } ना० स्त्री० प्रतिविम्ब, प्रतिकृप, अन्त
पर्छीदा० }

पर्ज० ना० स्त्री० डालका इधकड़ा, रागिनीविद्यु ।

पर्य० ना० पु० पत्ता, पान, प्रतिष्ठा, श्रम ।

पर्यकुटी० } ना० स्त्री० पत्तों-छाया-इका
पर्यशाला० } भोपड़ा ।

पर्दादा० ना० पु० दादाका-नाम, अप्रितापह ।

परदादी० ना० स्त्री० दादा की माता, अप्रिता-
मही ।

पर्यट० } ना० पु० पित्तपापहा
पर्यटक० }

पर्यङ्क० } ना० पु० सेज, खाट, पलंग ।

पर्य्यक० }

पर्य्यटन० ना० पु० भ्रमण ।

पर्य्यटित० पु० भ्रमित, घुमाभया ।

पर्य्यन्त० अर्थ० तक, लग, ना० पु० अर्थ
की सीमा ।

पर्य्यवसान० ना० पु० चरम, समाप्ति ।

पर्य्याय० ना० पु० क्रम, डील, अवसर, दीप ।

परला० पु० फालसा, उत्सवारका ।

पर्ध० ना० पु० ल्योहार, उत्सव, बड़ादिन, नरान,
अध्याय, मणि, हीरा, कुसमय ।

पर्धत० ना० पु० पहाड़, तरकारीविशेष, मुनि वि० ।

पर्धतनादिनी० ना० स्त्री० श्रीपार्वतीनी ।

पर्धतारि० ना० पु० इन्द्र ।

पर्धतिया० ना० पु० लोकी, लोवा, पर्धतवासी ।

पिछाड़ी० ना० स्त्री० पंखे के पेर बांधने की रस्ती पश्चान्, पंखे ।

पिछान० ना० स्त्री० पहिचान ।

पिछाने० गु० जानेहुये, पहिचाने भये ।

पिछूत० अव्य० पंखे, उपरान्त ना० पु० घरका पिछवाड़ा ।

पिछेत० ना० पु० घरका पिछवाड़ा ।

पिछौरा० ना० पु० चहर, दुपटा ।

पिछोरी० ना० स्त्री० छोटा पिछौरा ।

पिंजर० } ना० पु० पही आदि रखनेका घर
पिंजरा० } जो काट वा लोहादिका बनता है ।

पिंजल० ना० पु० तीतर, पही ।

पिंज्पा० ना० पु० कानका मेल ।

पिट० ना० पु० नङ्कुल ।

पिटना० अ० क्रि० मारखाना ।

पिटारा० ना० पु० कपड़ा आदि रखने का डब्बा जो तृष्णादि का होता है ।

पिटारिया० } ना० स्त्री० छोटा पियारा ।
पिटारी० }

पिंड० ना० पु० तन, देह, गोलवस्तु, धातु का गोलाकार अन्न, जो चावलदि के मृतक हेतु देते हैं, चैत्र, रेत, गांव ।

पिंडफला० ना० स्त्री० कड़ई तोमड़ी ।

पिंडाली० ना० स्त्री० फीली ।

पिंडा० ना० पु० पिण्डा, टुकड़ा, मैनफल ।

पिंडारा० ना० पु० लुटेरा, चालाक ।

पिंडाराव० ना० पु० मैनफल ।

पिंडालुका० ना० पु० पिण्डाल ।

पिंडालू० ना० पु० फलविशेष, औषधि जड़ ।

पिंडी० ना० स्त्री० महादेवजी के लिंगका ऊपरी भाग, पिण्डली, बालू से बनाईहुई, छोटी वेदी ।

पिंडीमुस्त० ना० पु० नागरमोथा ।

पिंडुक० ना० पु० घुप ।

पिण्डोल० ना० पु० माटी विशेष, पीतना ।

पिण्याक० ना० पु० पीना, खली ।

पितर० ना० पु० पूर्वज, पितृ ।

पितराई० ना० स्त्री० पितृ के तीन पीढ़ा के सम्बन्धी, पीतलका मुर्ती ।

पितरौ० ना० पु० माता, पिता ।

पितरौला० ना० पु० पितृ पूजने का पात्र ।

पितलाना० अ० क्रि० पितराई से विगड़ना ।

पिता० ना० पु० जनक, बाप ।

पितामह० ना० पु० मझा, पिता का पिता, दादा, आजा ।

पितामही० ना० स्त्री० पिताकी माता, दादी ।

पितिया० ना० पु० चाचा, बापका भाई ।

पितु० ना० पु० पिता, बाप ।

पितृ० ना० पु० पिता, देवता, पुरुष ।

पितृघातक० ना० पु० जो पुत्र-पिता का वीरो होवे ।

पितृपति० ना० पु० धर्मराज ।

पितृपत्न० ना० पु० आश्विन मासका कृष्णपक्ष कनागत ।

पितृव्य० ना० पु० नङ्गवचा, पिता का भाई ।

पितृऋण० ना० पु० पिताका ऋण ।

पित्त० ना० पु० शरीरका धातु विशेष, सफ़ा ।

पित्तलोह ना० पु० पीतल ।

पित्ता० ना० पु० शरीर का भीतरी अंग जिसमें पित्त रहताहै, क्रोध, कलेजा, जहर ।

पित्तिनी० ना० स्त्री० शालपेयी ।

पित्तपापडा० ना० पु० औषधि, पोषाधिरूप ।

पिधान० ना० पु० आच्छादन, ढकना, पोशाक ।

पिन० ना० पु० शरीरा, शब्द ।

पिनकी० ना० स्त्री० पीनकवाला ।

पिनपिनाना० अ० क्रि० टंकरना, दुन्दुनाना ।

पिनहाना० स० क्रि० पहिराना ।

पिनाक० ना० पु० श्रीमहादेवजी का धातु चाना विशेष ।

पिनाकी० ना० पु० श्रीमहादेवजी ।

पिन्ना० ना० पु० पीना खली ।

पिन्नी० ना० स्त्री० चावल आदि का लहड़ ।

पर्वती० ना० पु० पहाड़िया, स्त्री०, लौकी ।
 पर्वतीय० पु० पहाड़िया, जिस देश में बहुत
 पर्वत हैं ।
 पर्वाल० ना० पु० अंजनहारी, कनिया ।
 पर्वी० ना० स्त्री० पर्व ।
 पशुका० ना० स्त्री० पांखली ।
 पल० ना० पु० दण्डका साठवां भाग है० निमेष,
 मांस, मोरत, पलक ।
 पलक० ना० पु० आँखों का दकन, पपनी, निमेष,
 फारसी शब्द ।
 पलंग० ना० पु० साट ।
 पलंगड़ी० ना० स्त्री० छोटी साट ।
 पलटन० ना० स्त्री० एकसहस्र पैदल की सेना ।
 पलटना० स० क्रि० बदलना, अ० क्रि० लौटना,
 फिरना, बहुरना ।
 पलटा० ना० पु० बदला, प्रतिकार, फल, पैचा,
 पोशा ।
 पलटाखाना० अ० क्रि० फिरना, उलटना ।
 पलटाना० स० क्रि० बदलाना, फिराना, लौ-
 टाना ।
 पलटालेना० म० क्रि० बदला लेना ।
 पलटाव० ना० पु० फिराव ।
 पलड़ा० ना० पु० तखड़ीका एक पल्ला ।
 पलथा० ना० पु० लोट पोटा ।
 पलथामारना० अ० क्रि० लौटना, पोटना, पैर
 समेट के बैठना ।
 पलथी० ना० स्त्री० एक प्रकार का आसन ।
 पलन० ना० पु० पलकी बहुतात, पलक, पलावट,
 प्रतिपालन ।
 पलना० अ० क्रि० प्रतिपालन होना, मोटाहोना,
 बढ़ना, पनपना, ना० पु० हिण्डोला ।
 पलभक्त० ना० पु० सिंह, मांभभक्ती ।
 पलल० ना० पु० पीना या खसी ।
 पलवल० ना० पु० तरकारी विशेष ।
 पलवाना० स० क्रि० पोषवाना, पालनकराना ।
 पलवार० ना० स्त्री० नाव, विशेष ।

पलवारी० ना० पु० नाव, पलवार के सेवक ।
 पल्लव० ना० पु० द्वीप विशेष ।
 पला० ना० पु० कच्ची, गु० मोटा ।
 पलाएडु० ना० पु० पियाज, कन्द विशेष ।
 पलान० ना० पु० पालान, जो घोंड़े आदिपर
 रखते हैं ।
 पलानना० स० क्रि० पलान रखना ।
 पलाना० अ० क्रि० भागजाना, बराना, छाना,
 छानना, प्रतिपाल कराना ।
 पलानी० ना० स्त्री० परछती, जो छप्पर पर
 बालते हैं, छाने का काम ।
 पलायन० ना० पु० भागाभाग ।
 पलाव० ना० पु० पलानी, भांखरआदि भीतिपर
 रखना बचाव के लिये ।
 पलाश० ना० पु० टाककावृक्ष, पत्ता ।
 पलाशपापड़ा० ना० पु० पलाश का बीज ।
 पलाशी० ना० स्त्री० कचूर भेद ।
 पलास० ना० पु० पलाश, पालने का काम ।
 पलित० पु० शिथिल, दीला, पालागया ।
 पली० ना० स्त्री० तैलादि निकालनेकी कर्धी ।
 पलीत० ना० पु० मृत, म्रत, यहशब्द फारसी
 का है ।
 पलीता० ना० पु० बत्ती, यह शब्द फारसीका है ।
 पलुचा० ना० पु० पालाभया ।
 पलेथन० ना० पु० लोई बेलने के लिये सूत्र ।
 आटा ।
 पलेच० ना० पु० जूरा, पोह ।
 पलोटना० स० क्रि० दावना, सेवना ।
 पलौटा० ना० पु० पहिलौटा ।
 पल्लव० ना० पु० नये पत्ता, पत्तों समेत शाखा ।
 पल्लवित० गु० नये पत्ते लगेहुये ।
 पल्ला० ना० पु० अन्तर, कर्क, पल्ला, फारसी में ।
 पल्ली० ना० स्त्री० छोटा गाँव ।
 पल्लू० ना० पु० बसआदि के छूट ।

विपासा० ना० स्त्री० प्यास, तृषा ।
 विपासित० य० प्यासा, तृषित ।
 विपील० ना० स्त्री० चीटी, रामायणे यथा,
 निमि विपील चहः सागरं भाहा ।
 विपीलक० ना० पुं० चीटा ।
 विपीलका० } ना० स्त्री० चीटी ।
 विपीलिका० }
 विप्ल० ना० पुं० पीपल वृक्ष ।
 विप्लवी० ना० स्त्री० पीपली ।
 पीय० ना० पुं० पिय, प्रीतम, स्वामी, पति ।
 पियाना० स० कि० पिलाना ।
 विधार० ना० पुं० प्यार, लाड़, डुलार ।
 वियारा० य० प्यारा, लाड़ला, डुलारा ।
 पियाल० ना० पुं० चिरीजी, धान, वा कौंदी की
 पात ।
 पियासी० ना० स्त्री० मछली विशेष, तृषि-
 त स्त्री ।
 पिरकी० ना० स्त्री० फुडिया ।
 पिराना० अ० कि० दुसना, दर्द होना ।
 पिराना० स० कि० गंधना, तागना, छेदना ।
 पिलई० ना० स्त्री० तापतिस्त्री ।
 पिलचन० अ० कि० चिपटना, लिपटना ।
 पिलना० स० कि० धावाकरना, घुसड़ना, अ०
 कि० पिटना ।
 पिलपिला० य० चिपचिपा, डीला, नम्र ।
 पिलपिलाना० स० कि० डीलाकरना, नम्र कर-
 वाना ।
 पिलपिलाहट० ना० स्त्री० कीमलेंता, डीलापन ।
 पिलाई० ना० स्त्री० पीने के बर्तन देना वा
 पीने का काम ।
 पिलाना० स० कि० पानकरना, घुसड़वाना ।
 पिलुथा० ना० पुं० पिल्लू, कीट ।
 पिल्ला० ना० पुं० कुत्ते का बच्चा ।
 पिल्लो० ना० स्त्री० कुत्ते की बच्ची ।
 पिल्लू० ना० पुं० कीट विशेष ।
 पिशाच० ना० पुं० प्रतविरोध, भूत ।

पिशाचग्रस्त० य० जिस को पिशाच लगा है ।
 पिशाची० ना० स्त्री० प्रेतिनी, पिशाचकी पत्नी ।
 पिशितोदन० ना० स्त्री० केसर ।
 पिशुन० य० दुष्ट, कठोर, चुगल ।
 पिशुनता० ना० स्त्री० दुष्टता, कठोरता, घ-
 मली ।
 पिसाई० ना० स्त्री० पीसने का काम वा पैसा ।
 पिसान० ना० पुं० घाटा, नून ।
 पिसाना० स० कि० पिसवाना, बुकवाना ।
 पिसू० ना० पुं० पिरर, छोट्य जन्तु विशेष ।
 पी० य० पिय, ना० पुं० स्वामी, प्रीतम ।
 पीक० ना० स्त्री० पान के रसयुक्त थूक ।
 पीच० ना० स्त्री० माड़ ।
 पीचू० ना० पुं० फल विशेष ।
 पीछू० ना० स्त्री० माड़ ।
 पीछा० ना० पुं० पिछला भाग, पिछाड़ी पड़ना ।
 पीछे० अव्य० पश्चात्, निदान ।
 पीटना० स० कि० कूटना, मारना ।
 पीठ० ना० पुं० पृष्ठ, देहका पिछला भाग, आ-
 सन विशेष ।
 पीठसार० ना० पुं० शंकोल ।
 पीठा० ना० पुं० भोजन विशेष ।
 पीठी० ना० स्त्री० धोई और पीठीई उरद की
 दाल, पीठ ।
 पीठीता० ना० पुं० पत्रका पृष्ठ ।
 पीड़० ना० स्त्री० दुःख, वेदन, दया ।
 पीड़क० य० पीड़ादायक ।
 पीड़ना० अ० कि० पीड़ित होना, स० कि०
 दय्य देना ।
 पीड़ा० ना० स्त्री० दुःख, वेदन, दर्द ।
 पीड़ाकर० य० पीड़ादायक ।
 पीड़ित० य० दुःखित, क्रुशित, रजौदद ।
 पीड़ा० ना० पुं० पटरा, मचिया ।
 पीड़ाबन्ध० ना० पुं० पुस्तकों की आदि का स-
 माचार विशेष, दोहाचह ।
 पीड़ी० ना० स्त्री० दोहापीड़ा, पंरकी परंपरा ।

पल्लवगं० ना० पु० पल्लव, गानर ।
 पवन० ना० पु० वायु, वायुकोण का स्वामी ।
 पवनसखा० ना० पु० अग्नि, आग ।
 पवनावर्त्ती० ना० स्त्री० कश्यप की एक स्त्रीका नाम ।
 पवमान० ना० पु० पवन, वायु, हवा ।
 पवाई० ना० पु० मोड़े के पैरनी सांकर, पैकड़ी, जूते का एक पसा ।
 पवाज० ० ना पु० नीच लोग ।
 पवार० ना० पु० राजपूत, जातिविशेष ।
 पवारना० स० कि० नलाना, पटाना, फंकना ।
 पवि० ना० पु० वज्र ।
 पविपात० ना० पु० वज्रपड़ना, बीजलीपड़ना ।
 पवित्र० ना० पु० शुद्ध, पाक, निर्मल, अदोष ।
 पवित्रता० ना० स्त्री० शुद्धता, पाकी, निर्मलता ।
 पवित्रा० ना० पु० यज्ञोपवीत, कुरा ।
 पवित्री० ना० स्त्री० शुद्धिका कुशकी जो संकल्पादि पूजा के समय पहिनते हैं वा पंचभात रचित ।
 पशु० ना० पु० जन्तु, जीवधारी, चतुष्पदादि ।
 पशुपति० ना० पु० श्रीमहादेवजी, गालादि ।
 पशुपाल० } ना० पु० ग्वाल, अहीर ।
 पशुपालक० }
 पश्चात्० अव्य० पीछे, अनन्तर ।
 पश्चात्ताप० ना० पु० पछतावा, अफसोस ।
 पश्चात्तापी० गु० पछितानेवाला ।
 पश्चिम० ना० पु० पछाह ।
 पश्यति० } कि० देखता ।
 पश्यन्ति० }
 पश्यलोहर० ना० पु० सामने चोरी करनेहारा, सुनार ।
 पपान० ना० पु० पापाण, दोश, ज्यों पहिहरी जेवरी सेचत कटतपपान, तुलसी रसना रामकण्ड पाप कितिक अरुमान ।
 पसरना० अ० कि० फैलना ।
 पसली० ना० स्त्री० पांगर की हडी ।

पसा० ना० पु० दामुष्टीभर ।
 पसाई० ना० स्त्री० चावल विशेष, तुषारिण, निसकाफल धान के सदृश होता है ।
 पसाउ० } ना० पु० दया, कृपा, मेहरबानी ।
 पसाऊ० }
 पसाना० स० कि० भातका मांड निकालना, काटना ।
 पसार० } ना० पु० फैलाव, विद्याव ।
 पसारा० }
 पसारी० ना० पु० पनसारी ।
 पसारना० स० कि० फैलाना, विद्याना ।
 पसीजना० अ० कि० स्वेद छूटना, सितली छूटना, देयालु होना ।
 पसीना० ना० पु० स्वेद, सितली ।
 पसूज० ना० स्त्री० साविना, तुर्पना ।
 पसूजना० स० कि० सीना, तुर्पना, तागना, तुर्पना ।
 पसीव० ना० पु० पसीना ।
 पह० ना० पु० तड़का, भोर, अव्य० पान ।
 पहचान० ना० स्त्री० ज्ञान, चिन्हारी ।
 पहचानना० स० कि० जानना, चीन्हा ।
 पहनना० स० कि० पहिरना, ओढ़ना ।
 पहनावा० ना० पु० वस्त्र, कपड़ा ।
 पहर० ना० पु० समयका परिमाण जो तीनघंटे का होता है, एकदिन वा रातका चतुर्धारा ।
 पहरा० ना० पु० चौकी ।
 पहराना० स० कि० पहिराना, ओढ़ना ।
 पहरावनी० ना० स्त्री० जो विवाह आदि में लोगों को कपड़ा पहनाते हैं, ।
 पहरिया० } ना० पु० अंगोरिया, चौकीदार,
 पहरुआ० } कोटवार, रखवारी ।
 पहरू० }
 पहरना० स० कि० पहनना ।
 पहल० ना० पु० रई का पत्ती, चढ़ाय, तिकोनार की एक धोर ।
 पहला० गु० प्रथम, अव्यय ।
 पह्लाड़० ना० पु० पर्वत ।

पीत० गु० पीला, ना० स्त्री० प्रीति, कुसुम, ना० पुं०
 मलय-चन्दन, पिशात्तासा ।
 पीतक० ना० पुं० सुवर्ण, सोना ।
 पीतद्रुमा० ना० स्त्री० दाहहर्त्री ।
 पीतपुष्पा० ना० स्त्री० कुकोड़ी, सितादा ।
 पीतपुष्पिका० ना० स्त्री० सद्देवी ।
 पीतफेनु० ना० पुं० रीठा ।
 पीतम० गुं० प्रियतम, मित्र, सारा ।
 पीतरक्त० ना० पुं० पदमाक ।
 पीतरस० ना० पुं० हल्दी ।
 पीतल० ना० पुं० धातु विशेष ।
 पीतला० गुं० पीतलका ।
 पीतसार० ना० पुं० मलयचन्दन ।
 पीता० ना० स्त्री० हल्दी, जूही ।
 पीताम्बर० ना० पुं० रेशमी, पीलावस्त्र, श्रीरामचन्द्रे
 जी, श्रीकृष्णचन्द्रजी ।
 पीन० गुं० मोटा, स्थूल, पुष्ट, भारी ।
 पीनक० ना० स्त्री० अफीम की शोध ।
 पीनता० स० किं० रुई के आवयवों की प्रयत्न
 पृथक् करना ।
 पीनपयोधर० ना० पुं० भारीस्तनका कटोरे
 कुच ।
 पीनस० ना० पुं० नाककारोग विशेष, ना० स्त्री०
 पालकी विशेष, नाव, विशेष ।
 पीना० स० किं० मुडकना, पूनाकरना, ना० पुं०
 खली ।
 पीपल० ना० पुं० वृक्ष विशेष ।
 पीपला० ना० पुं० खड्गकी नोक या शृण्ण वा
 मुनि ।
 पीपलामूल० ना० पुं० पिप्पली का मूल ।
 पीपलि० ना० स्त्री० पिप्पली, पीपरी ।
 पीपा० ना० पुं० मृदादि रखने के लिये काष्ठका
 वर्तन विशेष ।
 पीष० ना० स्त्री० मान, राद ।
 पीषियाना० अ० किं० पकना ।
 पीषियाहट० ना० स्त्री० पकाव, पकनी ।

पीयूष० ना० पुं० पेउसा, अमृत ।
 पीर० ना० स्त्री० पीडा, दर्द, दुःख ।
 पीरा० गुं० पीडा ।
 पीराई० ना० पुं० दोल, वजानेहारा ।
 पीलपर्णिका० ना० स्त्री० सरहरी ।
 पीलाम० ना० पुं० रेशमी वस्त्र विशेष ।
 पीली० ना० स्त्री० मोहर; सुवर्ण; मुद्रा ।
 पीलीभीत० ना० पुं० बांसवेरी के उत्तर नगर
 विशेष ।
 पीलुं } ना० पुं० वृक्ष विशेष ।
 पीलुं }
 पीवर० गुं० मोटा, भारी, स्थूल ।
 पीसना० स० किं० आटाकरना, किचकिचाना,
 ना० पुं० पोसने का अर्थ ।
 पीहर० ना० पुं० स्त्री की सहराल, मेका ।
 पुं० ना० पुं० नरे, मनुष्य, पुत्र ।
 पुंलिगं ना० पुं० पुरुषका चिह्न ।
 पुंश्चली० ना० स्त्री० पतुरिया, वेरया ।
 पुंस० ना० पुं० मनुष्य, पुरुष, नर ।
 पुंसवन० ना० पुं० संस्कार विशेष ।
 पुंस्त्व० ना० पुं० पुरुषत्व ।
 पुकार० ना० स्त्री० गोहारि, हांक ।
 पुकारना० स० किं० गहराना, टेरना, हांक
 रना, बुलाना ।
 पुखराज० ना० पुं० मणि विशेष ।
 पुंग० ना० पुं० समूह, युत्वा, पूग ।
 पुंगव० ना० पुं० श्रेष्ठ, बड़ा, उत्तम ।
 पुंगीफल० ना० पुं० पूग, सपारी ।
 पुचकारा० } ना० पुं० भीति, लोपने के
 पुचारा० } गीली मिट्टी ।
 पुच्छ० ना० स्त्री० पृष्ठ, डम् ।
 पुच्छक० ना० पुं० भेड़ा ।
 पुच्छल० गुं० पंखवाला जिसके पंख हो ।
 पुच्छलतारा० ना० पुं० केतु, डमदारसितार ।
 पुच्छवैया० ना० पुं० खाननेहारा ।
 पुजधाना० स० किं० पूजाकरना ।

पहाड़ा० ना० पु० जोड़ीती, गुथन ।
 पहाड़िया० गु० पहाड़का निवासी ।
 पहाड़ी० ना० स्त्री० छोटा पहाड़, पहाड़िया ।
 पहिया० ना० पु० चक्र, पैया, फिरकी, चक्का ।
 पहिरावन० } गु० पहरावनी, ना० स्त्री० ।
 पहिरावनी० }
 पहिरना० स० कि० पहनी ।
 पहिला० गु० पहला, प्रथम, आदिका ।
 पहिली० ना० स्त्री० प्रथमा ।
 पहिले० अव्य० आगे ।
 पहिलौटा० गु० पहिला लडका ।
 पहुंच० ना० स्त्री० आवन, बैठ, प्रवेश, रसीद ।
 पहुंचना० अ० कि० जाना, उतरना ।
 पहुंचा० ना० पु० कलाई ।
 पहुंचाना० स० कि० भेजना, पठाना ।
 पहुंची० ना० स्त्री० पहुंचा में पहिरने का गहना ।
 पहुंचना० अ० कि० खटना, सोना ।
 पहुंचाना० स० कि० खटाना, गुवाना ।
 पहुंचन० ना० स्त्री० अतिथिपालना, पाहुन का रस्कार करना ।
 पहुंचना० ना० पु० पाहुना, महिमान ।
 पहुंचनी० ना० स्त्री० महिमानी ।
 पहुंचप० ना० पु० पुष्प, पुहप, फूल ।
 पहुंची० ना० स्त्री० कहानी, टण्डूट, पहलिका ।
 पहुंच० ना० पु० मासाई, पात, तड़, झाड़, रत्ता, पैस, और, तरफदारी ।
 पहुंचासत० ना० पु० अपने या अपना के लिये अग्रद वा रक्ष या विवाद वा तर्क ।
 पहुंचीन० गु० पंत्तरहित, अनाथ ।
 पहुंचावात० ना० पु० रोग विशेष ।
 पहुंचराज० ना० पु० गकड़ ।
 पहुंची० ना० पु० पितेरु, पिडिया, सहायक ।
 पा० ना० पु० पाँच ।
 पाउ० ना० पु० सेरका वा प्रत्येक वस्तु का चतुर्थ भाग, पद, चरण ।

पाई० ना० स्त्री० एक पैसा, वा पैसे का तृतीय भाग, वा 'पतली छड़ी जिसपर' बाना लपेटते हैं ।
 पाँक० ना० पु० कीचड़, दलेदल ।
 पांगा० ना० पु० लवणविशेष ।
 पांच० गु० पंच ५ ।
 पांचवां० गु० पंचम, ५ ।
 पांजर० ना० पु० पसली, कांल के नीचे दोनों ओर के हाड़ ।
 पाड़े० ना० पु० माझण का आरम्भ विशेष, शिक्का ।
 पांति० } ना० स्त्री० धारी, श्रेणी, लकीर,
 पांती० } पंक्ति ।
 पांव० ना० पु० पैर, चरण ।
 पांवड़ा० ना० पु० बिछौना विशेष, जिस पर बड़े मनुष्य चलते हैं ।
 पांवपांव० गु० पैदल ।
 पांस० ना० पु० ताद, सोर, धूरा ।
 पांसना० स० कि० सारना, खादजालना ।
 पांशु० ना० स्त्री० रज, धूली ।
 पांसु० ना० स्त्री० पांजरकी हड्डी, पसली ।
 पाक० ना० पु० रसोई, भोजन, औषधि विशेष ।
 पाककार० } गु० रसोइया, वाचर्धी ।
 पाककारी० }
 पाकड़० } ना० पु० गुलर विशेष, वृक्ष
 पाकड़िया० } विशेष ।
 पाकना० अ० कि० रस में उबलना और पक जाना ।
 पाकरिपु० ना० पु० इन्द्र ।
 पाकरी० ना० स्त्री० पकड़िया वृक्ष, कचनार ।
 पाकशासन० ना० पु० इन्द्र, देवराज ।
 पाकालय० ना० पु० रसोई जहाँ राना पकावा जति ।
 पाकपा० ना० स्त्री० सुइजी छवन ।

पुजाना० स० किं भरना, भराना, पूराकरना,
 पूजा कराना ।
 पुजापा० ना० पु० पूजा की सामग्री ।
 पुजारी० } य० पूजा करने द्वारा
 पुजाक० }
 पुञ्ज० ना० पु० समूह, ढेर, गंज ।
 पुट० ना० पु० पछा, दोना, मिलाव, घुलाव ।
 पुटरी० } ना० सी० गठरी, लाड़ ।
 पुटली० }
 पुटी० ना० पु० पत्तों का दोना, धनली ।
 पुट्टा० ना० पु० पशु-आदि का चूतड़ ।
 पुट्टा० ना० पु० भारी बाँवड़ी घुरिया ।
 पुट्टिया० ना० सी० पत्तों की वा कायज की दोनी
 जिस में कुछ औषधि इत्यादि बांधते हैं ।
 पुट्टी० ना० सी० खाल जिससे ढोल मड़ते हैं ।
 पुण्डरीक० ना० पु० कमल विशेष, आसरा
 चाण, सिंह ।
 पुण्डरीकाक्ष० ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्र, नारायण ।
 पुण्ड्रक० ना० पु० जल, गन्ना ।
 पुण्ड्रक० ना० पु० सर्प विशेष, संज्ञा विशेष ।
 पुण्य० ना० पु० सङ्कतकर्म, कृति, पवित्रदान ।
 पुण्यग्राम० ना० पु० पूनानगर, पुण्यका समूह ।
 पुण्यग्रामीय० गु० पूने के सम्बन्धी ।
 पुण्यजन० ना० पु० निरांतर, राक्षस, राक्षसिचारा
 निरःकरीनिकयाम्भः, यातुधानःपुण्यगनेति
 शैतोयातुराक्षसी, इत्यमरः ।
 पुण्यभूमि० ना० सी० आर्यवर्षत्त देश ।
 पुण्ययोपिता० ना० सी० वेश्या, पतुरिया ।
 पुण्यवान् ना० पु० सङ्कती, धर्मीमा ।
 पुण्यार्द्र० ना० सी० सङ्कतकर्म, जो पूने किया
 है, य० पुण्यात्मा, दाता ।
 पुण्यग्राम० य० दाता, सङ्कती, धर्मात्मा ।
 पुतला० ना० पु० तण्वा काष्ठ वा धातु वा मुद्रा
 तिका की नवीलाई मूर्ति ।

पुतला० ना० स्त्री० आलका तारा, काष्ठादि नि
 मित मूर्ति; प्रतिमा ।
 पुताई० ना० सी० पीतने का काम वा पैसा ।
 पुत्तलिका० ना० स्त्री० पुतली ।
 पुत्र० ना० पु० पूते, लड़का, बेटा ।
 पुत्रक० ना० पु० दौना, सगन्धित, पौधा ।
 पुत्रजीवी० ना० सी० जीवापति, पतिनियो ।
 पुत्रिका० ना० स्त्री० कन्या, बेटा, पुतली ।
 पुत्रो० ना० स्त्री० कन्या, बेटा, आलका तारा ।
 पुनः० अथ० फेर, फिर, नहुरि ।
 पुनःपुनः० अथ० फेर फेरःपुनि पुनि ।
 पुनराय० ना० पु० दूसरीवार ।
 पुनराग्मं ना० पु० दूसरीवार आरम्भकरना ।
 पुनरुक्ति० ना० स्त्री० पुनः कथन, दुबारा, फिर
 से कहना ।
 पुनरुत्थान० ना० पु० फिरसे उठना ।
 पुनर्जन्म० ना० पु० दूसरा जन्म, द्वितीयजन्म ।
 पुनर्नवा० ना० पु० पौधा विशेष ।
 पुनर्नव० ना० पु० नख, तावत, नह ।
 पुनर्वसु० ना० पु० सातवां नक्षत्र ।
 पुनि० अथ० फिर, पुनि ।
 पुनिपुनि० अथ० पुनः पुनः ।
 पुनीत० गु० निर्मल, पवित्र, पाक ।
 पुमान् ना० पु० नर, पुरुष, मनुज ।
 पुर० ना० पु० नगर वा ग्राम, देश विशेष ।
 पुरइत० ना० स्त्री० कमल जेलि ।
 पुरःसर० ना० पु० अग्रगामी, प्रशावा ।
 पुरट० ना० पु० सुवर्ण, स्वर्ण, सोना ।
 पुरनियां गु० प्राचीन, बृद्ध, मगध देश में
 नगर ।
 पुरन्दर० ना० पु० इन्द्र ।
 पुरवासी० गु० नगर का वसने वाला ।
 पुरविल० } ना० पु० पिछला वा अग्रगण्य ।
 पुरविला० } जन्म ।
 पुरवाई० } ना० सी० पूर्वका पवन ।
 पुरवैया० }

पाख० ना० पु० पख, १५ दिनका, भीति, विशेष
जितपर बरेंडी रखते हैं ।

पाखएड० ना० पु० छल, धूर्तता, वनाव ।

पाखर० ना० पु० घोड़े, वा हाथी के थोड़ने को,
शूल विशेष, जो लोहमय होती है ।

पाखा० ना० पु० ओसरा, पाल ।

पाग० ना० स्त्री० पगड़ी, रस, चासनी, मिलित ।

पागना० अ० कि० रसमिलित होने, मनना, मिल-
ना, स० कि० पकाना ।

पागल० गु० उन्मत्त, सिद्धी ।

पागा० ना० पु० घोड़ों का झुण्ड ।

पागुर० ना० पु० चनाई, जुगाली ।

पागुराना० स० कि० चावना, जुगाली करना ।

पागक० } ना० गु० रंसाइया, स्वच्छ, अग्नि-
पाचन० } कारक औषधि, हाजिम ।

पाह्य० ना० पु० टीका, गोटी खुदवाई ।

पाह्यना० स० कि० टीका देना, गोटी खोदना ।

पाह्ये० } अर्थ० पीछे ।
पाह्ये० }

पाञ्चाल० ना० पु० देश विशेष ।

पाञ्चाली० ना० स्त्री० द्रौपदी ।

पाट० ना० पु० सनकी जाति विशेष, पट्टवा,
चौड़ाई, टसर, रेशम, सिंहासन ।

पाटकृमि० ना० पु० रेशमका कीड़ा ।

पाटन० ना० स्त्री० छाग, छत, पटना ।

पाटना० स० कि० छतबनाना, भरदेना, छाना,
किती वस्तुकी बहुतायत करना, धोपना ।

पाटमहिषी० ना० स्त्री० पटरानी ।

पाटम्बर० ना० पु० चबली, रेशमी कपड़ा ।

पाटल० ना० पु० वर्षा विशेष, फूलवाले वृक्ष,
लाल सफेद अर्थात् गुलाब ।

पाटला० ना० पु० पुष्प विशेष, ना० स्त्री०
कुम्भी ।

पाटलिपुत्र० ना० पु० शोणभद्र के पास एक
प्राचीन नगर ।

पाटा० ना० पु० पट्टा ।

पाटी० ना० स्त्री० खाट में का लम्बा काठ,
पटिया, मिठाई विशेष, चयाई विशेष, तस्ती
लिखने की ।

पाटीर० ना० पु० चन्दन ।

पाठ० ना० पु० सन्या, अध्याय, अध्ययन, सस्क ।

पाठक० गु० शिक्षक, ना० पु० विप्रजाति विशेष ।

पाठशाला० ना० स्त्री० पढ़ने पढ़ाने का घर,
चटशाल ।

पाठा० ना० पु० युवानन्तु, मत्तपुत्र करनेहारा ।

पाठी० ना० स्त्री० युवावकरी, ना० पु० मत्त,
पाठक ।

पाठीन० ना० पु० सहस्र दाढ़का मच्छ विशेष ।

पाठ्य० गु० जो पढ़ने के योग्य है ।

पाढ़० ना० स्त्री० गरगज, डौना ।

पाड़ना० स० कि० गिराना, कानल निमलना ।

पाड़ा० ना० पु० भैंसका बच्चा, टीला ।

पाड़ा० ना० पु० मृग विशेष ।

पाड़ी० ना० स्त्री० नदी के पारजाना ।

पाण० ना० पु० पीना, पत्ता, नये कपड़े को
माड़ी ।

पाणि० ना० पु० हाथ ।

पाणिग्रहण० ना० पु० विवाह, कन्यादान
लेना ।

पाणिनि० ना० पु० व्याकरणशास्त्रकर्ता, शु
विशेष ।

पाणिनीय० गु० पाणिनि मुनिका व्याकरण
उसका पढ़ाने वा पढ़नेहारा ।

पाण्डव० ना० पु० पांडुराजा के पांचपुत्र अर्थात्
युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, नकुल, सहदेव ।

पाण्डु० ना० पु० राजा युधिष्ठिर का पिता ।

पाण्डुपुत्री० ना० स्त्री० रेणुका औषधि ।

पांडुर० ना० पु० वर्षा विशेष, अर्थात् उन्मत्त
पड़की पक्षी, वृक्ष विशेष, पाला, सीढा ।

पाण्डुरा० ना० स्त्री० मसूरान, पत्ती विशेष ।

पुरश्चरण० ना० पु० जपपाठादिके पूर्णताका प्रमाण ।
 पुरस्कार० ना० पु० सरकार, आदर, सम्मान ।
 पुरा० ना० पु० बड़ागाँव; पहिले ।
 पुराकृत० ना० पु० पिछले जन्मका कर्म ।
 पुराण० ना० पु० इतिहास विद्या जो व्यास
 रचित है ।
 पुराणपुरुष० ना० पु० श्री भगवान् ।
 पुरातन० } ना० पु० प्राचीन, पिछला, पुराना ।
 पुरातम० }
 पुराना० स० कि० भरदेना, लिचवानी, कदवानी,
 गु० कालीन, प्राचीन, जीर्ण ।
 पुरारि० ना० पु० श्रीमहादेवजी ।
 पुरी० ना० स्त्री० नगर, गाँव वा अयोध्यादि सात
 नगर विशेष ।
 पुरीप० ना० पु० मल, विद्रु, मूत्र ।
 पुरुष्ठा० ना० पु० घुस्सा, बूँदा ।
 पुरुष्ण० ना० पु० अगले पुरुष ।
 पुरुष० ना० पु० मनुष्य, नर ।
 पुरुषत्व० ना० पु० मनुष्यता, मनुसाई ।
 पुरुषा० ना० पु० प्राचीन वा पिछले लोग ।
 पुरुषाधम० गु० जो मनुष्यों में निन्दितहोवे ।
 पुरुषान० ना० पु० पीढ़ियाँ, शाखें, पुस्तें, पुरुष
 का बहुवचन ।
 पुरुषार्थ० ना० पु० पुरुषार्थ ।
 पुरुषोत्तम० ना० पु० मनुष्यों में जो श्रेष्ठ वा
 प्रधान श्रीविष्णु, नारायण ।
 पुरुकृत० ना० पु० इन्द्र ।
 पुरैन० ना० स्त्री० कमलवेली ।
 पुरोडास० ना० पु० यज्ञकी हव्य, रोटी, यज्ञ
 का शेष भाग ।
 पुरोधाम् } ना० पु० कुलपुरु, वंश पुरुष प्रा
 पुरोहित० } ऋण ।
 पुरोहितानी० ना० स्त्री० पुरोहित की स्त्री ।
 पुर्वा० ना० पु० पुरातन, मुहदा ।
 पुर्वरु० ना० स्त्री० छल, बदमास ।
 पुर्वा० ना० स्त्री० पूर्वका पवन ।

पुर्वाई० ना० स्त्री० पूर्वकी पवन ।
 पुर्वाणा० स० कि० भरवानी, पूरा करना ।
 पुष्या० ना० स्त्री० पुर्वाई ।
 पुर्सा० ना० पु० चारहाथकी माप ।
 पुल० ना० पु० सेतु, नाथ यह शब्द फारसी
 का है ।
 पुलक० } ना० स्त्री० रोमांच, आनन्द
 पुलकावली० } वा शोक में मग्न होना ।
 पुलकावली० }
 पुलकित० गु० हर्षित, रोमांचित ।
 पुलपुला० गु० पिलपिला ।
 पुलपुलाना० अ० कि० डरना, पिलपिलाना ।
 पुलपुलाहट० ना० स्त्री० डर, भय, नरमी ।
 पुलस्ति० ना० पु० पुनिविशेष, रावणके पितामह ।
 पुलहाना० स० कि० मनाना, राजीकरना ।
 पुलाक० ना० पु० } मांसीदन भोजन विशेष
 पुलाव० } यह शब्द फारसी का है ।
 पुलिक० ना० पु० मुख्य ताप ।
 पुलिन० ना० पु० नालका टापू, नदी में कि
 नारा ।
 पुलिन्द० ना० पु० म्लेच्छ भेद ।
 पुलिन्दा० ना० पु० बस्ता, फारसी शब्द है ।
 पुलोमजा० ना० स्त्री० इन्द्राणी, देवराणी, पुलो
 मजाशचीन्द्राणी इत्यमरः ।
 पुँहिंगम० ना० पु० पुँहिंग, नर, पुँहकर ।
 पुवाल० ना० पु० पिआल ।
 पुष्कर० ना० पु० आकारा, जल, कमल, तालाब
 हाथी की संज्ञा, तीर्थ विशेष ।
 पुष्करजटा० } ना० पु० पुँहकरमूल ।
 पुष्कराह० }
 पुष्कराहय० ना० पु० सारस ।
 पुष्करिणी० ना० स्त्री० जलाशय, तालाब ।
 पुष्कल० ना० पु० भरतजी का पुत्र, पूर्ण, श्रेष्ठ
 पुष्ट० गु० पाला, स्थूल, पोदा, फटा ।

पाण्डे० ना० पु० ब्राह्मण की जाति वा विशेष ।
 पात० ना० पु० पतन, पत्र, पत्ता, कनिका गहना विशेष ।
 पातक० ना० पु० पाप, पापकर्ता ।
 पातकी० गु० पापी, दोषी ।
 पातर० ना० स्त्री० वेरया, गु० पतला, दुबल ।
 पातजल० ना० पु० शास्त्र विशेष ।
 पाता० ना० पु० पत्ता, रचिता ।
 पाताळ० ना० पु० नागलोक, नरका ।
 पातालाय० गु० पाताल वासी ।
 पाती० ना० स्त्री० परी, चिट्ठी पत्ती ।
 पात्र० ना० पु० वर्तन, भाँडा, गु० उचित, माय, उत्तम ।
 पाथ० ना० पु० जल, पानी ।
 पाथना० स० क्रि० गोबरसे कण्डे कण्डी बनाना, थोपना, जाइलगाना ।
 पाथर० ना० पु० पथर ।
 पाथेय० ना० पु० पथमें व्ययंकरनेकी सामग्री ।
 पाथोज० ना० पु० कमल ।
 पाथोद० ना० पु० मेघ ।
 पाथोधि० ना० पु० समुद्र ।
 पाद० ना० पु० पैद, चरण, चौथाभाग, युद्धशब्द, द्रुमकी ।
 पादकटक० ना० पु० विछुआ ।
 पादना० अ० क्रि० टंरमारना, पादमारना, ठसकना, गुदा से शब्द मारना ।
 पादप० ना० पु० वृक्ष, पेड़ ।
 पादांगद० ना० पु० विछुआ, पांवका भूषण ।
 पादानोम० ना० पु० लोह विशेष ।
 पादार्य० ना० पु० जागीर, माफी ।
 पादारपण० ना० पु० परदेना ।
 पादुका० ना० पु० खड़ाक, जूती ।
 पादुशत० ना० पु० चमार, मोची ।
 पादोदक० ना० पु० पांवका थोपन ।
 पाद्य० ना० पु० पांवसेना का पानी ।

पान० ना० पु० ताम्बूल, ताम्बूल, पत्ता, पाण पाणि ।
 पागदान० ना० पु० पान रखनेका पात्र विशेष ।
 पाता० स० क्रि० उपार्जन करना, मिलना ।
 पानिय० ना० स्त्री० शोभा, क्रांति, सुन्दरता ।
 पानी० } ना० पु० जल, वीर्य, धातु, भइक,
 पानीय० } पति, इज्जत, आवरु ।
 पान्य० ना० पु० पयिक, मुसाफिर ।
 पाप० ना० पु० अधर्म, कुकर्म, अपराध, दोष ।
 पापखण्डन० ना० पु० पापनाशन ।
 पापघ्न० ना० पु० बहुत पतले फुलका मूंगके ।
 पापहा० ना० पु० पीधाविशेष ।
 पापहाखार० ना० पु० केल के वृक्षको जखायके चार को जो पापघ्न में लगति हैं ।
 पापरूपी० गु० पापकी मूर्ति, अधम शरीर ।
 पापरोग० ना० पु० कौढ़, माता विशेष, शीतला विशेष ।
 पापात्मा० गु० पापिष्ठ, अधर्मी, काफिर ।
 पापिन० } ना० स्त्री० दोषिनी, पाप करने
 पापिनी० } हारी ।
 पापिया० ना० पु० एरख, वृक्ष विशेष, जिसके फलको बंगाली खाते हैं ।
 पापिष्ठ० गु० पापात्मा, अधर्म की मूर्ति, हिंसक ।
 पापी० गु० अपराधी, गुनहवार ।
 पामर० गु० नीच, अधम, तुच्छ ।
 पामरी० ना० स्त्री० नीचकी स्त्री, रेशम, वस्त्र विशेष ।
 पायक० ना० पु० पैदल, सेवक, पैदल योद्धा ।
 पायद० ना० पु० डौना ।
 पायन्त० ना० पु० } साटवा यह और मिथर
 पायन्ती० स्त्री० } पैरकरते हैं ।
 पायल० ना० स्त्री० पांवका भूषण, अर्थात् पायजेष आदि गु० सुचाल ।
 पायस० ना० पु० खीर ।

पुष्टं } ए० पुष्टि कर्ता औषधि वा भोजन-
पुष्टकं } नादि

पुष्टता० ना० स्त्री० मोटाई, स्थूला, पायदारी
पुष्टि० ना० स्त्री० पुष्टता, पुष्टीयां, चतुःकला-

विशेषका नाम
पुष्टिकर० गु० पुष्टक

पुष्प० ना० पु० फूल, प्रमन
पुष्पक० ना० पु० कुवेरका विमान

पुष्पगन्धा० ना० स्त्री० जूही
पुष्पचाप० ना० पु० कामदेव, मदन

पुष्पजम्बुक० ना० पु० केतकी
पुष्पधनु० ना० पु० कामदेव, मनोम

पुष्पनीलक० ना० पु० संगालू
पुष्पपात्र० ना० पु० फूलका आधार

पुष्पफला० ना० स्त्री० कुम्हका
पुष्पमृत्यु० ना० पु० नङ्कुल

पुष्परस० ना० पु० फूलानिभ मू० मधु० व० अमृत
निकलता है, फूलकारस

पुष्पवती० ना० स्त्री० रजस्वला, कपडों से
पुष्पसंबरी० ना० स्त्री० कलिहारी

पुष्पाञ्जलि० ना० स्त्री० फूलों से भरी
धनली

पुष्पित० गु० फूलाइया वृक्ष
पुष्पी० ना० स्त्री० जंजा

पुष्पेश० ना० पु० माधवी
पुष्प्य० ना० पु० आठवां जन्म

पुस्तक० ना० पु० ग्रन्थ, पोथी, किताब
पुष्टमि० } ना० स्त्री० पुष्पी, धरती

पुष्टमी० }
पुष्ठा० ना० पु० भीमपरी

पु० ना० पु० पादने का रस
पुंगी० ना० स्त्री० वासली विशेष

पुण्ड्र० ना० स्त्री० पुण्ड्र, डम
पुण्ड्रना० स० कि० पुण्ड्रना, पुण्ड्रा

पुण्ड्रार० गु० पुण्ड्रवान्, पुण्ड्रवाला

पूजी० ना० स्त्री० पूज, धन सम्पत्ति
पूग० ना० पु० समूह, सुपारी वा सुपारीका वृक्ष

पूगीफल० सुपारी
पूछ० ना० पु० खोज

पूछना० स० कि० खोजना, मश्नकरना
पूछी० ना० स्त्री० मच्छीकी पूछ

पूजक० गु० पूजा करनेहार
पूजन० ना० पु० पूजा का स्थापन

पूजना० स० कि० अर्चना, भजना, प्याना, य०
कि० भरना, पूरा होना

पूजनीय० } गु० पूजा के योग्य, मान्य
पूजमान् }
पूजा० ना० स्त्री० अर्चा, आदर, सत्कार

पूजित० गु० जो पूजा गया
पूज्य० } गु० पूजाके योग्य, मान्य

पूज्यमान् }
पूठ० ना० पु० पुष्टा

पूठा० ना० पु० पुस्तक का गुता
पूहा० ना० पु० वेसनका पकवान विशेष

पूही० ना० स्त्री० पकवान विशेष
पूषी० ना० स्त्री० रई जो कातने के लिये ब-

नाते है
पूत० ना० पु० पुत्र, पवित्र

पूतना० ना० स्त्री० हड, निरावरी विशेष
पूतला० ना० पु० पुतली

पूतरी० } ना० स्त्री० पुतला
पूतली० }

पूति० ना० स्त्री० जर्मिकन्द, पवित्र, धर्म
अवयव

पूतिचर्चिका० ना० स्त्री० नवी, पीषा
पूतिकला० ना० स्त्री० नाकुची

पूनियो० ना० स्त्री० पुर्णमाती
पूनी० ना० स्त्री० पोनी, पूर्णा

पूनी० ना० स्त्री० पुर्णमाती
पूप० ना० पु० पुष्या

पूय० ना० पु० राद, मान्

पाय० ना० पु० खाट आदि का पैर, पारसी शब्द है ।

पार० ना० पु० नद्यादि का परलान्तीर ।

पारख० ना० पु० परीक्षक, जांचनेहारा, परख ।

पारखी० गु० परीक्षक, परखनेहारा ।

पारग० ना० पु० पारजाना ।

पारण० ना० पु० उपवास के पीछे भोजन भेद्य ।

पारथ० ना० पु० अर्जुन, काव्ये यथा, पारथ के स्वारथ क्रिया को स्वारथ भगवान् ।

पारथी० ना० स्त्री० पालथी ।

पारद० ना० पु० पारा ।

पारदारिक० ना० पु० परस्त्रीगामी, व्यभिचारी ।

पारज० ना० पु० पारण ।

पारना० ना० पु० उपवास का खोलना, स० क्रि० निवेष्टना, गिराना, पालना ।

पारल० ना० पु० पौधाविशेषः ।

पारलौकिक० गु० जो परलोक का है ।

पारब्रह्म० ना० पु० परब्रह्म, परमात्मा ।

पारस० ना० पु० लोहका आकर्षक पत्थर विशेष, जिसकी बुद्धलोग लोहा एक प्रकार का कहते हैं ।

पारसपीपल० ना० पु० वृक्षविशेष ।

पारसाल० ना० पु० अगला वा पिछला वर्ष, यह शब्द फारसी का है ।

पारसी० ना० स्त्री० पारसिक देशकी भाषा, ना० पु० वा उस देश के निवासी, जाति विशेष ।

पारसीक० ना० पु० पारसी, थोड़ा ।

पारा० ना० पु० पारद, धातु विशेष ।

पारायण० ना० पु० पुराण आदिका संकल्प पूर्वक पाठ, पूर्णता ।

पारावत० ना० पु० कपूतर, कपेट ।

पारावार० ना० पु० नदी के दोनों तट, समुद्र ।

पारि० ना० स्त्री० पाद, नग्न रूप धर ।

पारिजात० ना० पु० कल्पवृक्ष, कमल, हासिहार ।

पारिजाती० ना० स्त्री० तेजवल ।

पारितापिक० गु० जिस से सन्तुष्ट हो, श्मशान

पारिभद्रक० } ना० पु० कूट औषधि ।
पारिभव० }

पारिभाषिक० गु० शास्त्र में श्मशान के लिये संज्ञा मानली है ।

पारिपद० ना० पु० सहचर, देखवेया ।

पारिष्यदा० ना० पु० श्रीमहादेवजी ।

पारिहार्य० ना० पु० कूट ।

पारी० ना० स्त्री० गुड़की भेली, बारी पत्ती ।

पार्थिव० ना० पु० श्रीशिवजी, उद्दिद लोन राजा, मृत्तिका से निर्मित ।

पार्यण० ना० पु० पर्व में श्राद्ध विशेष ।

पार्यती० ना० स्त्री० श्रीभवानी, हिमालय जाता ।

पार्श्व० ना० पु० बायां वा दाहिना पांज, अर्धपात, समीप ।

पार्श्ववर्ती० ना० पु० निकटवर्ती ।

पाल० ना० पु० नाव, दीवाने के लिये, यद्यो बनी हुई वस्तु, छोटा तम्बू, पात वा पातवा पर जिसमें आवादि पाकते हैं, सिरकी की बनी वस्तु विशेष ।

पालक० ना० पु० साग विशेष, पालनेहारा ।

पालकजूही० ना० स्त्री० औषधि, तृस विशेष

पालकता० ना० स्त्री० पालना, पालने का काम ।

पालकी० ना० स्त्री० शिबिका, डोली विशेष ।

पालक्य० ना० पु० पालकका साग ।

पालन० ना० पु० पोषण, पल, रक्षा, पत्वारिहा

पालना० ना० पु० हिंडोला, स० क्रि० पालन करना ।

पालत्र० ना० पु० वृक्षकी चौटी वा शाखा ।

पूर० शु० संव० कुल भरा, प्रवाह, धारा।
 पूरक० शु० पूरा करनेहारा, पूरा होने वाला,
 पु० विजौरा, श्वास विशेष को जिस क्रिया से
 लेते हैं।

पूरख० शु० भरा, पूरा, सब, सारा।

पूरणा० } ना० स्त्री० चन्द्रमा की कला
 पूरणाभृता० } विशेष।

पूरना० सं० क्रि० भरना, पूरा करना,
 फैलाना।

पूर्य० ना० पु० पूर्व।

पूरा० शु० पूरण, सब, समस्त।

पूराई० ना० स्त्री० भराई, पूरणता।

पूरिया० ना० स्त्री० रागिनी विशेष।

पूरी० ना० स्त्री० पक्वान विशेष।

पूर्य० शु० पूरण, समस्त, सारा, भरा।

पूर्यज्या० ना० स्त्री० पूरारोदा, सही रखा।

पूर्यता० ना० स्त्री० पूरणता, पूराई।

पूर्यपात्र० ना० पु० पात्र विशेष, जिस में
 घटिका चावल भरके संकल्प करे, शु० पात्र
 भरपूर, पूरापात्र।

पूर्णभूत० ना० पु० समस्त वीतगया।

पूर्णमासी० ना० स्त्री० शुक्लपक्ष की समाप्ति की
 तिथि, पूनी।

पूर्णाहुति० ना० स्त्री० हाग, पूरा, होने प्र-
 आहुति देते हैं उसका नाम।

पूर्णमा० ना० स्त्री० पूर्णमासी।

पूर्व० शु० पहला, पिछला, अगला, ना० पु०
 जिस दिशा में सूर्योदय होता है।

पूर्वक० शु० विस्तार युत, भराहुआ, साथी।

पूर्वकृत० ना० पु० पहले का काम।

पूर्वकृतकर्मा० ना० पु० पूर्व जन्मके किये कर्म।

पूर्वज० ना० पु० अग्रज, बड़ाभाई।

पूर्वयाम० ना० पु० पहला पहर।

पूर्वदेश० ना० पु० मध्य देश के पूर्व की देश
 या निज स्थान से पूर्व की देश।

पूर्वपक्ष० ना० पु०
 जो स्थापन

पूर्ववत्० अव्य० उसी प्रकार, वैसाही।

पूर्ववायु० ना० पु० पूर्वका पवन, पुर्वाह।

पूर्वा० ना० पु० पुरवा, छोटा गांव।

पूर्वाफालगुणी० ना० स्त्री० ग्यारहवां नक्षत्र।

पूर्वाभाद्रपद० ना० पु० छत्तीसवां नक्षत्र।

पूर्वाभिमुख० ना० पु० पूर्व दिशाके सामने।

पूर्वाद्ध० शु० पहिला, आधा।

पूर्वापाद० ना० स्त्री० बीसवां नक्षत्र।

पूर्वाह्न० ना० पु० दिनका पहला भाग।

पूर्वी० शु० पूर्व देशीय ना० स्त्री० रागिनीविशेष।

पूर्वाह्न० शु० प्रथम कहा है प्रथम कहाहुआ।

पूला० ना० पु० } तृण वा अन्न की छोटी
 पूली० ना० स्त्री० } गट्टी।

पूपण० ना० पु० सूर्य।

पूपा० ना० स्त्री० सृजते, चन्द्रकला विशेष, श्वास
 विशेष, जो दक्षिण कान में प्रकाशित है।

पूस० ना० पु० पौष मास, दशवां मास।

पृच्छा० ना० पु० जिज्ञासा, प्रश्न।

पृतना० ना० स्त्री० सैन्य, फौज, दल।

पृथक्० अव्य० भिन्न, अलग।

पृथकरण० ना० पु० अलग से करना।

पृथक्कृद्द० ना० पु० अलोट।

पृथक्त्व० ना० पु० भिन्नता, उदर।

पृथक्पर्णी० ना० स्त्री० सुहरी।

पृथग्० अव्य० पृथक्।

पृथग्पृथग्० अव्य० अलग अलग।

पृथ्वी० ना० स्त्री० पृथिवी।

पृथ्वीनाथ० ना० पु० राजा, बादशाह।

पृथिवी० ना० स्त्री० धरती, जमीन।

पृथु० शु० बड़ा, भारी, ना० पु० राजा विशेष।

पृथुरोमा० ना० स्त्री० मछली।

पृथुल० शु० बड़ा, भारी, मोटा, स्थूल।

पृथुशिया० ना० पु० स्थानावृत्त।

पृथ्वर० ना० पु० मेदा, मेडा ।
 पृथ्वाक० ना० पु० पुर्नवा ।
 पृथ्वी० ना० स्त्री० धरती ।
 पृथ्वीका० ना० स्त्री० कलीनी ।
 पृथ्वीनाथ० }
 पृथ्वीवति० } ना० पु० राना, मादशाह ।
 पृथ्वीपाल० }
 पृष्ट० शु० पृष्ठाग्या ।
 पृष्ट० ना० पु० पीठ, पिछलाभाग, पत्रका एक
 थोर ।
 पृष्टा० ना० पु० पित्तपापडा, पूजनवाला ।
 पृष्ठास्थि० ना० स्त्री० पीठकी हड्डी ।
 पृष्टि० ना० पु० पीठ, पृष्ठ ।
 पृष्टिस्थोरी० ना० पु० घोड़ा ।
 पेंड० ना० स्त्री० पिठारी ।
 पेंग० ना० पु० भूलेका हिलाना, पर्वी विशेष ।
 पेंगना० अ० कि० भूलेको बंदकर भूलना ।
 पेंठ० ना० स्त्री० हाट, मण्डी, बाजार ।
 पेंड० ना० स्त्री० डग, चलावा, दीला वृष ।
 पेंदा० ना० पु० }
 पेंदी० ना० स्त्री० } तला, निचानका लण्ड ।
 पेंसक० शु० यथोचित दूत भेजनेवाला ।
 पेंसना० ना० पु० खांग, खिलौना, स्त्रियों का
 बल, स० कि० देतना ।
 पेंसनिया० ना० पु० स्त्री ।
 पेंसित० शु० भेजागया ।
 पेंच० ना० पु० मरोरी, घुमाव, फेर ।
 पेंचक० }
 पेंचा० } ना० पु० उलक ।
 पेंठ० ना० पु० उदर, गर्म ।
 पेंटक० ना० पु० पिठारा ।
 पेंटार्थ० }
 पेंटार्थ० } शु० पेंटपाल, खऊ, मलक ।
 पेंटिया० ना० स्त्री० प्रतिदिनका खाना, स्त्री ।
 पेंटी० ना० स्त्री० कमरबन्द, पेंटका बन्धन, पि
 थारी, सन्दूक, छाती ।

पेंटू० शु० पेंटार्थी ।
 पेंटीखा० ना० पु० पेंटबलने का रोग ।
 पेंटा० ना० पु० लोकी वा कटू, त्राकुम्हडा,
 विशेष ।
 पेंड० ना० पु० वृत्त, ब्या ।
 पेंडा० ना० पु० मिठाई विशेष, लोई ।
 पेंडी० ना० स्त्री० पेंडा सुपारी, नील आदि
 का वृत्त जो एकवार जो कटगया, और पेंडका
 स्तम्भ ।
 पेंह० ना० पु० नाभिके नीचे का अंग ।
 पेंम० ना० पु० प्रेम ।
 पेंमी० ना० पु० प्रेमी ।
 पेंय० ना० पु० पानी, दूध, शरबत, शु० जो
 पाने के योग्य हो ।
 पेंरना० स० कि० प्रेरणा, कौलह में कुचल के
 रस वा तेल निकालना ।
 पेंरू० ना० पु० कुचकुट विशेष ।
 पेंलड० }
 पेंलडा० } ना० पु० आंड, कौड़ी, कोच ।
 पेंलन० ना० पु० पालन, भूलना ।
 पेंलना० स० कि० टेलना, रेलना, वांसना,
 दवाना, भरना, घुसेडना, अ० कि० मिलजोना,
 घुसडजाना ।
 पेंला० ना० पु० आड, दोष, उपद्रव, टंकन ।
 पेंलू० ना० पु० टंकल, घुसेड ।
 पेंवही० ना० स्त्री० पीतरंग विशेष ।
 पेंवसी० ना० स्त्री० पीपूष जो दूध फटे को
 पकाते हैं ।
 पेंपख० ना० पु० दलेती, किमी वस्तु को दो
 पयरो से चितना ।
 पेंपणीय० शु० पीतने के योग्य ।
 पें० ना० पु० पय, दूध, जल, ना० स्त्री०
 दोष, अव्य० ऊपर, तीमा, परन्तु ।
 पेंचना० स० कि० पघोडना, कटकना, बदलना ।
 पेंचा० ना० पु० बदला, पलया ।
 पेंजनी० ना० स्त्री० पांवका गहना विशेष ।

प्रसंग० ना० पु० प्रस्तात्रे, मेलः, संगम, संयोग,
सम्बन्ध, चर्चा, साथ, रवः, वस्त्र ।
प्रसन्न० य० हर्षित, आनन्दित, दयालु, खुश ।
प्रसन्नता० ना० स्त्री० प्रसाद, हर्ष, आनन्द,
कृपा ।
प्रसन्नित० य० हर्षित, आनन्दित, दयालु, राची ।
प्रसमित० य० रहित, हीन, विह्वल, विन ।
प्रसव० ना० पु० गर्भ से बालक का निकलना,
जन्मा, पैदायश, उत्पत्ति ।
प्रसवत० कि० उपजते, जन्मते ।
प्रसव्य० य० बायां, प्रतिकूल उपजने के योग्य ।
प्रसाद० ना० पु० देवताओं की वा शुक्री जठन,
कृपा, दान, भोजन ।
प्रसादी० ना० स्त्री० जो कुछ देवताओं के
व्यङ्ग्याग्या, भोजन, स्नान ।
प्रसारण० ना० पु० फैलाव, पसरान, गन्धपसा-
रण, पीषा ।
प्रसादक० ना० पु० आजी, वधुआ का सागी ।
प्रसारित० य० विखारित, जो फैलाया गया ।
प्रसिद्ध० य० प्रकाशित, विख्यात, मशहूर ।
प्रसिद्धता० ना० स्त्री० प्रकटता, सुख्याति, मशहूर ।
प्रसीद० कि० दयालु हो, कृपा करो ।
प्रसूत० ना० पु० जात, जन्मा, प्रसूति ।
प्रसूति० ना० स्त्री० रोग विशेष, पानीबहने का
रोग विशेष ।
प्रसूतिक० }
प्रसूता० } गु० स्त्री० जन्मी जन्मा, माता ।
प्रसून० ना० पु० पुष्प, फूल, फल ।
प्रसूती० ना० स्त्री० प्रसूती ।
प्रस्तर० ना० पु० पत्थर, पाषाण ।
प्रस्तरप्रय० य० पाषाणमय, पथरोला ।
प्रस्ताव० ना० पु० अवसर, चर्चा ।
प्रस्ताविक० य० समयपर, सामयिक ।
प्रस्तुत० गु० कथित, सिद्ध, स्तुत किया गया ।
प्रस्थ० ना० पु० परिमाण विशेष ।
प्रस्थर० ना० पु० यत्थर ।

प्रस्थान० ना० पु० गमन, निदा, धावा करने
हारका गमन, पायतुराव, नकल मकान ।
प्रस्थापित० य० प्रेरित, भेजा गया ।
प्रस्थित० ना० स्त्री० कीर्ति, नेकनामी ।
प्रस्फुटित० य० विकसित ।
प्रहर० ना० पु० पहर, याम, दिन वा रातक ।
चौथा भाग ।
प्रहरण० ना० पु० अस्त्र, मारण ।
प्रहस्त० ना० पु० राक्षस विशेष ।
प्रहार० ना० पु० चोट, ठोकर, मार ।
प्रहारित० य० मारा गया वा मारा हुआ ।
प्रहारी० य० मारनेहारा ।
प्रहन० ना० पु० विनय, प्रणाम ।
प्रहेलिका० ना० स्त्री० पहिली, दृष्टिकूट ।
प्रहृष्टं० य० सन्तुष्ट ।
प्रहाद० ना० पु० भक्त विशेष ।
प्रहादिनी० ना० स्त्री० हंसपादी वृद्धी ।
प्रज्ञालन० ना० पु० धोलाई ।
प्रक्षालित० गु० जो धोया गया ।
प्रज्ञा० ना० स्त्री० सरस्वती, निर्मलबुद्धि ।
प्रज्ञात्मा० य० आत्मज्ञाता, आत्मध्यानी ।
प्राक्० अव्य० आगे, पहले, पूर्व ।
प्राकार० ना० पु० गढ़ ।
प्राकृतकवि० ना० पु० सूत्रदातादि ।
प्राकृतभाषा० ना० स्त्री० संस्कृतभाषा विशेष ।
प्राकृत० य० पुराना ।
प्रागल्भ्य० ना० पु० प्रगल्भता, दिग्दर्श, धमक ।
प्राची० ना० स्त्री० पूर्वदिशा ।
प्राचीन० य० पुराना, अगला ।
प्राचीना० ना० पु० पानी, आंवला ।
प्राड्विवाक० ना० पु० राजाकी आज्ञा से विचार
करने के लिये स्थापित पुरुष, न्यायक ।
प्राज० ना० पु० श्वात्सवः पु० जीव, प्रियतम ।
प्राणदा० ना० स्त्री० जीवदाता ।
प्राणप्रतिष्ठा० ना० पु० मन्त्र से देवता में जीव
धारण करना ।

पैङ्गु० } ना० पु० मार्ग, ऋतु वा ऋतु देवता ।
 पैदा० }
 पैतालीस० शु० चालीस और पांच, ४५ ।
 पैतीस० शु० तीस और पांच, ३५ ।
 पैसठ० शु० साठ और पांच, ६५ ।
 पैकड़ा० ना० पु० } बेड़ी, पर का गहना
 पैकड़ी० ना० स्त्री } विशेष ।
 पैगु० ना० पु० ब्रह्मा देशका प्रदेश ।
 पैज० ना० स्त्री० प्रतिज्ञा, प्रण, पराक्रम ।
 पैठ० ना० पु० हुण्डी की पतियाँ, पहुँच, प्रवेश ।
 पैठना० अ० क्रि० घुसना, धसना ।
 पैठालना० स० क्रि० प्रवेश कराना, घुसाना ।
 पैङ्गु० ना० पु० पावोंका चिह्न ।
 पैङ्गा० ना० पु० ऊंची खड्क ।
 पैड़ी० ना० स्त्री० सौदी ।
 पैतला० शु० उथला, छिछला ।
 पैतृक० शु० वपोंता, पूर्व जनों से जो धन वा
 व्यवहार प्राप्त हो ।
 पैदल० अर्थ० पैरों से ना० पु० पियादे ।
 पैना० ना० पु० नाली, पीपरा ।
 पैना० ना० पु० पशु हाँकने का अर्थ शु० तीव्र,
 तीक्ष्ण, तेज ।
 पैनाना० स० क्रि० तीक्ष्ण करना, चादिदिना ।
 पैनाला० ना० पु० परनाला, घुहरी ।
 पैया० ना० पु० पहिया, चक्र ।
 पैर० ना० पु० पांव, खलियान, शु० जो परने
 के योग्य है ।
 पैरना० अ० क्रि० हेलना, तिरना, पवरना ।
 पैराई० ना० स्त्री० पैरने का काम ।
 पैराक० ना० पु० पैरनेइरा ।
 पैराकी० ना० स्त्री० परनेइरी ।
 पैराना० स० क्रि० सेराना, हिलाना ।
 पैराव० शु० जो परने के योग्य है ।
 पैरी० ना० स्त्री० पांवका गहना विशेष ।
 पैला० ना० पु० अन्न मापने का पांव, डलवा ।
 पैशव्य० ना० पु० दुष्टता, पिशुनता, गुणहीनता ।

पैसा० ना० पु० ताँबे का मुद्रा ।
 पैसार० ना० पु० पैठ, पहुँच, प्रवेश ।
 पैसारना० स० क्रि० पैठाना, पहुँचाना, प्रवेश
 कराना, घुसेडना ।
 पोआ० ना० पु० पोवा, दूधपनिहारा बच्चा, साँप
 का बच्चा थोड़े दिनों का ।
 पोआना० स० क्रि० धमाना ।
 पोईस० अर्थ० अरे, बचो, पोईश शुद्ध, फारसी
 शब्द है ।
 पौकना० अ० क्रि० पेट चलना ।
 पौका० ना० पु० कौड़ा विशेष ।
 पौगा० ना० पु० उल्लू, मूँव, दीला विशेष, पोत
 शु० छूँवा ।
 पौंगी० ना० स्त्री० नली, छूँची, खोखली, मूँवकी ।
 पौछन० ना० पु० भाइना, गुदइ ।
 पौछना० स० क्रि० भाइना, स्वच्छ करना ।
 पोखना० स० क्रि० पालना ।
 पोखर० } ना० पु० जल, तड़ाग, ताताव ।
 पोखरा० }
 पोच० शु० नीच, लय, यह शब्द फारसीका है ।
 पोट० ना० स्त्री० मोट, गाँठ, गठरी ।
 पोटला० ना० पु० बिड़ी गठरी ।
 पोटली० ना० स्त्री० गठरी, लाई विशेष ।
 पोटा० ना० पु० गेदा, पलक, पक्षी का शीक,
 श्रोक, रेंदा, शु० पोटेइरा ।
 पोड़ा० शु० कड़ा, बलवान्, ठोस, दृढ़ ।
 पोड़ाई० ना० स्त्री० कड़ापन, ठोसाई, दृढ़ता ।
 पोत० ना० स्त्री० कांचकी सूझ गरिया, नी,
 स्वभाव, प्रकृति, बच्चा, कपड़ा ।
 पोयकी० ना० स्त्री० पोय, बेली ।
 पोतड़ा० ना० पु० छोटे लकड़ों का बिसाना,
 गुदकी ।
 पोतड़ी० ना० स्त्री० लरी, हल ।
 पोतना० स० क्रि० लोपना, परपोतना, ना० पु०
 पिघार, मृत्तिका विशेष ।

प्राणदण्ड० ना० पु० वध, फांसी आदिकी सजा ।

प्राणान्त० ना० पु० प्राणकनाशा, मृत्यु, मौत ।

प्राणायाम० ना० पु० श्वासको रोकना वा प्रोण
को ऊर्ध्व खींचना ।

प्राणी० शु० जीवधारी, जन्तु ।

प्रातः० } ना० पु० प्रभात, तड़का, सवेरा,
प्रातःकाल० } निहान ।

प्रातःक्रिया० ना० स्त्री० सवेरेकी क्रिया ।

प्रादुर्भाव० ना० पु० आविर्भाव, महिमा ।

प्राधान्य० ना० पु० श्रेष्ठता, मुख्यता, उत्तमता ।

प्रान्त० ना० पु० कगर, शेषभाग, देशकाभाग ।

प्रान्तर० ना० पु० दूरदेश का मार्ग, अर्थात् ।

प्रापक० ना० पु० जो पहुंचावे वा पवे ।

प्राप्त० शु० जो मिला, लब्ध ।

प्राप्ति० ना० स्त्री० लाभ, उपार्जन, गोपनी, फायदह,
नाम सिद्धि विशेष का ।

प्राविष्ट० } ना० पु० वर्षाकाल, वरसात ।
प्रावृष्ट० }

प्रावृष्य० ना० पु० कदम वृक्ष ।

प्रामाणिक० ना० पु० अति गान्धेयलोग, प्रधान ।

प्रायः० अव्य० कभी कभी, बहुधा, अक्सर ।

प्रायद्वीप० ना० पु० जो प्रायःजल से घिरा हो,
और एक और भल से मिला हो, जैजीराहमा ।

प्रायश्चित्त० ना० पु० पापमात्र का नाशक कर्म,
पाप, दोष ।

प्रारब्ध० ना० स्त्री० भाग लिखा, नैसीव ।

प्रारम्भ० ना० पु० आरम्भ, शुरुआत ।

प्रार्थना० ना० स्त्री० निन्ती, चहत, अर्ज ।

प्रार्थित० शु० वाञ्छित, यांचाहुआ ।

प्रावृत्त० ना० पु० घुंघट घोंपी, शु० ढका,
छुपा ।

प्रासाद० ना० पु० मन्दिर, राजभवन, सदन ।

प्रांशु० शु० बड़ा, मोटा ।

प्राह्ण० ना० पु० प्रातस्तन्या ।

प्राह्ण० शु० पण्डित, चतुर, बुद्धिमान ।

प्रिय० शु० प्यारा ।

प्रियक० ना० पु० कदमवृक्ष, अनार ।

प्रियंगु० ना० पु० औषधि विशेष ।

प्रियतम० शु० अतिप्यारा, ना० पु० निव,
मेमीपति, मित्र ।

प्रियतमा० ना० स्त्री० अति प्यारी ।

प्रियवादिनी० ना० स्त्री० अच्छा कहनेवाली ।

प्रिया० ना० स्त्री० प्यारी स्त्री, चहती, धाल
लगनी ।

प्रियाल० ना० पु० चिरोजी ।

प्रीति० ना० स्त्री० प्रेम, प्यार, मोह, दोस्ती और
ध्वषहार, चन्द्रमार्ग कला विशेष ।

प्रेत० ना० पु० पिशाच, भूत, निशाचर, दैत्य,
मरा ।

प्रेतनदी० ना० स्त्री० वैतरणी, नरककी नदी ।

प्रेतनी० ना० स्त्री० प्रेतस्त्री, उड़ेल, प्रेत
की स्त्री ।

प्रेतराज० ना० पु० यमराज, अन्तक ।

प्रेतनिवास० ना० पु० श्मशान, मरघट ।

प्रेम० ना० पु० स्नेह, प्यार, लाड, प्रीति ।

प्रेमी० शु० प्रेमकर्ता, स्नेही, छोही, प्रियतम ।

प्रेयस० शु० मित्र, प्यार, दोस्त, उपपति, जार ।

प्रेयसी० शु० स्त्री० प्यारी, परकिया ।

प्रेरक० ना० पु० भेजनेवाला, हाकिम, करनिहारा,
चलानेवाला ।

प्रेरण० ना० पु० } नियोग, भगना, चलाना,
प्रेरणा० ना० स्त्री० } सुझाना, ताकीद ।

प्रेरणार्थ० शु० जिसमें प्रेरण का ज्ञान हो ।

प्रेरणार्थक० शु० आज्ञाकारक ।

प्रेरित० शु० जो दूतादि भेजा गया ।

प्रेषक० शु० यथोचित दूत भेजनेवाला ।

प्रेषित० शु० प्रेरित ।

प्रेष्ट० शु० प्रियतम ।

प्रेष्य० ना० पु० दूत, सेवक ।

प्रेक्षण० ना० पु० चहु, नेत्र, दृष्टि ।

प्रोक्त० शु० कथित, कहाया ।

प्रोत्साह० ना० पु० बड़ा उदाह, प्रसुचोग ।

पोता० ना० पु० पुत्रका पुत्र, पौत्र ।
 पोती० ना० स्त्री० पुत्रकी कन्या, पौत्री ।
 पोथा० ना० पु० बड़ा मन्थ ।
 पोथी० ना० स्त्री० छोटा मन्थ ।
 पोदना० ना० पु० पत्नी विशेष ।
 पोदनी० ना० स्त्री० पोदना की स्त्री ।
 पोना० स० कि० पकाना, पिराना, ना० पु०
 करना ।
 पोनी० ना० स्त्री० पूर्णा ।
 पोपनी० ना० पु० बाना विशेष ।
 पोपला० गु० दांतों से रहित ।
 पोमचा० ना० पु० जय नगरी, वल्ल विशेष ।
 पोय० ना० स्त्री० साग विशेष, बेलि विशेष ।
 पोया० ना० पु० साग विशेष ।
 पोर० ना० पु० दो गाँटियों का मध्यभाग ।
 पोरी० ना० स्त्री० बांसकी गाँट, टोटा ।
 पोला० गु० छुँदा, फेमल, खोलला, खाली ।
 पोली० ना० स्त्री० छुँदी, खोलली, अनाड़ी ।
 पोपक० ना० पु० पालनेहार ।
 पोपण० ना० पु० पालन, पालना ।
 पोपना० स० कि० पालना ।
 पोपित० गु० पालांगया; पालाहुआ ।
 पोप्य० गु० पालने के योग्य ।
 पोप्यपुत्र० ना० पु० लै पालक ।
 पोप्यवर्ग० ना० पु० कुटुम्ब ।
 पोपना० स० कि० पालना ।
 पोसे० कि० पाले ।
 पोह० ना० स्त्री० पोह, तड़का, भोर ।
 पोहना० स० कि० पिराना, पेड़ा बनाना ।
 पोत्री० ना० पु० सुअर, शंकर ।
 पो० ना० पु० जल पिलाने की शाला; पाँसेमका
 पका ।
 पौडा० ना० पु० मोथा इच्छु विशेष गन्ना ।
 पौदि० ना० स्त्री० छोटी ।
 पौरिया० ना० पु० डचोदीवान; शरपास ।
 पौदना० स० कि० लेटना, सीना ।

पौडा० गु० पौदा, लैयहुआ ।
 पौडाई० ना० स्त्री० पौडाई, लैदास ।
 पौएडक० ना० पु० ऊल, गन्ना, पौडा ।
 पौत्तलिक० ना० पु० मूर्तिपूजक ।
 पौत्र० ना० पु० पुत्रका पुत्र, पोता ।
 पौत्री० ना० स्त्री० पुत्रकी कन्या, पोती ।
 पौघा० ना० पु० शूल जो तरुण है; विरवा एक
 वर्षका ।
 पौन० गु० तीन चौथाई, ३ ना० पु० पान ।
 पौनचक्र ना० पु० बैङ्गा, पवनमन्थि ।
 पौना० ना० पु० करना, पौनका पदादा ।
 पौने० गु० चतुर्थांश रहित ।
 पौर० ना० स्त्री० फाटक, घर ।
 पौराणिक० ना० पु० श्रविदेव्यास, सतनी, पु-
 राण का वक्ता ।
 पौरी० ना० स्त्री० पौर ।
 पौरुप० ना० पु० मनुष्यत्व, बल ।
 पौरुहित्य० ना० स्त्री० पुरोहितई ।
 पौलरूप० ना० पु० रावण, कुनेर ।
 पौलिया० ना० स्त्री० पौरिया, छोटी खड़ाऊं ।
 पौली० ना० स्त्री० पौरि, खड़ाऊं ।
 पौलोमी० ना० स्त्री० इन्द्राणी, देवराणी ।
 पौवा० ना० पु० सर का चौथा भाग ।
 पौप० ना० पु० नवांमास, पूत ।
 पौष्कराह्वय० ना० पु० पुहकरमूल ।
 पौष्टिक० गु० पुष्टिकारक ।
 पौसरा० ना० पु० पित्राज ।
 पौह० ना० पु० जल पिलाने का स्थान ।
 पौहदा० ना० पु० पौधा ।
 पौहा० ना० पु० गाय बैलादि पशु ।
 प्यार० ना० पु० प्रेम, दुस्तर ।
 प्यारा० गु० प्रिय, दुलारा, लाडिला ।
 प्यारी० ना० स्त्री० प्रिया, दुलारी, लाडिली ।
 प्यायना० म० कि० पिलाना ।
 प्यास० ना० स्त्री० ठुपा ।

प्रोदिका० ना० स्त्री० पोय त्रेलि ।
 प्रोषित० गु० जो उकरागया, विदेसी ।
 प्रोषितपतिका० } ना० स्त्री० जिसका पति
 प्रोषितभर्तृका० } विदेशको गया हो ।
 प्रोष्टी० ना० स्त्री० सफरी, मछली ।
 प्रोहित० ना० पु० पुरोहित ।
 प्रोक्षण० ना० पु० यज्ञ में बलिदान करना, धि-
 श्कावा, वध ।
 प्रोक्षित० गु० जो डिङ्कागया, वधकियागया ।
 प्रोङ्ग० गु० जो वाङ्गका, स्याना, सम्य, चा-
 लीक, विद्वानों की समाज ।
 प्रोङ्गत० ना० स्त्री० पोदाई, स्यानपंग, चतु-
 राई ।
 प्रोङ्गा० ना० स्त्री० छी तीसवर्ष से पचपन वर्ष
 तक ।
 प्रोङ्गि० ना० स्त्री० जोसिम, धूमि, अभिमान से
 बात कहना ।
 प्रुवंग० } ना० पु० वानर, बन्दर ।
 प्रुवा० }
 प्रुह० ना० स्त्री० पिलहो, तिही ।
 प्रुहारी० ना० पु० सरफोंका ।
 प्रुत० ना० पु० विमात्रिकवर, स्वर विशेष, राग
 का ग्राम विशेष ।
 प्रुति० ना० स्त्री० कूटना, फांदना ।
 [फ]
 फदना० अ० कि० फसना, कूटना ।
 फदलाना० स० कि० फुसलाना ।
 फदा० ना० पु० फसपी, फांसी, जनाल ।
 फसाव० ना० पु० उलभाव, अटकवा ।
 फसियारा० ना० पु० बटपार जो पथिकों को
 पानी देकर मारबालता है ।
 फकी० ना० स्त्री० अनादर करने का नाम ।
 फङ्ग० ना० पु० भगड़ा, मालीगलीन, ठगली ।
 फजा० ना० पु० पंगा ।
 फिका० ना० स्त्री० फांकी ।
 फिया ना० स्त्री० फाक ।

फकी० ना० स्त्री० फांकी ।
 फगुनहटे० गु० फागुनके पास, फागुन के दिनों ।
 फगुवा० ना० पु० होली के दिन, अथवा जो स्त्री
 फागुन में नेग लेती है ।
 फंका० ना० पु० } चूषण इत्यादि को हाथ में
 फंकी० ना० स्त्री० } रखकर मुलमें डालना ।
 फटक० ना० पु० स्फटिक ।
 फटकना० स० कि० पछोड़ना, भाड़ना, अ०
 कि० तड़फड़ाना ।
 फटकरी० ना० स्त्री० फिटकरी ।
 फटकी० ना० स्त्री० चिड़ीमार का जाल, बड़ा
 पिंजरा, पथियों के डराने के लिये फटा बाँस,
 आदि जो रस्सी में बांधकर वृक्षादि पर लट-
 काते हैं ।
 फटना० अ० कि० टूटना, चिरना, फूटना ।
 फटपड़ना० अ० कि० बहुतसा उपजना, ए-
 काएक मोटा होजाना, कामकी अधिकता में
 व्याकुल होना, फाट के गिरना ।
 फटफटाना० स० कि० पंखभाड़के चड़ना, कान
 बनाना कुत्ताआदि का, अ० कि० तड़पना,
 व्याकुल होना ।
 फटा० य० चिराहुआ ।
 फटाक० अथ० उसी समय, तुरन्तही ।
 फटाका० ना० पु० बन्दूकादि का शब्द ।
 फटाना० अ० कि० संगते अलग चलना ।
 फटाघ० ना० पु० त्रिराव, जुदागी, अलगहोना ।
 फटिक० ना० पु० स्फटिक ।
 फड़० ना० पु० घूतस्थान, पछा ।
 फड़कना० अ० कि० उड़लना, फड़फड़ाना
 मांसआदि का उड़लना, टूटना ।
 फड़फड़ाना अ० कि० फड़कना ।
 फड़फड़िया० ना० पु० फड़कनेहारा ।
 फड़ाना० स० कि० चिराना, फटाना ।
 फण० ना० पु० साँप, या साँपका पसरा हुआ
 माथा ।
 फणघर० ना० पु० साँप ।

प्यासा० } गु० तृषान्त, तृषित ।
 प्यासी० }
 प्यौसार० } ना० पु० पतिक्रा पर स्त्री० सस-
 प्यौहर० } राल ।
 प्र० अव्य० निरा शब्दकी आदि में यह मिलितहै ।
 उराका अर्थ कभी आगे कभी अधिकहै ।
 प्रकट० } गु० प्रकट, प्रसिद्ध ।
 प्रकटित० }
 प्रकम्पन० ना० पु० आर्षा, भयङ्क ।
 प्रकर० ना० पु० समूह, गिराह ।
 प्रकरण० ना० पु० एक विषयका प्रस्ताव, पाठमें
 विशाम स्थानि, अध्याय, समूह ।
 प्रकाम० ना० पु० सिद्धि, विशेष ।
 प्रकार० ना० पु० रीति, तरह, विशेषण, भेद,
 सादृश्य, लीला ।
 प्रकारान्तर० गु० दूसरे प्रकार, दूसरा प्रकार ।
 प्रकाश० ना० पु० ज्योति, उजाला, रोशनी, गु०
 प्रकट ।
 प्रकाशक० ना० पु० प्रकाशकर्ता ।
 प्रकाशवान्० गु० प्रकाशयुत, प्रकाशित, रो-
 शन ।
 प्रकाशित० गु० प्रकाश कियागया, रोशन ।
 प्रकाशय० गु० प्रकाशके योग्य ।
 प्रकीर्ण० ना० पु० चूर्चरी, अध्याय, गु० प्रकट
 व्याप्त ।
 प्रकीर्त्तन० ना० पु० कथन, भाषण ।
 प्रकीर्त्तित० गु० कथित, भाषित ।
 प्रकृत० ना० स्त्री० स्वभाव, गुण, गु० जो जन्मासा
 गया ।
 प्रकृतार्थ० ना० पु० प्रकृतका जो अर्थ ।
 प्रकृति० ना० स्त्री० स्वभाव, गुण, माया,
 संसार ।
 प्रकृष्ट० गु० उत्तम, श्रेष्ठ, मुख्य, श्रेष्ठत ।
 प्रक्रम० ना० पु० चलन, गमन, अवकाश ।
 प्रक्रिया० ना० स्त्री० व्याकरण का प्रत्य विशेप,
 साधनिका ।

प्रखर० ना० पु० पालर, गु० तीक्ष्ण ।
 प्रख्यात० गु० प्रतिष्ठित, प्रसिद्ध, प्रसन्न, आ-
 नन्दित ।
 प्रगट० गु० व्यक्त, सावान्, प्रत्यक्ष, प्रकाश,
 प्रसिद्ध ।
 प्रगटना० अ० कि० प्रकटहोना ।
 प्रगल्भ० गु० शास से विजयी, शमय, शोदा,
 प्रतिष्ठावान्, सामर्थी ।
 प्रगाढ़० ना० पु० पीड़ा, तपस्या, गु० बहुत
 गाढ़ा, कठिन ।
 प्रग्रह० ना० पु० किरवाली ।
 प्रघट० गु० प्रगट ।
 प्रघटी० ना० स्त्री० सुवर्ण वा सोण के लिये ताँबा ।
 प्रचण्ड० गु० बलवान्, तेज, अतृपहा, भयङ्कर,
 क्रोधी ।
 प्रचलित० गु० जो चलताहै, जारी ।
 प्रचार० ना० पु० विस्तार, फैलाव, चलन, प्र-
 वारा, जारी होगा, प्रकृतता ।
 प्रचारक० गु० प्रचार करनेहारा ।
 प्रचारना० स० कि० चलाना, नाइ देना, उभ-
 हाना ।
 प्रचारित० गु० निस्तारित, चलित और प्रकाशित ।
 प्रचुर० गु० बहुत ।
 प्रचेता० ना० पु० वक्ष्य देवता ।
 प्रचोदित० गु० प्रेरित, जो आत्मा कियागया ।
 प्रच्छन्न० ना० पु० चौर, तिहकी, गु० छुप्त,
 आच्छादित ।
 प्रजरण० ना० पु० ज्वलन, जलना ।
 प्रजरना० अ० कि० जलना, बरना ।
 प्रजरित० गु० ज्वलित, जलता भया ।
 प्रजा० ना० स्त्री० सत्तान, सेवक, राज्य के वाली
 रैयत ।
 प्रजाता० ना० स्त्री० जाननी, जच्चा ।
 प्रजापति० ना० पु० राजा, ब्रह्मा, दत्त, कुम्हार ।
 प्रजारक० गु० जलानेहारा ।
 प्रजारण० ना० पु० जलावन, दहकावट ।

फणपति० ना० पु० शेषजी सांका राजा ।
 फणा० ना० पु० फण ।
 फणि० ना० पु० सांकां वा संसकी मणि ।
 फणिक० ना० पु० सांका ।
 फणिज्जक० ना० पु० मर्वा, पुनन्धितपोधना ।
 फणी० ना० पु० फणि, सांका ।
 फणीन्द्र० } ना० पु० सांका राजा, शेषजी ।
 फणीश० }
 फदकना० अ० कि० दालचादिका उरुना ।
 फदफदाना० अ० कि० बलबलाना, छिटे र दाने पड़ना ।
 फन० ना० पु० फण ।
 फनगा० ना० पु० टिड्डा, आलकाडा ।
 फनफनाना० अ० कि० फण खोलना, फुलकारना ।
 फद्दा० ना० पु० फांसी, मूत्र, उलभाव ।
 फफसा० ना० पु० फूलाइया ।
 फफूदी० ना० स्त्री० नीलापन के कारण से जो सफेदी अर्चादि में लग जाती है, सड़ता ।
 फफोला० ना० पु० फुलका, धाला ।
 फच० ना० स्त्री० शोभा ।
 फचकना० अ० कि० पनपना, डाल निकलना ।
 फचता० ना० पु० योग्य, टीका, धनता ।
 फचती० ना० स्त्री० शोभा, किसीको बचक भिने देखकर कहना यह किस जातिका है ।
 फचन० ना० स्त्री० शोभा, धनता ।
 फचना० अ० कि० सीहना, धानना, रोजना ।
 फचीला० अ० शोभित, सजीला, शोभायमान ।
 फर० ना० पु० फल, तौरकांगोसा, पहा ।
 फरकना० अ० कि० फड़कना ।
 फरचा० ना० पु० मर्वाका फटना, फसला ।
 फरचाना० अ० कि० न्यायकरना, आना देना ।
 फरछो० अ० निर्मल, स्वच्छ, सरा ।
 फरछाना० अ० कि० स्वच्छ वा निर्मल कराना, सराना ।

फरफन्द० ना० पु० छल, कपट, धोखा ।
 फरफन्दिथा० अ० छली, धोखा, ठग, कपट ।
 फरस० ना० पु० फरसा ।
 फरसा० ना० पु० फावडा, कुल्हाडा, वन, अथ विशेष ।
 फरहरा० ना० पु० श्वजा, पताका, गु ।
 फरहरी० ना० स्त्री० अथमसा ।
 फरहा० ना० पु० खोलना, फफला, निर्धन ।
 फरिया० ना० स्त्री० स्त्रियों के छोड़ने का बल विशेष, लड़कियों के पहरने में अथवा विशेष ।
 फरी० ना० स्त्री० दाल, दाली, फल समेत ।
 फरीटा० ना० पु० बांसाका टुकड़ा, धुजाके हिलने वा छोड़े की श्वासका जो शब्द होता है ।
 फरीना० अ० कि० हिलना वा उड़ना ।
 फला० ना० पु० वृक्षादिका सस्य, पलया मोती, कर्णिक भोग, सन्तान, वाणके आठोका लोहा लहादि ।
 फलकना० अ० कि० फड़कना ।
 फलचारि० ना० पु० अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष ।
 फलजनक० ना० पु० जो फलनेमामे ।
 फलताइ० ना० पु० ताइका फल ।
 फलाद० ना० पु० वृक्ष अ० फलका दाता ।
 फलदाता० } गु० फल देनेहार ।
 फलदानि० }
 फलना० अ० कि० फललाना भाग्यवाचिना ।
 फलमूल० ना० पु० फल की दूध ।
 फलराज० ना० पु० सरबृजह, दुरायल ।
 फलवर्तुल० ना० पु० त्रवृज, हिडवाना ।
 फलवान० अ० जो फल युक्त हो ।
 फला० ना० पु० संयुक्तधर, समस्तधर, गु फलित ।
 फलाग० ना० स्त्री० कूदना, लयन, डंग, जल ।
 फलाशिन० ना० पु० खिरी ।
 फलाश० ना० स्त्री० फलाग ।
 फलित० गु० फलाइया, फला समेत ।

प्रज्ञारत्ना० स० कि० जलाना, दहकाना ।
 प्रज्ञाशान० शु० प्रज्ञाभवक ।
 प्रज्ञेश० ना० सु० राजा, ब्रह्मा; कुम्हार ।
 प्रञ्चलता० ना० स्त्री० ज्योतिः, उच्चलता
 चौर बलाय ।
 प्रञ्चलित० शु० ज्योतिष्मान्, उच्चल; जला ।
 प्रण० ना० पु० प्रतिज्ञा, दाता ।
 प्रणऊं० कि० प्रणाम करो ।
 प्रणत० शु० अतिदीन, अतिनय, शरणागत ।
 प्रणति० ना० स्त्री० नमस्कार, प्रणाम ।
 प्रणय० ना० स्त्री० प्रीति, प्रेम, मुक्ति, भरोसा, अवनान ।
 प्रखर० ना० पु० अक्षर, मन्त्ररान, आचार ।
 प्रणवा० कि० प्रणाम करो ।
 प्रणाम० पु० नमस्कार, सलाम ।
 प्रणवली० ना० स्त्री० नाली ।
 प्रणिधान० ना० पु० मनोयोग, उद्योग ।
 प्रणिपात० ना० पु० दण्डवत्, प्रणाम ।
 प्रणी० शु० प्रण करेहार, मन्त्रचला ।
 प्रतन० शु० पुराणा, प्रले ।
 प्रताप० ना० पु० ऐश्वर्य, तेज, सम्पत् ।
 प्रतापवान्० शु० तेजवान्, तेजस्वी, तेज
 प्रतापी० धारी ।
 प्रतारक० ना० पु० ठग, चंचल, बंचक ।
 प्रतारण० ना० पु० ध्वंस, धग ।
 प्रतारणा० धारी ।
 प्रतारित० शु० ठगाया, बंधित ।
 प्रति० ना० स्त्री० नुकूल, श्रेय, यह शब्द जिस
 शब्द के आदि में होता है, उसके अर्थ कभी
 फर कभी सन्त कभी एक एक ।
 प्रतिउपकार० ना० पु० प्रसुपकार, प्रतिकार ।
 प्रतिकार० ना० पु० बदला, पलया ।
 प्रतिकूल० शु० विरुद्ध, उल्टा, प्रतिक्रमक ।
 प्रतिग्रह० ना० पु० दाग, जो मादक्योक्त सायकही
 वा एसा दान लेना, ग्रहण ।
 प्रतिघ्न० ना० पु० मारण, नष ।

प्रतिच्छाया० ना० स्त्री० प्रतिविम्ब, परस्पर,
 मूर्ति ।
 प्रतिच्छाद० ना० स्त्री० प्रतिविम्ब, छाया ।
 प्रतिदान० ना० पु० धरोहर, फेरदान ।
 प्रतिदिन० अक्षय दिन दिन ।
 प्रतिधा० अक्षय बार, बार, हरबार, हरदका ।
 प्रतिनिधि० ना० स्त्री० सदरा, तदनुसंग प्रतिनि
 पेशकार ।
 प्रतिपत्न० ना० स्त्री० परैवा, पचरी प्रथमतिथि ।
 प्रतिपत्ति० ना० स्त्री० वश, शान ।
 प्रतिपद्म० ना० स्त्री० प्रतिपद्, परैवा ।
 प्रतिनिका० ना० स्त्री० गन्धपसारन ।
 प्रतिपन्न० शु० जानागया, निधित ।
 प्रतिपन्न० ना० पु० शत्रु, वैरी ।
 प्रतिपत्नी० स्त्री० शत्रु, वैरी ।
 प्रतिपादन० ना० पु० दान, बुझावना ।
 प्रतिपादित० शु० जिसका प्रतिपादन हुआ ।
 प्रतिपाद्य० शु० वाच्य, वर्णन के योग्य ।
 प्रतिपाल० ना० पु० पालन, पोषण ।
 प्रतिपालक० ना० पु० पालन करनेहार ।
 प्रतिपालन० ना० पु० प्रतिपाल, पोषण ।
 प्रतिपालना० स० कि० पालन करना, पोषण ।
 प्रतिप्रखर० ना० पु० जो वायु और अत से
 सिद्ध हो ।
 प्रतिफल० ना० पु० सम्पूर्ण फल, हुनसाय ।
 प्रतिघ्नव० ना० पु० काम का विनाशक ।
 प्रतिघ्नक० ना० पु० बाधक, रोकनेहार ।
 अटकनेहार ।
 प्रतिघट० ना० पु० समान योद्धा, तुल्यगारी ।
 प्रतिभा० ना० स्त्री० मुक्ति, उर्वृति, समक ।
 प्रतिभाग० ना० पु० शंरा, शंरापर, हरिहर ।
 प्रतिभू० ना० पु० मनो पी, जाभिन, द्वादिशानी ।
 प्रतिमा० ना० स्त्री० मूर्ति, सतमी, हुकला ।
 प्रतिमास० ना० पु० महाने, मास ।
 हरमास ।
 प्रतिमूर० ना० पु० परधर, दरवा, प्रतिवि ।

फलितार्थ० ना० पु० तावत्पर्यन्तं, ठोक अर्थ ।
 फलिनो० ना० पु० भिययु ।
 फलिया० ना० स्त्री० धापी, तुकमा ।
 फली० ना० स्त्री० धोनी, तुकमा, ना० पु० वृक्ष
 पु० स्त्री० फलित ।
 फलीश० ना० पु० पास्तपीपत्रः ।
 फलोदय० ना० पु० फलोत्पत्ति, प्राप्तकाम, स्वर्ग
 आनन्द ।
 फलोपम० ना० पु० सफेद वेगन, श्वेत भांश ।
 फसकङ्क० ना० स्त्री० वैद्यक विशेष ।
 फसकना० अ० कि० फटना, फटना ।
 फसकाना० स० कि० फाड़ना, तोड़ना, फोड़ना ।
 फसकाऊ० ना० पु० फाड़, तोड़, फोड़ ।
 फसना० अ० कि० बभङ्गा, उलभङ्गा, जालभ
 पङ्गा, बन्दीशाखा में पङ्गा, रुकना, फंदे में
 थाना, कावृ में थाना ।
 फसफसा० पु० पिलपिला, अलगा ।
 फसफसाना० अ० कि० पिलपिलाना, डरना ।
 फसवाना० स० कि० उलभङ्गा, अटकवाना,
 रुकवाना, बन्दी करवाना ।
 फसाना० स० कि० बभङ्गा, उलभङ्गा, रुकना,
 अटकाना, जाल में डालना, और बन्दीशाखा में
 रखवाना ।
 फहरना० अ० कि० फरना ।
 फहराना० अ० कि० फरना, उल्लाना, कूदना ।
 फांक० ना० स्त्री० फलका टुकड़ा ।
 फांकना० स० कि० फका गाना ।
 फांकी० ना० स्त्री० फांक, फकिका, पूर्वपञ्चम ।
 फाटना० स० कि० नाड़ना, विभाग करना ।
 फांट० ना० पु० मोड़ाव, हिस्सा, विभाग ।
 फांद० ना० पु० फंद, कंदा ।
 फांदना० स० कि० लापना, कूदना ।
 फांदा० ना० पु० फांद, गून्हा ।
 फांदी० ना० स्त्री० गधों का एक बौध्

फांकड़० ना० पु० खेद, छेद ।
 फांस० ना० स्त्री० सूत कांड ।
 फांसना० स० कि० बांधना, रोकना, बन्दकरना,
 जाल में लाना ।
 फांसा० ना० पु० डोरका उर्वकाना ।
 फांसी० ना० स्त्री० फन्दी, फसडी, फन्द, फेसट
 रुथन ।
 फाग० ना० पु० गुलाल वा उसका डालिना वा
 उड़ाना, हेली का समय ।
 फागुन० ना० पु० फाल्गुन ।
 फाटक० ना० पु० बड़ा द्वार, अटकव ।
 फाटना० अ० कि० फटना ।
 फाड़खाना० स० कि० भेभोरना, कंभोरना ।
 फाड़ना० स० कि० चीरना, फाड़ना, तोड़ना,
 मसकाना ।
 फाड़ा० पु० चीरांहुथ ।
 फाल० ना० स्त्री० हलके अतिरिक्त लोहा, चौकड़ी
 सुपारी का टुक, डग चौ ।
 फालसा० ना० पु० फल वा वृक्ष विशेष ।
 फाल्गुन० } ना० पु० फागुन मास, अर्द्धमास
 फागुन० }
 फाल्गुनिका० ना० स्त्री० फुड, होती ।
 फाव० ना० पु० फलवा, लूलेन ।
 फावड़ा० ना० पु० मोटी तौदने का अन्न, फसा,
 बड़ी और चौड़ी कुदाल ।
 फावड़ी० ना० स्त्री० बैरागा, बैरीगा ।
 फावना० अ० कि० सोहना, शोभादेना ।
 फावित० पु० शोभित ।
 फावी० पु० शोभितभई, शोभा दी ।
 फाहा० ना० पु० मरहम से भीगाहुथा कपड़ेका
 धाव टुकड़ा, तीसी ।
 फिकारना० स० कि० शिर नंगा करना ।
 फिट० ना० पु० फिटकावा ।
 फिटकार० ना० स्त्री० फिकार, सानव ।
 फिटकरी० ना० स्त्री० फटरी

व्यासा० } गु० तृपान्त, तृषित ।
 व्यासी० }
 व्यौसार० } ना० पु० पतिका घर स्त्री० ससु-
 व्यौहर० } राल ।
 प्र० अव्य० जिस शब्दकी आदि में ग्रह मिलित हो
 उसका अर्थ कभी आगे कभी अधिक है ।
 प्रकट० } गु० प्रकट, प्रसिद्ध ।
 प्रकटित० }
 प्रकम्पन० ना० पु० आंधी, भूकम्प ।
 प्रकर० ना० पु० समूह, गिरोह ।
 प्रकरण० ना० पु० एक विषयका प्रस्ताव, पाठमें
 विशाम स्थान, अध्याय, समूह ।
 प्रकाम० ना० पु० सिद्धि, विशेष ।
 प्रकार० ना० पु० रीति, तरह, विशेषण, भेद,
 सादृश्य, ढौल ।
 प्रकारान्तर० गु० दूसरे प्रकार, दूसरा प्रकार ।
 प्रकाश० ना० पु० ज्योति, उजाला, रोशनी, गु०
 प्रकट ।
 प्रकाशक० ना० पु० प्रकाशकर्ता ।
 प्रकाशवान्० गु० प्रकाशयुत, प्रकाशित, रो-
 शान ।
 प्रकाशित० गु० प्रकाश किया गया, रोशन ।
 प्रकाश्य० गु० प्रकाशके योग्य ।
 प्रकीर्ण० ना० पु० चोरी, अध्याय, गु० अकट,
 व्याप्त ।
 प्रकीर्त्तन० ना० पु० कथन, भाषण ।
 प्रकीर्त्तित० गु० कथित, भाषित ।
 प्रकृत० ना० स्त्री० स्वभाव, गुण, गुणोत्पन्नाद्यो
 गया ।
 प्रकृतार्थ० ना० पु० प्रकृतका जो अर्थ ।
 प्रकृति० ना० स्त्री० स्वभाव, मूल, माया,
 संसार ।
 प्रकृष्ट० गु० उत्तम, श्रेष्ठ, मुख्य, अर्च्चान ।
 प्रकम्प० ना० पु० चलन, समन, अवकाश ।
 प्राकिया० ना० स्त्री० व्याकरण का ग्रन्थ, विशेष,
 साधनिका ।

प्रखर० ना० पु० पावर, गु० तीक्ष्ण ।
 प्रख्यात० गु० प्रतिष्ठित, प्रसिद्ध, प्रसन्न, प्रा-
 नन्दित ।
 प्रगट्ठ० गु० व्यक्त, साक्षात्, प्रत्यक्ष, प्रकाश,
 प्रसिद्ध ।
 प्रगटना० अ० कि० प्रकटहोना ।
 प्रगल्भ० गु० शास्त्र से विजयी, अभय, योद्धा,
 प्रतिष्ठान्, सामर्थ्य ।
 प्रगाढ़० ना० पु० पीडा, तपस्या, गु० बहुत
 गाढ़ा, कठिन ।
 प्रग्रह० ना० पु० किरवाली ।
 प्रघट्ठ० गु० प्रगट्ठ ।
 प्रघटी० ना० स्त्री० सुवर्ण वा सोप्य के लिये तांबा ।
 प्रघण्ड० गु० बलवान्, तेज, अनुसहा, भयङ्कर,
 क्रोधी ।
 प्रचलित० गु० जो चलता है, जारी ।
 प्रचार० ना० पु० विस्तार, फलाव, चलन, प्र-
 काश, जारी होता, प्रकटता ।
 प्रचारक० गु० प्रचार करनेवाला ।
 प्रचारना० स० कि० चलाना, वाद देना, उम-
 राना ।
 प्रचारित० गु० विस्तारित, चलिता और प्रकाशित ।
 प्रचुर० गु० बहुत ।
 प्रचेता० ना० पु० वरुण-देवता ।
 प्रचोदित० गु० प्रेरित, जो आज्ञा किया गया ।
 प्रच्छन्न० ना० पु० चौर, खिडकी, गु० गुप्त,
 आच्छादित ।
 प्रजरण० ना० पु० ज्वलन, जलन ।
 प्रजरना० अ० कि० जलना, बरना ।
 प्रजरित० गु० ज्वलित, जलता भया ।
 प्रजा० ना० स्त्री० सन्तान, सेवक, राज्य के बर्त-
 रियत ।
 प्रजाता० ना० स्त्री० जननी, जन्मा ।
 प्रजापति० ना० पु० राजा, ज्ञान, दत्त, कुम्हार ।
 प्रजारक० गु० जलानेवाला ।
 प्रजारण० ना० पु० जलावन, दहकावट ।

फिटकारना० स० कि० धिकार करना, कौंसना,
शापना ।

फिटाना० स० कि० फेंटना, फिनाना ।

फिर० अर्थ० पुनि, पुनः, फेर ।

फिरकवाहनी० ना० स्त्री० सेजगाड़ी ।

फिरकी० ना० स्त्री० बंगी, भौरा, चकई, फिराने
की वस्तु जिसको लड़के फिराते हैं ।

फिरजाना० अ० कि० पलटना, फिरना ।

फिरत० ना० पु० वस्तु जो अमसन्नता से
लौटादी ।

फिरता० गु० रमता, फेरने का पैसा ।

फिरतारहना० अ० कि० रमना, फेरा करना,
भटकता रहना ।

फिराना० स० कि० घुमाना, भटकाना, रमाना ।

फिरावा० ना० पु० घुमाव, फेर ।

फिर्ना० अ० कि० घूमना, लौटना, भटकना,
रमना ।

फिर्नी० ना० स्त्री० फिरकी ।

फिह्री० ना० स्त्री० पियडली ।

फिसफिसा० गु० डरपोक, फसकता ।

फिसफिसाना० अ० कि० भयभीत होना,
डराना ।

फिसलन० ना० स्त्री० खिसलन, विखलना ।

फिसलना० अ० कि० खिसलना, विखलना,
रपटपड़ना ।

फिसलाना० स० कि० खिसलाना, विखलाना,
चूकना ।

फिसलाहट० ना० स्त्री० खिसलाहट, चिकना,
हट ।

फौचना० कि० ना० खंचालना, घेना ।

फौका० गु० स्वारहित, सीठा, सावला, चदरंग,
वेमजे ।

फुकार० ना० स्त्री० सांपकी फनकनाहट ।

फुकारना० अ० कि० फनकनाना ।

फुहार० ना० स्त्री० भाँधी, फूँही ।

फुकना० अ० कि० जलना, ना० पु० धेला ।

फुकनी० ना० स्त्री० धौकनी, निगाली, धांग
फूकने की जो नांस वा पीतलादि की होती है ।

फुट० गु० अयुग्म ।

फुटकर० गु० अलग, भिन्न भिन्न, अयुग्म ।

फुटकी० ना० स्त्री० छोट, छिटकी, गु० अयुग्म ।

फुडिया० ना० स्त्री० फुन्सी छोटा चौड़ा ।

फुदकना० अ० कि० कुदकना, थोड़ा थोड़ा
उछलना ।

फुदकी० ना० स्त्री० पत्ती विशेष ।

फुनगी० ना० स्त्री० फली, कोपल, वृक्षकी चोटी ।

फुनंग० ना० स्त्री० शिलर, चोटी ।

फुनसी० ना० स्त्री० पुरासा, फुडिया, पिरकी ।

फुनिया० }
फुन्नी० } ना० स्त्री० लोलो ।
फुन्नी० }

फुपकार० ना० स्त्री० फुहार ।

फुफा० ना० पु० फूफा ।

फुफो० ना० स्त्री० फूफ, फूथा ।

फुफेरा० ना० पु० } गु० जो फूफसे उतरा
फुफेरी० ना० स्त्री० } भया वा जो फूफका

सम्बन्धी होवे ।

फुर० गु० सच, ठीक, सत्य ।

फुरति० ना० स्त्री० फूर्ति ।

फुरफुराना० अ० कि० कांपना, हिलना ।

फुरफुरी० ना० स्त्री० कम्पाहट, धरधराहट ।

फुर्त्त० } ना० स्त्री० वेगता, शीघ्रता, जालाकी
फुर्त्ती० } चटपटी, जल्दी ।

फुर्त्तीला० गु० वेगी, चालाक, चटपटिया ।

फुलका० गु० फूलाहवा, हलका, ना० पु०
फकाला, पतली छोटी रोटी ।

फुलकारना० अ० कि० फूलना, फण, उठाना ।

फुलकारी० ना० स्त्री० कपड़ा जिसमें फूलहो ।

फुलकिया० }
फुलकी० } ना० स्त्री० राटी विशेष ।

फुलभङ्गी० ना० स्त्री० आतशानी विशेष ।

प्रदेश० ना० पु० भूमिखण्ड; देश, इयान, पर-
देश, छोटी विस्तारित ।
प्रदोष० ना० पु० सर्वास्त से दोदण्ड, शिवव्रत
विशेष, देव ।
प्रदोषा० ना० स्त्री० रात, रात्रि ।
प्रघ्न० ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्रजीकापुत्र, काम
देव ।
प्रघोतन० ना० पु० सूर्य ।
प्रधान० ना० पु० मुख्यमंत्री, श्रेष्ठ, गुं० पहला ।
प्रधानता० ना० स्त्री० मुख्यता, श्रेष्ठता, वज्रा-
रत ।
प्रधाननगर० ना० पु० प्रसिद्ध नगर, बड़ा
नगर ।
प्रनाम० ना० पु० प्रणाम ।
प्रनाशो० गुं० नाशनेवाला, मिटानेवाला ।
प्रपंच० ना० पु० छल, विरोध, डर, धोखा, चूक,
संसार, बातों का विस्तार ।
प्रपंचित० गुं० जो विस्तारयुक्त बख्खनहुया, जो
छला गया ।
प्रपंची० ना० पु० प्रपंचकर्ता घाती, छली ।
प्रपितामह० ना० पु० पितामह का पिता,
परदादा ।
प्रपितामही० ना० स्त्री० पितामह की माता,
परदादी ।
प्रपुत्रा० ना० पु० पवार दौधा ।
प्रपौत्र० ना० पु० पौत्रका पुत्र, परपोता ।
प्रपौत्री० ना० स्त्री० पौत्रकी पुत्री, परपोती ।
प्रफुला० ना० पु० फूल के छि ।
प्रफुल्ल० गुं० विकसित, फूला, खरा ।
प्रफुल्लित० गुं० विकसित, फूलामया, आनन्द,
मग्न, खुरा ।
प्रवच० ना० पु० ज्ञान से वाक्य की बनाने,
रचना विशेष, कथा, वृत्तान्त, कन्दोवरत ।
प्रवचार्थीन० गुं० प्रवच के आधीन ।
प्रवच० गुं० बलवान, पहलवान ।
प्रवचता० ना० स्त्री० बलाकारी, बरवस ।

प्रवोध० ना० पु० ज्ञान; उपदेश, सुर्त, प्रज्ञागत,
तसखी, सवर ।
प्रवोधक० गुं० प्रवोध करने हारा ।
प्रबद्ध० ना० पु० नींव बृत्त ।
प्रभंजन० ना० पु० पवन, गुं० विनाशान ।
प्रभव० ना० पु० उत्पत्ति, उत्पन्न, उत्पत्तिकारी ।
प्रभा० ना० स्त्री० शोभा, कान्ति, दीप्ति,
चमक ।
प्रभाकर० ना० पु० सूर्य, चन्द्रमा ।
प्रभाव० ना० पु० माहात्म्य, सामर्थ्य, फल ।
प्रभात० ना० पु० प्रातःकाल, भोर, तड़का ।
प्रभाती० ना० स्त्री० रागिनी विशेष ।
प्रभावती० ना० स्त्री० पातालगंगा ।
प्रभास० ना० पु० तीर्थ विशेष ।
प्रभिन्न० ना० पु० हाथी, (प्रभिन्नो गन्तितो मत्तः
इत्यमरः) ।
प्रभु० ना० पु० नाय, स्वामी, राजा, ईश्वरः
प्रतिपालक, गुरु ।
प्रभुता० ना० स्त्री० } राज्यादि अधिकार, श-
प्रभुताई० ना० स्त्री० } नाब्यता, स्वामित्व,
प्रभुत्व० ना० पु० } ईश्वरता ।
प्रभुतालय० ना० पु० नीतिग्रह, कचहरी,
अदालत ।
प्रभृति० अर्थ्य० इत्यादि ।
प्रमदा० ना० स्त्री० छलकणा स्त्री ।
प्रमदी० ना० स्त्री० कलिहारी ।
प्रमथा० } ना० स्त्री० हड, शिवा ।
प्रमथ्या० }
प्रमथान० } ना० पु० श्रीमहादेवजी, यथा
प्रमथाधि० } (मृत्युञ्जयः कृत्तिकास्तः पिना-
प्रमथाधिप० } की प्रमथाधिपः इत्यमरः) ।
प्रमा० ना० स्त्री० यथार्थ का ज्ञान, अनुभव ।
प्रमाण० ना० पु० निश्चय का कारण, साक्षी,
अवधि, प्रत्यक्ष, निश्चय, सच्चा, ज्ञाय ।
प्रमाणिक० गुं० योग्य, निश्चयकारक, प्राय
रूप प्रमाण के योग्य ।

कुलवाई० ना० स्त्री० कुलवाड़ी, रामायण, यथा
 एक सती सियसंग विहाई, गई रहे देखत
 कुलवाई ।
 कुलवाड़ी० ना० स्त्री० फूलोंकी बाड़ी या बास ।
 कुलाना० स० कि० सजाना, मोड़करना ।
 कुलासरा० ना० पु० लल्लोपत्तो, कुसलाहट ।
 कुलेल० ना० पु० चंचेली का तेल ।
 कुलौरी० ना० स्त्री० पकौड़ी ।
 कुल्ल० गु० फूला, खिला ।
 कुल्लड़० गु० बूचला, फूलसे थोड़े दिनके फल ।
 कुल्ली० ना० स्त्री० आलकी, फूली ।
 कुसकुसाना० अ० कि० धीरे धीरे बातकहना,
 भीसी पढ़ना ।
 कुहार० ना० स्त्री० पानीके कण छोटे २ पढ़ना ।
 कुहारा० ना० पु० फन्नाह छोटी २ धुँद
 बुटना ।
 कुआ० ना० स्त्री० फूफू, वापकी बहन ।
 फूक० ना० पु० फूकने का काम या चाल ।
 फूकना० स० कि० मुल से वायु छोड़ना, मुल-
 गाना, मुल से बजाना, उड़ाना, जलाना ।
 फूकारना० अ० कि० फनाकनाना ।
 फूही० ना० स्त्री० भीरी, फूही ।
 फूकना० स० कि० फूकना ।
 फूट० ना० स्त्री० ककड़ीविशेष, अयुग्म, बिगाड़,
 भिन्नता, खोट ।
 फूटन० ना० स्त्री० अगमना, विरोध ।
 फूटना० अ० कि० टूटना, फटना, भिन्न भिन्न
 होना, प्रकट होना दुर्गन्धि निकलना ।
 फूटा० गु० टूटा ।
 फूटी० ना० स्त्री० विरोध, बिगाड़, गु० टूटी ।
 फूफा० ना० पु० फूफूना पति ।
 फूफा० } ना० स्त्री० वापकी बहन ।
 फूल० ना० पु० उष्ण, कली, निहानी, सज, जले
 हंग मृतककी हटा ।

फूलना० अ० कि० खिलना, बिगड़ना, धान-
 न्दितहोना, सजना, अभिमानी होना ।
 फूला० गु० सजा, ना० पु० धानोंके लावा ।
 फूलाव० ना० पु० सजन ।
 फूली० ना० स्त्री० फूली जो आंस में होती है ।
 फूस० ना० पु० पुरानी घास, तृण, पूसमास ।
 फूसड़ा० ना० पु० गूदड़ ।
 फूसी० ना० स्त्री० भूसी ।
 फूहड़० ना० स्त्री० फूहर ।
 फूहड़ा० गु० कुवचन कहनेहारा ।
 फूहर० ना० स्त्री० अनधीखी, घामड़, कुचाल
 चलनेहारी, ना० स्त्री० भिष्टल ।
 फूहा० ना० पु० सनके सदरा रुई गोड़ा ।
 फूहार० ना० स्त्री० फूहर, फूहरा ।
 फूही० ना० स्त्री० भीसी ।
 फूक० ना० स्त्री० फूकने का काम या चाल ।
 फूकना० स० कि० डालना, भौंकना ।
 फूकाव० गु० फूकने के योग्य ।
 फूट० ना० स्त्री० डब, कटिबन्ध, पटका ।
 फूटना० स० कि० फिलाना, सानना, खतपत
 करना ।
 फूटा० ना० पु० छाटी पगड़ी, पटका ।
 फूटी० ना० स्त्री० छाटी ।
 फूट० ना० स्त्री० फूट ।
 फूटना० स० कि० फटना ।
 फूटा० ना० पु० फूटा ।
 फेयु० ना० पु० फेना ।
 फेणोचारि० ना० पु० सप्रद फेणु ।
 फेन० } ना० पु० भांग, फेणु ।
 फेना० }
 फेनाना० अ० कि० फेना उठना ।
 फेनी० ना० स्त्री० पक्वान् विशेष ।
 फेनुस० ना० पु० पीपू ।
 फेफड़ा० ना० पु० थग विशेष जिसके द्वारा
 श्वास लेते हैं ।

प्रतिमूर्त्ति० ना० स्त्री० एक प्रतिमा के तुल्य
द्वितीय ।

प्रतियोग० ना० पु० शत्रुता, विरोध, वैर ।

प्रतियोगी० गु० शत्रु, वैरी, विरोधी ।

प्रतिरूप० ना० पु० सदृश, चित्र, मूर्त्ति ।

प्रतिरोध० ना० पु० अटक़ावर, रोक ।

प्रतिरोधक० ना० पु० चोर, रोकनेवाला ।

प्रतिलोम० गु० बायां, आंधा, उलटा, दुष्ट,
नीच ।

प्रतिवचन० ना० पु० उत्तरपीछे वचन, वचनपर ।

प्रतिवर्ष० ना० पु० वर्ष वर्ष, हरसाल ।

प्रतिवाक्य० ना० पु० प्रति वचन, गु० जो
उत्तर देने के योग्य है ।

प्रतिवाद० ना० पु० विवाद, झगडा, विरोध ।

प्रतिवादी० ना० पु० विवादी, विरोधी,
प्रत्यर्था ।

प्रतिवास० ना० पु० पडास ।

प्रतिवासी० ना० पु० पडासी ।

प्रतिविम्ब० ना० पु० जो दर्पणादि देखने में
रूप देख पडता है, अक्स, प्रतिरूप ।

प्रतिशब्द० ना० पु० शब्द पीछे, शब्द के साथही
शब्द ।

प्रतिशब्दक० ना० पु० भाई शब्द, जो शब्द
के साथही कृपादि से शब्द सुनाई देता है ।

प्रतिषिद्ध० ना० पु० निषिद्ध, वर्जित ।

प्रतिषेध० ना० पु० निषेध, ना० स्त्री० मनाई ।

प्रतिष्ठा० ना० स्त्री० मूर्त्ति स्थापन, सुरक्षाति,
कीर्त्ति, अवरू, बडाई ।

प्रतिष्ठित० गु० स्थापित, कीर्त्तिमान्, यश,
सुरक्षातियुत, श्रेयतदार ।

प्रतिहत० गु० जो निराशभया, रोकभया, अष्ट,
नष्ट ।

प्रतिहार० ना० पु० खोदावाच, चोबदार ।

प्रतिहंसक० गु० घातक का घाती, कीनावर ।

प्रतिज्ञा० ना० स्त्री० वचन, प्रण, अवधि, अवश्य
करने का स्वीकार ।

प्रतीक० ना० पु० अवयव, अङ्ग ।

प्रतीकार० ना० पु० पलटा, बदला ।

प्रतीची० ना० स्त्री० पश्चिम दिशा, पछार ।

प्रतीत० गु० प्रतिष्ठित, प्रकट ।

प्रतीति० ना० स्त्री० विश्वास, श्रद्धा, भरोसा,
समझ ।

प्रतीक्षा० ना० स्त्री० और का मार्ग देखना,
प्रत्याशा ।

प्रतोली० ना० स्त्री० मार्ग, नाद, राह ।

प्रतोप० ना० पु० सन्तोष, धीरज, सवर ।

प्रत्न० गु० पुराना ।

प्रत्यक० ना० पु० ऊंगा ।

प्रत्यय० ना० पु० विश्वास, समझ, चिद,
गिज्ञान ।

प्रत्यचाय० ना० पु० वियोग ।

प्रत्यह० अव्य० प्रतिदिन, हररोज ।

प्रत्यक्ष० गु० प्रसिद्ध, साक्षान्, दृष्टि, गौरव,
देखने के योग्य, अव्य० आगे ।

प्रत्याशा० ना० स्त्री० आसरा, भरोसा, उम्मेद ।

प्रत्याहार० ना० पु० स्वल्प भोजन ।

प्रत्युत्तर० ना० पु० उत्तरका उत्तर, जवाब ।

प्रत्युत्थान० ना० पु० उठकरके, जो सम्मान ।

प्रत्युपकार० ना० पु० उपकार के पलटे उपकार,
पलटादेना, इनाम ।

प्रत्येक० गु० एका एक, एक, एक, हरएक ।

प्रथम० गु० पहला, आदि, अव्वल, मुख्य ।

प्रथमा० ना० स्त्री० पहली ।

प्रथमान्त० गु० जो नाम वा सर्व नाम प्रथम
विभक्ति में हो ।

प्रथा० ना० स्त्री० सुरक्षाति, यश, धर्म ।

प्रथित० गु० यशान्त, प्रसिद्ध, कीर्त्तिमान् ।

प्रद० गु० दाताका चिह्न शब्दान्त में, दाता ।

प्रदक्षिण० ना० स्त्री० पूज्यको दाहिनेकर उस
प्रदक्षिणा० के चारोंघोर फिरकर निजासन
पर आना, फिरना ।

प्रदीप० ना० पु० दीपक, दिया ।

फेफड़ी० ना० स्त्री० चलनकी आशक्ति ।

फेर० अर्थ० पुनः ।

फेर० ना० पु० बोक, टेढ़ाई, घुमाव, घेरा, कुरखली, घोल, घुमाव ।

फेरना० स० क्रि० घुमाना ।

फेरा० ना० पु० घुमाव, फैलाव ।

फेराफेरी० ना० स्त्री० इधर उधर जाना, व्यावागमन ।

फेरी० ना० स्त्री० प्रदक्षिणा ।

फेरीवाला ना० पु० फेरनेवाला, विसांती यादि ।

फेह० ना० पु० शृगाल, गीदड़, धोला, अन्तर, फेर ।

फैंटा० ना० पु० फैंटा ।

फैलना० अ० क्रि० विछना, पसरना, बिधरना, प्रकट होना ।

फैलाना० स० क्रि० विछाना, चौड़ाना, पसारना, बिधराना, प्रकट करना ।

फैलाव ना० पु० विछाव, पहराव, प्रकटता, प्रचार, भरपूर ।

फोंक० पु० खोखल, पोला, ना० स्त्री० बाणकी एक और निधरसे पेंच में लगाने है ।

फोंकी० ना० स्त्री० नली, छूँची ।

फोहार० ना० स्त्री० फुहार ।

फोक० ना० पु० तरछट, सीटी, गु० खोखला, वस्त्र का फटावा, बाण का एक और ।

फोकट० ना० पु० कंगाल ।

फोकड़० ना० पु० खूद, तरछट, कूड़ा ।

फोड़ना० स० क्रि० तोड़ना, फाड़ना ।

फोड़ा० ना० पु० स्फोटक, बालतोंड़, पिरकी ।

फोला० ना० पु० फफोला, झाला ।

[व]

धंभोटी० ना० स्त्री० नांक होने की आशय विशेष ।

धंष्टवाना० स० क्रि० भागकरवाना, हिस्साकरवाना ।

धंष्टवैया० ना० पु० भागकर्ता, बांटेनेवाला ।

धंष्टाना० स० क्रि० बांटेना, बांटेवाना ।

धंष्टत० ना० पु० धंष्टवैया ।

धंड़ोहा० ना० पु० बवण्डर, चौहरा ।

धंश० ना० पु० बांटेना ।

धंशकार० ना० पु० बांटेना का बनानेवाला ।

धंशक्षीरी० ना० पु० धंशरोचन ।

धंशरोचन० पु० धंशलोचन ।

धंशावली० ना० स्त्री० बांटेवली ।

धंशी० ना० स्त्री० धंष्टी ।

धक० ना० पु० धक, ना० स्त्री० भक, गप ।

धकुची० ना० स्त्री० पीथा विशेष जिसके बीच से खुनलौ जाती है ।

धकभक० ना० स्त्री० धकवाद ।

धकना० अ० क्रि० धड़वड़ाना, भकलवाना ।

धकधक० ना० स्त्री० धड़वड़, गप शीप ।

धकधकाना० स० क्रि० धकधक करना ।

धकरा० ना० पु० अज, छाग ।

धकरी० ना० स्त्री० अजा, छरी, छाग ।

धकला० ना० पु० धिलका, धाला ।

धकवाद्० ना० स्त्री० धकधक ।

धकवादी० ना० पु० धकधकिया ।

धकवास० ना० पु० धकवाद ।

धकवाहा० ना० पु० धकधकिया ।

धकवाही० ना० स्त्री० धकधकिया ।

धकसा० गु० समेट बन्धेनी ।

धकसूवा० ना० पु० सपडात, सपरास ।

धकलैला० गु० धकसा ।

धकायन० ना० स्त्री० धक विशेष ।

धकारा० ना० पु० अगुवा, पथिक, बड़ीही ।

धकारी० ना० स्त्री० टंडीलकीर ।

धनिया० ना० स्त्री० छुरी, चाकू ।

धकुला० ना० पु० बगला ।

धकनी० ना० स्त्री० नडुतदिनकी, व्यानी गीय ।

धकैतू० ना० पु० पलाश धधान दातकी जड़ ।

प्रसंग० ना० पु० प्रस्ताव, मेल, संगम, संयोग,
सम्बन्ध, चर्चा, साध, रव, वरस ।
प्रसन्न० यु० हर्षित, आनन्दित, दयालु, खुश ।
प्रसन्नता० ना० स्त्री० प्रसाद, हर्ष, आनन्द,
खुश ।
प्रसन्नित० यु० हर्षित, आनन्दित, दयालु, राक्षी ।
प्रसमित० यु० रहित, हीन, विह्वल, विन ।
प्रसव० ना० पु० गर्भ से बालक का निकलना,
जन्माया, पैदायश, उत्पत्ति ।
प्रसवत० कि० उपजते, जन्मते ।
प्रसव्य० शु० माया, प्रतिकूल उपजने के योग्य ।
प्रसाद० ना० पु० देवताओं की वा श्रुकी जठन,
छा, दान, भोजन ।
प्रसादी० ना० स्त्री० जो कुछ देवताओं की
ध्यायगया, भोजन, खाना ।
प्रसारण० ना० पु० फैलान, पसरान, गन्धपसा-
रण, पौधा ।
प्रसादक० ना० पु० आनी, बधुया का साग ।
प्रसारित० यु० विस्तारित, जो फैलायानया ।
प्रसिद्ध० शु० प्रकाशित, विख्यात, मशहूर ।
प्रसिद्धता० ना० स्त्री० प्रकृता, सुख्याति, जहूर ।
प्रसिद्धि० कि० दयालु हो, कृपाकरो ।
प्रसूत० ना० पु० जात, जन्मा, प्रसूति ।
प्रसूति० ना० स्त्री० रोग विशेष, पानीबहने का
रोग विशेष ।
प्रसूतिका० }
प्रसूती० } गु० स्त्री० जतनी जचा, माता ।
प्रसून० ना० पु० पुष्प, फूल, फल ।
प्रसूती० ना० स्त्री० प्रसूती ।
प्रस्तर० ना० पु० पत्थर, पाषाण ।
प्रस्तरमय० शु० पाषाणमय, पथरीला ।
प्रस्ताव० ना० पु० अघोर, चर्चा ।
प्रस्ताविक० शु० समयपर, सामयिक ।
प्रस्तुत० शु० कथित, सिद्ध, स्तुत किया गया ।
प्रस्तुत० ना० पु० परिमाण विशेष ।
प्रस्तुत० ना० पु० पत्थर ।

प्रस्थान० ना० पु० गमन, विदा, धावा करने,
हरिका गमन, पायतुराम, नकल मकल ।
प्रस्थापित० शु० भरित, भेजा गया ।
प्रस्थित० ना० स्त्री० कौर्त्ति, नेकनामी ।
प्रस्फुटित० यु० विकसित ।
प्रहर० ना० पु० पहर, याम, दिन वा रातक ।
चौथा भाग ।
प्रहरण० ना० पु० अघ, मारण ।
प्रहस्त० ना० पु० राक्षस विशेष ।
प्रहार० ना० पु० चोट, ठोकर, मार ।
प्रहारित० शु० मारागया वा माराहुआ ।
प्रहारी० यु० मारनेहारा ।
प्रहन० ना० पु० विनय, प्रणाम ।
प्रहेलिका० ना० स्त्री० पहिली, टष्टिकूट ।
प्रहृष्ट० शु० सन्तुष्ट ।
प्रहाद० ना० पु० भक्त विशेष ।
प्रहादिनी० ना० स्त्री० इंद्रपादी वृष्टी ।
प्रहालन० ना० पु० धोलाई ।
प्रहालित० शु० जो धोयागया ।
प्रज्ञा० ना० स्त्री० सरस्वती, निर्मलबुद्धि ।
प्रज्ञात्मा० शु० आत्मज्ञाता, आत्मप्यानी ।
प्राक्० अव्य० आगे, पहले, पूर्व ।
प्राकार० ना० पु० गढ़ ।
प्राकृतकवि० ना० पु० सरदासादि ।
प्राकृतभाषा० ना० स्त्री० संस्कृतभाषा विशेष ।
प्राकृत० यु० पुराना ।
प्रागल्भ्य० ना० पु० प्रगल्भता, डिडाई, शमड, श्र
प्राची० ना० स्त्री० पूर्व दिशा ।
प्राचीन० यु० पुराना, अगला ।
प्राचीना० ना० पु० पानी, धावला ।
प्राड्विवाक० ना० पु० राजाकी आज्ञासे विचार
करने के लिये स्थापित मुक्य, न्यायक ।
प्राग० ना० पु० श्वास्तार, मु, जीव, प्रियतम ।
प्राणदा० ना० स्त्री० जीवदाता ।
प्राणप्रतिष्ठा० ना० पु० मन्त्र से देवता में जीव
धारण करना ।

को कूटकर बनाते हैं निम्नकी रस्सी प्रादि, नून-
 ती है ।
 वक्रोदना० स० कि० ससोदना, गोचना ।
 वक्रम० ना० पु० रंगने का कूट ।
 वक्रल० ना० पु० वक्रला ।
 वक्रा० ना० पु० } मु० भौती, गोपी, वक्रवादी ।
 वक्रा० ना० स्त्री० }
 वक्षरी० ना० स्त्री० भौषडी, घर, मकान ।
 वखा० ना० पु० बसोरा, मोदा ।
 वखान० ना० पु० वर्णन, स्तुति ।
 वखानना० स० कि० वर्णनकरना, स्तुतिकरना,
 सराहना ।
 वखार० ना० पु० } खाता, भयङ्कर, अनाज
 वखारा० ना० स्त्री० } रसने की काठी वा
 काठी ।
 वखेडा० ना० पु० भगना, लडाई, रोला ।
 वखेडिया० गु० भगडाल, लडाका ।
 वखेरना० स० कि० भिरराना, खिखाना ।
 वखोर० ना० स्त्री० टोक, रोक, अपराधन ।
 वखोरना० स० कि० टोकना, मूकना ।
 वखौरा० ना० पु० कृत्वा, मोदा ।
 वग० ना० पु० बक, बगुला, वाग ।
 वगहूट० ना० पु० सरपट ।
 वगपाति० } ना० स्त्री० बगुला की पाति ।
 वगपाती० }
 वगह० ना० पु० ज्वरल-विशेष ।
 वगहूना० ना० पु० झर, डूबल ।
 वगहिया० गु० छली, ठग ।
 वगदना० अ० कि० किरना, विगाडना, भुलना,
 फेलना ।
 वगदाना० स० कि० किराना, विगाडना, भुलाना,
 फेलाना ।
 वगभेल० ना० पु० अति विकट, वाग मंत्राणु का
 मिलाजाना ।
 वगर० ना० पु० घर आगन, सहन ।

वगराना० स० कि० छिटकाना, फेलाना, विध-
 राना ।
 वगला० ना० पु० बक, बगुला, पक्षी विशेष ।
 वगलाभगत० गु० कपडा, धूर्त, धली ।
 वगहंस० ना० पु० हंस विशेष ।
 वगिया० ना० स्त्री० } कुलवाडी, छोटा उपवन,
 वगिया० ना० पु० } छोटावाण, फारसी शब्द है ।
 वगुला० ना० पु० बक, पक्षी विशेष ।
 वगुला० ना० पु० बयएडर, बीडरा ।
 वघनहा० ना० पु० सुगंधि विशेष, जड़ विशेष ।
 वघना० ना० पु० नाप के नख वा दात जो
 बालक को पहिनाते हैं ।
 वघरूर० ना० पु० बयएडर, वगुला, पवनप्रधि ।
 वघार० ना० पु० छोक ।
 वघारना० स० कि० छोकना ।
 वघी० ना० स्त्री० दांस, घुड़मवली ।
 वघेल० ना० पु० राजपूत, जाति विशेष ।
 वघेलखएड० ना० पु० देश विशेष, रीवा का
 प्रदेश ।
 वघेला० ना० पु० बपेल, नापका बच्चा, डामेल ।
 वंक्र० ना० पु० बांका ।
 वंक्राई० ना० स्त्री० फट, टेढ़ाई ।
 वंग० ना० पु० धानु विशेष, उल्लूखन, बंगाली
 देश ।
 वंगरी० ना० स्त्री० गहना विशेष ।
 वंगला० ना० पु० छपर वा खपरेल का घर
 विशेष, पान विशेष, बंगाले के अरुंर वा भाषा ।
 वंगसेन० ना० पु० अगस्त्य वृक्ष ।
 वंगा० ना० पु० बांसकी जड़ का पार, गुं उल्लूख
 नासमक, रामागणेशे यथा, तीरथ राजे श्रयाग मंदिर
 पुनि गंगा, रामप्रभुज कसेर, शठवंगा ।
 वंगाल० } ना० पु० देश विशेष जो गंगातीर
 वंगाला० } से पूर्व में है ।
 वंगालिन० ना० स्त्री० बंगाली की स्त्री ।
 वंगाली० गु० बंगाले का वासी ।

प्रमातामह० ना० पु० मातामह का पिता,
परनाना ।

प्रमातामही० ना० स्त्री० मातामहकी माता,
परनानी ।

प्रमाद० ना० पु० भूल, चूक, सफलत, आनी-
कानी ।

प्रमादी० गु० अचेत, अशोच, सुलङ्ग ।

प्रमीलिका० } ना० स्त्री० भीह, धुकुटी ।

प्रमीला० }

प्रमुख० ना० पु० निशांचर विशेष, प्रधान ।

प्रमुदित० गु० हर्षित, आनन्दित ।

प्रमेह० ना० पु० वीर्यका रोग, क्षीणरोग ।

प्रमोद० ना० पु० हर्ष, आनन्द ।

प्रमोदित० गु० हर्षित, आनन्दित, खुश ।

प्रयन्त० अर्थ० पस्यन्त ।

प्रयाग० ना० पु० तीर्थराज, इलाहनाद ।

प्रयाण० ना० पु० धावा, गमन ।

प्रयान्ति० क्रि० पाता है ।

प्रयुक्त० गु० मिलाहुआ, भरहुआ ।

प्रयोग० ना० पु० अनुष्ठान, दृष्टान्त, फल, उपाय,
तदवीर, प्रयोजन ।

प्रयोगी० गु० उपायी, चलानेवाला ।

प्रयोजक० ना० पु० प्रेरक, उठाने हारा ।

प्रयोजन० ना० पु० कारण, तात्पर्य, सरज,
मतलब ।

प्रयोजनी० गु० अवश्य, मतलबी, सरजी ।

प्रयोज्य० गु० मुख्य, ना० पु० सेवक, नौला ।

प्रलम्ब० ना० पु० प्रलम्बाघर लम्बा ।

प्रलम्बप्र० ना० पु० बलदेव जी ।

प्रलय० ना० पु० कल्पान्त, सर्वनाश, लूकाने का
प्रलयकाल० ना० पु० नाशका समय ।

प्रलाप० ना० पु० अज्ञानता समय का वाक्य नि-
र्गमवाक्य ।

प्रलेप० ना० पु० औपधि आदिका लेपन ।

प्रचञ्चना० ना० स्त्री० प्रतारण, ठगी, चोरी ।

प्रथर० ना० पु० संतान, वंश, गोत्र, गुण-
वान्, श्रेष्ठ, बहादुर ।

प्रवक्तक० ना० पु० प्रेरक, उठानेहारा ।

प्रवर्षण० ना० पु० पर्वतविशेष ।

प्रवाल० ना० पु० मृगा ।

प्रवास० ना० पु० विदेश, देशांतर, परदेश ।

प्रवासा० ना० स्त्री० मधुशक्ति ।

प्रवासी० गु० विदेशी, परदेशी ।

प्रवाह० ना० पु० नदीकी धारा, बहाव, धुं-
पवन ।

प्रविष्ट० गु० जो प्रवेश हुआ, घुसा, पैदा ।

प्रवीण० गु० निपुण, सुचतुर, स्थान ।

प्रवीणता० ना० स्त्री० निपुणता, चतुराई, स्थान-
पन ।

प्रवृत्तकृत्ता० गु० विश्वासी, मंजर, नजर ।

प्रवृत्ति० ना० स्त्री० कान, समाचार, धार-
इच्छा, किसी काम में लगना या लगाने
यल ।

प्रवेक० गु० प्रधात, सरदार ।

प्रवेणी० ना० स्त्री० त्रेणी, केशपाश ।

प्रवेश० ना० पु० पैठ, पहुंच, घुसान ।

प्रशक्त० गु० खान, लगाहुआ, थकित ।

प्रशंसक० गु० स्तुतिकर्ता, बड़ाई करनेहारा ।

प्रशंसनीय० गु० प्रशंसा के योग्य ।

प्रशंसा० ना० स्त्री० स्तुति, बड़ाई ।

प्रशमन० ना० पु० बध ।

प्रशस्त० गु० आनन्दी, शोभ्य, भला ।

प्रशस्ति० ना० स्त्री० स्तुति, बड़ाई, शोभ्य,
अच्छी ।

प्रश्न० ना० पु० जिज्ञासा, सवाल प्रश्नना ।

प्रश्नोत्तर० ना० पु० प्रश्न का उत्तर, सवाल
जवाब ।

प्रपद० ना० पु० मृग, हरिय ।

प्रष्टा० ना० पु० पूछनेहारा ।

प्रसक्त० अर्थ० सादा, गु० सनातन, आस-
ना ।

धर्मो नां स्त्रीं } भोरा जो बेल आदि का
वंगुं नां पुं } बनता है जिसकी बालक जन्म
चाते हैं ।

वचं नां स्त्रीं पौधे विशेष की जड़, वात
वचकानां गुं छोटा, नां पुं भवैया, भोग-
तिया ।

वचतं } नां स्त्रीं शव, वाकी, अश्विक ।
वचतीं }

वचनं नां पुं भाषा, बौली, वात, प्रण, बाद-
नियम, मर्थाद इकरार, वचन ।

वचनदत्तं गुं भोगतर, जो सगाई किया गया ।
वचनां अं किं रक्षापाना, शेषरहना ।

वचपनं नां पुं लड़कपन, बालकता, लड़काई ।
वचांसिं नां पुं वात ।

वचानां सं किं उद्धार वा रक्षा करना, छोड़ा-
ना, शेषरखना, छुपाना ।

वचावं नां पुं रक्षा, पक्ष ।
वक्षां नां पुं लड़का, दाट, गेद, वस्त्र ।

वच्छं नां पुं वस्त्र, लड़का, बखड़ा ।
वच्छनागं नां पुं विष विशेष ।

वच्छां }
वच्छां } नां पुं गार्थका वंचा ।
वच्छां }
वच्छां }

वच्छेडां नां पुं }
वच्छेडीं नां स्त्रीं } पोड़ी का वंचा ।
वच्छेरां नां पुं }
वच्छेरीं नां स्त्रीं }

वज्रतां अं किं शब्दरहना, लड़ना ।
वजनीं नां स्त्रीं लड़की, जो वस्तु बने ।

वजंत्रीं नां पुं समाजी, बाजोवजानेहारा ।
वज्रवजानां अं किं खबलना ।

वज्रवहूं नां पुं फल विशेष ।
वज्ररंगं नां पुं हनुमान्जी का एकनाम ।

वजरंगीं नां पुं तिलक विशेष ।
वजरां नां पुं नाव विशेष ।

वजरीं नां स्त्रीं जो कंकर पत्थरदि छोटे
गचमें ढाले जाते हैं ।

वजाकं नां पुं सपे विशेष ।
वजानां सं किं शब्द वा स्वर निकालना ।

वजालानां सं किं पूराकरना, पार करना,
निवाहकरना, मानना ।

वंजरं नां पुं वह धरती जो जाती बाई नहीं
गई है ।

वभ्रतां अं किं फसना, पकड़ाना ।
वभ्रानां } सं किं पकड़वाना, फंसाना ।
वभ्रावनां }

वटं नां पुं बड़गद, पण्डित, ब्राह्मण, भाषी,
एक कोई ।

वटर्षं नां स्त्रीं वटपत्ती, बादला बनाने की
विद्या विशेष ।

वटनां सं किं बलदेना, एठनदेना, रस्ती
बनाने का काम; अं किं विभागित होगा,
नां पुं पत्थर जिसेसे चटनीयादि बांटते हैं,
यन्त्र जिसेसे रस्ती को बलदेते हैं ।

वटपारं नां पुं टंग, हत्यारा, लुटेरा, राहजन ।
वटपारीं नां स्त्रीं टंगई, डकती, राहमारना

वटलोईं } नां स्त्रीं पात्र विशेष जिसमें
वटलोहीं } ढाल आदि पकते हैं ।

वटवारं नां पुं करलेनहारा, भाग, हिस्सा ।
वटवारां नां पुं बांट, भाग, अंश, हिस्सा ।

वटाईं नां स्त्रीं बांट रस्ती आदि बटने की
काम वा पैसा ।

वटाऊं नां पुं बटोही, पथिक, मुसाफिर ।
वटियां नां स्त्रीं छोटापानी, पगदरडी, पत्थर
का छोटाबांट ।

वटुं नां पुं बलचारी, बट ।
वटुकं नां पुं लैरव विशेष ।

वटुवां नां पुं पैली, बटोई ।

घटुरना० अ० कि० इकडाहोना ।
 घटोर० ना० स्त्री० पत्नी विशेष ।
 घटोर० ना० पु० भीड़, समेट, जमाव ।
 घटोरना० स० कि० इकडा करना, समेटना ।
 घटोही० ना० पु० पथिक, राही, मुसाफिर ।
 घट्टा० ना० पु० सोंयापन, बांटेकायन्त्र, प्याला ।
 घट्टी० ना० स्त्री० टेली, बरी ।
 घट्टा० ना० पु० बरगद, बृहत् विशेष, बड़ा ।
 घटना० अ० कि० घटना ।
 घड़यड़० ना० स्त्री० बकबक ।
 घड़वड़ाना० स० कि० कुड़कुड़ाना, बकबककरना ।
 घड़वड़िया० ना० पु० बका बकबकी ।
 घड़वागिन० ना० पु० } अग्नि विशेष जो समुद्रमें
 घड़वानल० ना० पु० } मसती है ।
 घड़हल० ना० पु० बृहत् विशेष वा उरुका फल ।
 घड़ा० शु० महा, लम्बा, ऊंचा, ना० पु० उरुका
 पकवान विशेष अर्थात् बरा ।
 घड़ाई० ना० स्त्री०
 घड़ापन० ना० पु० } महत्त्व, प्रधानता, प्रमंढ ।
 घड़ापा० ना० पु० }
 घड़ादिन० ना० पु० जो दिसम्बरकी २५ तारीख
 को होता है ।
 घड़ी० शु० स्त्री० महाप्रधान, ऊंची, ना० स्त्री० जो
 चरुद प्रीतिके बनती है सुगौरी ।
 घड़ीखा० } ना० स्त्री० इन्डु विशेष, ऊँल विशेष ।
 घड़ीखा० }
 घड़ई० ना० पु० खाती, सुतार, जाति विशेष ।
 घड़ता० ना० पु० } अधिकाई, बढ़ाव ।
 घड़ती० ना० स्त्री० }
 घड़हन० ना० स्त्री० घड़ई की खा ।
 घड़ना० अ० कि० अधिकहोना, आगे जाना, उ-
 गना, बढ़ना ।
 घड़नी० ना० स्त्री० भाई, बुहारी, अगाड़ी ।
 घड़ाना० स० कि० अधिकाना, लम्बाना, चलाना,
 घुमाना, चढ़ाना, दुकान उठाना ।
 घड़ाखाना० स० कि० आगेखाना, दुकान उठा-
 खाना ।

घड़ाघ० ना० शु० चढ़ाव, बढ़ती, अधिकता ।
 घड़िया० गु० महीनी, बहुमुख्य, कीमती ।
 घड़ैला० ना० पु० धनेलाशुकर ।
 घड़ोतर० ना० पु०
 घड़ोतरा० ना० पु० } व्याज, खोभ, सुद ।
 घड़ोतरी० ना० स्त्री० }
 घणियां० ना० पु० बणिक, वैश्यजाति विशेष ।
 वत० ना० पु० कीट विशेष ना० स्त्री० बात वा
 बातका संक्षेप ।
 वतकहा० शु० बकी, चानूनी ।
 वतकहाय० ना० पु० } बड़बक, बातचीत,
 वतकही० ना० स्त्री० } तकरार ।
 वतकड़० शु० बकी ।
 वतराना० स० कि० बातचीत करना ।
 वतखाना० स० कि० बातचीत करना, बताना,
 पढ़ाना, समझाना, सुझाना ।
 वता० ना० पु० तपाव, लम्बा चौड़ा पत्थर विशेष
 जिसपर चूण पीसते हैं ।
 वताना० स० कि० दिखलाना, समझाना, सिख-
 लाना ना० पु० प्रगड़ी के नीचे का फेंदा ।
 वताली० ना० स्त्री० मांझी ।
 वतास० ना० पु० धातु, पवन ।
 वताला० ना० पु० बुझा, बुखुली, मिठाई
 विशेष ।
 वतियाना० स० कि० बातचीत करना, बोलना,
 छेते छेते फल लगाना ।
 वतनी० शु० गप्पी ।
 वतारा० ना० स्त्री० कुड़िया विशेष ।
 वत्ती० ना० स्त्री० दीपक में जलाने के लिये सूठी
 हुई रुई, मोम आदिकी, कपड़ेकी जो पवित्र भरते
 हैं, योग कियों में साधन विशेष ।
 वत्तीस० गु० तीस घोरदो, १२ ।
 वत्तीसा० ना० पु० पाँच आदि के हेतु साधन
 विशेष ।

वावडी० ना० पु० बडा कूप ।
 वावतासना० स्त्री० देवप्रस्त, दुर्गति, चापदा ।
 वावन० शु० पंचास और दो, ५२ द्योय, ना० पु०
 श्रीविष्णुनासायण का पांचवां अवतार ।
 वावर० शु० बबला, अगाही, बकवादी, अधर्मी ।
 वावरि० ना० री० मृगयन्थनी, वाशुरि, शु०
 सिद्धि ।
 वावला० शु० विविध, सिद्धी ।
 वावली० ना० री० बडाकूप, धोवा, छल-
 सिद्धि ।
 वावसडना० अ० कि० पादना, शुद्धा से पवन
 का निकलना ।
 वावशूल० ना० पु० वापुशूल, पेटमें रोगविशेष ।
 वास० ना० पु० बसने का स्थान, ठांव, ना० स्त्री०
 गन्धि, महक ।
 वासन० ना० पु० बरतन, पात्र ।
 वासना० स० कि० सांधाना, महकाना, ना० स्त्री०
 अभिलाषा, इच्छा, सुगन्धि ।
 वासन्ती० ना० स्त्री० श्रौणभिविशेष ।
 वासा० ना० पु० चूरी प्रतिक, रहनेकास्थान ।
 वासिद० शु० सुगन्धित कपड़ पहनेहुये ।
 वासी० शु० भोजनादि-जो कलकापका है, गह-
 कांठा, वासयुत ।
 वाह० ना० पु० गाडा ।
 वाह० ना० पु० बहनेहारा ।
 वाहन० ना० पु० वाहन, सवारी ।
 वाहना० स० कि० अक्षचलाना वा फेकना, भेत
 का गमित वा प्रसमित होना ।
 वाहर० अल्प० बहिः, परदेरा ।
 वाहिनी० ना० स्त्री० सना ।
 वाहु० ना० स्त्री० भुजा, बांह ।
 वाहुदा० ना० स्त्री० नदीविशेष जो हिमालय से
 निकलती है ।
 वाहुवेना० अ० कि० हाथ पकड़ना ।

वाहुमुख० ना० पु० हाथ ।
 वाहुयुद्ध० ना० पु० मल्लयुद्ध, कुश्ती ।
 वाहुलेय० ना० पु० स्वाभिकार्तिक ।
 वाहुल्य० ना० पु० } आधिक्य, अधिकारी
 वाहुल्यता० ना० स्त्री० } बहुतायत ।
 विधारी० ना० स्त्री० बयाल, सायबालका भोजन ।
 विजन० ना० पु० व्यंजन ।
 विक० ना० पु० हुण्डार, भेदिया ।
 विकट० शु० कठिन, भयानक, भयंकर, देडा,
 प्रबल ।
 विकना० अ० कि० खपना, विकनाना ।
 विकरार० } शु० भयानक, मोडा, भयंकर,
 विकराल० } देडा, डरोना, कठिन ।
 विकल० शु० व्याकुल, निरियर, पावडा ।
 विकलता० स्त्री० } व्याकुलता, घबडाहट, बेच-
 विकलत्व० पु० } नी, निरियरता ।
 विकलित० शु० व्याकुल; पावडा, बेचन ।
 विकल्प० ना० पु० विचार, मन्थना, लक-
 विकसन० ना० पु० प्रकार, हर्ष, फूलन ।
 विकसेना० अ० कि० सिलना, फूलना, इषित
 होना ।
 विकसित० शु० प्रकुलित, इषित, फूलाहुया ।
 विकसोभण्डा० ना० पु० मंजीठ ।
 विक्राऊ० शु० विक्रोहारा ।
 विक्राना० अ० कि० निकनाना, सु० कि० बच-
 नाना ।
 विक्राव० ना० स्त्री० विक्री ।
 विकास० ना० पु० प्रकार; कलाव, दिसकामि,
 हर्ष, आनन्द ।
 विक्री० ना० स्त्री० खपन, फटना, भाव, बचनो
 चर्चित, कठिन ।
 विस्तरना० अ० कि० विस्तरना, फूलना, घोषित
 होना ।
 विगडना० अ० कि० गारा वा भ्रष्ट होना, कमिनी,

घत्तीली० ना० स्त्री०, सवदांत; यु० जिसमें
 वत्तीस वस्तुका समुदाय होना है ।
 घत्ता० ना० पु० प्रायतः विशेषण ।
 घयुश्रा० ना० पु० } शोक विशेष भाजी निमित्त
 यथुर्० ना० स्त्री० } ११ वा १२ वा १३ वा १४ वा
 घद० ना० स्त्री० रोग विशेष, नाथो ।
 घदना० स० कि० दाबलमाना, मानना, अंगीकार,
 घदर० ना० पु० सेव मेवा एक सहस्रमुद्राकी थैली
 अर्थात् तोडा, यह शब्द अरबी में शुद्धादर है
 परन्तु अयोध्या-काण्ड में यों लिखा है, यथा,
 विश्व बदर जट-सुन्दर हाथा ।
 घदल० ना० पु० मेघ, प्रतीकार; अन्व० सुतीत ।
 घदलना० स० कि० पलटना, पीघना ।
 घदला० ना० पु० सती, तोडाव, पलायन,
 घदलाई० ना० स्त्री० तोडाई, पलायन,
 घदलाना० स० कि० फेरबालना, तोड़ना
 घदली० ना० स्त्री० अंधरा, छाटा मेघ ।
 घदा० यु० जो प्रारब्ध में लिखित है ।
 घदावदी० अन्व० हिसका समेत । लडाईपसि
 वदि० } ना० स्त्री० कृष्णपत्र, हेतु, लिये ।
 वदी० }
 घदल० ना० पु० मेघ ।
 घद० यु० जो बांधा गया ।
 घदी० ना० स्त्री० गले में पहननेकी वस्तु विशेष,
 तसमा चमड़े का ।
 घदीवन० ना० पु० तदीनाथ का वस्तु ।
 घघ० ना० पु० इत्यादि हिता इतन् ।
 घघन० ना० पु० इतन्, इतन्ना ।
 घघना० स० कि० मारडालना, इत्यादि करना,
 ना० पु० पानी पीने का पात्रविशेष ।

वधवंश० ना० पु० शंशका वधो
 वधस्थान० यु० जिस स्थान में वध किया गया ।
 वधाई० ना० स्त्री० जयकार माननी, शान्ति,
 वधावा० ना० पु० मन्त्रलाचार जो अद्वैत्यादि
 को लडाके के घर फूटी लेजाती है ।
 वधिक० यु० पु० सटकी, हत्यारी, फलियाती
 वहेलिया, कसाई ।
 वधियां० ना० स्त्री० पशुश्रा में जो अयदीन
 हुआ ।
 वधिर० यु० बहिरा ।
 वधू० ना० स्त्री० वह, पुत्रकी स्त्री ।
 वधूटी० }
 वध्य० यु० जो वध करने की योग्य है ।
 वन० ना० पु० वने, पानी ।
 वनज० ना० पु० वणिज, च्योपार, कमल ।
 वनजारा० ना० पु० अन्धका च्योपारी; जो बैल
 पर अन्न लाकर लेजाता है ।
 वनजारी० ना० स्त्री० वनजारा की स्त्री, रतम्
 विशेष, अंधसीमा जो अन्न
 वनठन० यु० शृङ्गारयुत, संवारी, सजधज सेना
 वनेत्त० ना० पु० गोदसे बनी हुई वस्तु विशेष जो
 शोभाके लिये टोपी आदि में लगाते हैं ।
 वनेतराई० ना० स्त्री० पौधांविशेष ।
 वनना० अ० कि० रूपपकड़ना, तियार देना,
 वनपडना० अ० कि० वनना, उधारना
 वनप्रिय० ना० स्त्री० कोयल ।
 वनमञ्जरी० ना० स्त्री० सर्गाल ।
 वनमाल० } ना० स्त्री० माला जो बहुपुष्पा से
 वनमाला० } युधि और लम्बी पावे तक
 होती है ।
 वनमालिका० ना० स्त्री० नराहीकन्द, वन-
 माला ।
 वनमाली० ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्रका एकनाम ।
 वनसु० ना० पु० इलहा ।
 वनरी० ना० स्त्री० इलह्व ।

विगसन० ना० पु० विकसन, विलना ।
 विगसना० अ० क्रि० विकसना, विलना,
 पूलना ।
 विगहा० ना० पु० बीघा ।
 विगाह० ना० पु० भंगता, तोड़, लड़ाई
 भंगड़ा ।
 विगाहना० स० क्रि० गसाना, टोटा देना, मित्रों
 में लड़ाई कराना ।
 विगोना० स० क्रि० भुलाना, छुपाना, भ्रष्टकरना ।
 विघन० ना० पु० विघ्न ।
 विच० अर्थ० बीच ।
 विचकना० अ० क्रि० निराशहोना, भागजाना,
 अंगीकार करके बदलजाना ।
 विचकाना० स० क्रि० निराशकरना न मानना,
 वचन तोड़ना ।
 विचल० शु० चलायमान, मचल ।
 विचलना० अ० क्रि० फिरना, घूमना, चलना,
 विललना ।
 विचली० शु० भागी, घुमी, घबड़ानी ।
 विचवई० ना० पु० विचवानी, जामिन ।
 विचार० ना० पु० विचार, सोच, ब्रूम, ध्यान ।
 विचारक० ना० पु० विचारी, सोची, ब्रूमने
 हारा, न्यायक ।
 विचारना० स० क्रि० सोचना, ध्यानकरना,
 याचना, समझना ।
 विचारित० शु० सोचाहुआ, विचाराहुआ, ब्रूमना,
 समझा ।
 विचारी० शु० विचारी, विचारक ।
 विचाली० ना० स्त्री० पोआरवाल ।
 विचौलिया० ना० पु० मध्यस्थ, तिसरेत ।
 विच्छु० ना० पु० वृश्चिक, जन्तुविशेष ।
 विछना० अ० क्रि० फैलना, पसरना ।
 विछरना० अ० क्रि० गिरहोना, छुदाहोना ।
 विछराहट० ना० स्त्री० भिन्नता ।
 विछना० अ० क्रि० विसलना, फिसलना,
 विछलना ।
 विच मिचहोना, विलगना ।

विछवाना० स० क्रि० फैलाना, पसराना ।
 विछाना० स० क्रि० फैलाना, पसराना ।
 विछुआ० ना० पु० कटारविशेष, पैरोंकापूषण ।
 विछुड़ना० अ० क्रि० विछलना ।
 विछुरन० ना० पु० वियोग, छुदायगी ।
 विछुरना० अ० क्रि० वियोगहोना, छुदाहोना ।
 विछोना० स० क्रि० भिन्नकरना, विलगना ।
 विछोह० } ना० पु० वियोग, छुदायगी, विरह ।
 विछोहा० }
 विछौना० ना० पु० विस्तार, सेज ।
 विजना० ना० पु० पंता, बेना ।
 विजली० ना० स्त्री० विद्युत्, चंचला, वज्र ।
 विज्ञान० शु० अज्ञान, मूर्ख, जो कुछ नहीं
 जानता ।
 विज्ञायठ० ना० पु० बांहका गहनाविशेष ।
 विजार० ना० पु० सांड बेल ।
 विजाला० शु० बीज संयुक्त ।
 विजया० ना० स्त्री० भंग, वृद्धी ।
 विभक्तना० अ० क्रि० चौकना, डरना, भाग
 जाना, बदलजाना ।
 विभक्ता० शु० चौका, चौकिल, भागा, डरभिया ।
 विभक्ताना० स० क्रि० चौकाना, डरवाना, भे-
 गाना, न मानना, बदलना ।
 विट० ना० पु० वटि, विद्या ।
 विटचर० ना० पु० शकर, घरेला ।
 विटना० अ० क्रि० विधुरना, छिटकना, गिर-
 जाना ।
 विटप० ना० पु० टूट का नया कैल, पखव,
 पसरव, युद्धा ।
 विटाना० स० क्रि० छिटकाना, विथराना,
 गिराना ।
 विठाना० स० क्रि० बैठाना ।
 विडकन० ना० पु० बट्टेरादि पत्ती, रामचन्द्रि-
 कार्या यथा, विडकनघन पूरे भक्ति के बाज
 जीवे ।
 विडरना० अ० क्रि० भागजाना डरजाना ।

बनधारि० ना० स्त्री० किंती ब्रह्म का बनवानेका
 पैसा।
 बनवाना० स० कि० रचाना, तय्यार कराना,
 मुंठवाना।
 बनवारी० ना० पुं० श्रीकृष्णचन्द्र का नाम।
 बनविलासिनी० ना० स्त्री० शस्ताहोली।
 बनवैया० ना० पुं० बननिहार, कर्ता।
 बनसी० ना० स्त्री० बांसली, गुस्ली, मधली पक-
 डनेकी कटिया बंधिरा।
 बना० ना० पुं० दुलहा, गुं० बनायाहुआ, बना-
 मया।
 बनात० ना० स्त्री० जनका वरन विशेष।
 बनाती० गुं० जो बनात से बनाया गया।
 बनाती० स० कि० पकाना, रचना, कमाना,
 रचाना, उठाना, सुधारना, गांठना, धारना,
 साठना।
 बनायुज० ना० पुं० घोडा, शय्य।
 बनाव० ना० पुं० रचाव, ध्यार, मिलाप।
 बनावट० ना० स्त्री० सांठगांठ, डोल, बूढाना,
 उगति, खलावा, बांधन।
 बनिज० ना० पुं० बनिज, व्यापार, लेनदेन।
 बनिज० ना० स्त्री० बनियाकी स्त्री।
 बनिया० ना० पुं० व्यापारी, बधिक।
 बनियायिज० ना० स्त्री० बनिज्।
 बनी० ना० स्त्री० दुलहन।
 बनेटी० ना० स्त्री० छोटी लकड़ी जिसके दोनों
 और बची लगाकर फिरते हैं।
 बनेला० गुं० बनेला।
 बनेनी० ना० स्त्री० बनिज्।
 बनेला० गुं० जंगली, बन्ध।
 बनौटिया० ना० स्त्री० कपासी रंग।
 बनौटी० ना० स्त्री० कपास, कपासकी लकड़ी।
 बनौटीरंग० ना० पुं० कपासी रंग।
 बन्दनवार० ना० पुं० तिहरा मौर, हार,
 बन्दनवारि० ना० स्त्री० गजरा।

यन्दर० ना० पुं० कपि, जानार या जहां जहाज
 लगते हैं।
 यन्दरिया० } ना० स्त्री० यन्दर की स्त्री।
 यन्दरी० }
 यन्दरी० ना० स्त्री० धीटविरोप, संहविरोप
 तुषविरोप।
 यन्दी० ना० स्त्री० बन्धन।
 यन्दी० ना० पुं० बंधुआ, कैदी, ना० स्त्री० मापे
 परका गहना।
 यन्दीगृह० ना० पुं० बंधुआ का निवासस्थान,
 कैदखाना, तिहलखाना।
 यन्दीजन० ना० पुं० बंधुआ, कैदी।
 यन्दीशाला० ना० स्त्री० यन्दीगृह, कैदखाना।
 यन्ध० ना० पुं० गांठ, पट्टी, गुं० जो बांधाया।
 यन्धक० ना० पुं० गहना, गिरवी, धरोहर।
 यन्धन० ना० पुं० गांठ, बांधे, अटकवा, पट्टी, रुंद।
 यन्धनी० ना० स्त्री० मालती, बांधनेकी वस्तु।
 यन्धान० ना० पुं० बांधनीविकी, मुकुरिह जो
 रूप में चमड़े की लंगाते हैं।
 यन्धानी० ना० पुं० नीचजाति, जो संवर्यों
 लडा उठाते हैं जो बन्धान पाते हैं।
 यन्धु० ना० पुं० भाई, नितंब, मित्रे।
 यन्धुजीव० ना० पुं० दुपहारी फूलका वृक्ष।
 यंधुती० ना० स्त्री० मित्रता, मित्री वा भाईया
 की अधिकता।
 यन्धुच० ना० पुं० कैदी, यन्दी।
 यन्ध्या० ना० स्त्री० बांफ अनेकली।
 यन्त्रा० यन्त्र कि० रचना, संवरनी, मिलाना
 सभाना, शिना, सुधरनी, चिहनी, ना० पुं०
 दुलहा।
 यन्त्र्य० गुं० यन्त्राती।
 यन्त्रा० ना० पुं० यन्त्राती।
 यन्त्राई० ना० स्त्री० यन्त्रा, यन्त्राई।
 यन्त्राई० ना० स्त्री० यन्त्रा, यन्त्राई।
 यन्त्राई० ना० स्त्री० यन्त्रा, यन्त्राई।
 यन्त्राई० ना० स्त्री० यन्त्रा, यन्त्राई।
 यन्त्राई० ना० स्त्री० यन्त्रा, यन्त्राई।

विडार० ना० पु० बनविलास, भगौडा ।
 विडारना० स० कि० भगाना, विचलाना,
 हाना ।
 विडारी० शु० भगौड ।
 विडौजा० ना० पु० इन्द्र ।
 विडू० ना० स्त्री० कमाई, फायदा उठायो, वि-
 सनीदी ।
 विस्त० ना० पु० धन, द्रव्य, वस्तु, सामर्थ्य ।
 वितना० अ० कि० व्यतीत होना, शु० छोट
 ना० पु० वितरित, बालिरत ।
 विततानी० शु० घवरांनी, विलखानी ।
 वितरना० स० कि० देबालना, दान करना ।
 विताना० स० कि० गैवाना, काटना, व्यतीत
 करना ।
 वितीत० ना० पु० व्यतीत ।
 वित्त० ना० पु० वित्त, धन, द्रव्य ।
 वित्ता० ना० पु० वितरित, बालिरत ।
 वित्तिया० ना० पु० बीना, वाद्य, ठुमका ।
 विथरना० अ० कि० छिटकना, विलरना ।
 विथराना० स० कि० लिखडाना, छिटकाना,
 छिटकाना, विलराना ।
 विथा० ना० स्त्री० पीडा, आपदा ।
 विथुरना० अ० कि० विथरना, पसरना ।
 विथुरा० ना० पु० दुःख, पीडा शु० छिटकाहुआ ।
 विदरना० अ० कि० फटना, चिना ।
 विदा० ना० स्त्री० फलसत करना ।
 विदारन० ना० पु० फाड़ना, तोड़ना ।
 विदारना० स० कि० फाड़ना, चीरना ।
 विध० ना० स्त्री० विधि ।
 विधना० ना० पु० विधाता, ब्रह्मा ।
 विधावट० ना० स्त्री० साल, छेद ।
 विन० अव्य० विना ।
 विनती० ना० स्त्री० विनय, प्रार्थना, बड़ाई
 करना ।
 विनना० अ० कि० विनजाना ।
 विनचार० ना० स्त्री० विनार ।

विनसना० अ० कि० नशाना, विगड़ना ।
 विना० अव्य० रहित, विन ।
 विनाई० ना० स्त्री० विनने का काम या पैसा ।
 विनाना० स० कि० विनवाना, उठाना ।
 विनावट० ना० स्त्री० विनने का काम ।
 विनु० अव्य० रहित, छौड़ि ।
 विनौना० स० कि० विनती करना, अरचना,
 पूजना, भजना, छांटना ।
 विनौला० ना० पु० रुईका बीज ।
 विनौली० ना० स्त्री० छोटाघोला जो आकारा
 मार्ग से बरसता है ।
 विन्द० } ना० स्त्री० विन्दु ।
 विन्दी० }
 विन्धना० स० कि० बसना, डंकियाना, अ० कि०
 छिदना, फटना ।
 विन्ना० स० कि० बुद्धा, जाली, निकालना,
 चुनना ।
 विपत० } ना० स्त्री० विपत्ति, आकत ।
 विपता० }
 विपति० }
 विफनी० अ० कि० चिड़ना, दुःखित होना ।
 मगरा, हठीला वा टोटहोना ।
 विया० ना० पु० बीज ।
 वियारी० } ना० स्त्री० सायदाल का भोजन,
 वियालू० } परचन का भोजन ।
 वियाह० ना० पु० विवाह ।
 विरकट० ना० पु० योगी विशेष, शु० सितका
 मन उच्च टित है ।
 विरचन० ना० पु० बरका आटा ।
 विरद० ना० पु० यरा, स्तुति, प्रारथाना, और
 हथियार ।
 विरदावलि० ना० स्त्री० यरा, स्तुति ।
 विरमना० अ० कि० रहना, मिलनकरना ।
 विरमाना० स० कि० ठहराना, अटकाना अपने
 बशमें करना ।
 विरवा० ना० पु० बुरे छोटा बूटा, पाषा ।

यफारा० ना० पु० वाफ, भाफ ।
 यवुधा० ना० पु० लडका, बालक ।
 यवूल० ना० पु० वृक्ष विशेष, कीकड़ ।
 यम० ना० स्त्री० सोता, पुसी ।
 यमकना० अ० कि० उभरना, सृजना, फूलना ।
 यम्बई० ना० पु० देश वा नगर विशेष ।
 यम्बा० ना० पु० कूप विशेष, सोता, यंत्र विशेष ।

यया० ना० पु० पचीविशेष, निरस्ती ।
 ययार० ना० पु० वायु, पवन, हवा ।
 ययाला० ना० पु० रोशनदान, धुधुका, शु० जिस वस्तु में बार्ई रहती है ।
 ययालीस० शु० चालीस और दो, ४२ ।
 ययासी० शु० अस्ती और दो, ८२ ।
 यर० ना० पु० आशीर्वाद, पदार्थ, डूबहा, धान की चौड़ाई, कांई वृक्ष वरदान, ना० स्त्री० निनी, शु० श्रेष्ठ, सुन्दर, अभिराम ।

यर्ई० ना० पु० तम्बोली ।
 यरखना० अ० कि० यरसना ।

यरगत० } ना० पु० वट, वृक्ष विशेष ।
 यरगद० }

यरजना० स० कि० निषेध करना, हटकना, बारना, रोकना ।

यरत्त० ना० पु० अत वर्त, चमोटी, चुमड़े की रस्ती जिस से पुलका पानी खींचते हैं, शु० जलत, धधकत ।

यरतना० स० कि० शोचना, विचारना ।

यरतनी० ना० स्त्री० यसरौटी, वर्षमाला ।

यरदैत० ना० पु० भाट, दसोधी, नानावाले ।

यरध० ना० पु० बैल, वृषभ ।

यरधना० स० कि० गौ और बैलकामसेगहना ।

यरधोना० स० कि० गौ का बैल से प्रसंग कराना ।

यरन० ना० पु० वर्णन, अव्यय तो भी, किंवा, बन्धि ।

यरनन० ना० पु० वर्णन ।

यरना० ना० पु० वृक्ष विशेष, स० कि० विषम करना अ० कि० जलना, धधकना, निनी

यरी० ना० स्त्री० पपनी ।

यरवस्त० ना० पु० मूल बलात्कार, प्रवृत्ता ।

यरव० ना० पु० पक्षी विशेष ।

यरवट० ना० पु० रोग विशेष, सर्प विशेष, वरवस, वरियाई ।

यरवा० ना० पु० छन्द विशेष, कांटा मछलीमाने का ना० स्त्री० रागिनीविशेष जिससे हरिय और सर्प मोहता है ।

यरस० ना० पु० वर्ष, मोरक वस्तु विशेष जो अक्षीम से बनती है ।

यरसगाठ० ना० स्त्री० जन्मदिन, जन्मदिन में संवेदा गांठ बांधने का व्यवहार ।

यरसना० अ० कि० पानी पड़ना ।

यरसवान० शु० वर्षी, संवती, वार्षिक ।

यरसीड़ी० ना० स्त्री० वर्ष का भाड़ा वा कद वार्षिकी ।

यरहा० ना० पु० खेत जिसमें गौचराते हैं रस्ता चमोटी, खेतमें पानी लेजाने का मार्ग, पुत्रजन्म के मारहये दिन का व्यवहार ।

यरा० ना० पु० बड़ा, भोजन में व्यंजन विशेष, स्त्री० वाकूची, शु० अक्षी स्त्री ।

यराक० ना० पु० यराक, देवता ।

यरात० ना० स्त्री० दूबहा और उसके साथी ।

यराती० ना० पु० विवाह के श्रोतहारी ।

यराना० अ० कि० परे रहना, अलग होना, आचार करना तजना, छोड़ना ।

यराव० ना० पु० संयम, अलगवाप ।
 यरियाई० ना० स्त्री० बड़ाई, उमंग, यरस ।
 यरियाय० ना० पु० यरट, जबरदस्ती ।
 यरियार० शु० मूलवाद, प्रवस, तेजस्वी ।
 यरियारा० ना० पु० पीषा विशेष, जेरा ।
 यरी० ना० स्त्री० फली, बड़ी शीपि की गंली, बड़ी, निवाही ।

विरह० ना० पु० वियोग ।

विरहा० ना० पु० वियोग धोविशों का गीत-
विशेष ।

विरहित० शु० वियोगित ।

विरहिनी० गु० विरहिनी, वियोगिनी ।

विरहिया० ना० स्त्री० विरहिनी ।

विरही० गु० जो पुरुष अपनी सज्जी से भिन्न है ।

विराजना० अ० कि० प्रकाशित या प्रचलित
होना, स्थायी होके सुख भोग करना, उन्नति
होना, वैदना ।

विराट्० ना० पु० जगद्रूप, ईश्वर, जगत्, राजा-
पिराज, देशविशेष, राजाविशेष ।

विराना० शु० पराया, स० कि० विद्वाना,
सेताना ।

विराम० गु० व्याकुल, स्थिर, मांदा ।

विरिया० ना० स्त्री० समय, जून ।

विर्नी० ना० स्त्री० वर ।

विल० ना० स्त्री० सर्पादि जन्तुका घरे सा छिद्र
वा भट्टा वा भार ।

विकलना० अ० कि० सिसकना, कूकना, फिरी,
वस्तुपर जी लगना ।

विलज्ज० ना० पु० दुःख, अप्रसन्नता ।

विलज्जना० स० कि० देखना, निरेखना, विलो-
कना, अ० कि० सिसकना, अप्रसन्न होना ।

विलम्बाय० } अ० कि० अप्रसन्नहोय, दुःख
विलम्बि० } भावना ।

विलग० गु० अलग, भिन्न, ना० स्त्री० भिन्नता,
फूट, र्था, बुराई ।

विलगना० अ० कि० अलग २ होना, फटना,
फूटना, जमना, दुखना ।

विलगाना० स० कि० भिन्न २ करना, फाड़ना,
विलोडना ।

विलगाव० ना० पु० भिन्नता, विद्वराहट, असहता ।

विलगाही० अ० कि० अलग होना ।

विलगना० स० कि० लदायकरना, लड़ना ।

विलनी० ना० स्त्री० अन्नहार ।

विलपना० अ० कि० रोना, विलापकरना ।

विलपाना० स० कि० रोलाना, विलापकरना ।

विलयन्द० ना० पु० निपटारा, निस्तोप ।

विलविलाना० अ० कि० व्याकुलहोना, पीड़ा से
दुःखितहोना, हायहायकरना, तड़पना ।

विलम्ब० ना० पु० देरी, ढील, ढाल, म्दोस,
शिथिलता ।

विलम्बना० अ० कि० ढीलकरना, अटकना ।

विलम्भ० ना० पु० विलम्ब ।

विलम्भना० अ० कि० विलम्बना ।

विललाना० अ० कि० विलविलाना ।

विलसना० } अ० कि० भोगना, वृषहोना,
आनन्दित होना ।

विलस्त० ना० पु० वित्त, विलस्त ।

विलहरा० ना० पु० पान रखने का पात्र ।

विलहरी० ना० स्त्री० पत्नी, छोटा विलहर ।

विलाई० ना० स्त्री० बिछी, कूदककड़ी, आद-
रगइने की लोहे की बस्तु ।

विलाईकंद० ना० पु० औषधिविशेष ।

विलाना० अ० कि० अलोपना, भिटना, भटकना,
स० कि० अलोप कराना, उड़ाना, वांटना,
खाना ।

विलाप० ना० पु० विलाप, हाहाकार ।

विलापना० अ० कि० राकना, कूकना, हाहाकार
करना ।

विलार० ना० पु० गाजार, पशुविशेष, विलोय ।

विलाव० ना० पु० विलार ।

विलावल० ना० पु० रागिनी विशेष ।

विलास० ना० पु० विलास आनन्द ।

विलासी० शु० विलासी ।

विलास० ना० पु० विलास, हँस, वृषि, क्रीडा,
सुखभोग ।

विलासी० शु० सुखभोगी, आनन्दी, सय ।

विलोकना० स० कि० देखना, निरेखना ।

बरीस० } शु० वर्ष, काव्य, यथा, कृष्णारथा
 बरीसा० } पांच बरीसा, जब, राधिक, सुषम
 दिन दीता।
 बह० अन्व्य, लाहे, अगर्षि
 बरेठन० ना० स्त्री० धोविना
 बरेठा० ना० पु० धोवी
 बरेरा० ना० पु० विरवा विशेष; विरनी
 बरे० ना० स्त्री० तम्बोली
 बरेन० ना० स्त्री० तम्बोली
 बरोठा० } ना० पु० उद्योदी
 बरीठा० }
 बली० ना० पु० } भाला विशेष।
 बली० ना० स्त्री० }
 बलैत० ना० पु० भालैत, भाला मारनेवाला।
 बरत० ना० पु० काम, अम्यास, वरत।
 बरतन० ना० पु० चातन, भांडे, पात्र।
 बरतना० स० कि० काममें लाना।
 बर्मा० ना० पु० वेधक, बर्मा का अर्थ विशेष।
 बर्माना० स० कि० वेधना, धरना।
 बरहा० ना० पु० देशविशेष जो भरतखण्ड के
 पूर्व है।
 बर० ना० पु० कुलम् का बीज, ऊँहदारकांडा
 विशेष।
 बर्य० ना० पु० भाषाका छन्दविशेष।
 बरस० ना० पु० वर्ष।
 बरसात० ना० स्त्री० वर्षा, आबूट।
 बरसाती० ना० पु० घोड़े के पिर में रोगविशेष
 शु० जो बरसातमें उपजता था संवत्सरसताहो।
 बरसाना० स० कि० पानी गिराना, ना० पु०
 मजमें नगर विशेष।
 बरसा० ना० स्त्री० बरसातदिन का भांड।
 बरह० ना० पु० मारपंख
 बरही० ना० पु० मोर, मयूर।
 बरल० ना० पु० सामर्थ्य, श्रीवलदेवजी, बली,
 पंडग, दल, नीर्थ, धोख, दैत्य विशेष।

बलकुना० अ० कि० खोलना, निज बहाई
 करना।
 बलताड० ना० पु० वृष विशेष।
 बलतोड० ना० पु० फुडिया जो बल के टूटने
 से होती है।
 बलद० ना० पु० बैल जो बोझा होता है।
 बलदाऊ० ना० पु० श्रीवलदेवजी।
 बलदिया० } ना० पु० बैल का लादने हारा
 बलदी० } वा बैल का चलाने वा चराने
 हारा।
 बलदेव० ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्र के अष्ट
 भ्राता।
 बलना० अ० कि० जलना।
 बलिघकरा० ना० पु० बलिका बकरा, युद्ध में
 जो बिना लड़े मारा जावे।
 बलवलना० अ० कि० उबलना, कामागुर
 होना।
 बलधीर० ना० पु० श्रीवलदेवजी वा श्रीकृष्ण
 बलभद्र० ना० पु० श्रीवलदेवजी।
 बलम० ना० पु० पीतम, स्वामी, पति।
 बलमा० ना० पु० पीतम, स्वामी, पति, मियतम
 राग विशेष जो होली में गाते हैं।
 बलराम० ना० पु० श्रीवलदेवजी।
 बलवन्त० शु० पराक्रमी, सामर्थ्य, योद्धा।
 बलवर्द्धक० शु० बलका बढ़ाने हारा।
 बलवान् शु० बलवन्त।
 बलही० ना० स्त्री० आंधी, भार।
 बलहिलेना० स० कि० और की दुर्गति के
 श्राप चाहना।
 बलान्कार० ना० पु० बरवत, धनिकों से क्रोध
 कराना, जबरदस्ती।
 बलाराति० ना० पु० इन्द्र, देवराज।
 बलि० ना० पु० भोजन, भागे, अंश, पुत्र,
 गन्धक, सद्गुरु, रागा विशेष, ना० स्त्री०
 न्यायावर, लहरी।
 बलित० शु० मरा, परा, बल संयुक्त।

विलोना० } सं० कि० मथना, महत्वा ।
 विलोवना० }
 विलौटा० ना० पु० विलार ।
 विलौटिया० ना० स्त्री० विल्ली ।
 विल्ला० ना० पु० विलार, विल्लार ।
 विल्ली० ना० स्त्री० विल्लाई, विल्ली ।
 विल्लीबोटन० ना० पु० विलाईकन्द, औषधि विशेष ।
 विस० ना० पु० विप ।
 विसखपरा० ना० पु० औषधि पीधविशेष, जन्तुविशेष जो गोहृके सदृश होता है ।
 विसखोपरा० ना० पु० जन्तुविशेष, जो गोहृके सदृश होता है ।
 विसन० ना० पु० दोष, पाप, सुराई, काम, कायना ।
 विसनपन० ना० पु० खेलपन, लुचपन ।
 विसनी० ना० पु० लुचा, लम्पट, गु० सुपड, खेल, छिद्योर ।
 विसविसाना० अ० कि० वृजवजाना, सडी हई वस्तु से शब्द निकलना ।
 विसमार० ना० पु० औषधि, पीधविशेष ।
 विसर० ना० पु० चूक, भूल ।
 विसरा० गु० भूलाडुआ, चूकाडुआ ।
 विसराना० स० कि० भुलाना, बहकाना ।
 विसर्ना० अ० कि० भूलना भटकना ।
 विसात० ना० स्त्री० मूल, पूजा ।
 विसांध० } ना० स्त्री० कुनास, दुर्गंध ।
 विसांध० }
 विसांसी० ना० पु० विस्वासपाती ।
 विसाना० स० कि० मोललेना, चलना पीप का, बरा, कावू ।
 विसानां० स० कि० भुलाना ।
 विसाह० ना० स्त्री० वस्तु जो मोलली, खरीदी ।
 विसाहना० स० कि० मोल लेना ।
 विसुरना० अ० कि० सिसकाना, हकना ।
 विसैला० गु० विपथर, जहरीला ।

विस्तर० } ना० पु० विस्तार, बढ़ाये के
 विस्तार० } कइना, व्यैरिवाल चौडाव, आसार,
 गिस्तुइया० } ना० स्त्री० छिपकली ।
 धिस्तुरे० }
 विहन० ना० पु० बीज ।
 विहचल० गु० व्याकुल, भयभात, विह्वल ।
 विहरना० अ० कि० रीकना, हुलसना, स० कि० भोग करना, रिझाना, फटना ।
 विहरी० ना० स्त्री० ज्वन्दा, दामशाही ।
 विहसना० अ० कि० हँसना ।
 विहाग० ना० पु० रागविशेष जो थोड़ी रातरहे पर गाया जाता है ।
 विहान० ना० पु० प्रात काल, तइका, नीतगया ।
 विहाना० अ० कि० काल काटना, पिताग, तजना, छोड़ना ।
 विहाने० अ० अ० संवरे ।
 विहार० ना० पु० क्रीडा, लीला, आनन्द देशविशेष ।
 विहारस्थल० } क्रीडा का घर, लीलाभवन
 विहारस्थली० } न, आनन्दग्रह ।
 विहारी० गु० सिलाडी, क्रीडाकर, ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्र जी का एक नाम ।
 विहारीलाल० ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्रजी शतरहे कर्ता कविविशेष ।
 विहन० } अ० अ० राहित, विग, विद्वन
 विहना० }
 वी० अ० अ० भी ।
 वींहा० ना० पु० लपेटाडुआ, कातान, गड्डा ।
 वींधना० स० कि० बंधना, बंधना ।
 वींधा० ना० पु० ३० विस्वा, विगहा ।
 वींच० अ० अ० मध्य में, अन्तर ।
 वींछी० ना० पु० विच्छ ।
 वीज० ना० पु० बीज, यमर, जड, मूषी, शूर, राय, सवय, किया

बलिदानः ना० पु० देवता को हेतु पशुत्या
थप्य ।

बलिपुष्टं } ना० पु० कौची, कौगि ।
बलिभुक्तं }

बलिरसा० ना० स्त्री० गन्धक ।

बलिष्ठं० य० जलानु, पहलवान ।

बलिहारी० ना० स्त्री० श्योछापर, कुर्वाण ।

बली० य० बलवान, पहलवान, वीर ।

बलीमुखं० ना० पु० बानर, कपि, बन्दर ।

बलीवर्द्धं० ना० पु० बलद ।

बलुश्रा० य० बालमय ।

बलूला० ना० पु० बलुला ।

बल्लेडा० ना० पु० बवण्डर, बौडरा, बडीबलेडी ।

बल्लेडी० ना० स्त्री० लम्बी धरनि, जो दो छपरों
के बीच में रखते हैं ।

बल्लिक० कि० बकवादकर, निग बडाईकर ।

बल्लुजा० ना० स्त्री० बकुची ।

बल्लपा० ना० स्त्री० अक्षगन्ध ।

बल्लक० ना० पु० मोठ, अन्न ।

बल्लकी० ना० स्त्री० शीष, तम्बूरा ।

बल्लम० ना० पु० भाला, सेलम ।

बल्लरी० ना० स्त्री० बेल, सुरच ।

बल्लरीकोष्ठं० ना० पु० हरतिषाह ।

बल्ला० ना० पु० लडा, दण्ड, लम्बा वस्तु,
जिस से नाव चलते हैं मोवर की बनी वस्तु
जो होली में डालते हैं ।

बबुडर० ना० पु० बण्डोहा, बगुला, बौडरा, प-
वन की प्रीथि ।

बबासीर० ना० स्त्री० शुद्ध में रोगविशेष ।

बबलिया० ना० पु० गाड़, गहिया ।

बबस० ना० पु० बरा ।

बबसन० ना० पु० कपडा ।

बबसना० अ० कि० रहना; भराहोना, ना० पु०
कपडाविशेष जिसमें पान लपेटते हैं ।

बबसनी० ना० स्त्री० खरिया, भेली ।

बसाना० स० कि० आवादा कराना; अ० कि०
सिक्के देना ।

बसूला० ना० पु० बर्द का अस्त्रविशेष ।

बसूली० ना० स्त्री० ईदछाटने के लिये अस्त्रविशेष
शेष, छोटा बसूला ।

बसंधा० य० सडा, उबथा ।

बसेरा० ना० पु० बफस, सायंकाल, बसना ।

बसोवास० ना० पु० बसोति ।

बस्त० ना० स्त्री० बस्तु, चीज ।

बस्ती० ना० स्त्री० ग्राम, गांव, नगर, बडावा ।

बसना० ना० पु० बैठन ।

बहकना० अ० कि० निराश होना, भयङ्कना,
भूलना ।

बहकाना० स० कि० निराश करना, भयङ्काना,
भूलाना, उहकाना ।

बहंगी० ना० स्त्री० जिसमें बहार चौक लक-
ते हैं ।

बहजाना० अ० कि० बहना, विगडना, उमडना ।

बहत्तर० गु० सत्तर और दो, ७२ ।

बहना० अ० कि० चलना, भसना, उमडना,
मयौद से बाहर जाना, भूलजाना ।

बहनेऊ० ना० पु० बहिनके स्वामी, बहनोई ।

बहनेखी० ना० स्त्री० ले पालक, बहन ।

बहनोई० ना० पु० बहनेका पति ।

बहनेटा० ना० पु० ब्राह्मणका बालक ।

बहर० ना० स्त्री० अनेक भौका ।

बहरा० गु० बधिर, जिसकी सुनाई नहीं देता है ।

बहरिया० गु० अज्ञान, बाहरका ।

बहरी० ना० स्त्री० पत्नीविशेष जो कसूरकी
पकड़ लेता है ।

बहल० ना० स्त्री० जलने की गाडी ।

बहलाना० अ० कि० भ्रममें पतन रहना ना
करना ।

बहलाना० स० कि० भ्रमिलाना, भ्राना, भ्रम
पतन करना ।

वीजक० ना० पु० चलान, बिट्टी, लेखा, विजय-
सार, फिहरिस्त ।

वीजना० ना० पु० पंखा, बेना ।

बीजार० शु० विजैला ।

बीजी० ना० स्त्री० जन्तुविशेष, नकुल ।

बीभना० स० क्रि० टेलना, रेलना, खोदना ।

बीट० ना० स्त्री० पिन्डा, गुह ।

बीटना० अ० क्रि० छलकना, ढलना, विथरना ।

बीट्ट० ना० स्त्री० पहियों का पिन्डा ।

बीठा० ना० पु० बिडवा, एडवा ।

बीड़ा० ना० पु० लगायाहुआ पान ।

बीतना० अ० क्रि० व्यतीत होना, पूराहोना,
गजरना, होचकना ।

बीता० शु० गजरगया, व्यतीतहोगया, ना० पु०
वितरित ।

बीन० ना० स्त्री० बीणा, विद्या विशेष ।

बीनना० स० क्रि० बुनना, उटाना ।

बीमा० ना० पु० वस्तु को टोटे समेत पहुँचाने के
लिये जो पैसा दिया जाता है ठीका, हुडा, भाड़ा
यह शब्द फारसी है ।

बीर० ना० पु० भाई, धीर, कानका भूषण ।

बीरता० ना० स्त्री० बीरता, मर्दमी, शरता ।

बीरबहुट्टी० } ना० स्त्री० लालरंगका बीजा
बीरबहुट्टी० } विशेष ।

बीरा० ना० पु० बीड़ा, भाई ।

बीरी० ना० स्त्री० बीड़ा ।

बीर्य० ना० पु० बीर्य, पराक्रम ।

बील० ना० पु० बिल्वफल ।

बीस० शु० दो दहाई, २० ।

बीसा० ना० पु० बीस नखका कुत्ता ।

बीसी० ना० स्त्री० अन्नमापनेका परिमाण विशेष,
शु० बीसकी ।

बुन्दा० ना० पु० बिन्दु ।

बुन्दिया० ना० स्त्री० मिठाई वा भोजनविशेष ।

बुन्देला० ना० पु० बुन्देलखण्डका राजपूत

बुकटा० } ना० पु० नख, मूठीभर ।
बुकटा० }

बुकनी० ना० स्त्री० चूण, घ्राण ।

बुकलाना० अ० क्रि० आपीआप बकना,

बुका० ना० पु० बुकटा ।

बुकी० ना० स्त्री० गांठी, मूठीभर ।

बुजना० ना० पु० निहानीके कारण से जो क
स्वियां पहनती है ।

बुजहरा० ना० पु० पानी गम करनेकापत्र ।

बुभना० अ० क्रि० ठंढा होना ।

बुभाना० स० क्रि० ठंढाकरना, समझाना, सुभाना

बुडाना० स० क्रि० डुबाना ।

बुडटा० शु० बूढ़ा प्राचीन मनुष्य ।

बुडभस० शु० जो बूढ़ा तरुणकी चालचले ।

बुडवा० शु० बुढ़ा ।

बुढ़ापा० ना० पु० बूढ़ावस्था ।

बुढ़िया० शु० बूढ़ी स्त्री ।

बुंडा० ना० पु० कानका भूषणविशेष ।

बुत० ना० पु० बुवा वा पचीसी खेलने में
सपर पांसा फेंकते हैं घूसा ।

बुताना० स० क्रि० डुभाना ।

बुत्ता० ना० पु० टगाई, छल ।

बुदबुद० ना० पु० बुलबुला ।

बुदबुदाना० अ० क्रि० बड़बड़ाना ।

बुद्ध ना० पु० परिशुद्ध, चौधामह, चौधावा
नवम अवतार ।

बुद्धि० ना० स्त्री० ज्ञान, समझ, बुझ, सोच
अकल ।

बुद्धिमान० शु० ज्ञानवान्, समझदार, चत
परिशुद्ध ।

बुद्धिहा० ना० स्त्री० मदिरा, शरान ।

बुद्धी० शु० चतुर, समझदार, बुद्धिमान् ।

बुध ना० पु० चौधामह, चन्द्रपुत्र, चौधादि
नवम अवतार जो गया में भया, परिशु
देवता ।

बह्विध्यां० ना० पु० श्रवित्यकी अधिकः प्रवृत्तः
 नीचजाति विशेषः ।
 बह्वली० ना० स्त्री० छोटी बहला ।
 बह्वाना० स० कि० खंजाना, अराना, उमराना
 मुलाना, भयोदा वायु चलाना ।
 बहव० ना० पु० अहिला, नाद लडाव ।
 बहिः० अव्य० पादरोग ।
 बहिःकोण० ना० पु० बाहरका कोना ।
 बहिजाना० थ० कि० पतित होना, बहना, विग-
 नमाना, प्रयास होना ।
 बहिन० ना० स्त्री० भगिनी, अनुजा ।
 बहिरन्तर० अव्य० बाहरभीतर ।
 बहिरा० थ० बधिर, महरा ।
 बहिराना० स० कि० बहलाना, थ० कि० नि-
 कर्ताना ।
 बहिदेश० ना० पु० बाहरथल, नाहरकादेश ।
 बहिमुख० ना० पु० धर्मकरले में अचेत, अभगत ।
 बही० ना० स्त्री० महाजनोंके हिसाब की पीपी-
 लसद, राता ।
 बहीर० ना० स्त्री० सेना के संग जो भीखोदि-
 तापी ।
 बहु० गु० बहुत, ढेर, अनेक ।
 बहुकाल० ना० पु० अनेक दिन, बहुत दिन ।
 बहुकालीन० थ० बहुत दिनों का ।
 बहुत० थ० अधिक ढेर, बडा ।
 बहुतात० ना० स्त्री० अधिकता, सारसार ।
 बहुतायत० विस्तार, नियादती ।
 बहुतेरा० थ० अनेक, अधिक ।
 बहुत्व० ना० पु० बहुतायत ।
 बहुदर्शी० ना० पु० जिसने बहुत देखा है ।
 बहुधी० अव्य० अनेक प्रकारसे, बहुत प्रकार
 से, अनेक ।
 बहुनयन० } ना० पु० इन्द्र ।
 बहुनेत्र० }
 बहुनेत्रा० }
 बहुपद० ना० पु० बरगदबुध ।

बहुपत्रा० ना० पु० मोटा, अमर ।
 बहुपुट० ना० पु० भोजपत्र ।
 बहुपुत्रिका० } ना० स्त्री० बड़ी शतवृ-
 बहुपुत्रा० } बहुतवेदी ।
 बहुबाहु० } ना० पु० बाणासुर, नागादेव, रावण,
 बहुभुज० } थ० जिसके बहुत भुजाहों ।
 बहुभुजक्षेत्र० ना० पु० बहुतभेड़ों का खेत ।
 बहुभञ्जरी० ना० स्त्री० तुलसी ।
 बहुमूल्य० } गु० महंगा या जिसका बहुत
 बहुमाल्य० } मोल है, कीमती ।
 बहुर० अव्य० फेर, पुनि ।
 बहुरंगी० गु० अनेक रंग का अधिर ।
 बहुरना० थ० कि० फिरना, फिराना ।
 बहुराना० स० कि० फेरलाना, फिराना ।
 बहुरि० अव्य० पुनः फेर ।
 बहुरिया० ना० स्त्री० बधु, बह ।
 बहुरूपा० ना० पु० शरट ।
 बहुरूपिया० } ना० पु० भांडा, खान्गी ।
 बहुरूपी० }
 बहुरूप्य० ना० पु० भांडी ।
 बहुल० } थ० बहुतायत, अधिकता, इकराती ।
 बहुलता० }
 बहुलच्छद० ना० पु० सहितनवृत्त ।
 बहुला० ना० स्त्री० छोटी कड़ाई ।
 बहुवचन० ना० पु० अधिकत्व, संख्या का बो-
 धक, प्रत्यय, बहुतयात् ।
 बहुविध० } थ० अनेक प्रकार, बहुधी ।
 बहुविधि० }
 बहुग्रही० ना० पु० समाप्तविशेष ।
 बहुशः० अव्य० बारम्बार, बार बार ।
 बहु० ना० स्त्री० बधु, इलहन ।
 बहुहा० ना० पु० कालविशेष ।
 बहुत्० ना० पु० लुचा, फिरना, गु० बरगदबुध ।
 बहुलिया० ना० पु० अधिक, सिद्धीमार ।
 बहुोरना० स० कि० फिराना, लौटाना ।
 बहुोरि० अव्य० फिर, बहुरि ।

बुधवार० ना० पु० चौथवार ।
 बुधि० ना० स्त्री० बुद्धि ।
 बुन्द० ना० पु० बिन्दु, शय्य, कतरह ।
 बुझा० स० क्रि० विनना ।
 बुभुक्षित० श० मूत्र ।
 बुभसिया० गु० बुद्धभस ।
 बुरा० गु० दुष्ट, लडा, खराब, अकार ।
 बुराई० ना० स्त्री० दुष्टता, खोट ।
 बुर्ज० ना० पु० रस्ता, लासा ।
 बुर्जरी० ना० स्त्री० धियों की भाली ।
 बुर्जरी० ना० स्त्री० बुर्जरी ।
 बुलबुला० ना० पु० बुला ।
 बुलाक० ना० पु० नाक में का भूषणविशेष ।
 बुलाना० स० क्रि० पुकारना, हांक देना, तलब करना ।
 बुलाहट० ना० स्त्री० आवाहन ।
 बुहनी० ना० स्त्री० अगवानी, पहिलीपिकीका नाम, बयानह ।
 बुहरी० ना० स्त्री० मुनेहुये जी ।
 बुहारन० ना० स्त्री० भाङ्गन ।
 बुहारना० श० क्रि० भाङ्गना ।
 बुहारी० ना० स्त्री० भाङ्ग ।
 बुहारू० ना० पु० भंगी ।
 बूआ० ना० स्त्री० बहिन, पूषी, माता ।
 बूई० ना० स्त्री० लडकों के डराने का शब्द ।
 बून्द० ना० स्त्री० बिन्दु, टपकन, श० भला, ऊँचा, लडाकू ।
 बून्दा० ना० पु० बहीबूँद ।
 बून्दा० ना० स्त्री० टपका, वर्षा की बूँद, मिठाई विशेष ।
 बूकना० स० क्रि० पीसना, चुकनी करना ।
 बूका० ना० पु० चूर्ण, छोटापोती, चुकनी ।
 बूचा० ना० पु० जिसके कान नहीं, फनकटा ।
 बूची० श० स्त्री० कनकटी ।
 बूझ० ना० स्त्री० समझ, बुद्धि ।

बूझना० श० क्रि० समझना, जानना ।
 बूट० ना० पु० हराचना, तरकारी ।
 बूटा० ना० पु० पीधा, वृष, फूल कपड़े का ।
 बूटी० ना० स्त्री० वनस्पति, औषधि, छोटा बूटा, निरवा, भंग, विजया ।
 बूहना० श० क्रि० ह्वना ।
 बूहमरना० श० क्रि० ह्वमरना ।
 बूडिया० ना० पु० इननेहारा ।
 बूत० } ना० पु० बल, सामर्थ्य, पीरप,
 बूता० } ताकत ।
 बूवू० ना० स्त्री० बहन, बीबी ।
 बूर० ना० स्त्री० भूती, धिलका ।
 बूरा० ना० स्त्री० खाँक, लकड़ी की बूकनी, चूर्ण, यह शब्द फारसी का है ।
 बे० शब्द० धरे ।
 बेंट० ना० पु० हथकड़ा, दस्ता ।
 बेंटा० पु० श० टेढ़ा, बाँका ।
 बेंघना० स० क्रि० गूँघना, चुनना ।
 बेग० ना० पु० वेग, जोर ।
 बेगवान्० श० बेगवाद, जोरवाला ।
 बेगार० ना० पु० बरबस काम करना ।
 बेगारी० ना० स्त्री० मोटिया, बेगारकर्ता ।
 बेगी० श० बेगी ।
 बेंग० ना० पु० मेढ़क, भेर ।
 बेंघना० स० क्रि० बिकाना, मोल लेकरदेना ।
 बेचू० श० बेचनेवाला ।
 बेजू० ना० पु० जन्तुविशेष ।
 बेझा० ना० पु० निशाना, निशपर तीरगा गोली का अभ्यास करते हैं ।
 बेटा० ना० पु० पुत्र, लडका ।
 बेटी० ना० स्त्री० पुत्री, कन्या ।
 बेठन० ना० पु० बेठन, लपेटन ।
 बेड़० ना० पु० बाझ, नियातर, धम्मका ।
 बेड़िया० ना० पु० जातिविशेष ।
 बेड़ी० ना० स्त्री० पैकड़ी, निस्तोफरी का लपेटा साँचते हैं ।

वांक० ना० पु० वाजविशेष, कदारविशेष, कर, देवई, घुमाव, दोष ।

वांकपने० ना० पु० देवाणां, ह्योडपने, लुच पन ।

वाका० ना० पु० खेला, अकडत, वासकायने का अन्न विशेष, गु० देवा ।

वावी० ना० स्त्री० सांप का विल ।

वांगा० ना० स्त्री० विनीता समेत, हई, पति सरसा ।

वांचना० स० क्रि० पदवा ।

वांजर० ना० पु० वंजर, विना जाती, वाई धरती ।

वांफ० ना० स्त्री० वन्धा ।

वांट० ना० पु० भाग, अशा, बटवरा ।

वांटना० स० क्रि० भागकरना, पीसना ।

वांङा० गु० पूर विना पशु, मनुष्य जिसके कोई नहीं रहा, सर्प पूररहित ।

वांङी० ना० स्त्री० लठ, लकड़ ।

वांदा० ना० पु० आकाशलाता जो वृक्षपर होती है ।

वांदी० ना० स्त्री० लाड़ी, दासी ।

वांध० ना० पु० मेह, वन्ध, पुल ।

वांधना० स० क्रि० जकड़ना, गांठना, लगाना, बन्दकरना, बनाना, लटकाना, लपेटना, उठाना, तकाना ।

वांधनू० ना० पु० रंगनकारीतिविशेष, कलक, उपाय, रेशमी कपड़ाविशेष, तीताविशेष ।

वांस० ना० पु० वृक्षविशेष, तालाईआदिनापनेके लिये मापकविशेष ।

वांसफोडा० ना० पु० जातिविशेष जो वाँसेकी वस्तु बनाता है ।

वांसली० ना० स्त्री० घूरली, वंशी ।

वांसा० ना० पु० वासिकीकी हड्डी ।

वांसी० ना० स्त्री० घूरसी, छोटवाँस, वाँस से बनी हुई वस्तु, वाँस का फल ।

वांसुरी० ना० स्त्री० घूरसी ।

वांह० ना० स्त्री० माँह ।

वांहिया० गु० पत्नी, श्रीरी तरफदार ।

वाई० ना० स्त्री० महाराष्ट्र में सिवियों का नाम, कंचनी वात श्रव्य० जाँघ ।

वाईस० गु० नीस और दो, २२० ।

वाईसी० ना० स्त्री० राजा की कौन बरिस हजार पलटन प्रधानता ।

वाइला० ना० पु० तरकारी विशेष ।

वाकस० ना० पु० आड़ी जिसके कोयलों तो वास्तु चनाते हैं ।

वाखर० } ना० पु० अंगनाई, कई एकपर
वाखल० } जो एकहाते के भीतर हैं ।

वाग० ना० स्त्री० लगाम ।

वागडोर० ना० स्त्री० लम्बी भाग, लगामकी हिस्सी ।

वागा० ना० पु० जोड़ा, खिलत, पहिरने का वस्त्र विशेष ।

वागी० ना० पु० अश्वधार, घुड़चढ़ा ।

वांघ० ना० पु० व्याघ्र, शेर ।

वाघन० } ना० स्त्री० व्याघ्री, शैनी ।

वाघनी० } ना० स्त्री० व्याघ्री, शैनी ।

वाघम्वर० ना० पु० बाघकी खाल ।

वाघा० ना० पु० बाघ ।

वाछु० ना० स्त्री० चुनवा, छाँट, हिस्सह, लगाने हाँठके दोनों ओरके कोने, गु० त्रिकोणी ।

वाछुना० स० क्रि० चुनना, छाँटना ।

वाजगाज० ना० पु० अनेक वाजों का एकट्ठा शब्द ।

वाजन० ना० पु० कई एक वाजा ।

वाजना० अ० क्रि० वाजना, प्रकट होना, बिनना ।

वाजरा० ना० पु० ज्ञान, दौल आदि, गु० भिड़ ।

वाजा० ना० पु० बाघ, दौल आदि, गु० भिड़ गया ।

वाजी० ना० पु० घोड़ा ।

वाजू० ना० पु० बाँहमें पहिरने का गहना विशेष ।

वाह्य० श्रव्य० बाहर ।

घेड़ना० स० क्रि० बाड़ाबांधना, छेकना, हकाना, लाभउठाना; छीनलेना, किमाना, चुराना ।
 वेत० ना० पु० वेत; छड़ी, आकार ।
 वेद० ना० पु० वेद ।
 वेदगिरा० ना० पु० वेदवाणी ।
 वेध० ना० पु० छेद; सरास ।
 वेधक० गु० छेदनेवाला ।
 वेधक० गु० निधक ।
 वेधना० स० क्रि० छेदना ।
 वेधमुख्या० ना० स्त्री० कस्तूरी ।
 वेधा० ना० पु० बंधा, खराफूल ।
 वेधी० ना० पु० वेधक ।
 वेन० ना० स्त्री० धाँसुरी, वंशी ।
 वेना० ना० पु० पंखा, खस खस ।
 वेनी० ना० स्त्री० जूड़ा, चैंटी, किराड़कीएक काठविशेष ।
 घेर० ना० पु० घृत् वं उंसका फलविशेष, ना० स्त्री० वार, बिलम्ब, बेला ।
 घेरघेर० अव्यं० वारंवार ।
 घेरभयानक० ना० पु० प्रलयकी रात, भूतक की रात ।
 घेरी० ना० स्त्री० बरका वृत् ।
 घेरी० ना० पु० नाव, जहाज ।
 घेल० ना० पु० बिल्वफल, पुष्पविशेष, बेल ।
 घेलन० ना० पु० रोटी बेलने की वस्तु ।
 घेलना० स० क्रि० फैलाना, ना० पु० बेलनी ।
 बेलनी० ना० पु० टहनौ ।
 घेलवृटा० ना० पु० भौंडी, लताविशेष ।
 घेला० ना० पु० पुष्प-विशेष, फटारा, बेलाना ।
 बेलि० ना० स्त्री० बेलि, लता जो पीधी आपस खड़ा न होसके ।
 वेसन० ना० पु० चनेकी आंटी ।
 वेसनी० ना० स्त्री० वेसनसे बनीहुई ।
 वेसनौटी० ना० स्त्री० वेसनकी रोटी ।
 वेसर० ना० स्त्री० नथनी ।

वेसरा० ना० पु० पत्नीविशेष ।
 वेसवा० ना० स्त्री० वेश्या ।
 वेह० ना० पु० छिद्र, साल ।
 वेहड़० ना० स्त्री० पृथ्वी जहाँऊँची नीचीहो ।
 वैंगन० ना० पु० भांटा, तरकारीविशेष ।
 वैंगनी० गु० रंग जो वैंगन के समान हो ।
 वैजनी० पिगल ।
 वैदी० ना० स्त्री० टिकुसी ।
 वैठक० ना० स्त्री० वैठनेकास्थान, चौपाई, बैठ ।
 वैठका० ना० पु० नेकी चाल या रीति ।
 वैठ ॥ थ० क्रि० आसन, मारता ।
 वैठवा० गु० चपटा, तौपट ।
 वैठा० ना० पु० चप्पू, डाँड ।
 वैठाना० स० क्रि० स्थापन कराना ।
 वैठालना० स० क्रि० स्थापन कराना ।
 वैतरा० ना० स्त्री० सोंठिविशेष ।
 वैतरणी० ना० स्त्री० गरकमार्ग की नदी ।
 वैदिक० ना० पु० वैदिक, वेदका जाननेवाला ।
 वैन० ना० पु० वचन, वाणी, बनसी ।
 वैनतेय० ना० पु० विनतके पुत्र गरुड, अरुण ।
 वैना० ना० पु० गायपरका भूषणविशेष, पकवान जो विवाह आदि में बाँटते हैं, व्योहारी, पवन ।
 वैपार० ना० पु० व्यापार, तिजारत ।
 वैपारी० ना० पु० सौदागर, तानिर, व्योपारी ।
 वैर० ना० पु० वैर, इरामन ।
 वैरख० ना० स्त्री० भौंडी, ध्वजा, पताका ।
 वैरागी० ना० पु० वैरागी, जिसको वैराग्यहो ।
 वैल० ना० पु० वृषभ, बरध ।
 वैस० ना० पु० आसुदा; वयः, ज्येष्ठ, राजपूता में जातिविशेष ।
 वैसन्दर० ना० पु० आग ।
 वैसांडु० गु० आसफती, मनखोमार, परत में बैठनेहारा ।
 वोआई० ना० स्त्री० बाने का काम, बाने का समय ।

बाह्यालय० ना० पु० मन्दिर के बाहर ।
 बाट० ना० स्त्री० मार्ग, राह, पन्थ ।
 बाट० ना० पु० बाट जो पथर आदि के होते हैं ।
 बाड़० ना० स्त्री० धार, पार, सिपाहियों की पक्ति ।
 बाड़व० ना० पु० ब्राह्मण ।
 बाड़वाग्नि० } ना० पु० जल में की अग्नि ।
 बाड़वानल० }
 बाड़ा० ना० पु० हाता, धेर, मन्दिर, भूर, दान ।
 बाड़िया० ना० पु० बाड़ बनाने हारा ।
 बाड़ी० ना० पु० उपवन विशेष; उपवन समेत जो घर ।
 बाड़० ना० स्त्री० धार, बढ़ती, अधिकार, सरसई, जतार्थव, अहिला, बहिषा ।
 बाड़ना० } अ० कि० बढ़ना, उमपडना ।
 बाड़ना० }
 बाण० ना० पु० शर, बाण, खाटकी रस्ती ।
 बाणप्रस्थ० ना० पु० तृतीयाश्रमी अर्थात् जो स्त्री प्रसंग रहित हो परन्तु स्त्री के साथ रहे ।
 बाणा० ना० पु० मूँज ।
 बाणासुर० ना० पु० दैत्यविशेष, राजावलि का पुत्र ।
 बाणिज्य० ना० पु० व्यापार, तिजारत, सौदागरी ।
 बाणी० ना० स्त्री० सरस्वती, आवाज ।
 बात० ना० स्त्री० यात्रा, बाणी, वचन, कारण, कारण, समाचार, पवन ।
 बातकीबातमें० अर्थ० अर्भी, तुलन्त ।
 बाती० ना० स्त्री० नत्ती, दीपक की नत्ती, छप्पर की नत्ती ।
 बात्निया० } शु० बड़बड़िया, चंचल, बड़ा
 बात्नी० } अतकहा, बकवादी ।
 बादल० ना० पु० मेघ ।
 बादला० ना० पु० सोनेरूपे का तारविशेष, लम्बा ।
 बादली० ना० स्त्री० लम्बा ।
 बादर० ना० पु० चमगादड़ ।

बाध० ना० पु० निवारण, रोक, खाट बुनने की रस्ती ।
 बाधक० ना० पु० जो बाधकरे, प्रतिबन्धक, दुःखदाता ।
 बाधा० ना० स्त्री० दुःख, पीड़ा, अटकव, रुकाव, मिथ्या, आफत ।
 बाध्य० शु० बाधने के योग्य ।
 बान० ना० स्त्री० स्वभाव, प्रकृति, चाल, यथा, तुलसी यहमन तजत नहि धुरविनिया की बान, ना० पु० बाण, खाटबुनने की रस्ती ।
 बानगी० ना० स्त्री० नमूना, सरीखा, दृष्टान्त ।
 बानवे० गु० नवे और दो, ६२ ।
 बाना० ना० पु० स्वभाव, व्यवहार; अस विशेष, कपड़े की ध्योत, भनी, भेष, निशानी, प्रतिज्ञा, फैलाना ।
 बानि० ना० स्त्री० स्वभाव, प्रकृति, चाल ।
 बानिक० ना० पु० बनाव, चलाव, सजाव ।
 बानी० ना० स्त्री० बाणी ।
 बानीबोली० ना० स्त्री० बिनबाई ।
 बानूआ० ना० पु० जलपरी विशेष ।
 बानूसा० ना० पु० } वरु विशेष ।
 बानूसी० ना० स्त्री० }
 बानैत० शु० बानावाले, बानधारी, और भदर्थर ।
 बान्धव० ना० पु० भाई, नतैत, सम्बन्धी ।
 बाप० ना० पु० पिता, जनक ।
 बापड़ा० ना० पु० बापरो ।
 बापरो० } शु० तुच्छ, नीच, दोन, कंगाल,
 बापुरी० } अतमर्थ ।
 बाफ० ना० स्त्री० भाफ, बफारा ।
 बाघर० ना० पु० मिठाईविशेष ।
 बाधा० ना० पु० नानक, दादा, बूदा, नासक संन्यासी ।
 बाड़० ना० पु० बालक, राजा, स्वामी ।
 बाम० ना० स्त्री० बामा, औरत ।
 बाह्यन० ना० पु० ब्राह्मण ।

बोझाना० सु० कि० नीजडलवाना, बसाना ।
 बोझार० ना० पु० बोने का समय ।
 बौट० ना० पु० बाट, डटा, डाली ।
 बोक० }
 बोकड़ा० } ना० पु० बकरा, अज ।
 बोकरी० }
 बोकरी० ना० स्त्री० बकरी ।
 बोल० ना० पु० मगर, कुम्भीर ।
 बोला० ना० पु० पालकी विशेष, वृत्ता ।
 बोझ० ना० पु० भार, लादी ।
 बोझना० स० कि० लादना ।
 बोझल० }
 बोझेल० } सु० लदा, भरा ।
 बोटी० ना० स्त्री० मांसका छोटा टुकड़ा ।
 बोत्त० ना० पु० बकरा ।
 बोदली० ना० स्त्री० भोली, गेगली ।
 बोदा० सु० निर्वल, आसक्त, भोला, गेगला ।
 बोद्धा० सु० बुद्धिमान् ।
 बोध० ना० पु० ज्ञान, मति, मनोती, धीरज ।
 बोधक० ना० पु० जिससे ज्ञानहो, बोधकर्त्ता ।
 बोधना० स० कि० फुसलाना, समझाना ।
 बोना० स० कि० बीजडालना ।
 बोनी० ना० स्त्री० बोने का समय ।
 बोर० ना० पु० पानेव के बुंजरू ।
 बौरा० ना० पु० गोन, गटिया, लोधा, टाट का थैला ।
 बोरी० ना० पु० रामधनुष, चावल विशेष ।
 बोल० ना० पु० शब्द, गीतका शब्द, वात ।
 बोलचाल० ना० स्त्री० वात चीत ।
 बोलता० ना० पु० प्राण, जीव, बोलने की शक्ति ।
 बोलना० अ० कि० वातकरना, कहना, बजना ।
 बोलवाला० ना० पु० आशीर्वादविशेष ।
 बोली० ना० स्त्री० बाणी, भाषा, वात ।
 बोड़० ना० पु० बेलि, लता ।
 बोड़ना० } अ० कि० लिपटना, धूमना,
 बोड़ियाना० } सर्वर, स्थान ।

बौड़ी० ना० स्त्री० बेलि, लता ।
 बौछार० ना० स्त्री० वायुसहित बड़ी वृष्टि वा जो वायु के झकोड़ से बूँदें धरमें लवी आती हैं ।
 बौद्ध० ना० पु० बुधका मतावलम्बी ।
 बौना० सु० छोटा, वादन, नाटा ।
 बौनी० ना० स्त्री० डिगनी, बोने का समय वा काम ।
 बौरहा० सु० बौराहा ।
 बौरा० सु० गंगा, मुक ।
 बौराना० अ० कि० वावला होना ।
 बौरापन० ना० पु० सिङ्गपन ।
 बौराहा० सु० वावला, तिड़ी ।
 बौला० सु० पोपला, मुर्ला ।
 बौहा० सु० पथरीला ।
 बौहई० ना० स्त्री० जिस स्त्री को गर्माका रोगहै ।
 ब्यान० ना० पु० पदवादि का प्रसव ।
 ब्याना० अ० कि० जन्मना, उत्पन्न होना ।
 ब्याह० ना० पु० विवाह ।
 ब्याहता० सु० विवाहित ।
 ब्याहनयोग० सु० जो ब्याहने के योग्य है ।
 ब्याहना० स० कि० विवाह करना ।
 ब्याहा० सु० विवाहित, जिसका विवाह होगया ।
 ब्यौंगा० ना० पु० } चर्मका छीलने का अस्त्र ।
 ब्यौगी० स्त्री० }
 ब्यौत० ना० पु० गड़न, डील, रीति, ढव ।
 ब्यौतना० स० कि० कपड़े को छीलियाना वा बनाना ।
 ब्यौरा० ना० पु० भेद, वृत्तान्त, चलनि, अन्तर ।
 ब्यौपार० ना० पु० व्यापार, तिजारत, सोदागरी ।
 ब्यौवारी० सु० व्यापारी, तानिर, सोदागर, देशापरी ।
 ब्रह्म० ना० पु० परमेश्वर, जगत् का कारण ब्रह्मा, वेद, देवता, जीव, कुल ।
 ब्रह्मब्रह्म० ना० पु० ब्रह्मानी का अस्त्रविशेष ।
 ब्रह्मकाष्ठ० ना० पु० राक्षस, वृत् ।

ब्राह्मनी० ना० स्त्री० श्रौपथि श्रौथा विशेष,
कंजिया, ब्राह्मणी, अंजनहारी, कीटविशेष, द्विप-
कली ।

वायन० ना० पु० व्याहारी, मिठाई आदि जो
मिष्ठानों के घर भेजते हैं ।

वायव्य० गु० दूसरा, अलग, ना० पु० वायुकोण ।

वायव्य० ना० पु० वायुकोण ।

वायां० गु० वामा, दक्षिणांग के विपरीत अंग ।

वायो० क्रि० फेलाया, पसार ।

वार० ना० पु० द्वार, दिन, बालक, बाल, ना०
स्त्री० तपस्य, पात, वाता, रस ।

वारण्य० } ना० पु० हाथी, निवारण, सञ्जाह ।
वारण्य० } रुकावट, वचाना, न्योछावर ।

वारण्य० } रुकावट, वचाना, न्योछावर ।

वारता० अ० क्रि० लिखना, बिलगना, स० क्रि०
निषेधकरना, जलाना ।

वारनारि० ना० स्त्री० नेरुया, पतुरिया ।

वारम्बार० अ० वात्वार, प्रतिक्षण, पड़ीपड़ी ।

वारह० गु० द्वादश, १२ ।

वारहखड़ी० } ना० स्त्री० द्वादश, भाषा जो
वाराखरी० } व्यंजनों में मिलाकर बालकों को
पढ़ाते हैं ।

वारसिंगा० ना० पु० कन्दसार, मृगविशेष ।

वारह० ना० पु० शकर ।

वारीबिर० ना० पु० नेत्रवाला ।

वारी० ना० स्त्री० बाड़ी, भरौला, विनय्याही
कन्या, श्रोतरी, नैत्रित, ना० पु० जाति विशेष,
दाव, बाला, ना० स्त्री० बाली ।

वारुत० ना० स्त्री० वारुद जिससे वृन्दकर्मलाते हैं ।

वारे० ना० पु० वचे, लड़के ।

वाल० ना० पु० सिरोरुह, बालक, बाली, मूख,
गूंगा, बाला, दसन, चाक, रामायण का प्रथम
काण्ड ।

वालक० ना० पु० लड़का, नेत्रवाला, श्रौपथि ।

वालकता० } ना० स्त्री० लड़कई ।

वालकपन० } ना० स्त्री० लड़कई ।

वालिका० ना० पु० योगी वा संन्यासीका बाल ।

वालछड़० ना० स्त्री० श्रौपथि वा सुगन्धिविशेष ।

वालतोड़० ना० पु० बलतोड़ ।

वालतुक० ना० पु० कल्या, तैरा ।

वालदशा० ना० स्त्री० बालकता ।

वालना० स० क्रि० जलाना, सुलगाना ।

वालपत्र० ना० पु० जवासा ।

वालवधे० ना० पु० लड़केवाले ।

वालभाव० ना० पु० लड़कई, बालकता ।

वालभोग० ना० पु० प्रातःकाल जो शीत
चन्दनके निमित्त भोग लगाने हैं ।

वालम० ना० पु० प्रियतम, पति, कपडाविशेष ।

वालमूल० ना० पु० मूली ।

वालरांड० ना० स्त्री० जो बालकपन
विधवा है ।

वाला० ना० स्त्री० सोलह वर्षतक की कन्या, सु-
वती, पौधा विशेष, जड़ी, ना० पु० कान
पहरने का भूषण, बालक ।

वालापत्र० ना० पु० लड़कपन, बालकता ।

वालिक्य० ना० पु० माई, श्रौपथि ।

वाली० ना० स्त्री० लड़की, माई आदि की कली
कानों पहरने का भूषण विशेष ।

वालु० ना० पु० एलुवा, सुतवर ।

वालुका० ना० स्त्री० बाल, रेत ।

वालुकामय० गु०, रेतिला, रेतला, किरकिया ।

वालू० ना० स्त्री० रेत, रेख ।

वालूचर० ना० पु० गांजा विशेष ।

वालमीक० ना० पु० श्रुति विशेष, रामायणका
वलय० } ना० स्त्री० लड़कई, बाल
वालयावस्था० } कता ।

वाल्लिक० ना० पु० मोड़ा ।

वाल्लिक० ना० पु० हींग देश विशेष ।

वाव० ना० पु० वायु ।

वावग० ना० पु० सोवाई, बोझारा ।

वावगोला० ना० पु० वायुशुद्ध ।

वावभक्त० गु० गणी, बुकी ।

ब्रह्मगिरि० ना० स्त्री० आकाशवाणी, ब्रह्मवाणी ।
ब्रह्मघोष० ना० पुं० जहाँ वेद पढ़ाया जा पढ़ा
जाता है, वेदपाठशाला ।

ब्रह्मचर्य० ना० पुं० ब्रह्मचारी का व्यवहार ।
ब्रह्मचारी० ना० पुं० प्रथमाश्रमी, ईश्वरपू-
जक ।

ब्रह्मदातृ० ना० पुं० शहूत ।

ब्रह्मदैत्य० ना० पुं० ब्रह्मराजस ।

ब्रह्मन० ना० पुं० ब्राह्मण ।

ब्रह्मपादप० ना० पुं० टाँखका वृक्ष ।

ब्रह्मपुत्र० ना० पुं० नदविशेष, ब्रह्माका पुत्र ।

ब्रह्मयान० ना० पुं० ब्रह्मास्य ।

ब्रह्मभवन० ना० पुं० ब्रह्माका स्थान ।

ब्रह्मभुवन० ना० पुं० ब्रह्माका लोक ।

ब्रह्मभोज० ना० पुं० ब्राह्मणों को भोजनदेना ।

ब्रह्ममेखला० ना० स्त्री० मूँज ।

ब्रह्मरन्ध्र० ना० पुं० मस्तकका मध्यस्थान ।

ब्रह्मरात्रि० ना० स्त्री० ब्रह्माकी रात जो सहस्र
चतुर्गुणी होती है ।

ब्रह्मराक्षस० ना० पुं० भेत विशेष, लूका ।

ब्रह्मवाद० ना० पुं० वेदान्त कथन ।

ब्रह्मवादी० ना० पुं० वेदान्ती ।

ब्रह्मविचार० ना० पुं० वेदान्तविद्या, अध्यात्म-
ज्ञान ।

ब्रह्मलोक० ना० पुं० लोकविशेष जहाँ ब्रह्माजी
का निवासस्थान है ।

ब्रह्मश्रव० ना० पुं० वेद ।

ब्रह्मसूत्र० ना० पुं० यज्ञोपवीत, जनक ।

ब्रह्महत्या० ना० स्त्री० ब्राह्मणकी हत्या ।

ब्रह्मज्ञान० ना० पुं० ईश्वरत्वज्ञान, परमज्ञान,
आत्मज्ञान, अध्यात्मज्ञान ।

ब्रह्मा० ना० पुं० देशविशेष जो पूर्व में है वा उस
देश के राजा की जातिविशेष, विभाता, सृष्टि-
कर्ता ।

ब्रह्माचारी० ना० पुं० ईश्वरपूजक, ब्रह्मवि-
चारी ।

ब्रह्मारण्ड० ना० पुं० जगत्, संसार, शिरकीपट्ट ।
ब्रह्मानन्द० ना० पुं० गिन स्वर्मानन्द, आ-
त्मानन्द ।

ब्रह्माणी० ना० स्त्री० सरस्वती ।

ब्राह्मण० ना० पुं० प्रथम-वर्ष ।

ब्राह्मणी० ना० स्त्री० ब्राह्मण की स्त्री ।

ब्राह्मण्य० ना० पुं० ब्राह्मण का धर्म, ब्राह्मणों की
सभा, सातवां ग्रह ।

ब्राह्मी० ना० स्त्री० संहिताविशेष, सरस्वती, नासा
श्रीषधि ।

ब्राह्म्य० ना० पुं० अचम्भा, आश्चर्य, ब्राह्मणों
की सभा ।

ब्राह्म्यमुहूर्त्त० ना० पुं० सूर्योदय से पहले चार
घड़ी पीढ़, पह ।

[भ]

भ० ना० पुं० नक्षत्र, राशि ।

भंवर० ना० पुं० भौरा, चक्र ।

भंवर० } ना० पुं० अलि, लता, प्रमर ।
भंवरा० }

भंवेरी० } ना० स्त्री० तीवरी, पतंगाविशेष ।
भंवेरी० }

भंवेरना० स० कि० काटना, काटखाना ।

भकसी० ना० स्त्री० पृथ्वी में गुफा, अंधरी ।

भकुवा० श० निर्बुद्धि, मूख, अहमक ।

भकुवाना० अ० कि० निर्बुद्धि होना, उल्लू हो-
जाना ।

भकोसना० स० कि० खालेना, डकसना ।

भक्ता० ना० पुं० अर्चक, सेवक, उपासक, भात,
शु० धर्मा, चाहक ।

भक्तवत्सल० ना० पुं० भक्तप्रिय, श्रीभगवान् ।

भक्ता० ना० पुं० भक्त ।

भक्ताई० ना० स्त्री० भगताई, सेवकाई, भक्ति,
धर्म ।

भङ्गि० ना० स्त्री० मत, धर्म, श्रद्धा, प्रीति, सेवा

भग० ना० स्त्री० योनि, डुर, एभाग, ऐश्वर्या-
दि गुण, ना० पुं० सूर्य, भागवती-यथा, धाता

विधाता वरुणोऽथर्षमा सवितो भगः ।
 भगण० ना० पु० अक्षरीगणविशेष, जिसमें
 आदिका अक्षर दीर्घ होता है यथा, राधव ।
 भगत० ना० पु० सत् ।
 भगतन० ना० स्त्री० भगतकी स्त्री वा वेश्या ।
 भगताई० ना० स्त्री० भगतपत्नी ।
 भगतिवा० ना० पु० भवैया, कथिक, राधा,
 जाति ।
 भगन्दर० } ना० पु० गुदा में रोग विशेष ।
 भगन्धर० }
 भगनी० ना० स्त्री० बहन, भगिनी ।
 भगर० ना० पु० भगल ।
 भगल० ना० पु० छल, कपट, फरेब, इन्द्रजाल ।
 भगवत० ना० स्त्री० भागवत ।
 भगवती० ना० स्त्री० माया, आदिशक्ति, ईश्वरी ।
 भगवन्त० ना० पु० भगवान् ।
 भगवां० ना० पु० गेहवा वस्त्र ।
 भगवान्० ना० पु० ऐश्वर्यादि गुणसंयुक्त, तेजस्वी,
 प्रतापवान्, ईश्वर ।
 भगाना० स० कि० हँकाना, चलाना, दूर करना ।
 भगीरथ० ना० पु० राजा विशेष जो शीर्षगानी
 को स्वर्ग से लाया ।
 भगोल० ना० स्त्री० पराजय, ना० पु० भगोडा ।
 भगोडा० ना० पु० भागने द्वारा ।
 भगुल० ना० पु० दूत, हरकारह, भग्नु ।
 भगू० ना० पु० भगोडा ।
 भग्न० पु० पराजित, नाशित, टूटा फूटा ।
 भङ्कार० ना० पु० शब्द करना, आदिका शब्द ।
 भग० ना० पु० खण्डन, तोड़, लहर, पराजय ।
 भांग गु० भग्न ।
 भंगडा० ना० पु० जड़ी विशेष, भंगरान ।
 भंगड़ी० पु० भांग पीनेहारा ।
 भंगन० ना० स्त्री० भंगी की स्त्री ।
 भंगना० ना० स्त्री० मजली विशेष ।
 भंगा० ना० स्त्री० भांग, पत्नी विशेष ।
 भंगार० ना० पु० भंगरा, भंगदा ।

भंगी० ना० पु० भंगीही, भित्तर, सुदका, गुं
 नाशक, भेटनेवाला ।
 भंगेरन० ना० स्त्री० भंग की बेचनेहारी ।
 भंगेरा० ना० पु० भंग बेचनेहारा ।
 भंगेला० ना० पु० भंग के वचनार्थों का वस्त्र
 विशेष ।
 भञ्जक० गु० घावडा, विरिमत, अचम्भित ।
 भञ्जकना० अ० कि० अचम्भित वा विरिमत
 होना ।
 भञ्जक० ना० पु० दौरह, चालभर, निजगति
 पर्यन्त ।
 भञ्जन० ना० पु० अर्चा, पूजन, सेवन और
 नीविधि ईश्वर का यशमाना ।
 भञ्जना० स० कि० अर्चा वा पूजा वा सेवा,
 जप करना अ० कि० भागना ।
 भञ्जनी० गु० भजन करनेहारा ।
 भञ्जनीक० ना० पु० अर्चक, भजन करनेहारा ।
 भञ्जाभि० स० कि० भजताई, प्यायताई ।
 भञ्जजाना० अ० कि० भागजानी ।
 भञ्जिज० अ० कि० भागकर ।
 भञ्ज्य० अ० कि० भागके, बाँटके ।
 भञ्जन० ना० पु० खण्डन, मारन, तोड़न ।
 भञ्जाना० स० कि० तोड़ना, भुनाना, बँद
 लाना ।
 भट० ना० पु० योधा, शरवीर, भिजार,
 तनूर ।
 भटई० ना० स्त्री० भट की स्तुति, भट का
 काम ।
 भटकना० अ० कि० भूलाना, भ्रमना, चू-
 कना, टपना ।
 भटका० अ० भूलाइया, भूला, चूका, भ्रमित ।
 भटभेरा० ना० पु० मिलाप, मिलान, मिलाकात ।
 भटकाना० स० कि० बहाना, भुलाना, भड-
 काना ।
 भटकीला० पु० जिसमें भटका पायानावे ।

मङ्गरी० ना० स्त्री० फूलोंका गुच्छा फलों समूह ।
 मङ्गल० ना० पुं० अजीरवृक्ष ।
 मङ्गल० ना० पुं० नये वर्षपानी का फेर अर्थात् प्र-
 थम आपाद में वर्षनेकापानी मङ्गली की विष
 होता है, रामायणे यथा, मङ्गल मगहुं भीन कहं
 व्याग
 मङ्गार० ना० पुं० विलार, विलाव ।
 मङ्गारी० ना० स्त्री० भिन्नी ।
 मङ्गित० गु० मंजन कियोगया वा किये हुये,
 धोयागया ।
 मङ्गिष्ठ० ना० पुं० मजीठ ।
 मङ्गीर० ना० पुं० विद्युत्वा, पानका भूषण ।
 मङ्गीरा० ना० पुं० मजीरा ।
 मङ्गु० श० सुन्दर, मनोहर, चाहता ।
 मङ्गुषोप० ना० पुं० कवूतर, परेया ।
 मङ्गुषोप० ना० पुं० कवूतरी, कोयल, कोकिला ।
 मङ्गुल० श० सुन्दर, मनोहर, चाहता, अर्थात् ।
 मङ्गुला० ना० स्त्री० मजीठ ।
 मङ्गूपा० ना० स्त्री० टोकरा ।
 मङ्क० } ना० स्त्री० चोचला, भावली, अ-
 मङ्कना० } ठिलानपन, चमकन ।
 मङ्कना० ना० पुं० उरवा, बंधना, मृत्तिकाका
 धारापाव ।
 मङ्कना० श० कि० पलक वा भावली मारना,
 चमकना ।
 मङ्कना० ना० पुं० मटोर मृत्तिकाकावहावतेन ।
 मङ्कना० स० कि० आल हुमाना, चमकाना,
 दुखको विराना ।
 मङ्की० ना० स्त्री० छोटा मङ्का, चूसनी, गुल्ली,
 डगुनी, रूपकी, सेन ।
 मङ्कीठा० ना० पुं० मिट्टीका घर ।
 मङ्कर० ना० पुं० अन्न विशेष, किराड ।
 मङ्करा० ना० पुं० मङ्करविशेष, रैरामीवस्त्रविशेष ।
 मङ्करी० ना० स्त्री० मङ्क विशेष ।
 मङ्कीला० गु० जिसमें मङ्क भिराहो ।

मट्टियानां० स० कि० मिट्टीसे मांगना, अ० कि०
 । सुन, र्त्तचना, आल हुमाना, होनेदेना, शिथि-
 ल होमाना ।
 मट्टियार० ना० पुं० एकप्रकारकी धरती विशेष
 जो रेतली नहीं है ।
 मट्टियारा० गु० जो किसी कामका न हो, जाताऊ
 खती के योग्य ।
 मट्टियाव० ना० पुं० आनाकानी, आंखहुपाव ।
 मट्टी० ना० स्त्री० मिट्टी, मृत्तिका ।
 मट्टा० ना० पुं० छांछ, मटा ।
 मट० ना० पुं० शिवालय, गोसाइयों का घर, म-
 रडप ।
 मट्टी० ना० स्त्री० पकवान विशेष ।
 मटपत्ति० } ना० पुं० गोसाईं, अतिथि वा जो
 मटपत्ती० } मनुष्य शिवापितेवस्तु लेताहो ।
 मटा० ना० पुं० मट्टा, गुं टाला, धीमा, धीराप्रद
 मटोर० ना० पुं० मटका ।
 मट्टियानां० स० कि० चपकाना, मीहीलोगाना,
 जमाना ।
 मट्टोड० ना० स्त्री० ऐठ, बल, पंच ।
 मट्टोडना० स० कि० ऐठना, बलदेना, पंच-
 डलना ।
 मट्टोडा० ना० पुं० पेट में की पीड़ा, पचिस ।
 मट्टोटी० ना० स्त्री० धुरी, ऐठन, जोड़न ।
 मट्टन० ना० पुं० मट्टे की वस्तु वा काम ।
 मट्टना० स० कि० लेटना, लगाना, चिपटाना ।
 मट्टा० गुं जो मट्टागया, ना० पुं० विनाई का
 मरडप, बड़ी मट्टी ।
 मट्टिया० ना० स्त्री० छोटी मट्टी ।
 मट्टा० ना० स्त्री० कुटी, कोपड़ी, मरडप ।
 मट्टि० ना० स्त्री० भूषण के लिये पाषाण विशेष,
 हीरा मोती आदि चमकदार, शिरोमणि और मू-
 सिद्ध है कि वस्तु विशेष सपे के पास होती है
 जो राखीको प्रकाशित रहती है ।

भटार्ई० ना० स्त्री० बहादुरी, लड़ाई, भटई । ना०
भट्ट० ना० स्त्री० सखी, निधीसिंह प्रकाश, देखिके
भट्टको मैं लड़ हैरहो शिवनाथ ओढ़े पीत पट्टे सो
थटापै बालठाड़ी है ।

भट्ट० ना० पु० विद्यावान्, परिडत, दक्षिणी ब्राह्म-
णों का आस्पद, भट ।

भट्टाचार्य्य० ना० पु० परिडतों में, जो सब से
बड़ा ज्ञानवान् बंगाले के ब्राह्मणों का उपनाम वा
आस्पद ।

भट्टी० ना० स्त्री० चूल्हा विशेष ।

भठियारपन० ना० पु० भठियारे का काम ।

भठियारा० ना० पु० सराय का भाड़ा उगाहने
द्वारा, जाति विशेष ।

भठियारन० ना० स्त्री० भठियारे की स्त्री ।

भठियाल० गु० जो नदी की धारापर से बहे ।

भड़० ना० पु० बड़ी नाव विशेष ।

भड़के० ना० स्त्री० चटक, झलक, घबराहट,
झझक, चौक ।

भड़कना० अ० क्रि० झिझकना, चौकना, थांच
उठना, जल उठना ।

भड़काना० सं० क्रि० डराना, भड़काना, थांच
करना, लूका लगाना, चौकाना ।

भड़की० ना० स्त्री० चटकी, चमक, थांच, चौक ।

भड़कीला० गु० चटकीला, चमकीला, चौकीला ।

भड़केल० गु० जंगली, अनपदिचान, चौकेला ।

भड़भड़िया० गु० निष्कपट, सीधा ।

भड़भूजन० ना० स्त्री० भुजन ।

भड़भूजा० ना० पु० भुजी, भुजवा ।

भड़रिया० ना० पु० ठग, भट्टी, जोसी ।

भड़सार्ई० ना० पु० भाड़ा ।

भड़िहा० गु० चोर, चाटने हारा, पिनीना, नि-
लंबन ।

भड़िहाई० ना० स्त्री० भड़िहापन, रामायणे यथा,
सो दशशीश ज्ञान थी नाई, इत उत चिते चला
भड़िहाई ।

भड़ुवा० ना० पु० कुटना, पेश्याका भाता, पितादि ।

भड़ुवाई० ना० स्त्री० कुटनापन ।

भड़ैत० } ना० पु० भाड़ादेनेहारा प्रना ।

भड़ैती० } ना० पु० भाड़ादेनेहारा प्रना ।

भणन० ना० पु० कथन ।

भणित० गु० कथित, कहाहुया, कथित ।

भणिटका० ना० स्त्री० भांडा, बैगन ।

भणड० ना० पु० भांडा, अण्टा ।

भणडा० ना० पु० मटका, मोटी, अण्टा ।

भण्डार० ना० पु० कोठा, खाता बखार ।

भण्डारा० ना० पु० योगी, वा सन्यासी, वा

उदासियों का ज्योतार वा निमाना, भोजन ।

भण्डारी० ना० पु० भण्डारे का रक्षक, रीत

दिया, रसोइया ।

भण्डेरिया० ना० पु० भण्डरिया ।

भण्डेला० ना० पु० भांडा ।

भण्डौवा० ना० पु० निन्दा, फकड़ ।

भतरा० ना० पु० भतार, पति ।

भतरौड़० ना० पु० मधुरा वृन्दावन के मधुर

स्थान विशेष ।

भतार० ना० पु० भतार, पति, स्वामी, कर्त

भतीजा० ना० पु० भाई का बेटा ।

भतीजी० ना० स्त्री० भाई की कन्या ।

भत्ता० ना० पु० भात ।

भद० ना० स्त्री० भष्पा, धडाकी, कुपरा ।

भदभद० ना० पु० वृक्षके फल गिरने का

मनुष्य के चलनेका शब्द ।

भदभदाना० सं० क्रि० मारने से जो शब्द नि

कलता है, वारंवार मारना ।

भदभदाहट० ना० स्त्री० भदभद ।

भदाक० ना० पु० धडाक, फटाक ।

भदाका० ना० पु० धडाका शब्द ।

भदेस० } गु० जो अन्धा नहो कुडील, मोड़ा

भदेसल० } अनाड़ी रामायणे यथा, मणित भ

देतावस्तु भलिवरणी ।

भहा० गु० निर्बुद्धि, उल्लू, मोड़ा ।

भद्र० ना० पु० मांगमानी, मूँह सहित शिरक

मणिकर्णिका० ना० स्त्री० काशीनी में स्थान-
 विशेष जहाँ देवीजी के कान की मणि गिरी थी ।
 मणिका० ना० स्त्री० छोटी मणि, गुरिया ।
 मणिपूर० ना० पु० चक्र विशेष, देश विशेष, जो
 बंगाल देश के पूर्व में है ।
 मणियां० ना० पु० मालाकी गुरिया वा दाना ।
 मणियार० ना० पु० सर्प विशेष जिसके मणि
 होती है, जाति विशेष जो चूड़ी बनाता है ।
 मण्ड० ना० पु० जूस, माड़, पोच या खाता
 जिसमें शीरा भराजाता है ।
 मण्डन० ना० पु० भूषण विशेष, मिलान ।
 मण्डप० ना० पु० तृणादि से रचित देवताकाषर,
 मढ़ा, मड़वा ।
 मण्डल० ना० पु० स्थान, देश, गोला, कुंडल,
 आवासी, तल ।
 मण्डला० ना० स्त्री० घोंकवार ।
 मण्डलाकार० गु० गोलाकार ।
 मण्डलाग्र० ना० पु० सङ्ग, तलवार ।
 मण्डलाना० अ० कि० फिरना, उड़ना, यथा-
 पक्षी उड़ते हैं ।
 मण्डलिया० ना० पु० कपोत विशेष ।
 मण्डली० ना० स्त्री० समूह, सभा, बैठक, घर ।
 मण्डलीक० ना० पु० राजा, महन्त, चौधरी ।
 मण्डलेश्वर० ना० पु० राजा, मंडलपति ।
 मण्डवा० ना० पु० कुंज ना० स्त्री० मंडवी ।
 मण्डवी० ना० स्त्री० अन्न विशेष ।
 मण्डा० ना० पु० पेड़ा विशेष ।
 मंडित० गु० जड़ित, शोभित, मृषित, मढ़ा-
 हुआ ।
 मण्डियाना० अ० कि० कल्पदेना वा लगाना ।
 मण्डी० ना० स्त्री० हाट, गोला, गंज ।
 मण्डूक० ना० पु० मेंढक, भेक ।
 मण्डूना० स० कि० मढ़ना ।
 मन्त० ना० पु० धर्म दोन, सलाह, सम्मत, रीति,
 दम, डील, पन्थ अभिप्राय, बुद्धि, अर्थ्य० नि-
 पेधार्य अर्थात् नहीं, जनि ।

मन्तग० ना० पु० हाथी, मुनि विशेष ।
 मन्तना० ना० पु० ऊँस विशेष ।
 मन्तभेद० ना० पु० मन्तान्तर, अभिप्राय वा
 भेद ।
 मन्तराना० स० कि० गनाना ।
 मन्तलाना० अ० कि० जी विनाना, उवसना ।
 मन्तवाला० गु० मन्त, मन्तमाता ।
 मन्तहीन० गु० मन्तरहित, बुद्धिरहित ।
 मन्ता० ना० पु० उपदेश, सलाह, परामर्श ।
 मन्तानुसार० ना० पु० अभिप्राय के अनुसार,
 मन्त्रहव के मुवाफिक ।
 मन्तान्तर० ना० पु०
 दूसरा धर्म ।
 मन्तान्तराचार० ना० पु० द्वितीय धर्म का
 व्यवहार ।
 मन्तावलम्बी० ना० पु० मन्ताथर्या, पन्थी ।
 मन्ताथर्या० ना० पु० मन्त के आश्रित, मन्तके
 आधीन, पन्थी ।
 मन्ति० ना० स्त्री० बुद्धि, सम्मति, रीति, राय ।
 मन्तिमात्र० } गु० बुद्धिमात्र ।
 मन्ती० }
 मन्तीर० ना० पु० तरबूत, हिन्दुवाना, सप्तश-
 तिकायां यथा, मन्थर पाइ मन्तीर ही मन्त्रक
 पयोधि ।
 मन्ती० ना० पु० मन्त, सम्मत ।
 मन्त० गु० मन्तमाता, यस्त, मन्तवालाहाथी ।
 मन्तवत्० गु० मन्तमाता, मन्तमाते के समान ।
 मन्त्सर० ना० पु० डह, जलन, ईर्ष्या, गु० जलनी ।
 मन्त्स्य० ना० पु० मन्तली, देश विशेष ।
 मन्त्स्यन्ती० } ना० स्त्री० बुद्धि, जिससे
 मन्त्स्यवेधन० } मन्तली मारते हैं ।
 मन्त्स्यपित्ता० ना० स्त्री० कुटकी ।
 मन्त्स्याक्षी० ना० स्त्री० आक्षी, श्वेतदूष ।
 मन्थन० ना० पु० निशोचन, धोवोचन, छुटान ।

पुष्टन, कल्याण, चिदती, नवलखंडों में से एक का नाम गु० भला, अष्ट, मांग्यनाम् ।
 मद्रक० ना० स्त्री० प्रास, साम, स्वभाव, सुन्दरता, भलाई ।
 मद्रकाली० ना० स्त्री० दुर्गादेवी ।
 मद्रकाष्ट० ना० पु० देवदास ।
 मद्रचन्दन० ना० पु० जवासा ।
 मद्रजयच० ना० पु० इन्द्रजी ।
 मद्रपर्णिका० ना० स्त्री० कम्भारी, गन्धपसार ।
 मद्रपर्णी० ना० स्त्री० गन्धपसारन ।
 मद्रमस्त० ना० पु० नागरमोथा ।
 मद्रवती० ना० स्त्री० कायकल ।
 मद्रवृक्ष० ना० पु० गोधुम्ब ।
 मद्रधिय० ना० पु० चन्दन ।
 मद्रहोना० अ० कि० मूँछसहित शिरमुडाना ।
 मद्रा० ना० स्त्री० अशकुक समय, पक्षी दूसरी तावतीं बारहवीं तिथि, कम्भारी, गन्धपसारन, कुपत्री, कल्याणकारिणी, ना० पु० पक्षी विशेष ।
 मद्राल० ना० पु० कृथिमरुद्राक्ष ।
 मद्रिका० ना० स्त्री० दशाविशेष, कल्याणी ।
 मद्रि० ना० पु० डकीत, सामुद्रिकी, कायकल ।
 मद्रोदनी० ना० स्त्री० खिरहटी ।
 भवकना० अ० कि० क्रोधित होके दौड़ना, आग लगना, लोटे आदि से पानी गिरने का शब्द ।
 भवका० ना० पु० बड़े मुलका पात्र विशेष ।
 भवकाना० सं० कि० सुलगाता, जलाना, उफसाना, खिनाना, एङ्गारना ।
 भवकी० ना० स्त्री० धमकी ।
 भवमड० ना० पु० डर, खटका, मभराना ।
 भक० ना० स्त्री० अचानक जो आंच आदिकी कुनास आनाये ।
 भभकना० अ० कि० सनसनाना, बुलबुला उठना, खलबलाना ।
 भभर० ना० पु० डर, खटक ।

भभराना० अ० कि० खटका होना, सजना ।
 भभरि० कि० डरकर, घबड़ाकर ।
 भभूका० ना० पु० ज्योति, आंच, एकाएक आग जलउठना, गु० लाल, सुन्दर, भङ्गीलाना ।
 भभूत० ना० स्त्री० भस्म, विभूति ।
 भय० ना० पु० डर, शङ्का, खौफ ।
 भयकार० } गु० भयानक, डरोनी मूर्ति ।
 भयंकर० }
 भयचक० गु० भयंकरके जो व्याकुल हो ।
 भयद० } गु० भयानक, भयंकर ।
 भयदायक० }
 भयभीत० गु० शंकित, डराक, डराहुआ ।
 भयमान० गु० डरपोक, शंकित ।
 भया० ना० पु० भाई, कि० हुआ ।
 भयांतुर० गु० भयंकर, भयप्रस्त ।
 भयानक० गु० भयंकर, जिसको देखकर डर लगे, डरोना, रस विशेष ।
 भयापा० ना० पु० अपनाहत, भाईपन ।
 भयावना० } गु० भयंकर, भयानक ।
 भयावहा० }
 भंर० गु० पूर्ण, पूरा, सब ।
 भरका० ना० पु० जब बरीपर पानी दिया उसका नाम ।
 भरकाना० सं० कि० बरीपर पानी डालना ।
 भरण० ना० पु० पोषण, पालन, धारण ।
 भरणी० ना० स्त्री० दूसरा नखन, सांपभक्त, जीव विशेष ।
 भरत० ना० पु० अनेक धानु का मेल, राताना विशेष, जिसके नाम से हिन्दुस्तान भरतखण्ड प्रसिद्ध है, रामचन्द्रजी के भाई ।
 भरतखण्ड० ना० पु० हिन्दुस्तान ।
 भरतपुर० ना० पु० शङ्खसेन देशका एक नगर विशेष ।
 भरद्वाज० ना० पु० मुनि विशेष, संननपक्षी ।
 भरद्वाजसुत० ना० पु० द्रोणाचार्य ।
 भरन० अर्थ० तक, तलक ।

मथना० स० कि० महना, निलोचना, शंभोना,
 ना० पु० मथनी, पाय विशेष ।
 मथनिया० ना० स्त्री० मथानी ।
 मथनी० ना० स्त्री० विलोनी, महानी, उर्दी ।
 मथा० ना० पु० माथा, गु० मथाहुथा ।
 मथानी० ना० स्त्री० दूधहांडी, मटकी, चाटी ।
 मथित० गु० छांद, मट्टा जो मथागया ।
 मथुरा० ना० पु० नगर विशेष, जहां श्रीकृष्ण-
 चन्द्र जन्मे थे ।
 मथुरिया० ना० पु० मथुराके मोक्षण ।
 मथुरनी० ना० स्त्री० मथुरिया की जोरू ।
 मथौट० ना० पु० चन्दा, बिहरी, बाब्र ।
 मथौरा० ना० पु० सूर्यमुखी, छाता, छतुरी ।
 मद्द० ना० पु० गर्व, अहंकार, कस्तूरी, मादक
 वस्तु, मदिरा आदि ।
 मद्दकल० ना० पु० हाथी ।
 मद्दकारिणी० ना० स्त्री० म्बुरासानी अजवाइने ।
 मदन० ना० पु० श्रीपति, पौधाविशेष, मेनफल,
 कामदेव, प्रयुम्नजी, दौना ।
 मदनकुश० ना० पु० शिम ।
 मदनहा० ना० स्त्री० सिरहटी ।
 मदनारि० ना० पु० श्रीमहादेवजी ।
 मदनान्त० ना० पु० गु० मतवाला, मत-
 मद्दमाती० ना० स्त्री० वाली ।
 मद्दमाल० ना० पु० विछुआ, पादांगद ।
 मद्दयन्त्रिका० ना० स्त्री० मालती ।
 मदान्ध० गु० अभिमानी, मदिरा में गलित ।
 मदार० ना० पु० आक, अर्क ।
 मदारिया० ना० पु० मदारका फूल ।
 मदारी० ना० पु० संपरा, नटर, सोपवाला ।
 मदिफ० गु० अहंकारी, मदान्ध ।
 मदिरा० ना० स्त्री० शराब, दारू, ना० पु०
 छन्द ।
 मदीकट० ना० पु० कपित, क्यूतर ।
 मदीकट० ना० पु० हाथी ।
 मधुशुर० ना० पु० मोगरा, मत्स्य विशेष, सुदार ।

मद्य० ना० स्त्री० सरा, मदिरा, शराब ।
 मद्यगन्धा० ना० स्त्री० मौलसिरी ।
 मद्यप० ना० पु० अधिक मदिरा पीनेवाला ।
 मद्या० ना० स्त्री० बकरी ।
 मधुमाता० गु० मतवाला ।
 मधुवोपित० ना० पु० कंकोल, मिरवा ।
 मधु० ना० पु० मदिरा, पुष्प का रस, शहद,
 पानी, चैत्रमास, वसंतऋतु, वृष, दूध, अमृत,
 दैत्य विशेष ।
 मधुक० ना० पु० मधुआ वृक्ष ।
 मधुकर० ना० पु० अमर, भौरा ।
 मधुकरी० ना० स्त्री० अमरी, भौरी, रोटीविशेष ।
 मधुकर्कटिका० ना० स्त्री० मधुकर्की ।
 मधुकोप० ना० पु० मधुमाती का वृत्ता ।
 मधुकोप० ना० पु० मधुआ वृक्ष ।
 मधुग० ना० पु० मधुआ मेद ।
 मधुवृण० ना० पु० ऊत, गन्ना ।
 मधुदूतिका० ना० स्त्री० कोयल ।
 मधुद्रुम० ना० पु० मधुपवृक्ष, चैत्रके वृक्ष ।
 मधुप० ना० पु० भौरा, अमर ।
 मधुपर्क० ना० पु० पूजाके सामग्री, मधु श्रीर-
 दही आदि मिलाकर खाना ।
 मधुपर्णी० ना० स्त्री० दूधिया, पौधा ।
 मधुपर्श० ना० पु० पका रसीला फल ।
 मधुपुर० ना० पु० } मथुराजी ।
 मधुपुरी० ना० स्त्री० }
 मधुफला० ना० पु० अण्ड, दात ।
 मधुमल० ना० पु० मोग ।
 मधुमखी० ना० स्त्री० शहदकी मक्खी, ममाखी ।
 मधुमात० ना० पु० रागिनी विशेष ।
 मधुमास० ना० पु० चैत्रमास ।
 मधुयष्टी० ना० स्त्री० गुलहटी ।
 मधुयोनि० ना० पु० अण्ड, दात ।
 मधुर० गु० मीठा, चाहता, सुन्दर, अच्छा ।
 मधुरमल० ना० पु० मोग ।
 मधुरस० ना० स्त्री० सुहरी, अण्ड, दात ।

भिगाना० }
 भिगोना० } स० कि० गीला वा थोदाकरना ।
 भिजाना० }
 भिटनी० ना० स्त्री० कुच के ऊपर नोक फुनगी ।
 भिङना० अ० कि० मिलना, सटना, लड़ना ।
 भिङाना० स० कि० भिलाना, सटाना, लड़ाना ।
 भिण्डपाल० ना० पु० गोकना, धनवासी, जिस
 में देला रखकर पुमाय के चलते हैं ।
 भिएडी० ना० स्त्री० तरकारी विशेष ।
 भित्ती० ना० स्त्री० भीत, दीवार ।
 भिनकना० } स० कि० मक्खी उड़नेसे
 भिनभिनाना० } जो शब्द निकले ।
 भिनसार० ना० पु० तड़का ।
 भिन्न० यु० पृथक् चलना, फटना ।
 भिन्नता० ना० स्त्री० अलगहाट ।
 भिन्नाना० अ० कि० शिरधूमजाना, चकराना ।
 भिन्सार० ना० पु० मोर, प्रात, तड़का, सवेरा ।
 भिरना० अ० कि० भिड़ना ।
 भिरत० ना० स्त्री० चरट, लड़ाई ।
 भिलावां० ना० पु० वृक्ष वा उतका फलविशेष,
 जो देहमें लगने से बाला पड़थाता है ।
 भिलौजी० ना० स्त्री० भिलावांका बीज ।
 भिपकू० } ना० पु० वैद्य, हकीम, तबीब ।
 भिपज० }
 भिक्षा० ना० स्त्री० भीख, खैरात ।
 भिक्षाटन० ना० पु० भीखमांगना वा भीख मांग-
 ने के लिये फिरना ।
 भिछु० ना० पु० दण्डी, सन्यासी, स्याङ्गी पौधा ।
 भिछुक० ना० पु० भिलारी ।
 भी० अ० च, है और ।
 भीख० ना० स्त्री० भिखा, भैंगई ।
 भीगना० } अ० कि० गीला वा थोदाहोना,
 भीजना० } दुःखी होना ।
 भीज० गु० गीला, भीगा भया ।

भीठ० ना० स्त्री० ऊँची-धरती वा जिस स्थान-
 पान उत्पन्न होते हैं ।
 भीड़० ना० स्त्री० मण्डली, ठठ, बहुतात, कूट ।
 भीड़ा० ना० पु० संकीर्ण ।
 भीत० यु० डरा, भययुक्त, ना० स्त्री० दीवार ।
 भीतर० अ० च, अन्तर, बीचमें ।
 भीतरिया० ना० पु० भीतर रहनेवाला वा जो
 मनुष्य देशालयका प्रधानता से कामकरता है अर्थात्
 भण्डारी, रसोइया, पुजारी ।
 भीतरी० ना० पु० भीतरिया, यु० भीतर का ।
 भीति० ना० स्त्री० भय, शंका, दीवार ।
 भीम० ना० पु० भय, अमलवेत वृक्ष, युधिष्ठिर
 का भारी, गु० भयानक, भयंकर ।
 भीमसेन० ना० पु० पांडका दूसरा पुत्र ।
 भीमसेनी० ना० पु० कपूरविशेष ।
 भीर० ना० स्त्री० भीड़ ।
 भीरु० } यु० कायर, डरपीक ।
 भीरुक० }
 भील० ना० पु० जातिविशेष ।
 भीलन० } ना० स्त्री० भीलकी जीरु ।
 भीलिन० }
 भीलुक० गु० भीरुक ।
 भीषण० ना० पु० भय, गु० भयानक, भयंकर ।
 भीष्म० ना० पु० शिवजी, कौरवों का दादा ।
 भीष्माष्टमी० ना० स्त्री० मातृश्री-शुक्लाष्टमी ।
 भुहार० } ना० पु० राजा ।
 भुआज० }
 भुकु० गु० भोक्ता, भोगी, खानेहार ।
 भुक्त० गु० जो भोजन किया गया है ।
 भुक्ति० ना० स्त्री० भोगवस्तु, भोजनादि ।
 भुगतना० अ० कि० सुल वा दुःखका भोगना,
 पुण्य वा पाप का उठाना, व्यतीतहोना ।
 भुगतमान्० गु० जो भुगतने के योग्य है ।
 भुगताना० स० कि० भोगकराना, निपटाना ।
 भुग्ना० गु० सीधा, भोला ।
 भुच्च० अन्नगद, मूल, जो छीला नहीं गया ।

मधुरा० ना० स्त्री० काकोली ।
 मधुरी० गु० स्त्री० मीठी; रसीली ।
 मधुराश्र० ना० पु० मीठा भोजन यथा रसावर ।
 मधुलिह० } ना० पु० भौरा, अमर ।
 मधुलिह० }
 मधुवन० ना० पु० मधुरा नगर ।
 मधुयत० ना० पु० मधुकर, भौरा, अमर ।
 मधुशिग्र० ना० पु० अगस्त्य वृक्ष ।
 मधुश्रवा० ना० स्त्री० गुडहर, संजीवन वृटी ।
 मधुष्ठीली० ना० पु० महुआ वृक्ष ।
 मधुष्ठीव० ना० पु० गुडहर ।
 मधुसूदन० ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्र ।
 मधूक० ना० पु० महुआ वृक्ष ।
 मधुकरि० ना० स्त्री० पकिये, अन्नकी भिन्ना जो
 अतिथि को देते हैं, भौरा, रोटी ।
 मधूनका० ना० स्त्री० मुलहठी ।
 मधूप० ना० पु० गुडहर ।
 मधोर्दन्ती० ना० स्त्री० कुम्भी तालाब की ।
 मध्य० अव्य० अन्तराल, बीच, विषय ।
 मध्यदिवस० ना० पु० दुपहर ।
 मध्यदेश० ना० पु० मुख्य वानर, बीच का देश;
 अर्थात् हिमालय और विष्णु और प्रयाग और
 कुरुक्षेत्र के मध्यका देश, अवध आदि ।
 मध्यभाग० ना० पु० मध्यस्थान ।
 मध्यम० गु० न भला, न बुरा, समासम, धीरे-
 धीरे न्यूनाधिक रहित, रागका स्वर विशेष ।
 मध्यमपुरुष० ना० पु० मध्यभागीनर, सामने-
 वाला, मुख्यातिव, हाजिर ।
 मध्यमा० ना० स्त्री० अनामिका और तर्जनी के
 बीचकी अंगुली ।
 मध्यलोक० ना० पु० मनुष्यलोक ।
 मध्यवर्ती० } ना० पु० विचित्रया, विचवई,
 मध्यस्थ० } समानवर्ती ।
 मध्यस्थल० } ना० पु० कटि, कमर, बीचका
 मध्यस्थान० } स्थान ।
 मध्याह्न० ना० पु० ठाकदोपहर, दिनका बीच ।

मध्वा० ना० स्त्री० मदिरा; शराव ।
 मन० ना० पु० चित्त; हृदय; आत्मा; ४० शेरका ।
 मनकामना० ना० स्त्री० मनोरोग ।
 मनघटा० ना० पु० कुवाकी जगत ।
 मनचला० गु० चरफरा, अगमना, सूझा ।
 मनजात० ना० पु० कामदेव ।
 मनत० ना० स्त्री० मनीता, स्वीकार ।
 मनन० ना० पु० चिन्तन, मनसूवा ।
 मनभावन० } गु० आद्य, भला, चाहता ।
 मनभावना० }
 मनमत्त० ना० पु० कामदेव ।
 मनमारना० स० कि० अपनी इच्छाको रोकना ।
 मनमोहन० ना० पु० राजन, प्यारा, श्रीकृष्ण-
 चन्द्रका एक नाम जो मनको मोहलेवे ।
 मनस्विनी० ना० स्त्री० पतिव्रता स्त्री ।
 मनसा० ना० स्त्री० इच्छा, अर्थ विचार; इरादा ।
 मनसिज० ना० पु० कामदेव ।
 मनसी० ना० स्त्री० संकल्पकी, देनेकी इच्छाकी ।
 मनसेधू० ना० पु० मनुष्य ।
 मनस्ताप० ना० पु० मनकी पीडा ।
 मनहु० अव्य० माना, जाना ।
 मनहारी० गु० मन का हरण करनेवाला ।
 मनाना० स० कि० अंगीकार करवाना, आकर-
 लेना, वहलाना, मनकी धामना; कृपालुकरना ।
 मनावना० स० कि० मनाना ।
 मनि० ना० स्त्री० मणि ।
 मनिका० ना० स्त्री० मणिका, दाना, शरियों ।
 मनिहार० ना० पु० चूड़ीवाल, जाति विशेष ।
 मनिहारी० ना० स्त्री० चूड़ी बेचनेवाली ।
 मनीषा० ना० स्त्री० बुद्धि ।
 मनीषी० ना० पु० बुद्धिमान्, खतुर ।
 मनु० ना० पु० स्वायंभुव आदि १४ जो प्रत्येक-
 कल्प में होते हैं, स्वायंभुवमनु विरचित स्मृति,
 ब्रह्मा, ब्रह्मी का पुत्र, प्रथम मनुष्य ।
 मनुआ० ना० पु० मन, बिलार, ना० स्त्री० कई
 विशेष ।

भुक्त्वा० ना० पु० वृत्त विशेष ।
 भुज० ना० स्त्री० बाहु, दण्ड, मंड, भोजनपत्र ।
 भुजग० ना० पु० सांप ।
 भुजंग० } ना० पु० कालासर्प विशेष, पु०
 भुजंगम० } काला ।
 भुजंगपणिनी० ना० स्त्री० नामदेवी ।
 भुजंगिनि० ना० स्त्री० सर्पिणी ।
 भुजा० ना० स्त्री० भुज, बाहु ।
 भुजाभूषण० ना० पु० बाजूबन्द ।
 भुजाली० ना० स्त्री० तलवार विशेष, बाजूबन्द ।
 भुजिया० ना० स्त्री० भोजी ।
 भुङ्गा० ना० पु० वाली ज्वारकी, बड़ी ज्वार ।
 भुण्डली० ना० पु० कीडा विशेष ।
 भुतना० ना० पु० छोटा भूत, भोकस ।
 भुतनी० ना० स्त्री० भुतने की स्त्री ।
 भुतवा० ना० पु० भुतना ।
 भुताहा० पु० जो भूतके समान है ।
 भुतियाना० अ० कि० भुताहा होना ।
 भुनि० अ० मानो, गोया, सी ।
 भुना० अ० कि० कहलना, भुनना, पकना ।
 भुसुरा० पु० सूखी बुकनी ।
 भुसुराना० स० कि० खोन आदि खाने की
 वस्तु पर छिड़कना, डरकाना ।
 भुलसना० अ० कि० भुलसना, जलमाना ।
 भुलाना० स० कि० भुलकराना, फुसलाना ।
 बहकाना ।
 भुलावा० ना० पु० धोखा, ठगपन ।
 भुव० ना० पु० स्वर्ग, आकाश, अम्बर, धरती ।
 भुवंग० } ना० पु० भुजंग, सांप ।
 भुवंगम० }
 भुवन० ना० पु० जगत्, संसार, लोक, मन्दिर,
 आकाश, पानी, भोग, १४ लोक ।
 भुवाल० } ना० पु० राजाधिराज, बादशाह,
 भुवाल० } राजा, भूमिपाल ।
 भुस० ना० पु० चोकर, चक्र ।
 भुशुण्ड० ना० पु० माया, शिर, टोंट ।

भुशुण्डी० ना० स्त्री० तोप, बन्दूक, रामायण
 विशेष ।
 भुसूडा० ना० पु० भुशुण्ड, कमल फी जड़ ।
 भुसेरा० ना० पु० }
 भुसेला० ना० पु० } स्थान विशेष जिस में
 भुसौरा० ना० पु० } भूसा रखते हैं ।
 भुसौरी० ना० स्त्री० }
 भू० ना० स्त्री० पृथ्वी, धरती ।
 भूईडोल० ना० पु० भूकम्प, हालाचाला ।
 भूई० } ना० स्त्री० भूमि ।
 भूई० }
 भूजा० ना० पु० भूभुजा ।
 भूसना० अ० कि० ही ही करना ।
 भूकम्प० ना० पु० भौचाल, हालाडोला ।
 भूख० ना० स्त्री० लुपा ।
 भूखा० पु० लुगात ।
 भूगोल० ना० पु० धरामण्डल ।
 भूचर० ना० पु० पृथ्वीपर चलनेवाले जन्तु ।
 भूजन० ना० पु० पृथ्वीपरके मनुष्य, भोगना ।
 भूङ्गा० ना० स्त्री० रेतली धरती ।
 भूत० ना० पु० अतीतकाल, पृथिव्यादि पंचतत्त्व
 अर्थात् पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, नभ, और
 प्रेतविशेष, जीव ।
 भूतधनी० ना० स्त्री० तुलसी ।
 भूततया० ना० स्त्री० श्रीसीतानी ।
 भूतनाथ० ना० पु० श्रीमहादेवजी ।
 भूतनाशन० ना० पु० हाँग ।
 भूतनी० ना० स्त्री० प्रेतनी ।
 भूतदुला० ना० स्त्री० निकन ।
 भूतपति० ना० पु० भूतनाथ, शिवजी, भैरव ।
 भूतभक्षी० ना० पु० समुद्रलोचन ।
 भूतल० ना० पु० पृथ्वी, धरातल ।
 भूतवास० ना० पु० नरेश ।
 भूतवृत्त० ना० पु० स्थान ।
 भूति० ना० स्त्री० विभूति, सम्पदा, रास, मुक्ति ।

मनुज० ना० पु० मनुष्य, आदमी ।
 मनुजाद० ना० पु० अक्षर, दैत्य, राक्षस ।
 मनुष्य० ना० पु० मानव, मर्त्य, आदमी ।
 मनुष्यता० स्त्री० } मनुसाई, पुरुषार्थ, भल-
 मनुष्यत्व० पु० } मनसात ।
 मनुसाई० ना० स्त्री० पुरुषार्थ, मनुष्यता, भल-
 मनसी ।
 मनुहार० ना० स्त्री० मोहनी, सुन्दरी ।
 मनो० अल्प० मानो, जानो ।
 मनोगुप्त० ना० स्त्री० मनसिल ।
 मनोज० ना० पु० कामदेव ।
 मनोभव० ना० पु० कामदेव ।
 मनोयोग० ना० पु० मनका योग ।
 मनोरथ० ना० पु० इच्छा, कामना, वासना,
 मतलब ।
 मनोरम० ना० पु० सु० मनोस, सुन्दर, कुन्द ।
 मनोहर० गु० मनका हरनेहारा, मनोस ।
 मनोस० गु० सुन्दर, स्वरूप, चाहता, मनभावित,
 मनको जाननेहारा ।
 मनोती० ना० स्त्री० जामिनी ना० पु० विचपर,
 और मण्यस्थ ।
 मन्त्र० ना० पु० टोटका, वशीकरणी, लटक,
 एकान्त वा गुप्त उपदेश, सम्मति, सलाह ।
 मन्त्रणा० ना० स्त्री० परामर्श, विचार, उपदेश ।
 मन्त्रराज० ना० पु० तारकादि मन्त्र ।
 मन्त्री० ना० पु० जिसके साथ परामर्श की जावे,
 वशीर, सम्मति, सलाही, गु० मन्त्रजानने
 हारा ।
 मन्थन० ना० पु० मथन ।
 मन्यरा० ना० स्त्री० केकयी की दासी विशेष ।
 मन्थित० गु० छाक, मट्टा, मथित ।
 मन्थी० ना० पु० चन्द्रमा, कामदेव, नाका, स्व-
 भातु अर्थात् राहु, शनिश्चर ।
 मन्द० गु० अल्प, थोड़ा, शिथिल, धरा, दुष्ट,
 नीच, अभागी, धीरा, मलिन, ना० पु० पाप,
 शनिश्चर, अज्ञान ।

मन्दतर० गु० अतिमन्द, अतिनीच ।
 मन्दर० ना० पु० पर्वत विशेष ।
 मन्दरा० ना० पु० गुचगीना, गु० नादा,
 ठिगना ।
 मन्दराचल० ना० पु० मन्दर ।
 मन्दराज० ना० पु० समुद्र के तट पर नगर
 विशेष ।
 मन्दा० गु० धीरा, कोमल, नम्र, सस्ता, हलका ।
 मन्दाकिनी० ना० स्त्री० श्रीगंगानी, स्वर्गीय ।
 मन्दार० ना० पु० कमल, मदार, कल्पवृक्ष ।
 मन्दिर० ना० पु० घर, देवालय ।
 मन्दिरा० ना० पु० मनीरा ।
 मन्दोदरी० ना० स्त्री० रावण की स्त्री, पांचवीं
 कन्या ।
 मन्मथ० ना० पु० कामदेव ।
 मन्वन्तर० ना० पु० एक मनुका राज्य, अर्थात्
 इकहत्तरि युगका परिमाण वा दो मनुष्यों के मन्थ
 का काल ।
 मपान० ना० पु० नाप, परिमाण ।
 मपाना० स० क्रि० माप करवाना, नपाना ।
 मफेनक० ना० पु० अफयून, अफीम ।
 मम० सर्व० मेरा, मैं, ना० स्त्री० ममता,
 ईर्ष्या ।
 ममता० स्त्री० } धमसुड, दम्भ, मनमौज, माया,
 ममत्व० पु० } मोह, दया, प्यार ।
 ममास्त्री० ना० स्त्री० मधुमक्खी ।
 ममियासास० ना० स्त्री० पति वा पत्नी की
 ममानी ।
 ममियाससुर० ना० पु० पति वा पत्नी का
 मामू ।
 ममेरा० गु० मामूका यथा, मामूका पुत्र ।
 ममेरासाई० ना० पु० मामूका पुत्र ।
 ममीशु० ना० पु० मेराईश्चर, मेरास्वापी ।
 मय० ना० पु० कार्य, प्रधान, रूप, दैत्य विशेष,
 दिया गु० बहुत ।
 मयकल० ना० पु० पर्वत, विशेष ।

भूतिक० ना० पु० कपूर ।
 भूतेश० ना० पु० भूतनाथ ।
 भूदेव० ना० पु० ब्राह्मण ।
 भूधर ना० पु० पर्वत, राजा, हाथी, मेघ, साँप,
 शैव, गौ, सूर्य, कश्यप ।
 भूधात्री० ना० पु० भूआवला ।
 भूनना० स० क्रि० पकाना, कहलाना, तलना ।
 भूनिम्ब० ना० पु० चिरायता ।
 भूप० } ना० पु० राजा, महीपति ।
 भूपति० }
 भूपपद० ना० पु० राज्य, बादशाहत ।
 भूपाल० ना० पु० भूपति, राजा, महीपति ।
 भूमल० ना० पु० गरम रस ।
 भूमृत्० ना० पु० पर्वत, पहाड़ ।
 भूमण्डली० ना० स्त्री० बिल्व, धरामण्डल ।
 भूमध्यस्थ० ना० पु० जो समुद्र रूपांशु है ।
 भूमि० ना० स्त्री० धरती, पृथ्वी, जमीन ।
 भूमिका० ना० स्त्री० दीवाजह, सारथी ।
 भूमिज० ना० पु० मंगल, भौमासुर, जडिग,
 लौह ।
 भूमिनाग० ना० पु० साधारण साँप ।
 भूमिपति० } ना० पु० राजा, महीपति ।
 भूमिपाल० }
 भूमिया० ना० पु० भूमिका देवता ।
 भूमीश० ना० पु० भूपाल, राजा ।
 भूयः० अथ० पुनः, फिर ।
 भूयोभूयः० अथ० पुनः पुनः, फिर फिर ।
 भूर० } ना० स्त्री० दक्षिण, बाङा, दात ।
 भूरसी० } भील ।
 भूरा० शु० सरा, कपिल, पिगल ।
 भूरि० ग० बहुत अधिक ।
 भूर्ज० ना० पु० भोजपत्र ।
 भूर्जतल० ना० पु० भोजपत्र वा उरुका वृक्ष ।
 भूर्जपत्र० ना० पु० भोजपत्र ।
 भूल० ना० स्त्री० विस्मरण, चूक, धोखा ।

भूलना० अ० क्रि० विसरना, भूकना, भटकना,
 खोजना, लोपहाना ।
 भूलाविसरा० } गु० जो भटक गया ।
 भूलाभटका० }
 भूलोक० ना० पु० मत्स्यलोक ।
 भूषण० ना० पु० आभरण, गहना, शोभा ।
 भूपित० गु० अलंकृत, भूषणयुक्त, शोभित ।
 भूसा० ना० पु० गेहूँ और जौ आदिका मूल
 तृण ।
 भूसिता० ना० स्त्री० अकील ।
 भूसी० ना० स्त्री० बिलका, धान आदिका पीके
 घृण ।
 भूसुता० ना० स्त्री० थीतीताजी ।
 भूसुर० ना० पु० ब्राह्मण ।
 भूस्वामी० ना० पु० भूपति ।
 भृकुटी० ना० स्त्री० भौह, भू, इका ।
 भृगु० ना० पु० सुतिविशेष, वासना ।
 भृगुनन्दन० ना० पु० भृगु ।
 भृगुनाथ० ना० पु० भृगु ।
 भृगुनायक० ना० पु० परशुराम ।
 भृगुपति० ना० पु० परशुराम ।
 भृगुवन्धु० ना० पु० कुन्दमुष्ण ।
 भृगुमवा० ना० स्त्री० भंगरी श्रीपति ।
 भृंग० ना० पु० अमर, भौरा, कीटविशेष ।
 भृंगराज० ना० पु० आदीविशेष, पक्षीविशेष
 भंगरा, वृदी ।
 भृंगाह० ना० पु० भंगरा वृदी ।
 भृंगारि० ना० पु० भृंगुर ।
 भृंगी० ना० स्त्री० कुम्हारी, कीट, कीड़ावृक्ष
 जो भृंगुरकी लाकर निजरूप करताह; शिखर
 विशेष ।
 भृत्य० ना० पु० दात, सेवक, गुलाम ।
 भृत्यगण० ना० पु० सेवकों का समूह ।
 भृत्या० ना० स्त्री० दाती, लोड़ी ।
 भेड० ना० पु० प्रकार, रचना, भेद, सम्यक ।
 भेगा० शु० स्वर्गपाताली, देरा ।

मयंक० ना० पु० खन्द्रमा ।
 मयन० ना० पु० कामदेव ।
 मयना० ना० स्त्री० पार्वती की माता, मैना ।
 मयसुता० ना० स्त्री० मन्दोदरी ।
 मया० ना० स्त्री० माया, दया ।
 मयूर० ना० पु० मोर, पक्षी विशेष० हंस ।
 मयूरक० ना० पु० ऊंगा ।
 मयूरप्रविक्क० ना० पु० नीलाशुभा, तृतीया ।
 मयूरचोख० ना० पु० स्योना ।
 मयूख० ना० पु० किरण ।
 मरक० ना० पु० सर्वव्यापक रोग महामारी ।
 मरकत० ना० पु० नीलम, नीलमणि, प्रवाल ।
 मरकन्दा० } यु० मारिहारा ।
 मरकहा० }
 मरगजी० ना० पु० मुरभाया हुआ मरगशब्द
 फारसीका अर्थात् मीठ और जो जीव अर्थात्
 मृत्वा जीव यह शब्द सतसई में है ।
 मरघट० ना० पु० मृतकों के जलाने का स्थान ।
 मरजाना० अ० कि० मरना ।
 मरजिया० ना० पु० समुद्र से मीठी निकालने
 हारेका नाम ।
 मरण० ना० पु० प्राणवियोग, मृत्यु ।
 मरदनिया० ना० पु० मर्दनी ।
 मरना० अ० कि० प्राण निकलना ।
 मरपच० अ० अ० सरि० गन्दा, जीर्ण ।
 मरपचना० अ० कि० दुःख वा शोकका भोग
 करना, अत्यन्त उद्यम करना, बहुत परिश्रम
 अर्थात् मिहनत करना ।
 मरभूखा० अ० उपसा, लीमा, खाऊ, नडपटा ।
 मरमर० ना० पु० पाषाण विशेष, विद्यौर ।
 मरमरोना० अ० कि० चरचरोना, यथा० नई
 जूती बोलती है ।
 मरवैया० ना० पु० मरनेहारे वा मारनेहारे,
 मृतक ।
 मरहटा० ना० पु० छन्द विशेष, जाति विशेष ।
 मरा० अ० मरगया, मृतक ।

मराल० ना० पु० हंस, चतक ।
 मराली० ना० स्त्री० मराल की स्त्री, अचाद ।
 मरिचि० ना० स्त्री० मिरच, कालीमिरच ।
 मरोचि० ना० स्त्री० किरण, लहरी, ना० पु०
 मुनि विशेष ।
 मरोचिका० ना० स्त्री० मृगतृष्णा, शराव ।
 मरु० ना० पु० रेत, बालू ।
 मरुद्धा० ना० पु० पौधा विशेष, जिसमें सुगन्धि
 होती है ।
 मरुक० ना० पु० मरुद्धा ।
 मरुप्रिय० ना० पु० ऊ० ।
 मरुद्धवा० ना० स्त्री० इन्द्रवाणी, जवाला ।
 मरुभूमि० ना० स्त्री० मारवाड़की धरती, रेतली ।
 मरुख० ना० पु० मरुद्धा ।
 मरुत् ना० पु० वायु, पवन ।
 मरोड़० ना० स्त्री० मरोड़ ।
 मरोड़ना० अ० कि० मरोड़ना ।
 मरोड़फली० ना० स्त्री० पौधाविशेष की फली ।
 मरोड़ा० ना० पु० मरोड़ा ।
 मरोड़ी० ना० स्त्री० मरोड़ी, एंठन, मुरही ।
 मरोर० ना० स्त्री० मरोर ।
 मरोरना० अ० कि० मरोड़ना ।
 मरोह० ना० स्त्री० छोड़, पार, माया, भलम-
 नसात ।
 मरोही० अ० छोड़ी, मायावन्त, दयाशील ।
 मरुट्ट० ना० पु० वानर, कपि ।
 मरुट्टी० ना० स्त्री० काचवीज, जाल, मरुडी,
 वानरी, गणित मरुट्टी जो पिंगल में है ।
 मरुत्य० ना० पु० मरुत्यु ।
 मरुत्लोक० } ना० पु० मरुत्युलोक ।
 मरुत्यलोक० }
 मर्दक० ना० पु० पवार पौधा, अ० मलने
 हारा ।
 मर्दन० ना० पु० शरीर का मलना, रगड़ना,
 पिसाव, नोशन ।
 मर्दना० अ० कि० मलना, नोशना, मिटाना ।

भेट० ना० स्त्री० भेट ।
 भेटना० स० क्रि० भेटना ।
 भेक० ना० पु० भेक, भेष ।
 भेज० ना० स्त्री० लगाने, धरतीका पठान ।
 भेजना० स० क्रि० पठाना, पढ़ाना ।
 भेजा० ना० पु० इडा मस्तकका, भीतरी मांस ।
 भेट० ना० स्त्री० दर्शन, मुलाकात, सौगात, श्राप, उपायन, उपहार, नस्तर ।
 भेटना० स० क्रि० मिलना, उपायन करना ।
 भेटा० ना० स्त्री० } चोट, टटा, भटना, भि-
 भेटू० ना० पु० } लया ।
 भेड़० ना० स्त्री० भेड़, भेषकी जाति विशेष ।
 भेड़ा० ना० पु० भेड़ा ।
 भेड़िया० ना० पु० विक, दुष्ट ।
 भेड़ियाधस्तात० ना० पु० गचपच करके मण्डनी ।
 भेड़ी० ना० स्त्री० भेड़ी, भेष ।
 भेद० ना० पु० भिन्नभाव, नीचविशेष, उत्त वात, मर्म, छेद, अन्तर, फर्क, क्रिम ।
 भेदक० गु० भेदकरानेहारा, पापायभेद ।
 भेदकिया० ना० पु० भेदलगानेहारा, खोजी ।
 भेदन० ना० पु० भेद करने का काम ।
 भेदिका० } ना० पु० भेदकरानेहारा, खोजी,
 भेदिया० } जायस, पातिया, मर्म जानने
 भेदी० } हारा ।
 भेदू० ना० पु० भेदरानेहारा ।
 भेद्य० गु० भेदके योग्य ।
 भेना० ना० स्त्री० नहन ।
 भेर० } ना० स्त्री० राजा विशेष, कर्जायम
 भेरि० }
 भेरी० }
 भेला० ना० पु० भिलावा ।
 भेली० ना० स्त्री० गुडका डेला ।
 भेष० ना० पु० भाव, प्रकृति, स्वभाव, मर्म
 भेद ।

भेष० ना० पु० रूप, शाल, सूत ।
 भेषज० ना० पु० श्रौषधि, दवा ।
 भेषरज० ना० पु० भंगरा ।
 भैस० ना० स्त्री० महिषी ।
 भैसा० ना० पु० महिष, नामूसा ।
 भैसिया० ना० स्त्री० छोटी भैस ।
 भैसियादाद० ना० पु० दाद रोग विशेष ।
 भैचक० गु० भयचक ।
 भैमी० ना० स्त्री० माघ शुक्र एकादशी, दमयन्ती, नलकी स्त्री ।
 भैया० ना० पु० भाई ।
 भैरव० ना० पु० रागविशेष, शिवजीका उत्तम सहचर, पृथा, कराल ।
 भैरवी० ना० स्त्री० रागिनी विशेष, भैरवकी स्त्री, दुर्गा ।
 भैहू० } ना० स्त्री० छोटे भाई की स्त्री ।
 भैहा० }
 भौकना० स० क्रि० टोकना, हलना ।
 भौड़ा० गु० कुडाल, कुरूप ।
 भौदू० गु० सीधा, भोला ।
 भौपं० ना० पु० नरसिंहा ।
 भौई० ना० पु० कहार, कि० भिगोई ।
 भोकस० ना० पु० थोका, मन्त्री ।
 भोला० गु० भोजन में जो नियुक्त, अच्छा खानेहारा ।
 भोग० ना० पु० सुख या दुःखका उठाना वा हर्ष, सुख, खाना, नैवेद्य, विहार, विलास ।
 भोगवती० ना० स्त्री० शेषका निवासस्थान ।
 भोगा० ना० पु० सुख, ठगई, धोखा ।
 भोगी० गु० भोग करनेवाला, आनन्दी ना० पु० सांप ।
 भोग्य० गु० जो भोग करने के योग्य है ।
 भोज० ना० पु० खाना, राजा विशेष, देशविशेष जो पटना और भांगलपुर का प्रदेश है ।
 भोजन० ना० पु० आहार, खाना ।

मर्दनकूर्दन० ना० पु० भेनफल ।
 मर्दनी० शु० मलनेहारा ।
 मर्दित० शु० जो मलागया, मारागया ।
 मर्म० ना० पु० भेद, समाचार, ज्ञान, कोर,
 कठोर हृदयादि अर्थ ।
 मर्मर० ना० पु० एक पत्थर का नाम है यह शब्द
 कार्सी का है ।
 मर्मस्थान० ना० पु० शरीरके जिस स्थान का
 धातु संचातिक है, भेदका स्थान ।
 मर्मज्ञ० ना० पु० जो मर्म को जाने, ज्ञानी ।
 मर्मी० शु० भेद, भेदज्ञाता, मर्मज्ञ ।
 मर्याद० } ना० स्त्री० महत्, पति, सम्मान,
 मर्यादा० } सीमा, हृद, वादा, प्रमाण ।
 मल० ना० पु० मैल० विद्या, स्त्री की रज, पाप ।
 मलक० ना० पु० पानी, आवला, जी पिनाना ।
 मलकना० अ० कि० कहारके समान चलना, जी
 पिनाना वा उबकाना ।
 मलंग० ना० पु० पक्षीविशेष ।
 मलंगी० ना० पु० लोत बननेहारा ।
 मलत० ना० पु० रुपया वा पैसा जो विसर्गया
 हो, सिलपट ।
 मलय० ना० स्त्री० कर्दुवरी ।
 मलन० ना० पु० बाट, लोक, मलने का काम ।
 मलना० स० कि० मर्दना, विसना, मीजना ।
 मलवा० ना० पु० कृदा, मैल, वर्तन विशेष ।
 मलमल० ना० पु० कपड़ा विशेष ।
 मलमास० ना० पु० सौद, अधिमास ।
 मलमेठ० ना० पु० उजाड़, रुत्यानाश, होचुका
 जैते संवाद ।
 मलय० ना० पु० पर्वतविशेष, जो दक्षिणमें है ।
 मलयज० ना० पु० चन्दन ।
 मलयगिरि० ना० पु० पर्वतविशेष, जहाँ चन्दन
 अधिकतासे उपजता है ।
 मलया० ना० स्त्री० पदमाक, ना० पु०
 मलय ।
 मलयागिरि० ना० पु० चन्दन का रंग ।

मलयुत० शु० मैला ।
 मलवाई० ना० स्त्री० मलवानेका पैसा वा काम ।
 मलविका० ना० स्त्री० कालानिरीत ।
 मलवैया० ना० पु० मलनेहारा ।
 मल्लार० ना० स्त्री० सादी, बालार, मलने का
 काम वा पैसा ।
 मलान० ना० पु० दुःख, उदास, दुःखी ।
 मलाना० स० कि० मर्दन कराना, विसाना, मि-
 जाना ।
 मलार० ना० पु० रागविशेष ।
 मलिच्छ० गु० म्लेच्छ ।
 मलिन० शु० मलीन, मैला, उदास, ना० स्त्री०
 कालीमिरच ।
 मलिनता० ना० स्त्री० मालिन्य, अपवित्रता,
 भैलापन ।
 मलिनमुख० गु० उदास, कठोर, लिहाड़ा, दुष्ट ।
 मलिनी० ना० स्त्री० पुण्यवती, रजस्वला ।
 मलिन्द० ना० पु० अमर, भौरा ।
 मलिया० ना० स्त्री० फोष्ट वा नारियल वा मिट्टी
 का पात्र, जिसमें तेल रखते हैं, हंडिया ।
 मली० शु० मैला ।
 मलीन० शु० मैला, अपवित्र, धूंधला, उदास,
 दुःखित, व्याकुल ।
 मलीनता० ना० स्त्री० मलिनता ।
 मलेपञ्च० शु० घोड़ा जिसकी आयुदशावर्ष से
 अधिक हुई ।
 मलेच्छ० शु० म्लेच्छ ।
 मल्ल० ना० पु० आलू, जो नाइयूरु में निपुण,
 योद्धा, पहलवान ।
 मल्लयुद्ध० ना० पु० बाहुयुद्ध, कुरती ।
 मल्लार० ना० पु० मलार ।
 मल्लिक० ना० पु० पर्वत विशेष ।
 मल्लिका० ना० स्त्री० मालती, चम्बेली, पुष्प
 विशेष ।
 मल्लूर० ना० पु० मेलु, विल्व ।
 मवास० ना० पु० शरण पाला, आसरा ।

भोजनचार० ना० पु० चारप्रकार का आहार
 अर्थात् भोज्य, भक्ष्य, खद्य, चोष्य ।
 भोजपत्र० ना० पु० वृक्षविशेष की छाल ।
 भोजपुर० ना० पु० नगर विशेष ।
 भोज्य० ना० पु० जो खाने के योग्य है
 सीधा ।
 भोट० ना० पु० भोट देशके पत्त, देश विशेष, जो
 तिब्बत का एक देश है ।
 भोटन्त० ना० पु० देश विशेष जो नेपाल के
 पूर्व है ।
 भोटिया० ना० पु० भोट देश के लोग ।
 भोट्टर० } ना० पु० अन्नक, अन्नक ।
 भोट्टल० }
 भोता० शु० जो अन्न तेज नहीं है, मन्द ।
 भोपा० ना० शु० टानहा, उल्ल, वाजा विशेष ।
 भोपाल० ना० पु० देश वा नगर विशेष ।
 भोर० ना० पु० प्रातःकाल, पौड़ ।
 भोरा० ना० पु० धोखा, शु० भोला, सीधा,
 दयालु ।
 भोरे० शु० धोरे, भूले, रामायणे प्रथा, का कृति
 लाभ जीर्ण धनु तौरे । देवारांम ज्येके भोरे ।
 भोला० शु० छलहीन, सीधा, ना० पु० शिवजी ।
 भोलानाथ० ना० पु० श्रीमहादेवजी ।
 भोली० शु० सी० सीधी ।
 भौं० ना० स्त्री० सुकृती, भू, भूमि ।
 भौंकना० अ० क्रि० हौं हौं करना, मूँकता से
 बोलना, कुत्तका शब्द ।
 भौंचाल० ना० पु० भूमिकम्प, हलानावाला ।
 भौर० ना० पु० भवर ।
 भौरा० ना० पु० भ्रमर, अलि, पटपट ।
 भौरियाना० स० क्रि० किराना, घुमाना ।
 भौरि० ना० स्त्री० घोड़े के लोप विशेष भौरकी
 स्त्री, छोटी रोटी, फी ।

भौंसना० अ० क्रि० भौंकना ।
 भौं ना० पु० भय, डर ।
 भौचक० शु० भयचक ।
 भौजाई० } ना० स्त्री० बड़े भाई की स्त्री ।
 भौजी० }
 भौनास० ना० पु० बड़ा खूया जिसमें हाथी
 वांघंते हैं ।
 भौतिक० शु० जो भूत करके हाव, शरीरवा ।
 भौतिकदेह० ना० स्त्री० पक्षतत्त्वकृतशरीर ।
 भौम० ना० पु० मंगल, उद्विज, लोन, भौमा-
 सुर ।
 भौमवार० ना० पु० मंगलवार ।
 भौमासुर० ना० पु० दैत्यविशेष जिसको नाका-
 सुर भी कहते हैं ।
 भ्रंस० ना० पु० धंस ।
 भ्रम० ना० पु० भूल, चूक, सन्देह, संशय ।
 भ्रमण० ना० पु० पर्यटन, भांवर, फिरना ।
 भ्रमणा० ना० स्त्री० भ्रम, भूल, सन्देह, फिरना ।
 भ्रमभौर० ना० पु० भूलका समूह वा लोक ।
 भ्रमर० ना० पु० भौरा, अलि ।
 भ्रमरी० ना० स्त्री० भ्रमरकी स्त्री, भौरि ।
 भ्रमरका० ना० स्त्री० नावरी, सुल्फ ।
 भ्रष्ट० शु० पतित, स्वधर्महीन, छुटखला ।
 भ्रष्टा० ना० स्त्री० व्यभिचारिणी, कुलटा ।
 भ्रष्टाचार० ना० पु० अधर्म, स्वधर्महीन, सन्दे-
 हवाली ।
 भ्राजमान० शु० शोभित, सुशोभित, जेबा ।
 भ्राता० ना० पु० भाई ।
 भ्रातृज० ना० पु० भतीजा, भाईका लड़का ।
 भ्रान्त० शु० जो घुमरागया ।
 भ्रान्ति० ना० स्त्री० भूल, चूक, भ्रम, मति-
 भ्रम ।
 भ्रामक० शु० भ्रमदाता, टग, धोखा देनेवाला ।
 भ्रुव० } ना० स्त्री० मोह, पक्ति, सुकना ।
 भ्रु० }

मशक० ना० पु० ममक, जमझारुपी जलपात्र ।
 मशहरी० ना० स्त्री० मच्छड़ा के निवारणार्थ जो
 आंतरण पलंग के ऊपर रहती है ।
 मश्टणा० ना० स्त्री० थलसी ।
 मपी० ना० स्त्री० स्याही, रेशानाई ।
 मष्ट० यु० चुप, मौन, ना० स्त्री० मौनी ।
 मष्टना० ना० स्त्री० चुपकी, मौनता ।
 मस्तक० ना० पु० मच्छड़, विलार, मसा ।
 मस्तकना० अ० कि० फटना, यिरना, चसना,
 बोलना ।
 मस्तकाना० स० कि० फाड़ना, चीरना, तोड़ना,
 बुलाना ।
 मस्तकी० ना० स्त्री० दवाई, फटी, बोलों ।
 मसमसाना० अ० कि० किम् के उरसे मनकी
 बात छुपाना, छुनहानना ।
 मसलना० अ० कि० कुचलना, भाँजना और
 पीतना ।
 मसहरी० ना० स्त्री० मशहरी ।
 मस० ना० पु० मच्छड़, हसा, शरीरमें काला
 ऊंचा चिह्न विशेष ।
 मसान० ना० पु० श्मशान, मण्ड ।
 मसानिया० ना० पु० जो मृतक की वस्तु लेने ।
 मसि० ना० स्त्री० स्याही, रेशानाई ।
 मसिपात्र० ना० पु० दवायत, दवात ।
 मसिबिन्दुक० ना० पु० अनखा, फाँसलका दीका
 जो स्त्रियाँ बालक के माथे में लगाती हैं ।
 मसी० ना० स्त्री० मसि, रसि, काली ।
 मसीना० } ना० पु० दलित्वा ।
 मसुड़ा० ना० पु० दाँतों के ऊपर की मसि ।
 मसर० ना० पु० मसि विशेष ।
 मसरविदला० ना० स्त्री० कालानिमात ।
 मसुरिया० ना० स्त्री० माना विशेष, शीतला
 विशेष ।

मसं० ना० पु० छोटी-२ मुखे जो नई जवानों में
 निकलती है ।
 मसोसना० म० कि० मसोड़ना, निचोड़ना ।
 मसोसा० यु० मसोड़ा, निचोड़ा, ना० पु० दुस्त
 व्यथा, पथतावा ।
 मस्तक० ना० पु० माया, शिर, सोपडा ।
 मस्तूल० ना० पु० शम्भ जो नाव के बीचमें पाल
 चढ़ाने के लिये गाड़ते हैं ।
 मस्या० ना० स्त्री० कुटकी, कुटकी ।
 मस्याधार० ना० पु० दवायत, मसी रखने का
 पात्र ।
 मस्ता० ना० पु० मसा ।
 मह० अर्थ० माय, में, बीच ।
 महगा० यु० बड़ेमालका, काल, दुभित्त ।
 महगी० ना० स्त्री० काल, दुभित्त, कदत ।
 महन० ना० स्त्री० सुगन्धि, सुचाय ।
 महकना० अ० कि० सुवास निकलना वा उठना
 महकाना० स० कि० वासना, सोधाना ।
 महकीला० यु० सुगन्धित, सोधा ।
 महत्त्० यु० बड़ा, तेजस्वी, श्रेष्ठ, ना० स्त्री०
 बड़ाई, मर्यादा, मान ।
 महता० ना० पु० महती ।
 महति० ना० स्त्री० बड़ाई, कदर, यु० बड़ा ।
 महतिया० ना० पु० महती ।
 महतो० } ना० पु० जो महुअ गावु में प्रधान
 महतो० } होता है, मुकद्दम, महतिया ।
 महत्फला० ना० स्त्री० बड़ाई ।
 महत्त्व० ना० पु० श्रेष्ठता, बड़ाई, बड़ापन ।
 महद्भाग्य० ना० पु० बड़ाभाग्य ।
 महना० स० कि० मथना ।
 महन्त० ना० पु० मतो में जो प्रधान ।
 महन्ताइ० ना० स्त्री० महन्तका कर्मा ।
 महर० ना० पु० प्रधान वा उसकी जोड़, जोड़
 का उपनाम ।
 महरा० ना० पु० बहादुर, मोदी ।

मृगहत्या० ना० स्त्री० गर्भपातन वा विनाशन ।

मृमङ्ग० ना० पु० मृविषय, घुड़की ।

[म]

महुआ० ना० पु० अन्न विशेष ।

मकड़ा० ना० पु० कीट विशेष जो जाला बनाता है ।

मकड़ना० अ० क्रि० टेढ़ाचलना, जीघराना ।

मकड़ी० ना० स्त्री० छोटा मकड़ा, एवक ।

मकर० ना० पु० दशरत्नी राशि, मगर, मृग, मयूक ।

मकरध्वज० ना० पु० कामदेव, श्रीवलदेवजी, श्रीवामदेवजी का पुत्र ।

मकरन्द० ना० पु० पुष्पका रस, कीकिला ।

मकरन्दी० ना० पु० कमल ।

मकराकृत० गु० मधुली के डौल ।

मकराक्ष० ना० पु० खराखर का पुत्र ।

मकरी० ना० स्त्री० मधुली, मकर की स्त्री, मकड़ी ।

मकुष्ट० } ना० पु० मोठ अन्न ।
मकुष्टक० }

मकोड़ा० ना० पु० बड़ा चूड़ा ।

मकोय० ना० पु० कल वा सोधा वा झाड़ी विशेष ।

मकखन० ना० पु० नयनीत, माखन, नेत्र, मसकह ।

मकखी० ना० स्त्री० माखी, बन्दूक का माता ।

मख० ना० पु० यज्ञ ।

मखन० ना० पु० माखन ।

मखना० ना० पु० स्त्रीविशेष जिसके दाँत न हों, मुँग जिसके स्तन न हों ।

मखनिया० ना० पु० माखन बनानेहारा ।

मखाना० ना० पु० पौधाविशेष ।

मखी० ना० स्त्री० मकली ।

मग० ना० पु० मार्ग, पन्थ, नद, मगध देश ।

मगध० ना० पु० देशविशेष, जिसमें गयातीर्थ है या पटनादि नगर हैं ।

मगधभाषा० ना० स्त्री० प्राकृत भाषाविशेष जो ब्रह्मा और श्याम में प्रचलित है, जिसको वहाँ पालिक कहते हैं ।

मगण० ना० पु० गणविशेष जिसमें तीन अक्षर दीर्घ होते हैं ।

मगन० पु० मग्न ।

मगनता० ना० स्त्री० मग्नता, प्रसन्नता ।

मगर० } मकर, ग्राह, कुम्भीर ।
मगरमच्छ० }

मगरा० गु० डीठ, घमण्डी, हठीला, मचला ।

मगराई० ना० स्त्री० } डिठार, घमण्ड, मच-
मगरापन० पु० } लाहट ।

मगरेला० ना० पु० कालेरग का छोटा चीज विशेष ।

मगसिर० ना० पु० मंगसिर, अंगहन महीना ।

मगही० गु० मगध देश की वस्तु ।

मगहैया० ना० पु० मगध देश के यासी ।

मगुरी० ना० स्त्री० मधुलीविशेष ।

मग्न० गु० डूबा, प्रसन्न, हर्षित, मुदित, गलित ।

मग्नता० ना० स्त्री० प्रसन्नता, हर्ष, छन्द ।

मघवा० ना० पु० इन्द्र ।

मघवाख० ना० पु० वज्र ।

मघा० ना० स्त्री० दशरत्नी नक्षत्र ।

मघोनी० ना० स्त्री० इन्द्राणी ।

मंका० ना० पु० जापी, माला, सुभिरन, गुही ।

मंगत० } ना० पु० मिरारी ।
मंगता० }

मंगन० ना० पु० मिल्क, मिसारी, कवि ।

मंगनी० ना० स्त्री० संगार, उधार ।

मंगरा० गु० बलवान्, डीठ, मगरा ।

मंगल० ना० पु० बुराल, आनन्द, तीसरा मह, तातार देश के लोगों की तीनजाति में से एक और तीसरा मार, रागविशेष जो विवाहादि आनन्द में गायाजाता है ।

मंगलकोटी० ना० स्त्री० चटार विशेष ।

मंगलघट० ना० पु० विवाहादि का फलरा ।

महारा० ना० स्त्री० कहराई, गोपा का राग विशेष ।
 महारि० ना० स्त्री० स्त्री०, पत्नीविशेष, महारिकी स्त्री ।
 महारिक० ना० पु० स्वर्ग विशेष ।
 महारि० ना० पु० महाकृषि, महामृत्ति ।
 महा० गु० वडा, कुलीन, निपट, अति ।
 महाउग्रत० ना० पु० कदमवृक्ष, गु० महाऊँचा, महोन्नत ।
 महाकन्द० ना० पु० लहसुन ।
 महाकर्ता० गु० वडा कर्ता, निरीचकर्ता ।
 महाका० ना० पु० श्रीशिवजी का नाम, मूर्ति विशेष, जो उन्नत में है ।
 महाकुम्भी० ना० पु० कायफल ।
 महाखाल० ना० पु० समुद्रका जल जो चोड़े मुह से खल में लगा है ।
 महाघो० ना० पु० कर्कशासिही ।
 महाजन० ना० पु० उत्तमलोग, साहकार, सेठ ।
 महाजनी० ना० स्त्री० महाजन की काम ।
 महाजन्त्र० ना० पु० जाँच, फलेद ।
 महाजाल० ना० पु० पालर ।
 महातम० ना० पु० साहस्य, वडाअंधकार ।
 महातप० ना० पु० सेठुङ्ग ।
 महातल० ना० पु० पातालविशेष ।
 महातीर्थ० ना० पु० श्रेष्ठतीर्थ ।
 महातुम्बी० ना० स्त्री० बड़ी तोमड़ी ।
 महात्मा० गु० महाशय, अतिशय ।
 महात्म्य० ना० पु० महत्त्व, वडा, वडाई ।
 महाप्यागी० गु० संसार को भेट जाननेवाला ।
 महादेव० ना० पु० देवदेव, श्रीशिवजी ।
 महादुम० ना० पु० महापा, ताड़वृक्ष ।
 महान० गु० बहुतराई ।
 महानदा० ना० स्त्री० जो योग्यानीमें बिलीरी ।
 महानवमी ना० स्त्री० अक्षयनक्षत्रवर्षी ।
 महाना० ना० स्त्री० इन्द्रचारणी ।

महानिद्रा० ना० स्त्री० बड़ी नींद, मृत्यु ।
 महापञ्चक० ना० पु० संध विशेष ।
 महापातक० ना० पु० महाहत्यादि, वडापाप ।
 महापातत्री० गु० वडापापी, हत्यारा, जो वडा हत्या या गोहत्या करे ।
 महापुरुष० ना० पु० साधु मनुष्य, सिद्धपरमार्थ, श्रीनागायण, बड़ी धतार ।
 महाप्रतापी० गु० वडा तेजस्वी, एश्वर्यवान् ।
 महाप्रलय० ना० पु० जगत् का नाश जो प्रति कल्पान्त में होता है वा गिराने वडा सुष्टिमैव नशता है ।
 महाफल० ना० पु० नासियल ।
 महाफला० ना० स्त्री० पीकी, कुहड़ा ।
 महाविभ्र० ना० पु० आकार ।
 महाभारत० ना० पु० कौरव और पाण्डव का युद्ध वा उसके वृत्तान्त का पद्यरस्य ।
 महाभोगी० गु० वडा भोगी, निरिच्छामोगी ।
 महामणि० ना० पु० जेहरसुहरा ।
 महामाया० ना० स्त्री० भगवती, जगज्जनी ।
 महामुरडी० ना० स्त्री० पौधाविशेष ।
 महामेदा० ना० स्त्री० मेदा, श्रौतवि ।
 महामोह० ना० पु० अत्यन्तभ्रमानना, बडीभ्रम ।
 महारजत० ना० पु० सारथ, चापन ।
 महारस० ना० पु० उग्र, गवा ।
 महाराज० ना० पु० राजनिवास, शेरगना, साधारण वडों का सम्बोधन ।
 महारात्री० ना० स्त्री० महाराणी स्त्री ।
 महाराष्ट्र० ना० पु० देशविशेष, जातिविशेष ।
 महावह० ना० पु० भेष जो माँ में भेष है, एरुंधी घर आदि में लगाने है ।
 महावत० ना० पु० हाथीपान, फलेतान ।
 महावर० ना० पु० रंग तपस्वी, शारदा ।
 महाबला० ना० स्त्री० महर्त्वी बडी ।
 महाबाग० ना० पु० प्राची, कच्छ ।
 महाविषा० ना० स्त्री० गोद ।

मंगलद्रव्य० ना० पु० फूलआदि ।
 मंगलघार० ना० पु० तीसरां वार ।
 मंगलसमाचार० ना० पु० शुभसमाचार, अच्छी खबर ।
 मंगला० ना० स्त्री० पार्वती, दशाविशेष, म-
 सुराज्ञ ।
 मंगलाघार० ना० पु० बधावा, विवाह का गीत ।
 मंगलाचरण० ना० पु० शुभ कर्मों में गणेशादि
 देवताओं की विनय वा पूजा या नमस्कारवाक्य ।
 मंगलामुखी० ना० स्त्री० बजंत्री, गवैया, वेश्या ।
 मंगली० गु० मंगलकारक, जयवन्त ।
 मंगल्या० ना० स्त्री० सजीवन, गोरचिन्ता ।
 मंगवाना० स० कि० बुला भेजना ।
 मंगशिर० ना० पु० मार्गशीर्ष, श्रगहन ।
 मंगाना० स० कि० बुलाभेजना, उठवालेना, ज-
 लवकरना ।
 भंगूला० ना० पु० छटाभङ्ग्या ।
 भंगतर० ना० स्त्री० समाई ।
 मचक्र० ना० स्त्री० गांठ की पीड़ा, मरमराहट,
 दबन ।
 मचकना० अ० कि० गांठों में पीड़ाहोना, चरचरा-
 ना, मरमराना ।
 मचकाना० स० कि० चरचराना, झपुकना, पल-
 कमारना ।
 मचना० अ० कि० लगना, उठना, होना, रचना ।
 मचमचाना० अ० कि० चरचराना, मरमराना ।
 मचलना० अ० कि० हठकरना, मचलाहटना ।
 मचलपन० ना० पु० हट, मगरापन, दिवार्द ।
 मचला० गु० हठीला, मगरा, दौड ।
 मचलाई० ना० स्त्री० मचलापन, मचलाहट ।
 मचलाना० अ० कि० हठकरना, मतलाना, स-
 हाना करना ।
 मचलाहट० ना० स्त्री० हट, दिवार्द ।

मचलःहा० गु० हठीला ।
 मचान० ना० पु० मंच ।
 मचामच० गु० लदालद ।
 मचिया० ना० स्त्री० पीडी, जौडी, पत्नीया ।
 मचोड़ना० स० कि० निचोड़ना, एंठके तोड़ना ।
 मचड़० ना० पु० मत्स्य, मछली ।
 मच्छड़० ना० पु० मसा, छोटा कीट उड़नेहारा ।
 मच्छी० ना० स्त्री० मछली, मकली ।
 मछु० ना० पु० मत्स्य, मछली ।
 मछुन्दर० ना० पु० चूहा, गु० भूत ।
 मछली० ना० स्त्री० जलशयनी, जलतुरई, मत्स्य ।
 मछुवा० ना० पु० धीमर, कहार, मच्छीमार ।
 मछी० ना० स्त्री० मछली ।
 मछुवा० ना० पु० मछवा, धीमर ।
 मजीठ० ना० पु० श्लेषविशेष जिससे खालरा-
 वन्तता है ।
 मजीत० गु० सस्ता, जो वस्तु काम में लाई जावे
 और फिर बचीजावे ।
 मजीरा० ना० पु० मजीर, बाजाविशेष, मोक्ष
 मजूर० ना० पु० कमेरा, ठीक शब्द मजदूर है
 यह शब्द कारसी का है ।
 मज्जा० ना० स्त्री० हाड के भीतर का रस,
 चर्वा ।
 मझला० गु० मझोला, बीचवाला, मध्यवर्ती ।
 मझार० ना० पु० बीच, माझ ।
 मझेली० ना० स्त्री० मझोली ।
 मझोला० गु० जो न छोटा न बड़ा अथवा
 अच्छा और न बुरा, अर्थात् मध्यम ।
 मझोली० ना० स्त्री० छोटागाड़ी या बहल ।
 मञ्ज० ना० पु० गराज, बाजा, सिंहासन, विशप
 खाट, वेदी, मचान, तहल, तख्तपोश ।
 मञ्जव० ना० पु० दात धोने का चूर्ण विशेष,
 माजिन, स्नान, नुहाण ।
 मञ्जना० अ० कि० उजला होना, साफहोना,

महावृक्ष० ना० पु० मूसली ।
 महाशय० ना० पु० महात्मा, दाता ।
 महाशिरा० ना० स्त्री० मखली ।
 महाश्यामा० ना० स्त्री० मिथारा ।
 महाश्वेता० ना० स्त्री० विदारीकन्द ।
 महाष्टमी० ना० स्त्री० आश्विनशुक्लाष्टमी ।
 महासागर० ना० पु० समुद्र ।
 महासिद्धि० ना० स्त्री० मोक्ष, पुक्ति ।
 महास्कन्धा० ना० स्त्री० जामुन, फलेद ।
 महि० ना० स्त्री० पृथ्वी ।
 महिदेव० ना० पु० ब्राह्मण ।
 महिपाल० ना० पु० राजा, वादशाह ।
 महिमा० ना० स्त्री० महत्त्व, बड़ाई, श्रेष्ठता ।
 नेकनामा, सिद्धिविशेष ।
 महिरुह० ना० पु० वृक्ष, बर्षाआदि ।
 महिला० ना० स्त्री० नारि, स्त्री, श्रौत ।
 महिप० ना० पु० भैया, दैत्यविशेष ।
 महिपध्वज० ना० पु० यमराज ।
 महिपासुर० ना० पु० दैत्यविशेष ।
 महिपाक्ष० ना० पु० शुभल, मूल ।
 महिपी० ना० स्त्री० भैंसी, पटरानी, राजरानी ।
 महिपेश० ना० पु० यमराज ।
 मही० ना० स्त्री० पृथ्वी, ना० पु० दही, मट्टा ।
 महीधर० ना० पु० पर्वत, शेषादि, राजा, गौ,
 दिग्गज, कच्छप ।
 महीना० ना० पु० मास, मासिक, दरमास ।
 महीन्द्र० } ना० पु० राजा, पृथ्वीपति ।
 महीप० }
 महीरति० ना० पु० राजा, पृथ्वीपति ।
 महीपते० कि० प्राप्तहोतादि, जाता है ।
 महीरुह० ना० पु० महिरुह ।
 महीश० ना० पु० राजा, वादशाह ।
 महीश्वर० } ना० पु० ब्राह्मण ।
 महीसुर० }
 महुश्या० ना० पु० वृक्ष विशेष ।
 महेन्द्र० ना० पु० राजेन्द्र, प्रधान राजा ।

महेर० ना० पु० } भोजनविशेष ।
 महेरी० ना० स्त्री }
 महेला० ना० पु० घोंदके लिये पकायाहुया
 धर्वा ।
 महेश० ना० पु० श्रीमहादेवजी ।
 महेश्वरी० ना० स्त्री० पार्वती, पीतल धातु ।
 महेश्वर्य्य० ना० पु० बड़ा ऐश्वर्य्य ।
 महोप० } ना० पु० पत्नीविशेष ।
 महोपा० }
 महोष्टिका० ना० स्त्री० बड़ा कटार ।
 महोत्सव० ना० पु० सश उत्सव, अत्यानन्द ।
 महोदर० ना० पु० निशाचर विशेष, बड़ापेट ।
 महोसा० ना० पु० जो तरणावर्या में हँस में
 मयूदे निकलते हैं ।
 महोत्त० ना० पु० बड़ा बैल, मूर्त ।
 महौजस्ती० ना० स्त्री० तेज, बल ।
 महौभवान्धरा० ना० स्त्री० मेदा श्रौपथि ।
 महौपध० ना० पु० जो श्रौपथि शीघ्र रामहरे,
 लहसुन, अतीस ।
 महौपधि० ना० स्त्री० सोढि, महौपध ।
 मह्यो० ना० पु० मही, छात्र, मट्टा ।
 मह्यिका० ना० स्त्री० मक्खली, माली, माखी ।
 मा० ना० स्त्री० लक्ष्मी, माता, सत्य, पुष्पको,
 हमको ।
 माई० ना० स्त्री० माता ।
 माई० ना० स्त्री० ममानी, श्रौपथी विशेष ।
 मां० शब्दों में भीतर, अन्तर ।
 मांग० ना० स्त्री० शिरके आलाके बीचकी लकीर
 जो कन्या वचनदत्त हुई ।
 मांगचिकनी० ना० पु० पत्नीविशेष ।
 मांगनेना० स० कि० किसी के लिये उपारलना
 मांगना० स० कि० चाहना, तलबकरना ।
 मांगलेना० स० कि० उपारलना, सेतलेना ।
 मांगी० ना० स्त्री० उपार, सेत, वचनदत्त ।
 मांज० ना० पु० राद, पाँव ।
 मांजनः० स० कि० मलना, उडव्यल करना ।

मांस्क० ना० पु० रागिनी विशेष, ध्वन्य० मध्य,
बीच ।
मांस्कत० ना० स्त्री० ठाठ ।
मांस्का० ना० पु० पतंगरी डोर में शीशा और
भातका लगाना, जड़वट ।
मांस्की० ना० पु० नाविक, कर्णधार, विचमाली,
मध्यवर्ती ।
मांङ्ग० ना० पु० पीच, कांजी ।
मांङ्गना० स० कि० मलना, मीजना, -सानना,
करना, कलपचदाना ।
मांङ्गा० ना० पु० फलीविशेष, रोटीविशेष ।
मांङ्गी० ना० स्त्री० कलपविशेष जो चावलों को
पीसके वा पकाके बनाते हैं ।
मांङ्गा० ना० पु० मड़ा ।
मांद्ग० ना० पु० शुका, भार, गोबर ।
मांस० ना० पु० मांस, गोश्त, कलियाँ ।
मांसमन्त्री० }
मांसाव० } ना० पु० गु० मांस खानेहारा ।
मांसाहारी० }
मांद्ग० } ध्वन्य० मध्य, में अन्तर, भीतर ।
मांद्हि० }
माकन्द० ना० पु० चांबका वृक्ष वा फल ।
माकण्डा० गु० मूल, निवृद्धि, उल्लू ।
माकन० ना० पु० मकलन, नैतू, दही, मसकह ।
माखी० ना० स्त्री० मकली, राहद ।
मागध० ना० पु० भाट, कड़ौत, वंशार्पण करने
हारा पुरुषों का प्रशंसक ।
मागधा० ना० स्त्री० चारहीकन्द, सोह ।
मागधी० ना० स्त्री० पीपली, सोह ।
माघ० ना० पु० ग्यारहवाँ महीना, काव्यविशेष ।
माघी० ना० स्त्री० जो माघ में उत्पन्न हो ।
माघ्या० ना० पु० मंच, पलंग ।
माघ्निका० ना० स्त्री० भार देना ।
माघ्यो० ना० स्त्री० हँगा, रोयेता ।
माघ्यर० ना० पु० माघद, मसा, मराक ।
माघ्यो० ना० स्त्री० मकली ।

माजाई० ना० पु० बेया वा बेदी जो एकमात्रे
उपजे हैं ।
माजू० ना० पु० माजूफल ।
माक्क० ना० पु० माक्क ।
माक्कधार० ना० पु० बीचधारा ।
माट० ना० पु० बड़ा मटका ।
माटी० ना० स्त्री० गृहिका, मिट्टी ।
माठा० ना० पु० मगरा, नटखट, मझ ।
माठू० ना० पु० ठटोल ।
माइना० स० कि० माइना ।
माइनि० ना० स्त्री० माइ ।
माइया० गु० पतला, दुर्बल ।
माइयो० ना० पु० मयडप, मडवा ।
माणचक० ना० पु० यशोपवीत के योग्य जो
बालकही वा निराश्री अवस्था सोलह वर्ष से
कम है ।
माणिक० } ना० पु० देश विशेष, स्वाम्य
माणिक्य० } सेज, हीरा, लाल, रत्न विशेष ।
मात० ना० स्त्री० मात्रा, माता, मतवालपन ।
मातंग० ना० पु० हाथी ।
मातना० अ० कि० मतवाला होना ।
मातलि० ना० पु० इन्द्रका रथान्न ।
माता० ना० स्त्री० जननी, शीलता, धीकृपारि,
गु० मत्त, मस्त ।
मातामह० ना० पु० नाग, माता का चाप ।
मातामही० ना० स्त्री० नानी, माताकी मता ।
मातुल० ना० पु० मामू, माता का भार ।
मातुलावी० ना० स्त्री० ममाना, भाग ।
मातुली० ना० स्त्री० ममाना ।
मातुलुंग० ना० पु० विनोद ।
मातृ० ना० स्त्री० माता, महतारी ।
मात्र० गु० धरत, स्थित, ध्वन्य० तर्प, सन ।
मात्रा० ना० स्त्री० धरत के उपरकी रेखा, स्तर,
परिमाण ।
मानस्त्र्य० ना० पु० उद, शिद, जसन, हसद ।
माया० ना० पु० मस्तक, ललाट, गवरी ।

मूर्धज० ना० पु० केश, बाल ।
 मूर्धन्य० जिस अक्षरका उच्चारण मूर्धा से हो
 यथा ऋ ऋ ट ठ ड ढ ण र प ।
 मूर्धा० ना० पु० मुस्तक, तालुसे ऊपर ।
 मूर्धनि० ना० पु० तालु से कुछक ऊपर ।
 मूर्धा० ना० स्त्री० सुरहरी ।
 मूल० ना० पु० जड़, वंश, कुल, पूंजी, अस्त्र, विना टीका की पुरतक, उच्चीसवां, नक्षत्र, कारण ।
 मूलक० ना० पु० मूली ।
 मूलद्वार० ना० पु० युदा ।
 मूलवीर० ना० पु० पुहकरमूल ।
 मूलस्थिति० ना० स्त्री० पहिली स्थिति ।
 मूलिया० गु० जिसका मूल नक्षत्र में जन्म हुआ ।
 मूली० ना० स्त्री० तरकारी विशेष, मूल विशेष ।
 मूल्य० ना० पु० मोल ।
 मूसल० ना० पु० मुसल ।
 मूसली० ना० पु० शीवलदेवनी ।
 मूप०
 मूपक० } ना० पु० मूरा, चूड़ा ।
 मूपिक० }
 मूपकवाहन० ना० पु० श्रीगणेशजी ।
 मूसना० स० कि० चुराना, अण्डलेना ।
 मूसरा० ना० पु० चूहा ।
 मूसरी० ना० स्त्री० चुरिया ।
 मूसल० ना० पु० जिससे अन्नादिक कूटे है ।
 मूसलधर० ना० पु० शीवलदेवनी ।
 मूसलधार० ना० पु० ऋद्धि, अति वृष्टि ।
 मूसली० ना० पु० शीवलदेवनी, ना० स्त्री० शीवधि ।
 मृग० ना० पु० हरिण, बगके जीवजन्तु ।
 मृगछाळा० ना० पु० मृगका चमड़ा ।
 मृगजल० ना० पु० मृगतृष्णा का पानी ।
 मृगतृष्णा० ना० स्त्री० ज्येष्ठादि गोष्मजाल में

सूर्य की किरणों में जो जल की कान्ति देख पड़ती है ।
 मृगदशक० ना० पु० कुत्ता ।
 मृगद्विप० } ना० पु० सिंह, व्याघ्र ।
 मृगध्वंस० }
 मृगनाभि० ना० स्त्री० कस्तूरी, मृगकीनाभि ।
 मृगनाभिरसा० ना० स्त्री० कस्तूरी, घुस्क ।
 मृगनयनी० } ना० स्त्री० गु० जिस स्त्री की मृगनयनी } आँसू मृगकी आँसू के सदृश हैं ।
 मृगपति० ना० पु० सिंह, शेर, व्याघ्र ।
 मृगबन्धनी० ना० स्त्री० नाश्रि, जाल, फंदा ।
 मृगमद० ना० पु० कस्तूरी, घुस्क ।
 मृगया० ना० स्त्री० आलेख, प्रहेर, शिकार ।
 मृगराज० ना० पु० सिंह, व्याघ्र ।
 मृगशिर० } ना० पु० पांचवां नक्षत्र ।
 मृगशिरा० }
 मृगांक० ना० पु० चन्द्रमा ।
 मृगाण्डज० ना० पु० कस्तूरी, घुस्क ।
 मृगाधीश० } ना० पु० सिंह, शेर ।
 मृगाशन० }
 मृगाक्षी० ना० स्त्री० इन्द्रवाक्यी ।
 मृगा० ना० स्त्री० रोगविशेष, हरिणी ।
 मृगेन्द्र० ना० पु० सिंह, मृगपति ।
 मृद० ना० पु० शीमहादेवनी ।
 मृदानी० ना० स्त्री० शीपार्वती ।
 मृणाल० ना० पु० हंस, कमलजाल ।
 मृणालका० ना० स्त्री० कमल की जड़ ।
 मृणाली० ना० स्त्री० हंसिनी ।
 मृत० ना० स्त्री० मिट्टी ।
 मृत० पु० मूरा, मुसा, मुदी ।
 मृतक० ना० पु० शव, लोभ, मुदी ।
 मृतकपट० ना० पु० कफून, मुर्देके लिये बस ।
 मृत्तिका० ना० स्त्री० मिट्टी ।
 मृत्पु० ना० स्त्री० माँत, चाल, मरण ।
 मृत्पु० ना० पु० मृतक ।

माथीलानां स० कि० एकसावनानां ।
 माथुरा० ना० पु० मथुराका वासी, ब्राह्मण और
 कायस्थकी जाति विशेष ।
 मादक० गु० मत्त करनेहारि वस्तु, नशा बढ़ाने
 वाली चीज ।
 मादकता० ना० स्त्री० नशा, अमल, हिताहित
 विचारहीन, मस्ती, बेहोशी ।
 माद्री० ना० स्त्री० सहदेव और नकुलकी माता ।
 माधव० ना० पु० वैशाखमास, मधुपवृक्ष, श्रीकृ-
 ष्णचन्द्रजी का एक नाम ।
 माधवी० ना० स्त्री० वाराहीकन्द, खांड़ और
 लताविशेष ।
 माधुरी० ना० स्त्री० मीठी, सुन्दर ।
 माधुर्य्य० ना० पु० सुन्दरता, मिठास ।
 माध्वी० ना० स्त्री० मधुआकी मदिरा ।
 मान० ना० पु० नामपति, मर्यादा, धर्म, अहंकार,
 परिमाण, अभिमान, नाज ।
 मानकचू० ना० पु० कन्दविशेष जो बंगाल में
 होता है ।
 मानता० ना० स्त्री० मण, प्रतिभा, पूजा, दान,
 नडाई ।
 मानदा० ना० स्त्री० मानकी दाता, चन्द्रमाकी
 एक कलाका नाम ।
 मानव० ना० पु० मनुष्य, आदमी ।
 मानस० ना० पु० मन, मनसा, मनुष्य, मान-
 सरोवर ।
 मानसमूल० ना० पु० सरयूकन्द ।
 मानसिक० गु० मनकी आशा, मनोवृत्ति, मनसा ।
 मानहु० अच्य० माने ।
 मानमान० ना० पु० मान और अपमान ।
 मानिक० ना० पु० माणिक्य ।
 मानिकजोड़० ना० पु० पत्नीविशेष ।
 मानिनी० ना० स्त्री० कामिमानवती स्त्री ।
 मानो० गु० मर्यादिक, अभिमान ।

मानुष० }
 मानुष्य० } ना० पु० मनुष्य, आदमी ।
 मानो० अच्य० जाने ।
 मानघाता० ना० पु० राजाविशेष ।
 मान्धा० स० कि० पतिरखना, पूजना, महकलना,
 अंगीकार करना, बजालाना ।
 मान्य० ना० गु० जो पूजने वा मानने के योग्य,
 पूज्य ।
 मानरता० ना० स्त्री० पूजा, बडाई ।
 मार० ना० पु० नाप, पैसाइश ।
 मापक० गु० नापनेवाला, अमीन ।
 मापना० स० कि० नापना, पैसाइश करना ।
 माधाप० ना० पु० माता-पिता ।
 मामा० ना० पु० मातुल, मामू ।
 मामी० ना० स्त्री० मगानी, माई, मामाकी जोड़ी ।
 मामीनीना० स० कि० पत्नकरना, श्रीभरना ।
 मामू० ना० पु० मामा, सप ।
 माया० ना० स्त्री० कृपा, मोह, दया, करुणा, प्रेम,
 छल, धोखा, सम्पत्ति, धन, भूल, योगमाया,
 आदिशक्ति, त्रिगुण, इन्द्रनालविद्या ।
 मायाकृत० ना० पु० संसार, इन्द्रनाली गु० जो
 माया से बनाया गया है ।
 मायापति० ना० पु० जो माया का स्वामी हो
 विशेष परमात्मा ।
 मायावी० गु० छली, कपटी, राक्षसविशेष ।
 मायिक० ना० पु० नातीगर, ऐन्द्रनालिक,
 दोनहा ।
 मार० ना० पु० कामदेव, विष, विष, अमृत,
 ना० स्त्री० महाद, धपा, लडाई ।
 मारक० ना० पु० मारनेहारा ।
 मारग० ना० पु० मार्ग ।
 मारडालना० स० कि० बधकरना ।
 मारण० ना० पु० मध, हत ।
 मारना० स० कि० पीटना, कुदना, ताड़ना,
 करना, बधकरना, विगाडना, टडाना, डकित

मृत्युगण० ना० पु० यमदूत, मलकूमौत ।
मृत्युञ्जय० ना० पु० श्रीमहादेवजी, श्योरामन्त्र
विशेष ।

मृत्सा० } ना० स्त्री० मिट्टी, माटी ।
मृत्स्ना० }
मृदंग० ना० पु० वाजाविशेष ।
मृदंगिया० } ना० पु० मृदंग व्रजनिहार ।
मृदंगी० }

मृदु० ना० पु० शु० नम्र, कुन्द, कोमल, मीठा ।

मृदुकन्दक० ना० पु० पियावांसा ।

मृदुका० ना० स्त्री० अंगूर, दाल ।

मृदुच्छद० ना० पु० करीदा ।

मृदुपत्रक० ना० पु० ऊल, गन्ना ।

मृदुफल० ना० पु० फालसा ।

मृदुल० गु० कोमल, दु ।

मृद्वीका० ना० स्त्री० अंगूर, दाल ।

मृपा० अव्य० मिथ्या, वृथा, शूद्र ।

मै० सर्व, सुशुक्रो, मेरा ।

मै० अव्य० अधिकरण का बोधक ।

मैगनी० ना० स्त्री० लड़ी, अनादिकी विद्या ।

मैङ्ग० ना० स्त्री० खेतकी सीमा ।

मैङ्गक० ना० पु० भेक, मंहुक ।

मैङ्गी० ना० स्त्री० भित्री, मंहुकी ।

मैङ्गा० ना० पु० कुर्वका सुल ।

मैङ्गियाया० अ० कि० विरना ।

मैङ्गा० ना० पु० मैङ्गा ।

मैङ्ग० ना० पु० वृष्टि ।

मैङ्गदी० ना० स्त्री० मिहूदी, पौधाविशेष ।

मैख० ना० पु० मणिपुर और बंगाल के बीच एक
प्रकार के पर्वतीयलोग, कौल ।

मैखला० ना० स्त्री० श्रियोकी कर्षणी, ब्राह्मण
का यज्ञोपवीत जो मृगशाला से अनताई, तीनवर्षे
का यज्ञोपवीत ।

मैखली० ना० स्त्री० दाढ़, पट्टी ।

मैघ० ना० पु० घन, बादल, अम्र, रागविशेष ।

मैघम्भर० ना० पु० रावणका छत्रविशेष ।

मैघाध्वा० ना० पु० शक्रास ।

मैघनाद० ना० पु० मैघकी रावण, मैघवत्सव्य
रावणका छत्रविशेष ।

मैघनाथ० ना० पु० इन्द्र, मैघपति ।

मैघराज० ना० पु० इन्द्र, मैघपति ।

मैघागम० ना० पु० वर्षाकाल, वरसात ।

मैघाभा० ना० पु० जामुन, फलेद ।

मैघक० शु० काला, श्याम ।

मैघना० स० कि० धौडालना, नाशान, मलभेद,
विरोधकरना ।

मैटा० शु० मिद्यागया ।

मैढा० ना० पु० मैङ्गा ।

मैथिका० ना० स्त्री० मैथी ।

मैथी० ना० स्त्री० सागविशेष ।

मैद० ना० पु० मैघ, बड़ीमोटाई ।

मैदनाद० ना० पु० मौर ।

मैदा० ना० स्त्री० पौधाविशेष ।

मैदिनी० ना० स्त्री० धरती, पृथ्वी, मालती ।

मैदिनीपुर० ना० पु० नगरविशेष ।

मैघ० ना० पु० यज्ञ, बलिदान ।

मैघा० ना० स्त्री० अतुभव, बूक, बुद्धि, निष्पत्ता ।

मैघाख्या० ना० स्त्री० नागरमाथा ।

मैघावती० ना० स्त्री० कश्यप की पत्नीविशेष ।

मैघाची० गु० मैघावन, बुद्धिमान, निष्पत्ता ।

मैघ्या० ना० स्त्री० शस्ताहोली ।

मैन० ना० पु० मोम ।

मैनका० ना० स्त्री० मुख्यचप्तरा, हिमांसय
की स्त्री ।

मैमना० ना० पु० बकरा का बच्चा ।

मैरीकरि० ना० स्त्री० स्वर्गा, गंगानी जो
विश्वामित्रीय गंगाप्रसिद्ध है, यह शब्द रामच-
न्द्रिकामें विश्वामित्र का वाक्यहै, द्वितीयरथान
प्रसिद्ध है ।

मैद० ना० पु० पर्वतविशेष, सुमेर ।

मैल० ना० पु० संयोग, भेद, मिलाप, संनय ।

शाना, डाकना, राकना, धांगना, मुदनकरना ।
 मारवा० ना० पु० रागविशेष ।
 मारवाड० ना० पु० देश विशेष ।
 मारवाड़ी० ना० पु० मारवाडदेशका वासी वा
 उस देशकी वस्तु ।
 मारा० शु० कथाहुआ, जो दूबगया, ना० पु०
 मारा, गिझार ।
 माराजाना० अ० क्रि० कटवाना, दूबजाना, या-
 धोहराना, बपहोना ।
 मारी० ना० स्त्री० मरफ, महाभागी, बचा ।
 मारीच० ना० पु० कंकाल, दैत्यविशेष ।
 मारीचपथ० ना० पु० शालवृक्ष ।
 मारुत० ना० पु० वायु, पवन ।
 मारुतसुत० } ना० पु० श्रीहनुमान्जी, मीमसेन ।
 मागति० }
 माह० ना० पु० वेगनविशेष, रागविशेष, डंका,
 मारवेदारा, मरुदेश ।
 मार० अर्थ० स, कारख, निमित्त ।
 मारुण्डा० ना० स्त्री० मङ्गला ।
 मारुण्डेय० ना० पु० कालीन, सुनि विशेष ।
 मारुव० ना० पु० भुंगराज, भंगरा, पोथा ।
 मारु० ना० पु० सड़क, बाट, राह, अगहन,
 अर्थन ।
 मारिण० ना० पु० वाण, तार ।
 मारिणीप० ना० पु० अगहन ।
 मारिण० शु० मारिदेखना, बाटदेखना ।
 मारिज० ना० पु० फर्जी करने का काम, छद्म,
 गांजना ।
 मारिज० ना० पु० विचार, विचार ।
 मारिण्ड० ना० पु० अर्थ ।
 मारिण्डमण्डन० ना० पु० सूर्यमण्डल, सूर्यका
 मारिण्ड ।
 मारु० ना० पु० मरु, मारुता, समूह ।
 मारुकंगनी० } ना० स्त्री० शोषण, पोषा
 मारुकाकुनी० } विशेष ।

मालकोश० } ना० पु० रागविशेष ।
 मालकौस० }
 मालती० ना० स्त्री० दो तीन जाति के पुष्प,
 पोथाविशेष ।
 मालतीजात० ना० पु० छद्मा ।
 मालतीपत्रिका० ना० स्त्री० जाति ।
 मालदीप० ना० पु० सिंहलदीप के समीप दीप
 विशेष ।
 मालपुत्रा० } ना० पु० एकजानविशेष ।
 मालपूप० }
 मालव० } ना० पु० देश विशेष, तन्त्र ।
 मालवा० }
 माला० ना० स्त्री० पुष्पादिका हार, पोथी, पंक्ति,
 कंठी, तसबोह, रुद्रादादिकी ।
 मालाकार० ना० पु० माली ।
 मालिन० ना० स्त्री० मालती स्त्री ।
 मालिनी० ना० स्त्री० छन्दविशेष ।
 मालिन्य० ना० पु० गतिनता ।
 माली० ना० पु० बागसँचोहार वा खाने-
 हारा, जाति विशेष, मालाधारी ।
 मालूर० ना० पु० मिन्य, बेल ।
 माल्य० ना० पु० फूलकी माला ।
 माल्यवान्० ना० पु० रासत विशेष ।
 मात्रस० ना० स्त्री० अमावस, कृष्णपक्षकी १५ ।
 मात्रा० ना० पु० आहार, अडेकी पिलाई, सोवा,
 गाढ़ा दूध ।
 मात्र० ना० पु० उरद, प्रचविशेष, हों, हों ।
 मात्रमात्र० ना० पु० एकउरदभर ।
 मात्रा० ना० पु० तोलकापरहोंभाग, रत्न ।
 मात्रसं० ना० पु० मरीना, समीची, मात्रि ।
 मात्रा० ना० पु० मात्रा ।
 मात्रान्त० ना० पु० मरिच का अन्तका अर्थ
 की विधि ।
 मात्रिक० शु० महीनवा, माहवारी, दरमहाकी
 पु० श्राद्ध जो प्रतिमास किया जाता है ।

मेलना० स० कि० टांसना, पुसेडना, डालना ।
 मेलाना० ना० पु० तीर्थादि पराकिती देवता की
 पूजाहेतु ब्रह्मतजनों का इकट्ठा होना वा किती
 प्रकार बहुत मतियों का इकट्ठा होना ।
 मेली० ना० पु० सांघी, यं० मिलापी ।
 मेव० } ना० पु० मेवात, पर्वत के नि-
 मेवडा० } वासी ।
 मेवाती० }
 मेप० ना० पु० मेदा, प्रथमराशि, पर्वारवृचः ।
 मेपचह्नी० ना० स्त्री० मेदासिद्धी ।
 मेपला० ना० स्त्री० मेत्ला ।
 मेपशुक्ली० ना० स्त्री० मेदासिद्धी ।
 मेह० ना० पु० मेघ, पूर्वव वर्ण्य रोग विशेषः ।
 मेहतर० ना० पु० भूरी, प्रधान चौधरी ।
 मेहतरानी० ना० स्त्री० भगिन, ।
 मेहनहा० ना० पु० ठठोली करनेहार ।
 मेहना० ना० पु० ठठोली ।
 मै० सर्व० सर्वतोमवाचक उत्तम पुरुष का एक
 वचन ।
 मेकलसुता० ना० स्त्री० नर्मदा नदी ।
 मैका० ना० पु० स्त्री के मां वीप की घर वा
 धराना ।
 मैत्री० ना० स्त्री० मित्रता, वदुता ।
 मैथिल० ना० पु० तिरहुत के बसने हार, माल्य
 की जाति विशेष ।
 मैथिली० ना० स्त्री० श्रीसीतानी, मिथिला की
 भाषा विशेष ।
 मैथुन० ना० पु० प्रसंग, रति, पुत्रोत्पादनाय
 दम्पति की क्रिया ।
 मैतफल० ना० पु० शीपथि, फला विशेष ।
 मैना० ना० स्त्री० पंजी विशेष, पार्वतीकी माता ।
 मैनाक० ना० पु० पर्वत विशेष ।
 मैमा० ना० स्त्री० सैतेलीमाता ।
 मैया० ना० स्त्री० माता, महतारी ।
 मैल० ना० पु० मल, मुर्चा, भाग, गज ।

मैला० } यं० मलीन, अपवित्र ।
 मैला कुचैला० }
 मैहिका० ना० पु० महिष, भैंसा ।
 मैहिकी० ना० स्त्री० महिषी, भैंसी ।
 मो० सर्व, मैं ।
 मोढा० ना० पु० कंधा, कूबड़, मोदा ।
 मोकना० स० कि० लगन, छोड़ना, जीड़ना ।
 मोखा० ना० पु० रेशन्दान, व्याला ।
 मोगरा० ना० पु० मुद्गर, बड़ी मोगरी, पुष्प
 विशेष ।
 मोगरी० ना० स्त्री० कूटने को कामरचित वस्तु
 विशेष ।
 मोघ० यं० वृथा, निरर्थ, निष्फला ।
 मोच० ना० पु० लचक, कचक, भटका ।
 मोचक० ना० पु० मोचरस, यं० छुड़ानेहार ।
 मोचन० ना० पु० चोरी, छोड़ना, त्यागना ।
 मोचना० स० कि० त्यागना, छोड़ना, भाड़ना,
 बुझाना, भिद्यता, ना० पु० बाल उखाड़ने के
 लिये विमदा ।
 मोचरस० ना० पु० समल वृत्तका गौद ।
 मोचन्नायी० ना० पु० मोचरस ।
 मोचा० ना० पु० हेमरवृष, कैला वा उसकीगभि ।
 मोची० ना० पु० चर्मकार ।
 मोट० ना० स्त्री० गठरी, मोट ।
 मोटक० ना० पु० छन्द विशेष ।
 मोटकी० ना० स्त्री० कुदारी, मोठी स्त्री ।
 मोटरा० ना० पु० गठरी ।
 मोटा० ना० स्त्री० गठरा, गढा, यं० स्थूल
 गाढ़, बड़ा, भड़ा ।
 मोटाई० ना० स्त्री० } पुष्टता, गाढ़ाई, स्थूलता ।
 मोटापा० ना० पु० }
 मोटिया० ना० पु० मोया उठानेहार ।
 मोट० ना० स्त्री० गठरा, पाद, धोक, चरस,
 पुरवट, अन्न विशेष ।
 मोड़० ना० पु० मांक, फेर, बला, ऐठना ।

मासिकविभाग० ना० पु० नौकरी का पैसा
वांटना ।

मासिकविभागी० गु० बलश्री, नौकरीका रुपया
वांटनेहारा ।

मासी० ना० स्त्री० गौसी, गाताकी बहन ।

माह० ना० पु० माघ, अथवा भय, बीच, से ।

माहात्म० } ना० पु० सुयश, सुकीर्ति, बड़ाई,
माहात्म्य० } बड़प्पन, महातम ।

माहीं० अथवा, बीचमें, ना० स्त्री० गाथी ।

माहुर० ना० पु० विप, हलाहल ।

माहू० ना० पु० कीटविशेष, कनसलाई ।

माक्षिक० ना० स्त्री० सोनागवस्त्री ।

मिचकारना० स० क्रि० खंचालना, अगवासना,
धोना ।

मिचना० अ० क्रि० मूंदना, लगना, बन्दहोना ।

मिचोलना० स० क्रि० आंखमूंदना ।

मिटना० अ० क्रि० विगाड़ना, मलमिटहोना ।

मिटाना० स० क्रि० विगाड़ना, भेटना, मल-
मेट करना ।

मिटिया० ना० स्त्री० मिट्टी की हंडी विशेष ।

मिटियाना० स० क्रि० मिट्टी से मलना ।

मिटियामेट० गु० मिटगया, निरशेषहोगया ।

मिटेलना० स० क्रि० मिटाना ।

मिटेला० गु० मिटगया, मिटगयाहुआ ।

मिट्टी० ना० स्त्री० माटी, मृत्तिका, भूल, भूमि ।

मिट्टरी० ना० स्त्री० पकवान विशेष ।

मिट्टाई० ना० स्त्री० मिष्ठान, मिष्ठान, गुड़,
राकर ।

मिट्टास० गु० मधुरता, मिष्टता ।

मिताक्षरा० ना० स्त्री० न्यायग्रन्थविशेष ज्ञान
छन्द विशेष ।

मिति० ना० स्त्री० अन्त, मर्यादा, वादह, प्रमाण ।

मिती० ना० स्त्री० तिथि, तारीख, व्याज, सूद ।

मित्र० ना० पु० हित, बन्धु, दोस्त, सूर्य, अग्नि ।

मित्रई० } ना० स्त्री० बन्धुता, हितकार, मीति,
मित्रता० } दोस्ती, यारी ।

मित्रद्रोही० ना० पु० जो मित्रके साथ बैरकरे ।
मित्रपोपी० गु० मित्रका पालनेहारा, दोस्त-
पर ।

मिथः० अथवा परस्पर ।

मिथिला० ना० पु० जनकपुर, तिरहुत ।

मिथिलापति० } ना० पु० राजा जनक, या
मिथिलेश० } मिथिलाका राजा ।

मिथुन० ना० पु० पुरुष स्त्री, युग्म, दो, और
राशि-तीसरी ।

मिथ्या० अथवा अथार्थ ना० पु० झूठ, वृथा ।

मिथ्यादृष्टि० ना० स्त्री० नास्तिकता, कुकर,
झूठी नजर ।

मिथ्यामति० ना० स्त्री० भ्रम, भूल ।

मिथ्यावाद० ना० पु० झूठ, वृथा वात्ता ।

मिथ्यावादी० गु० झूठा, वृथावादी ।

मिनती० ना० स्त्री० विनती ।

मिमियाना० अ० क्रि० विल्ली वा बकरीकाशान
करना ।

मिमियाहट० ना० पु० विल्ली वा बकरीकाशान

मिरा० ना० स्त्री० मंदिरा, शाराव ।

मिर्गा० ना० स्त्री० रानरोग विशेष ।

मिर्गाह० गु० जिसको मिर्गाका रोगहोवे ।

मिर्च० ना० स्त्री० मरिच ।

मिर्चा० ना० पु० लालमिर्च ।

मिर्दग० ना० पु० मृदग ।

मिर्दगिया० } ना० पु० मृदगकाबनानेहारा ।
मिर्दगी० }

मिर्दहा० ना० पु० करोड़ जो गांव में रहताहै ।

मिलन० ना० पु० मेल, मुलाकात ।

मिलनसार० गु० मिलापी, मेली ।

मिलना० अ० क्रि० मिथित होना, भेटना, ए
कट्टा होना, बैठना, बसा, पाना ।

मिलवाना० स० क्रि० मिथित करवाना, भेट
करवाना ।

मिलान० ना० पु० मिलाप, भेट ।

मिलना० स० क्रि० मिथित करना, जोड़ना,

मोड़ना० स० क्रि० फेरना, ष्टना, बलखिलाना,
चदाना ।

मोड़ा० ना० पु० बैरागी ।

मोड़ा० ना० पु० आत्म-विशेष, पैर रखने की
वस्तु ।

मोतिया० ना० पु० पुष्प विशेष ।

मोतियाबिन्दु० ना० पु० आँसु में का रोग वि-
शेष ।

मोती० ना० पु० मृत्ता ।

मोतीचूर्ण० ना० पु० मिठाई विशेष ।

मोथरा० ना० पु० घोड़े में रोग विशेष अर्थात्
हडा ।

मोथा० ना० पु० नागरमोथा ।

मोथी० ना० स्त्री० अण विशेष ।

मोद० ना० पु० हर्ष, आनन्द, खुशी ।

मोदक० ना० पु० लड्डू, आनन्दका उत्पादक ।

मोदगी० ना० पु० जिनना वृक्ष ।

मोदित० गु० आनन्दित, हर्षित ।

मोदिनी० ना० स्त्री० लजारू पौधा ।

मोदी० ना० पु० बनिया, वनजारा, व्यापारी ।

मोम० ना० पु० मधुमल, फारसी शब्द है ।

मोमवत्ती० ना० स्त्री० मोमवत्ती वत्ती ।

मोमियाई० ना० स्त्री० चोटकी औषधि विशेष,
फारसी शब्द ।

मोमी० गु० मोमका, जिसमें मोम लगीया
गया है ।

मोर० ना० पु० मयूर, पक्षी विशेष, सर्व, मेरा ।

मोरका० ना० स्त्री० सुरहरी ।

मोरचंद्रिका० ना० स्त्री० मोरपक्ष में की आँसु ।

मोरछल० ना० पु० चक्कर जो मोरपक्षका होता है ।

मोरध्वज० ना० पु० राजा विशेष ।

मोरा० सर्व, मेरा ।

मोरना० स० क्रि० फेरना, घुमाना, ढालना ।

मोरे० गु० घुमाये, फेर, सर्व, मेरे ।

मोल० ना० पु० भाव, दाम, भित्ति, कीमत ।

मोह० ना० पु० मूर्च्छा, माया, दया, कल्पना, इला
हाय भाव, भूल, अज्ञानी ।

मोहन० ना० पु० सज्जन, प्यारा, मोहनेहार
मुलागेहारा, विशेष श्रीकृष्णचन्द्रजीका एकनाम ।

हिताहित विचार रहित, मंत्र विशेष ।

मोहनभोग० ना० पु० मिठाई वा हस्त
विशेष ।

मोहनमाला० ना० स्त्री० माला जो सुवर्ण
दानों और मृगों से बनी है ।

मोहना० स० क्रि० मनहाय में लेलना, भुला
वशीभूत करना वा होना ।

मोहमय० गु० झूठा, भूलमें ।

मोहर० ना० स्त्री० स्वर्णमुद्रा, अशरफी ।

मोहरा० ना० पु० द्वार, दरवाजा ।

मोहि० सर्व, मुक्की, क्रि० मोहवशाहकर ।

मोहित० गु० मूर्च्छित, जो मोहा गया, भूल
हुआ ।

मोहिनी० ना० स्त्री० मोहनेहारी स्त्री, वैश्य
दिव्यन्दी टोटकी, वशीकरणी ।

मोही० सर्व, मुक्की, गु० मोह करनेहारा ।

मोक्ष० ना० पु० मुक्ति, गिजात ।

मौ० ना० पु० मधु ।

मौक्लि० ना० स्त्री० सीपी, सीप ।

मौन० ना० पु० गुप, गुपी, खामोशी ।

मौनता० ना० स्त्री० गुपी, खामोशी ।

मौना० ना० पु० मटका, डलिया ।

मौनी० गु० गुपका, गुपचाप, ना० पु० यो
विशेष, ना० स्त्री० छोटा मटका, गुपी ।

मौर० ना० पु० घुलकाफूल वा कली, कंध
सेहरा जो दूल्हको पहराते है ।

मौरना० अ० क्रि० खलना, फूसना ।

मौरे० गु० फूलहुये ।

मौलना० अ० क्रि० मोरना, फूसना ।

मौलसरी० ना० स्त्री० घुल विशेष ।

मौलि० ना० पु० भरतक, माथा ।

मौलिक० गु० कायरकी जो छोटी जातिकी ।

सयाना, सादरा करना, मिलाप करना ।
 मिलाप० ना० पु० मेल, वनाप, भेट, एकता ।
 मिलापि० यु० मिलानसार ।
 मिलाव० ना० पु० मिलोनी, मेल ।
 मिलित० यु० मिला हुआ, मिश्रित ।
 मिलोनी० ना० स्त्री० मिलाव, मेल ।
 मिशि० ना० पु० सोया का साग ।
 मिश्र० यु० मिला हुआ, मिलित, मालखों में जाति विशेष, वैद्य ।
 मिश्रानो० ना० स्त्री० मिश्र की स्त्री, बेदर ।
 मिश्रित० यु० मिलित, मिला हुआ ।
 मिश्री० ना० स्त्री० मिठाई प्रसिद्ध, मिलो ।
 मिश्रेय० ना० पु० सोया का साग ।
 मिय० ना० पु० बगवट, पेलना, धंधल, धोला, हीजा, बहाना ।
 मिष्ट० ना० पु० मीठा, मधुर ।
 मिष्टा० ना० स्त्री० मिठाई, युद्ध ।
 मिष्टान० } ना० पु० मिठाई मिला अन्न ।
 मिष्टान्न० }
 मिस० ना० पु० मिय ।
 मिसना० अ० कि० धिसना ।
 मिसर० ना० पु० मिश्र, देश विशेष जो यूनाय
 के दक्षिण में है ।
 मिसी० ना० स्त्री० मिरसी ।
 मिसु० ना० पु० मिय ।
 मिस्सी० ना० स्त्री० दांतों का मंजन विशेष ।
 मिहंदी० ना० स्त्री० मेंहदी ।
 मिदना० ना० पु० बोली ठोली ।
 मिहरा० ना० पु० पुरुष जो स्त्रीका वेषधरता है ।
 मिहरारू० } ना० स्त्री० स्त्री औरत, नारि ।
 मिहरिया० }
 मिहरी० }
 मिहाना० अ० कि० सीलना, शीला होना ।
 मिहानी० ना० स्त्री० मयानी, मधनियत प्राणी ।
 मिहिर० ना० पु० सूर्य ।

मीजना० स० कि० मांजना, मलना, मसलना ।
 मीच० ना० स्त्री० मूख, मोत ।
 मीचना० } स० कि० मूदना, बन्द करना ।
 मीछना० }
 मीजना० स० कि० मलना, रगड़ना, मसलना ।
 मीजू० ना० स्त्री० मसूर ।
 मीठा० यु० मधुर, धीमा, छस्त, नामद, ना० पु०
 विष विशेष, फल विशेष ।
 मीठिया० } ना० स्त्री० चूमा, चूमी, मंची ।
 मीठी० }
 मीड़ना० स० कि० भीजना ।
 मीड़े० गु० मलेगये, मलेहूए ।
 मीणा० ना० पु० जाति विशेष ।
 मीत० ना० पु० मिश्र, सज्जन, मोता, दोस्त ।
 मीतन० ना० स्त्री० सनामीस्त्री, सलौ, सहेली ।
 मीता० ना० पु० सनाम, हमनाम ।
 मीन० ना० स्त्री० मछली, नारहवीं राशि, ना०
 पु० श्रीविष्णुजीका प्रथमावतार ।
 मीनकेतु० ना० पु० कामदेव, प्रसुमनजी ।
 मीनहा० ना० पु० बनसी, बकिरा, बरवा ।
 मीना० ना० पु० हिन्दूजाति विशेष जो चौर
 होते हैं ।
 मीमांसक० ना० पु० ब्रह्मवादी, ईश्वरवेत्ता ।
 मीमांसा० ना० स्त्री० हिन्दू का मत विशेष,
 शास्त्र विशेष ।
 मीमियाना० अ० कि० मिभियाना ।
 मीसना० स० कि० पीसना, मलना, पठना,
 घुरेना, छनना ।
 मुकतई० ना० स्त्री० छुटी, खदाई ।
 मुकरना० स० कि० नकार करना, न मानना ।
 मुकरी० ना० स्त्री० अन्नभाषा में अन्नविशेष ।
 मुकुट० ना० पु० मटका, ताम्र, छत्र ।
 मुकुन्द० ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्र का एक नाम,
 धृतिदाता ।
 मुकुर० ना० पु० दर्पण, आइना ।
 मुकुल० ना० पु० कली जो खुरजाती है ।

मौली० ना० स्त्री० नारा ।
 मौल्य० ना० पु० मौल, कीमत ।
 मौसा० ना० पु० माताकी वहन का पति ।
 मौसी० ना० स्त्री० माताकी वहन ।
 मौसेरा० गु० जो मौसी कहै, यथा, मौसेरा भाई ।
 म्लान० गु० मैला, मन्द ।
 म्लेच्छ० ना० पु० जो लोग वेद और शास्त्र से
 विपरीत चलते हैं ।

म्लेच्छदेश० ना० पु० देश जिस में म्लेच्छ
 वसते हैं ।

[य]

यक० गु० एक, १ ।
 यकभ्रांक्र० अव्य० निश्चय करके ।
 यजमान० ना० पु० जो दक्षिणादि देके धर्म या
 कर्म करवावे ।

यजुः० ना० पु० द्वितीय वेद, यजुर्वेद ।
 यत्न० ना० पु० यत्न ।
 यति० ना० पु० यती, संन्यासी, भिक्षारी वा
 जैनमतका भिक्षारी ।

यत्न० अव्य० जो, जब ।
 यत्किञ्चित्० अव्य० जो कुछ ।
 यत्न० ना० पु० जतन, उपाय, उद्योग, तदवीर ।
 यत्नमान० } गु० यत्न करनेहरा ।
 यत्नी० }

यत्न० अव्य० जहाँ, जिस जगह ।
 यत्नतत्र० अव्य० जहाँ तहाँ ।

यथा० अव्य० जैसा, जिस प्रकार ।
 यथाकथञ्चित्० अव्य० जिसकिसी प्रकारसे ।
 यथाकाल० ना० पु० जैसा समय ।
 यथाक्रम० ना० पु० क्रमसे, परिपाटी से, जैसी
 रीति, सिलसिलेवार ।

यथापि० अव्य० यद्यपि, जोभी, अर्थात् ।
 यथायोग० ना० पु० जैसा उचित वा चाहिये,
 अव्य० जैसा चाहिये जैसा ।
 यथार्थ० अव्य० ठीक, सच, सदा ।

यथावत्० अव्य० सम्पूर्ण ।

यथावस्थित० अव्य० ज्योंकार्यों, गु० स्थिर ।

यथाशक्ति० ना० स्त्री० जैसी सामर्थ्य ।

यथाशास्त्र० अव्य० शास्त्र के अनुसार, शास्त्र
 सम्मत, ना० पु० जैसा शास्त्र ।

यथासम्भव० गु० जैसा होगहार ।

यथेच्छा० ना० स्त्री० जैसी इच्छा ।

यथोक्त० गु० जैसा कहागया ।

यथोचित० गु० यथायोग्य, जैसा, उचितहोवे ।

यदवधि० अव्य० जबसे ।

यदपि० अव्य० जोभी, अर्थात् ।

यदा० अव्य० जब, जहाँ ।

यदि० अव्य० जो, कदाचित् ।

यदु० ना० पु० सोमवंशी, पांचवां राजा ।

यदुजात० ना० पु० यदुवंशी ।

यदुनाथ० }
 यदुपति० } ना पु० श्रीकृष्णचन्द्र ।
 यदुवर० }
 यदुराय० }

यदुवंश० ना० पु० राजा यदुकी सन्तान ।

यदुवंशी० ना० पु० यदु से जो उत्पन्न भया
 श्रीकृष्णचन्द्रादि ।

यद्यपि० अव्य० जोभी, यद्यपि, अर्थात् ।

यद्वातद्वा० अव्य० ऐसा वैसा, भलाबुरा ।

यंत्र० ना० पु० कल, समान, वाय, टोटका,
 तबीज, ताला ।

यंत्रणा० ना० स्त्री० पीडा, केरा ।

यंत्रित० गु० यन्त्र कियागया, तालालगायाहुआ,
 यंत्रयुक्त ।

यंत्री० ना० पु० यन्त्रदेनेहारा, तारखीचने का यन्त्र,
 बजानेहारा कलसाज ।

यम० ना० पु० यमराज, यमदूत, साधन वा
 नियम विशेष, गु० दो ।

यमक० ना० पु० धन्दमें अक्षर समाईया प्रथम
 का शब्द, तुफ, जोड़िया, जो दो मलिक एक
 साथही उत्पन्नहो ।

मुकुलित० गु० थोड़ी-खिली हुई कली; मूला-
 मोरपुत, आंव आदि मोर समेत।
 मुकुन्दक० ना० पु० पिस्ता भवा ।
 मुकेल० ना० स्त्री० नकेल ।
 मुक्का० ना० पु० } हिंसा, उम्मा ।
 मुक्की० ना० स्त्री० }
 मुक्त० गु० निताने मुक्तिपाई, अभिहित ।
 मुक्तरमा० ना० स्त्री० रस्ति ।
 मुक्ता० ना० पु० मोती, गु० बहुत ।
 मुक्तामणि० ना० पु० मोती ।
 मुक्तास्फोट० ना० पु० सीपी ।
 मुक्ताइल० ना० पु० मोती, शन्दबीज के यथा,
 मुक्ताहल लिये चौच लुभावे, मोतरई की
 हरियशगाव ।
 मुक्ति० ना० स्त्री० मोल, पाप से उद्धार, निस्तार,
 प्राण, इत्यादि, निजात ।
 मुक्तिदाता० ना० पु० मुक्तिदेनहारा, उद्धारक ।
 मुख० ना० पु० वदन, मुँह ।
 मुखदा० }
 मुखदूपक० ना० पु० पियाजी पलांड, प्याजे ।
 मुखमण्डन० ना० पु० तिलकवृक्ष ।
 मुखर० गु० बकनादी, दुष्ट ।
 मुखामर० }
 मुखप्र० ना० पु० स्मृत, जवानी युद्ध ।
 मुखान० ना० पु० मुखका बहुवचन ।
 मुखिया० } ना० पु० प्रधान, गु० पहिला, पैदा,
 मुखवं० } स्त्री० धरतल, सवरे ।
 मुगदर० ना० पु० मोगरा, काष्ठकी मोगरी
 विशेष, जिसको किराते है ।
 मुग्ध० गु० अज्ञानी, मूर्ख, मकुवा, मूड ।
 मुग्धा० ना० स्त्री० कुंवारीकन्या, अज्ञातयौवना,
 गु० मूडी, मूर्ख ।
 मुञ्जुकुन्द० ना० पु० राजा विशेष जो अयोध्या
 में हुआ है ।
 मुजरा० ना० पु० प्रणाम, दण्डवत्, भेंट ।
 मुटापा० ना० पु० मोटाई, मोटापन ।

मुट्टी० ना० स्त्री० हाथ, युक्त ।
 मुठभेर० गु० अति-निकट, बहुतपास ।
 मुठिया० ना० पु० हाथभर, दस्ता, फन्दे ।
 मुठोलिया० ना० पु० मठोलिया, दड्डहा ।
 मुठोली० ना० स्त्री० ठंडा, मठोली ।
 मुठना० अ० कि० देवाहीना, मलखाना ।
 मुठ० ना० पु० प्रधान ।
 मुठिया० ना० अ० कि० मुठना ।
 मुण्ड० ना० पु० शिर, मस्तक, मुद ।
 मुण्डधारी० ना० पु० श्रीमहादेवजी, अघोरी ।
 मुण्डन० ना० पु० बालकके पहिले बालनवाना,
 छरने का काम ।
 मुण्डना० अ० कि० बालनवाना, ठगना ।
 मुण्डला० गु० मूङ्गागया, मुडिया ।
 मुण्डवाना० स० कि० बालनवाना, ठगना ।
 मुण्डा० ना० पु० पतंग का शिर, मुद, गु० स्त्री
 मूङ्गागया, चन्दला ।
 मुण्डाना० स० कि० मुंडवाना ।
 मुण्डासा० ना० पु० कुल कपडा जो मुद में
 बांधते हैं, अग्रामा ।
 मुण्डित० गु० मुंडसा, मुङ्गागया ।
 मुण्डभिक्षा० ना० स्त्री० म्योड़ी, मुंडी ।
 मुण्डिया० ना० पु० शिर, एक प्रकार के साधू ।
 मुण्ड० ना० स्त्री० म्योड़ीना ना० पु० मुडिया
 साधू ।
 मुण्ड० ना० पु० संन्यासी, गौतम ।
 मुण्डेर० } ना० स्त्री० छतपर की छोटी भीत,
 मुण्डरी० } भीत, का-तिरा ।
 मुतना० गु० बहुत मूतने हारा, लट्मूतवा ।
 मुतास० ना० स्त्री० मूतने की इच्छा ।
 मुतासा० गु० नितको मूतने की इच्छा है ।
 मुद० ना० पु० आनन्द, प्रसन्नता, सुखी ।
 मुदा० ना० स्त्री० मोर, मयूर ।
 मुदित० गु० हर्षित, आनन्दित, निहाल ।
 मुदिर० ना० पु० मेघ, बादल ।

राचा० गु० प्यारमें अस्त्रकृपा ।
 राछु० ना० पु० कारीगरी का अस्त्र ।
 राज० ना० पु० राज्य, धरवनानेहारा कारीगर, थवाई ।
 राजअंश० ना० पु० कर, महसूल, राजा की भाग ।
 राजकर० ना० पु० राजअंश ।
 राजककटी० ना० स्त्री० कुट्टहा, कट्टा ।
 राजक्रीय० गु० राजा का, राजाज ।
 राजकुमार० ना० पु० राजा का पुत्र ।
 राजगृह० ना० पु० राजाकाघर, नगर विशेष ।
 राजजम्बू० ना० स्त्री० जामन, फलद ।
 राजत्व० ना० पु० राजाका काम ।
 राजद्वार० ना० पु० राजभवन का फाटके ।
 राजधर० ना० पु० राजा का मन्त्री ।
 राजधानी० ना० स्त्री० किसी नगर में राजा आपवसे, यथाः शिवधर्म लखनऊ ।
 राजन्० ना० पु० राजा ।
 राजनये० ना० पु० राजनीति ।
 राजना० अ० क्रि० चमकना, शोभित होना ।
 राजनिभ० ना० पु० ओहना ।
 राजनीति० ना० स्त्री० राज्यकरनेकी चाल, दखूर, कावून ।
 राजपति० ना० पु० राजा, हिन्दू लोगोंकी पदवी ।
 राजपद० ना० पु० राज्य, प्रभुता का दरवाही ।
 राजपुताना० } ना० पु० देश विशेष जिसमें
 राजपुत्यान० } जयपुर जोधपुर आदि हैं ।
 राजपुत्र० ना० पु० राजाकापुत्र, जाति विशेष ।
 राजपुत्रिका० ना० स्त्री० राजाकी कन्या और शैलता और पौधा ।
 राजपुत्री० ना० स्त्री० राजाकी कन्या, कडई तुम्ही ।
 राजपूत० ना० पु० राजाकापुत्र जाति विशेष ।
 राजभवन० ना० पु० राजाका मन्दिर ।

राजभोग० ना० पु० राज्यकाभोग, मध्याह्न में देवता के लिये लेव ।
 राजमन्दिर० ना० पु० राजभवन ।
 राजमार्ग० ना० पु० राजपथ, सड़क, पैदा ।
 राजयोग० ना० पु० जन्मकुंडली में उच्च महों का होगा यथाः ग्रहस्पति अतिमें रयादि ।
 राजयोग्य० गु० जो राजाके योग्य है ।
 राजराज० ना० पु० अक्षयपति, कुवेर, राजा पिरान ।
 राजराणी० } ना० स्त्री० राजाकी स्त्री ।
 राजरानी० }
 राजरोग० ना० पु० वह रोग जिससे बचनेकी आशा नहो, प्रथम चयरेग, मृगी ।
 राजला० ना० स्त्री० मीठीतुम्ही, लोकी ।
 राजलोक० ना० पु० राजभवन ।
 राजवंश० ना० पु० राजाकी संतान ।
 राजवंशी० ना० पु० राजाकी संतान, राजपूतों में जाति विशेष ।
 राजवला० ना० स्त्री० गुथपसान ।
 राजवल्ली० ना० स्त्री० रायलता ।
 राजवृत्त० ना० पु० फिरवाली ।
 राजशाजा० ना० स्त्री० सभा, कचहरी ।
 राजशासन० ना० पु० राजाकी आज्ञा और राज का दण्ड ।
 राजश्री० ना० स्त्री० राजाकी सम्पत्ति ।
 राजस० ना० पु० जो काम राजागुण करके होवे, राजगुण ।
 राजसिंहासन० ना० पु० राजा का सिंहासन ।
 राजसू० } ना० पु० यज्ञ विशेष जिसकी
 राजसूय० } कुवल राजाधिराज करसके हैं ।
 राजस्व० ना० पु० राजाकाअंश, कर, महसूल ।
 राजहंस० ना० पु० हंस विशेष, मुतक ।
 राजा० ना० पु० स्वपति, देवपति, बादशाह ।
 राजादन० ना० पु० खिरनी विशेष ।
 राजाहा० ना० स्त्री० खिरनी ।

मुदिनाथ० ना० पु० इन्द्र ।
 मुद्रा० ना० पु० मृग अन्न ।
 मुद्गर० ना० पु० मुद्गर, मोगरा ।
 मुद्गा० ना० स्त्री० छाप, सुवर्ण वा चांदी का रूपया
 का मोहर, छद्मा, यन्त्र, अंगुठी ।
 मुद्रांकित० अ० जो छापया गया ।
 मुद्रिका० ना० स्त्री० पुन्दरी, अंगुठी ।
 मुद्रित० गु० अन्वलिता, मुद्रा जो छपा गया,
 शिक्षा जारी किया गया ।
 मुनमुन० ना० पु० विही के पुकारने का शब्द
 - वात विशेष ।
 मुनमुनान० अ० कि० विही का पुकारना,
 शीघ्र बड़के सूतजाना ।
 मुनि० ना० पु० ऋषि, तपश्चरी, विद्वान् ।
 मुनिद्रुम० ना० पु० अगस्त्य वृक्ष ।
 मुनिपट० ना० पु० बकला, भोजनवादिके वस्त्र ।
 मुनिपति० ना० पु० मुख्य मुनि ।
 मुनिपद० ना० पु० शांतपदवी, मुनिका पैर ।
 मुनिया० ना० स्त्री० लालपत्ती की स्त्री ।
 मुनिवह्म० ना० पु० चिरांजी ।
 मुनीन्द्र० } ना० पु० मुनियों का प्रधान,
 मुनीश० } अर्थरा ।
 मुन्या० ना० स्त्री० ज्योतिष में प्रसिद्ध ।
 मुन्दना० अ० कि० बन्दहाना, मिचुना ।
 मुन्दरी० ना० स्त्री० अंगुठी, मुन्दरी ।
 मुन्दी० ना० स्त्री० मधुमाखी ।
 मुसु० अ० शक्ति खोजनेवाला ।
 मुसुं० ना० पु० जो मत्तव्य मरने पर है ।
 मुसुं० ना० पु० देवविशेष ।
 मुसुं० ना० स्त्री० मूली ।
 मुसुना० अ० कि० ऐठना, बलपड़ना ।
 मुसुफाना० स० कि० ऐठना, बलदेना ।
 मुसुकी० ना० स्त्री० कान का भूषणविशेष ।
 मुसुंग० ना० पु० बागाविशेष ।

मुरभाता० अ० कि० सूतजाना, कुम्हलाना ।
 मुएडाकरना० स० कि० जकड़ना, बांधना ।
 मुरसुरा० ना० पु० चर्वणविशेष ।
 मुरखा० अ० पोपला, अदांत, ना० पु० मोर ।
 मुरली० ना० स्त्री० बनसी, बंसी, बांसुरी ।
 मुरलीधर० ना० पु० बंसीधर, श्रीकृष्णजी ।
 मुरवा० ना० पु० पांव की कलाई, मोर ।
 मुरहा० ना० पु० जकड़, ऐंठ, मयूर, विनामोता
 पिताका बालक ।
 मुरही० ना० स्त्री० ऐंठन, मरोड़ ।
 मुराई० } ना० पु० काड़ी, तरकारी बच्चे
 मुराऊ० } वाला वा बनेहारा, कोयरी ।
 मुरार० ना० स्त्री० कमल की जड़ ।
 मुरारि० ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्रजी ।
 मुरेला० ना० पु० मोरका बच्चा ।
 मुरी० ना० पु० प्रेयसी, मेकिसा, दूधदर ।
 मुसकना० अ० कि० मुसकाना ।
 मुसतान० ना० पु० देश वा नगरविशेष ।
 मुसतानी० ना० स्त्री० रागिनीविशेष, अ० जो
 मुसतानवासी है ।
 मुसतानीमिष्टी० ना० स्त्री० पीली मिष्टी
 प्रसिद्ध ।
 मुसदही० ना० स्त्री० जेठीपडु ।
 मुसवाई० ना० स्त्री० अकव ।
 मुसुना० स० कि० मोलठहराना, चुकाना ।
 मुसुक० ना० पु० अण्डकोरा ।
 मुसुसुष्टि० ना० पु० पंचमपूजा ।
 मुष्टि० ना० स्त्री० मुष्टी, पूंजा, मुका ।
 मुष्टिक० ना० पु० पूंजा, मुका ।
 मुसकाना० अ० कि० चुपके हँसना ।
 मुसकुत्तारि० ना० स्त्री० हँसी ।
 मुसकुत्ताना० अ० कि० मुसकाना ।
 मुसल० ना० पु० मूसल ।
 मुसल्मान० ना० पु० मुहम्मदका मतानुसार
 मुसताना० स० कि० चांती करवाना ।

राजाधिराज० ना० पु० राजाओंमें राजा ।
 राजा ।
 राजिका० ना० स्त्री० यांति, धयली, समूह ।
 राजिब० ना० पु० सांप यथा रानिल डिडिभौ
 इत्यमरः ।
 राजी० ना० स्त्री० पक्ति, पाति ।
 राजीव० ना० पु० कमल, मखली, पानी, च-
 न्द्रमा, मोती ।
 राजीवराज० ना० पु० कमलोंका समूह ।
 राजेश्वर० ना० पु० महीपति, बादशाह ।
 राज्य० } ना० पु० अधिकार, देश, राज,
 राज्यपद० } कान, प्रभुताई, बादशाहत ।
 राटो० ना० स्त्री० चौरकी बोली बुन्देलखण्ड में ।
 राटैर० ना० पु० शरसेन देश ।
 राठौर० ना० पु० रामपूताकी जाति विशेष ।
 राडो० ना० पु० सत्रियों में जाति विशेष ।
 राड० ना० पु० गौड़देशका एकखंड जो गंगाके
 पश्चिमहै, कथा ।
 राडी० ना० पु० राड देशका आलष, कहीं
 तरकारी ।
 राणा० ना० पु० राजपूतकी जाति विशेष ।
 राणी० ना० स्त्री० रानी ।
 रात० ना० स्त्री० रात्रि, निशा ।
 रातना० स० कि० रंगदेना, अ० कि० रचना ।
 राता० गु० रक्त, लाल जो रंगागर्वा, जो राजा ।
 रात्रि० ना० स्त्री० रजनी, रैनि, निशा ।
 रात्रिचर० ना० पु० निशाचर, मृत, प्रेत, चौर,
 उलूकादि ।
 राज्यन्ध० गु० जो रात्रि में नहीं देखता है तथा
 उलूक ।
 राद० } ना० पु० पीव, मछा ।
 राध० }
 राधा० ना० स्त्री० गृहभानुपुत्रा, श्रीदि, जाति
 निशा ।

राधानगरि० ना० स्त्री० रेशमीयसू, जो राधा
 नगरमें बनता है ।
 राधिका० ना० स्त्री० सुप्रभ दुसता, कृष्णप्रिया ।
 राना० ना० पु० राय ।
 रानी० ना० स्त्री० रानाकी स्त्री, राणी ।
 राय० ना० स्त्री० सुसी विशेष, वस्तु विशेष,
 निरसे शकर बनती है ।
 रायड़ी० ना० स्त्री० रपड़ी भोजन विशेष ।
 राम० ना० पु० परशुराम, श्रीरामचन्द्रजी,
 श्रीवलरामजी, गु० ३ ।
 रामफहानी० ना० स्त्री० रामायण, लम्बा
 वृत्तान्त ।
 रामकली० ना० स्त्री० रागिनी विशेष ।
 रामचन्द्र० ना० पु० श्रीराम, दशरथपुत्र ।
 रामजनी० ना० स्त्री० नौची, वेश्या, वेश्या
 विशेष ।
 रामठ० ना० पु० हांग ।
 रामतुरई० ना० स्त्री० लौकी, तरकारी विशेष ।
 रामदुहाई० ना० स्त्री० रामकी राधिका ।
 रामदूत० ना० पु० श्रीहनुमान्जी आदिक ।
 रामकल० ना० पु० कमरसे ।
 रामराम० ना० पु० प्रणाम वा सलाम विशेष ।
 रामसर० ना० पु० पीवा विशेष, नरकट
 विशेष ।
 रामसेनक० ना० पु० विरायता ।
 रामानन्दी० ना० पु० वैरागी, रामानन्दके
 सेवक ।
 रामायण० ना० पु० रामधाम, राममार्ग, राम
 कथानी, ग्रन्थ विशेष ।
 रामावत० ना० पु० वैरागी, जाति विशेष, का-
 मत ।
 राय० ना० पु० राजा, राया ।
 रायता० ना० पु० मकड़वा रामतुरईकी रानी
 में डाल केजा बनती है ।
 रायवास० ना० पु० जहाँ विशेष ।
 रायबोधि० ना० स्त्री० पुष्पविशेष ।

मुकुलितं गु० थोड़ी-खिली हुई-कली, मूला-
 मौसुत, आंव आदि नौर समेत।
 मुकुन्दकं ना० पु० पिस्ता, मेवा।
 मुकेलं ना० स्त्री० नकेल।
 मुक्तां ना० पु० } मूत्रा, गुग्गुलु।
 मुक्तीं ना० स्त्री० }
 मुक्तं गु० जिसने मुक्ति पाई, अशुद्धित।
 मुक्तरमां ना० स्त्री० रांसां।
 मुक्तां ना० पु० मोती, गु० बहुत।
 मुक्तामणिं ना० पु० मोती।
 मुक्तास्फोटं ना० पु० सीपी।
 मुक्ताहलं ना० पु० मोती, रान्दवीज के यथा,
 मुक्ताहल लिये चांच लुभावे, मोनरहे की
 हरियशगाव।
 मुक्तिं ना० स्त्री० मोक्ष, पाप से उद्धार, निस्तार,
 श्रावण, छुटकारा, निजात।
 मुक्तिदातां ना० पु० मुक्तिदेनहारि, उद्धारक।
 मुखं ना० पु० बदन, मुँह।
 मुखदां ना० पु० पियाज, पलांड, प्याज।
 मुखमण्डलं ना० पु० तिलकवृक्ष।
 मुखरं गु० बकवादी, दुष्ट।
 मुखामरं ना० पु० स्थित, जवानी आद।
 मुखोप्रां ना० पु० स्थित, जवानी आद।
 मुखानं ना० पु० मुखका बहुवचन।
 मुखियां ना० पु० प्रधान, गु० पीहला, बड़ा।
 मुख्यं ना० स्त्री० असाज, सर्वर।
 मुगदरं ना० पु० मोगरा, फण्टकी। मोंगरी
 विशेष, जिसको किराते हैं।
 मुग्धं गु० अज्ञानी, मूर्ख, महुया, भूढ़।
 मुग्धां ना० स्त्री० कुंवारीकन्या, अज्ञातपौवना,
 गु० झूठी, मूर्ख।
 मुचुकुन्दं ना० पु० राजा विरोप जो अयोध्या
 में हुआ है।
 मुजरां ना० पु० प्रणाम, दण्डवत्, भेंट।
 मुटापां ना० पु० मोटाई, मोटोपन।

मुट्टीं ना० स्त्री० हाथ, मुकटा।
 मुठमेरं गु० अति-निकट, बहुतपास।
 मुठियां ना० पु० हाथभर, दस्ता, फन्दा।
 मुठोलियां ना० पु० मठोलिया, ठड्डा।
 मुठोलीं ना० स्त्री० ठड्डा, मठोली।
 मुठनां अ० कि० ठेकाहोवा, मजदुराना।
 मुठुं ना० पु० प्रधान।
 मुठियां ना० अ० कि० मुठना।
 मुण्डं ना० पु० शिर, मस्तक, मुद।
 मुण्डधारीं ना० पु० श्रीमहादेवजी, अयोरी।
 मुण्डनं ना० पु० बालकके पहिले आननवाना,
 मुण्डने का काम।
 मुण्डनां अ० कि० बालवनाना, ठगजाना।
 मुण्डलां गु० मूङ्गागया, मुंडिया।
 मुण्डवानां स० कि० बालवनवाना, ठगाना।
 मुण्डां ना० पु० पतंग का शिर, मुद, गु० जो
 मूङ्गागया, चन्दला।
 मुण्डानां स० कि० मुंडवाना।
 मुण्डासां ना० पु० कुव कपडा जो मूङ्ग
 बांधते हैं, अम्मामा।
 मुण्डितं गु० मुंडला, मुङ्गागया।
 मुण्डिभिक्तां ना० स्त्री० थोड़ी, मुंडी।
 मुण्डियां ना० पु० शिर, एकप्रकार के साधु।
 मुण्डिं ना० स्त्री० थोड़ी, ना० पु० मुंडिया
 साधु।
 मुण्डुं ना० पु० संन्यासी, गोवार।
 मुण्डेरं ना० स्त्री० छतपर की छोटीभीत।
 मुण्डरीं ना० स्त्री० भीत का शिर।
 मुत्तनां गु० बहुत मूतने हारा, खड्डतया।
 मुत्तासं ना० स्त्री० मूतने की इच्छा।
 मुत्तासां गु० जिसको मूतने की इच्छा है।
 मुदं ना० पु० आनन्द, प्रसन्नता, खुशी।
 मुदां ना० स्त्री० मोर, मयूर।
 मुदितं गु० हर्षित, आनन्दित, निहाल।
 मुदिरं ना० पु० मेघ, बादल।

रायरायान्० ना० पु० राजाधिराज ।
 रायलता० ना० स्त्री० पुष्प, वृक्ष विशेष ।
 रादि० ना० स्त्री० विरोध, लड़ाई, भगडा ।
 राल० ना० स्त्री० धूना ।
 राव० ना० पु० राजकुमार, राजा, राय ।
 रावन्नाव० ना० पु० विलास, आनन्द ।
 रावटी० ना० स्त्री० तन्मू विशेष ।
 रावण० ना० पु० लंकेरा, राक्षसपति विशेष ।
 रावणारि० ना० पु० श्रीरामचन्द्रजी ।
 रावणी० गु० जो रावण से सम्बन्ध रखता है,
 ना० पु० मेघनाद ।
 रावत० ना० पु० शर्मा, वीर, सदाँर ।
 रावरा० } सर्वे तुम्हारा, आपका ।
 रावरो० }
 राशी० ना० स्त्री० नदी विशेष जो पञ्जाब में है ।
 राशि० ना० स्त्री० ढेर, सपूह, मेपादि १२ ।
 राशयंतर० ना० पु० एकराशि से दूसरी राशि
 तकका समय ।
 राष्ट्रकी० ना० स्त्री० बड़ी कटाई ।
 राष्ट्र० ना० पु० नसाहुआ देश ।
 रास० ना० पु० गोपियों के साथ श्रीकृष्णचन्द्रजी
 की क्रीडा पर्वविशेष, राशि ना० स्त्री० वायु
 सन्देशा लेपालन ।
 रासचक्र० ना० पु० लग्नमण्डल ।
 रासधारी० ना० पु० रासकरनेहारि ।
 रासभ० ना० पु० गधा, खर ।
 रासभी० ना० स्त्री० गदही, खरकी स्त्री ।
 रासी० गु० घोडा इत्यादि जो न भला हो न
 बुरा मध्यम, ऐसा बैसा ।
 रासना० } ना० स्त्री० जो वृक्षपर जमत है यथा
 रास्ना० } बाँदा ।
 राहना० स० क्रि० चक्षी में दाँत बनाना ।
 राहु० ना० पु० आठवाँ ग्रह, दैत्य विशेष जो
 चन्द्रमा और सूर्यको भ्रंशता है ।
 राक्षस० ना० पु० अहुर विशेष कौणप ।
 राक्षसी० ना० स्त्री० राक्षसकी स्त्री ।

राक्षसीवेला० ना० स्त्री० संध्या ऊपरतीन
 घण्टे ।
 रिक्त० गु० खाली, शून्य ।
 रिचा० ना० स्त्री० ऋचा, वेदमन्त्रका नाम ।
 रिभवेया० ना० पु० रीझने हारे ।
 रिभाना० स० क्रि० प्रसन्न करना, खुशकरना,
 सताना, दुःखदेना ।
 रिताना० स० क्रि० रीता करना, झूठा करना
 दुर्गंध दूर करना ।
 रितु० ना० स्त्री० ऋतु ।
 रितुराज० ना० पु० ऋतुराज, वसन्त ।
 रिक्तम० ना० पु० मत्र विशेष ।
 रिद्धि० ना० स्त्री० सम्पत्ति, बढ़ती, वृद्धि, ऋद्धि ।
 रिपु० ना० पु० वैरी, शत्रु, मुद्दई ।
 रिपुता० ना० स्त्री० शत्रुता, वैर, अदावत ।
 रिपुंजय० गु० शत्रुजित्, अतिशर्मा ।
 रिपुपाक० ना० पु० इन्द्र ।
 रिपुहा० ना० पु० शत्रुघ्न, गु० शत्रुजित् ।
 रिपि० ना० पु० ऋषि ।
 रिपिमित्र० ना० पु० ऋषिमित्र ।
 रिष्ट० ना० पु० खन, गु० जो निकट है ।
 रिष्टपुष्ट० गु० मोटा, स्थूल ।
 रिस० ना० स्त्री० क्रोध, क्रोध, खिसियाहट ।
 रिसना० अ० रि० धीमे टपकना ।
 रिसहा० गु० क्रोधी ।
 रिसाते० गु० क्रोधयुत, क्रोध करते ।
 रिसाना० } अ० क्रि० अग्रसन्न वा क्रोधित
 रिसियाना० } होना, चिदना, दुःखित होना ।
 रिन्न० ना० पु० ऋक्ष, रीव ।
 रिक्षराज० } ना० पु० ऋक्षराज, जाम्बव
 रिक्षेश० } न्तादि ।
 री० अन्व० रे ।
 रींगना० अ० क्रि० कूटचाल, रींगना ।
 रींधना० स० क्रि० पकाना ।
 रीळु० ना० पु० ऋक्ष, भालु ।
 रीभ० ना० स्त्री० चाह, इच्छा, सल, वृष्टि ।

मुदिरनाथ० ना० पु० इन्द्र ।
 मुद्र० ना० पु० मृग अन्न ।
 मुद्गर० ना० पु० मुद्गर, मोंगर ।
 मुद्रा० ना० स्त्री० धाप, उपर्ण वा चांदी का रुपया
 वा मोहर, छद्दा, यन्त्र, अंगूठी ।
 मुद्राकित० यु० जो धापागया ।
 मुद्रिका० ना० स्त्री० मुन्दरी, अंगूठी ।
 मुद्रित० गु० अनाखिला, मुद्रा जो धापा गया,
 सिक्का जारी किया गया ।
 मुनमुन० ना० पु० बिसी के पुकारने का शब्द
 प्राप्त विशेष ।
 मुनमुनाना० अ० कि० बिसी का पुकारना,
 शोका बढ़के सुसंगाना ।
 मुनि० ना० पु० श्रमि, तपश्वरी, विद्वान् ।
 मुनिद्रुम० ना० पु० अगस्त्य वृक्ष ।
 मुनिपट० ना० पु० बकला, मोतपत्रादिके बरत ।
 मुनिपति० ना० पु० मुख्य मुनि ।
 मुनिपद० ना० पु० शांतपदवी, प्रनिका पैर ।
 मुनिया० ना स्त्री० लालपची की स्त्री ।
 मुनिबलभ० ना० पु० चिरांजी ।
 मुनीन्द्र० } ना० पु० मुनियों का प्रधान,
 मुनीश० } श्यांरा ।
 मुन्या० ना० स्त्री० ज्योतिष में प्रसिद्ध ।
 मुन्दना० अ० कि० बन्दहोना, मिचना ।
 मुन्दरी० ना० स्त्री० अंगूठी, मुन्दरी ।
 मुमास्त्री० ना० स्त्री० मधुमास्त्री ।
 मुमुलु० यु० मुक्ति खोजनेवाला ।
 मुमुर्षु० ना० पु० जो मनुष्य मरने पर है ।
 मुर० ना० पु० दैत्यविशेष ।
 मुरर० ना० स्त्री० गुली ।
 मुरकना० अ० कि० ऐंठना, बलपडना ।
 मुरकाना० स० कि० ऐंठना, बलदेना ।
 मुरकी० ना० स्त्री० फाग का भूषणविशेष ।
 मुरचंग० ना० पु० बानाविशेष ।

मुरभाता० अ० कि० सुस्तनाना, कुम्हलाना ।
 मुरडाकरना० स० कि० जकड़ना, बांधना ।
 मुरमुरा० ना० पु० चर्वणविशेष ।
 मुरला० यु० पोपला, अर्दात, ना० पु० मौर ।
 मुरली० ना० स्त्री० बनसी, बंसी, बाहरी ।
 मुरलीधर० ना० पु० बंशीधर, श्रीकृष्णजी ।
 मुरवां० ना० पु० पांव की कलाई, मौर ।
 मुरहा० ना० पु० जकड़, ऐंठ, मथूर, विनामाता
 पिताका बालक ।
 मुरही० ना० स्त्री० ऐंठन, मरोड़ ।
 मुराई० } ना० पु० काडी, तरकारी बेचने
 मुराऊ० } वाला वा बीनेहारा, कायरी ।
 मुरार० ना० स्त्री० कमल की जड़ ।
 मुरारि० ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्रजी ।
 मुरेला० ना० पु० मौरका बच्चा ।
 मुरा० ना० पु० पेड़ोला, पेचिरा, छद्मदर ।
 मुसकना० अ० कि० सुसकाना ।
 मुसतान० ना० पु० देरा वा नगरविशेष ।
 मुसतानी० ना० स्त्री० रागिनीविशेष, यु० जो
 मुसतानवासी है ।
 मुसतानीमिट्टी० ना० स्त्री० पीली मिट्टी
 प्रसिद्ध ।
 मुलहट्टी० ना० स्त्री० जेठीमनु ।
 मुलाई० ना० स्त्री० अंकुष ।
 मुलाना० स० कि० मोलठहराना, डकाना ।
 मुल्क० ना० पु० अण्डकोरा ।
 मुष्टामुष्टि० ना० पु० धंसमधंसा ।
 मुष्टि० ना० स्त्री० मुड़ी, धंसा, मुक्का ।
 मुष्टिक० ना० पु० धंसा, मुक्का ।
 मुसकाना० अ० कि० चुपके हँसना ।
 मुसकुराई० ना० स्त्री० हँसी ।
 मुसकुराना० अ० कि० मुसकाना ।
 मुसल० ना० पु० मूसल ।
 मुसल्मान० ना० पु० मुहरमदका मतावलम्बी ।
 मुसाना० स० कि० चोरी करवाना ।

रीहना० अ० कि० प्रसन्नता, वृत्तहोना ।
 रीठा० ना० पु० फल विशेष ।
 रीठी० ना० स्त्री० छोटा रीठा ।
 रीड़० ना० स्त्री० पीठकी हड्डी ।
 रीता० गु० साती, शय्य ।
 रीति० ना० स्त्री० बाल, चलन, प्रकार, कानून,
 दरकायदह ।
 रीर० ना० रीड़, रीर ।
 रिरियाना० अ० कि० बालककी रीति से रोना,
 कुड़कुड़ाना, स० कि० गिड़गिड़ाना, सुशामद
 करना ।
 रीस० ना० स्त्री० क्रोध ।
 रक० ना० पु० रोक, उबियाहट ।
 रकना० अ० कि० अटकना, बन्दहोना, ठहरना ।
 रकवया० ना० पु० अटकाऊ ।
 रकाना० स० कि० अटकाना, ठहराना, छेकवाना ।
 रकाव० ना० पु० } अटकाव, छेकाव ।
 रकावट० स्त्री० }
 रकम० ना० पु० उवष, चाँदी, रुक्मिणीका भाई ।
 रुक्मिणी० ना० स्त्री० श्रीकृष्णचन्द्रजीकी पट-
 रानी विशेष ।
 रकमकेश० ना० पु० रुक्मिणीजीका भाई ।
 रस० ना० पु० संकेत, इशारत, आशा, सुह ।
 रसार्थ० ना० स्त्री० बुझकी, तिलाई ।
 रस्तान० ना० पु० बर्द का अरव विशेष ।
 रस्ताना० अ० कि० कड़ापन होना, सुस्ताना,
 सुलना ।
 रस्तानी० ना० स्त्री० छोटा रस्तान, गु० सुलीहई ।
 रसन० गु० टेदा, रोगी ।
 रच० ना० स्त्री० रचि ।
 रचना० अ० कि० भावना, अद्यालगना ।
 रचि० ना० स्त्री० मनोभिलाष, भोजनमें प्रवृत्ति,
 चाहत, सौक, गोरोचना ।
 रचिक० ना० पु० वांछिरीलान, सांचरलोन ।

रज० ना० पु० रोगा विकार ।
 रहु० ना० पु० क्रोध, गुस्ता ।
 रणि० ना० पु० शब्द ।
 रणित० गु० गुंजारित, शब्द करता भया ।
 रण्ड० ना० पु० शिर रहित शरीर ।
 रुदन० ना० पु० रोदन, रोना ।
 रुदित० गु० रोताहुआ ।
 रुद्ध० गु० छेका, रुका, बैया ।
 रुद्र० ना० पु० श्रीमहादेवजी ।
 रुद्राणी० ना० स्त्री० पार्वती ।
 रुद्रावतार० ना० पु० श्रीहनुमानजी ।
 रुद्री० ना० स्त्री० ११ बेलपत्र, ११ शशिनल ।
 रुधिर० ना० पु० रक्त, लोह, खून ।
 रुधिरा० ना० स्त्री० केसर, जाफरान ।
 रुपना० अ० कि० डटना, अड़ना ।
 रुपया० ना० पु० रुपैया ।
 रुपहरा } गु० रुपैया, जो रुपसे बना है ।
 रुपहला }
 रुपी० गु० डटाई, अड़ी ।
 रुपैया० ना० पु० चाँदीकामुद्रा, १६ आनेका ।
 रुस्क० ना० स्त्री० सुरासाणी अजवाइन ।
 रोलाना० स० कि० रोकना, दुःखदेना ।
 रुष्ट० गु० क्रुद्ध, क्रोधित ।
 रुसन० अ० कि० रिसना ।
 रुह० ना० पु० उत्पन्न, जन्मित ।
 रुहा० ना० स्त्री० कुम्भी तालाव की ।
 रुही० ना० स्त्री० दूब पास ।
 रुक्ष० गु० सूखा, रुदा, खरखरा ।
 रुक्षिगन्धक० ना० पु० सांचरलोन ।
 रुइया० ना० पु० रुईवा न्योपारी ।
 रुई० ना० स्त्री० जो कपास से निकलती है ।
 रुघट० ना० पु० मेल, मल, बाल, रोम ।
 रुंधना० स० कि० घेरलेना, अ० कि० व्याकुलता ।

मुस्तवारिधर० } ना० पुं० नागरमोषी ।
मुस्ता० }

मुहरा० ना० पुं० हरावल, अगाड़ी, दरवाजह ।

मुहरी० ना० स्त्री० कोत, छोटपनाला ।

मुहाना० ना० पुं० नदी का वह स्थान जहाँ
समुद्र से मिलती है ।

मुहासा० ना० पुं० फुनसी, छहरा, महीसा ।

मुही० सर्व० मोहि, मुझकी ।

मुहुर्भाषा० ना० स्त्री० दुःखित वाक्य, पुनः
कथन ।

मुहुर्मुहुः० अव्य० पुनः पुनः वारंवार ।

मुहूर्त्त० ना० पुं० दोषही ।

मुञ्जा० श० मरा ।

मूंग० ना० पुं० अन्नविशेष ।

मूंगची० } ना० स्त्री० मूंगकी बड़ी ।
मूंगरी० }

मूंगा० ना० पुं० प्रवाल, विद्रुम ।

मूंगिया० ना० पुं० मूंगके रंगके तुल्य रंग ।

मूँछ० ना० स्त्री० मूँछ होंठके ऊपर के बाल ।

मूँज० ना० स्त्री० तृणविशेष जिसकी रस्ती
बनाते हैं ।

मूँड० ना० पुं० मुण्ड, शिर ।

मूँफना० स० कि० बाल बनाना, घोटना, शिथ्य
करना, फुसलाके लूटना ।

मूँहला० श० मुण्डली, जिसका शिर मूँहागया ।

मूँही० ना० स्त्री० शिर, सिरमुण्ड ।

मूँडा० ना० पुं० मोड़ा ।

मूँदना० स० कि० मन्दकरना, टांकना, मीचना ।

मूँदरी० ना० स्त्री० मुन्दरी, अण्ठी ।

मूँह० ना० पुं० मुख, वदन ।

मूँहा० ना० पुं० मुखका रोगविशेष ।

मूँक० श० मूँगा, जो बात चीत न करसके ।

मूँका० ना० पुं० मूँगा, मोला, झरोला, हाथ ।

मूँकी० ना० स्त्री० मूँगा, मुझी ।

मूँछ० ना० स्त्री० मूँछ ।

मूँछाकड़ा० ना० पुं० बड़ी मूँछ ।

मूँछारा० } गुं० बड़ी मूँछवाला ।
मूँछेल० }

मूँठ० ना० पुं० बँट, दस्ता, कच्चा, हाथ,
भर ।

मूँठा० ना० पुं० बँट, मुट्टी ।

मूँठी० ना० स्त्री० मुट्टी ।

मूँड़० गुं० मूँख, नादान, अहमक ।

मूँड़ता० ना० स्त्री० मूँखता, उल्लापन, अहं

मूँत० ना० पुं० मूँत, लघुशका, पेशाब, का

मूँतना० थ० कि० लघुशका करना, पेश
करना ।

मूँत्र० ना० पुं० मूँत ।

मूँत्रफला० ना० पुं० खीरा ।

मूँना० थ० कि० मरना, देह तमना,
घोड़ना ।

मूँनू० श० लघु, छोटा, थोड़ा ।

मूँर० ना० पुं० मूँल ।

मूँरख० श० मूँल ।

मूँरत० ना० स्त्री० मूँति ।

मूँरि० ना० स्त्री० जड़ी, घूटी, पौधा ।

मूँरिसजीवन० ना० स्त्री० औषधि, पौ
विशेष ।

मूँरी० ना० स्त्री० मूँली ।

मूँख० श० मूँद, अज्ञानी, बोदला ।

मूँखता० } ना० स्त्री० अज्ञानता, दुर्मेति
मूँखताई० } नादाना, उल्लापन ।

मूँछना० ना० स्त्री० रागभेद, मूँछावन्त ।

मूँछा० ना० स्त्री० अचेत, होना, तेवर,
गस ।

मूँछावन्त० श० जो मूँछित होगया ।

मूँछित० श० जो मूँछामें पड़ा है, माहित ।

मूँत्ति० ना० स्त्री० प्रतिमा, आकार, प्रतीक
तस्वीर ।

मूँत्तिपूजक० श० देवपूजक, चातुर्वर्ण्य लो

मूँत्तिमन्त० श० आकारवन्त, शरीरधारी ।

रुख० ना० पु० वृक्ष; पेड़, वृक्ष ।
 रुखड़० ना० पु० योगी, विशेष ।
 रुखड़ा० ना० पु० छोटा वृक्ष ।
 रुखन० ना० पु० पल्ल्या, रुखान ।
 रुखा० गु० सूखा, निरा, रुच, स्नेहरहित ।
 रुखाई० ना० स्त्री० खरखराहट, खराई ।
 रुखानी० ना० स्त्री० टांकी, छेनी ।
 रुखी० ना० स्त्री० खींचर, गु० सूखी ।
 रुख० गु० सूखे, विनारस, उदास ।
 रुचना० अ० क्रि० रुचना ।
 रुच्य० गु० मनमावित, चाहता ।
 रुद्ध० गु० रुद्ध ।
 रुज० ना० पु० कीट विशेष ।
 रुभा० गु० जन्तु वा पक्षी जिसको रुज स-
 ताता है ।
 रुठना० अ० क्रि० विगड़ना, भगड़ना, रिसाना,
 मानकरना ।
 रुठनी० ना० स्त्री० लजारू, गु० मानवर्ती,
 भगड़ालू ।
 रुठा० गु० रिसाना, विगड़ाहुआ ।
 रुठारुठी० ना० स्त्री० परस्पर विगाड़ ।
 रुड़० ना० पु० कड़ा, अकड़ा, कठोर ।
 रुढ़ि० ना० पु० वह सज्ञा जो मिश्रितनाही ।
 रुघ० ना० पु० आकार, मुख, चित्र, ढव, प्वाल,
 सुन्दरता, तुल्य, शोभा ।
 रूपक० ना० पु० सदृश, तुल्य, समान ।
 रूपजस्त० ना० पु० रांगा ।
 रूपमञ्जरी० ना० स्त्री० अमर, सदा सुहाविल
 फूल विशेष ।
 रूपरं० गु० स्वरूपवद्भ्य ।
 रूपरस० ना० पु० रूपा जो जलायागया, रूप
 धौर रस ।
 रूपराशि० { ना० स्त्री० सुन्दर स्त्री, अत्यंत
 रूपवती० { सुन्दरी ।
 रूपवान्० गु० सुन्दर स्वरूप, सुवड ।
 रूपहला० गु० जो रूले से बना है ।

रूपा० ना० पु० चांदी, रजत, ना० स्त्री० वैश्या,
 रूपवती ।
 रूपान्तर० ना० पु० दूसरारूप ।
 रूपी० गु० आकारवान् ।
 रूपी० ना० पु० रूपदेशीय मनुष्यादि ।
 रूपीमस्तगी० ना० स्त्री० औषधि विशेष ।
 रूरा० गु० अच्छा, सुन्दर ।
 रूसना० अ० क्रि० रीतना, रूठना ।
 रूसी० ना० स्त्री० शिरका मेल, ना० पु० रूस
 देशीय ।
 रूक्षक० ना० पु० वाता औषधि विशेष ।
 रू० अन्व्य० अरे, हो ।
 रूँक० ना० स्त्री० गदहे का शब्द ।
 रूँकना० अ० क्रि० रूँककरना ।
 रूँगना० अ० क्रि० चलना, कीट चाल ।
 रूँट० ना० पु० रहट रेंटा ।
 रूँटा० ना० पु० पोया, सिगक, नेटा ।
 रूँड० ना० पु० }
 रूँडी० ना० स्त्री० } एरुडवा उसका बीज ।
 रूँदा० ना० स्त्री० छोटीककड़ी ।
 रूँदी० ना० स्त्री० छोटा खरबूजह ।
 रेख० ना० स्त्री० लकीर, चिह्न, प्रारब्ध, ललाट ।
 रेखना० स० क्रि० लकीरकरना, चिह्न बनाना ।
 रेखा० ना० स्त्री० रेख, लकीर ।
 रेखागणित० ना० पु० गणित विशेष ।
 रेखागति० ना० स्त्री० कर्मगति, प्रारब्धकी
 चाल ।
 रेचक० ना० पु० वह औषधि जिसमें दस्त
 आते हैं, योग में वह क्रिया जिससे पचन को
 उत्तारते हैं ।
 रेचनी० ना० स्त्री० मधुपत्री, जो दस्त उपजावे ।
 रेचा० ना० स्त्री० कपाल ।
 रेड़० ना० स्त्री० चिह्न, निशान ।
 रेणु० ना० स्त्री० धूलि, प्लाक ।
 रेणुका० ना० स्त्री० परशुराम की माता, गंगा
 जीका रेत, धूलि, बाल ।

रेणुपित्तहा० ना० पु० पित्तपापना ।
 रेत० ना० पु० वीर्य, वीज, बाल, झीलन ।
 रेतः० ना० पु० वीर्य, कामदेव ।
 रेतना० स० कि० सोहनकरना, झीलना, झी-
 टना ।
 रेतल० } गु० जहाँ बहुत रेतहोवे ।
 रेतला० }
 रेताना० ना० पु० बाल, रेत, गु० धौलाभया ।
 रेटाई० ना० स्त्री० रेतने का काम वा काम ।
 रेतियाना० स० कि० रेतना, चिकुना करना ।
 रेतौ० ना० स्त्री० जहाँ अधिक रेतहो, रेतने का
 हथियार ।
 रेतौला० गु० बाल्या, किरकिरा ।
 रेतुआ० ना० पु० रेतनेहारा ।
 रेफ० ना० पु० यकार के आगे का व्यंज्य ।
 रेर० ना० पु० शोर, हँसा ।
 रेलना० स० कि० टेलना, टकेलना, पेलना ।
 रेलपेल० ना० स्त्री० बहुतात, सरसाई, भीड़ ।
 रेलाना० ना० पु० अहिला, बाद, पशुओं की
 पांति, टकेल, पेली, झपट, देला ।
 रेवड़ी० ना० स्त्री० तिलमिलित मिठाई विशेष ।
 रेवत० ना० पु० राजा विशेष, रेवती का नाप ।
 रेवती० ना० स्त्री० सत्ताईसवीं नक्षत्र, श्रीवल-
 देवजी की पत्नी ।
 रेवतीरमण० ना० पु० श्रीवलदेवजी ।
 रेवन्चीनी० } ना० स्त्री० श्रीपि विशेष ।
 रेवन्चीनी० }
 रेवा० ना० पु० नर्मदा नदी । ना० स्त्री० नदी
 विशेष ।
 रेह० ना० स्त्री० रेहना ।
 रेहू० ना० पु० लुदियाना ।
 रेहौ० ना० स्त्री० रेह ।
 रेहू० ना० स्त्री० ऊसर भूमिकी मिट्टी ।
 रेकना० अ० कि० रेकना ।
 रेन० } ना० स्त्री० रात, निशा ।
 रेनि० }

रेनिचर० ना० पु० निशाचर ।
 रेनिचर्ण० गु० कालो, श्याम ।
 रेवत० ना० पु० मनु० विशेष ।
 रोआइ० ना० स्त्री० विलाप, हाहाकार ।
 रोआना० स० कि० रोलाना, सताना, कुड़ाना,
 अ० कि० कुड़ना, खिसियाना ।
 रोआं० ना० पु० रोम ।
 रोगटी० ना० स्त्री० मगडा, छल, टगविधा ।
 रोटना० स० कि० मुकरना ।
 रोपना० स० कि० लगाना, जुमाना, गाड़ना ।
 रोक० ना० स्त्री० टोक, अटक, विघ्न, नकड़ ।
 रोकड़० ना० स्त्री० जो रूपया खपने पात
 जमा है ।
 रोकड़िया० ना० पु० रोकड़ रखनेहारा ।
 रोकन० ना० स्त्री० थोट, आइ, छेदन ।
 रोकना० स० कि० घेरना, घोंपना, छिकना,
 अटकाना, नातकटना ।
 रोकू० ना० पु० रोकनेहारा ।
 रोग० ना० पु० व्याधि, दुःख, विकार, घीमारी ।
 रोगरिपु० ना० पु० वैद्य, धन्वन्तरि, औषधि ।
 रोगहा० } गु० वैद्य, औषधि ।
 रोगहारी० }
 रोगाहय० ना० पु० कूट औषधि ।
 रोगिया० } गु० व्याधी, दुःखी, बीमार, मरीच ।
 रोगी० }
 रोच० ना० पु० खुरी ।
 रोचक० ना० पु० पाचक, जो रुचि उपजावे ।
 रोचन० ना० पु० तिलक, गोरोचन, मनभावन ।
 रोचनरुक्म० ना० पु० कपाला ।
 रोचना० ना० पु० गोरोचना, तिलक, अ० हि०
 रचना, भावना ।
 रोचिप० ना० पु० मनु विशेष ।
 रोज० } ना० पु० विलाप, रोना ।
 रोजड़ा० }

लूटना० स० कि० बरबस खीनलेना, उड़ाना, गवाना ।
 लूटालूट० ना० स्त्री० लूटने का काम ।
 लूत० ना० पु० लवण, लोह, नमक ।
 लूनिया० ना० पु० लोह नननिहार, जाति-
 विशेष, पीधविशेष, गु० लोहा ।
 लूनी० ना० स्त्री० मकलन, लोना ।
 लूता० ना० स्त्री० मकड़ी, व्याधिविशेष ।
 लूम० ना० स्त्री० पुच्छ, पूछ, डुम ।
 लूला० पु० टुपडा ।
 लूह० ना० स्त्री० लू ।
 लूहर० ना० पु० लुकेडा, लूक, पतिततारा ।
 लू० अन्य० से, तक, तलक ।
 लूई० ना० स्त्री० ग्रहार, जो कपडा आदि में
 लगाते हैं ।
 लूड़ी० ना० स्त्री० मैगनी, नकरी आदि की
 विधा ।
 लूड़ा० ना० पु० रोई ।
 लूस० ना० पु० लिखना, लिखित, तहरीर ।
 लूसक० ना० पु० लिपिकर, लिखनेहारा ।
 लूसन० ना० पु० लिपि, लिखाई ।
 लूसनी० ना० स्त्री० कलम, लिखनी ।
 लूसपर्म० ना० पु० इन्द्र, देवराज ।
 लूस्या० ना० पु० देवता, गिनती, हिसाब,
 बीजक ।
 लूस्य० ना० पु० पत्र, चिट्ठी, लिखागया, लिखने
 के योग्य ।
 लूस्यपत्र० ना० पु० भोजपत्र ।
 लूसजाना० स० कि० टोना, लुभागना, जीतना ।
 लूस० ना० स्त्री० चूनादि वस्तु भीतपर लगाने के
 लिये ।
 लूसना० अ० कि० पीदना, सोना, पड़ना ।
 लूसदेन० ना० पु० व्यवहार, व्यापार ।
 लूसना० स० कि० ग्रहण करना, पकड़ना, चुना ।

लूपकृना० स० कि० संगपकृना, मैधुन करना,
 अपने कलङ्क से दूसरे को कसाना ।
 लूपना० स० कि० पातना, चुपड़ना ।
 लूपालक० ना० पु० धर्मका पुत्र, पोष्यपुत्र ।
 लूपालना० स० कि० बंध करके लेना, पोष्य-
 पुत्र करना ।
 लूसरना० अ० कि० कलङ्क लगाना, दोषदेना ।
 लूसमान० गु० जो लेनेवाला है ।
 लूस० } ना० पु० बहरा ।
 लूस्या० }
 लूस्या० ना० पु० भेड़ी का बच्चा ।
 लूसिह० ना० पु० सांप, सर्प ।
 लूसीतिक० ना० पु० गन्धक ।
 लूसुट० गु० लिया लूट, सहलूट ।
 लूसेना० स० कि० ग्रहणकरना, खीन लेना ।
 लूसव० ना० पु० भीतकी पपवी जो गिरने योग्य
 है, एक बारका फराव ।
 लूसवा० ना० पु० छोटा पोलरा, लेनेहारा, धन,
 खीरी, रोधी पकाने के बर्तनों पर जो मिट्टी
 लगाते हैं ।
 लूसवादेई० ना० स्त्री० लेनेदेन, कदाईनी ।
 लूसवार० ना० पु० गीलीमिट्टी जो क्षीर में
 लगाते हैं ।
 लूसवार० ना० पु० लेना में लोटना ।
 लूसाल० ना० पु० लट ।
 लूसैया० ना० पु० लेनेहारा ।
 लूसश० गु० छोटा, थोड़ा, ना० स्त्री० छोटी ।
 लूसस० ना० पु० भूसा मिली मिट्टी की भीतमें
 लगावट, लोप पोत ।
 लूससना० स० कि० लोपना, पोतना, घुसना,
 बालना, भंगडा उठाना ।
 लूसालेस० } ना० पु० सीपा लोप ।
 लूसौअ० }
 लूसह० ना० स्त्री० शोषता, उतावली, बधावट ।
 लूसहन० ना० पु० चाटना ।

रोट० } ना० पु० मोटी रोटी, श्रीहनुमान्जी
 रोटा० } का मोटी रोटीका नैवेद्य ।
 रोटी० ना० स्त्री० भोजन विशेष ।
 रोड़ा० ना० पु० बड़ा कंकर ।
 रोड़ी० ना० स्त्री० छोटा कंकर ।
 रोदन० ना० पु० रोवाई, आंसू निकलना ।
 रोदसी० ना० स्त्री० भूमि, आकाश ।
 रोध० ना० पु० तीर, तट, रोक, विराय ।
 रोधी० पु० रोकनेहारा, घेनेहारा, तटवाली ।
 रोना० अ० क्रि० आंसूडालना, विलापना, उदा-
 सहाना, ना० पु० विलाप, रोदन, शोक ।
 रोपक० ना० पु० जो रोपणकरे ।
 रोपण० ना० पु० वृक्षादि को लगाना ।
 रोपना० स० क्रि० रोपना, रोकना, अटकना ।
 रोम० ना० पु० शरीर के बाल, ऊन ।
 रोमकण० ना० पु० चौगाँडा, खरगोश ।
 रोमकूप० ना० पु० रोमकी जड़ ।
 रोमपट० } ना० पु० रोमीवस्त्र, यथा कम्बल,
 रोमवस्त्र० } डुराला इत्यादि ।
 रोमस० ना० पु० बीडस, तमालपत्र, प्रश्न ।
 रोमसफली० ना० स्त्री० बीडस ।
 रोमहर्षण० } ना० पु० रोम खंडे जाना,
 रोमाञ्च० } गंदराद ।
 रोरी० ना० स्त्री० जिसका शिरमें टीका लगाते
 हैं, रोली ।
 रोलना० स० क्रि० रन्दाकरना, चिकनाना, चुकी ।
 रोली० ना० स्त्री० रोरी, चावल और हल्दी और
 फटकरी की मिलीनी जिसका लाल तिलक
 माथेपर लगाते हैं ।
 रोवना० अ० क्रि० रोना, पु० रोनेहारा ।
 रोश० } ना० पु० क्रोध, दुःख, अस्वस्थ ।
 रोष० }
 रोपण० ना० पु० फालसा, पारा, क्रोध ।
 रोप० ना० पु० रोप ।
 रोसना० अ० क्रि० रूटना ।
 रोहट० ना० स्त्री० रोदन ।

रोहण० ना० पु० राजा विशेष, रोहिणी की
 पिता ।
 रोहिणी० ना० स्त्री० श्रीवलदेवजी की माता
 चौथा नक्षत्र, बुधकी माता, हर, कुटकी ।
 रोहित० ना० पु० मत्स्य विशेष ।
 रोहिताश्व० ना० पु० राजा हरिश्चन्द्रका पुत्र ।
 रोहित्य० ना० पु० मेथी ।
 रोहिये० स० क्रि० धारण करिये ।
 रोही० ना० पु० बरगद ।
 रोहू० ना० पु० मत्स्य विशेष ।
 रोहलखराड० ना० पु० बांसवरेली के आस
 पासका देश ।
 रोदना० } स० क्रि० पाँसे खुदना वा पाँव
 रोधना० } से मजिना वा मसलना वा मलना ।
 रोताई० ना० स्त्री० लड़ाई, समर, युद्ध ।
 रौद्र० ना० पु० भौंक, क्रोध, धूप, य० मयानक
 कठिन, ना० पु० श्मारादि नवरत्न में से एक
 का नाम ।
 रौप्य० ना० पु० चाँदी, रजत ।
 रौर० ना० पु० रौला, जस ।
 रौरव० ना० पु० नरकका खण्ड विशेष ।
 रौरा० सर्व० तुम्हारा ।
 रौला० ना० पु० धूम धाम, बलड़ा, इलड़ा ।
 रौव्य० ना० पु० मनु विशेष ।
 रौहिणीय० } ना० पु० श्रीवलदेवजी, बुध ।
 रौहणेय० }
 [ख]
 लकड़० ना० पु० काष्ठ, काठ, लठ ।
 लकड़हारा० ना० पु० लकड़ी बेचनेहारा ।
 लकड़ा० ना० पु० गिरर, लकड़ीका बड़ाटकड़ा ।
 लकड़ी० ना० स्त्री० लाठी, काष्ठ, हथत, य०
 कड़ा, कठिन ।
 लकीर० ना० स्त्री० रेखा, धारी, डकीर ।
 लकुट० ना० पु० छड़ी, लाठी ।
 लकुच० ना० पु० बड़हल ।

वायुजात० } ना० पु० श्रीहनुमान्, भीमसेन ।
 वायुपुत्र० }
 वाय्वग्नि० ना० पु० पवन और अग्नि ।
 वार० ना० पु० ठोकर, घात, हतपाद, दिन ।
 वार० ना० स्त्री० अयकारा, विलम्ब, समय,
 धीरजता ।
 वारण० ना० पु० वर्जन, निषिद्धता, रिकन,
 न्योद्धाकर, हाथी ।
 वारद० ना० पु० कपास ।
 वारन० स० क्रि० अर्पण, भेंट, धलि, हाथी ।
 वारना० स० क्रि० घेर लेना, अर्पण करना,
 चदाना ।
 वारवधू० ना० स्त्री० वेश्या, पुरुरिया,
 वारव्ही० ना० पुंश्चली ।
 वारा० ना० पु० संस्तार, वचाक, निद्योवर, गुं
 संस्तार, लोभ ।
 वारापार० अर्थ० इधर से उधर तक ।
 वाराणसी० ना० स्त्री० काशी, विनारस ।
 वारि० ना० पु० जल, पानी ।
 वारिचर० ना० पु० मछली आदि ।
 वारिचरकेतु० ना० पु० कामदेव, श्रीबल-
 कामदेवकी प्रकृत ।
 वारिज० ना० पु० कमल, संपुंर्द लवण, गुं
 जल से लयने होय ।
 वारिद० ना० पु० मित्र ।
 वारिदनाद० ना० पु० मेघनाद, रोमायणी यथा
 (वारिदनाद जित्त सुत ताम्, अमरहोममम
 रत्न जगन्नाम) ।
 वारिधर० ना० पु० मित्र ।
 वारिधि० ना० पु० संपुंर्द ।
 वारिवल्ली० ना० स्त्री० करेली, तरिकरी भाग
 वारिविहंग० ना० पु० जलके पक्षी ।
 वारियुक्त० ना० पु० कौडी ।
 वारिसंभव० ना० पु० लाग ।
 वारिश० ना० पु० सन्धि ।

वारणी० ना० स्त्री० मदिताविशेष, अश्विप
 दिशा, गंगातीका पर्व विशेष, दूध घास विशेष,
 हाथीकी चाल, पचीसवां नक्षत्र ।
 वारे० अर्थ० त्याग, छोड़े पाने ।
 वार्ता० ना० स्त्री० वृत्तान्त, बात, वार्ताचीत ।
 वार्ताकी० ना० स्त्री० संधी कटीई ।
 वार्तिक० ना० पु० मूलमंत्र का पूरकमंत्र, जो
 छन्दोक्ति रहित, गंध, वाता में
 वार्तिका० ना० स्त्री० भाटा, वेगन ।
 वार्द्धक्य० ना० पु० बुढ़ापा, बुढ़ावस्था ।
 वार्षि० गुं संवती, वर्षका, जो वरसातमें उप-
 जता है, जो वरसात के योग्य है ।
 वाल्य० ना० पु० बालकपन, बालकता ।
 वावडूक० ना० पु० बुढ़ावस्था, वावडूक, गुणी ।
 वाष्प० ना० पु० नाफ, भाफ ।
 वाष्पिका० ना० स्त्री० कालाजीरा ।
 वास० ना० पु० घर, बसने का स्थान, वास ।
 वासना० ना० स्त्री० अभिलाषा, इच्छा, अर्थ
 कि० महकवा ।
 वासन्ती० ना० स्त्री० लता विशेष, चन्द्रमास में
 कामदेवका पर्व विशेष ।
 वासर० ना० पु० दिना, दिवस ।
 वासव० ना० पु० इन्द्र, देवराज ।
 वासांसि० ना० पु० वस्त्रकपड़े ।
 वासां० ना० पु० वासा ।
 वासित० गुं सगन्धि संयुक्त, वस्त्रयुत ।
 वासी० ना० पु० बसनेहारा, रहनेहारा ।
 वासुकि० ना० पु० मह्यसर्प, प्रधानसर्प ।
 वासुदेव० ना० पु० श्रीकृष्णचक्रवर्ती ।
 वास्तव० अर्थ० यथाथे, तात्पर्य, असल ।
 वास्तव्य० गुं बसने के योग्य ।
 वास्तिकत० ना० स्त्री० मेथीका शाक वा मेथी ।
 वास्तुक० ना० पु० वृथ्वा का साग ।
 वास्तुकाकार० ना० पु० पाखू का साग ।
 वास्तुक० ना० पु० वृथ्वा का शाक ।

लखना० ना० पु० मायाका पसार, शु० जो देता
 जाने मौजूदात, लाख।
 लखन० ना० पु० लक्षण, लक्ष्मण।
 लखनऊ० ना० पु० अवधदेश की राजधानी।
 लखना० स० कि० देखना, समझना।
 लखपति० } शु० धनी, मायवान्, जिसके पास
 लखपती० } लाखों रुपया हो।
 लखलुट० शु० उड़ाऊ।
 लखा० ना० पु० लाखों।
 लखाऊ० शु० जनाऊ, दिखाना।
 लखिया० ना० पु० देखनेहारा।
 लखेरा० ना० पु० लहेरा, लाख चढ़ानेहारा।
 लखौटा० शु० निसर्ग, लाख लगाई गई।
 लख० अर्थ० तक, पर्यन्त, समीप, ना० स्त्री०
 पक्षी।
 लगचलना० अ० कि० साथ साथ चलना,
 चलद चलना।
 लगङ्ग० ना० पु० पक्षी विशेष।
 लगन० ना० स्त्री० लग्न।
 लगना० अ० कि० हाना, सोहना, फटना,
 सरीहाना, भिड़ना, मिलना, जलना, शु०
 लगुआ० ना० पु० लगाने।
 लगभग० अर्थ० आस पास, निकट।
 लगातार० शु० एकपर एक तापड़ताइ।
 लगाना० स० कि० उतराना, वासकरना, मि-
 डाना, मिलाना, बन्दकरना, लसना, बाधना,
 चिपटाना, कड़ाहनी करना।
 लगाव० ना० पु० गढ़ाव, मेल, सम्बन्ध।
 लगावट० ना० स्त्री० मिलान, गठावट।
 लगुङ्ग० ना० पु० साठी।
 लगुआ० }
 लगुआ० } ना० पु० यार, धगाइ।
 लग्गा० ना० पु० स्नेह, माया, बड़ा बाँस।
 लग्गी० ना० स्त्री० छोटाबाँस, साठी।
 लग्न० ना० स्त्री० निमिष, पल, राशिका उदय

काल, प्रेम, मित्रता, विवाह का दिन, सुहर्त।
 लग्नेष्ट्र० ना० पु० लग्नका ठीक।
 लग्नेष्ट्रित० शु० लग्न विचारित।
 लग्नोत्सव० ना० पु० विवाहका आनन्द।
 लग्निमा० ना० स्त्री० सिद्धिविरोध।
 लघिष्ट्र० शु० पास, पासवाला, लगाहुआ।
 लघुता० ना० स्त्री० छोटाई, हलकापन, श्रीर-
 शीप्रता, जल्दी, रामचन्द्रिकायां यथा (कोटि-
 भांतिग पौनते मनते महालघुता लसे, बैठके
 ध्वज अम श्रीहनुमन्त अंतक ज्यो हैसे)।
 लंफ० ना० पु० कटि, लंका, शु० देर, बहुत।
 लंफना० ना० पु० लम्ना, चौगड़ा, शशा।
 लङ्कनायक० } ना० पु० लंकाका राजा, राम
 लंकप० } चन्द्रिकायां यथा (लंकनायक
 को विभीषण देवदूषणको दहे)।
 लंका० ना० स्त्री० उपरीय विरोध।
 लंकाधि० }
 लंकापति० } ना० पु० रावण, लंकाकाराजा।
 लंकिनी० ना० स्त्री० निशाचरी विरोध।
 लंकाेश० } ना० पु० रावण, लंका का
 लंकाेश्वर० } राजा।
 लंग० } शु० पंय, अपाहन।
 लंगड़ा० }
 लंगड़ाना० अ० कि० लंगड़ना।
 लंगर० ना० पु० नौकादि, के दराने के लिये
 बड़ाभारी लोह, लंगड़ा, ढाँट।
 लंगरी० ना० स्त्री० पाली।
 लंगूना० ना० पु० लाने की बस्तुविरोध।
 लंगूर० ना० पु० वानरविरोध, इनुमादनी।
 लंगोटी० } ना० पु० कपड़ बाँधने का छोटा
 लंगोटा० } तख, कपान।
 लंगोटिया० ना० पु० जो लङ्कारका पार है।
 लंगोटी० ना० स्त्री० लंगोट।
 लंघन० ना० पु० उपास, कड़ाका, उधतन, न
 मानना, नौपणे।
 लंघना० अ० कि० उदतना, फाँटना, बीतना।

वास्तोपति० } ना० पु० इन्द्र, अमर कोष
 वास्तोपति० } अथा (वास्तोपतिरमरपतिर्वि
 लाराविश्राचीपतिः)।
 वाह० ना० पु० घोडा, वाणी-
 वाहक० ना० पु० प्रहजवा
 वाहन० ना० पु० घोडा, निसपुत्रचदके आया
 जाते; सवारी।
 वाहवेरी० ना० पु० मेसा
 वाहि० सर्व० उसकी।
 वाहिनी० ना० स्त्री० वाहिनी, सवारी।
 वाहू } ना० पु० सुज।
 वाहू }
 वाहमुक्त० ना० पु० हाथ
 वाहू य० वाहूका
 वाहालय० ना० पु० मन्दिर, केपवाहू, ना
 वाहर का
 वि० अन्त्य० यह शब्द उपसर्ग है उसका अर्थ
 कमी निर्णय कमी, भित्ता, कमी, विशेष, कमी
 विशेष कमी हीन इत्यादि होता है।
 विकट० गु० विकट।
 विकराल० गु० विकराल, अर्थकर।
 विकल० गु० व्याकुल, अर्थरही।
 विकलित० गु० विकल, व्याकुल।
 विकल्प० ना० पु० चूक, सम्यह, विचार।
 विकसित० } गु० प्रकृतित, फूलाइया।
 विकसित० }
 विकार० ना० पु० बदल, रोग, स्वभावकी
 बदल।
 विकाल० ना० पु० गोधूलि, रायकाल।
 विकारा० ना० पु० प्रकार।
 विकारण० ना० पु० मदार, वृक्ष, आक।
 विकीर्ण० गु० फैलाया गया।
 विकृत० गु० विरोधी, मूलिन; ना० पु० दृष्टा।
 विकृति० ना० स्त्री० विचार; ना स्वभाव आदि
 की बदल।
 विक्रम० ना० पु० पराक्रम, धृति, वीरत्व।

विक्रमादित्य० ना० पु० राजा विशेषर नितने
 संवत् चलाया है।
 विक्रय० ना० पु० विक्रान्त
 विक्रीत० गु० जो विक्रमा
 विक्रेता० ना० पु० बेचवैया, बेचनेहारा
 विख्यात० गु० प्रकट, प्रसिद्ध, प्रकाशित।
 विगत० गु० रहित, विना, विदूत।
 विगति० ना० स्त्री० विगाह, इराह, विरोध।
 विगन्ध० ना० स्त्री० कुनास, नदयू।
 विगुण० ना० पु० औगुण, अर्थगुण।
 विग्रह० ना० पु० शरीर, फैलाव, वैर, युद्ध।
 विघटन० ना० पु० तोड़ना, सम्पूर्ण, करण।
 विघटित० गु० पूराकियागया, भ्रष्टागया।
 विघ्न० ना० पु० अटकाव, रुकाव, अल, चूक,
 धोता, शुभकर्मी; जो बाधा।
 विघ्नराज० } ना० पु० श्रीगणेशजी।
 विघ्नविदारण० }
 विघ्नहरण० }
 विचरण० ना० पु० पर्यटन, सैर, विहारण।
 किराव।
 विचरित० गु० विहारित।
 विचल० गु० चलायमान, चंचल, निश्चिर।
 विचलित० गु० चलायमान, चंचल, अस्थिर।
 विचक्षण० गु० चतुर, निपुण, प्रवीण, स्थिति।
 विचार० ना० पु० ज्ञान, शोध, धर्म, अर्थ
 कल, ज्ञान।
 विचारक० ना० पु० विचार करनेहारा।
 विचारित० गु० जो विचारगया, निर्णयित।
 विचारी० ना० पु० विचारक।
 विचार्य० गु० जो विचारने के योग्य है।
 विचित्र० गु० रंगारंग, नाना प्रकार का, म-
 नोहर।
 विच्छेद० ना० पु० वियोग, निवारण।
 विजय० ना० पु० जय, जीत, फतह, मनाई।
 पापें विशेष जो हिरण्यकश्यप हुआ था।

लघनी० ना० स्त्री० उपासी, युवा उपासा, भूसा ।
 लचक० ना० स्त्री० विमहाहट ।
 लचकना० अ० कि० देवा होना ।
 लचका० ना० पुं० धका, मोक, नवि विशेष ।
 लचकाना० स० कि० देवाकरना, धका देना, कुकना ।
 लचना० अ० कि० देवा होना ।
 लचलचाहा० अ० कि० लजलमहोना, विमहा होना ।
 लचर० ना० पुं० अनाही ।
 लचाना० स० कि० देवा करना ।
 लच्छा० ना० पुं० फेदी ।
 लच्छस० ना० पुं० लच्छण ।
 लजजजा० यु० लसलसा, विपचिपा ।
 लजजजाना० अ० कि० मिलमिला होना ।
 लजवाना० स० कि० संकोच करता, शरमाना ।
 लजाना० अ० कि० संकोचनी, लविमहोना ।
 लजारू० ना० स्त्री० लज्जान्वती, प्रीति ।
 लजाल० विशेष, यु० संकोची, लमीला ।
 लजियाना० अ० कि० लजानान ।
 लजीला० यु० लानन्त, संकोची ।
 लज्जा० ना० स्त्री० लान, संकोच, हया ।
 लज्जावान्० अ० संकोचित, लानयुक्त ।
 लज्जि० अ० कि० लनयकर ।
 लज्जिका० ना० स्त्री० लजाल, वेश्या ।
 लज्जित० संकोचित, लानयुक्त ।
 लट० ना० स्त्री० केश, जो खलकगया है ।
 लटक० ना० स्त्री० हिलग, भांगलीका भूनास्त्रिरोष ।
 लटकन० ना० पुं० मुहना विशेष (जो नुयुम पडता है, फल विशेष, पत्नी विशेष, परीषी) ।
 लटकना० अ० कि० हिलगना ।
 लटका० ना० पुं० देना, माडक, चोटीका, उडकला ।

लटकाना० स० कि० हिलगना, दंगना ।
 लटकाच० ना० पुं० दंगल ।
 लटपटा० यु० चंचल, खिलद, मगदी, शोभ अर्नरीति से मोधी है ।
 लटपटाना० अ० कि० लडवडाना, ठीकरताना ।
 लटपटी० ना० स्त्री० लडवडी, ठीकरटी ।
 लटा० यु० ।
 लटाई० ना० स्त्री० परीषी, चिखी, यु० दुबलापका ।
 लटापटा० यु० ऐसा बैसा ।
 लटूरिया० } ना० स्त्री० छोट केश जिन् में
 लटूरी० } लटपड जाती है ।
 लटोरा० ना० पुं० पत्नी विशेष ।
 लट्ट० ना० पुं० मोटा, गुला, मोहित ।
 लट्टहोना० अ० कि० कित्तिपर मोहित होना ।
 लट्ट० ना० पुं० सोया, लाठी ।
 लटालठी० ना० स्त्री० पररपरलाठी का लडाई ।
 लटियाना० स० कि० लटालठी करना, लाठी से पीटना ।
 लटूर० ना० पुं० यु० दीता, टंटा ।
 लट्ट० ना० स्त्री० पच, भक्ति, लकी, यथा परत ।
 लट्टकपन० ना० पुं० शिशव, बालकता, लडकई ।
 लट्टकबुद्धि० ना० स्त्री० जिविद्यापन, लडके कीसी बुद्धि ।
 लट्टका० ना० पुं० बालक, पुत्र, बच्चा ।
 लट्टकाई० ना० स्त्री० लडकपन, बालकता, लट्टकापन० ना० पुं० शिशुता ।
 लट्टखडाना० अ० कि० डगमगाना, लडकना ।
 लट्टना० स० कि० मगडना, मुदकतना ।
 लट्टखडाना० अ० कि० लडखडाना ।
 लट्टाई० ना० स्त्री० युद्ध, समर, मगडा ।
 लट्टाक० } यु० मगडाल, युद्धजाता, वीर ।
 लट्टाका० }

विजयदशमी० ना० स्त्री० आश्विन-शुक्ल-१०,
कार सुदी १० ।

विजयनर० ना० पु० अर्जुन ।

विजया० ना० स्त्री० भंग, वृद्धी ।

विजयी० यु० जयवन्तः, जीतनेहाराः ।

विजाती० } यु० भिन्न जातिका, अनजाति ।
विजातीय० }

विज्ञान० ना० पु० अज्ञान, अज्ञान, अशुभ,
मूर्ख ।

विद्म० ना० पु० चीट ।

विद्मचर० ना० पु० शंकर, घरेला ।

विटप० ना० पु० वृक्ष, पल्लव, पेड़, रामायणे
यथा (पुरुषकुयोमी ज्यो उरगारी, मोह-विटप
नहिं सकत उपारी ।)

विडम्ब० ना० पु० दुःख, केरा, धतना ।

विडम्बना० ना० स्त्री० दुःखदायक, निज-व-
दाई वा निन्दायुत-वचन ।

विडम्बित० यु० दुःखित, पतित, निन्दित ।

विडाल० ना० पु० मार्जार, बिलार ।

वितण्डा० ना० स्त्री० लखितार्थ ।

वितन० ना० पु० कामदेव ।

वितरण० ना० पु० दान, त्यागना, पार-का-
उतरना ।

वितज० ना० पु० पाताल-विशेष ।

वितस्ता० ना० स्त्री० व्यासानदी-विशेष, जो
पंजाब में है ।

वितस्ति० ना० पु० बारहस्रगुज, बालिशत ।

वितान० ना० पु० विस्तार, चन्द्रवा, तन्म-
मण्डप ।

वितुश० ना० पु० धनिया ।

वितृष्णा० ना० स्त्री० निराशा, बेरस्य, तुष्णा,
अनवि ।

वित्त० ना० पु० धन, दौलत, द्रव्य, खजाना ।

विथक० } यु० सकित, भवाडया ।
विथकित० }

विद० गु० जाननेहारा ।

विदग्ध० ना० पु० लम्पट, यु० चतुर, विचक्षण ।

विदग्धा० ना० स्त्री० लम्पट स्त्री, चतुर स्त्री ।

विदारण० ना० पु० फाड़ना ।

विदारना० त० क्रि० फाड़ना, चीरना ।

विदारिका० ना० स्त्री० विदारीकन्द ।

विदारिगन्धा० ना० स्त्री० शालिपर्णी ।

विदिक० ना० स्त्री० आग्नेयादि-कोष, विदिरा ।

विदित० यु० प्रकट, जो जानागया, प्रसिद्ध ।

विदिशा० } ना० स्त्री० विदिक ।
विदिश० }

विदीर्ण० यु० फाड़ा, चीरा, फटाफूटा ।

विदुर० ना० पु० दासीसूत, हरिमल्ल-विशेष ।

विदुप० यु० पण्डित, गुणी ।

विदूपक० ना० पु० भांड, निन्दक ।

विदेश० ना० पु० आग्नेयदेश, परदेश, बिलायत ।

विदेशी० ना० पु० परदेशी, बिलायती ।

विदेह० ना० पु० राजा जनक, कामदेव ।

विदेहजा० ना० स्त्री० सोताजी ।

विदौता० ना० पु० देवता ।

विद्यमान० यु० वर्तमान, अस्त, मौजूद ।

विद्या० ना० स्त्री० शास्त्रका ज्ञान, पंचार्थ-ज्ञान,
इलम, हुनर, गुण, शिक्षादिक १४ ।

विद्याधर० ना० पु० देवता-विशेष, यु० पण्डित,
गुणी, करीगर ।

विद्यावान्० गु० ज्ञानवान् पण्डित, आशिर्वा ।

विद्यार्थी० ना० पु० छात्र, शिष्य, शु० पढ़ने-
वाला ।

विद्यालय० ना० पु० पाठशाला, विद्या-का-
घर ।

विद्युत्० ना० स्त्री० बिजली, कौदा ।

विद्युत्का० ना० स्त्री० कलिहारी ।

विद्युत्ता० ना० स्त्री० बिजली, कौदा ।

विद्रुम० ना० पु० मृगा ।

विद्रुदिनोद० ना० पु० शास्त्रार्थ-गुण-विद्यार्थी-
चर्चा-परिष्ठती-में ।

विद्वान्० गु० विद्यावान् पण्डित, पढ़ा ।

लदाना० स० कि० लडाईं वा पुढ करवाना,

श्रीरक्षा करेना

लदियाना० स्त्री० कि० पिराना, पुयना

लही० ना० स्त्री० मोतियों की संज्ञक

लहेता० पु० दुबारा, महतपारा, दीठ

लड० ना० पु० मोदक जो मोठ्यादिके वनते हैं,

मिठाई विशेष

लडा० ना० पु०

लडिया० स्त्री०

लडी० ना० स्त्री० छोटादकडा, लडिया

लणठ० ना० पु० मूला

लण्ड० ना० पु० लिंग, लोहा

लण्डूरा० पु० लण्ड, पांडा, कन्दुहीन, अनाथ

लत० ना० स्त्री० घुरीवाल, आदत

लतना० स० कि० घोड़ी का घोड़े साथ प्रसंग

रीना

लतरी० ना० स्त्री० पुरानी स्त्री, देहिह्वर विशेष

लता० ना० स्त्री० लैल, भियंघ, दासका स्त्रीपति

लताइना० स० कि० दोड़पुप पराना, हलका

करना, तुच्छ करना

लताना० स० कि० घोड़ी से घोड़े का प्रसंग

करना

लतिकी० ना० स्त्री० लता

लतिया० पु० जिरकी चालुगी दे, कुर्मी

लतियाना० स० कि० लत से मारना

लती० पु० लतिया

लनुआ० ना० पु० फटाकपडा

लत्ता० ना० पु० पुरानाकपडा, चीथडा, प्राय,

लात, रामचन्द्रिकायां (इयमन्त लत्ता हत्यो देह

भूल्यो, छुट्यो मुग्धनाशाहित इन्द्र मूल्यो)

लत्ती० ना० स्त्री० लट्ट की-खोरी, खीले-खीलो

लात, घोड़े की लात

लथडना० अ० कि० हाँचक आदिसंभोगगाना

लथेडना० स० कि० हाँचक से भिगादिना

लदना० अ० कि० योक्तिल वा भरारोना

लदनियां० ना० पु० लानेहार, लदनेहार,

लदाव

लदान० ना० पु० बोक, भरारि, लदाव

लदाना० स० कि० धोसला, भरना, लदाना

लदाव० ना० पु० लदान, बोक

लदुआ० ना० पु० जो लादानाता है

लप० ना० पु० पुरत, छुटो, हनेली, पसना

लपका० ना० स्त्री० चटक, भभक, भलक, भपटना

लपकना० अ० कि० लहकना, भभकना, चम

कन, भपटना, भपकरना

लपका० ना० पु० भपट, फुर्त, घुरीवाल

लपकाना० स० कि० कनेसी घस्तु के लनेकी

हाँचदिना

लपकी० ना० स्त्री० तपची, रंटीका, मत्स्य

विशेष

लपची० ना० स्त्री० मंखली विशेष

लपकप० पु० फुतीला, चंचल

लपट० ना० स्त्री० सुगन्ध, महक, देहक,

मिठाव

लपटना० अ० कि० लिपटना, पटना, मिटना,

लटना

लपटा० ना० पु० लपटी विशेष, पास, विशेष,

सम्बन्ध

लपटाना० स० कि० मिडला, लिपटना, लपटना,

लगाना, बलदेग

लपटी० ना० स्त्री० लपटी

लपलप० पु० भपकी

लपाट० } पु० मिथ्यातारी, महाभद्रा

लपाटिया० }

लपाटी० ना० स्त्री० मिथ्या, मूठ, मूठ

लपाटु० पु० लपाटिया

लपेट० ना० स्त्री० पत्त, लट, लपटना

लपेटना० ना० स्त्री० नेटा

विद्वेष० ना० पु० वैर, विरोध, अदावत ।
 विद्वेदिनी० ना० स्त्री० विरोधिनी, निन्दक, और
 दुःखदाता ।
 विद्वेषी० ना० पु० वैरी, शत्रु ।
 विघ्न० ना० स्त्री० प्रकार, रीति ।
 विघ्ना० ना० स्त्री० राहु, वेवह ।
 विघ्नमं० ना० पु० निज वर्णाश्रमसे विपरीतधर्म ।
 विघ्नता० ना० पु० ब्रह्मा ।
 विधानं० ना० पु० शास्त्रोक्त व्यवहार, विधि,
 आचार ।
 विधायकं० ना० पु० विधानकर, सौंपन-
 हारा ।
 विधानी० ना० स्त्री० सरस्वती ।
 विधि० ना० स्त्री० प्रारब्ध, ना० पु० ब्रह्मा,
 देवता, कर्म, भाग्य, विधान, काल, प्रकार,
 शास्त्रोक्त व्यवहार ।
 विधिभ्रष्ट० ना० पु० ब्रह्मभ्रष्ट ।
 विधिकर० ना० पु० सवक, श्रुत्य, गुलाम ।
 विधिगति० ना० स्त्री० कर्म की चाल, ब्रह्मा की
 दशा यां लिखति वा चाल वा कर्त्तव्य ।
 विधिपिता० ना० पु० काल ।
 विधिचत्० अच्य० यथा योग्य, विहित ।
 विधु० ना० पु० चन्द्रमा ।
 विधुन्नुद० ना० पु० राहु, आठवां ग्रह ।
 विधुवदनी० ना० स्त्री० चन्द्रवदनी, अतिसुन्दर,
 जिसका मुख चन्द्रमा के समान है ।
 विधुर० ना० पु० वियोग, व्याकुलता ।
 विधेय० गु० सधाऊ, शिष्ट, होनहार, समाचार,
 विशेषभेद ।
 विधेयाधिपत्यं० गु० विधायि का अर्थ संक्षेप-
 हारा ।
 विध्वंसं० ना० पु० विनाश, घृणा, निरुद्धता ।
 विन० सर्व० उन ।
 विनतं० गु० नम, आधीन, शुक, टेढ़ा ।
 विनतः० ना० स्त्री० मोहनीभी भागा, कश्यप
 की स्त्री ।

विनती० ना० स्त्री० प्रार्थना, निवेदन, सुरामद ।
 विनय० ना० पु० शिष्टाचार, लान, समता, नी
 आदर, स्वभाव, सुरामद ।
 विनयी० गु० विनयशील, शिष्टाचारी, नम्र,
 नीतिज्ञ ।
 विनष्ट० गु० जिसका विनाश हो गया ।
 विना० अच्य० त्याग के, छोड़े, रहित ।
 विनायकं० ना० पु० श्रीगणेशजी ।
 विनाशं० ना० पु० ध्वंस, नाश ।
 विनिमयं० ना० पु० अदलबदल, एकर ।
 विनीतं० गु० विनयी, नम्र, ना० पु० मारतं ।
 विनीता० ना० स्त्री० उत्तमा ।
 विन० अच्य० विना ।
 विनोदं० ना० पु० चोंप, आनन्द, क्रीडा, खेल ।
 विन्दकं० गु० लाभयुत ।
 विन्दु० ना० पु० बूंद, अतुल्यार, एना, शर्य,
 मणि, चीर, रेत ।
 विन्ध्यं० ना० पु० विन्ध्याचल ।
 विन्ध्यगिरि० ना० पु० विन्ध्याचल ।
 विन्ध्यवासिनी० ना० स्त्री० विन्ध्याचल की
 देवी विशेष जो मिर्जापुरके समीप है ।
 विन्ध्याचलं० ना० पु० पर्वत विशेष जो भर-
 तखण्ड के मध्यमें है ।
 विन्यासं० ना० पु० समूह संग्रह, और संग्रह
 यां स्थान ।
 विपत्० } ना० स्त्री० आपदा, अभाग, }
 विपत्तिं० } दुर्गति, आकल ।
 विपत्तिं० }
 विपथं० ना० पु० दूरपथ, कुमार्ग ।
 विपद्० ना० पु० विपत्ति ।
 विपद्ग्रस्तं० गु० अभाग, दुर्गती ।
 विपरीतं० ना० पु० उल्टा, विरोधी, ना० स्त्री०
 विरोध, पुराई, अपकार ।
 विपर्ययं० ना० पु० विनय, विरलता ।
 विपलं० ना० पु० पलटा-पलटा भय ।
 विपलं० ना० पु० राहु, वैरी ।

सापेटना० स० कि० बांधना, बैठना, खगानी,
लीपना ।

सापेटना० गु० लपेटागया ।

साप्पा० ना० पु० कपड़ा जो बादले से बिना है ।

सायइसबइ० ना० पु० बकभक, झूठ सच ।

सायड़ा० ना० पु० झूठा, बकी ।

सावनी० ना० स्त्री० मिट्टी का पान जिसमें ताड़ी
बुझाते हैं ।

सावलय० ना० पु० पथरी, दसल, उल्लू ।

सावलय० गु० चिपचिपा, लजलजा ।

साधार० ना० पु० बकनादी, झूठा, गप्पी ।

सावी० ना० स्त्री० खांड का जलाय जब चीनी
बनाने की पकते हैं ।

साधेदा० ना० पु० सोदा, लठ विशेष ।

साधेरा० ना० पु० फल या वृक्ष विशेष, लभेरा ।

साध० गु० प्राप्त, उपार्जित ।

साधि० गु० प्राप्ति ।

साभेरा० ना० पु० वृक्ष वा उसका फल विशेष ।

साम्य० गु० मिलनहारा, मिलने के योग्य ।

सामलड़ा० गु० ऊंचा, लम्बा ।

सामपट० गु० झूठा, असत्य, स्वेरण, छुटखेल,
परस्त्रीगामी, व्यभिचारी ।

साम्य० ना० पु० अमृद, सूधीरेला, ऊंचाव ।

साम्यकर्ण० ना० पु० शशा, चौगड़ा, सारगोश ।

साम्या० गु० ऊंचा, दीर्घ, बड़ा ।

साम्याई० स्त्री० } ऊंचाई, दीर्घपन ।
साम्यानि० ना० पु० }

साम्याना० स० कि० लम्बाकरना, बढ़ाना ।

साम्यित० गु० जो लटकयागया ।

साम्यियाकरना० अ० कि० फलोल करना,
कुदकना ।

साम्या० ना० स्त्री० गु० ऊंचा, बड़ा ।

साम्यासांसभरना० अ० कि० चीना, विलाप
करना ।

साम्या० गु० लम्बा ।

साम्यादर० ना० पु० शीतलेश जी ।

साम्या० ना० पु० चौगड़ा, शशा ।

साम्या० ना० पु० प्रलय, नारा, टेर, ताल, स्वर,

विनाश, अत्यन्तस्नेह, ना० स्त्री० चितवन ।

साम्या० ना० पु० फटी, थोड़ी ।

साम्याक० ना० स्त्री० लहर, तरंग, नम्रता ।

साम्याकरना० अ० कि० चढ़ना, धावाकरना, न-
म्रता करना ।

साम्याकरना० स० कि० भगड़ा उठाना, लड़ाना,
नम्रकरना ।

साम्याकार० ना० स्त्री० हांक, पुकार ।

साम्याकरना० स० कि० पुकारना, हांकना और

लड़ाई मांगना, प्रचारना ।

साम्यागड़ा० ना० पु० यानर, कपि ।

साम्याना० अ० कि० तरसना, जीलगारहना,
स० कि० तरसना ।

साम्याना० ना० स्त्री० खिलड़ नारि ।

साम्या० ना० पु० छोकरा, लौंडा ।

साम्याट० } ना० पु० माथा, कपाल, प्रारन्ध,
साम्यार० } पेशाणी ।

साम्यात० ना० स्त्री० रागिनी विशेष, ग०

सुन्दर, अश्रद्धा, लौकता भया ।

साम्याता० ना० स्त्री० स्त्री, अटखेल, देवी प्राप्तिद
श्रीराधिका की सखी विशेष ।

साम्याता० ना० स्त्री० लली ।

साम्याता० स० कि० फुसलाना, बहलाना, अ०
कि० गिड़गिड़ाया, तमतमाना ।

साम्याता० ना० स्त्री० छोकरा, लौंडा, लड़की, गु०
दीला, नपुंसक मनुष्य ।

साम्यापत्तो० ना० पु० चामलोसी, पुशामद ।

साम्या० ना० पु० थारा, चण, शीतोतानी का छोटा
पुष्प विशेष ।

साम्याग० ना० पु० लीय, वृक्ष विशेष ।

साम्यावण० ना० पु० लौय, नमक ।

साम्यासिन्धु० ना० पु० खारी समुद्र ।

साम्यासिन्धु० ना० पु० समुद्र, खारीपानी ।

साम्यासुर० ना० पु० लवनासुर, दैत्यकानामई ।

विपक्षता० ना० स्त्री० शत्रुता, वैर, अदावर्तन।
 विपक्षी० ना० पु० शत्रु, दुर्देई।
 विपाक० ना० पु० प्रारब्ध का हेतु, भोजन का प्रकान।
 विपाट० } ना० स्त्री० व्यासतदी उपजाव
 विपाशा० } की।
 विपिन० ना० पु० वन, जंगल।
 विपुल० यु० बहुत, बहुतात, विस्तार।
 विपुलता० ना० स्त्री० बहुतायत, विस्तारित्व।
 विपुला० ना० स्त्री० धरती, समेका, परिचम भाग।
 विपुषा० ना० स्त्री० आह्वे।
 विप्र० ना० पु० ब्राह्मण।
 विप्रचरण० ना० पु० ब्राह्मण का पांव, विशेष भगुलता का चिह्न जो श्रीविष्णुनारायण के हृदय में चिह्नित है।
 विप्रहास० ना० पु० अनर्थवाक्य, सूतकथकथन, विलाप समय वार्ता।
 विफल० यु० निष्फल, व्यर्थ।
 विभक्त० गु० जो भागकियोग्या, सुधक, अलग।
 विभक्ति० ना० स्त्री० अंश, भाग, बांट, स्वादि और तिङ् आदि और कारक बोधक।
 विभक्त्यन्त० ना० पु० जिस शब्द वा सर्वनाम के अन्त में विभक्तिका प्रत्यय है।
 विभञ्जक० यु० भंजन करने हारा, नाशन।
 विभञ्जन० ना० पु० मारण, भंजन, नाशक।
 विभव० ना० पु० द्रव्य, राज्य, सम्पत्ति, ऐश्वर्य, प्रताप, शक्ति।
 विभाकर० ना० पु० सूर्य।
 विभाकरी० ना० स्त्री० रात, रात्रि।
 विभाग० ना० पु० अंश, विभक्ति।
 विभावसु० ना० पु० सूर्य, अग्नि।
 विभिस० ना० पु० सौक्य।
 विभीतक० ना० पु० बहेडा।
 विभीषण० ना० पु० रावणका विभावर्त, गु० भयानक।

विभु० ना० पु० स्वामी, श्रीविष्णुजी, श्रीशंकर, ब्रह्मा, यु० सर्वव्यापी, सर्वेश्वर।
 विभूति० ना० स्त्री० यज्ञकी भस्म, ऐश्वर्य, भस्म, अष्टसिद्धि, प्रभुता।
 विभूषण० ना० पु० आभरण, अलंकार, शोभा।
 विभूषित० यु० शोभित, आभूषित, अलंकृत।
 विभेद० ना० पु० अन्तर, फूट, विशेषभेद।
 विभ्रम० ना० पु० भावली, चूक, भूल, भोला, संदेह।
 विमात० ना० स्त्री० विशेष बुद्धि, ना० पु० भावविशेष जो जनक राजाका दिसौधी था।
 विमल० यु० उजला, निर्मल, स्वच्छ, साफ।
 विमलनयन० ना० पु० ज्ञानदृष्टि, दिव्यदृष्टि, निर्मल आंख।
 विमला० ना० स्त्री० श्रीपावती जी।
 विमाता० ना० स्त्री० सौतेली माता, दूसरीमाता।
 विमातृ० ना० स्त्री० विमाता, साधारण लोग, इसका उच्चारण विमात्रिजके स्थान में करते हैं।
 विमातृज० ना० पु० सौतेली माताकापुत्र, सौतेला भाई।
 विमान० ना० पु० स्वर्ग का सिंहासन, देवता का यान।
 विमुख० यु० विरोधी, प्रतिकूल, जिसका मुख फिरगया है, यह शब्द सम्मुख का विरोधी है।
 विमोचन० } ना० पु० त्याग, तंजन।
 विमोक्षण० }
 विम्ब० ना० पु० परब्राह्मी, प्रतिविम्ब, कुन्दल तरकारीविशेष, चन्द्र और सूर्य का मंडल।
 विम्बा० ना० पु० फलविशेष, जो आतिकटु होता है और पकने पर आतिलाल बन्य होनाता।
 विम्बीर० ना० पु० कन्दरी लता, अमर, नैल।
 विम्बुक० ना० पु० लाल, भद्रक।
 वियो० यु० दूसरा।
 वियोग० ना० पु० विहाह, विछोड़, विभेद, आपदा, उदर।

लवणोद० ना० पु० समुद्र स्वारीजलका
 लवणमात्र० गु० अन्व० थोड़ीदेर, लवणमरी
 लवा० ना० पु० नंदा पत्नी।
 लवार्० ना० स्त्री० थोड़े दिनकी व्यानीयाया।
 लवटम्पटम्पु० गु० उलटापलटा।
 लवणु० ना० पु० लहसुन।
 लवण० ना० पु० शीलकमणजी।
 लवणपुर० ना० पु० लखनऊ नगर विशेष।
 लस० ना० स्त्री० चिपचिपाहट।
 लसकना० अ० कि० लजलजा होजाना, गीला
 होना।
 लसना० अ० कि० सोहना, संजना, फवना,
 चमकना।
 लसलसा० अ० पिचपिचा, लसवाला।
 लसलसाना० अ० कि० लसलसाहोना।
 लसित० गु० ललित, साधार।
 लसिपाना० अ० कि० पिचपिचाहोना, लस-
 लता होना।
 लसी० ना० स्त्री० लसा।
 लसीला० गु० जिसमें लसहोवे।
 लसोहा० ना० पु० फल विशेष जिसमें लस
 होती है।
 लसी० ना० स्त्री० लसी, दूध और पानी।
 लहंगा० ना० पु० पेशवा, करिया।
 लहक० ना० स्त्री० चमक, झलक।
 लहकना० अ० कि० हिलना, चमकना, झल-
 कना, गिटकरी लेना।
 लहकाना० स० कि० गिटकरी से गाला, चम-
 काना, दहकाना, दरकाना।
 लहकारना० स० कि० चमकारना, पेटपरहाथ
 करना।
 लहकावट० ना० स्त्री० चमकावट, दहकावट।
 लहकीला० गु० चमकीला, भदकीला।
 लहकीर० } ना० स्त्री० लीर जो दूध
 लहकीवर० } डल्लू खाते हैं, दही बनाने जो
 विवाह में तिलाते हैं।

लहना० स० कि० पाना, खाना, अ० कि०
 फलना, काम खाना, ना० पु० उधार, धर्ता,
 प्रारब्ध।
 लहहर० ना० पु० तोता विशेष।
 लहबेरा० ना० पु० पौधा विशेष।
 लहर० ना० स्त्री० तरंग, हिलोर, सांपके विपकी-
 जो तरंग आती है।
 लहरवहर० ना० स्त्री० सुभाग, सम्पत्ति।
 लहराना० अ० कि० ललचाना, हिलकोरना।
 लहरालगाना० स० कि० टालना, उदान धाई
 करना।
 लहरिया० अ० जो लहरकी रीतिपर होवे।
 लहरी० अ० तरंगी, तरल, ओछा।
 लहलहा० अ० विकसित, प्रफुल्लित, हरा।
 लहलहाना० अ० कि० खिलना, फूलना,
 हराहोना।
 लहखोट० अ० जो उधार लेकर फिर न देवे।
 लहसुन० ना० पु० कन्द विशेष।
 लहसुनिया० ना० पु० रत्न विशेष।
 लहाछेह० ना० स्त्री० शीघ्रता, जल्दी।
 लहास० } ना० स्त्री० नांव नांभनेकी रूटी।
 लहासा० }
 लहियत० कि० पाता है वा पाते हैं।
 लहुरव० ना० पु० शीघ्रता, जल्दी।
 लहू० ना० पु० लोह, रुधिर, खून।
 लहूआ० ना० पु० पौधा विशेष।
 लहौर० ना० पु० लाहौर।
 लहौरी० गु० जो लाहौर का है।
 लहू० ना० पु० सी हकार, १००००, लाख,
 वह लाख जिसकी चूड़ी बनती है।
 लहाण० ना० पु० बिरु, गुण, लक्ष्मण जी।
 लहत० कि० बिलोकत, देसत।
 लहित० गु० प्रकाशित, जो देस पढ़ता है।
 लक्ष्मण० ना० पु० रामचन्द्रजीके छोटे भाई।
 लक्ष्मणा० ना० स्त्री० सारस पक्षी, श्रीकृष्ण-
 चन्द्रकी पटरानी विशेष, छोटी कनई।

वियोगित० गु० जो बिछुड़ गया; भिन्नभया
 वियोगिनी० ना० स्त्री० भिन्न, बिछुरी, लुदी ।
 वियोगी० ग० विरही, लुदा, बिछुरा, भिन्न ।
 विरक्त० गु० वैराग्य, शील, कामजित्, उदासी ।
 विनचन० ना० पु० बनावने, रचने, पैदा करना ।
 विरचना० स० कि० बगाना, रचना, उपजाना ।
 विरचित० गु० बना, रचा ।
 विरजा० ना० स्त्री० पोधाविरोध, दुष्पविरोध,
 दूध ।
 विरञ्चि० ना० पु० ब्रह्मा ।
 विरञ्ज० गु० निर्मल, सुश ।
 विरत० गु० निवृत्ति, संगहीन ।
 विरति० ना० स्त्री० निवृत्त, वैराग्य ।
 विरथ० गु० रथहीन, पदाति ।
 विरद० ना० पु० विरद, गु० निदन्त ।
 विरल० गु० सूक्ष्म, टीला, प्रकट, प्रसिद्ध ।
 विरलज्जुदा० ना० स्त्री० पालक का शाक ।
 विरला० गु० कोई, अदृश, अनूप, सूक्ष्म, टील ।
 विरस० गु० रसहीन ।
 विरह० ना० पु० वियोग ।
 विरहित० गु० वियोगित ।
 विरहिनी० गु० स्त्री० वियोगिनी ।
 विरही० गु० वियोगी ।
 विरारा० ना० पु० मन की इच्छा का त्याग,
 लुदाई, विषय भाग का परित्याग, सुख दुःख
 हीन ।
 विरारी० गु० उदासी, मनकी इच्छा मारने
 राता ।
 विराजना० अ० कि० विराजना ।
 विराजमान० } गु० शोभायमान ।
 विराजित० }
 विराट० ना० पु० विराट राजा का नाम है ।
 विराम० ना० पु० देर, विश्राम, हलका चिह्न,
 मुं० अस्थिर, व्याकुल, बीमार ।
 विरालिषा० ना० स्त्री० विहारीकन्द ।

विरुज० गु० आरोग्य, तन्दुरुस्त ।
 विरुद्ध० गु० विरोधी, विपरीत, जो रोकगया,
 वैर, अदावत ।
 विरुद्धता० ना० स्त्री० विरोध, चिद, पिन,
 शत्रुता ।
 विरूप० गु० कुरूप, भौड़ा ।
 विरूपाक्ष० ना० पु० श्री महादेवजी, राघवसे
 विशेष ।
 विरेक० ना० पु० पेटीसा, दस्त ।
 विरेचन० ना० पु० पेटीसा हीना, दस्तजारी
 होना ।
 विरोचन० ना० पु० सूर्य, अग्नि, दैत्य, राजा
 बलिका पिता, राजाविरोध ।
 विरोध० ना० पु० वैर, झगडा, अदावत ।
 विरोधी० गु० विरोधकारक, झगडालू, वैर ।
 विरोधोक्ति० ना० स्त्री० अनर्थवाक्य, विपरीत
 कथन ।
 विल० ना० पु० विल ।
 विलग० गु० भिन्न, पृथक् ।
 विलज्ज० गु० निर्लज्ज, बेहया ।
 विलम्ब० ना० पु० देर-अवैर, टालमटोल ।
 विलम्बना० अ० कि० रटना, टहरना, देर
 करना ।
 विलय० ना० पु० प्रलय, जगत् का नाश ।
 विलक्षण० गु० अजब प्रकारका, अद्भुत ।
 विलाप० ना० पु० सन्ताप, शोक का कथन,
 रोना ।
 विलायत० ना० स्त्री० परदेश, अर्थदेश ।
 विलाश० ना० विलास ।
 विलासी० गु० भोगी, क्रीडाकारक, ना० पु०
 सर्प ।
 विलास० ना० पु० हर्ष, आनन्द, सुख, क्रीडा,
 विलासपन, भोग, कार्य ।
 विलिका० ना० स्त्री० विलिगा श्रीभि ।
 विलुप्त० गु० जो नाश को प्राप्त गया, भिद्यया ।
 विलेप० ना० पु० लप, बन्दन उपजाना ।

लक्ष्मी० ना० स्त्री० सम्पत्ति० वा धन० क्रमज्ञा;
 लक्ष्मीफल० ना० पु० शीफल, विल्व, वेल।
 लक्ष्य० यु० जो देखो जावे, ना० स्त्री० लक्ष्मी;
 निशाना।
 लाई० ना० स्त्री० धान के खावा; कि० जराई।
 लांघना० स० कि० फांदना, कूदना।
 लाहृति० ना० स्त्री० देहा आकार, रूप।
 लाख० ना० पु० लख, लाह, लावा जिसकी चूड़ी
 बनती है।
 लाखना० स० कि० लाख लगाना।
 लाखी० ना० स्त्री० लाख रंग जो लाख से निकालते हैं।
 लांग० ना० पु० बैर, शयुता, देय, स्नेह, धोह,
 भाव, मोल, नगचरि, खोर, कसूर, भेद।
 लागत० ना० स्त्री० दाम, मोल।
 लागना० अ० कि० लगना।
 लागी० ना० स्त्री० चांद, स्नेह, धोह।
 लागू० गु० चांदनेहारा, धियलगा।
 लाघव० ना० पु० आरोग्य, वेमकुशल, हलकई,
 सूक्ष्मता, उशीसमय, जल्दी, शीघ्र।
 लांगल० ना० पु० हल।
 लांगली० ना० पु० कितान, नारियल, शीविश;
 देव जी।
 लांगूल० ना० पु० लोम, पुच्छ, पूव।
 लांगूली० ना० पु० कौचवीज, वानर।
 लाज० ना० स्त्री० लज्जा, संकोच, हया।
 लाजना० अ० कि० लाज करना।
 लाजवन्त० गु० लजला, संकोची, कुलवन्त।
 लाजा० ना० स्त्री० खोला।
 लाभा० ना० पु० लस।
 लाङ्घन० ना० पु० दोष, पाप, चिरु, कलंक।
 लाट० } ना० स्त्री० स्तम्भ, लम्बा।
 लाठ० }
 लाठी० ना० स्त्री० लकड़ी, छड़ी।
 लाट्ट० ना० पु० स्याद, दुखार।

लाइला० यु० स्याद, दुखार।
 लाइली० ना० स्त्री० स्यारी, दुखारी।
 लाइ० ना० पु० लइह।
 लात० ना० स्त्री० पांयकी मार, टिंग, पांय।
 लातिन्० ना० स्त्री० भाषा विशेष।
 लाट्ठ० ना० स्त्री० बोझ।
 लादना० स० कि० मोभना।
 लादियां० ना० पु० मोभनेहारा।
 लादी० ना० स्त्री० छोटीलादे, थोड़ी के कपड़ेकी
 गठरी।
 लाट्ट० गु० जो लादने के योग्य वा लादगया।
 लाना० स० कि० ले आना, जनाना, उपजाना,
 व्याना।
 लापाक० ना० पु० अंगाल, गीदड़।
 लाफना० अ० कि० कूदना, उचकना।
 लाभ० ना० पु० प्राप्ति, उपार्जन, फल, लकड़।
 लाय० ना० पु० अग्नि।
 लार० ना० स्त्री० थूक, मुलका पानी, माल।
 लारी० ना० स्त्री० लार।
 लाल० गु० दुखार, अभियंत्रण, ना० पु०
 बालक, रत्न विशेष, पत्थी विशेष।
 लालच० ना० पु० लोभ, वृष्णा, अदेव।
 लालची० गु० लोभी, आपअर्जी।
 लालई० ना० स्त्री० मानिक घुनी।
 लालन० ना० पु० बालक, ना० स्त्री० ललना।
 लालवुस्तुकरु० ना० पु० गुल जो अपने तरे
 ज्ञानवार जानता है।
 लालमधु० ना० पु० सहिष्णु श्व।
 लालसा० ना० स्त्री० इच्छा, जाह, प्रीक्षण,
 चाहत।
 लाला० ना० पु० वेदयादिकों की पदवी, कायस्थ
 विशेष जो बालक पढ़ता है।
 लालाटिक० ना० पु० मारुधाधीन।
 लालित्य० ना० पु० मनीहस्ता, क्रोमलता,
 नमक।
 लाव० ना० पु० रस्ती, लहरा।

विलेश्य० ना० पु० शशा, चीगडा, झरगोश्रां ।
 विलोकन० ना० स्त्री० दृष्टि, ताकना ।
 विलोकना० स० क्रि० देखना, ताकना, नि-
 रलना ।
 विलोचन० ना० पु० नेत्र, गयन, आंख ।
 विलोचना० स० क्रि० मथना, मडना ।
 विलोम० ना० पु० उलटा, विपरीत ।
 विलोचना० स० क्रि० विलोचना ।
 विल्व० ना० पु० वेल वृक्ष वा उसका फल ।
 विवकिल० ना० पुं० विल, वेल ।
 विवर० ना० पु० छिद्र, छेद, विल, घर, गुहरा ।
 विवरण० ना० पुं० व्याख्या, बखाना, विस्तार,
 टीका, वर्णनीन ।
 विवर्ण० ना० पु० नीचजातिकामनुष्य, कुजाति ।
 विवर्द्धक० पु० वृद्धिकारक, बढ़ानेवाला ।
 विवर्द्धन० ना० पु० बढ़ती, वृद्धि ।
 विवर्द्धित० पु० वृद्धिको प्राप्तगया, बढ़ायागया ।
 विवश० वशीहीन, वशीभूत, दुःख, पराधीन,
 मृत्युसमय जो धावरा वा अस्थिर हो ।
 विवश्व० पु० वलहीन, नंगा ।
 विवस्वान्० ना० पु० सूर्य ।
 विवक्षा० ना० स्त्री० बांछा, कहनेकी इच्छा ।
 विवक्षित० गु० बांछित, इष्ट ।
 विवाह० ना० पु० कलह, झगडा ।
 निवादी० पु० जो विवादकरे ।
 विवाह० ना० पु० ब्याह, गठबंधन ।
 विवाहित० गु० जो विवाहागया ।
 विवाहिता० ना० स्त्री० जो विवाहीभई ।
 विवि० गु० दो, २ ।
 विविक्त० ना० पु० एकांत, रहित ।
 विविध० गु० नानाप्रकार, अनेक, बहुरूपी ।
 विवुध० ना० पु० देवता, पण्डित ।
 विवुधवन० ना० पु० स्वर्ग, सुन्दरवन ।
 विवुधप्रैद्य० ना० पु० अश्विनीकुमार ।
 विवुध्रारि० ना० पु० राक्षस, दैत्य ।
 विवेक० ना० पु० बोधा, विचार, ज्ञान ।

विवेकी० गु० विचारी, ज्ञानी ।
 विवेचक० ना० पु० असत्य और असत्य का
 विचारी ।
 विवेचन० ना० पु० विचार ।
 विवेचना० ना० स्त्री० सत्यासत्य का विचार,
 परखना, जानना ।
 विशद० गु० उज्ज्वल, स्वच्छ, साफ, ठीक ।
 विशदशब्द० ना० पु० ह्यतिनम्रदण्डी, दण्डकी
 गिन्दा, कमलनाल ।
 विशदवाणी० ना० स्त्री० उज्ज्वलवाणी, स्व-
 च्छभाषा, साफवात ।
 विशदय० ना० स्त्री० कलिहारी ।
 विशाख० ना० पु० पुनर्गता पौधा ।
 विशाखा० ना० स्त्री० स्त्री, सोलहवां तपत्र ।
 विशार० ना० पु० मडली ।
 विशारद० ना० पु० मौलसिरीवृक्ष, गु० चतुर,
 मार, ज्ञाता ।
 विशाल० गु० बड़ा, चौड़ा, सुन्दर, दुःखरहित ।
 विशाला० ना० स्त्री० इन्द्रवाहणी ।
 विशिख० ना० पु० बाण, तीर ।
 विशिखासन० ना० पु० धनुष, कमान ।
 विशिष्ट० गु० संयुक्त ।
 विशुद्ध० गु० पवित्र, पाक, साफ, लकाविरोध
 जो अष्टांगयोगमें वर्णित है ।
 विशुचिका० ना० स्त्री० धर्ति, हुलकी, हजह ।
 विशेष० ना० पु० जाति, टव, भेद, गुण, खास-
 कर, गु० बहुत, अधिक, एक ।
 विशेषण० गु० जो एकसे दूसरे से पृथक्करे,
 गुणवाचक, तारीक, सिकते ।
 विशेषता० ना० स्त्री० अधिकार, खससियत ।
 विशेष्य० ना० पु० गुण, जिसकी तारीक की
 जावे, गु० जो विशेषण के योग्य है, सुलिया
 पहला ।
 विशोक० गु० सोकरहित, केराहीन, अदुःख ।
 विश्रान्त० गु० निराने-निश्राम किया, ना० पु०
 मथुरापुरीमें स्थानाविशेष ।

स्वावयता० ना० पु० स्त्री० । स्वदस्ता, लोनाई, स्वावयता० ना० स्त्री० । स्वदस्ता, लोनाई, लावलाय० ना० पु० लालच, धोखेवादी । लाया० ना० पु० सील, पूजा । लासा० ना० पु० चप, पोषिका, दूध, सिरस, लसदार, तिम्बत-देशकां नगरं विशेष । लाह० ना० पु० कपड़ा विशेष, लाम, सेमकरोले, सत, डाली ।

लाहा० ना० पु० लाम । लाही० ना० स्त्री० पोषा विशेष, महीना-कपड़ा विशेष ।

लाडू० } ना० पु० लाम, कापड़दर । लाहू० }

लाहीर० ना० पु० पंजाब-देशकी रामधानी । लाक्षा० ना० स्त्री० लाल, जत ।

लिखत० } ना० पु० पत्ती, बिट्टी, दीप, लिखतगण० }

लिखना० स० कि० लिखना, लिखाई करना । लिखनी० ना० स्त्री० लिखनी, कलम । लिखनीदास० ना० पु० लेखक, उपलेखक । लिख्या० ना० पु० प्राण्य, इतिय । लिखाई० ना० स्त्री० लिखने का काम या पिसा । लिखागा० स० कि० लेखकरवाना ।

लिखाव० ना० पु० लिखने का काम । लिखावट० ना० स्त्री० लिखने का काम ।

लिखित० पु० लिखामय । लिंग० ना० पु० मदनकुशा, प्रसंगे करने की मन्त्रिय, सूचन-शरीर, तीन लिंग अर्थात् स्त्री, पुरुष, नपुंसक । लिंगी० ना० स्त्री० प्रसंगेन्द्रिय, मदनकुशा । लिद्यु० ना० पु० फलविशेष । लिम्डी० ना० स्त्री० हल, तिडी, पातडी । लिभ्य० ना० पु० हल्लया आदि भोजन । लिदाना० स० कि० सोखाना, पीदाना ।

लिष्टी० ना० स्त्री० टिकिया, अंगकपी, वेदी, गौरी ।

लिथइना० प्र० कि० लथइना । लिथाइना० स० कि० लथइना । लिपटना० प्र० कि० लिपकाना, लिपटना, सटना ।

लिपटना० स० कि० सयाना, लगाना, लिपटना ।

लिपटी० ना० स्त्री० बहुत दिनों की पगड़ी ।

लिपत्राना० } स० कि० गोमय, आदितो पो- लिपाना० } तवाना ।

लिपि० ना० स्त्री० हस्ताक्षर, लिखापत्र, लेख, खत, लिपिकर० ना० पु० लेखक ।

लिस० पु० लीवागया, लीन, मरापल, लिये० अण्य० निमित्त, करण, सन्तो । लिघाना० स० कि० महुआ, कदवाना ।

लिघालाना० स० कि० लिक्क्याना, गुलाबाना । लिघैया० ना० पु० लैय्या । लिसौड़ा० ना० पु० लसोड़ा । लिहाड़ा० पु० नीच, कुतिल । लीक० ना० स्त्री० गाड़ीका मार्ग, पगदुबी, मर्याद, कलक, लकीर ।

लीख० ना० स्त्री० झूटाकजकीट, अर्थात् अश्यात । लीखड० पु० कृपण, कंचला, सम ।

लीची० ना० स्त्री० फल विशेष । लीम्ही० ना० स्त्री० गादि, तरबट ।

लीतरा० ना० पु० पुराने जूता । लीद० ना० स्त्री० घोड़ेकी विद्या ।

लीन० पु० तन्मय; सूनाहुआ, मिलाहुआ, प्राणसु- अस्था, योग्य ।

लीम० ना० पु० सन्धि, मेल, मिलाप । लीर० ना० स्त्री० चिड, धुन्नी ।

लीख० ना० पु० नील, पु० नीला । लीखना० स० कि० निगलना, धुना ।

विभ्राम० ना० पु० सुत, चैन, कल ।
 विधाविगंधा० ना० स्त्री० आहूनेर ।
 विश्लेष० ना० पु० वियोग ।
 विश्व० ना० पु० जगत्, देवतांकी जाति जिसमें
 दरावस इत्यादि हैं, सौंड, सव ।
 विश्वकर्मा० ना० पु० देवतां का धर्ष ।
 विश्वगन्धिका० ना० स्त्री० आहूनेर ।
 विश्वदेवा० ना० पु० गंगेरुया ।
 विश्वनाथ० ना० पु० काशी में प्रवानशिव ।
 विश्वभेषज० ना० पु० सौंड ।
 विश्वम्भर० ना० पु० परमात्मा, ईश्वर ।
 विश्वम्भरा० ना० स्त्री० पृथ्वी, धरती ।
 विश्वरूप० ना० पु० सर्वरूप, ईश्वर, विराट-
 तन ।
 विश्वरूपक० ना० पु० काला अंगक ।
 विश्वविमोहन० ना० पु० कामदेव ।
 विश्वसर्ग० ना० पु० ब्रह्मा, कर्ता, विधाता ।
 विश्वामित्र० ना० पु० मुनिविशेष, धनुर्वेद
 कर्ता ।
 विश्वास० ना० पु० प्रतीत, भरोसा, प्रत्यय ।
 विश्वासघात० ना० पु० विश्वास का हनन ।
 विश्वासघाती० ना० पु० विश्वास का घात
 कर्ता, जो भिन्नतामें छलकरे ।
 विश्वासी० गु० प्रतीत वा भरोसा रखनेहारा ।
 विश्वेश्वर० ना० पु० विश्वनाथ, भगवान् ।
 विश्वौपधि० ना० स्त्री० सौंड ।
 विप० ना० पु० गरल, हलाहल ।
 विषण० ना० पु० ब्रह्मा, सूर्य ।
 विषद्० गु० विशद, श्वेत, गोरा, ठेठ ।
 विषधर० ना० पु० सांप, सर्प, आमहृदिब ।
 विषध्वंसी० ना० पु० नागरमोथा ।
 विषपुष्पक० ना० पु० मेनफल ।
 विषम० गु० अयुग्म गिनती यथा ३ । ५ । ७
 जो बराबर न हो, असम, कठिन, भयानक, ना०
 पु० स्वरविशेष ।

विषमत्रिभुज० ना० पु० जिसकी भुजा तुल्य
 न हों ।
 विषमान० ना० पु० औपधि वा विषविशेष ।
 विषमुष्टक० ना० पु० महानिंब ।
 विषय० ना० पु० इन्द्रियां गिन वस्तुओंको ग्रहण
 करती हैं यथा स्वाद, रंग, रूप, रस, भोगादि,
 काम, वात, अर्थ, अव्य० लिये, मध्ये ।
 विषयक० गु० संसारी जगत् के ।
 विषयी० गु० जो विषयों में आसक्त ।
 विषवैद्य० ना० पु० जांगलिक, गारुडि जो सर्पादि
 काटेका विष उतारता है ।
 विषहा० गु० जो विषसे भरा है ।
 विषाण० ना० पु० पशुके सौंग ।
 विषाद० ना० पु० थकाई, उदासी, दुःख ।
 विषादी० गु० उदामी, थका, दुःखी ।
 विषानिका० ना० स्त्री० मेदादिही ।
 विषुव० } ना० पु० जब दिन रात समान
 विषुवत् } होता है उसीका नाम ।
 विषुवत्काल० ना० पु० जिस समय सूर्य विषु-
 वत् रेखापर रहते हैं ।
 विषुवद्रेखा० ना० स्त्री० रेखा, भूमि के ऊपर
 शून्य में समान दूरी डालने से जो रेखा क-
 ल्पित है ।
 विषे० अव्य० में, बीच, मध्य ।
 विष्कर० ना० पु० मुर्गा ।
 विष्टा० ना० स्त्री० बीट, मल, गुद् ।
 विष्टाकृमि० ना० पु० विष्टा का कीड़ा ।
 विष्टि० ना० स्त्री० भद्रा, कुयोग ।
 विष्टर० ना० पु० आसनविशेष ।
 विष्टरधवा० ना० पु० विष्णु, नारायण ।
 विष्णु० ना० पु० सावु, भद्रव्य, पूर्व, धनि,
 वध, श्रीनारायण ।
 विष्णुकान्ता० ना० स्त्री० पीशाविशेष, की-
 आगोड़ी ।
 विष्णुपद० ना० पु० आकारा, वन्दविशेष,
 गीतविशेष ।

लीला० ना० स्त्री०, मीडा, विहार, खेल, त्रिवि,
गु० नीलवर्ण ।

लीलाश्च० } गु० स्यालहीमें लीलाके प्रकार ।
लीलावत्० }
लीलावती० ना० स्त्री० गणित की पुस्तक
विशेष ।

लुक० ना० पु० गिरनेहारा, तारा, लूक ।
लुकना० अ० कि० छिपना ।

लुका० गु० गुप्त ।

लुकाञ्जन० ना० पु० अंजनविशेष-जितकी
लगाने से मनुष्य अक्षरही जाता है ।

लुकान० गु० गुप्तहथ, छुपा, ना० स्त्री०
छिपावट ।

लुकाना० अ० कि० छिपना, स० कि० छिपाना,
गुप्त करवाना ।

लुकावना० स० कि० छिपावना, गुप्तकरवाना ।

लुगाई० ना० स्त्री० धीरत, स्त्री ।

लुंगा० ना० स्त्री० मधुककड़ी ।

लुंगी० ना० स्त्री० धाती विशेष ।

लुच० गु० निरा नमन ।

लुचई० ना० स्त्री० पूरा विशेष ।

लुचप० ना० पु० नेष्टा, अधमहि, सुहृद
पत्न ।

लुचई० ना० स्त्री० लुचपन, कुकर्म ।

लुच्चा० ना० पु० कुकर्म, लुचपन करनेहारा ।

लुजलुजा० गु० लजलजा ।

लुज० } गु० अपाहिज, लुला, हाथसे हीन ।
लुजा० }

लुटना० अ० कि० लुटहोजाना, लुटजाना ।

लुटवैया० ना० पु० लुटेरा ।

लुटाना० अ० कि० गवाना, उडाना, लुटे
करवाना ।

लुटिया० ना० स्त्री० छोयालोटा ।

लुटेरा० } ना० पु० लुट करनेहारा, उडक ।
लुटेरु० }

लुटस० ना० पु० लुट, बिगाड़, सत्यानास ।

लुङका० ना० पु० कानका भूषणविशेष ।

लुङखना० } अ० कि० दमलान, निकल
लुङकना० } जाना ।

लुङना० अ० कि० लुङकना ।

लुङाना० स० कि० गिरादना, उगारना ।

लुङिया० ना० स्त्री० छोटा लोड ।

लुङियाना० स० कि० कपडे को रतवा करके
दूसरे वार सीना ।

लुण्डा० गु० बांडा, पुच्छहीन ।

लुतरा० ना० पु० बढवडिया, उधर की इधर
और इधर की उधर करने हारा ।

लुपरी० ना० स्त्री० भोजनविशेष ।

लुपलुप० ना० पु० चभ, चभड़ ।

लुस० गु० गुप्त, लुट, नारा ।

लुञ्च० गु० लालची, लोभी ।

लुञ्चक० ना० पु० अधिक, लुञ्चा, लम्पट ।

लुमना० स० कि० ललचाना, जीचगाना ।

लुम्पक० ना० पु० राजाविशेष, नाशक ।

लुम्पित० गु० मिट्यायागया, नाशित ।

लुहण्डा० ना० पु० लोहेका मानविशेष ।

लुहरा० ना० पु० छोटा ।

लुहांगी० ना० स्त्री० लोठी जितमें लोहालगा
होता है ।

लुहार० ना० पु० लाहकार, जातिविशेष ।

लुहारिन० ना० स्त्री० लुहार की जोरु ।

लू० ना० स्त्री० ज्येष्ठ, वैशाख की गरम वायु ।

लूआट० गु० लूकट ।

लूक० ना० पु० अग्निकी लूकटी, पतितता ।

लूकट० गु० अधजला ।

लूकटी० ना० स्त्री० फुरलनी, छोटा लूकट ।

लूकना० अ० कि० लू से जलना ।

लूकवाई० ना० स्त्री० अगवाही, कही ३ दो
यालीकी जलाकर घरके बाहर डालते है ।

लूका० ना० पु० जलती हुई चिमगाड़ी ।

लूस० ना० स्त्री० आच, लूका ।

लूट० ना० स्त्री० वस्तु का बरबस छीनना ।

विष्णुपद्मी० ना० स्त्री० शक्तिगामी ।
 विष्णुपद्य० ना० पुं० विष्णु का भजनार्थम् ।
 विष्णुवल्लभा० ना० स्त्री० लक्ष्मी, तुलसी ।
 विस० सर्व० उक्त ।
 विसर्ग० ना० पुं० दो० विन्दुमान; वर्षविशेष अर्थात् ।
 विसर्जन० ना० पुं० विदा, त्याग, दान, पूजा ।
 विसारण० ना० पुं० विस्मरण ।
 विसृति० कि० चिन्ता, दुःखिणा ।
 विस्तर० } ना० पुं० फैलाव, पसरान, विस्तार ।
 विस्तार० } बाल, चौकाव, आसार ।
 विस्तीर्ण० गुं० बड़ा, फैला हुआ, फैला ।
 विस्तृत० गुं० फैलाया, पसारा, विस्तारपूर्वक ।
 विस्फोटक० ना० पुं० फोड़ा, चैचक, मोती ।
 विस्मय० ना० पुं० आश्चर्य, अचम्भा, शोक, सन्देह, रोक ।
 विस्मरण० ना० पुं० भूल, चूक, भुलाहट ।
 विस्मित० गुं० आश्चर्यवित्त, अचम्मित, चकित, निश्चित ।
 विस्मृत० ना० स्त्री० भूल भुलाहट ।
 विस्वाहुं० गुं० स्वादेहीन, नीरस ।
 विहग० ना० पुं० पक्षी; विहंग, विडिया ।
 विहगेश० ना० पुं० गरुड ।
 विहंग० ना० पुं० प्रसी, विडिया ।
 विहङ्गपति० ना० पुं० गरुड ।
 विहंगम० ना० पुं० पक्षी, विहंग ।
 विहंगराज० ना० पुं० गरुड, वैजयन्त ।
 विहङ्गन० ना० पुं० कादन, धेदन, धेदन ।
 विहरण० ना० पुं० गमन ।
 विहरना० अ० कि० फटना, टूटकर भागना ।
 विहसना० अ० कि० इसना, झिलना ।
 विहाय० अ० त्यग, छोड़, सिवाय ।
 विहायस० ना० पुं० आकार ।
 विहायसी० ना० पुं० पक्षी, विडिया ।
 विहार० ना० पुं० क्रीडा, आनन्द, ऐराज ।
 विहारस्थली० ना० स्त्री० क्रीडापरतल ।

विहारी० गुं० क्रीडाकारक, चंचल, लपलप ।
 विहित० गुं० उचित ।
 विहीन० गुं० त्यगित, ररहित, प्रतिहीण, नीचतर ।
 विह्वल० गुं० व्याकुल, पाचरा ।
 विक्षिप्त० गुं० उन्मत्त, छुपा ।
 विक्षेप० ना० पुं० स्थाकृतता, त्याग, चक्रे विध ।
 विज्ञ० गुं० ज्ञान, निपुण, विद्वान् ।
 विज्ञता० ना० स्त्री० निपुणता, ज्ञान, ज्ञानकारी ।
 विज्ञप्ति० ना० स्त्री० विनती, विनय ।
 विज्ञान० ना० पुं० विशेषज्ञान, अनेकविधि आश्चर्य रस ।
 विज्ञाननिधान० ना० पुं० महाज्ञानी, महाज्ञानी अथवा ज्ञाता, महावादी ।
 विज्ञानी० गुं० परमज्ञानी, अतिचतुर, महापरिष्ठ ।
 विज्ञापन० ना० पुं० जतावना, चिताना ।
 वीचि० } ना० स्त्री० लहरी, मौज ।
 वीचिका० } ना० पुं० मूल, कारण, विया, पानी ।
 वीज० ना० पुं० मूल, कारण, विया, पानी ।
 वीणा० ना० स्त्री० तम्बूर, वाजविशेष ।
 वीतराग० ना० पुं० विरोगयुक्त, बेरागी ।
 वीथिका० } ना० स्त्री० गली, मार्ग, वाड, सह ।
 वीथी० } ना० स्त्री० गली, मार्ग, वाड, सह ।
 वीथ्य० गुं० दो, २ ।
 वीर० ना० पुं० शूर, समी, बहादुर, भाई ।
 वीरता० ना० स्त्री० } सूरमापन, बहादुरी ।
 वीरत्व० ना० पुं० } सूरमापन, बहादुरी ।
 वीरपुष्पा० ना० स्त्री० सहदेवी पीषा ।
 वीरभद्र० ना० पुं० शिवगणविशेष ।
 वीरभाव० ना० पुं० सामर्थ्य, वीरता, बहादुरी ।
 वीरभूमि० ना० स्त्री० सुदृशान, ना० पुं० बंगालदेश में एक जिल्ला ।

वीरसंज्ञां पुं० काव्यरसविशेष, धीरता ।
 वीरवृक्षं ना० पुं० भिलावां वृक्ष ।
 वीरसेनं ना० पुं० आदि ।
 वीरां ना० पुं० कला (कदली ग्रन्थनी भाषा
 रमांतरापरच्छदा, इति निघण्टे) कोकोली,
 पान ।
 वीर्यं ना० पुं० भीम, सामर्थ्य, बल ।
 वीर्यकरं ना० पुं० उद्द भय ।
 वीर्यं अयं उसी समग्र वा उसी स्थान में
 यमी ।
 वुरलां } ना० स्त्री० मीठा तुम्बी, चौकी, राम
 बुसीं } तुरई (तुम्बिया महातुम्बी राजला-
 बुला बुसी इति निघण्टे) ।
 वृकं ना० पुं० भेड़िया, दुग्धार, पर्पहा, पुरी,
 देवविशेष ।
 वृत्तं ना० पुं० गोल, गोलकार, देवविशेष ।
 वृत्तखण्डं ना० पुं० जो दो विषयांशों और
 मध्यस्थ चापके पिराहो, वृत्तका टुकड़ा ।
 वृत्तफलं ना० पुं० खालऊंगा ।
 वृत्तांशं ना० पुं० गोलका धरा ।
 वृत्तान्तं ना० पुं० समाचार, पत्रा, कथा,
 कहानी ।
 वृत्ताईं ना० पुं० गोलार्क, गोलका आधा ।
 वृत्तिं ना० स्त्री० आचरण, स्वभाव, धुंधाने
 जीविका, व्यवहार, खेकें अर्थ, पटीका ।
 वृथां अर्थ० व्यर्थ, भ्रंश, निफल, जेमतलवा ।
 वृद्धं गुं वृद्धा ।
 वृद्धकं गुं वृद्धकारक, बंदागेहार ।
 वृद्धतमं गुं बहुतवृद्धा ।
 वृद्धतां ना० स्त्री० बुढ़ापा, बुढ़ापन ।
 वृद्धप्रपितामहं ना० पुं० प्रपितामहके
 पिता ।
 वृद्धप्रपितामहीं ना० स्त्री० प्रपितामहके
 माता ।
 वृद्धश्रवां ना० पुं० इन्द्र ।
 वृद्धां ना० वृद्धियों, बुढ़ाई ।

वृद्धापनं ना० पुं० बुढ़ता, बुढ़ापी ।
 वृद्धावस्थां ना० स्त्री० बुढ़ापी, बुढ़ता ।
 वृद्धिं ना० स्त्री० बढ़ती, बढ़ि, अधिकता ।
 वृन्तफलां ना० स्त्री० अखरोट ।
 वृन्तां } ना० पुं० भांडा, वेणु ।
 वृन्ताकीं }
 वृन्दं ना० पुं० समूह, व्यूह, झुण्ड, टेर ।
 वृन्दां ना० स्त्री० तुलसी, देवीविरोधुमणी
 बुन्दावन में है ।
 वृन्दारकं ना० पुं० देवता, सुर ।
 वृन्दावनं ना० पुं० तीर्थ वा नगरविशेष ।
 वृश्चिकं ना० पुं० बिच्छू, आठवीं राशि ।
 वृश्चिकालां ना० स्त्री० मुदासिद्धी ।
 वृषं ना० पुं० बैल, दूतरीराश, कर्षण का पुत्र,
 इन्द्र, कामदेव, धर्म, वासुदेव ।
 वृषकेतुं ना० पुं० श्रीमहादेवजी, कर्षण-पुत्र ।
 वृषदंशं } ना० पुं० बिलखपुत्र, बिलसि-
 वृषदंशकं } महाभारत में कर्मवर्षण
 (अन्तारिक्षराहस्यः वृषदंशस्य चोभयोः मयादुप-
 त्तारादौ रोद्रनियंतेलक्षणेः) ।
 वृषभं ना० पुं० बैल, धर्म, देवविशेष ।
 वृषभध्वजं ना० पुं० श्रीमहादेवजी ।
 वृषभानुं ना० पुं० श्रीमहामोक्षपिता ।
 वृषभाहीं ना० स्त्री० इन्द्रवाक्यी ।
 वृषां ना० स्त्री० ब्रह्मपुत्र ।
 वृषादितं ना० पुं० वृषराशिके, पुरी ।
 वृष्टिं ना० स्त्री० मेघ, वर्षा, बुरसात ।
 वृष्टीरांशं ना० स्त्री० मार, शीघ्रि ।
 वृष्पगन्त्रां ना० स्त्री० पिंडल ।
 वृहं ना० पुं० चलना, बहना ।
 वृहतीं ना० स्त्री० बड़ी किराई ।
 वृहत् शं बड़ी, बौडी ।
 वृहत्खण्डं ना० पुं० बड़ा टुकड़ा, मंडा
 खण्ड ।
 वृहत्फलां ना० स्त्री० जापन, फलेद, सिद्धी
 चबड़ा ।

शुभा० ना० स्त्री० पवित्रता, पावनता, पाकीजा।
 शुचि० य० श्वेत, पवित्र, शुद्ध, पाक।
 शुचिर्होय० य० सामान्य जो भवति पवित्र ही
 विशुद्धार्थ, पवित्रता।
 शुडि० } ना० स्त्री० सौंडि।
 शुडी० }
 शुड० ना० सूड, हाथी की नाक।
 शुडि० ना० स्त्री० उजलापात।
 शुद्ध० य० पवित्र, निर्दोषी, अकेला, ठीक।
 शुद्धता० ना० स्त्री० पवित्रता, ठीकहोना।
 शुद्धि० ना० स्त्री० पवित्रता, सुधराव, खर।
 शुद्धोच्चार० ना० पु० ठीकपाठ।
 शुन० } ना० पु० कुत्ता।
 शुनक० }
 शुभ० सु० भला, अच्छा, भाग्यवान्, ना० पु०
 कल्याण, सुभाग, शोभा।
 शुभग० य० अच्छा, भाग्यवान्।
 शुभगुण० ना० पु० अच्छेगुण, ज्ञानादि।
 शुभंकर० य० मंगलकारी, कृपालु।
 शुभचिन्तक० य० अच्छाचाहनेहारा, तैरखाह।
 शुभा० ना० स्त्री० सुधा, शोभा, सिद्धिविशेष।
 परस्त्री और बकरी।
 शुभ्रांशु० ना० पु० चन्द्रमा।
 शुभ्रांसिता० ना० स्त्री० यशोचिन्।
 शुभ्र० य० श्वेतवर्ण, उजला, सुन्दर।
 शुभ्रपुष्प० ना० पु० पोस्ता का पौधा।
 शुभ्रम० ना० पु० दयविशेष जो शीदगति, सुधा।
 शुशकारना० य० कि० शहर करने में कुत्तेको
 हुसकाना वा दौड़ाना।
 शुशकारी० ना० स्त्री० कुत्तेको हुसकानेका काम।
 शुश्राव० ना० स्त्री० सेवा, टहल, कहना, नीलनी।
 सुश्रु० य० सुखा।

शुष्कास्थि० ना० पु० सूखीहड्डी।
 शुकर० ना० पु० सुधर, वराह, श्री-विष्णुका
 तृतीयवतार।
 शुकरखेत० ना० पु० बाराहखेत, पंचकफिंगर
 यार।
 शता० ना० स्त्री० कुम्भीपौधा।
 शद्र० ना० पु० चौथावर्ण, नीचजानि।
 शद्रता० ना० स्त्री० नीचपन, नीचता।
 शद्रा० ना० स्त्री० शद्रजाति की स्त्री।
 शद्री० ना० स्त्री० शद्र की स्त्री।
 शून्य० य० सूखा, खाली, एकान्त, नी० पु०
 शून्यता० ना० स्त्री० सूखापन, खाली होना।
 शून्यवादी० ना० पु० नास्तिक, काफिर, जैतू
 धर्म।
 शूर० ना० पु० सुर्मा, सुधर, सुर्ष, य० अश्वत्थ
 शूरता० ना० स्त्री० वीरता, सुर्माण, बहादुरी।
 शूरत्व० ना० पु० शूरता।
 शूरवीर० ना० पु० रावत, योद्धा, वीर।
 शूरसेन० ना० पु० बसुदेवजी के पिता, मथुरा
 के पास देशविशेष।
 शूर्प० ना० पु० सुप, सुप, दोग।
 शूर्पणखा० ना० स्त्री० रावण की बहन।
 शूल० ना० पु० हगास, बड़ी पीडा, विशल,
 बबूल का कांटा, दद, रोगविशेष।
 शूलनाशन० ना० पु० हिंग।
 शूली० ना० पु० श्रीशिवजी, शूलरोगमुखा
 की सुली।
 शूकाल० } ना० पु० गौदक, सियार।
 शूकाल० }
 शूखल० ना० पु० शूर्पणीविशेष, संकल, सि
 स्की, जिनीफ।
 शूखला० ना० स्त्री० कटिबंधन, आहुतद
 धुवा, सिलसिला, बंजीर।

घृहस्त्रा० ना० स्त्री० सहदेवी पौधा ।
 घृहद्राज० ना० पु० कसेरु ।
 घृहद्रानु० ना० पु० सूर्य, अग्नि ।
 घृहस्पति० ना० पु० पांचवां ग्रह, देवपुरोहित ।
 घृहस्पतिवार० ना० पु० पांचवांवार, बिहके ।
 वृक्ष० ना० पु० पेड़, तरवार ।
 वृक्षकन्दा० ना० स्त्री०, विदारीकन्द, मूसली ।
 वृक्षमूल० ना० पु० वृक्षकी जड़ ।
 वृक्षमूलस्थली० ना० स्त्री० थाला, थांवला ।
 वृक्षघल्ली० ना० स्त्री० विदारीकन्द ।
 वृक्षसारक० ना० पु० गुमा, पौधाविशेष ।
 वेग० ना० पु० उतावली, फुर्त, अग्र्य० शीघ्र ।
 वेगगामी० } यु० उतावला, शीघ्रगामी, जल्द ।
 वेगवती० }
 वेगवान्० ना० पु० पवन, चीतापशु, यु० वेग-
 गामी ।
 वेगि० } अग्र्य० शीघ्र, जल्द ।
 वेगी० }
 वेणी० ना० स्त्री० त्रिवेणी अर्थात् प्रयाग में गंगा
 यमुना सरस्वती का संगम, स्त्रियों की चौड़ी ।
 वेणु० ना० पु० वंशी, मुरली, बांस, राजाविशेष ।
 वेणुधर० ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्र, बाजीगर ।
 वेणुवा० ना० पु० वंशरोचन, बाजीगर, टंग,
 चालाक ।
 वेतस० ना० पु० उजरत, मिहनताना ।
 वेतम० ना० पु० अम्लवेत ।
 वेताल० ना० पु० पिशाचविशेष, त्रिन ।
 वेत्ता० ना० पु० ज्ञाता, ज्ञानी, जाननेहार ।
 वेत्र० ना० पु० वेत ।
 वेप्रवती० ना० स्त्री० नदीविशेष ।
 वेप्रवन्ती० ना० स्त्री० नदीविशेष ।
 वेद० ना० पु० हिन्दू लोगों में आकाशीय पुस्तक जो
 चार हैं अर्थात् ऋग, यजु, साम, अथर्वण ।
 वेदगिरा० ना० स्त्री० वेदवाणी ना० पु० मुनि-
 विशेष ।

वेदत्रयी० ना० पु० त्रिवेद अर्थात् ऋग, यजु,
 साम ।
 वेदन० } ना० स्त्री० पीड़ा, दुःख, दर्द ।
 वेदना० }
 वेदधि० यु० वेदवादी, वेदवक्ता, और वेद
 पाठक ।
 वेदव्यास० ना० पु० मुनिविशेष जिन्होंने वेदका
 संग्रह किया ।
 वेद्राज० ना० पु० वेदका अंग अर्थात् शिवां, १.
 कल्प २ व्याकरण ३ छन्द ४ ज्योतिष ५
 निरुक्त ६ ।
 वेदान्त० ना० पु० ईश्वर के विषयमें जो वांता
 वेद में निर्णीत है उसका अर्थो उपनिषदमें संग्रह
 किया गया ।
 वेदान्तविद्या० ना० स्त्री० जो वेदान्त में है,
 आत्मशास्त्र, ब्रह्मविचार ।
 वेदान्ती० यु० वेदान्त मतका ज्ञाता, आत्मवादी ।
 वेदिका० } ना० स्त्री० अग्निहोत्र, चौक, वेदी ।
 वेदी० }
 वेध० ना० पु० छिद्र ।
 वेधक० ना० पु० छिद्रवैया, वेधकार ।
 वेधना० स० कि० छेदना ।
 वेधमुख्या० ना० स्त्री० कस्तूरी ।
 वेधी० ना० पु० वर्मा, वेधक ।
 वेरभयानक० ना० पु० ब्रह्मपरात, मृतकरात ।
 वेला० ना० स्त्री० समय, समयत, काल ।
 वेशर० ना० स्त्री० वेसर ।
 वेश्म० ना० पु० घर, मकान ।
 वेश्या० ना० स्त्री० राक्षिका, पतुरिया, लिनाल ।
 वेष्टकेसी० ना० पु० मोचरस ।
 वेष्टन० ना० पु० बैठन, लपेटन ।
 वेष्टित० यु० जो चारों ओरसे ढका, परा ।
 वेष्म० ना० पु० वेश्म ।
 वै० अग्र्य० निश्चय ।
 वैकल० यु० व्याकुल, विकल ।

शृंग० ना० पु० पीसिंग, शिखर, पहीड, स्त्री-
 शोयो।
 शृंगनाम्नी० ना० स्त्री० ककरासिगी, नागकेश
 शृंगवेर० ना० पु० सोंद, अदरक।
 शृंगाट० ना० पु० सिपाडा।
 शृंगार० ना० पु० प्रथम प्रस, प्रकाश का
 सिंगार, संवार, सजधज
 शृंगारित० गु० संवारी हुई, शृंगारयुत।
 शृंगिका० ता० स्त्री० मेदासिमी।
 शृंगी० ना० पु० जिस पशुके संगी, ककरा-
 सिंगी, भैसा, पर्वतमुनिविशेष।
 शृंगुं० कि० सुने।
 शेखर० ना० पु० शिरमें बांधने की फूलों की
 माला, भैस्तकाभरण, शिर।
 शेफालिका० ता० स्त्री० हरसिधार
 शेल० ना० पु० अन्न विशेष।
 शेली० ना० स्त्री० सांग, बालों की शैल
 शेलु० ना० पु० भेधा।
 शेलमुख० ना० पु० बिल, बेल।
 शेश० ना० पु० साँपोकाराना, धर्याधर।
 शेष० ना० पु० अवशिष्ट, समाप्ति, बाकी, नाग-
 राजविशेष, जिसके सहस्र शिर हैं, निम्बर
 विष्णुनारायण सेते हैं, थोडा।
 शेषावस्था० ना० स्त्री० बुडोवस्था, बाकी
 उमर।
 शैखरिक० ना० पु० ऊंगा।
 शैत्य० गु० उडा।
 शैथिल्य० ना० पु० शिथिलता।
 शैल० ना० पु० पर्वत, पहाड़।
 शैलराज० ना० पु० हिमाचल, पर्वत का
 राजा।
 शैली० ना० स्त्री० रीति, वास्तिक, गु० पर्वती।
 शैव० ना० पु० शिवका उपासक।
 शैवाल० ना० पु० जलकी पौधाविशेष,
 सिवाल।
 शैवी० ना० पु० शैव

शैशवं० ना० गु० शिशुता, मोलका, लज्ज
 काई।
 शोक० ना० पु० दुःख, केरा, स्याप, वि-
 लाप।
 शोकार्णव० ना० पु० दुःखका सागर, महा-
 दुःख।
 शोकार्त्त० गु० शोकप्रसू, शोकसे व्याकुल।
 शोच० ना० पु० चिन्ता, अफसोस, अदराह।
 शोचन० ना० पु० विचारन, मगसवह, वि-
 न्तन।
 शोचनां० अ० कि० विचारना, अन्दरहकरना
 अफसोसकरना, मरनातोष करना।
 शोचनीय० गु० जो शोचने के योग्य है।
 शोण० ना० पु० पुष्पविशेष, लालगधा, लज्ज,
 मगधदेशका नद।
 शोणभद्र० ना० पु० मगधदेश में नदविशेष।
 शोणित० ना० पु० खिर, लोह, केसर।
 शोध० ना० पु० मूज, फुलाव।
 शोध० ना० पु० कण्ठका भरदेना, पता, खपर
 तलारा।
 शोधन० ना० पु० दीपका निकालना अथवा
 शुद्ध करना।
 शोधी० गुं० जो शोजागया वा शुद्धागया शुद्ध
 कियागया।
 शोधय० गु० जो शोधने के योग्य।
 शोभन० गु० मनोरम, मनोहर, सुन्दर।
 शोभा० ना० स्त्री० सुन्दरता, शोभा, चमक
 कान्ति।
 शोभायमान० गुं० विभूषित, चमकीला
 शोभित० अ० चमकीला।
 शोला० ना० पु० मूलावशेष।
 शोषक० गु० चूनेहार, सुखनिघाला, पयने-
 म्हात।
 शोषण० ना० पु० सुखान, चूनेव, भयना।
 शौच० ना० पु० स्नान, स्नानादि कर्तव्यकर्म।
 शौचकर्म० ना० पु० स्नानादि, शुचिक्रिया

वैकुण्ठ० ना० पु० । विष्णुधाम, शिरः, नारायण
(विष्णुनारायणः कुण्डो वैकुण्ठो विष्टरभवाः)
हृत्पमरः) ।
वैकुण्ठनाथ० ना० पु० श्रीविष्णुनारायणः ।
वैगन्ध० ना० पु० गन्धकः ।
वैचित्रता० ना० स्त्री० चित्रविचित्रः रंगारण्य ।
वैजनाथ० ना० पु० वैद्यनाथ ।
वैजयन्तिका० ना० स्त्री० अरणी ।
वैजयन्ती० ता० स्त्री० पताका, अरुण ।
वैदूर्य० ना० पु० नीलमणि, नीलम ।
वैवरीणी० ना० स्त्री० यमुपरी की नदी ।
वैताल० ना० पु० वितल, वेताल, पिराच, भाट,
बन्दी ।
वैदिक० ना० पु० वेदपाठी, जो वेदोक्त, कर्म
करता है ।
वैदेही० ना० स्त्री० पीपरी, श्रीसीतानी ।
वैद्य० ना० पु० चिकित्सक, तबीब, हकीम ।
वैद्यक० ना० पु० वैद्यविद्या की पुस्तक, वैद्य-
विद्या ।
वैद्यनाथ० ना० पु० धन्वन्तरि, भारस्वयं मे-
धीमहदेवजी ।
वैभव० ना० पु० राज्य, विभवता, ऐश्वर्य ।
वैर० ना० पु० शत्रुता, अद्वान्त ।
वैरागी० ना० पु० जो वैराग्य धारण करे ।
वैराग्य० ना० पु० विषय त्याग, उदासपन ।
वैराट्० ना० पु० जगत्स्वरूप, सर्वरूप ।
वैरिन्० ना० स्त्री० शत्रु, स्त्री, वैरी की स्त्री ।
वैरी० ना० पु० शत्रु, दुश्मन ।
वैलक्षण० ना० पु० विलक्षणता, भावान्तरः ।
वैलापत्रक० ना० पु० मुख्य सर्प ।
वैशारद्य० ना० पु० मन्त्र्य, मन्त्री ।
वैशेष्य० ना० पु० शास्त्रविशेष ।

वैश्य० ना० पु० तृतीय वर्ण, वरानपूतः प्राति
विशेष, वैत ।
वैदयका० ना० स्त्री० बुद्धी, बुद्धी ।
वैश्यनी० ना० स्त्री० वैश्यकी स्त्री ।
वैश्रवण० ना० पु० कुबेर, यंचराज ।
वैषम्य० ना० पु० असमता, विषमता, एकान्ति ।
वैपानस० ना० पु० वैरागी, उदासी ।
वैष्णव० ना० पु० विष्णुका उपासक, गु० जो
विष्णुकाहे ।
वैष्णवी० ना० स्त्री० लक्ष्मी जो विष्णुकी है ।
वैसा० गु० उसके समान, उसीप्रकार ।
वैसे० अव्य० संत, विनामोल, मुफ्त ।
वैज्ञानिक० ना० पु० विज्ञान, ज्ञाता, परमज्ञानी ।
व्योहित० ना० पु० जहाज, बड़ीनाव ।
व्यक्त० गु० ज्ञात, मालूम, खुला, स्पष्ट, ज्ञानी,
पदा, एक ।
व्यक्ति० ना० स्त्री० एकता, पृथगात्मो, एकई,
प्रकटता, विभक्ति ।
व्यग्र० गु० भूला, भटका, व्याकुल, धावरा ।
व्यग्रित० गु० चिन्तायुत, विकलित ।
व्यग्न० ना० पु० लोहा, कुटिलाई ।
व्यंगत० ना० स्त्री० कुटिलता ।
व्यजन० ता० पु० पंखा, बेना ।
व्यञ्जक० गु० प्रकाशक ।
व्यञ्जन० ना० पु० स्वररहित समस्त वर्ण, शाक
आदि अक्षरकारि, चटनी ।
व्यतिक्रम० ना० पु० उल्टापन, अन्यथा,
विरुद्धता ।
व्यतिरिक्त० गु० अलग, भिन्न, अर्थ ।
व्यतिरेक० ना० पु० भिन्नता, भेद ।
व्यतीत० गु० जो बीतगया, गुजरगया ।
व्यतीपात० ना० पु० घेलाविशेष ।
व्यत्यय० ना० पु० उलटई, विरोध, विरुद्धता ।

शौनक० ना० पु० एनिविशेष ।
 शौरि० ना० पु० शौरिवान्, शरिश्चरमि
 शौरिमिय० ना० पु० विजयसां०
 शौर्य० ना० पु० सूरीपत्, बहादुरी
 शमशान० ना० पु० शमशान, शमशान
 स्थानविशेष ।
 श्याम० ना० पु० कोकिला, काम्बोजसि-पश्चिम
 देशविशेष, श्रीकृष्णचन्द्रजी, कालावर्ण
 श्यामकर० ना० पु० श्याम (बोहा) जिसका एक
 कान श्याम और केश पीत और सर्व शरीर
 कालावर्ण होवे।
 श्यामल० गु० कालावर्णविशेष, गु० पीपरी
 श्यामली० ना० स्त्री० काली, नीली
 श्यामसुन्दर० ना० पु० श्रीकृष्णनी ।
 श्यामा० ना० स्त्री० श्यामरंगका । पत्नीमाँहद,
 पीपली, श्यामली, सुन्दरली, अरजली, प्रियगुं
 रात, मीति, कालिकादेवी
 श्यामाक० ना० पु० सामाज्य
 श्यालक० } ना० पु० श्याल, पीली का
 श्याला० }
 श्येन० ना पु० पत्नीविशेष, वात
 श्वधान० गु० श्वेद्युक्त
 श्वदा० ना० स्त्री० आदर, इच्छा, विश्वास, प्रती-
 ति, शुभिच्छा
 श्वदालु० गु० श्वदासुक्त
 श्रम० ना० पु० थकाई, दौड़पूप, उद्यमकष्ट
 श्रमवृन्द० ना० पु० श्रम करने में जो पत्नी
 श्रमित० गु० थका, मोटा
 श्रमी० गु० श्रमकरवहारा, उद्यमी
 श्व० ना० पु० कान, बहन, चलन
 श्वण० ना० पु० कान, सुनाये और चारुसुवा
 मञ्ज ।
 श्वणशीर्षका० ना० स्त्री० मीठी, सुखी ।
 श्वणा० ना० स्त्री० श्विसवां नखरी
 श्वणीयं० गु० जो सुने के योग्य है।
 श्वेत० ना० पु० श्वेत, बहता

श्वेती० नी० स्त्री० नदी
 आचूक० ना० पु० अचूक
 आद० ना० पु० पितरों को रातें शक्ति सविन्द
 आदोदन, देना, यज्ञ
 आददेव० ना० पु० धर्मराज, यमराज
 आदपत्त० ना० पु० कर्नागत, आदिवन कर्ना
 आन्त० गु० सुखित, जो एकगुण, श्रमिता
 आन्ति० ना० स्त्री० श्रम, परिश्रम
 आप० ना० पु० शाप, आशीर्वाद से विपरीत,
 नदइया ।
 आपित० गु० सापित, आप दिवानिया
 आवक० ना० पु० जातिविशेष जो नास्तिक
 अर्थात् जैनियों के बने हैं, नास्तिक
 आवण० ना० पु० सावनें, चौथी महीनी
 श्री० ना० स्त्री० सम्पत्ति, शोभा, सुन्दरता,
 लक्ष्मी, शब्द के पहले बर्णों का बोधक
 श्रीकण्ठ० ना० पु० सदाशिव
 श्रीकान्त० ना० पु० श्रीविष्णुनारायण
 श्रीखण्ड० ना० पु० चन्दन
 श्रीमेह० ना० पु० श्वेतकमल, शोभाका घट,
 तस्वी की पर, खजामा
 श्रीदामा० ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्रजी का एक
 सला ।
 श्रीमति० ना० पु० श्रीविष्णुनारायण
 श्रीपणी० ना० स्त्री० कम्भाती
 श्रीपुष्प० ना० पु० लीन, लवण
 श्रीफल० ना० पु० नारियल, बेल, आंवला
 श्रीमत्० गु० भाग्यवान्, धनी, शोभा समुक्त, धन-
 दय, दालतवर
 श्रीधर० ना० पु० श्रीविष्णुनारायण
 श्रीधराचार्य० ना० पु० धाराविशेष जिहा
 ने श्रीमद्भागवत का लिख किया
 श्रीनगर० ना० पु० चंद्रनाथ के मांग में परत
 पर नगरविशेष, कुरुक्षेत्र में नगरविशेष
 श्रीमन्त० गु० भाग्यवान्, धनी, शोभासम
 श्रीमान्० धनदय, दालतवर

व्यथा० ना० स्त्री० पीडा, बाधा, दुःख, दर्द ।
 व्यथित० गु० दुःखित, पीडित ।
 व्यभिचार० ना० पु० परस्त्रीगमन, कुकर्म ।
 व्यभिचारिणी० ना० स्त्री० दुष्टाप्ती, कुलदा, सैरिणी, बिनास ।
 व्यभिचारी० ना० पु० बिनास, सैरण, बदकार, जो व्यभिचार करे ।
 व्यय० ना० पु० लागत, व्यय, नाश, खर्च ।
 व्ययक० गु० खर्च करनेवाला, नाशक ।
 व्यर्थ० गु० वृथा, निकम्मा ।
 व्यतीक० ना० पु० कपट, छल, झूठ ।
 व्यवच्छेद० ना० पु० अलग करना ।
 व्यवधान० ना० पु० आच्छादन, अन्तर, बीच, बीचविचाय ।
 व्यवधायक० ना० पु० जो व्यवधान करे ।
 व्यवसाय० ना० पु० उद्योग, परिश्रम, अलग उपाय, तदवीर, छल ।
 व्यवसायी० गु० जो व्यवसाय करे ।
 व्यवस्था० ना० स्त्री० धर्मशास्त्री ज्ञाना, वाक्य, अलग करना, दसा, रीति ।
 व्यवस्थापक० गु० व्यवस्था का देखनेवाला ।
 व्यवस्थित० गु० जो भिन्न क्रियागया, जो व्यवस्था, क्रियागया, अचल ।
 व्यवहार० ना० पु० उद्यम, धर्म, कार्य, देखने, व्यापार, अभ्यास, भगवडा, चाल, रीति, प्रीति, देनलेन ।
 व्यवहार्य० गु० जो व्यवहार के योग्य हो ।
 व्यवहित० गु० संयुक्त, टकाहुआ, छुपा ।
 व्यसन० ना० पु० जप आदि कुकर्म ।
 व्यसनी० गु० ज्वारी आदि कुकर्म ।
 व्यस्त० गु० व्याकुल, फेला ।
 व्याकरण० ना० पु० शब्दके साधुवका उपयोग शास्त्र, जिस से पदनाथ होवे ।
 व्याकरणि० ना० पु० व्याकरणज्ञाता ।
 व्याकुल० गु० घायरी, अस्थिरचित्त, हरीत ।
 व्याकुलता० ना० स्त्री० घबराहट, हिरानी ।

व्याख्या० ना० पु० } अर्थका धारण
 व्याख्यात० ना० स्त्री० } कहना, बर्णन, वस्तान ।
 व्याघात० ना० पु० अटक, योगविरोध ।
 व्याघ्र० ना० पु० बाघ, शेर ।
 व्याघ्रपाद० ना० पु० कोकई, बाघका पाव ।
 व्याघ्रपुच्छ० ना० पु० दोनों अरुणका ।
 व्याघ्री० ना० स्त्री० छोटी कदाई, व्याधिन ।
 व्याज० ना० पु० छल, ठगई, भिप, ब्याज, सूद, थोडा, वहना ।
 व्याजक० गु० छला, ब्याज, श्रय ।
 व्याजी० ना० पु० ब्याज लेनेवाला, छली ।
 व्याजू० ना० पु० व्याजके लिये जो श्रयहो ।
 व्याध० ना० पु० } अखिटी, हिंसक, गिरी-
 व्याधा० } कारी, जो वनके पशु मारतावे ।
 व्याधि० ना० स्त्री० रोग, पीडा जो तापे आदि से होवे ।
 व्याधिवात० ना० पु० किरवाली ।
 व्याधित० } गु० रोगी, पीडित, दुःखित ।
 व्याधी० }
 व्यान० ना० पु० समस्त शरीर में व्यापक वायु, प्राणविशेष ।
 व्याप० ना० पु० व्याप ।
 व्यापक० गु० फैलाहुआ, विभु ।
 व्यापकता० ना० स्त्री० फैलाव, विभुता ।
 व्यापना० अ० कि० सर्वत्र फैलना ।
 व्यापाद० ना० पु० नास्तिकता, कुकर ।
 व्यापार० ना० पु० काम धंधा, चाली, धर्म, लक्षण, चिह्न ।
 व्यापारार्थ० गु० जिसका अर्थ व्यापार हो ।
 व्यापी० गु० विभु, सर्वत्र फैलेवाला ।
 व्याप्त० गु० जो पडेगया, सर्वगत ।
 व्याप्ति० ना० स्त्री० सर्वत्रगति, व्याप्ति-ज्ञान ।
 व्यामोह० ना० पु० पीडा दुःख ।

श्रीयुक्त० } गु० यशस्वतः, सुखप्राप्ति, धनी,
 श्रीयुत० } भाग्यवान्, नामी ।
 श्रीरंग० ना० पु० श्रीनारायण, विशुद्धी ।
 श्रीरंगपट्टन० ना० पु० महोदर, अर्थात् मैसूर
 देश की राजधानी ।
 श्रीराम० ना० पु० रामविशेष, तीसरा राम ।
 श्रीवणा० } ना० स्त्री० श्योडी, मुण्डोपाधि ।
 श्रीवणी० }
 श्रीवत्स० ना० पु० श्रीविष्णुनारायण, लक्ष्मी का
 हृदय में वास ।
 श्रीदृष्ट० ना० पु० मिलहट, नगरविशेष, जो
 ढाका के पूर्व है ।
 श्रीहिडोल० ना० पु० रागविशेष ।
 श्रुत० गु० स्त्री० सुना गया ।
 श्रुते० ना० पु० वेद, कर्ण, ज्ञान, समाचार,
 ना० स्त्री० सुनाहट ।
 श्रुतिमणि० ना० पु० कण्डूल, कर्णमूल ।
 श्रुतियुक्ति० ना० स्त्री० वेद, लीलाविधि,
 शास्त्रीक ।
 श्रुतीदग० ना० पु० पीलबुद्धि ।
 श्रेणी० ना० स्त्री० पंक्ति, लकीर, कतार, समूह,
 युक्ति ।
 श्रेय० ना० पु० कल्याण, कीर्ति ।
 श्रेयसी० ना० स्त्री० हड, राजपीपर, रासना ।
 श्रेष्ठ० गु० उत्तम, अच्छा, सबसे भला, प्रधान ।
 श्रेष्ठता० ना० स्त्री० उत्तमता, प्रधानता, भ-
 लापन ।
 श्रौण० ना० पु० शंभर, रक्त, लोह, लुह ।
 श्रौणतिलका० ना० स्त्री० कश्यप की पत्नी ।
 श्रौणि० ना० स्त्री० कटि, कमर ।
 श्रौणित० ना० पु० शंभर, रक्त, लोह ।
 श्रोत० ना० पु० कान, कर्ण, नदी की धारा, कर-
 ना, सोवा ।
 श्रोतव्य० गु० जो सुनने के योग्य ।
 श्रोतस्वती० ना० स्त्री० नदी ।
 श्रोता० ना० स्त्री० नदी, गु० सुननेवाला ।

श्रोत्र० ना० पु० कान, रोमरत्न, सुननेवाला ।
 श्लाघनीय० गु० नदारी के योग्य, मर्यादिकर ।
 श्लाघा० ना० स्त्री० स्तुति, मर्यादा, विन्ती ।
 श्लाघ्य० ना० पु० श्लाघनीय ।
 श्लीपद० ना० पु० शंभ, पीलपाया ।
 श्लेष० ना० पु० जिसपद के दो अर्थ वा
 अधिक हैं ।
 श्लेषा० ना० स्त्री० नवा-नक्षत्र, अश्लेषा ।
 श्लोभा० ना० स्त्री० कफ, साकटपकना, लुकाव ।
 श्लोक० ना० पु० पद्य, छन्द ।
 श्वशुर० ना० पु० पत्नी वा पति का पिता,
 ससुर ।
 श्वश्री० ना० स्त्री० सासुर, पत्नी वा प्रिये स्त्री-
 माता ।
 श्वसन० ना० पु० पवन, वायु, यथा (प्रचेता-
 वतनः पारी यादसांपतिरपतिः श्वसनः स्पर्शानो
 वायुर्मातरिश्वासदागतिः इत्यमरः) ।
 श्वसनक० ना० पु० श्वा, पीथा ।
 श्वान० ना० पु० कुत्ता ।
 श्वांस० ना० पु० श्वांसिवायु, सांस ।
 श्वेत० गु० शुक्ल, पीला, सफेद ।
 श्वेतता० ना० स्त्री० शुक्लता, उज्ज्वलता,
 सफेदी ।
 श्वेतदंडी० ना० स्त्री० दूर, घास ।
 श्वेतपुष्पा० ना० स्त्री० हृद्रवाश्या, कनैर-
 वृक्ष ।
 श्वेतफला० आहार ।
 श्वेतमूली० ना० स्त्री० सुनईवा ।
 श्वेतराजी० ना० स्त्री० चूचड़ा, तकरा ।
 श्वेतसर्पप० ना० पु० सफेद सरसों ।
 श्वेता० ना० स्त्री० सफेद घास ।
 श्वेतिका० ना० स्त्री० सौक ।

[म]

पट० ना० गु० छः, षट् ।
 पटकोण० ना० पु० हृद्रका घञ, छः किनेका ।
 पटचक्र० ना० पु० छः चक्र अर्थात् आभार, स्त्री०

व्यायाम० ना० पु० परिश्रम, थकान, मख,
 धर्म ।
 व्याल० ना० पु० सांप, सर्प, चीतापशु, हाथी,
 दिन, ह्रस्वपुत्र ।
 व्यालदंष्ट्रक० ना० पु० गोखरु ।
 व्यालपत्नी० ना० स्त्री० कच्छी ।
 व्याला० ना० पु० कुरोता, धुरा, ना० स्त्री०
 सापिन ।
 व्यालारि० ना० पु० गंडक, मोर, व्याला,
 सिंह ।
 व्याली० ना० पु० श्रीमहादेवमी, सु० सपेसा ।
 व्यावहारिक० ना० पु० मन्त्री, परामर्शी ।
 व्यास० ना० पु० कुतर, विस्तार, फैलाव,
 श्रीवेदवासा ।
 व्यासार्ध० ना० पु० आधाविस्तार ।
 व्यासेश्वर० ना० पु० काशिके पार रामनगर
 में व्यासस्थापित महादेव ।
 व्युत्क्रम० ना० पु० उलथाक्रम ।
 व्युत्पत्ति० ना० स्त्री० शास्त्रीय ज्ञान, विद्या,
 शब्दको भिन्न करने का ज्ञान, उत्पत्ति, रूढ़ता,
 विद्याकी ।
 व्युत्पन्न० ना० पु० व्युत्पत्तिमान, विद्यावान् ।
 व्यूह० ना० पु० युद्धहेतु सेनाकी रचनाविशेष,
 सेनाका कोटविशेष, समूह, अण्ड ।
 व्योम० ना० पु० आकाश, आसमान ।
 व्योमकेश० ना० पु० श्रीमहादेवजी ।
 व्योमचर० ना० पु० पक्षी, देवता, अहो,
 नक्षत्र ।
 व्योमासुर० ना० पु० देवविद्या ।
 व्यौरत्न० स्त्री० ह्रस्वकोमाली ।
 मज० ना० पु० देवविद्या ।
 मजन्ति० स्त्री० प्राद्व हेतु, पानाई ।
 मजवाली० ना० स्त्री० मज के यम ।
 मज्जन्त० } ना० पु० मज्जन्तक
 मज्जग० }

व्रत० ना० पु० पुण्यकर्मविशेष यथा तपस्या
 उपवास ।
 व्रती० यु० जो मज्जकरे ।
 व्रान्य० ना० पु० वह ब्राह्मण जिसका यज्ञोपवीत
 नहीं भया ।
 व्रीडा० ना० स्त्री० जाग, लहना, हया ।
 व्रीहि० ना० पु० अनेक प्रकार का भान्यु ।
 [श]
 शक० ना० पु० संवत् चलानिहारा, राजा, यथा
 शालिवाहन, जातिविशेष, देशविशेष, संवत्,
 शाक ।
 शककत्ता० } ना० पु० शाका चलानिहारा,
 शककारक० } यथा कलियुग में शुषिर्,
 विक्रमादित्य, शालिवाहन, विजयाभिनन्दन,
 नागार्केन, वलि ।
 शकट० ना० पु० छकड़ा ।
 शकुन० ना० पु० शुभाशुभ का सूचक चिह्न,
 पक्षी, सज्ज, चिह्निया ।
 शकुनी० ना० पु० जो मनुष्य शकुनको जानता
 हो, पक्षी, चिह्निया, कौरवों का मन्त्री ।
 शकुन्त० } ना० पु० पक्षी, चिह्निया ।
 शकुन्ति० }
 शकुल० ना० पु० बुटकी, मत्स्यविशेष ।
 शकृ० गु० सामर्थ्य, बलवान् ।
 शक्राह० ना० पु० इन्द्रजी ।
 शक्ति० ना० स्त्री० सामर्थ्य, बल, बरधी, साँप,
 देवताका पराक्रम जो अपनी स्त्रीरूपी उदरया
 गया, माया, देवी, भगवती ।
 शक्तिमान० गु० बलवान्, सामर्थी ।
 शक्य० गु० होनेके योग्य, करने के योग्य ।
 शक्यता० ना० स्त्री० होने और करनेके योग्यता,
 या शक्य ।
 शक्य० ना० पु० शक्य ।
 शक्यपु० ना० पु० शक्य ।
 शक्यपुत्र० ना० पु० शक्यपुत्र ।
 शक्यपुत्र० ना० पु० शक्यपुत्र ।
 शक्यपुत्र० ना० पु० शक्यपुत्र ।

विद्यान, मथिप्र, घनाहृत, विशुद्ध, प्रसा ।
 ष्पद० ना० पु० भौरा, मधुमाली, छन्द-
 तिरोप ।
 पदपदी० ना० स्त्री० अमरी ।
 पदशाब्द० ना० पु० छः शाब्द अर्थात् न्याय,
 वैशेषिक, मीमांसा, पातञ्जल, सांख्य, वेदान्त ।
 पदप्रस्थि० ना० स्त्री० पीपरामूल ।
 पदप्रस्तु० ना० पु० छः प्रस्तु अर्थात् वसन्त,
 शीत, वर्षा, शरद, हिमन्त, शिशिर ।
 पदऊर्मा० ना० स्त्री० छः ऊर्मा अर्थात् शीत,
 ज्वर, दुःख, सुख, मान, अपमान ।
 पदलोक० ना० पु० छः लोक अर्थात् भू,
 अन्तरिक्ष, स्वर्ग, पितृ, सूर्य, ब्रह्मलोक ।
 पदगुण० ना० पु० छः गुण अर्थात् निर्भेद, नि-
 मोत्सर्ग, निर्मोह, निर्लोभ, निष्काम ।
 पदरस० ना० पु० छः रस अर्थात् कडवा,
 खटा, मीठा, चर्परा, कसेला, खारा ।
 पदग्रन्था० ना० स्त्री० कन्नू भेद ।
 पदराग० ना० पु० छः राग अर्थात् मेघ,
 भैरव, मलार, दीपक, श्रीहिंजोल, मालकोश
 और भगवा बखेडा ।
 पदवदन० ना० पु० स्वाभिकार्त्तिक ।
 पदधिकार० ना० पु० छः विकार अर्थात् उ-
 त्पत्ति, शरीरवृद्धि, बालकता, मोदता, वृद्धता,
 मृत्यु ।
 पदंग० ना० पु० शरीर के छः अंग अर्थात्
 हाथ, पांव, कटि, शिर, वेदके छः अंग अर्थात्
 ज्योतिष, व्याकरण, गीतिका, गोखरू ।
 पदगुथा० ना० स्त्री० वच औषधि ।
 पदनेत्रिका० ना० स्त्री० कश्यपकी पत्नी ।
 पदविद्याति० गु० छन्नीस, २६ ।
 पदविशतितम० गु० छन्नीसवां ।
 पदविधि० ना० स्त्री० छः प्रकार ।
 पदगवेद० ना० पु० वेदके छः अंग अर्थात्

शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्ति, ज्योतिष,
 छन्दःप्रबन्ध ।
 पदंगसमाधि० ना० स्त्री० समाधि के छः अंग
 अर्थात् शम, दम, उपराम, विषय, सुख, दुःख,
 समान, वेद आचार्य का आज्ञाकारी होना,
 एकामचित्त ।
 पदानन० ना० पु० स्वाभिकार्त्तिक ।
 परद० ना० पु० ननुसक ।
 परमास० ना० पु० छः मास ।
 परमुख० ना० पु० स्वाभिकार्त्तिक ।
 पद्य० गु० छः, ६, छठवां ।
 पटि० गु० साठ, ६० ।
 पट्टी० ना० स्त्री० दुर्गाजी, छठी तिथि, कारक ।
 पद्यन्त० गु० निरुक्ति अन्त में पट्टीका प्र-
 त्यय है ।
 पोटश० गु० सोलह, १६ ।
 पोटशचन्द्रकला० ना० स्त्री० चन्द्रमा की १६
 कला अर्थात् अमृता, मानदा, पूषा, पुष्टि,
 तुष्टि, रति, धृति, शशिनी, चन्द्रिका, कान्ति,
 जोत्सना, शी, प्रीति, अंगदा, पूरणा, पूर्ण
 अमृता १६ ।
 पोटशविधपूजा० ना० स्त्री० सोलह प्रकार
 से पूजा अर्थात् आवाहन, स्थापन, पाद्य,
 सिंहासन, अर्घ, आचमन, स्नान, चन्दन, फूल,
 धूप, दीप, नैवेद्य, ताम्बूल, प्रदक्षिणा, नमन
 स्कार, आरती १६ ।
 पोटशश्रेणार० ना० पु० सोलह श्रेणार अर्थात्
 शुचि, स्नान, निर्मलपद, मेहावन, वैशोबधन,
 मांगसिन्दूर, आलतौरि, विलकपोष, केसर-
 मर्दन, मेहदीपग, कुसुमाभरण, देमाभरण,
 लवंगादि आभरण, दातों में मिस्सी, ताम्बूल,
 आंखों में सरमा १६ ।
 पोटशी० ना० स्त्री० मृतकका कर्म विशेष ।
 [सः] ०७७० ०७७७
 स० अन्व० निरुक्ति के आदि में हस्तकी

शंक० ना० पु० भय, डर, मुख्यसर्प ।

शंकर० ना० पु० श्रीमहदेवजी, कल्याण, गुं
सकुड़ा, तंग, कठिन, दुरंगा जिसमें दूसरी
मिलगया ।

शङ्करदेव० ना० पु० श्रीशिव, शङ्कराचार्य ।

शङ्करा० ना० रागिनीविशेष ।

शङ्कराचारी० ना० पु० शङ्कराचार्य का मता-
वलम्बी ।

शङ्कराचार्य्य० ना० पु० योगेश्वरविशेष जिन्होंने
ने जैनमतका स्रष्टा किया ।

शङ्कराभरण० ना० पु० रागिनीविशेष ।

शङ्करी० ना० स्त्री० पार्वती ।

शङ्का० ना० स्त्री० भय, डर, खटका, जागरू,
जायजस्त, हगास ।

शङ्कित० श० भयभीत, डराभया ।

शङ्कु० ना० पु० द्रव, मत्स्यविशेष, नदी, कील
विशेष ।

शङ्ख० ना० पु० जलजन्तुविशेष, या उसका पर,
बड़ा घोंघा ।

शङ्खचूड़० ना० पु० राजाविशेष ।

शङ्खनाम्नी० } ना० स्त्री० शङ्खहोली ।

शङ्खपुष्पी० } ना० स्त्री० शङ्खहोली ।

शङ्खलिखित० ना० पु० स्मृतिविशेष ।

शङ्खामुर० ना० पु० दैत्यविशेष ।

शङ्खाहोली० ना० स्त्री० पौधाविशेष ।

शङ्खिनी० ना० स्त्री० विशेष लक्ष्मणयुक्त स्त्री,
श्यामविशेष जो मुद्रा से निकलती है ।

शङ्खोद्धार० ना० पु० द्वारिकानी और काशीनी
में तीर्थविशेष ।

शञ्चान० ना० पु० बाज, शिकरा ।

शर्टी० ना० पु० कचूर, कचूरभेद ।

शठ० श० धूर्त, टग, छलिया, मूर्ख ।

शठता० ना० स्त्री० धूर्तता, ठगई, मूर्खता ।

शण० ना० पु० सन ।

शणसूत्र० ना० पु० सुतली, सनका जाल ।

शण्ड० ना० पु० सांड ।

शण्डो० ना० स्त्री० सीडिनी ।

शत० ना० पु० सौ, शत, १०० ।

शतखण्ड० ना० पु० सौखण्ड ।

शतघ्नी० ना० स्त्री० तोप, बंदीमुष्टाण्ड ।

शतदु० } ना० स्त्री० सतलन, नदी जो पंजाब
में है ।

शतधन्वा० ना० पु० यादवविशेष ।

शतपत्र० ना० पु० सफेद कमल ।

शतपदा० ना० स्त्री० सतावर, छतावर ।

शतपञ्च० गु० सात पांच १२ वा ५०० ।

शतप्रद्विका० ना० स्त्री० दुर्वा, दूधवास ।

शतपा० ना० स्त्री० सतावर, छतावर ।

शतपुष्पा० ना० स्त्री० सौक ।

शतभिषा० ना० स्त्री० पच्चीसवा नक्षत्र ।

शतभेदक० ना० पु० अम्लवेत ।

शतमत० ना० पु० सत्यधर्म, सचामत ।

शतमन्यु० ना० पु० इन्द्र ।

शतमूली० ना० स्त्री० लताविशेष ।

शतशः अव्य० सैकड़ ।

शता० ना० स्त्री० सौक ।

शतावरि० ना० स्त्री० शतावर, छतावर ।

शत्रु० ना० पु० वैरी, रिपु, दुश्मन ।

शत्रुघ्न० ना० पु० समिन्धुवत, रामचन्द्र
भाई ।

शत्रुता० ना० स्त्री० वैर, दुर्जनताई ।

शनक० ना० पु० विजयसार, घृगिविशेष ।

शनि० ना० पु० सातवां ग्रह, शनिश्चरवा ।

शनिवार० ना० पु० सातवांवार, शनिवार ।

शनैःशनैः० अव्य० हौले २, सहज २, धीरे ३

शनैश्चर० ना० पु० सातवां ग्रह ।

शपथ० ना० पु० किरिया, सौह, सौगद ।

शब्द० ना० पु० ध्वनि, आवाज, शरारा वात
संज्ञा आदिनाम ।

शब्दग्रही० ना० पु० कान, श्रवण ।

शम० ना० पु० शांति, शान्ति, शान्ति
अर्थात् त्याग ।

प्रयोग होवे उसका अर्थ सहित, समान, से होता है ।

सई० ना० स्त्री० नदी विशेष ।

सं० अव्य० सम, सहित, से ।

संक्रन्दन० ना० पु० शय्या, इन्द्र ।

संयम० ना० पु० त्यागादि नियम, बराब, परहेज ।

संयमनी० ना० स्त्री० यमपुरी ।

संयमनीपति० ना० पु० यमराज ।

संयमी० गु० नियमी, मध्यम ।

संयुक्त० गु० मिलाहुआ, संलग्न, लगा, जुड़ा ।

संयुग० ना० पु० युद्ध, समर, रण, लड़ाई ।

संयुत० गु० संयुक्त ।

संयोग० ना० पु० मिलान, द्रव्यका मेल, संगत, देवागत इत्तिकाकन् ।

संयोगी० ना० पु० मिलित, मिलनसार, संगी ।

संरक्त० गु० अरुण, लालवर्ण ।

संरम्भ० ना० पु० कोप, क्रोध, अहङ्कार ।

संलग्न० गु० संयुक्त, संगत ।

संलग्नी० गु० मिलित, लगाहुआ, संगी, संयोगी ।

संलाप० ना० पु० परस्पर बातचीत ।

संवत्० ना० पु० वर्ष, शका, साल, सन् ।

संवत्सर० ना० पु० वर्ष, साल ।

संवत्सरी० ना० पु० वर्षका व्यवहार ।

संवरण० ना० पु० आवरण, आच्छादन ।

संवरना० अ० क्रि० सजाना, शोभित होना, बचा ।

संवर्त्त० ना० पु० स्मृति ग्रन्थविशेष ।

संवर्त्तक० ना० पु० बहेड़ा ।

संवल० ना० पु० दैत्यविशेष, जानना, मार्गिका ।

संघत्तारि० ना० पु० कामदेव, प्रधुमनजी ।

संवह० ना० पु० मुख्यपवन ।

संवाद्० ना० पु० बातचीत, प्रश्नोत्तर, चर्चा ।

संवाधा० ना० स्त्री० विपत्ति, केश, आकत ।

संवार० ना० स्त्री० सजाव, बनाव, शोभा ।

संवारना० अ० क्रि० सजाना, बनाना, सजा करना ।

संशय० ना० पु० चिन्ता, सन्देह, भय ।

संशयापन्न० गु० सन्देही, चिन्तायुक्त, भयभीत ।

संसक्त० गु० समीप, मिला, युक्त ।

संसर्ग० ना० पु० संगति, भेद, दर्शन, मेल, पड़ोस, समीप ।

संसर्गा० गु० मिलनसार, चिन्दारी, पड़ोसी, संगती ।

संसवा० ना० स्त्री० फटकरी ।

संसार० ना० पु० जगत, गृहाश्रम, दुनिया ।

संसारी० गु० लौकिक, जो संसारका है ।

संस्त० गु० संसारी, दुनियावा ।

संस्कार० ना० पु० स्मरण का हेतु, व्यवहार यथा गर्भाधानादि १० पवित्रता ।

संस्कृत० ना० पु० देववाणी ।

संस्कृतानुयायी० गु० देववाणी के अनुसार ।

संस्कृताभिज्ञ० गु० संस्कृत भाषा जाननेवाले लोग ।

संस्थान० ना० पु० देव, रूप, वनावट, चतुष्पथ ।

संस्पर्श० ना० पु० छुआवट, सत, लगाव ।

संहत० गु० ठोस, इकट्ठा ।

संहति० ना० स्त्री० समूह, ढेर ।

संहरण० ना० पु० वध, हनन, मरण, हरण ।

संहरना० अ० क्रि० वधहोना, हतहोना, मारा जाना ।

संहार० ना० पु० नारा, वध, हत्या, गु० मारा, वधा ।

संहारक० गु० नाशक, अधिक ।

संहारना० अ० क्रि० वधना, नारा करना ।

संक्षेप० ना० पु० सार, विशेष कथन, गु० थोड़ा, सारांश, घनाहुआ, मुक्तसर ।

संक्षिप्त० गुण, क्षिपा, अमकट ।

संज्ञक० ना० पु० नामी, नामक ।

संज्ञा० ना० स्त्री० नाम, शब्द, शब्द, नाम ।

शमन० ना० पु० शान्ति, बलिदान, अमरान,
 कपाली-शोधि ।
 शमी० ना० स्त्री० वृक्षविशेष, फली, धूम्रि ।
 शम्बाक० ना० पु० किरवाली ।
 शम्बुक० } ना० पु० कौडी, धौया, सीपी,
 शम्बुक० } शैल ।
 शम्भु० ना० पु० श्रीमहादेवजी ।
 शयन० ना० पु० सोना, नैदि, लटना,
 विद्वाना ।
 शय्या० ना० स्त्री० भिसपर शयन करत है ।
 शर० ना० पु० नाथ, तीर, सरकण्डा, जीति,
 तालाव, गणित में X ।
 सरजन्मा० ना० पु० स्वामिकौसिक ।
 शरट० ना० पु० गिरगिट, कूकवास ।
 शरण० ना० पु० पर, जो रक्षाकरे, आश्रय
 पनाह ।
 शरणागत० पु० आश्रित, जो शरणवाहे, जो
 पनाह मांगे ।
 शरण्य० ना० पु० शरण, पु० शरणके गोप्य ।
 शरत्० स्त्री० श्रुतविशेष, जिसमें शकार
 शरत्काल० पु० कातिक है सामान्य शी-
 तकास ।
 शरत्पुष्प० ना० पु० दुपहरीकूल हा-उसका वृक्ष ।
 शरद्० स्त्री० }
 शरद्श्रुत० स्त्री० } शरत्काल ।
 शरत्काल० पु० }
 शरद्वृत्त० स्त्री० }
 शरपुञ्जा० ना० पु० शरकोका पौधाविशेष ।
 शरादा० ना० पु० शब्द, निनाद, ध्वनि ।
 शराभ्यास० ना० पु० निशाना वाः विह-जिसे
 बंधादि संधेते हैं अर्थात् बाण मारना
 सीखते हैं ।
 शराव० ना० पु० सकोरा ।
 शरावती० ना० स्त्री० नदीविशेष ।
 शरावलि० ना० स्त्री० धारणी की पंक्ति, तीरी
 का समूह ।

शरासन० ना० पु० धनुष, कमल ।
 शरासुर० ना० पु० प्राणासुर ।
 शरीर० ना० पु० देह, तन ।
 शरीरी० पु० देही, माषी ।
 शरण० ना० पु० बाणसे, तीरसे, नाथकरके ।
 शर्करा० ना० स्त्री० खांद ।
 शर्मा० ना० पु० ब्राह्मणके नामका उपपदा ।
 शर्वरी० ना० स्त्री० रात ।
 शलभ० ना० पु० टिंडी ।
 शलाका० ना० स्त्री० सलाई, जदवलपट्टी,
 रूतर ।
 शलादिनी० ना० स्त्री० कुटकी ।
 शलीत० ना० पु० पैला, नौरा ।
 शल्य० ना० पु० रोगविशेष, उंगा, नाथ, वैद्य
 क्रियाका एक अंग ।
 शल्यक० ना० पु० मेनफल ।
 शश० ना० पु० सारिलीन, लोथ, मृत्क ।
 शशर० ना० पु० शील ।
 शशरी० ना० स्त्री० भीलनविशेष, भीलनी,
 शीकुरारि ।
 शशप० ना० स्त्री० दूनआदि नवीन घासे (शश-
 वलुथ घासे, हयमरः) ।
 शश }
 शशक० } ना० पु० शशा, चौगडा ।
 शशा० }
 शशांक० } ना० पु० चन्द्रमा ।
 शशिश० }
 शशिवर्ण० पु० श्वेत, चन्द्ररूप, सकेद ।
 शशिरस० ना० पु० अमृत पीवष ।
 शश्रु० ना० पु० हथियार जो निनादके मारते हैं,
 यथा सहादि ।
 शश्रुमय० ना० पु० लोहा ।
 शश्री० हथियारबन्द, शरधारी ।
 शाक० ना० पु० सांग, भाजी, पृथ्वी के स ।
 शोषमें से एकका नाम ।
 शाकटुम्बुस्त्री० ना० स्त्री० माई शोधि ।

सकट० ना० पु० षडङ्ग, खदी, गणेशजी का
जन्मोत्सव दिन ।

सकटाख्य० ना० पु० धवदृष्टी ।

सकटासुर० ना० पु० दैत्यविशेष जिसको श्री
कृष्णजी ने मारा था ।

सकटी० ना० स्त्री० लदी, गाड़ी ।

सकत० ना० पु० शक्ति ।

सकेता० अ० कि० सामार्थ्य होना ।

सकरा० अ० संकेत, छोटा, तंग ।

सकराई० ना० स्त्री० संकेती, तंगी, छोटी ।

सकराना० स० कि० संकेत करना, सकोरना,
स्वीकार करना, कबूल करना ।

सकरणा० अ० दयायुत, दानिता से ।

सकर्मक० अ० कर्म सहित किया ।

सकल० अ० सारा, समस्त, सब, समस्त ।

सकाना० अ० कि० उदासहोना, धंजना, दबना ।

सकानी० अ० स्त्री० उदास हो गई, लज्जित,
दब गई ।

सकाम० ना० पु० काम वा कामना सहित ।

सकारना० स० कि० हथडी को खोलना, प्रहण
करना, स्वीकार करना, कबूलना ।

सकारे० ना० पु० प्रातःकाल, सवेरे ।

सकिलना० अ० कि० समिटना, हटना ।

सकिलाना० स० कि० समिटना, हटना ।

सकुचना० अ० कि० डरना, संशयकरना, लजना ।

सकुचाना० स० कि० लजाना, डराना ।

सकुचित० अ० लज्जित ।

सकुल० ना० पु० पर्वत, कुलसमेत, समस्त ।

सकुलादानी० ना० स्त्री० गंडदूरी ।

सकेत० अ० सकरा, तंग, छोटा, ना० स्त्री० दुःख,
आपदा, दुर्घट ।

सकेतना० स० कि० समेटना, संकेत करना ।

सकेलन० अ० कि० सुकुटना, समेटना, लट्टेरना ।

सकेला० ना० पु० सोहाविशेष ।

सकोच० ना० पु० आदर सम्मान ।

सकोरना० स० कि० समेटना, संकोचना, तंग
करना ।

सकोरा० ना० पु० कटोरा, मिट्टी वा काठका
छोटा बर्तन ।

सकोरी० ना० स्त्री० धाली, पिरिचः ।

सकोध० अ० क्रोधसमेत ।

सखर० अ० अधिक, खरयुत ।

सखा० ना० पु० मित्र, वन्धु, प्रियतम ।

सखी० ना० स्त्री० मित्रणी, सहेली, संगिन ।

सख्य० ना० स्त्री० मित्रता, प्रीति ।

संगड० ना० पु० सकट, शकट ।

सगर० ना० पु० अयोध्या का राजाविशेष ।

सगरे० अ० तप, समस्त ।

सगर्भ० अ० गर्भिणी, गर्भसमेत ।

सगपहिता० ना० पु० सागपड़ी हुई दाल ।

सगा० अ० ना एक माता से उत्पन्न है, अपना ।

सगाई० ना० स्त्री० भारीचारा, धापरा, नाना,
मैंगनी, नीच जातिकी स्त्रीका दूसरा विवाह, रिश्तह ।

सगुन० ना० पु० शकुन ।

सगोत्र० ना० पु० समानगोत्र, दूरकासंबन्धी ।

सगौती० ना० स्त्री० मांस ।

सग्लानि० अ० निरादर, लज्जित ।

सघन० अ० घना, बहुतघना, शुभान ।

सघ्राची० ना० स्त्री० सखी, सहेली ।

संकट० ना० पु० विपत्ति, दुःख, कष्ट, प्रापदा ।

संकटा० ना० स्त्री० दुर्दशा, दशाविशेष, काशी
प्री में देवीविशेष ।

संकर० ना० पु० दोषपंसे जन्मित सन्तान ।

संकरपण० ना० पु० श्रीवल्लभजी, सौभाग्य ।

संकल० ना० पु० संग्रह, ढेर, सांकर, सेनार ।

संकलन० ना० पु० जोड़, जोड़नी, योग, सांकर-
तरी विधि से गांठना ।

संकलित० अ० जो, जोड़ना, जो एकपर एक
मिलायागया, ना० पु० गदित ।

संकल्प० ना० पु० मनकी इच्छा, निश्चय, सा-

शाकचीज० ना० पु० श्वशुरादिनां शाक्याणां
 शाकम्भरी० ना० पु० महादेवीनां शाक्यविशेषः
 शाकल० } ना० पु० तिलजोत्पन्नस्य शाक्योः
 शाकल्य० } आदिकी मिलैती जो हामेते है
 शाकं वणिक्० ना० पु० मुराजकप्रक्रियायां
 शाकश्रेष्ठ० ना० पु० सर्जावनीयः
 शाका० ना० पु० शाकाः
 शाकिनी० ना० स्त्री० देवीविशेष जो दुर्गा की सहचरी है।
 शाक्त० ना० पु० शक्तिका उपासक, देवीपूजक।
 शाक्ती० ना० पु० शाक्त, भगवतीशक्तिप्रसक्त।
 शाख० ना० स्त्री० शाखा, वृक्षकी शाखा।
 शाखाविनायकः स्त्री० शाखाकी, मन्दकर्ता, जड़विचार।
 शाखाशृंग० ना० पु० शंखान्त, शंखान्त।
 शाखाविलासी० ना० पु० शंखान्त, शंखान्त।
 शाखाशन० ना० पु० शंखान्त, शंखान्त।
 शाखी० ना० स्त्री० वृक्ष, शाखा।
 शांकरि० ना० स्त्री० शंकर, शंकर।
 शाटिका० } ना० स्त्री० शंकर, शंकर।
 शाटी० } का वरुविशेष।
 शाठ्य० ना० पु० शठता, धमि।
 शाण० ना० पु० सप्तमात्र, नितपर हयथार जोक आदि तेज करते है।
 शांडिल्य० ना० पु० शंकर, शंकर।
 शातकुम्भ० ना० पु० सुवर्ण, सोना।
 शाततप० ना० पु० धर्मशास्त्र का मन्तकमन्त्रि।
 शानपाकी० ना० पु० शिरहटी।
 शान्त० गु० शिर, शिर, शिर।
 शान्ति० ना० स्त्री० शिर, शिर, शिर।
 शाय० ना० पु० सराप, शिर, शिर।
 शाब्दिक० गु० शब्द, शब्द, शब्द।

शारद० ना० स्त्री० सरस्वती, शारदा, सर्वात्मिका
 शारदा० ना० स्त्री० सरस्वती, चातुरी।
 शारदी० गु० जो, शरदें उत्पन्न हो।
 शार्दूल० ना० पु० प्रवर्णविह, कोई-कोई मन्त्र
 किहते है कि एक मन्त्र-होतहि जो शमीको पत्र में दाब लेजाता है।
 शाल० ना० पु० शालवृक्ष, चिरीजी, कियो, भस्त्रविशेष, छेद, श्याल, शोभा, ऊर्ध्वविशेष, धन।
 शालक० गु० दुःखद, छदनहार, ना० पु० शाला।
 शालपर्णी० ना० स्त्री० शोषविशेष।
 शाला० ना० स्त्री० श्याल, श्याल।
 शालि० ना० पु० हेमन्तशुद्ध के धान।
 शालिनी० ना० स्त्री० छन्दविशेष, छन्देहारी, छिदः, छिदः।
 शालिवाहन० ना० पु० राजाविशेष, शका।
 शाली० ना० पु० शालि, पत्नी की-वहन, पु० छेदी, वान, वन्त, युक्ति, स्वामी।
 शालीना० } ना० स्त्री० शोभाका सुगु।
 शालिशता० } ना० स्त्री० शोभाका सुगु।
 शालूर० ना० पु० मन्त्रकी (भेके मन्त्रवर्षी शालूरसवद्वैरा, इत्यमरः)।
 शाल्मल० ना० पु० द्वीपविशेष (जो मृत्तीके सात द्वीपमें से है।
 शाल्मलि० ना० पु० समरवृक्ष।
 शाल्मली० ना० पु० समरवृक्ष।
 शासन० ना० पु० शासन, इकराजामा।
 शासता० ना० स्त्री० पुत्र, शासन, शासता।
 शासनीय० गु० शासके योग्य, शासनीय।
 शास्ति० ना० स्त्री० शासन, शासन।
 शाख० ना० पु० शाखा, हिन्दुलोकोके नामसे शिवाकाशीय। पुस्तकविशेष, यथा-शिवविद्या की पुस्तक।

स्वीय कर्म में प्रतिज्ञाविशेष, दान-कल्पना ।
 संकल्पना० स० कि० दानदेना, नियम-व प्र-
 तिज्ञा करना ।
 संकाश० ना० पु० सुल्प, प्रकाशयुत ।
 संकीर्ण० शु० मचामच, घना ।
 संकीर्त्तन० ना० पु० शृणोका गान ।
 संकुचित० शु० सकुचाया, लज्जित ।
 संकुल० शु० मचामच, घना, भराहुया, पूरा-
 संकुलित० गु० भरा, युक्त ।
 संकेत० ना० पु० सूत्रन, अवधि, सैन, -
 दंशित, सलाह, इशारत, एकान्त ।
 संकोच० ना० पु० लाज, लज्जा, केसर, कानि,
 विलगीजा, सिमट ।
 संकोचन० ना० पु० खंच, सिमटाहट ।
 संकोचना० स० कि० बधोना, समेटना, लंजाना,
 कानिकरना ।
 संकोची० शु० लजीला, लाजवन्त ।
 संक्रम० ना० पु० संचार, गमन ।
 संक्रान्त० शु० जो नीतगया, जो एकसे दूसरे को
 सौपागया ।
 संक्रान्ति० स्त्री० एक राशि से दूसरी-राशि में
 सर्पका जाना ।
 संख्या० ना० स्त्री० विषविशेष ।
 संख्या० ना० स्त्री० एकदो आदिगिन्ती, शुमार ।
 संग० ना० पु० संयोग, मेल, लीलाथोथा, अर्थ०
 । साध, सहित ।
 संगधि० ना० पु० मोचरस ।
 संगति० ना० स्त्री० मैथुन, भेट, मेल, मिलाप ।
 संगम० ना० पु० मेल, मिलाप, मैथुन ।
 संगर० ना० पु० युद्ध, लड़ाई, आपदा, प्रण,
 धावनी, लश्कर ।
 संगसी० ना० स्त्री० संदसी ।
 संगी० ना० पु० साथी, हमराही, मिलापी ।
 संगीत० ना० पु० रागभेद, गान, गानेकी विद्या ।
 संगीतदर्पण० ना० पु० रागविद्या का ग्रन्थ-
 विशेष ।

संगोपन० ना० पु० छिपाव, गोपन ।
 संग्रह० ना० पु० बधोर, संक्षेपन, सारार्थ लेना ।
 संग्रहण० ना० पु० स्वीकार करना, लेलेना ।
 संग्रहणी० ना० स्त्री० अतीसाररोगविशेष ।
 संगृहीत० गु० जो संग्रह-कियागया जो इकट्ठा
 कियागया ।
 संग्राम० ना० युद्ध, समर, रण ।
 संग० ना० पु० कुण्ड, समूह, मेला, देर, संग ।
 संगट० ना० पु० संयोग, मिलान, रंगद ।
 संगटन० ना० पु० रंगन, पिसन ।
 संग्रात० ना० पु० मारना, समूह, नरकविशेष ।
 संगार० ना० पु० संघार ।
 संगारक० ना० पु० संघारक, काल, भैरव ।
 संगारना० स० कि० संघारना ।
 सच० शु० सत्य, सौच, अव्य० हां, ठीक ।
 सचमुच० अव्य० सचकर ।
 सचल० ना० पु० चलनेकी शक्ति, समेत, गु०
 जो चल फिरसके यथा मनुष्य, पशु, पत्नी ।
 सचाई० ना० स्त्री० सत्यता ।
 सचिच० ना० पु० भंत्री, पञ्जीर ।
 सचिचज० ना० पु० भंत्रीका पुत्र, पञ्जीरकार ।
 सचु० ना० पु० आनन्द, सत्य, साच ।
 सचेत० } गु० सुचेत, चौकस, चेतन्य, सुती ।
 सचेतन० }
 सचेष्ट० गु० चेष्टायुक्त, उदयुक्त ।
 सचौटी० ना० स्त्री० सचाई, सचकरनेकीचाल ।
 सद्य० } शु० सत्य, ठीक, सीधा ।
 सद्या० }
 सचाई० ना० स्त्री० सचाई ।
 सधिदानन्द० ना० पु० ब्रह्म, ईश्वर ।
 सच्छास्त्र० ना० पु० अच्छाशास्त्र ।
 सज० ना० स्त्री० डौल, ढव, सिंगार, शोभा,
 रूप ।
 सजक० ना० पु० सयोग ।
 सजग० शु० हीशियार, खबरदार, लज्जा,
 चौकस, चेतन्य ।

शास्त्रविहित० गु० शास्त्रकी विधिमें जो शास्त्र
का है । शास्त्र, जैसे कीर्ति, शास्त्रशास्त्र
शास्त्रज्ञ० ना० पु० जो शास्त्र ज्ञानवादी, जो
शास्त्रार्थ० ना० पु० संवाद, लुचन, बहसकी भाँति
शास्त्री० गु० शास्त्रज्ञ, शास्त्र
शास्त्रीयं० गु० शास्त्रज्ञ
शास्त्र० गु० शास्त्र के योग्य । शास्त्रशास्त्र
शिक्षापा० ना० स्त्री० बचपिसु, शोधपुस्तक
शिक्षादिज्ञ० ना० पु० बूढ़सुवि । शास्त्रशास्त्र
शिक्षादिज्ञी० ना० स्त्री० बूढ़ी । शास्त्रशास्त्र
शिक्षादी० ना० पु० मयूर, मोर, राजा हुय
का पुत्र । शास्त्रशास्त्र
शिक्षर० ना० पु० पर्वतकी धार वा चौड़ी, शिखर
लाग । शास्त्रशास्त्र
शिक्षरी० ना० पु० पर्वत, ऊँचा । शास्त्रशास्त्र
शिक्षा० ना० स्त्री० चौड़ी, शिखर, शिखर
शिखाचूड़० ना० पु० केशपाशा, जयशर
शिक्षि० ना० पु० मयूर, मोर, अग्नि, शिखर
शिखियाला० ना० स्त्री० मयूर, मोर । शास्त्रशास्त्र
शिखिवाहन० ना० पु० स्वामिकार्तिक । शास्त्रशास्त्र
शिखी० ना० पु० मयूर, मोर, अग्नि, गुं
फनेला । शास्त्रशास्त्र
शिखु० ना० पु० सुदिन, वृष । शास्त्रशास्त्र
शियिल० गु० दीला, भेदा, पुरा, अरु
मन्द । शास्त्रशास्त्र
शियिलता० ना० स्त्री० दीलापन, भक्त, भक्त
सती, मांदगी । शास्त्रशास्त्र
शियिः० ना० पु० ना० स्त्री० शिम तरकारी । शास्त्रशास्त्र
शियिका० } ना० स्त्री० शिम तरकारी । शास्त्रशास्त्र
शिर० ना० पु० शिर, मसूक, मूँ । शास्त्रशास्त्र
शिरा० ना० स्त्री० शीर्षी नस, नाडी, नितके
द्वारा शिर शरीर में फिरता है । शास्त्रशास्त्र
शिराप० ना० पु० बूढ़, शिखर, शिरसाधक । शास्त्रशास्त्र
शिराधी० ना० स्त्री० गंला, गर्दन । शास्त्रशास्त्र
शिरामणि० ना० पु० नाँवनिहित, मणिकी भाव
विशेष, गुं सदा, श्रेष्ठ, उत्तम । शास्त्रशास्त्र

शिलः } ना० स्त्री० चट्टान, पत्थरकी । शास्त्रशास्त्र
शिला० } । शास्त्रशास्त्र
शिलागोली० ना० स्त्री० मनशिल । शास्त्रशास्त्र
शिलाजीत० } ना० पु० शिलानेत, शिल
शिलाजीत } ना० पु० शिलानेत । शास्त्रशास्त्र
शिलायन्त्र० ना० पु० पत्थरका धार । शास्त्रशास्त्र
शिल्पः ना० पु० शिल्पकारिकी, कारीगीर, शिल्प
शिल्पकार० } ना० पु० शिल्प, शिल्पकार
शिल्पी० } ना० पु० शिल्प, शिल्पकार
शिल्पीकर० } ना० पु० शिल्प, शिल्पकार
शिव० ना० पु० शुभ, फलदाय, सति, शिवली,
शुभांशु, गंदक, श्रीमहादेवजी । शास्त्रशास्त्र
शिवगिरि० ना० पु० केशसंपन्न । शास्त्रशास्त्र
शिवरात्रि० ना० स्त्री० फायन, कृष्ण चतुदशी
को शिवनम दिनका मत । शास्त्रशास्त्र
शिववाहन० ना० पु० नन्दीगण । शास्त्रशास्त्र
शिवशैल० ना० पु० शिखापर्वत । शास्त्रशास्त्र
शिवसुत० ना० पु० श्री गणेशजी, महाभक्त
तिक । शास्त्रशास्त्र
शिवसुतवाहन० ना० पु० मूक, मयूर । शास्त्रशास्त्र
शिवा० ना० स्त्री० शीवीपतीनी, हड, शिखरकी
सो, सोयाका शास्त्र । शास्त्रशास्त्र
शिवालय० } ना० पु० शिवजीका मन्दिर
शिवाला० } वा मठ । शास्त्रशास्त्र
शिवि० ना० पु० राजाविशेष जो शुभाशुभ भा
शिविका० ना० स्त्री० पालकी । शास्त्रशास्त्र
शिवेश० ना० पु० सदाशिवजी, शुभल । शास्त्रशास्त्र
शिशिर० ना० पु० जाड़ा, पाला, हिम, शिव
विशेष जो माघ काउन में होता है । शास्त्रशास्त्र
शिशु० ना० पु० बालक, बच्चा । शास्त्रशास्त्र
शिशुता० ना० स्त्री० बालरूपन, सुकृती । शास्त्रशास्त्र
शिशुत्व० ना० पु० बालरूपन, सुकृती । शास्त्रशास्त्र
शिशुपाल० ना० पु० राजा विशाखा शिवजी

सजधज० ना० स्त्री० वनावट, रूप, सजावट ।
 सजन० ना० पु० पति, प्रियतम ।
 सजना० थ० कि० बगना, कवना, सोहना,
 पहिरना, सुधरना, ता० पु० सजन, सज्जन ।
 सजनी० ना० स्त्री० सखी, सहेली ।
 सजल० य० जो जलासे मरा ।
 सजला० ना० पु० संभिला, भाई, चारभाइयों
 में से जो तीसरा भाई हो उसका उपनाम ।
 सजाई० ना० स्त्री० वनवाई, वनावट, - सजाय,
 रामायणे यथा तौ विधिदेहि मोहि सजाई ।
 सजातीय० य० समान, सम, जातिका, एक
 जातिका ।
 सजाना० स० कि० बनाना, रचाना ।
 सजावट० ना० स्त्री० वनावट, रचावट ।
 सजीला० गु० सुधील, सुदब, सुन्दर ।
 सजीव० य० जीवन, जीवधारी, जीव समेत,
 आनन्द में ।
 सजीवनि० ना० स्त्री० वृद्धिविरोध ।
 सजोयल० गु० मस्तर समेत, हथियारबन्द ।
 सज्जन० गु० कुलवन्द, आदरी, साधु, और
 अच्छा मनुष्य ना० पु० प्रियतम, प्याग ।
 सज्जना० थ० कि० सजना ।
 सज्जी० ना० स्त्री० सारविशेष ।
 सभिया० ना० स्त्री० सभेका सेतयादि ।
 सभियार० ना० पु० साक्षी, शरीक ।
 सभियारा० ना० पु० साक्षी, शराकत ।
 संचय० ना० पु० संग्रह, ढेर, समूह ।
 संचयी० गु० संचय करनेहारा ।
 संचार० ना० पु० संक्रमण, गूढता से जो चलन,
 मार्ग, राह, माट, चलन, गिश्तान ।
 संचारिका० ना० स्त्री० कुटुम्बी ।
 संचारिणी० य० स्त्री० चलानेवाली ।
 सञ्चित० य० जो नदीरामया, पूर्वकृत धर्मा-
 धर्म ।
 संचेत० य० सचेत ।
 संचित० य० क्षिप, धुस ।

संजात० कि० उत्पन्न पैदा ।
 सकट० ना० पु० लचीली छड़ी, भगावट, भिच-
 मान हुकाकी नय ।
 सकटना० थ० कि० भागना, विपना, अलग
 होना ।
 सकाई० ना० स्त्री० उतार, चदावट ।
 सकाना० स० कि० निरस करना, विषाना,
 भगाना, बोलाना ।
 सटना० थ० कि० मिलना, उड़ना, विपकना ।
 सटपटाना० थ० कि० धवडाना, टरना ।
 सटा० ना० स्त्री० गलेके बाल, जड़ा ।
 सटाना० स० कि० विपकाना, जोड़ना, लगाना ।
 सटासट० ना० स्त्री० खगलग ।
 सटिया० ना० स्त्री० छड़ी ।
 सटीक० य० टीकासमेत, तिलकसंयुक्त ।
 सटियाना० थ० कि० साठ वर्षकी आयुसे
 अधिक होना, बुद्धिबल घटना ।
 सठोड़ा० ना० पु० पुष्टई, विशेष जो अशुभ की
 दिया जाता है ।
 सड़क० ना० स्त्री० राजमार्ग, पथ, पैदा ।
 सड़न० ना० स्त्री० सड़ाप, गलन ।
 सड़ना० थ० कि० गलना, उबलना ।
 सड़ा० य० गला, उबसा ।
 सड़ांथ० } ना० स्त्री० सड़नेकी दूगंध ।
 सड़ाना० स० कि० गलाना, बसाना ।
 सड़ियल० गु० निर्बल, सड़ाहथा ।
 सड़ंधा० गु० सड़ियल ।
 सड़सी० ना० स्त्री० गहवा, संगडी, सनसी ।
 सड़ा० गु० पैदा, मोंटा ।
 सड़ास० ना० पु० पायदाना, धरदोर्भा ।
 सड़ासा० ना० पु० बड़ी सड़सी ।
 सड़ासी० ना० स्त्री० सरइसी ।
 सट्ठ० य० सत्य, ना, पु, सट, हीर, भल
 मंगसाव, रस, कीर्ति, सचार्थ ।
 सतमासा० ना० पु० सातवें महीनेके गर्भ में

पाण्डव के यज्ञ में श्रीकृष्णचन्द्रजी ने वर्ष
किया था।

शिष्टमारु० ना० पु० अणुमच्छ ।

शिष्य० ना० पु० शिष्या, उपदेश, शील, मन्त्र ।

शिष्टं गु० आधीन, आज्ञाकारी, जो आज्ञादीर्घ,
उत्तम, श्रेष्ठ ।

शिष्टता० ना० स्त्री० आधीनता, उत्तमता ।

शिष्टाचार० ना० पु० आदर, सत्कार, सम्मान,
मिलनसारी, बढ़ाई देना ।

शिष्टाचारी० गु० सम्मानी, जो शिष्टाचार करे ।

शिष्य० ना० पु० चेला, मतावलम्बी, सीखने
हारा ।

शिक्षक० ना० पु० गुरु, अध्यापक, उपदेशक ।

शिक्षा० ना० स्त्री० सीख, उपदेश, मन्त्र ।

शिक्षित० गु० जो सिखाया वा पढ़ाया गया, जो
उपदेश किया गया ।

शीकर० ना० पु० भौंसी, पुहार ।

शीघ्र० अर्थ० तुरन्त, द्रुत, उतावली, जल्द ।

शीघ्रग० ना० पु० खबर, गथा ।

शीघ्रगामी० गु० शीघ्र, चलनेहारा ।

शीघ्रता० ना० स्त्री० वेगताई, उतावली,
शिताबी ।

शीत० ना० पु० हिम, जाड़ा, ठंड, पाला, पाल
का वृद्ध ।

शीतकटिबंध० ना० पु० पृथ्वी के ३३
अंश उत्तर और ३३ अंश दक्षिण का
मिखण्ड ।

शीतकर० ना० पु० चन्द्रमा ।

शीतकाल० ना० पु० जाड़े के दिन, हेमन्त ।

शीतज्वर० ना० पु० तपलज्वर, विषमज्वर के वि-
परीन अर्थात् जाड़ा ।

शीतमोरु० ना० पु० समाल ।

शीतरत्न० ना० पु० कपूर ।

शीतल० गु० ठंडा ।

शीतलता० ना० स्त्री० ठंड, ठंडाई ।

शीतांशु० ना० पु० चन्द्रमा, कपूर ।

शीतांग० ना० पु० अर्द्धाङ्ग रोगविशेष ।

शीतांतिका० ना० स्त्री० तेजबल शोषि-

शीतार्त्त० गु० जो ठंडर गया, जो जाड़े से

शीतोष्ण० गु० सरंढ गरम ।

शीर्ष० गु० पतला, घण ।

शीर्षं ना० पु० मस्तक, शिर, चोटी, ऊपर

शीर्षकोण० ना० पु० ऊपर का कोना ।

शीर्षी० ना० स्त्री० केशपारा, नालाकी

शील० ना० पु० स्वभाव, सुभाव, सुख्यत

शीलवान्० ना० गु० सुशील, मिलनसार

शीशु० ना० पु० सिर, मूक ।

शीशुम० ना० पु० बृद्धविशेष ।

शुक० ना० पु० तीता, सूखा ।

शुकलुद० ना० पु० धुनेरा ।

शुकदेव । ना० पु० शुकाचार्य,
वक्ता ।

शुकप्रिय० ना० पु० अनार ।

शुकवर्ण० ना० पु० धुनेरा ।

शुकाचार्य० ना० पु० मुनिविशेष, व्या-

शुक० ना० पु० अम्लवत ।

शुकचरिडका० ना० स्त्री० अमिली वृक्ष

शुक्लि० ना० स्त्री० सीपी ।

शुक्लिज० ना० पु० मोती ।

शुक० ना० पु० छटामह, वीर्य, अग्नि,
छटावार, देवोंका गुरु ।

शुकदारु० ना० पु० देवदारु ।

शुकमाता० ना० स्त्री० भार्गी ।

शुकवार० ना० पु० छटावार ।

शुक० गु० रवेतवर्ण, ब्राह्मणों में उपपद

ना० पु० कुन्द, सफेद जारा ।

शुक० ना० पु० उजेलपात ।

की पूजा विशेष वा व्योमर ।
 सतमी० ना० स्त्री० सप्तमी ।
 सतर० ना० स्त्री० तिथी, टेढ़ी ।
 सतरानां० अ० क्रि० क्रोधित होना, कुदना ।
 सतरौहीं० ना० स्त्री० टेढ़ी, तिथी ।
 सतर्क० गु० सावधान ।
 सतलज० ना० स्त्री० पंजाबकी नदी विशेष ।
 सतलड़ा० गु० सतगुना, जिसमें सतलड़ हैं ।
 सतसठ० गु० साठि और सात, ६७ ।
 सतसैया० ना० स्त्री० विहारीलाल काविकृत
 ग्रन्थ विशेष ।
 सतहत्तर० गु० सतर और सात, ७७ ।
 सताना० स० क्रि० दुःख देना, घेड़ना ।
 सती० ना० स्त्री जो स्त्री पति के साथ अग्नि में
 जलती है, पतिव्रता, दक्षसुता ।
 सतीमठ० ना० पु० स्थान जहाँ सती के अस्थि
 आदिस्थापन करते हैं ।
 सतीर्थ० ना० पु० जिन्होंने एक गुरु से अभ्ययन
 किया है, गुरुभाई, साध्यायी, एक साँपों के
 पढ़नेहारे ।
 सतीला० गु० पराक्रमी ।
 सतीवाड़० ना० पु० स्थान जिसमें सतीहुई है ।
 सतुवा० } ना० पु० सत् ।
 सतुआ० }
 सत्कर्म० ना० पु० भलाकर्म, ठीक काम ।
 सत्कार० ना० पु० सम्मान, लोभका जलाना ।
 सत्कारी० ना० पु० मुर्देका जलानेवाला, सम्मान
 वा आदर करनेहारा ।
 सक्रिया० ना० स्त्री० मृतककी सुगति, उत्तम कर्म,
 आवभगति ।
 सत्तम० गु० श्रेष्ठ, बड़ा, मर्यादिक, साधुओं में
 जो सब से अच्छा ।
 सत्तर० गु० सातदहाई, ७७ ।
 सत्तरहं० गु० दश और सात, १७ ।
 सत्ता० ना० स्त्री० बल, पराक्रम, गंभीरों में जो
 सात, आकार, बज्रद ।

सत्ताईस० गु० बीस और सात, २७ ।
 सत्तानवे० गु० नव और सात, १७ ।
 सत्तावन० गु० पचास और सात, २७ ।
 सत्तासी० गु० अस्ती और सात, २७ ।
 सत्त० ना० पु० भूनेयव आदिका चून ।
 सत्पथ० ना० पु० सन्मार्ग, अच्छामार्ग ।
 सत्पुत्र० ना० पु० सुपुत्र, भलापुत्र ।
 सत्य० गु० यथार्थ, ठीक, निश्चय, सांचा ।
 सत्यकेतु० ना० पु० राजाविशेष, सत्यकी
 पताका ।
 सत्यता० ना० स्त्री० भलाई, सचाई ।
 सत्ययुग० ना० पु० प्रथमयुग जो सत्रह-लाख
 अष्टाईस सहस्रवर्ष का प्रमाण है ।
 सत्यभामा० ना० स्त्री० श्रीकृष्णकी स्त्री विशेष ।
 सत्यभाव० ना० पु० सीधा स्वभाव ।
 सत्यलोक० ना० पु० ब्रह्मलोक स्वर्गविशेष ।
 सत्यवचन० ना० पु० यथार्थ कहना, ठीक ।
 सत्यवती० ना० स्त्री० वेदव्यास की माता, पति-
 व्रता स्त्री ।
 सत्यवाद० ना० पु० सत्यवचन, ठीकवाता ।
 सत्यवादी० गु० सचा, सच कहनेहारा ।
 सत्यसिन्धु० गु० बड़ासचा ।
 सत्यानाश० ना० पु० सम्पूर्णनाश, विगइना ।
 सत्यानाशी० ना० स्त्री० कठीला पीधाविशेष, गु०
 जो विगइया, नष्ट ।
 सत्यानृत० ना० पु० वाणिज्य, व्यापार ।
 सत्ययुग० ना० पु० सयुत, सत्ययुग ।
 सत्त्व० }
 सत्त्वगुण० } ना० पु० भलाई का गुण ।
 सत्वन्ता० गु० भला कीर्तिमान् ।
 सत्वर० अथ० तुरन्त, शीघ्र, जल्द ।
 सथराव० ना० पु० युद्धमें जो मरिगये उनके
 विरुद्ध ।
 सथिया० ना० पु० अस्त्र वैद्य, जरीह, चिह
 विशेष जो महान्त लोग, खाते के अथमपत्र में
 करते हैं ।

सदा नमः ॥ सदा नमः ॥
 सदा नमः ॥ सदा नमः ॥
 सदा नमः ॥ सदा नमः ॥
 सदा नमः ॥ सदा नमः ॥
 सदा नमः ॥ सदा नमः ॥

सदाः } सदाः सदाः सदाः
 सदाः } सदाः सदाः सदाः

सदाकारं ना० पु० सदा का कृत वा सदा ।
 सदागतिं ना० पु० सदा गति ।
 सदाचारं ना० पु० सदाचार वाचार कर्मा ।
 भेदाचार, पवन, वायु, हवा ।

सदानन्दं ना० पु० सदा वा सर्वदाका
 प्रसन्न, आनन्द ।

सदापुष्पं ना० पु० सदापुष्प, पुष्प, पुष्प,
 जिसमें सर्वदा फूल फूल लगते हैं ।

सदाफलं ना० पु० सदाफल, फल, फल,
 गुणवत्, सुख, सुख, सुख ।

सदाव्रतं ना० पु० सदाव्रत, व्रत, व्रत,
 नित्य भोजनव्रत ।

सदाशिवं ना० पु० सदाशिव, शिव, शिव,
 सदासुहागनं ना० पु० सदासुहागन, सुहागन,
 विशेष, प्रदीप या गिरुका, जो सदा का भव
 करता है ।

सदेहं पु० सदेह, देह ।

सद्यः पु० सद्यः, सद्यः ।

सदेवः पु० सदेव, देव ।

सदेवः पु० सदेव, देव ।

सदेवः पु० सदेव, देव ।

सदेवः पु० सदेव, देव ।

सदेवः पु० सदेव, देव ।

सदेवः पु० सदेव, देव ।

सदेवः पु० सदेव, देव ।

सदेवः पु० सदेव, देव ।

सदेवः पु० सदेव, देव ।

सदाः } सदाः सदाः सदाः

सदाः } सदाः सदाः सदाः

सदाः } सदाः सदाः सदाः

सदाः } सदाः सदाः सदाः

सदाः } सदाः सदाः सदाः

सदाः } सदाः सदाः सदाः

सदाः } सदाः सदाः सदाः

सदाः } सदाः सदाः सदाः

सदाः } सदाः सदाः सदाः

सदाः } सदाः सदाः सदाः

सदाः } सदाः सदाः सदाः

सदाः } सदाः सदाः सदाः

सदाः } सदाः सदाः सदाः

सदाः } सदाः सदाः सदाः

सदाः } सदाः सदाः सदाः

सदाः } सदाः सदाः सदाः

सदाः } सदाः सदाः सदाः

सदाः } सदाः सदाः सदाः

सदाः } सदाः सदाः सदाः

सदाः } सदाः सदाः सदाः

सदाः } सदाः सदाः सदाः

सदाः } सदाः सदाः सदाः

सदाः } सदाः सदाः सदाः

सदाः } सदाः सदाः सदाः

सदाः } सदाः सदाः सदाः

सदाः } सदाः सदाः सदाः

सदाः } सदाः सदाः सदाः

सदाः } सदाः सदाः सदाः

सदाः } सदाः सदाः सदाः

संख्य० गु० नांवां ।
 सशंक० गु० सभय ।
 सशब्दयोगि० गु० शब्दयोगी ग्रन्थय सहितो ।
 सशोक० गु० दुःखित अभयमीत ।
 ससक० ना० पु० सरगोश, चौगडा ।
 ससता० गु० जो महंगा नहीं है ।
 ससुतार० ना० स्त्री० ससुतापन ।
 ससा० ना० पु० शरा, चौगडा, सरगोश ।
 ससापत्री० ना० स्त्री० लनाक ।
 ससुर० ना० पु० श्वशुर ।
 ससुराल० ना० स्त्री० श्वशुरका घर ।
 ससुराली० गु० जो श्वशुरकाहे, जो ससुराल
 का है ।
 सस्य० ना० पु० केल, अन्न, धान ।
 ससह० अर्थ० साथ, सहित, गु० जो सहने के
 योग्य है ।
 ससरकार० ना० पु० आग्रविशेष, सहायता ।
 सहकारी० गु० सहायक ।
 सहभागिनी० ना० स्त्री० सती स्त्री ।
 सहचर० ना० पु० पियानसा, साथी, संगी ।
 सहचरी० ना० स्त्री० सती, सहिती, अनुगा-
 मिनी ।
 सहज० गु० सामान्य, निश्चल, स्पष्ट, सुगम ।
 सहजना० ना० पु० वृक्ष विशेष ।
 सहदेवी० ना० स्त्री० पौधा विशेष, सहतरह ।
 हन० ना० पु० कपड़ा विशेष, सहनेकी शक्ति ।
 हनहार० गु० सन्तोषी, सहवेया ।
 हना० अ० क्रि० निवाहकरना, सन्तोषकरना,
 सुनलेना, बरदाश्त करना ।
 हमना० अ० क्रि० बरना, भयभीत होना ।
 हमरण० ना० पु० मृतकपतिके साथ जलना ।
 हराना० अ० क्रि० धरना, चहेलाना ।
 हरावन० ना० स्त्री० गुदगुदी, सरसरी ।
 हरी० ना० स्त्री० बालाई, दूधकी, मधली,
 विशेष, पूर मधली ।
 हरोप० गु० रोष सहित, कोप से ।

सहलोना० अ० क्रि० गुदगुदाना, धूलधूलाना ।
 सहलाहट० ना० स्त्री० गुदगुदाहट, धूलधुला-
 हट ।
 सहवास० ना० पु० पहास ।
 सहवासी० गु० पहासी ।
 सहवेया० गु० सहनहार ।
 सहस० गु० सहस्र, हजार, १००० ।
 सहसकर० ना० पु० सूर्य, बाणासुर, नागाड्डन ।
 सहसघदन० ना० पु० शेषजी, सहसघदन ।
 सहसयाहु० ना० पु० सहसबाह, रागाविशेष ।
 सहसन्तयन० ना० पु० सहसन्तयन, इन्द्र ।
 सहसा० अर्थ० बिनाविचार किये, उता-
 वली से ।
 सहस्रांस्त्री० ना० पु० सहस्रांस्त्री, इन्द्र ।
 सहसास्त्री० गु० गवाहोसमेत, साक्षीसहित ।
 सहसानन० ना० पु० शेषजी ।
 सहस्र० गु० हजार, १००० ।
 सहस्रनयन० ना० पु० इन्द्र ।
 सहस्रमुखी० ना० स्त्री० श्रीगंगाजी ।
 सहस्रवेदन० ना० पु० शेषजी ।
 सहस्रबाहु० ना० पु० बाणासुर, नागाड्डन ।
 सहस्रवीर्य० ना० पु० बड़ी सतावर ।
 सहस्रशिर० ना० पु० रोवण विशेष मितको
 श्रीसीतार्जुनि बधकिया था ।
 सहस्रा० } ना० स्त्री० पीलूवृक्ष ।
 सहस्रांगी० }
 सहार्ह० ना० स्त्री० सहाय, कटक, ना० पु०
 सहायक ।
 सहाऊ० गु० जो सहने के योग्य है ।
 सहाना० ना० पु० रागाविशेष, स० क्रि० नि-
 वाहकरना, सन्तोषकरना, बरदाश्त कराना ।
 सहाय० ना० स्त्री० सहारा, सैन, मदद, साथ ।
 सहायक० ना० पु० मित, सहाय करनेवाला ।
 सहायता० ना० स्त्री० } उपराला, उपकार, मदद ।
 सहाय० ना० पु० }

ग्यालियर के निकटपर्वत विशेष, जिसपर सनीचर की मूर्ति है ।

सनेह० ना० पु० तेल, गु० स्नेह ।

सन्त० ना० पु० सायुविशेष, ईश्वरसेवन, गु० अन्धाधनी, भला ।

सन्तत० अव्य० निर्दल, निरन्तर ।

सन्तति० ना० स्त्री० सन्तान, वंश, पुत्रादि श्रौलाद ।

सन्तस० गु० पीडित, दुःखित, सतायागया, मन्तापसहित ।

सन्तरण० ना० पु० तरणा, मुक्तहोना ।

सन्ता० गु० विगडा ।

सन्तान० ना० पु० वंश, लड़केबाले, कव्यवृत्त ।

सन्ताप० ना० पु० शोक, पीडा, दुःख ।

सन्तापित० गु० सन्तस, सतायागया, पीडित ।

सन्तापी० गु० शोकसंपुक्त, उदास, दुःखी ।

सन्ती० ना० पु० बदला, अव्य० बदले, पलटे, लिये ।

सन्तुष्ट० गु० धीरजी, सन्तोषी, तृप्त, मनभरा, हर्षित ।

सन्तोष० ना० पु० आनन्द, धीरज, हर्ष, सुख ।

सन्तोषी० गु० धीरजवान्, आनन्दी, हर्षित ।

सन्था० ना० स्त्री० पाठ, सबक ।

सन्दर्श० ना० स्त्री० सण्डसी, सन्ती ॥

सन्दर्शन० ना० पु० साक्षात्कार ॥

सन्दान० ना० पु० दानदेना, रस्ती जो चौडा आदि के पाँचमें बाँधते हैं, सुनारों की 'हथियार' विशेष ।

सन्दिग्ध० गु० सन्देहयुत, भ्रमीला ।

सन्दिग्धभूत० ना० पु० जिसके भीतन में सन्देह होना ॥

सन्देश० ना० पु० समाचार, पत्र, पत्र ।

सन्देसी० ना० पु० दूत, पैगम्बर ।

सन्देह० ना० पु० संशय, शंका, चिन्ता, शक ।

सन्देहिक० गु० जिसमें सन्देह हो ।

सन्देही० ना० पु० संशयी, चिन्तायुक्त ।

सन्देहो० ना० पु० समूह, बहुतायत ।

सन्धान० ना० पु० अन्वेषण, खोज, जाँच, लगान, लगावट, मिलान ।

सन्धानना० सं० कि० जोड़ना, लगाना, ताकना ।

सन्धाना० ना० पु० आचार ।

सन्धि० ना० स्त्री० मेल, संगी, मिलान, धिदर, मिला ।

सन्ध्या० ना० स्त्री० सायंकाल, गोधूलि, साँक, निकाल में उपासना समयका नाम, यथाः सूर्योदय, मध्याह्न, सूर्यास्त ।

सन्नाटा० ना० पु० जलकी लहरोंका जो शब्द वायु वा झड़ी, से जो शब्द होता है ।

सन्निकर्ष० ना० पु० समीप, समीपी, निकटता, समीपहोना ।

सन्निधान० ना० पु० सन्निधि० ना० स्त्री०

सन्निपात० ना० पु० रोगविशेष, सर्साँम ।

सन्निहित० गु० निकट, समीप, पास ।

सन्मान० ना० पु० आदर, सत्कार, मर्यादा ।

सन्मानार्थ० गु० जिस शब्द से प्रतिष्ठापाई जाती है ।

सन्मानी० गु० शिष्टाचारी, आदरी, सत्कारी ।

सन्मुद० ना० पु० हर्ष, प्रीति, आनन्दी, खुरी ।

सन्न्यास० ना० पु० चौथा आश्रम, दिगम्बर ।

सन्न्यासी० ना० पु० चौथा आश्रमी, दिगम्बरी ।

सपदि० अव्य० तत्क्षण, तुरन्त, अभी ।

सपना० ना० पु० स्वप्न ।

सपह्लव० गु० सहित पल्लव, पत्तेसहित ।

सपक्ष० ना० पु० सहायक, संगी, गु० पक्ष समेत ।

सपीतक० ना० पु० घोयातुरई ।

सपुत्र० ना० पु० लड़के सहित ।

सपुण्या० ना० स्त्री० स्वर्णकेतकी ।

सहित० अन्व० संग, साथ, समेत, गु० दित
समेत ।

सही० ना० स्त्री० खाताविशेष, नदी, अन्व०
निश्चयबोधक ।

सहेजना० स० क्रि० जाचना, परखना, सेतना,
बनाना, बनावा, ठहरा, रखना ।

सहेली० ना० स्त्री० सली, आली, संगकी स्त्री ।

सहोदर० गु० जो एक माता से उत्पन्न भया,
यथा सगाभाई ।

सहोदरभाई० } ना० पु० सगाभाई ।
सहोदरभ्राता० }

सहोद्री० ना० स्त्री० सहोद्री, चौखट, विशेष ।

सह्य० श० सहने के योग्य ।

सक्षत० गु० लघ्वित, धावयुक्त ।

सा० अन्व० सादृश्यबोधक 'यथा' छेदयता,
पीलासा ।

साऊ० श० सीखनेहार, शिष्ट ।

साऊगी० ना० स्त्री० सांगी ।

साई० ना० पु० स्वामी, भगवान् ।

सांक्र० ना० स्त्री० शंका, काशरास ।

सांकर० ना० स्त्री० सांकल, गु० गाद, विपत्ति,
कठिनता ।

सांफरी० } ना० स्त्री० संकल, सिकली, भूषण ।
सांरुल० } विशेष, जंजीर ।

सांखू० } ना० पुल, सेत, पाप, काठ
सांखो० } विशेष ।

सांगी० ना० स्त्री० गाड़ी में स्थान विशेष, निस-
में गठरी आदि रखते हैं, बर्ही ।

सांगूस० ना० स्त्री० मछली विशेष, शंक ।

सांघर० ना० पु० श्रिलिपतिका पुत्र ।

सांच० श० सत्य, सच, सच्चा ।

सांचा० ना० पु० डालने वा भरने का धर-
प्रगटी, श० सच्चा, सत्यवक्ता ।

सांभू० ना० स्त्री० सन्ध्या, सायंकाल ।

सांभा० ना० पु० } सांकी जो पितृपक्ष में
सांकी० ना० स्त्री० } बनाते हैं, पुतलियां जो
सांके पितृपक्ष में बनाते हैं ।

सांटा० ना० पु० कोडा, एंड, छप्परकी कमरका
पांस ।

सांटी० ना० स्त्री० छड़ी, लग ।

सांटो० ना० पु० बदला, पलया रामचन्द्रका-
यां (महसांठालयकृष्णावतार, तप हैही तुम
संसारपार) ।

सांठ० ना० स्त्री० योग, संयोग, शष्ट, अन्न, पी-
ठने के लिये लम्बा खेन्दा ।

सांठांठ० ना० पु० सांठ बांट, मेल संयोग ।

सांठना० स० क्रि० सटाना, लगाना,
छुटाना ।

सांड० ना० पु० शयड ।

सांडनी० ना० स्त्री० ऊंटनी, शयडकी स्त्री ।

सांडा० ना० पु० झिपकली के तुल्यजन्तुविशेष ।

सांती० अन्व० सन्ती ।

सांप० ना० पु० सर्प ।

सांपन० ना० स्त्री० सांप की स्त्री ।

सांभर० ना० पु० लवणविशेष, नगरविशेष,
श्रीलविशेष जो जयपुर और जीपपुर के म-
ध्य में है ।

सांचला० गु० कृष्ण सदरा जो वर्ष ।

सांचा० ना० पु० अन्नविशेष ।

सांशयिक० श० संदेहयुत, चिन्तायुत ।

सांस० ना० स्त्री० स्वास, दम ।

सांसना० स० क्रि० छाटना, कुदृष्टि देखना ।

सांसभरना० अ० क्रि० आहभरना ।

सांसा० ना० पु० संशय ।

सांसारिक० श० जो संसारका है ।

साक० ना० पु० साक, साग ।

साकवणिक० ना० पु० घुराक, कमरिया ।

साका० ना० पु० शाका ।

साकार० अन्व० आकार सहित ।

साकव्य० ना० पु० शाकव्य, शाकल ।

साकेधन्ध० ना० पु० राजा, निसने, शाका
भाया है ।

सपूत० ना० पु० सपूत ।
 सपूतार० } ना० स्त्री० सपुत्रता, सपुत्री ।
 सपूती० }
 सपेला० ना० पु० } सांप्रकावच्चा, छोटी
 सपोला० ना० पु० } सांप, जन्मता सांप
 सपोलिया० ना० स्त्री० } का वच्चा ।
 सप्त० गु० सात ७ ।
 सप्तर्षि० ना० स्त्री० सातर्षि अर्थात् अनावृष्टि
 र अतिवृष्टि २ टीकी ३ मूषक ४ शुक्र ५
 रवसेन्य ६ परसेन्य ७ ।
 सप्तश्रृपि० ना० पु० सातश्रृपि अर्थात् क्रूरप १
 श्रि २ भरद्वाज ३ विश्वामित्र ४ गौतम ५
 जमदग्नि ६ वशिष्ठ ७ ।
 सप्तजिह्वाग्नि० ना० पु० अग्निकी सातजिह्वा
 अर्थात् काली १ कराली २ जयवती ३ रक्तव-
 र्धिका ४ ज्वलनी ५ भूमपुष्पा ६ भूमरतीषी ७ ।
 सप्तति० गु० सप्तर ७० ।
 सप्तदश० गु० सप्तरह १७ ।
 सप्तदेवपुरी० ना० स्त्री० सात देवपुरी अर्थात्
 विश्वपुरी १ शिवपुरी २ ब्रह्मपुरी ३ अमरावती ४
 अलकावती ५ वरुणावती ६ और यमुपुरी ७ ।
 सप्तद्वीप० ना० पु० सातद्वीप अर्थात् जम्बू १
 म्ल २ कुश ३ कौच ४ शाक ५ शाल्मलि ६
 पुन्डर ७ ।
 सप्तपाताल० ना० पु० सात पाताल अर्थात् अत-
 ल, वितल, रसातल, तलातल, महातल, पाताल,
 एतल, ७ ।
 सप्तपुरी० ना० स्त्री० अयोध्या, मथुरा, माया,
 काशी, कांची, अवन्तिका, बाराका ७ ।
 सप्तमं० गु० सातवां ।
 सप्तमी० ना० स्त्री० सप्तमीतिथि, अधिकरण ।
 सप्तम्यन्त० गु० जिसके अन्तमें, सप्तमी वा प्र-
 त्यय है ।
 सप्तमुख्यअक्षर० ना० स्त्री० पृताची १ मं-

नका २ रम्भा ३ उर्वसी ४ तिलोत्तमा ५ सुकेशी ६
 मंडोषा ७ ।
 सप्तमुख्यघायु० ना० पु० सातमुख्यपवन अर्थात्
 आवाह, प्रवाह, अनुवह, संवह, दिवह, परावह,
 परिवाह ७ ।
 सप्तयुद्ध० ना० पु० सात प्रकारका समर अर्थात्
 धनुष, चक्र, कुंत, स्रह, गदा, छुरिका, मल्ल ७ ।
 सप्तराज्यांग० ना० पु० राज्य के सात अंग अ-
 र्थात् स्वामी, मंत्री, देश, कोरा, मित्र, गदा,
 सेन्य, ७ ।
 सप्तविंशति० गु० सत्ताईस २७ ।
 सप्तविंशतितम० गु० सत्ताईसवा ।
 सप्तसिंधु० ना० पु० सात सिंध अर्थात् लवणो-
 द, रसोद, सरानिधि, पृतनिधि, दधिनिधि, शीर-
 निधि, जलनिधि ७ ।
 सप्तस्वर० ना० पु० सातस्वर अर्थात् गहन, अ-
 वम, गान्धार, मध्यम, धैवत, निषाद, पंचम ७ ।
 सप्तस्वर्ग० ना० पु० सातस्वर्ग अर्थात् भूलोक,
 भुवलोक, स्वलोक, महलोक, जनलोक, तपलोक,
 सत्यलोक ७ ।
 सप्ताश्व० ना० पु० सूर्य ।
 सप्ताह० ना० पु० अठवारा, हफ्तह ।
 सप्ति० ना० पु० घोड़ा, यथा गाजिवाहावः गंधर्व
 ७ यह सैन्धव सप्तय इत्यमरः ।
 सफरी० ना० स्त्री० मत्स्य, मछली ।
 सय० गु० सर्व, सारा, ना० स्त्री० रात ।
 सयरस० ना० पु० जल, पानी ।
 सयल० गु० बलवान, प्रौढ़, पहलवान ।
 सयलता० } ना० स्त्री० बल, प्रौढ़ता, पहल-
 सवलाई० } वानी ।
 सचेर० गु० समय से पहले, ठीक वा अग्रे
 समय ।
 सचेरा० ना० पु० भोर, प्रातःकाल, तड़का ।
 सचेरे० अन्व० तड़के, भोरदे ।

साखं } ना० स्त्री० धाक, भरम, नाम,
 साखिं } मर्याद, धीति, प्रतीति, पुष्पात् ।
 साखी० ना० स्त्री० साधी, गवाही ना० पुं०
 वृत्तगवाह ।
 साखोच्चार० ना० पुं० वेशवर्षीय ।
 साखोटक० ना० पुं० सहोरावृत्त ।
 साख्य० ना० पुं० साक्षात् ।
 सामं } ना० पुं० शक्ति ।
 सामपाति० }
 सागर० ना० पुं० सप्रद, बङ्गालाख, भारत-
 तण्डका नगरविशेष ।
 सागरा० ना० स्त्री० पृथ्वी, धरती ।
 सागून० ना० पुं० काष्ठविशेष वा उसीकावृत्त ।
 सांख्य० ना० पुं० शास्त्रविशेष ।
 सांगं० शु० समाप्त, साहित्यार्थम् ।
 सांगोपांग० शु० सम्पुष्प, समस्त, ज्याका त्सा ।
 साज० ना० पुं० अश्ववादि के पहरे के सामग्री,
 समर्थ, सजाव, श्रावता ।
 साजन० ना० पुं० सम्जन, पति, स्वामी ।
 साजना० स० कि० पहिनाना, सँवारना, सजा-
 ना, साधना ।
 साजी० ना० स्त्री० जो फूटी टूटी नहीं है ।
 साम्ना० ना० पुं० व्यापारादि में कर मनुष्यों का
 मेल, शराकृत ।
 साम्नी० ना० पुं० साध्या, भागी, शैशिक ।
 साठ० शु० छः दहाई ६० ।
 साठी० ना० पुं० धान वा चावलविशेष ।
 साठसाती० शु० शनैश्चर जो साडेसात वर्ष
 तक रहता है ।
 साढ़ा० शु० आधा ।
 साढू० ना० पुं० जोरुकी बहिन का पति ।
 साढे० शु० जिस गिगती की आदि में यह लगाति
 है उसपर एकका आधा अधिक सूचित हो
 ताहै, ३ ॥
 सात० सप्त, ७ ।
 सात्यकिं० ना० पुं० मनुविशेष, यादवविशेष ।

सात्विकं० गुं० सतोगुणी, उत्तमदेन ।
 साथ० अव्य० संगे ।
 साथरी० ना० स्त्री० आसनी, बिछोनी ।
 साथी० गुं० संगी, संगवाला ।
 सादर० गुं० आदरसमेत ।
 सादरा० ना० पुं० गीतविशेष ।
 सादृश्यं० ना० पुं० समानता, उपमा, तुल्यता,
 दृष्टान्त ।
 साध० ना० स्त्री० इच्छा, चाह, चोप गुं० साधु,
 अश्यामनुष्य ।
 साधक० ना० पुं० तपस्वी, साधु, साधन करने
 वाला ।
 साधन० ना० पुं० अभ्यास, चिन्तन, परमार्थ
 का अनुष्ठान, योगवट, उपाय, नित्यक्रिया ।
 साधनक्रिया० ना० स्त्री० रूपविनायिका कामी
 साधना० स० कि० दिखना, सिखलाना, सी-
 खना, सुधारना, अभ्यास करना, सानना, नि-
 बाहना, ना० स्त्री० अभ्यास, निबाह, योगवट,
 उपाय, नित्यक्रिया, तदवीर ।
 साधनिका० ना० स्त्री० साधनी, उपाय, तद-
 वीर ।
 साधस० ना० पुं० दर, भय, शोक ।
 साधारण्यं० गुं० सामान्य, सीमा ।
 साध्री० गुं० योगीन्द्र, देहाई-भई ।
 साधु० गुं० अतिमो व्यवहार उत्तम है, अक्षय्य
 सुन्दर ना० पुं० सन्त, साइकार ।
 साधुता० ना० स्त्री० साधुका फर्म या चोल ।
 साधुमत० ना० पुं० साधारण, आदर, गुं०
 अश्यामत ।
 साधुसाधु० शु० धन्य धन्य ।
 साधू० ना० पुं० साधु, गुं० उपायी, क्रियमाण
 साधक ।
 साध्य० शु० जतन से जो होवे, साधना के योग्य,
 संगी, जो प्रीति के योग्य है ।
 साध्वी० ना० स्त्री० पवित्रता स्त्री ।
 साग० ना० स्त्री० साय, धार ।

श्वाखियर के निकटपर्वत विशेष जिसपर सतीचर
 की मूर्ति है ।
 सनेह० ना० पु० तेल, गुं स्नेह ।
 सन्त० ना० पु० सायुविशेष, ईश्वरसेवन, गुं
 श्रद्धाधनी, भंती ।
 सन्तत० अग्र्य० निरन्तर, निरन्तर ।
 सन्तति० ना० स्त्री० सन्तान, वंश, पुत्रादि श्रो-
 ताद ।
 सन्तस० अ० पीडित, दुःखित, सतायागया, स-
 न्तापसहित ।
 सन्तरण० ना० पु० तरया, मुक्तहोना ।
 सन्ता० गुं विगडा ।
 सन्तान० ना० पु० वंश, लड़केबाले, कव्यवृत्त ।
 सन्ताप० ना० पु० शोक, पीडा, दुःख ।
 सन्तापित० गुं सन्तस, सतायागया, पीडित ।
 सन्तापी० गुं शोकसंपुक्त, उदास, दुःखी ।
 सन्ती० ना० पु० बदला, अग्र्य० बदले, पलदे,
 लिये ।
 सन्तुष्ट० गुं धीरजी, सन्तोषी, तृप्त, मनभरा,
 हर्षित ।
 सन्तोष० ना० पुं० आनन्द, धीरज, हर्ष, सुख ।
 सन्तोषी० गुं धीरजवाद्, आनन्दी, हर्षित ।
 सन्त्या० ना० स्त्री० पाठ, सवकरी ।
 सन्दर्श० ना० स्त्री० सण्डरी, सन्ती ।
 सन्दर्शन० ना० पुं० साक्षात्कार ।
 सन्दान० ना० पुं० दानदेना, रस्ती जा चौडा
 श्रदि के प्रायमें नाथते है, सुनारों की हथियार
 विशेष ।
 सन्दिग्ध० गुं सन्देहयुत, भ्रमीला ।
 सन्दिग्धभूत० ना० पुं० जिसके नीतने में स-
 न्देह हो ।
 सन्देशा० ना० पुं० समाचार, पत्र, पत्र
 सन्देशा० ना० पुं० समाचार, पत्र, पत्र
 सन्देस० ना० पुं० समाचार, पत्र, पत्र
 सन्देसा० ना० पुं० समाचार, पत्र, पत्र

सन्देसी० ना० पुं० दूत, पत्रगम्य ।
 सन्देह० ना० पुं० संशय, शंका, चिन्ता, शक ।
 सन्देहिक० गुं जिसमें सन्देह हो ।
 सन्देही० ना० पुं० संशयी, चिन्तायुक्त ।
 सन्दोह० ना० पुं० सपूह, बहुतायत ।
 सन्धान० ना० पुं० अन्वेषण, खोज, भांक, ल-
 गान, लगावट, मिलान ।
 सन्धानना० सं० किं० जोड़ना, लगाता, ताकना ।
 सन्धाना० ना० पुं० आचार ।
 सन्धि० ना० स्त्री० मेल, संयोग, मिलाप, द्विद-
 दर, मिला ।
 सन्ध्या० ना० स्त्री० सायंकाल, गोधूलि, संधि,
 त्रिकालमें उपासना समयका नाम, यथा सूर्यो-
 दय, मध्याह्न, सूर्यास्त ।
 सन्नाटा० ना० पुं० जलकी लहरोंका जो शब्द,
 वायु वा भूईं, से जो शब्द होता है ।
 सन्निकर्ष० ना० पुं० समीप, समीची, निक-
 सन्निधान० ना० पुं० रता, समीपहोना ।
 सन्निधि० ना० स्त्री० }
 सन्निपात० ना० पुं० रोगविशेष, सर्साप ।
 सन्निहित० गुं निकट, समीप, प्राप्त ।
 सन्मान० ना० पुं० आदर, सत्कार, मर्यादा ।
 सन्मानार्थ० गुं जिस शब्द से प्रतिष्ठाप्राई
 जाती है ।
 सन्मानी० गुं शिष्टाचारी, आदरी, सत्कारी ।
 सन्मुद० ना० पुं० हर्ष, प्रीति, आनन्दी, खुरी ।
 सन्प्राप्त० ना० पुं० चौथा आश्रम, दिगम्बर ।
 सन्न्यासी० ना० पुं० चौथा आश्रमी, दिगम्बरी ।
 सपदि० अग्र्य० तत्क्षण, तुरन्त, अभी ।
 सपना० ना० पुं० स्वप्न ।
 सपहव० गुं सहित पक्षव, पक्षेसहित ।
 सपक्ष० ना० पुं० सहायक, संगी, गुं पक्ष
 समेत ।
 सपीतक० ना० पुं० घोयाखुरई ।
 सपुत्र० ना० पुं० शत्रुके सहित ।
 सपुण्या० ना० स्त्री० सपुण्यकी ।

सानना० स० क्रि० मिलना, मिलाना, रूथना ।

सानन्द० गु० आनन्द सहित ।

सानधुस्नाना० स० क्रि० स्नान से सम्भाना ।

सानी० ना० स्त्री० भूसा खलीफी मिलौनी ।

सानुकूल० श० प्रसन्न, राजी, कृपालु ।

सान्वन० ना० पु० मिलाप ।

सान्निध्य० ना० पु० सामीप्य, समीपी ।

सापन० ना० पु० रोगविशेष जिससे बालकम
क्रम से गिरजाते हैं ।

सापरध० गु० जो दण्ड के योग्य कामकरे ।

सावर० ना० पु० बार्हस्पिणा वा उसका चर्म, सि-
द्धमन्त्र, चोरोंका हथियार जिससे संध लगते हैं,
शिवकृत मन्त्रराज ।

सायरमन्त्र० ना० पु० भाषा में मन्त्रविशेष ।

साम० ना० पु० तीसरा वेद, जो मूसल वा लाठी
या नेत आदि के अन्त में पीतल आदि ल-
गाते हैं ।

सामग्री० ना० स्त्री० वस्तु, सामान ।

सामज० ना० पु० समय, काल ।

सामध० ना० पु० समधारा, समधियों का
मिलना ।

सामर० ना० पु० लवणविशेष ।

सामर्थी० श० बलवान्, शक्तिमान् ।

सामर्थ्य० ना० स्त्री० सामर्थ, ताकत, शक्ति ।

सामा० ना० स्त्री० नानाप्रकार का भोजन,
सामग्री ।

सामाजिक० ना० पु० सभाआदि के काम में जो
चतुर व दिलवैया वा सहायक ।

सामान्य० श० साधारण, जातिवाचक ।

सामान्यतः० ना० स्त्री० सामान्यपन ।

सामी० ना० पु० साम, सामने, सामवेदी ।

सामीप्य० ना० पु० पास के योग्य, शक्तिविशेष
जिसमें इष्टदेव के पास बसता है ।

सामुद्रि० ना० पु० समुद्रखान ।

सामुद्रिक० ना० स्त्री० विद्याविशेष, मन्त्री
विद्या जिससे हस्तादि रेखा विचारते हैं ।

सामुहे० अव्य० सामने, समूह ।

साम्ना० ना० पु० सम्मुख ।

साम्ने० अव्य० सम्मुख, आगे ।

साम्भना० अव्य० सामना ।

सायक० ना० पु० बाण, तीर ।

सायंकाल० ना० पु० सन्ध्यासमय ।

सायुज्य० ना० पु० शक्तिविशेष जिसमें ईश्वर
लीन होता है ।

सार० ना० पु० खाद, लोहा, गूदा, हीर, मोल,
सर, वीर्य, धीरज, धर्म, वज्र, धर, व्रत,
काठका सार ।

सारक० ना० पु० बाँस, मैनापत्ती ।

सारंग० ना० पु० रागविशेष, मयूर, मेघ, सप-
मोर का शब्द, मृग, सूर्य, घोड़ा, चन्द्रमा,
हाथी, आकाश, पर्वत, सिंह, कुंज, पपीहा,
भेदक, दीपक, ज्योति, कोयल, चामर, बाल,
हंस, कुच, खंजन, कमल, कामदेव, धरती,
तालाव, सुन्दर, पत्नी, पानी, विष्णु का धनुष,
कपड़ा, राति, स्त्री, भ्रमर, मधुमाली, देश-
विशेष ।

सारंगिया० ना० पु० सारंगी वज्रनिहारा ।

सारंगी० ना० स्त्री० बाजाविशेष, किंगरी ।

सारथी० ना० पु० रथवान् ।

सारदा० ना० स्त्री० शारदा, सरस्वती, वाग्दे-
वता ।

सारना० स० क्रि० करना, निवाहना, निवहना,
सुधारना, पांसना, पूराकरना ।

सारस० ना० पु० पक्षीविशेष, कमल ।

सारसजात० ना० पु० ब्रह्मा ।

सारस्वत० ना० पु० देशविशेष, ब्राह्मण जाति
विशेष ।

सार० श० सम्पूर्ण, समस्त, साक्षा ।

सारथ्य० ना० पु० संक्षेप ।

सारालार० श० सत्यासत्य, सांचभूठ ।

सारिका० ना० स्त्री० मैनापत्ती ।

सारी० ना० स्त्री० मलाई, मैना, पत्ती, सारी,

सपूत० ना० पु० सपूत ।
 सपूता० } ना० स्त्री० सत्पुत्रता, सपूती ।
 सपूती० }
 सपेला० ना० पु० } सांपकानचा, छोटी
 सपोला० ना० पु० } सांप, जन्मता सांप
 सपोलिया० ना० स्त्री० } का मन्चा ।
 सप्त० गु० सात ७ ।
 सप्तर्षि० ना० स्त्री० सातर्षि अर्थात् अनाशुषि
 १ श्रुतिवृष्टि २ टीही ३ मूषक ४ शुक्र ५
 स्वसेन्य ६ परसेन्य ७ ।
 सप्तश्रृषि० ना० पु० सातश्रृषि अर्थात् कश्यप १
 श्रुति २ भरद्वाज ३ विश्वामित्र ४ गौतम ५
 जमदग्नि ६ बरिष्ठ ७ ।
 सप्तजिह्वाग्नि० ना० पु० अग्निकी सातजिह्वा
 अर्थात् काली १ कराली २ जयवती ३ रक्तव-
 णिका ४ ज्वलनी ५ धूमपुण्या ६ धूमरशिषी ७ ।
 सप्तति० गु० सत्तर ७० ।
 सप्तदश० गु० सत्तर १७ ।
 सप्तदेवपुरी० ना० स्त्री० सात देवपुरी अर्थात्
 विश्वपुरी १ शिवपुरी २ ब्रह्मपुरी ३ अमरावती ४
 अलकावती ५ वरुणावती ६ और यमपुरी ७ ।
 सप्तद्वीप० ना० पु० सातद्वीप अर्थात् जम्बू १
 म्ल २ कुरु ३ कौच ४ शाक ५ शालमलि ६
 पुष्कर ७ ।
 सप्तपाताल० ना० पु० सात पाताल अर्थात् अत-
 ल, वितल, रसातल, तलातल, महातल, पाताल,
 सुतल, ७ ।
 सप्तपुरी० ना० स्त्री० अयोध्या, मथुरा, माया,
 कारी, कांची, अवन्तिका, द्वारका ७ ।
 सप्तमं गु० सातवां ।
 सप्तमी० ना० स्त्री० सप्तमीतिथि, अधिकरण ।
 सप्तम्यन्तं गु० जिसके अन्तमें, सप्तमी वा प्र-
 त्यय है ।
 सप्तमुख्यअक्षरा० ना० स्त्री० श्रुतीची १ मं-

नका २ रम्भा ३ उर्वशी ४ तिलोत्तमा ५ सुफेरी ६
 मंडुषोषा ७ ।
 सप्तमुख्यषायु० ना० पु० सातमुख्यपवन अर्थात्
 आवाह, प्रवाह, अदुबह, संवह, दिनह, परावह,
 परिवाह ७ ।
 सप्तमुख्य० ना० पु० सात प्रकारका समर अर्थात्
 धनुष, चक्र, कुंत, खड्ग, गदा, छुरिका, मल ७ ।
 सप्तराज्यांग० ना० पु० राज्य के सात अंग अ-
 र्थात् स्वामी, मंत्री, देस, कोश, मित्र, गद,
 सैन्य, ७ ।
 सप्तविंशति० गु० सत्ताईस २७ ।
 सप्तविंशतितम० गु० सत्ताईसवां ।
 सप्तसिंधु० ना० पु० सात समुद्र अर्थात् लवणो
 द, रसोद, सुरानिधि, घृतीनिधि, दधिनिधि, क्षीर-
 निधि, जलनिधि ७ ।
 सप्तस्वर० ना० पु० सातस्वर अर्थात् गेहूँ, श्र-
 पम, गान्धार, मध्यम, धैवत, निषाद, पंचम ७ ।
 सप्तस्वर्ग० ना० पु० सातस्वर्ग अर्थात् भूलोक,
 भुवलोक, स्वलोक, महलोक, जनलोक, तपलोक,
 सत्यलोक ७ ।
 सप्ताश्व० ना० पु० सूयं ।
 सप्ताह० ना० पु० अठवारा, हफ्ताह ।
 सप्ति० ना० पु० षोडश, यथा वाग्निवाहार्वा, गंधर्व
 यह सैन्धव सप्तय इत्यमरः ।
 सफरी० ना० स्त्री० मत्स्य, मछली ।
 सब० गु० सर्व, सारा, ना० स्त्री० रात ।
 सयरस० ना० पु० जल, पानी ।
 सधल० गु० बलवान्, प्रौढ, पहलवान ।
 सवलता० } ना० स्त्री० बल, प्रौढता, पहल-
 सवलताई० } वानी ।
 सवेर० गु० समय से पहले, ठीक वा अच्छे
 समय ।
 सवेरा० ना० पु० भोर, प्रातःकाल, तड़का ।
 सवेरे० अव्य० तड़के, भोरे ।

जोरु की बहन ।
 साक० ना० पु० पक्षीविशेष ।
 साकूप्य० ना० पु० इष्ट का रूप बनजाना, घृष्टि-
 विशेष ।
 सार्ध० गु० जिसमें अर्थ पाया जावे, जो अर्थ
 समेत हो ।
 सार्धक० गु० सकल, अर्धवाला ।
 सार्वभौम० ना० पु० सार्वभूमि का राजा, कुबेर
 का हस्तीविशेष ।
 साल० ना० पु० काष्ठविशेष, कांटा, खेद, शाला,
 सियार ।
 सालतीसुत० ना० पु० जायफल ।
 सालन० ना० पु० तरकारी, खेदन ।
 सालनिर्यास० ना० पु० राल, गुग्गुलु ।
 सालना० स० कि० खेदना, बेचना, अ० कि०
 दुःखना, पीड़ित होना ।
 सालसा० ना० पु० श्रौतविशेष ।
 साला० ना० पु० पत्नीका भाई, शाला, ना० स्त्री०
 पिप्पली ।
 सालिग्राम० ना० पु० विष्णुरूपी पापान्तविशेष ।
 साली० ना० स्त्री० बीबीकी बहन ।
 सालू० ना० पु० सालवर्षे वसविशेष ।
 सालूक० ना० पु० जायफल ।
 सालोक्य० ना० पु० घृष्टिविशेष, इष्टदेव के
 लोक में वास पाना ।
 सालोत्तरी० ना० पु० घोड़ों का वैद्य ।
 सावक० ना० पु० बालक, बच्चा ।
 सावकाश० } ना० पु० अवकाश, सुवीता,
 सावकास० } प्रात, अन्तर, छुट्टी, फुरसत ।
 सावज० गु० वनैला, जंगलीजीव, मृग, ना० पु०
 अक्षर ।
 सावधान० गु० चौकस, सुर्ता, होशियार ।
 सावधानी० ना० स्त्री० चौकसाई, सुचेती ।
 सावन० ना० पु० श्रावण ।
 सावन्त० गु० रस, योधा, वीर ।
 सावन्ती० ना० स्त्री० समापन, नीरता, नहाडूरी ।

सावयव० गु० सांग, अवयव सहित ।
 सावर० ना० पु० सावर ।
 सावर्णि० ना० पु० दूसरामनुविशेष ।
 सावित्री० ना० स्त्री० माता, महतारी ।
 सास० ना० स्त्री० पत्नी या पतिकी माता ।
 सासन० ना० पु० शासना ।
 सासना० स० कि० ताड़ना, डाटना ।
 सासु० ना० स्त्री० सास ।
 साह० ना० पु० बनिया, महाजन, साधु ।
 साहचर्य० ना० पु० संगति, साथ ।
 साहन० ना० स्त्री० साहकी स्त्री ।
 साहनी० ना० स्त्री० सैन, कौज ।
 साहस० ना० पु० बरवस, जलदहार, पीरती,
 दादस, विनाविचार ।
 साहसी० गु० बरवसिया, निडर, वीर ।
 साहाय्य० ना० पु० मियता, प्रीति ।
 साहित्य० ना० पु० संगत, साथ ।
 साही० ना० पु० जन्तुविशेष जिसके समस्त शरीर
 में कांटा हों ।
 साहू } ना० पु० बड़ा महाजन ।
 साहूकार० }
 साहूकारी० व्यापार, देनलेन, महाजनी ।
 साक्षात्० अव्य० सामने, प्रत्यक्ष से ।
 साक्षात्कार० ना० पु० प्रत्यक्षहोना ।
 साक्षी० ना० स्त्री० गवाही, साक्षी, ना० पु०
 गवाह ।
 सिम्बल० ना० पु० सेमरवृक्ष ।
 सिवितिका० ना० स्त्री० सेव मेवा ।
 सिंसुपा० ना० पु० शीशमवृक्ष ।
 सिंह० ना० पु० मृगराज, अष्टमि का सूचक,
 देवीका वाहन, पांचवीं राशि विशेष ।
 सिंहद्वार० ना० पु० जिसद्वारमें सिंहका आकारहो,
 फटक ।
 सिहनाद० ना० पु० रणके समय में वीरों का

सवोतर० ग० सतीत ।
 सभय० ग० भयसमेत, भयभीत ।
 सभल० ना० पु० जग, य० हिमय, समत ।
 सभा० ना० स्त्री० कचहरी, मण्डली ।
 सभासद० ना० पु० दरवारी, सभा में बैठनेवाला
 वा विचार करनेवाला ।
 सभोत० ग० दराभवा, भययुत ।
 सभ्य० ना० पु० सभा के कार्य में जो सहायक
 हैं, गु० जो सभा के योग्य हैं ।
 सभ्रम० ना० पु० भूल, गु० भूल से भ्रम स-
 हित ।
 सम० गु० तुल्य, सार्व, बराबर, वासना विगिद्धिभंभ
 समकटियन्ध० ना० पु० पृथ्वी, कविबुद्धिभोग
 जो शीतकटिवन्ध और मध्यरेखा के उन्नीस
 अंश है ।
 समग्र० गु० समस्त, सारा ।
 समग्रता० ना० स्त्री० सम्पूर्णता ।
 समगा० ना० स्त्री० खिरहरी ।
 समगी० ना० स्त्री० मनीठ, लजारू ।
 समङ्ग० ना० स्त्री० ब्रह्म, ज्ञान, विचार ।
 समङ्गना० अ० कि० ब्रह्मगी, विचारना ।
 समङ्गवार० गु० विचारवान्, ध्यानी, ज्ञानी ।
 समङ्गाना० स० कि० बुझाना, जताना, बताना ।
 समङ्गती० } ना० स्त्री० समङ्गाने का नाम ।
 समङ्गवा० }
 समञ्जस० ना० पु० योग्यता, उचितता, गु०
 योग्य ।
 समता० ना० स्त्री० समगाव, एकता, बराबरी ।
 समदर्शी० गु० मध्यभावी, तुल्यदृष्टा, सबकी
 समजने ।
 समद्विवाह० गु० जिसकी दो भुजा तुल्य हैं ।
 समधिर्न० ना० स्त्री० अपने पुत्र का पुत्री
 की सात ।
 समधियाना० ना० पु० समधी का घर धराना ।
 समधी० ना० पु० अपने पुत्र का पुत्रीका सहर्ष,
 ग० सममुद्धि ।

समन्त० ना० पु० सहस्रवृत्त ।
 समन्वय० ना० पु० आपस में बहुतां जामिल ।
 समन्वित० गु० आपस में मिलित, संयुक्त ।
 समभाव० ना० पु० समता, बराबरी ।
 समय० ना० पु० काल, जत, अन्तर, पित्त,
 सावनास, कच्छेदिन ।
 समर० ना० पु० युद्ध, लड़ाई, रण, कामदेव ।
 समरस्स० ना० पु० वारस, बहादुरी ।
 समर्थ० गु० बलवान्, योग्य, हिम्मतवर ।
 समर्थी० गु० सामर्थी, ताकतवर ।
 समरण० ना० पु० संपिना, अपण, रानी, दन ।
 समर्पित० गु० सीधायता, अर्पित, त्यागित ।
 समल० गु० पापी, भेला ।
 समघाय० ना० पु० भांड, समुद्र, मित्रायशोचन
 में स्वयन्ध्रिशेष ।
 समशील० गु० तुल्यभाव, समभाव, समता ।
 समसूत्र० गु० सीधासूत ।
 समसूत्रपात० ना० पु० सीधासूतका पुड़ना-वा
 डालना ।
 समस्त० गु० सकल, सारा, सब ।
 समस्या० ना० स्त्री० समासार्थ, श्लोक के
 पूर्णार्थ एकदेशका कहना ।
 समक्ष० गु० साक्षात्, सामने ।
 समविबाहु० गु० जिस विभुज की तीनों भुजाय
 समान हों ।
 समा० ना० पु० समय, बहुतात, दिशा,
 मिलीप ।
 समाई० ना० स्त्री० सन्तोष, धैर्य, शक्ति ।
 समाहृत० ना० पु० पिस्तामवा ।
 समागत० ना० पु० संयोग, अवाह, पुड़व ।
 समागम० ना० पु० संयोग, मिलाप, अ-
 वाह ।
 समाचार० ना० पु० सन्देश, धृतांत, वृत्ती ।
 समाचारप्रत्र० ना० पु० चिट्ठी, अखबार ।

शब्द, सिंहका शब्द ।
 सिहनी० ना० स्त्री० सिंहकी स्त्री ।
 सिंहपौर० }
 सिंहपौरि० } ना० स्त्री० सिंहद्वार, खाड़ी ।
 सिंहपौल० }
 सिंहमुखी० ना० पु० वांस ।
 सिंहख० ना० पु० सिंहलद्वीप ।
 सिंहलक० ना० पु० पीतल ।
 सिंहलद्वीप० ना० पु० भरतारण्ड के दक्षिण में
 उपद्वीपविशेष ।
 सिंहासन० ना० पु० देवता और राजाओं का
 आसन, पाट, श्रेष्ठासन, तख्तशाही ।
 सिंहिका० ना० स्त्री० निशाचरीविशेष ।
 सिंकटा० ना० पु० ठिकरा ।
 सिकता० ना० स्त्री० सिक्ता, चालू, रेत ।
 सिकरी० }
 सिकली० } ना० स्त्री० कुण्डली, संकल ।
 सिख० ना० पु० शिष्य, नानकशाही, ना० स्त्री०
 सील ।
 सिखनावट० ना० स्त्री० शिखा, शिखारट ।
 सिखर० ना० पु० छीका, शिखर ।
 सिखरन० ना० पु० दही और युद्ध में मिलौली ।
 सिखलाना० स० कि० पढ़ाना, दिखलाना,
 बाटना, ताड़नकरना ।
 सिखा० ना० स्त्री० चौड़ी ।
 सिखावा० }
 सिखवना० } स० कि० सिखावना ।
 सिखिकरुठ० ना० पु० नीलाथोथा ।
 सिखरो० गु० सत्र, सगरा, समस्त ।
 सिखरौर० ना० पु० शुद्धवेरपुर ।
 सिगा० ना० पु० तुरही ।
 सिगार० ना० पु० शोभा, संजावट, आभरण,
 शृंगार ।
 सिगारना० स० कि० संवारना, शृंगारकरना ।
 सिगारिया गु० देवता का शृंगारकरनेहारा ।
 सिगौटी० ना० स्त्री० सींगसे बना हुआ घेंटा,

बैलके सींगपर भूषणविशेष ।
 सिंघाटा० ना० पु० पीषा जो जल में होता है वा
 उरीका फल, भूषणविशेष ।
 सिंघाण० ना० पु० नाकका मेल ।
 सिंघी० ना० स्त्री० बड़ी क्यारी ।
 सिंभाना० स० कि० पकाना ।
 सिंढ० ना० स्त्री० बीराहट, चौड़ापत ।
 सिंघन० ना० स्त्री० बावली, बौड़ही ।
 सिंघपन० ना० पु० बौड़हापन ।
 सिंघा० }
 सिंघी० } गु० बावला, बौड़हा ।
 सित० गु० श्वेत, सफ़ेद, उजला ।
 सितकरुठ० ना० पु० महादेवजी ।
 सितरी० ना० स्त्री० खेद, पसीना ।
 सिताम्भोज० ना० पु० सफ़ेदकमल, श्वेत-
 फल ।
 सिद्ध० ना० पु० देवतानामविशेष जो इन्द्र
 लोक में बसते हैं, राघु, अर्थात् जो अष्टासिद्धि के
 वरदा हैं गु० महात्मा, श्रेष्ठजन, कृतार्थ, पक्क,
 यना, लग्न, पूर्ण, कामिल, कर्षी ।
 सिद्धरूप० ना० पु० प्रथमही से निरुका रूप
 बनाहे, जो दूसरे से नहीं बना ।
 सिद्धान्त० ना० पु० वादी प्रतिवादी से निर्यात
 जो अर्थ, कौमुदीविशेष ।
 सिद्धान्तशिरोमणि० ना० स्त्री० ज्योतिष का
 ग्रन्थ विशेष ।
 सिद्धान्ती० ना० पु० मीमांसा का मतावलम्बी ।
 सिद्धि० ना० स्त्री० बौद्धिार्थ की प्राप्ति, देवता
 की पूजा वा तपस्या का फल, मन्त्रादि जपने से
 जो पराक्रम, उत्ते, शुद्धता, अविद्यादिक अर्थ,
 फल, कर्तित, करामात ।
 सिद्धिदा० ना० स्त्री० भगवती, गु० सिद्धि-
 दाता ।
 सिद्धिदाता० ना० पु० श्रीगणेशजी, गु० सिद्धि-
 देनेहारा ।
 सिद्धिरूपी० गु० जो अर्थात् सिद्धि है

समाज० ना० पु० सामंती, किचदरी, समूहः।
साध, संक्षेप ।
समाजी० ना० पु० मृत्युकोकं साधु जो ब्रजाने-
हारे समाज के बैठनेहारे ।
समाहर० ना० पु० सम्मान ।
समाधान० ना० पु० अकौता, अनिपट्या, -
मिलाप, शांति, चैन ।
समाधि० ना० स्त्री० परमात्माकी और एकाम-
चित्त बैठना, सुख, धिरता, शौरीकी अका,
स्थान जिसमें मृतकजनको गाड़ते हैं ।
समान० पु० तुल्य, एकता, मानयुत, ना० स्त्री०
समत, ना० पु० प्राणवायुविरोध ।
समानता० ना० स्त्री० समता ।
समानवर्ती० ना० पु० धर्मराज, पु० एकरस ।
समाना० अ० कि० अमाना, भविशानाना ।
समानान्तर० ना० पु० तुल्यान्तर, समवर्ती ।
समापन० ना० पु० समाप्ति ।
समाप्त० पु० जो हो चुका, जो पूरा हुआ ।
समालू० ना० पु० पौधाविशेष ।
समावेश० ना० पु० प्रवेश, समह ।
समास० ना० पु० दो तीनपदोंका एकपद के
रना, शब्दों को बंगाना ।
समासा० ना० स्त्री० सिरहटी ।
समितना० अ० कि० बद्धना, इकट्ठा होना ।
समिध० ना० स्त्री० होमने के लिये लकड़ी
इधन ।
समीकरण० } ना० पु० तुल्य करनोला,
समीकार० } मसविता ।
समीचीन० ना० पु० सचाई, पु० सचा, ठीक,
योग्य ।
समीप० गु० निकट, पास ।
समीपता० ना० स्त्री० निकटता ।
समीपी० पु० निकटवासी, पासवाला, ना० स्त्री०
समीपता ।

समीरण० ना० पु० समीरना, हवा चलना
समुचित० गु० यथायोग्य ।
समुच्चय० ना० पु० समूह, समह; वाक्यों का
योग ।
समुच्चयार्थक० गु० निससेशब्दों वा वाक्योंका
मिलाप होताहै ।
समुत्पादन० ना० पु० उत्साहन ।
समुदय० ना० पु० समुद्रोप ।
समुदाय० ना० पु० समूह, गिरोह, इकट्ठा ।
समुद्र० ना० पु० सागर, निधि ।
समुद्रफल० ना० पु० श्रौषधिविशेष ।
समुद्रफेन० ना० पु० समुद्रका फेन ।
समुद्राता० ना० स्त्री० जवाला ।
समुद्रान्त० अ० समुद्रतक ।
समुद्रसोख० ना० पु० श्रौषधिविशेष ।
समुद्रीय० पु० जो समुद्र का हो ।
समूचा० गु० पूरा, सम्पूर्ण ।
समूह० ना० पु० समूह, गिरोह, भाँडः (भाँडः
रुद्रिकी समूह गढ़ गढ़ में गयो, शुक्र मंत्र
शोधि शोधि हेम की जहाँ भयो, इति रामचन्द्रः
द्विकायाम् ।
समूख० पु० मूलसमेत, जड़समेत ।
समूह० ना० पु० भाँड, ढेर, मण्डली, बहुतात ।
समृद्धि० ना० स्त्री० बढ़ती ।
समे० ना० पु० समग्र ।
समेद० ना० स्त्री० संकोचन करनेके लिये
श्रौषधिविशेष, बटेर, सकाई ।
समेटना० स० कि० बंधना, संकोचना,
बद्धाकरण ।
समेत० अ० सहित, साथ ।
समोना० स० कि० समे पानी में टंडा पानी
मिलाना ।
समौ० ना० पु० समय ।
सम्पनि० } ना० स्त्री० धन, समृद्धि, धन्य,
सम्पत्ति० }

सिधाना० य० कि० दौड़ना, जाना, चला-
जाना ।

सिधारना० य० कि० चलाजाना, उठजाना,
सिधाना० } स० कि० सुधारना, ठीक करना ।

सिनक० ना० पु० रेंदा, पीटा, नेटा ।

सिनकना० स० कि० नाक भाड़ना ।

सिन्दुक० ना० पु० संभालू पीथा ।

सिन्दुवारक० ना० पु० संभालूपीथा ।

सिन्दूरक० ना० पु० वृष विशेष ।

सिन्दूर० ना० पु० लालवर्ण चूर्णविशेष जो
शियां मांगमें लगाती है ।

सिन्दु० ना० पु० समुद्र देश विशेष, नदी
विशेष ।

सिन्दुज० ना० पु० संभवलोनं, १४ रत्न ।

सिन्दुर० ना० पु० हाथी ।

सिन्दुरगामी० गु० गजगामी ।

सिपाह० ना० स्त्री० सेना, यह शब्द फ़ारसी का
है ।

सिपाहसालार० ना० पु० सेनापति, फ़ारसी
शब्द ।

सिपाही० ना० पु० पैदल, चपरासी, यह भी
शब्द फ़ारसी का है ।

सिम० ना० पु० मछली ।

सिमट० ना० स्त्री० संकोच, सिमेर ।

सिमटजाना० } य० कि० सिकुरना, बहुरना ।
सिमटना० }

सिमाना० ना० पु० सिमाना, धूरा ।

सिम्बल० ना० पु० समलवृत्त ।

सिय० ना० स्त्री० श्रीसीतानी ।

सियनि० ना० स्त्री० शीवनि ।

सियनिन्दक० ना० पु० रजक विशेष जो धयो-
ध्यापुर्त में बसता था और श्रीसीतानी को
खान्धन लगाया था ।

सियरा० य० टंटा, कचा ।

सियरी० ना० स्त्री० टंटा, कच्ची ।

सिया० ना० स्त्री० श्रीसीतानी ।

सियार० } ना० पु० शृंगाल, गीदड़ ।
सियाल० }

सिर० ना० पु० शिर मस्तक ।

सिरकी० ना० पु० सट्टीवस्तु विशेष जो
से बनती है ।

सिरकी० ना० स्त्री० सरकण्डाविशेष, सेंटा
ऊपरी भाग वा उसीकी बनीवस्तु जो पा
रोकने के लिये होती है ।

सिरखप० गु० मनचला ।

सिरखपी० ना० स्त्री० जोरिम, दाइस ।

सिरजन० ना० पु० रचाव, उत्पत्ति, बनार ।

सिरजनहार० ना० पु० ईश्वर, रचनेहार
उपजानेहार ।

सिरजना० स० कि० रचना, उत्पन्न, करने
बनाना ।

सिरजा० गु० बनाया हुआ, उपजाया गया ।

सिरसांग० य० गुच्छरनेहार, दगैत ।

सिरहाना० ना० पु० तकिया, ताइका, निघर
सिराही ।

सिरात० गु० टंटा, बीता ।

सिराना० स० कि० टंडाना, पहाना, पटाना,
व्यतीत करना ।

सिरानी० य० स्त्री० बीतगई, राटी भई ।

सिरिस० ना० पु० वृषविशेष, शिरिय ।

सिरोधी० ना० पु० कंठ, गला, गर्दन ।

सिल० ना० पु० शिला ।

सिलपट० गु० चौपट ।

सिलयट्टा० ना० पु० सिलका पट्टा ।

सिलवाना० स० कि० शिलाना ।

सिळा० ना० स्त्री० शिला, पापाण विशेष (निस
पर मसाला पीसते हैं ।

सिळाई० ना० स्त्री० शिलाने का फान या
पसा ।

सिळाजीत० ना० पु० परगन, श्रीप
विशेष ।

सम्पन्न० गु० परिपूर्ण, जो पूरा होयका; भाग्य-
वान्, भराहुआ।

सम्पर्क० ना० पु० सम्बन्ध, मिलावा; संयोग,
मैथुन

सम्पात० ना० पु० छुआवट, गिरना, स्पर्श।

सम्पाति० ना० पु० गिदविशेष।

सम्पादक० ना० पु० सम्पादन करने हारा।

सम्पादन० ना० पु० प्राप्ति।

सम्पादित० गु० प्राप्त।

सम्पुट० ना० पु० डन्ना, उड़ाव, बंधाव।

सम्पूर्णण० } परिपूर्ण, सारा, समस्त।
सम्पूर्ण० }

सम्प्रति० अव्य० अभी।

सम्प्रदान० ना० पु० चतुर्था, कारकविशेष जि-
सके लिये कर्ता किया सिद्धकरे।

सम्प्रदाय० ना० पु० परम्परा का धर्म।

सम्फुल्ल० गु० फूला विकसा।

सम्बद्ध० गु० संयुक्त, जो बांधागया, जो घेरा
गया।

सम्बन्ध० ना० पु० सम्पर्क, नाता, लगाव,
तुरु, इशारह, कारकविशेष, पछी।

सम्बन्धी० गु० नातेदार, रिश्तेदार, ना० पु०
गोथी, समधी।

सम्यर० ना० पु० दैत्यविशेष, सम्बल, पानीमैल।

सम्यरारि० ना० पु० कामदेव, प्रद्युम्नी।

सम्बल० ना० पु० जानना मार्ग का, दैत्य-
विशेष।

सम्बुक्क० } ना० पु० घोषा, कौडी, शंख।
सम्बूक्क० }

सम्बोधन० ना० पु० सम्बुल करने के लिये जो
शब्द यथा हे, भो, धीरजकरना।

सम्बलना० अ० कि० धंभना, सुधरना, सड़ा
होना।

सम्भव० ना० पु० योग्यता होनहार उद्भव, गु०
होने के योग्य।

सम्भवा० ना० स्त्री० गोरीचन।

सम्भार० } ना० पु० धंभाव, सुधाक, रसा।
सम्भाल० }

सम्भालना० स० कि० धंभना, सुधारना, रसा
करना।

सम्भावना० ना० स्त्री० होने की योग्यता,
दिया के शक्यर्थ नियमका अभिप्राय, इच्छा।

सम्भायनीय० गु० होनहार।

सम्भाषित० गु० बड़ामान्य।

सम्भाषण० ना० पु० बोलचाल, बातचीत।

सम्भूत० ना० पु० उत्पन्न, पैदा।

सम्भोग० ना० पु० मूल, हर्ष, स्त्री प्रसंग।

सम्भ्रम० ना० पु० आदर, सम्मान, उतावली,
डर, डबडबाहट।

सम्मत० } ना० स्त्री० इच्छा, स्वीकार, वि-
सम्मति० } चार, समानता, सलाह, राय।

सम्मोक० ना० पु० समर, युद्ध, रत्न।

सम्यक् अव्य० सय, योग्यता से, ठीक रीतिसे,
अर्थांतरह।

सयन० ना० पु० शयन, इशारह, संकेत।

सयान० ना० पु० चतुराई, प्रवीणता, छल।

सयाना० गु० चतुर, प्रवीण, छली, पक्का।

सर० ना० पु० ताल, कुण्ड, शर।

सरकण्डा० ना० पु० नरकविशेष।

सरकना० अ० कि० हटना, भागना।

सरकाना० स० कि० लिसकाना, भागना।

सरयू० ना० स्त्री० नदीविशेष।

सरट० ना० पु० गिरिगिड, गिरिगिदाना।

सरद० ना० पु० शरद ऋतु।

सरद० ना० पु० फलविशेष।

सरन० ना० स्त्री० शरण।

सरना० अ० कि० बनना, चलना, निकलना,
सड़ना, शरण।

सरनागत० ना० पु० शरणागत।

सिलवाना० स० क्रि० सिलवाना, तगाना ।
 सिलखारस० ना० पु० शिलाजीत ।
 सिल्ली० ना० स्त्री० पथरी, शाण ।
 सिल्वीमुख० ना० पु० बाण, भ्रमर ।
 सिवाना० ना० पु० सीमा, डोंडा, धूरा, हद्द ।
 सिविका० ना० स्त्री० पालकी विशेष ।
 सिष्ट० गु० बुद्धिमान्, अच्छा ।
 सिसकना० अ० क्रि० बिसरना ।
 सिसकी० ना० स्त्री० कृक ।
 सिस्न० ना० पु० सिंग, मदनांकुश ।
 सिहरा० ना० पु० मौर ।
 सिहराऊ० गु० थकाऊ, उचाट ।
 सिहराना० स० क्रि० थकना, उचाट करना,
 सहलाना ।
 सिहर्ना० अ० क्रि० कांपना ।
 सिहाना० अ० क्रि० प्रसन्नहोना, छुराहोना ।
 सीक० ना० स्त्री० तृणविशेष जिसकी झाड़
 बनती है ।
 सीकर० ना० पु० सीकरका फूल ।
 सीका० ना० पु० घर, छाँका ।
 सीकिया० गु० डण्डीरवान्, भारीदार, लहरिया,
 जेरिया ।
 सींग० ना० पु० शृङ्ग ।
 सींगड़ा० ना० पु० बारूद रखने का सींग ।
 सींगा० ना० पु० नरसिंगा ।
 सींगिया० ना० पु० विष विशेष ।
 सींगी० ना० स्त्री० छोटानरसिंगा, मधुखी विशेष,
 तोमड़ी ।
 सीन्न० ना० स्त्री० पानी की चाह ।
 सीचना० स० क्रि० सीचना, पाटना, पानीदेना ।
 सीचाह० ना० स्त्री० सीचने का पेंसा वा काम ।
 सीची० ना० स्त्री० सीचने का समय ।
 सीव० ना० पु० सीमा, मर्यादा ।
 सीकर० ना० पु० कन्दविशेष ।
 सीख० ना० स्त्री० शिला, पाठ, विद्या, ताड़ना,
 सिलताना ।

सीखना० स० क्रि० विद्याका उपार्जन करना,
 पाना ।
 सीचना० स० क्रि० सीचना, पानीदेना ।
 सीऊ० ना० पु० पौधाविशेष ।
 सीजना० अ० क्रि० रिसना, निकलना, उफना,
 उबलना ।
 सीटी० ना० स्त्री० छल से बजावट ।
 सीठ० ना० स्त्री० फोंग, सूद, छाना ।
 सीठना० ना० पु० } विनाह में गाली समेत गीत
 सीठनी० ना० स्त्री० } स्त्रियां गाती हैं ।
 सीठा० गु० नीरस, रसहीन, पतिला, असार,
 रोगह ।
 सीठी० ना० स्त्री० सीठ, सीटी ।
 सीढ़ी० ना० स्त्री० नसेनी, सोपान, आरोहण,
 चीनी ।
 सीत० ना० पु० शीत, ओस ।
 सीतरस० ना० पु० मुहपटका रोग ।
 सीतलचीनी० ना० स्त्री० औषधविशेष ।
 सीतलपार्टी० ना० स्त्री० चटाईविशेष ।
 सीतला० ना० स्त्री० माता, गोटी, चक्क ।
 सीता० ना० स्त्री० निधि, जमा, गंगा, श्रीजान-
 की जी ।
 सीताकुराड० ना० पु० मुंगेर के पास तीर्थ
 विशेष ।
 सीतांग० ना० पु० शीतांग, लकड़ा ।
 सीताफल० ना० पु० आता, लोका, कद्दू ।
 सीताश्रम० ना० पु० सीताका आश्रम ।
 सीदना० अ० क्रि० दुःखी होना, दुःखपाना ।
 सीधा० गु० सीधा, निचल, भोला, सरा, मुसा,
 ना० पु० भोजन की सामग्री ।
 सीधारे० ना० स्त्री० सोफ, मोलापन, खराई,
 सुधाई ।
 सीना० स० क्रि० तगना, तागना, टाकना,
 ठुरपना ।
 सीप० ना० स्त्री० धान विशेष जिसकी सुठली

सरणागतवत्सल० यु० शरणागतों पर जीव
दयालु अर्थात् ईश्वर ।
सरपट० ना० पु० बगलूट ।
सरपत० ना० पु० पतलो, पतावर, सैदा,
कण्डा ।
सरभ० ना० पु० बन्दर विशेष, अर्थ्य० शीघ्रता ।
सरल० गु० सीधा, साक्षात् साधारण, वासन्ती
पौधा विशेष ।
सरला० यु० सीधा, ऊंचा, दीर्घ ।
सरलाशिता० ना० स्त्री० निसीत ।
सरस्वरि० ना० स्त्री० बराबरी ।
सरस० यु० श्रेष्ठ, अधिक, बहुत, रससमेत ।
सरसई० ना० स्त्री० सरस्वती नदी ।
सरसाई० ना० स्त्री० अधिकई, बहुतात ।
सरसाना० अ० कि० बदना, अधिकहोना ।
सरसी० ना० स्त्री० तालाव ।
सरसी० ना० स्त्री० सर्प, राई विशेष ।
सरस्वती० ना० स्त्री० नदी विशेष, वाणी की
देवता और राग और विद्या की प्रतिपालक,
संस्कृत भाषा की बनाने वाली ।
सरा० ना० पु० शरान, चिता ।
सराई० ना० स्त्री० छोटसरा ।
सराप० ना० पु० शाप, आप ।
सरापना० स० कि० शापदेना ।
सरात्रक० ना० पु० जाति विशेष, जनी ।
सरावन० ना० पु० ईगा, पटेला, जिसको कि-
राकर सेत के देले तोड़ते हैं ।
सराह० ना० स्त्री० स्तुति, बड़ाई, महिमा ।
सराहना० स० कि० स्तुति करना, बड़ाईकरना ।
सरिगम० ना० पु० गात्र विद्या में स्वर बताने के
लिये पहिलापद ।
सरिणी० ना० स्त्री० गन्धपसारण ।
सरिते० ना० स्त्री० नदी ।
सरिता० ना० स्त्री० नदी ।
सरित्पति० ना० पु० समुद्र ।

सरिस० गु० बराबर, तुल्य ।
सरी० ना० स्त्री० विनाकसका शर, सरकण्डा
जिससे तीर बनाते हैं ।
सरीखा० यु० सदरा, समान, तुल्य ।
सरुज० गु० रोगी, मरीज ।
सरुट० } गु० क्रोधयुत, क्रोधसमेत ।
सरुप० }
सरुप० ना० पु० स्वरूप ।
सरुप्य० ना० पु० सारूप्य ।
सरेखा० ना० स्त्री० श्लेषा ।
सरेदा० ना० पु० काठ आदि जोड़ने के लिये
लासा ।
सरोज० ना० पु० कमल ।
सरोता० ना० पु० सुपारी काटने का हथियार ।
सरोवर० ना० पु० तालाव, तड़ाग ।
सरोप० गु० क्रोधयुत, रीष-सहित ।
सरोही० ना० स्त्री० संह विशेष ।
सर्करा० ना० स्त्री० साँड़, राकर, नाल, धूलि ।
सर्ग० ना० पु० स्वभाव, मोक्ष, उत्पत्ति ।
सर्ज्ज० } ना० पु० राल ।
सर्ज्जरस० }
सर्ज्जिका० ना० स्त्री० सर्ज्जी ।
सर्प० ना० पु० सर्प ।
सर्पदंष्ट्रा० ना० स्त्री० मेढ्रासिगी ।
सर्पपति० } ना० पु० शिवजी, नागराज ।
सर्पराज० }
सर्पारि० ना० पु० ग्योला, गरुड़, मयूर ।
सर्व० गु० सब, समस्त ना० पु० वृक्ष विशेष ।
सर्वकाल० ना० पु० नित्य, सदा, हमेशा ।
सर्वगत० गु० सर्वत्र, व्याप्त, सबजगह मौजूद ।
सर्वतोभद्र० ना० पु० नीबूवृक्ष, मण्डल विशेष ।
चारों कोण का मन्दिर वा राजघर जिस में
चार द्वार हैं ।
सर्वत्र० अर्थ्य० सबठौर, सबजगह ।
सर्वथा० अर्थ्य० सब विधि, सब प्रकार से ।

सीपी के समान होती है, सीपी ।

सीपसुत० ना० पु० मोती ।

सीपी० ना० स्त्री० जलमनुविशेष ।

सीमती० } ना० स्त्री० स्त्री, बाला ।

सीमन्ती० }
सीमा० ना० स्त्री० हृद, जाँहा, धूरा, मर्याद,
सिमाना, अवधि ।

सिय० } ना० स्त्री० धीजानकी जी ।

सिर० ना० पु० हल, खेती, निजकी ।

सीरपाणि० ना० पु० शीवलदेवजी ।

सीरा० गु० शीतल, ना० पु० मोहनभोग, शीरा ।

सील० ना० पु० शील ।

सीला० गु० शीला, शीतल, ना० पु० अन्न का
बीनना ।

सीच० ना० पु० सींच, मर्याद, सीम ।

सीचली० ना० पु० जातिविशेष ।

सीस० ना० पु० शीर्ष, शिर, शिखा ।

सीसक० } ना० पु० धातुविशेष ।

सीसा० }
सीसों० ना० पु० शीराम वृक्षविशेष ।

सु० अर्थ० इसका प्रयोग जिस शब्द के प्रथम में
हो उसके अर्थ में अधिकार वा भलाई वा
उन्नतता समझी जाती है यथा सुवृद्धि सुकर्म
आदि, और से यथा जाह्न अर्थात् जिस
से, सो ।

सुयाना० स० कि० महकाना ।

सुधावट० ना० पु० महक, गन्धि, वास ।

सुभ्रजन० ना० पु० अर्द्धा अंजन, सिद्धान्त ।

सुभ्रर० ना० पु० शरर ।

सुभ्रार० ना० पु० रसोदयां, वावर्ची, रोटी
करनेहारा ।

सुभ्रसिन० ना० स्त्री० मान्य, नातेदारकी स्त्री ।

सुकचाना० अ० कि० डरना, संकोचितहोना ।

सुकटा० गु० सूता, दुबला ।

सुकटी० गु० स्त्री० दुबल, दुबली, सूती ।

सुकडना० अ० कि० सिकुडना, बडरना,
समिटना ।

सुकपटक० ना० पु० पियडलशूर ।

सुकंठ० ना० पु० समीप, गु० अर्द्धागला ।

सुकनाश० ना० पु० स्थानावृष्ट ।

सुकर० गु० सहज, करने के योग्य ।

सुकवार० गु० कोमल, निर्मल ।

सुकसारण० ना० पु० रावण के दूत ।

सुकाल० ना० पु० अर्द्धीश्रुत, बहुलात, अर्द्धा
समय ढेर ।

सुकान्टक० ना० पु० करेला तरकारी ।

सुकुचना० अ० कि सुकचाना ।

सुकुमार० गु० सुकवार, नर्म, कममिहन्त,
ना० पु० चम्पा, केला, गन्ना, बालक ।

सुकृत० ना० पु० भलाई, पुण्य, कीर्ति, सवाव,
गु० अर्द्धी रीति से किया गया, अर्द्धा काम ।

सुकृती० गु० पुण्यवान, भाग्यवान, धर्मात्मा,
दाता ।

सुकृत० ना० पु० दक्षजातिका देवताविशेष ।

सुकृतसुता० ना० स्त्री० ताड़का निशाचरी ।

सुकेशी० ना० स्त्री० अप्सराविशेष ।

सुख० ना० पु० चैन, कल, सन्तोष, आनन्द ।

सुखचैन० ना० पु० विश्राम, साधकारा ।

सुखतला० ना० पु० जूते में दूसरातला ।

सुखद० गु० सुखदायक, अर्द्धा ।

सुखदर्शन० ना० पु० पीडाविशेष जिसका रस
कान में पीडा के समय डालते हैं ।

सुखदाता० गु० सुख देनेहारा ।

सुखदान० ना० पु० सुख का दान ।

सुखदानी० } गु० सुख देनेहारा ।

सुखदायक० }
सुखदास० ना० पु० धानकी एक जाति ।

सुखदेव० ना० पु० देवताका सुख ।

सुखपाज० ना० पु० पालकी विशेष ।

सुखपूर्वक० अर्थ० सुख से ।

सुखमा० ना० स्त्री० शोभा, कान्ति, चमक ।

सर्वदा० अर्थ० सदा, हमेशा, नित्य, ...
सर्वनाम० ना० पु० सर्व विरव्यादि पैंतीस शब्द,
वह शब्द जो संज्ञाका आदेशाहो।

सर्वनाश० ना० पु० सत्यानाश।

सर्वनाशक० अ० सबका नाश करनेहारा।

सर्वभक्त० } ना० पु० सब कुछ खानेवाला
सर्वभक्षी० } सभीगी, धर्महीन, भ्रष्ट।

सर्वभक्त० ना० स्त्री० बकरी।

सर्वमंगला० ना० स्त्री० भवानी, पार्वती, दुर्गा।

सर्वमय० गु० जो सर्वत्र फैल गयाहो; सम्पूर्ण।

सर्वव्यापक० } गु० सर्वत्र पहुंचनेहारा।
सर्वव्यापी० }

सर्वस० }
सर्वसु० } ना० पु० सम्पूर्णद्रव्य, सर्वसम्पदा।
सर्वस्व० }

सर्वज्ञ० } ना० पु० श्रीविष्णुनारायण;
सर्वज्ञानी० } श्रीशिवजी, गु० सबका जानने

हारा।

सर्वाङ्ग० ना० पु० सारा शरीर, मत विशेष; सन-

मतोंका सारार्थ धर्म।

सर्वाङ्गी० गु० सर्वांग की ज्ञाता वा कारक।

सर्वापी० ना० स्त्री० श्रीपार्वती।

सर्वाभोष्ट० ना० पु० सब मनोवृत्ति और सकल

इच्छा।

सर्वोपरि० अर्थ० सब के ऊपर।

सर्वोपध० ना० स्त्री० जयमार्ती, पूरा इत्यादि

दरा शोषध।

सर्पप० ना० पु० सरसों।

सलकी० ना० स्त्री० कमलकी जड़।

सलज्ज० गु० लज्जयुक्त, लज्जासहित।

सलना० ना० पु० मोती, बाहुबाहुकी छोटी,

अ० कि० बिदना, गड़ना।

सलभ० ना० पु० पतंगा, टींडी, टिंडी, शलभ।

सलसलाना० अ० कि० सरसराना।

सलाई० } ना० स्त्री० शलाका।
सलाका० }

सलिल० ना० पु० जल, पानी।

सल्लो० ना० स्त्री० सावन की पूनी जिसमें

राखी बांधते हैं।

सल्लप० ना० पु० थोड़ासा।

सल्लपी० ना० पु० बिल्व, बेल।

सल्लोन० गु० खोत सहित, क्योला, देशोत्पन्न

विशेष, नमकीन।

सल्लोना० गु० सारा, सांवाला, स्वादिक।

सल्लोनी० गु० रुचक, स्वादिक, सुन्दर।

सल्लकी० ना० स्त्री० पशु विशेष जिसके शरीर

शरीर में कांटे होते हैं, साही, सेही।

सल्लभ० ना० पु० मोटा कपड़ा विशेष।

सल्लू० ना० पु० चमड़े का टुकड़ा जिससे जूता

आदि सीते हैं, सर्प विशेष।

सल्लो० गु० स्त्री० बोटली, बी।

सल्लति० ना० स्त्री० एक मनुष्यकी दो बीवियों में

से एक दूसरे की सल्लति कहती है।

सल्लर० ना० पु० भोल, कील।

सल्लरस० ना० पु० जल, पानी।

सल्लरी० ना० स्त्री० भोलिनी विशेष जिसके

फल रामचन्द्रने खाये थे।

सल्लर्य० गु० एक जातिका, एकरीगका, सादर्य,

समानवर्ष।

सल्लल० गु० सबल।

सल्ला० गु० जिस गिनतीके प्रथम में संयुक्त होवे

उत्तम चौथाशब्दवि यथा सल्लादी, २३।

सल्लाई० ना० पु० जयपुरके राजाकी पदवी।

सल्लाचना० स० कि० जांचना, परखना।

सल्लाया० गु० एक और एककी चौथाई।

सल्लार० ना० पु० अरुणवार, शुद्धचंद्र।

सल्लारी० ना० स्त्री० चंदती, बाहने।

सल्लिकार० गु० जिसमें कुछ बदल हुई।

सल्लिता० ना० पु० सर्व।

सल्लीय्य० गु० बीज समेत।

सल्लैया० गु० सवाया, ना० पु० छन्द विशेष,

बांठ जो एकसेर और पावभर का होता है।

सुखलानां० स० क्रि० सुखानां, जलानां
 सुखवक्त्रा० गु० सुखदेवी कहनेहारा ।
 सुखाना० स० क्रि० सुखलानां ।
 सुखारी० गु० आनन्द, सुरा, आनन्दित
 सुखाला० गु० सहज ।
 सुखासन० ना० पु० सुखपाल ।
 सुखित० गु० आनन्दित, चैन से सुक ।
 सुखिया० } गु० आनन्दित, चैनी, सुरी,
 सुखी० } सन्तोषी ।
 सुखेन० ना० पु० सुख से, वैद्यविशेष जो लंका
 में धन्वन्तरिका पूतथा ।
 सुखेनी० ना० स्त्री० काला निसोत और बड़ा
 कराँदा ।
 सुगज० ना० पु० वानर विशेष जो रामदल में
 था, गु० अञ्जाहाथी ।
 सुगन्धक० ना० पु० पुहकरमूल ।
 सुगन्धवन्धु० ना० पु० होम, यज्ञ ।
 सुगन्धि० ना० स्त्री० भली वास महक, गु०
 महकीला ।
 सुगन्धिक० ना० पु० कालानीरा ।
 सुगम० गु० जाने के योग्य, चढ़ने के योग्य, सहल,
 सहज, करने के योग्य, भला ।
 सुगरई० ना० स्त्री० रागिनीविशेष ।
 सुगाना० अ० क्रि० शककरना, चित्तदोड़ाना,
 स० क्रि० लगाना ।
 सुग्रीव० ना० पु० वानराका राजाविशेष, श्रीकृष्ण
 के रथका एकघोड़ा विशेष, गु० अञ्जा कण्ठ ।
 सुघटित० गु० अञ्जा बनायागया, पूराभया ।
 सुघड० गु० सुडोल, सुशाल, सुन्दर ।
 सुघडई० ना० स्त्री० सुशीलता, सुन्दरता ।
 सुघाट० ना० पु० भलाघाट, अञ्जाडोल, सरूप ।
 सुच० गु० शुच, कंची, निर्मल ।
 सुचक्र० गु० सोची, सुचेता, चौकस ।
 सुचरित्रा० ना० स्त्री० पतिव्रता ।
 सुचित० } गु० चौकस, चिन्तारहित, धन्ध से
 सुचित० } साह्त, थिर, विनालटके

सुचिन्तित० गु० अतिविचार, अञ्जा, मंगल ।
 सुचेत० गु० सुची, चौकस, होशियार ।
 सुजन० गु० सज्जन, भली, आदरी, साधु ।
 सुजज्ञी० गु० प्रतिष्ठित, कीर्तिमान् ।
 सुज्ञान० गु० प्रवीण, शानी, चतुर, बुद्धिमान् ।
 सुज्ञानी० स० क्रि० फुलाना ।
 सुभाना० स० क्रि० दिखलाना, समझना ।
 सुट्टुन० ना० स्त्री० लठ, छड़ी ।
 सुठाम० गु० अञ्जामकान ।
 सुठि० ना० स्त्री० सौंठि, अञ्ज्य अति, निहायत,
 बहुत, अधिक ।
 सुडकी० ना० स्त्री० गुड़ी की डोरी; अचानक से
 दीलना ।
 सुडप० ना० स्त्री० सुतकी, घोट ।
 सुडपना० अ० क्रि० सुतकना, चाटना, चूसना ।
 सुडकना० स० क्रि० सुटकना, लीलना ।
 सुडौल० } गु० सुन्दर, सुधरा ।
 सुदय० }
 सुदाल० }
 सुरिड० ना० स्त्री० हाथी की सूंड, सुंड ।
 सुरएडी० ना० स्त्री० पिपली, विपरी ।
 सुत० ना० पु० लडका, बेटा ।
 सुतरा० ना० पु० कड़ा जो हाथ में पहनते हैं ।
 सुता० ना० स्त्री० बेटा, पुत्री ।
 सुतान० ना० पु० सुतका बहुतचन ।
 सुतार० ना० पु० बड़े, रामग, घात, दाव ।
 सुतारी० ना० स्त्री० सुधा, सुना ।
 सुतीक्ष्ण० ना० पु० सुनिविशेष ।
 सुतुष्टि० ना० स्त्री० कला चन्द्रमाकी विशेष ।
 सुत्राम० ना० पु० इन्द्र ।
 सुथन० ना० पु० तम्बान, पायजामा ।
 सुथनी० ना० स्त्री० कन्दविशेष ।
 सुथरा० गु० अञ्जा, सुन्दर, अठ्ठी, ना० पु०
 नाथानानक का एक शिष्य ।
 सुथराई० ना० स्त्री० सुन्दरता, भलाई ।
 सुथरासाही० ना० पु० भिडुकविशेष ।

सुयज्ञ० } ना० पु० अश्वी स्थान, खनमकान ।
 सुथान० } ना० पु० अश्वी स्थान, खनमकान ।
 सुदती० } ना० स्त्री० वह स्त्री जिसके दोते
 सुदन्ती० } अश्वे होंवे, अश्व हाथी ।
 सुदर्शन० ना० पु० श्री विष्णु के चक्र का नाम,
 वर्षाविशेष जिसको गुलाबजामुन कहते हैं, नाम
 एकवर्ण का है, य० दिलनीट ।
 सुदक्षिणा० ना० स्त्री० रागादिलीपकी स्त्री का
 नाम, अश्वी अपूर्वदक्षिणा वा दान ।
 सुदामा० ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्र का पुत्रबन्धु ।
 सुदी० ना० स्त्री० उजियाला पात ।
 सुदुर्लभ० य० अत्यन्त दुर्लभ ।
 सुदृश्य० य० सुंदर, दिलनीट ।
 सुदृष्टि० ना० स्त्री० अश्वीदृष्टि ना० पु० निद्र
 पत्नी, य० विज्ञानी ।
 सुदेश० ना० पु० अश्वीदेश, य० श्रमा, सुंदर,
 नेक ।
 सुध० ना० स्त्री० स्मरण, चेत, सधि, य० शुद्ध ।
 सुधवुध० ना० स्त्री० चेत, परिचान, वृक्ष ।
 सुधरना० अ० कि० बनना, संभलना, सजना ।
 सुधर्म० ना० पु० सत्यधर्म, अश्वधर्म ।
 सुधर्मा० ना० स्त्री० देवसभा, सरसमाग ।
 सुधा० ना० स्त्री० अमृत, जल ।
 सुधा० अश्व० समेत, सहित ।
 सुधांशु० }
 सुधाकर० } ना० पु० चन्द्रमा ।
 सुधाघर० }
 सुधाना० स० कि० चिताना, स्मरण, देना ।
 सुधाटना० स० कि० संवारना, बनाना, सतना ।
 सुधावास० ना० पु० चन्द्रमा, खारफला ।
 सुधि० ना० स्त्री० स्मरण, चेत, प्राप्ति, सुन्दर ।
 सुधी० य० सुबुद्धि, प्रखिल ।
 सुन० गु० सत्य ।
 सुनकातर० ना० पु० सर्पविशेष ।
 सुनधहरी० ना० स्त्री० रोगविशेष ।

सुनयना० य० अश्वी आर्खोवाली ना० स्त्री०
 श्रीजातकीमीकी माता ।
 सुनसर० ना० पु० भूषणविशेष ।
 सुनसान० य० उपचाप, उनाइ ।
 सुनहरा० य० सुनहला, सोनिका ।
 सुनाना० स० कि० जताना, बतलाना, कहना,
 समझाना ।
 सुनाट० ना० स्त्री० सुनाहट, मीन ।
 सुनार० ना पु० स्वर्णकार, सोनार ।
 सुनारिन्० ना० स्त्री० सुनार की स्त्री ।
 सुनारी० ना० स्त्री० सोनार का काम, रूपवती,
 य० प्रवीण, चतुर ।
 सुनावनि० } ना० स्त्री० विदेश में भेरेका
 सुनावनी० } समाचार ।
 सुनियांस० ना० पु० जिननावृक्ष ।
 सुनीति० ना० स्त्री० भली रीति, शिष्टाचार ।
 सुन्दर० य० सु रूप, सुबैल, अश्वी, भला ।
 सुन्दरता० ना० स्त्री० सुपराई, भलाई ।
 सुन्दरी० ना० स्त्री० स्त्री, सुंदर स्त्री, अश्वी ।
 सुज्ञा० स० कि० कान धरना, श्रवण करना ।
 सुपत्र० य० जो अश्वी विधि से पत्रजावे ।
 सुपट० ना० पु० अश्वी वस्त्र ।
 सुपंध० ना० पु० अश्वीमार्ग ।
 सुपर्व० ना० पु० गंगादि का नहान ।
 सुपक्ष० ना० पु० संधापक्ष, युक्तपक्ष ।
 सुपक्षी० गु० अश्वी पक्ष करनेवाला, ससहा-
 यक ।
 सुपात्र० गु० योग्य, भलामानस ।
 सुपारी० ना० स्त्री० पूगीकल, डली ।
 सुपास० ना० पु० धाराम, सुवीता, सुत ।
 सुपुत्र० } य० योग्य पुत्र, भला पुत्र, पुत्र,
 सुपूत० } आत्माकारी पुत्र ।
 सुस० ना० पु० निद्रा, य० मृता, निद्रित ।
 सुसोत्थित० य० ज़ाद से मङ्गलदायक उठा ।
 सुममा० ना० स्त्री० परमाक ।
 सुप्रलाप० ना० पु० सुप्रचन, अश्वीनातचित ।

जो कुछ दिताई देता है ।
 स्वप्रकथा० ना० स्त्री० स्वप्रका वृत्ति, संसार
 स्वप्रफल० ना० पु० तावीर खाना, स्वप्रकाशमे
 स्वप्रचक्रला० ना० स्त्री० तेजबल ।
 स्वप्रकाश० गु० जो आपही प्रकाश वा प्रका-
 शित है ।
 स्वभाव० ना० पु० चरित्र, प्रकृति, आदत्त ।
 स्वयंसिद्ध० ना० स्त्री० सिद्धरूपी, जो आपही
 सिद्ध ।
 स्वयम्बर० ना० पु० सीका निज इच्छावत्वर
 करलेना, समाज विशेष जहां कन्या निजवर
 हुंदती है ।
 स्वयम्भू० ना० पु० प्रभा ।
 स्वर० ना० पु० शब्द, धुनि, स्वास और अका-
 रादि १६ वर्ण ।
 स्वरपणिनी० ना० स्त्री० गीती, पौषा ।
 स्वराहया० ना० स्त्री० अजमोद ।
 स्वरूप० ना० पु० अपनारूप, समानता, व्यक्ति ।
 स्वर्गपताली० ना० पु० भेगा, डेरा ।
 स्वर्गाय० } गु० जो स्वर्ग का है ।
 स्वर्ग्य० }
 स्वर्ण० ना० पु० सुवर्ण, कनक, सोना ।
 स्वर्णपर्णी० ना० स्त्री० किरवाली ।
 स्वर्णमुद्रा० ना० पु० अंशरथी, सुहर ।
 स्वर्णवर्ण० ना० पु० गेरू ।
 स्वर्णवर्णा० ना० स्त्री० दाकहल्दी ।
 स्वर्णसौ० } ना० स्त्री० किरवाली ।
 स्वर्णस्थलया० }
 स्वल्प० गु० अत्यन्त छोटा, थोडा, ना० पु०
 गौदड़ ।
 स्वल्परुन्द० ना० पु० कसेरू ।
 स्वल्पाहार० ना० पु० थोडा आहार, कमलांग ।
 स्ववर्ग० ना० पु० अपनावर्ग ।
 स्वर्गोक्त० गु० अपनेवर्गका कथितस्थान ।

स्ववर्ण० ना० पु० निजगोत्र, अस्नावर्ण ।
 स्ववर्णी० गु० निजगोत्री, एक जातिका ।
 स्ववश० ना० पु० स्वाधीन, स्वतंत्र, निजवशा ।
 स्वसेवक० ना० पु० अपना सेवक ।
 स्वसेव्य० गु० आत्मपूजक ।
 स्वस्ति० अव्य० मंगल, कल्याण, तथास्तु ।
 स्वस्तिवाचन० ना० पु० शांतिवाक्य, कर्मके आदि
 में व्यवहार विशेष ।
 स्वस्वामिभाव० गु० स्वामी और उसकी वस्तु
 का सम्बन्ध ।
 स्वाई० } ना० पु० स्वामी, मालिक ।
 स्वाई० }
 स्वांग० ना० पु० भाँडैती, तमाशा ।
 स्वांगी० ना० पु० स्वांग वगैरेहार ।
 स्वागत० ना० पु० कुशल, वेम, मित्रानुपूजना,
 स्वाति० } ना० स्त्री० प्रन्दहवां नक्षत्र ।
 स्वाती० }
 स्वाद० ना० पु० स्वाद, रस, मजह, मधुक-
 कही ।
 स्वादष्ट० ना० पु० गोखरू ।
 स्वादक० } गु० जिसमें स्वाद है, भीठा
 स्वादिष्ट० } स्वाद ।
 स्वादी० गु० स्वाद करनेहार, जिसमें स्वाद है।
 ना० पु० अंगूर ।
 स्वादु० गु० भीठा स्वादिष्ट, स्वाद ।
 स्वादुकरष्टक० ना० पु० गोखरू ।
 स्वादुपुष्पिका० ना० स्त्री० दुही पौधा ।
 स्वादुमा० ना० स्त्री० काकाली ।
 स्वाधिष्ठान० ना० पु० चक्र विशेष ।
 स्वाधीन० गु० स्वतंत्र, निजवशा, पुदः पुतः
 तार ।
 स्वाधीनता० } ना० स्त्री० स्वतन्त्रता ।
 स्वाधीनी० }
 स्वामाधिक० गु० जो स्वामाव स है, प्रकृती
 जन्मी ।
 स्वामिकांति० ना० पु० शिवजीके पत्रविशेष ।

सुफल० गु० अर्द्धफल देता है; काम ह्म
उपार्जनी, पूरा, ना० पु० अर्द्धफल; सिद्धि ।

सुफला० ना० स्त्री० पिण्डसञ्चरः ।

सुवट० ना० पु० सङ्क, अर्द्धा-मार्गः ।

सुभग० गु० सुन्दर, अर्द्धा भाग्यः ।

सुभगा० ना० स्त्री० जिस स्त्री का अपति बहुत
प्रेमकरे, जो स्त्री बहुत पुत्र जन्मावे, सुहागिन ।

सुमट० } ना० पु० योधां, बंद, बहादुर, बल-
सुभट्ट० } वान्, शूर ।

सुभार्गी० गु० भाग्यवान्; नैकनारी ।

सुभार्य० ना० पु० अर्द्धाभाग, नैकवर्ती ।

सुभीता० ना० पु० सुवीता, सावकाश ।

सुभुज० ना० पु० सुबाहु, दैत्यविशेषः ।

सुमति० ना० स्त्री० भलमनसी, सच्चयुष, सुन्दर
बुद्धि, ना० पु० चन्द्रविशेष, राजा जनकका
दिसौधी ।

सुमन० ना० पु० गह्वर्यस्य; धरुते, पुष्पविशेष
गु० जिसका मन शुद्धहो; शालिवाण ।

सुमनसं० ना० पु० देवता, फूल, वसन्त ।

सुमना० ना० स्त्री० मालती, सुदिता, स्त्री, राति,
अनेकार्थे यथा (सुमना कहिये मालती सुमना
सुदिता तीय)

सुमनासुत० ना० पु० फुल्ल आदि उवटन ।

सुमन्त० ना० पु० राजाद्वाररथका मन्त्रीविशेष ।

सुमन्त्र० ना० पु० अर्द्धामन्त्र, नैकसलाह; अर्द्धा
मता ।

सुमरना० स० क्रि० स्मरण करना, नामलेना ।

सुमरन० ना० पु० स्मरण, चेत, स्मृति, समझौती,
सुमरनी ।

सुमित्र० ना० पु० सूर्य, अर्द्धामित्र ।

सुमित्रा० ना० स्त्री० लक्ष्मणजी की माता ।

सुमिल० गु० चिकनी, चिकनी ।

सुसृति० ना० स्त्री० स्मृति ।

सुमेरु० ना० पु० देवताओं के मरनि का पर्वत
विशेष; क्वीतिप में उत्तर ध्रुव ।

सुमेल० गु० योगमिलनसार, अर्द्धामेल ।

सुयश० } ना० पु० सुख्याति, नैकनामी ।
सुयशः० }

सुयोग० गु० अर्द्धा योग ।

सुर० ना० पु० देवता, स्वरः ।

सुरआपगा० ना० स्त्री० श्रीगंगाजी, रामचन्द्र-
कायां यथा. (उपवीत, उच्चवलशोभिने उर
देसियोवरनेसुवे, सुरआपगातपसिधु में जन सुवेत
श्रीदशेश्रवे)

सुरञ्चपि० ना० पु० सुरपि, नारदजी ।

सुरकना० स० क्रि० सुकना ।

सुरकुक० ना० पु० माणिक ।

सुरगन्धज० ना० पु० पतंग वृक्ष ।

सुरगन्धनी० ना० स्त्री० स्वर्णकेतकी ।

सुरगुरु० ना० पु० बृहस्पति ।

सुरंग० ना० पु० संध, धद, ईशुर, अर्द्धरंग ।

सुरचाप० ना० पु० इन्द्रधनुष जो मेघकी वृद्धा
पर सूर्यकी किरणें पड़ने से प्रकटता है ।

सुरत० ना० स्त्री० स्मृति, मेधुन ।

सुरता० गु० सुरतीला ।

सुरती० ना० स्त्री० तमाकू खाने की ।

सुरतीला० गु० विचारवान्, ध्यानी, चौकसी ।

सुरथ० ना० पु० राजाविशेष, अर्द्धारथ ।

सुरदम० ना० पु० देवदाह, कल्पवृक्ष ।

सुरपति० ना० पु० इन्द्र ।

सुरमि० ना० स्त्री० सुगंधि, महक, वसन्तश्रुतः
गाय, ना० पु० जायफल, मृग, तेल, किला ।

सुरमोग० ना० पु० अमृत ।

सुरमणि० ना० पु० चिन्तामणि, इन्द्र ।

सुरमा० ना० पु० अंजन, यहेशन्दकारसीका है ।

सुरमुनि० ना० पु० नारदमुनि ।

सुरसृत्तिका० ना० स्त्री० फटकरी ।

सुरराज० ना० पु० इन्द्र ।

सुररुख० ना० पु० मंदारवृक्ष, कल्पवृक्ष ।

सुररपि० ना० पु० नारदजी ।

सुरवीथी० ना० स्त्री० देवभागी ।

स्वामित्व० ना० पु० अधिकार, प्रभुता, मा-
खिकी ।

स्वामी० ना० पु० प्रभु, राजा, मालिक, शरदेव,
पति ।

स्वाराम० ना० पु० निज, उपवन, अपनावाता ।

स्वार्थ० ना० पु० संसारिक काम, संसार की
इच्छा, निज अर्थ वा लाभ, आत्मपालन ।

स्वार्थिक० गु० जो अपने को पूराकरे, काम का
कृतार्थ ।

स्वार्थी० गु० आत्मपालक, अपनामतसनी ।

स्वास० } ना० स्त्री० स्वास ।
स्वासा० }

स्वाहा० ना० स्त्री० अग्निदेवकी स्त्री, जोहवनादि
में मन्त्र पूरे होने के पीछे बोलते हैं ।

स्वीकार० } ना० पु० अंगीकार, कबूल, मंजूर ।
स्वीकृत० }

स्वेच्छक० गु० स्वाधीन, हठीला ।

स्वेच्छा० ना० स्त्री० स्वाधीनता, हठ, निजेच्छा ।

स्वेच्छाचारी० गु० स्वाधीनवर्ती, निजइच्छा
समान कारक ।

स्वेत० गु० स्वेत, सफ़ेद ।

स्वेद० ना० पु० प्रलेद, पसीना, तप ।

स्वेदज० ना० पु० जो पसीना से अपने यथा
जूवा, चीलहादि ।

स्वैरण० ना० गु० स्वाधीन, परदारिक ।

स्वैरिणी० ना० स्त्री० कुलटा, दिनाल ।

स्वैरी० गु० स्वाधीन, स्वैरिन, खुदमुस्तार ।

स्वोपकारी० गु० निज उपकारी, स्वार्थी ।

[ह]

हंकाना० स० कि० निकालना, हांकना, चलाना ।

हंकार० ना० पु० हांक, पुकार, चिन्हाइट ।

हंकारना० स० कि० हांकना, पुकारना, पाल
चदाना ।

हंफैल० गु० हांफनेहारा ।

हंस० ना० पु० पक्षी विशेष, आत्मा, जीव, राजा,
धर्म, घोड़ा, सूरज, परमईश्वर ।

हंसक० ना० पु० विद्युत्वा, जो त्रिपां पांव में
उपहनती है ।

हंसध्वज० ना० पु० ब्रह्मा, राजा विशेष, गु०
जिसकी ध्वजा में हंसबिम्बा हो ।

हंसना० स० कि० हास्य करना, ठठामारना ।

हंसपद० ना० पु० हंसका चरण, चिह्न विशेष,
जो लेखक लोग भूलके स्थान पर लगाते हैं ।

हंसपदी० } ना० स्त्री० पौधा विशेष ।
हंसपादी० }

हंसमुख० गु० आनन्दी, मगन, हंसोइ ।

हंसा० ना० पु० हास्य ।

हंसाई० ना० स्त्री० हँसी, ठठोली ।

हंसाना० स० कि० हास्यकराना, रिझाना ।

हंसिनी० ना० स्त्री० हंसकी स्त्री ।

हंसिया० ना० पु० हंसआना ।

हंसी० ना० स्त्री० हास्य, ठठोली ।

हंसूआ० ना० पु० अन्नादिकाटने का हथियार ।

हंसेश० ना० पु० ब्रह्मा ।

हंसोइ० गु० ठठाल, हंसमुख ।

हंसोइपन० ना० पु० ठठोली ।

हकबकाना० अ० कि० घनडाना, व्याकुल
होना ।

हकला० गु० जो गले से अटकके बोले, जिसकी
जीभ जल्दी न चले ।

हकलाना० अ० कि० जीभ का हकबकाना बात
का अटकना ।

हकलाहा० गु० लडवडाहा ।

हकारना० स० कि० चैलादि का घुमाना ।

हकाथका० गु० घवडा, व्याकुल ।

हगना० अ० कि० गुहकरना, जंगल भ्रमिना
काके जाना ।

हगनेटी० } ना० स्त्री० हगने की इन्द्रिय - वि-
हगनेटी० } शप, गुदा, गांड ।

हगभरना० अ० कि० गुहकरना, विघाट
रहना ।

सुरसर० ना० पु० मानसरोवर ।
 सुरसरि० ना० स्त्री० शीर्षगानी ।
 सुरसरिता० ना० स्त्री० शीर्षगानी ।
 सुरधेष्ट० ना० पु० मन्त्रा, इन्द्र ।
 सुरस० पु० सुखाद ।
 सुरसी० ना० स्त्री० तुलसी पौधा ।
 सुरसुराना० अ० कि० सरसराना, गुदयदाना ।
 सुरसुराहट० ना० स्त्री० सरसराहट, गुदगुदी ।
 सुरसुरी० ना० स्त्री० गुदगुदी, चौंटीविशेष ।
 सुरसेनप० ना० पु० स्वामिकार्तिक ।
 सुरा० ना० स्त्री० मदिरा, दारू, शरान ।
 सुरार्ई० ना० स्त्री० महादुरी ।
 सुराह० ना० पु० देवदाह ।
 सुराहा० ना० स्त्री० धीरकाकीर्ती ।
 सुरापान० ना० पु० मदिरा पीना ।
 सुरारि० ना० पु० दैव, राक्षस ।
 सुरालय० ना० पु० अमेक, स्वर्ग, देवालय, हरमवन ।
 सुराष्ट्र० ना० पु० गुजरात के समीप देश विशेष ।
 सुकना० सं० कि० सुकना ।
 सुरूप० गु० सुन्दर, दिलीनैद, अञ्चलरूप ।
 सुरेन्द्र० ना० पु० सुरण, जिमीकन्द, इन्द्र ।
 सुरेश० ना० पु० इन्द्र ।
 सुरैत० ना० स्त्री० अविवाहिता, उड़ली, सुरैतिन० रतनी, परवैटी, उदरी ।
 सुलगना० अ० कि० करना, जलना, आत्र, उटना, धीरे धीरे जलना ।
 सुलगाना० अ० कि० नारना, लूकालगाना, जलाना, परवाना ।
 सुलम्बना० अ० कि० सुलना, निवडना ।
 सुलम्बाना० सं० कि० उभङ्गना, उकेलना, खोलना ।
 सुलभं० पु० सहजरी जी पोष्यजाति, साधारण ।
 सुलक्षण० ना० पु० शुभ के सूचक चिह्न, सुदरता ।

सुलाना० सं० कि० शयन कराना, पीडाना, बकरना ।
 सुलोक० ना० पु० मेकनामी, सुयज्ञ, अश्लोक, अश्वामुख्य ।
 सुलोचना० ना० स्त्री० चकोरपत्ती, मेघनाद के ली, अश्वी आलोवाली ।
 सुलोमण० ना० स्त्री० काक जंघा मूटी ।
 सुवक्ता० पु० भला कहनेहारा, अश्वपाठक ।
 सुवचन० ना० पु० विरादवाणी, अश्ववार्ता ।
 सुवन० ना० पु० पुत्र, लड़का ।
 सुवर्चि० ना० स्त्री० राजनी, लवण ।
 सुवर्चिका० ना० स्त्री० राजनी, लवण ।
 सुवर्ण० ना० पु० कनक, सोना, सुजाति, सुगु ।
 सुवर्णद्रुमा० ना० स्त्री० किरवाली ।
 सुवर्त्त० ना० पु० आकाश, नाममालायी, अश्वर पुष्कर कहतेनम अन्तरिक्ष भनवास, अश्वोम अगन्त विहायसी सं सुवर्त्त आकास ।
 सुवल० ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्र का एक सत्ता ।
 सुवाना० सं० कि० सुलाना ।
 सुवार० ना० पु० रतोदया, भावर्त्ती, विमायणे तथा (विविध पांति वैटी इयवनारा; लगे पुरे सन चतुर सुवारा) ।
 सुवाहु० ना० पु० दैवविशेष ।
 सुविस्तरा० ना० स्त्री० गन्धपसारन ।
 सुवेल० ना० पु० समुद्रतट पर्वतविशेष ।
 सुवैला० ना० स्त्री० अश्वीसायत, अश्वकाश ।
 सुवैया० ना० पु० सोनिहार ।
 सुशिचा० ना० स्त्री० भली शिक्षा, अश्वी सात ।
 सुशिचित० पु० प्रवीण, अश्वी शिक्षापथके ।
 सुशील० गु० निष्काशील, अश्व है संलभाव, साधु, शिष्टाचार ।
 सुशीलता० ना० स्त्री० शिष्टाचार; स्वभक्ति नम्रता ।
 सुशी० ना० स्त्री० सोमी ।
 सुश्रया० ना० स्त्री० सेवा, आदर, सिद्धपति ।

हगाना० स० कि० पीटकराना, ग्रहकराना ।
हगास० ना० स्त्री० हगने की इच्छा, रखल ।
हचकोला० ना० पु० भफा, मोक ।
हट० ना० स्त्री० हठ ।
हटकना० } य० कि० अटकाना, रोकना, मने
हटकाना० } करना, रोकना, मनेकराना ।
हटना० अ० कि० अलगहोना, चलेगाना, टराना,
पीछे वा आगे को बढ़ना ।
हट्या० ना० पु० अगादि मापने के लिये हाटमें
बँटनेहारा ।
हट्याई० ना० स्त्री० हाटका काम ।
हटाना० स० कि० टालदेना, रोकदेना, सङ्क
फाना ।
हटाल० ना० स्त्री० अन्धेरके कारण दूकानबन्द
करना ।
हटिया० } ना० स्त्री० हाट ।
हट्ट० }
हट्टाकट्टा० य० पीडा, चर्फटा, अन्ध्या ।
हठ० ना० पु० मगराई, रारि, मचलाई, अड ।
हठना० अ० कि० हठीला वा मचला वा टेढ़ाहो
ना, निश्करना ।
हठात् अन्व० अकरमात् ।
हठी० } गु० हठ करनेहारा, मचला,
हठीला० } मगरा ।
हड० ना० स्त्री० फलविशेष, ना० पु० वाड ।
हडकन० ना० पु० पीथाविशेष ।
हडगोला० ना० पु० पर्साविशेष ।
हडजोडा० ना० पु० पीथाविशेष ।
हडकूटन० ना० पु० हड्डी में पीडा ।
हडचडाना० अ० कि० घबराना, व्याकुलहोना,
हलबलाना ।
हडवडिया० गु० भिडपिडा ।
हडवड्डी० ना० स्त्री० खलबली, हुल्लड ।
हडहडाना० अ० कि० थरथराना, कांपना, धड
धडाना, खडखडाना ।
हडहडाहट० ना० स्त्री० कडाका, चटाका ।

हडहड्डी० ना० स्त्री० टंकार ।
हडा० ना० पु० आगवान् इत्यादि इस शब्द को
कहकर चिड़िया उड़ते हैं ।
हडाना० स० कि० चिड़िया उड़ाना ।
हडाहड्डी० ना० स्त्री० हडहड्डी ।
हड्डा० ना० पु० मोटाहाड, निर्मा, मोथरा ।
हड्डी० ना० स्त्री० थरिथ, हाड ।
हड्डीला० गु० अस्थिवान् ।
हडडनी० ना० स्त्री० कुचलन वा कुलटा स्त्री ।
हडडा० ना० पु० ताँबे वा पीतल वा मिट्टी का
बढ़ावर्तन ।
हडडाना० स० कि० देश वा नगरसे निकालदेना,
छुँद फालाकरके गधेपर चढ़ाकर घुमाना ।
हड्डिका० } ना० स्त्री० हाँडी ।
हड्डी० }
हस० अन्व० इत्, नारा ।
हसन० ना० पु० मारण, वधन ।
हसना० स० कि० बपकरना, मारखालना ।
हसादर० ना० पु० सम्मानहीन, निरादर ।
हसी० अन्व० थी, रई, ना० स्त्री० मारीगई ।
हथ० ना० पु० हाथ ।
हथ्या० ना० पु० हाथा ।
हथ्या० ना० स्त्री० वध, हिंसा, वधदोष ।
हथ्यारा० ना० पु० हिंसक, बधिक, वधदोषी ।
हथ्यारिन० } ना० स्त्री० हिंसक स्त्री ।
हथ्यारी० }
हथ० ना० पु० हाथ ।
हथकडा० ना० पु० पकड़, हाथ से पकड़ने की
वस्तु ।
हथकडी० ना० स्त्री० हाथ में डालने की बेडी ।
हथकंडा० } ना० पु० टेप, डब, रौया ।
हथखंडा० }
हथचपूआं० ना० पु० भांडा, थैरा ।
हथलूट० } ना० पु० पीटनेहारा, लडाका ।
हथलूट० }
हथनाल० ना० स्त्री० हाथी परकी तोपजोडी ।

सुश्रेणी० ना० स्त्री० मार्ग, बाट, राह ।
 सुपुसि० ना० स्त्री० सुखनीद, अवस्थाविशेष ।
 सुसकारना० अ० क्रि० फनफनाना ।
 सुसताना० अ० क्रि० विश्राम करना, श्वास लेना ।
 सुसमय० ना० पु० अर्थात् समय, षडती का समय ।
 सुसम्बद्ध० गु० जिसकी अर्थे प्रकार रचनाकी गई है ।
 सुसर० } ना० पु० ससर ।
 सुसरा० }
 सुसराल० ना० स्त्री० सराल ।
 सुस्थ० गु० अरोगी, भला, चंगा ।
 सुस्थिर० गु० निश्चल, अटल ।
 सुस्मृति० ना० स्त्री० चैतन्यता, अन्धीस्मृति ।
 सुस्तत्रा० ना० स्त्री० कलौजी ।
 सुस्वाद० गु० सरस, रसीला ।
 सुहाग० ना० पु० सौभाग्य, भलाभाग्य, पतिप्राप्त्यार, स्त्री का भूषणविशेष, जो पति के जीवने का चिह्न, अर्थात् ।
 सुहागन० ना० स्त्री० विवाहिता स्त्री, जिस स्त्री का पति जीता हो ।
 सुहागा० ना० पु० औपधिविशेष, जिससे सुवर्ण आदि गलता है ।
 सुहाता० गु० सोहना, चाहता, भला ।
 सुहानी० } गु० भावित, अर्थात्, सोहना,
 सुहायना० } चाहता, अ० क्रि० अर्थात् लगाना, रचना, भावना ।
 सुहाल० ना० पु० } पक्ष्याणविशेष ।
 सुहाली० ना० स्त्री० }
 सुहृदी० ना० स्त्री० जो पट्टी चौखट आदिजने के ऊपर लगाते हैं ।
 सुहृद० ना० पु० मित्र, प्रियतम ।
 सुभ्र० ना० पु० } शक्र, वराह ।
 सुभरी० ना० स्त्री० }
 सुभ्रा० ना० पु० तोता, पना ।

सूई० ना० स्त्री० वस्त्र-सीवने की वस्तुविशेष ।
 सुंगरा० ना० पु० भैरवा वधवा, पदवा ।
 सुंगा० ना० पु० टना, टीटा ।
 सुंघ० ना० स्त्री० शय्य, वास ।
 सुंघन० ना० स्त्री० सुंघने की वस्तु ।
 सुंघना० स० क्रि० भोसलेना, गन्धिमेहना ।
 सुंघनी० ना० स्त्री० नास, हुलास ।
 सुंठ० ना० स्त्री० चुपी, मौन ।
 सुंड० ना० स्त्री० हाथी की नाक ।
 सुंडा० ना० पु० पुनविशेष, कीड़ा ।
 सुंडी० ना० स्त्री० कलार, कलवार ।
 सुंतना० } स० क्रि० कांडना, खेचना, उढनी
 सुंधना० } से पत्नी को निकालना, या भित्री करना ।
 सुंस० ना० पु० सुसा ।
 सुकटा० गु० दुबला, निर्बला, सुखा ।
 सुकर० ना० पु० शकर ।
 सुकधा० ना० पु० किसारी, शुक्र ।
 सुकवार० ना० पु० सुभवार ।
 सुका० ना० पु० } चौधवी ।
 सुकी० ना० स्त्री० }
 सुक्यपाफ्य० ना० पु० जवाहार ।
 सुखद्युडी० ना० स्त्री० चयरोग, सुखीवडी ।
 सुखना० अ० क्रि० सुखा होना, गलना, तिकेना, मुरकाना ।
 सुखा० गु० शुक्र, रसहीन ।
 सुगा० ना० स्त्री० दुविधा, चिन्ता, शक ।
 सुगा० ना० पु० तोता ।
 सुचक्र० गु० ज्ञापक, बोधक, शिचक्र, प्रकाशक ।
 सूचना० ना० स्त्री० जनावना ।
 सूचनिका० ना० स्त्री० नीनुक, केहरिस्त ।
 सूचिका० ना० स्त्री० क्रेतकी ।
 सूचित० गु० बोधित, सूचना कियगया ।
 सूचिमुखी० ना० स्त्री० सुदि, देवा ।
 सूत्री० ना० स्त्री० सूई, दर्जी ।
 सूचीपत्र० ना० पु० पत्र जिसमें पुस्तक के अ-

हथनी० ना० स्त्री० हस्तिनी ।
 हथकेर० ना० पु० रुपया परखने में ठगविया,
 उधारलेना ।
 हथरस० ना० पु० } चूमाचाटी, मठोली ।
 हथरसी० स्त्री० }
 हथरी० ना० स्त्री० रहटका हथकड़ा ।
 हथल० } ना० पु० पीतलका हथकड़ा ।
 हथवास० }
 हथा० ना० पु० चक्रीका हथकड़ा ।
 हथिया० ना० स्त्री० हस्त नक्षत्र, वर्षाकालका
 अन्त, हथकड़ा ।
 हथियाना० स० कि० पकड़ना, ग्रहणकरना ।
 हथियार० ना० पु० लोहखर, कलकांटा, अस्त्र ।
 हथी० ना० स्त्री० घोड़ेके मलने की वस्तु वालों
 की बनी ।
 हथेला० ना० पु० चौर ।
 हथेली० ना० स्त्री० हाथके बीचका स्थान ।
 हथौटी० ना० स्त्री० वृक्ष, विया, प्रवीणता ।
 हथौड़ी० ना० स्त्री० धोया घन ।
 हदियाना० अ० कि० आगापीछा, छःपांचकरना,
 घन्नाना, स० कि० हुलसाना, फुसलाना, खोप,
 दिलाना, जांचना, बरबस कराना ।
 हदियाहट० ना० स्त्री० भोलाना, मुंहचोरी,
 घबराहट, बरबसाव, जचाव, चोंप ।
 हदियाहा० गु० भोला, मुंहचौर, सन्देही ।
 हनन० ना० पु० वध, हतन ।
 हनना० स० कि० वधकरना, मारडालना, मारना,
 जकड़ना ।
 हनो० गु० मारीगई, दवागई ।
 हनु० ना० पु० डुंढी, हनुमान्नी ।
 हनुमत्० } ना० पु० वायुपुत्र, रुद्रावतार,
 हनुमन्त० } श्रीरामसेवक, महावीर ।
 हनुमान्० }
 हन्तक० } ना० पु० वधकारी, मारनेवाला ।
 हन्ता० }
 हन्ती० ना० स्त्री० नाशक वा वधकारी स्त्री ।

हप० ना० पु० रूपसे धुंहे में बालके
 निगलना ।
 हपभूप० गु० फुतीला, चर्करा, अण्व्य० भूपट ।
 हफहफाना० अ० कि० हांकना ।
 हवड़ा० गु० फूहड़, हविला ।
 हविला० गु० जिसके आगे के दांत बड़े रहें ।
 हमारा० } सर्व० उत्तम पुरुष बहुवाक्यसम्बन्ध
 हमारो० } बोधक शब्द ।
 हमेव० ना० पु० अहंकार, अहंभाव ।
 हय० ना० पु० घोड़ा ।
 हयमेध० ना० पु० अश्वमेध ।
 हयशाला० ना० स्त्री० पुइसाल, तवेला ।
 हयहय० ना० पु० नागाडुन ।
 हये० कि० नाश, मरि, मिटविये ।
 हर० ना० पु० श्रीमहादेवजी, हल, सीर, अण्व्य०
 यह जिस शब्दके अन्तमें हो उसका अर्थ हरण
 का माना जावे यथा, पापहर, तापहर ।
 हरगिरि० ना० पु० कैलास ।
 हरण० ना० पु० बरबस या चोरी से किसी
 की वस्तुका लेना, चोरी, लूट, नशावन,
 हरिण ।
 हरता० ना० पु० चौर, लुटेरा नाशक ।
 हरद० ना० पु० हल्दी ।
 हरदत्त० गु० जो शिवजी का दियाहुआ है ।
 हरना० स० कि० बरबस लेलेना, चोरी करना,
 लूटना, उठालेना, हरिण ।
 हरनौटा० ना० पु० हरिणका बच्चा ।
 हरफारेखड़ी० ना० पु० फलविशेष ।
 हरवराणा० अ० कि० हड़बड़ाना, घबड़ाना ।
 हरभिघाड़० } ना० पु० वृक्ष वा उसका फूल-
 हरसिंगार० } विशेष, पीथा-विशेष ।
 हरवीर्य० ना० पु० पाप ।
 हरहार० ना० पु० सर्व, शिवकी माला ।
 हरा० गु० वर्षविशेष, यथा घासकी सम्बन्धी ।
 हराई० ना० स्त्री० हरियाली ।
 हराना० स० कि० जीतलेना, भकाना ।

भ्याय वा प्रकरण लिखेजाते हैं।

सूच्याकार० ना० पु० सूँ के डोल।

सूज० } ना० पु० कुलाव, शोध।

सूजन० } ना० पु० कुलाव, शोध।

सूजना० य० कि० फूलना।

सूजा० ना० पु० नमी, बेधी, सुतारी।

सूजी० ना० पु० सीनेहार, दजी, दरदराआदि, सूँ।

सूभ० ना० स्त्री० दृष्टि।

सूभना० य० कि० मोचरीहोना, देखपड़ना।

सूत० ना० पु० भागा, तागा, रघवान्, भाट, वदई, पौराणिक, ह्यासर्जी का शिष्य जो नैमिषारण्य में शौनकादिकों को पुराण सुनाता था, पाया, व्यवहार, रीति, श्रुति।

सूतक० ना० पु० अशुभ, अपवित्रता, जो मृत्यु वा मृत्यु के दिन से दश दिन तक मानते हैं उसके दिनाम है शुद्धयुक्तक, मृत्युयुक्तक।

सूतना० य० कि० सोना, नदिलेना, सो० कि० ताँकनी, उपायकेरना, सूतलगाना, ताँकना।

सूतली० ना० स्त्री० डोती, पतनी रस्सी।

सूतिका० ना० स्त्री० जचा, प्रसूतिवा, प्रसूती।

सूती० य० जो सूत से बना, सूतिका तैनीहूँ सीतीहूँ।

सूतू० य० नींद।

सूध० ना० पु० तागा संक्षेपसे अनेकर्थ का सूचक वा बोधक शब्द।

सूधधर० ना० पु० नट, बाजीगर।

सूधनाभि० } ना० स्त्री० मकड़ी।

सूधा० } ना० स्त्री० मकड़ी।

सूधन० ना० पु० जाधिया, पायनामह।

सूधनी० ना० स्त्री० जाधिया, पायनामह, सुधनी।

सूध० } य० सीधा, सुधा, साधारण, भोला, सूधा० } निर्धकपट।

सूधाई० ना० स्त्री० सीधा, भोलापन।

सूध० य० शय।

सूना० गु० सुँ, उजाके, जहाँ कोई न हो।

सूनु० ना० पु० पुत्र, बेटा।

सूनो० गु० शय।

सूप० ना० पु० शय, छाज।

सूपकार० ना० पु० रोटी करने हारा, खिची।

सूपावेना० ना० पु० पंथीविशेष।

सूपार० ना० पु० सुपारो।

सूपियारी० ना० स्त्री० सुपारी।

सूम० ना० पु० शय, कृपण, कंजनी।

सूर० ना० पु० वीर, हगास, सूर्य, सूरदास, सु० अथा।

सूरज० ना० पु० सूर्य, सुभीन, रजिकरय, शं नैश्चर, यमराज।

सूरजगहन० ना० पु० सूर्यग्रहण।

सूरजमुखी० ना० स्त्री० सूर्यपत्नी।

सूरजवल्लभ० ना० पु० भंगरा पोथा।

सूर्जिका० ना० स्त्री० सज्जोलिनी।

सूरण० ना० स्त्री० जर्मकंद।

सूरता० ता० स्त्री० वीरता, वहादुरी।

सूरदास० ना० पु० कविविशेष, सूरसागरके बनानेहारे।

सूर्यार० ना० पु० वीर, सावन्त, रावत।

सूरमलार० ना० पु० रागिणीविशेष।

सूरमा० गु० वीर, सावन्त, मनचला।

सूरमापन० ना० पु० वीरता, सीधन्ती, वहादुरी।

सूरसुत० ना० पु० सुभीन, शंनैश्चर, करण, यमराज।

सूरा० ना० पु० सावन्त, बलवान्, धीर।

सूरी० ना० स्त्री० सुँ, सुँ, सुँ।

सूर्य० ना० पु० शय, सप।

सूर्यनखा० ना० स्त्री० शयनता, शिवायके नहन।

सूर्य० ना० पु० सुँकेपानु, दिनमाषि, रावि, पूरन।

सूर्यक० ना० पु० नीवहृष।

हरावल० ना० पु० दलके अगाड़ी चलनेवाली ।
हरि० ना० पु० ईश्वर, पानी, अग्नि, वायु, मार्ग,
हाथी, पर्यंत, सर्प, सिंह, इन्द्र, वानर, सूर्य,
धन, आकारा, मनु, हरिण, मपीहा, कोयल,
प्राण, मोती, अमर, अमृत, चन्द्रमा, कमल,
सुवर्ण, कामदेव, खंड, घोड़ा ।

हरिजन० ना० पु० साधु, भक्त, सन्त ।
हरित० गु० हरा, डहडहा, चौरायागया ।
हरिताल० ना० पु० उपधातुविशेष ।
हरितालिका० ना० स्त्री० भारी सुदी तीन
का व्रत ।

हरिद्रा० ना० स्त्री० हल्दी ।
हरिद्वार० ना० पु० तीर्थविशेष ।
हरिन्मणि० ना० पु० पद्मा ।
हरिमिया० ना० स्त्री० लक्ष्मी, तुलसी ।
हरिमङ्गल० ना० पु० विन्धुका उपासक, वैष्णव ।
हरिभजन० ना० पु० भगवान् का भजन वा
ध्यान करना ।

हरिभद्रक० ना० पु० कूट ।
हरियल० ना० पु० पक्षीविशेष, कपोतविशेष ।
हरियाण० ना० पु० दिल्ली से पश्चिम देश-
विशेष ।

हरियान० ना० पु० गरुड ।
हरियाना० अ० कि० जमना, बड़ना, डहडहा
होना, शक्ति निकलना ।
हरियाला० गु० हरा, सखी ।
हरियाली० ना० स्त्री० हराई ।
हरिबलुक० ना० पु० एलुवा, सुखर ।
हरिवास० ना० पु० पीपलवृक्ष ।
हरिवासर० ना० पु० एकदशी, जम्माष्टमी ।
हरिचन्द्र० ना० पु० राजा विशेष जो अयोध्या
में महादानी हुआ है ।

हरीत० ना० स्त्री० हरी, हड़ ।
हरीतकी० ना० स्त्री० हरी, हड़ ।
हरीरा० गु० हरा, भगोड़ा, ना० पु० भोजन
हरीला० ना० पु० जो जचाको प्रथम खिलते हैं ।

हरीया० ना० पु० तोताविशेष ।
हरु० गु० हलका ।
हरुये० अ० धीरे धीरे, हौले, प्रजविलासि
यथा, दोहा, लै पौदाये सेनपर हरुये यशुमंति
माय, अति विरक्तानो आठु हरि यह कहि कहि
पडिताय ।

हरुच० गु० हलका, रामायणे यथा, निजंजडता
लोगन पर डारी, होहु हरुच रघुपतिहि
निहारी ।

हरैरा० गु० हरा ।
हरैटी० ना० स्त्री० छड़ी, वेत, हलचलाने का
समय ।

हर्ष० ना० पु० आनन्द, सुख, आह्लाद, खुशी ।
हर्षण० ना० पु० योग, विरोध, सुखभाव ।
हर्षना० अ० कि० फूलना, खिलना, आनन्द
होना ।

हर्षित्त० गु० आनन्दित, प्रसन्न, मग्न ।
हल० ना० पु० लांगल, खेत जोतने का यन्त्र,
अर्द्धकर वा उसका चिह्न ।

हलका० गु० फुलका, नीच, बिलोरा, आधा,
पोला, सरता, अगुरु ।
हलकाई० ना० स्त्री० हलकाउन, निर्मलता ।
हलकाना० स० कि० सहायदेना, सहारा
करना ।
हलकोरना० स० कि० बठोरना, समेटना,
हिलाना ।

हलचल० ना० पु० हलपड़ी, पवराहट, रौला,
अंधेरा ।
हलदिया० ना० पु० विषविशेष, कबूतर
रोग, गु० पीला ।
हलधर० ना० पु० धीवलदेव, किसान ।
हलन्त० गु० निस, शब्दके अन्तमें हल का
विद्ग है ।
हलरना० अ० कि० लोटपोट होना ।
हलफल० ना० स्त्री० शिंघाचार ।
हलरा० ना० पु० तरंग, सहर, शिखर ।

हरीया० ना० पु० तोताविशेष ।
हरु० गु० हलका ।
हरुये० अ० धीरे धीरे, हौले, प्रजविलासि
यथा, दोहा, लै पौदाये सेनपर हरुये यशुमंति
माय, अति विरक्तानो आठु हरि यह कहि कहि
पडिताय ।
हरुच० गु० हलका, रामायणे यथा, निजंजडता
लोगन पर डारी, होहु हरुच रघुपतिहि
निहारी ।
हरैरा० गु० हरा ।
हरैटी० ना० स्त्री० छड़ी, वेत, हलचलाने का
समय ।
हर्ष० ना० पु० आनन्द, सुख, आह्लाद, खुशी ।
हर्षण० ना० पु० योग, विरोध, सुखभाव ।
हर्षना० अ० कि० फूलना, खिलना, आनन्द
होना ।
हर्षित्त० गु० आनन्दित, प्रसन्न, मग्न ।
हल० ना० पु० लांगल, खेत जोतने का यन्त्र,
अर्द्धकर वा उसका चिह्न ।
हलका० गु० फुलका, नीच, बिलोरा, आधा,
पोला, सरता, अगुरु ।
हलकाई० ना० स्त्री० हलकाउन, निर्मलता ।
हलकाना० स० कि० सहायदेना, सहारा
करना ।
हलकोरना० स० कि० बठोरना, समेटना,
हिलाना ।
हलचल० ना० पु० हलपड़ी, पवराहट, रौला,
अंधेरा ।
हलदिया० ना० पु० विषविशेष, कबूतर
रोग, गु० पीला ।
हलधर० ना० पु० धीवलदेव, किसान ।
हलन्त० गु० निस, शब्दके अन्तमें हल का
विद्ग है ।
हलरना० अ० कि० लोटपोट होना ।
हलफल० ना० स्त्री० शिंघाचार ।
हलरा० ना० पु० तरंग, सहर, शिखर ।

सूर्यकान्ति० ना० स्त्री० सूर्यमणि ।
 सूर्यग्रहण० ना० पु० सूर्य का ग्रहण ।
 सूर्यमणि० ना० स्त्री० मणिविशेषः ।
 सूर्यमुखी० ना० स्त्री० सूर्यविशेषः ।
 सूर्यप्रिय० ना० पु० तांत्रापातु ।
 सूर्यवंशी० ना० पु० सूर्य वंश का वंशी ।
 सूर्यवल्लभ० ना० पु० अंगराज, अंगरा, पौधा ।
 सूर्याख्य० ना० पु० सूर्यमणि ।
 सूर्याह्वय० ना० पु० मदारावृक्ष ।
 सूर्यास्त० ना० पु० सन्या; सांक्र, सूर्य का अस्त अर्थात् छुपना ।
 सूर्येन्दुसंगमा० ना० पु० अमावस्य ।
 सूर्योदय० ना० पु० सूर्य का उदय, तड़का, सवेरा ।
 सूल० ना० पु० शूल, फुरफुरी, मालाकी, मुनि, कांटा, अश्वविशेष ।
 सूली० ना० पु० शली, ना० स्त्री० कांठी ।
 सूवा० ना० पु० तोता, मोटी गई ।
 सूस० ना० पु० जल जन्तुविशेष ।
 सूसमार० ना० पु० जल जन्तुविशेष ।
 सूती० ना० स्त्री० वस्त्रविशेष ।
 सूहा० गु० साल, अरण्य, ना० पु० रागविशेष ।
 सूक्ष्म० ना० पु० जो वस्तु अत्यल्प अर्थात् इतनी पतली नारीक हो ।
 सूक्ष्मता० ना० स्त्री० हलकापन, पतलाई, नारीकी ।
 सूक्ष्मदर्शी० गु० चक्र, चूर्णा, प्रवीण, ज्ञानी ।
 सूक्ष्मपत्र० ना० पु० करीदा ।
 सूजना० स० कि० सिरजना ।
 सूजित० गु० जो सिरजागया ।
 सूष्टि० ना० स्त्री० उत्पत्ति, जगत्, वृद्धि ।
 सूष्टिकर्त्ता० ना० पु० ब्रह्मा, परमात्मा ।
 सू० अथवा अयादान कारक वा करण का बोधक चिह्न, साय, संग ।
 सूक० ना० पु० सूकने का काम, कतार ।
 सूकड़ा० गु० सौ; रात, १००० ।

सूकना० स० कि० तताना, गर्माना ।
 सूंगरी० ना० स्त्री० फली, बीसी ।
 सूंठा० ना० पु० सरकण्डा जिससे मोटा सूंठी० ना० स्त्री० बनति है; सरपत, पतली मूजका पौधा ।
 सूंत० अथवा विनामोल, सूत, सूतमत् ।
 सूंतना० स० कि० सुधारना, बनाना, सुध करना ।
 सूंद० ना० पु० खोराविशेष ।
 सूंदर० ना० पु० ईश्वर ।
 सूंध० ना० पु० चोरी करने के लिये चोरलोग जो भीत में छेद करते हैं संग ।
 सूंधना० स० कि० खोदना, डाना ।
 सूंधा० ना० पु० लवणविशेष जिसको लाहरी लोग कहते हैं ।
 सूंधिया० ना० पु० विष, जातिविशेष, चोरलोगों में पैठता है ।
 सूंधी० ना० स्त्री० खरूरका रस, ताड़ीविशेष ।
 सूंदुआं० ना० पु० द्वादशविशेष, दिनाई ।
 सूंगुन० ना० पु० काष्ठविशेष जो पैय देश से आता है ।
 सूचन० ना० पु० लिखकाव ।
 सूज० ना० स्त्री० शय्या, विस्तर, पलंग, मुञ्जा ।
 सूजबन्द० ना० पु० सूजपर निबन्धना बांधने के लिये डोरीविशेष ।
 सूठ० ना० पु० बका साहकार ।
 सूठन० ना० स्त्री० सूठकी स्त्री ।
 सूत० ना० पु० पुल, सेतु, गुं श्वेत ।
 सूतना० स० कि० सुगवना, सूतना ।
 सूतु० ना० पु० पुल, बांध, मर्यादा ।
 सूतुबन्ध० ना० पु० तीर्थविशेष, पुल जो लका और भरतखण्ड के मध्य समुद्र में हेतुमात्रा के कनने बनाया था ।
 सूदना० स० कि० सूकना, ततारना ।
 सूदन० ना० स्त्री० कदक, कौज, साम एक ।
 सूना० ना० पु० भक्त नारीका है ।

हलराचना० स० कि० बहलाना, खलाना, हिलाना ।

हलवर्ण० ना० पु० व्यंजन, स्वररहित अक्षर ।

हलघाहा० ना० पु० जोतहा, किसान ।

हलाहल० ना० पु० इलाहल ।

हलहलाहट० ना० पु० ज्वर वा डरसेकपकपी ।

हलहलाना० अ० कि० ज्वरादि से कांपना, स० कि० हिलाना, कंपाना ।

हलहलिया० ना० पु० विष ।

हलहली० ना० स्त्री० रोग, व्याधि, जूझी ।

हला० स्त्री० ना० मधिरा, शराव ।

हलाई० ना० स्त्री० जौताई ।

हलायुध० ना० पु० श्रीवलरामजी ।

हलाबाहु० ना० स्त्री० नदीविशेष ।

हलाहल० ना० पु० महाविष ।

हलिया० ना० पु० बैलौका भ्रुण्ड ।

हलियाना० अ० कि० जीमतलाना ।

हली० ना० पु० श्रीनन्ददेवजी, पु० किसान ।

हलोरना० स० कि० मयोरना ।

हल्लक० ना० पु० लालकमल, यथा सौमन्धिक-
कन्तुकहारं हल्लकं रक्तसन्धिकम् इत्यमरः ।

हल्ला० ना० पु० रौला; इल्लड, धावा, यह शब्द फारसी का है ।

हवन० ना० पु० होम, अग्नि प्रसिद्धकरण ।

हवि० ना० स्त्री० यज्ञविशेष, खीरयज्ञकी ।

हविः० ना० पु० होमकी सामग्री ।

हविपाठी० ना० पु० चीता ।

हविष्य० ना० पु० घृत, घीसमिश्रित मात ।

हवुपा० ना० स्त्री० आहूवर ।

हव्य० ना० पु० देवताओं के हेतु भेद, हवि ।

हव्यवाहन० ना० पु० अग्नि ।

हस्त० ना० पु० हाथ; तेरहवां नक्षत्र, संज्ञ ।

हस्तकरण० ना० पु० अरण्य दान ।

हस्ताक्षर० ना० पु० हाथका लिखा, दस्तखत ।

हस्थिघोषा० ना० स्त्री० बड़ीतुई ।

हस्तिदन्तक० ना० पु० मूली; मलीतरकारी ।

हस्तिनापुर० ना० पु० प्राचीनदिल्ली, कौरवों की राजधानी ।

हस्तिनी० ना० स्त्री० हथिनी; खीरा; स्त्री-विशेष ।

हस्तिपाल० ना० पु० हाथीवाप, पीलवान् ।

हस्तिमागधी० ना० स्त्री० गजपीपर ।

हस्ती० ना० पु० हाथी ।

हसली० ना० स्त्री० गले के पासकी एक हड्डी गले का हगनाविशेष ।

हहरना० अ० कि० घबराना ।

हहराना० अ० कि० पवन प्रचण्ड का शब्द ।

हा० अव्य० दुःखका सूचकशब्द ।

हाऊ० ना० पु० श्रोतों बालक के डराने को पश्चिममें बोलतीहै, अजबिलासे यथा, फहत आब वनहाऊआयो ।

हां० अव्य० स्वीकारका सूचकशब्द ।

हांक० ना० स्त्री० पुकार, निकाल, टेरा ।

हांकना० स० कि० निकालना, पुकारना, चलाना ।

हांकी० ना० स्त्री० पत्र जिसपर सेमई बनाते हैं ।

हांगर० ना० पु० समुद्रकी मछलीविशेष ।

हांडना० अ० कि० भटका फिरना ।

हांडी० ना० स्त्री० मिट्टी का पात्रविशेष ।

हांपना० } अ० कि० हफहफाना और हांकना ।
हांफना० }

हांस० ना० पु० हंस, हंसी ।

हासी० ना० स्त्री० हास्य ।

हांधी० अव्य० हांसेही ।

हाजालिनी० ना० स्त्री० काकोली ।

हाट० ना० स्त्री० दुकान; क्रयविक्रयका स्थान; चौक, कटरा, पैट, सुवर्ण ।

हाटक० ना० पु० सुवर्ण, कनक ।

हाडू० ना० पु० जो हाट में क्रयविक्रय करे ।

हाड़० ना० पु० हड्डी ।

हात० } ना० पु० कर, हस्त, मांपविशेष,
हाथ० } वश ।

सेनानी० ना० पु० चमूपाल, दलपति,
सेनापति० स्वामिकार्तिक ।
सेव० ना० पु० फलविशेष ।
सेम० ना० स्त्री० तरकारी विशेषः का प्रोधा वा
उसकी फली ।
सेमरा० ना० पु० सेमल वृक्ष विशेषः वा उसकी
फली ।
सेर० ना० पु० तौल विशेष २६ छटांकी ।
सेराना० थ० कि० टंटा होना, स० कि० टंटाक-
रना, वहाना, भताना ।
सेल० ना० पु० बर्छा ।
सेलखड़ी० ना० स्त्री० पर्वतकी मिट्टीविशेष ।
सेला० ना० पु० वस्त्र विशेषः वायु विशेषः ।
सेलिया० ना० पु० मार्जार, सेलीवाला ।
सेली० ना० स्त्री० बर्छा, रामायणे यथा
(तुरत निर्माणपाद्ये मेली, सन्मुखे सही
राम सो सेली) सूतकी बनी माला जो उदासी
पहनते हैं, जालबन्दी ।
सेव० ना० पु० पकवानविशेषः, सेव ना० स्त्री०
सेवा, सुश्रूषा ।
सेवई० ना० स्त्री० खानकी वस्तु विशेषः ।
सेवक० ना० पु० नौकर पुजारी, सेवाकरनेहारा,
खिदमतगार ।
सेवकाई० ना० स्त्री० नौकरी, पूजा, सेवा, टहल,
खिदमतगारी ।
सेवटि० ना० स्त्री० नदीका रेत, दलदल ।
सेवड़ा० ना० पु० जैनमतका भित्तारो ।
सेवती० ना० स्त्री० पुष्प विशेषः वा उसका पौधा ।
सेवेन० ना० पु० पालन, पोषण, सेवा करने ।
सेवना० स० कि० नौकरी करने, पालना, पक्षी
का थैलपर बैठना ।
सेवा० ना० स्त्री० नौकरी, टहल, पूजा, खिदमत-
गारी ।
सेव्यवीर० ना० पु० अस्त्रसप्त ।
सेव० ना० पु० शप ।
सेसर० ना० पु० तारा में खल विशेषः ।

से० गु० सी० ना० स्त्री० भागवानी, बरकतः
। लहर-बहर ।
सैकड़ा० गु० सी० शत ।
सैगर० ना० स्त्री० शमीवृक्ष की फली, नवल
की फली ।
सैतालीस० गु० चालीस और सात ४७ ।
सैतीस० गु० तीस और सात ३७ ।
सैहिकेय० ना० पु० राइ, केतु ।
सैन० ना० स्त्री० सेना, फौज, मटकी, शयन,
विद, इशारह, नाम एक भक्तका ।
सैनप० ना० पु० सेनानी, सेनापति, स्वामि-
कार्तिक ।
सैना० ना० स्त्री० सेन, दल, फौज ।
सैनापति० ना० पु० सेनापति, सिपह-
सैनापाल० साधार ।
सैनासैनी० ना० स्त्री० परस्पर सेनकरना ।
सैन्धव० ना० पु० सिन्धुदेश का, घोडा वा
लोन, घोडा ।
सैन्य० ना० स्त्री० सेना, दल, फटक ।
सैरम० ना० पु० भेसा ।
सैसंभ० अथ्य० सांभ के आरम्भ में ।
सैहरन० ना० स्त्री० समाई ।
सैहरनी० गु० सहैवैया ।
सो० सर्व० सम्बन्धवाचक, सर्वनाम ।
सोअर० ना० पु० कोठरी जिसमें प्रसूती रहती है ।
सोआ० ना० पु० पौधाविशेष ।
सोई० सर्व० वृद्ध, प्राप ।
सो० अथ्य० सो ।
सोटा० ना० पु० गदका, मूसल, छोटीलाठी ।
सोड० ना० स्त्री० सूती थरक ।
सोघना० स० कि० धीने के लिये गीली मिट्टी
से कपडा मलना, भरना, लगाना ।
सोघा० ना० पु० बालों का मसाला, नई मृत्तिका
पात्र भिगेने से जो गन्ध, सुगन्धित ।
सोघाहट० ना० स्त्री० सुगन्ध, सुश्रात ।
सोह० ना० स्त्री० क्रिया, शपथ ।

हाथलैखना० अ० कि० अपसप्तता में मुंह फेरना वा छोड़ना ।

हाथचाटना० स० कि० स्वादिष्ट भोजन को बहुत पसन्दतासे खाना ।

हाथजोड़ना० स० कि० विनती करना, विधायना, दोनों हाथ मिलाना ।

हाथडालना० स० कि० किसी काम में पुसना वा पेटना, अपनाना ।

हाथपसारना० स० कि० किसी से कुछ मांगना ।

हाथफेरना० स० कि० प्यारकरना, कृपाकरना, फुसलाना ।

हाथमलना० अ० कि० पश्चात्ताप करना, विलाप करना ।

हाथमारना० स० कि० बचन देना, लूटना, लक्ष से धायलकरना ।

हाथा० ना० पु० हाथ बुंदिया जनाके का यन्त्र ।

हाथी० ना० पु० गज, मत्तंग ।

हाथीवान० ना० पु० फीलवान, महापत ।

हान० } ना० स्त्री० दोग, धठी, निगाड़,
हानि० } अन्धेर ।

हाय० } अव्य० दुःख वा शोक का सूचक
हायहाय० } शब्द, ना० स्त्री० सांत ।

हायन० ना० पु० वर्ष ।

हार० ना० पु० मुक्ता आदिकी माला, गजरा, बालोंका झुण्ड, चूरी, चराऊ खेत, जंगल, अजय्य ।

हारक० ना० पु० जिससे हरिये, हरनेहारा ।

हारजीत० ना० पु० जय, घत ।

हारना० अ० कि० परामित होना; अकृतार्थ होना, यकना, स० कि० हराना, हारजाना कुछ वस्तु ।

हारमानना० स० कि० निराश होके छोड़ना, विवाद को छोड़ना ।

हारा० अव्य० यहशब्द दूसरे शब्द के अन्त में आकर कर्ता को वा बालाका सूचक है ।

हारीत० ना० पु० स्मृतिविशेष ।

हारू० ना० पु० हरैया ।

हारि० ना० पु० स्नेह, छोट, माया ।

हार्य० गु० हरण करने के योग्य, ना० पु० बहेश ।

हाल० गु० उतावला, फुतींला ।

हालना० अ० कि० हिलना ।

हाला० ना० स्त्री० मदिरा, मद्य, शराब ।

हालाडोला० ना० पु० हिलाव, जगमगाव, भूचाल, भूकम्प ।

हालि० ना० स्त्री० पतवार ।

हाव० ना० पु० स्त्री० लोपोंकी भुंगीविशेष, भावली ।

हावभाव० ना० पु० आकर्ष, खिचाव, आदरभाव, कटाव, मान सम्मान, बनावट ।

हास्य० ना० पु० आनन्दसमय, सुखकी एक अवस्था, हँसी, रसविशेष ।

हाहा० अव्य० हायहाय, आर्त्तवाणी ।

हाहाकार० ना० पु० पुद्म में जो शब्द, चबराहट, दुःखयुत, पुकार, शोर ।

हाहासा० अ० कि० गिड़गिड़ाना, विधायना ।

हि० अव्य० ही ।

हिडोला० ना० पु० पालन, झूला, नीतविशेष ।

हिंसक० ना० पु० अधिक गु० जो हिंसाकरे घना, अपकारी, दुर्जन, कठोर ।

हिंसा० ना० स्त्री० हत्या, यध, घुराकरने की चिन्ता, अपकार, गाली, दुर्जनता, मार ।

हिंश्व० गु० हिंसक ।

हिका० ना० स्त्री० छोक, हिचके ।

हिङ्ग० ना० स्त्री० हिंग ।

हिचकना० अ० कि० हटना, दबना, आंगापीडा करना ।

हिचकाना० स० कि० धकादेना, मोकना, दवाना ।

हिचकिचाना० अ० कि० सन्देह में होना, जगमगाना, हकलाना ।

सौही० अर्थ० सामने, सम्मुख ।
 सोखना० स० क्रि० सींचना, चूसना, पीलेना ।
 सोच० ना० पु० प्यान, बूझ, सोच ।
 सोचना० स० क्रि० प्यानकरना, बूझना, सो-
 चना ।
 सोज० ना० पु० सूझ ।
 सोझ० ना० स्त्री० सीधाई ।
 सोझा० गु० सीधा ।
 सोत० } ना० पु० भूर, कुण्ड, जलका निकाल,
 सोता० } वेद, धारा, झरना, समुद्रका खालि ।
 सोत्साह० गु० उत्साह समेत, आनन्दयुक्त ।
 सोथ० ना० स्त्री० सूज ।
 सोदर० ना० पु० सहोदर, सर्गाभाई ।
 सोदरा० ना० स्त्री० संगोपहन, रामचंद्रिकर्षी
 (सुधा सोदरा यद्यपि आप, संवहति अतिकटुक
 प्रतीप) ।
 सोध० ना० स्त्री० सोध, खोज ।
 सोधना० स० क्रि० सोधन करना, कण भरना,
 मिलना, निर्मूल करना, शुद्ध करना ।
 सोन० ना० पु० शोण, सुवर्ण पुष्पविशेष ।
 सोनहरा } गु० सोने का, सोने का सा
 सोनहला० } रंग ।
 सोना० ना० पु० स्वर्ण, कनक लिंग, अ० क्रि०
 नोदलेना, भरना ।
 सोनार० ना० पु० जातिविशेष, स्वर्णकार ।
 सोनिया० ना० पु० रात से सोना भिन्न करने
 द्वारा, स्यारिया, छोटा लिंग बालक का ।
 सोपान० ना० पु० सीढ़ी, जीनह ।
 सोफालिका० ना० स्त्री० सुभाषण ।
 सोभना० अ० क्रि० सोहना, सजना ।
 सोभा० ना० स्त्री० शोभा ।
 सोम० ना० पु० चन्द्रमा ।
 सोमनाथ० ना० पु० महादेव जो गुजरातमें है ।
 सोमपादप० ना० पु० कायकथ ।

सोमरजत० ना० पु० सालचन्दन ।
 सोमराज० ना० पु० शोषधि, शोषाविशेष ।
 सोमराजी० ना० स्त्री० बाकुची ।
 सोमवल्कल० ना० पु० कायफल ।
 सोमवल्ली० ना० स्त्री० बाकुची ।
 सोमवार० ना० पु० चन्द्रवार, दूसरा दिन ।
 सोमवारी० ना० स्त्री० सोमवारकी अर्मावत ।
 सोमक्षीरं० ना० स्त्री० सोमवल्ली ।
 सोरठ० ना० स्त्री० रागिनीविशेष ।
 सोरठा० ना० स्त्री० छन्दविशेष ।
 सोह० ना० स्त्री० शोभा ।
 सोहं० ना० पु० मन्त्रविशेष ।
 सोहन० गु० शोभादेवेहारा, प्यारा, चाहता
 ना० पु० सज्जन, रेती, ना० स्त्री० मिठाई
 विशेष ।
 सोहना० अ० क्रि० सजना, शोभादेना ।
 सोहागा० ना० पु० सहागा (शोभा) ।
 सोहिल० ना० पु० रागविशेष ।
 सोही० अर्थ० सोही, सन्मुख ।
 सौ० गु० शत, १०० ।
 सौं० ना० पु० शपथ, सौह, सौगन्द, अर्थ० सौं
 सौं करी० ना० स्त्री० वाराहीकन्द ।
 सौंचना० अ० क्रि० शंका नाकर जल से गुदा
 धोना ।
 सौंप० ना० स्त्री० धरोहर, धाती, सुपुदगी ।
 सौंपना० स० क्रि० पहुँचाना, सुपुद करना,
 धरना, रखना ।
 सौंफ० ना० स्त्री० शोषधिविशेष ।
 सौरा० ना० पु० कालख, कानख गु० सांभला ।
 सौर० ना० पु० मङ्गलीविशेष ।
 सौरि० ना० स्त्री० गृद्धिघतक ।
 सौरी० ना० स्त्री० जूझ, प्रवृत्ती ।
 सौह० ना० स्त्री० किया, शपथ, सौगन्द ।
 सौथ्य० ना० पु० मूल, श्याम ।
 सौगन्द० ना० स्त्री० शपथ, किया, सौह, यह
 शब्द क्रारसी का है भाग में प्रचलित है ।

हिचक्रिची० ना० स्त्री० इविधा, चिन्ता, शंका ।
हिडम्य० ना० पु० सिलहट से, ठीक पूर्वदेश, रा-
जसविशेष ।

हित० ना० पु० प्रेम, मित्रता, माया, उपकार,
अव्य० निमित्त, अर्थ, कारण, लिये, गु० उचित,
योग्य, मित्र, मायावन्त ।

हितकार० ना० पु० मित्र, उपकारी, सज्जन ।

हितकारी० ना० पु० मित्र, उपकारी ।

हित० } ना० पु० मित्र, यार, सहायक ।
हित० }

हितैषी० ना० पु० मियकरने की इच्छा निसके
होते, हितकारी ।

हितोपदेश० ना० पु० योग्य वा उचित उपदेश,
नीतिका, एक मन्थविशेष ।

हिनहिनाना० अ० क्रि० पुकारना प्रोक्षिका ।

हिनीती० ना० स्त्री० विनती, आधीनता ।

हिन्ताल० ना० पु० राजरविशेष ।

हिन्दी० ना० स्त्री० हिन्दुस्तान की, बोली वा
अक्षर ।

हिन्दू० ना० पु० लोग जो वेदादि शास्त्रानुसार
चलते हैं, चातुर्वर्ण्यलोग ।

हिन्दूस्थान० ना० पु० देश विशेष जो उत्तर
ध्रुव अंश से पैंतीस अक्षांश तक और पूर्व पश्चिम
में ६७ अक्षांश से ९३ तक फैला है,
भारतखण्ड ।

हिम० ना० पु० पाला, शीत, तुषार, ऋतु-
विशेष ।

हिमउपल० ना० पु० थोला, पत्थर, रामायणे-
यथा, जिमिः हिम उपल कृपीदलि गारेहो, परं अ-
काम लागि तनु परिहरहो ।

हिमकर० ना० पु० चन्द्रमा, कपूर ।

हिमरोम० } ना० पु० चन्द्रमा, विधु, चांद ।
हिमांशु० }

हिमाचल० } ना० पु० हिमालय पर्वत ।
हिमांचल० }

हिमाह्वय० ना० पु० कपूर, कर्पूर, काकूर ।

हिमालय० ना० पु० पर्वत विशेष, पालाकाषर ।

हिमोपम० ना० पु० कपूर, कर्पूर ।

हिमोपल० ना० पु० थोला, पाथर ।

हिय० } ना० पु० हृदय ।
हिया० }

हियाव० ना० पु० सरमापन, तीरता, आह ।

हियो० } ना० पु० गाय भैर धुलनि वा रोकने
हियौ० } का शब्द, हृदय ।

हिरन्मय० } गु० जो सोने से बना, ना० पु०
हिरण्यमय० } द्रव्य ।

हिरण्य० ना० पु० कनक, सुवर्ण, नवखण्डपृथ्वी
में से एक का नाम ।

हिरण्यवाह० ना० पु० सोनभद्र नदी ।

हिरण्यवाक्ष० ना० पु० प्रह्लाद का चचा ।

हिरद० ना० पु० हृदय ।

हिरन० ना० पु० हरिण, मृग ।

हिरनौठा० ना० पु० हरिणका बच्चा ।

हिराना० स० क्रि० खोना, रखकर भूलजाना,
अ० क्रि० खोजाना, ग्रमहोना ।

हिर्की० ना० स्त्री० धाई, बावली ।

हिलकना० अ० क्रि० एठना, मड़ोड़ना ।

हिलकोर० ना० स्त्री० हिलाव, लहराव,
हिलोर ।

हिलकोरना० स० क्रि० लहराना, हिलाना,
अ० क्रि० हिलना, घबड़ाना ।

हिलकोरा० ना० पु० लहर, तरङ्ग ।

हिलगना० अ० क्रि० लटकना, उलझना, चिप-
कना, अटकना ।

हिलगाना० स० क्रि० लटकाना, उलझाना,
चिपयाना, अटकाना ।

हिलना० अ० क्रि० डोलना, टलना ।

हिलमिल० अव्य० मिलकर ।

हिलमिलजाना० अ० क्रि० मिश्रित होना,
मिलाजला रहना ।

हिलमोचिका० ना० पु० शाकविशेष ।

हिलसा० ना० स्त्री० मखलीविशेष ।

सौच० ना० पु० सौच, जो किया करने से प-
वित्रहो ।

सौचिती० ना० स्त्री० रक्षा, बचाव ।

सौजन्य० ना० पु० सुजनता ।

सौत०

सौतन०

सौति०

सौतिन०

ना० स्त्री० एकमनुष्यकी दो
स्त्रियां आपस में एक दूसरे की
सौत कहलाती है ।

सौतिया० ना० स्त्री० सौति ।

सौतियादाह० ना० पु० सौति का दाह ।

सौतेला० गु० जो सौतिका जाया है ।

सौध० ना० पु० महल, ऊंचा मकान ।

सौन्दर्य० ना० पु० सुन्दरता ।

सामान्य० ना० पु० सुभाग, भाग्यमानी, सुहाग ।

सौभाग्यवती० ना० स्त्री० सुहागिन ।

सौमित्र० ना० पु० सुमित्रा सुत, लक्ष्मणजी ।

सौम्य० ना० पु० सुधमह, सुधवार, चन्द्रपुत्र, गु०

उजला, सुन्दर ।

सौम्या० ना० स्त्री० शालपत्नी ।

सौर० ना० पु० शनिश्चर, सूर्य, सम्बन्धी, ना०

स्त्री० मङ्गली विशेष ।

सौरभ० ना० पु० केसर, सुगन्ध, आम्रवृक्ष ।

सौरमास० ना० पु० सूर्यका एक राशि में रहने

का काल, एक संक्रान्ति से दूसरी तक ।

सौरवर्ष० ना० पु० बारह संक्रान्तों का समय ।

सौरि० ना० पु० शनिश्चर, संहिता विशेष ।

सौर्य० ना० पु० पियानासा ।

सौहार्द० ना० पु० मित्रत्व, मित्रता ।

स्कन्द० ना० पु० स्वामिकार्तिक ।

स्कन्ध० ना० पु० कन्धा, काण्ड ।

स्खलन० ना० पु० पतन ।

स्तन० ना० पु० कुक्ष, उरोज, धन ।

स्तब्ध० गु० रुता ।

स्तम्भ० ना० पु० स्तम्भ, स्तम्भ, धंभाव ।

स्तम्भन० ना० पु० रुकाव, धंभाव, रोक, टोक ।

स्तम्भित० गु० जो रोक वा धंभागया ।

स्तव० ना० पु० स्तुति, विनयकी पोथी ।

स्तावक० ना० पु० स्तुति करनेहार ।

स्तुति० ना० स्त्री० सराह, बहार, भजन, विनय ।

स्तुतिपाठक० ना० पु० सूत, मन्दीजन ।

स्तेन० ना० पु० चोर ।

स्तेय० ना० पु० चोरी ।

स्तोत्र० ना० पु० स्तव, स्तुति ।

स्त्री० ना० स्त्री० नारी, लुगई, धौरत ।

स्त्रीण० ना० स्त्री० के बरा वा स्त्री के

समावनर ।

स्थ० गु० थिर, ठहरा, कायम ।

स्थगित० गु० थका, धषा ।

स्थल० ना० पु० स्थान, भूमि, जगह, घर, भूमि

जो धरती है जिसपर मनुष्यादि बसते हैं ।

स्थाणु० ना० पु० श्रीमहादेवजी ।

स्थान० ना० पु० ठौर ठिकाना, घर, ग्राम ।

स्थानापन्न० गु० जगहपर, उसके परले, किसी

के स्थानपर प्रतिष्ठित होना ।

स्थानी० गु० घरवाला, मुकामी ।

स्थापन० ना० पु० रखना, धरना, बैठाना ।

स्थापना० ना० स्त्री० प्रतिष्ठा, स्थापनकरना ।

स्थापित० गु० प्रतिष्ठित, रक्सागया, निर्मय,

थिर, अचल, जो स्थापन कियागया ।

स्थाली० ना० स्त्री० थाली, टोकनी ।

स्थावर० गु० अचल यथा वृक्षादि, जब

स्थित० गु० ठहराहुआ ।

स्थिति० ना० स्त्री० ठिकाण, ठहराव ।

स्थिर० गु० अलोल, अचल, शान्त ।

स्थिरता० ना० स्त्री० शान्ति, धीमापना

स्थूल० गु० मोटा, भारी, बड़ा, कपास ।

स्थूलदर्भ० ना० पु० मूत्र, सेठा, पतार ।

स्थूलफला० ना० स्त्री० समलवृक्ष ।

हिला० गु० पाला, पोसवां ।
 हिलाना० स० कि० चोलाना, अपने वरा में
 करना ।
 हिलोरना० अ० कि० लहराना ।
 हिलोरा० ना० पु० तरंग, लहर ।
 हिलोरामारना० अ० कि० लहर मारना ।
 हिरत० अव्य० चुपचुप, दूत ।
 हिसका० ना० पु० अतराइट, अतुकार, रिस,
 कल ।
 हिसकाहिसकी० ना० स्त्री० परस्पर हिसका
 करना ।
 हिस्ताय० ना० पु० गणित, लेखा, यह शब्द अः
 स्त्रीका भाषा में अतिप्रचलित है ।
 ही० अव्य० निश्चय करनेका बोधक, ना० पु०
 हृदय ।
 हीं० अव्य० निश्चय करनेका बोधक ।
 हींग० ना० स्त्री० श्लेष्मविशेष ।
 हींगहगना० अ० कि० इन्जारहित हगना और
 दुःख भोगना ।
 हींसना० अ० कि० हिनहिनाना ।
 हीक० ना० स्त्री० उक्काई, मतलाई, घुषा, अ-
 दकल, दुर्गन्धि ।
 हीजड़ा० ना० पु० हिजड़ा ।
 हीन० गु० रहित, विना, छोटा, नीच ।
 हीनजाति० ना० स्त्री० नीचजाति ।
 हीनता० ना० स्त्री० न्यूनता, घटी ।
 हीननिमेष० ना० पु० एकटक ।
 हीना० गु० नीचा, छोटा, नीच ।
 हीर० ना० पु० रंभा, शार, गूरा, गु० चोला ।
 हीरक० ना० पु० हीरा ।
 हीर्युक्तिका० ना० स्त्री० काकोली ।
 हीरा० ना० पु० रत्नविशेष, कम्भारी ।
 हीरामन० ना० पु० ताताविशेष, छोटासप-
 विशेष ।
 हीराचल० } ना० पु० कम्बल, जो योगी श्री-
 हीराचलि० } दत्ते हैं ।

हीब० }
 हीला० } ना० स्त्री० चहला, कौचड़ ।
 हुंकार० } ना० पु० पुकार, डरवानेके लिये
 हुंकारा० } है शब्दका पुकारना ।
 हुड़दंगा० गु० दंगैत ।
 हुड़दंगी० ना० स्त्री० दंगा दंगैत ।
 हुड़हुड़ाना० अ० कि० टंकोरना ।
 हुड़हुड़ी० ना० स्त्री० टंकोर ।
 हुडुक० ना० पु० नाजाविशेष ।
 हुंडवी० ना० स्त्री० हुंडी ।
 हुंडामाड़ा० ना० पु० किराया ।
 हुंडार० ना० पु० भेदियाविशेष ।
 हुंडावन० ना० पु० हुण्डीका वट्टा ।
 हुंडी० ना० स्त्री० जिसपत्र में परदेरा से रुपया
 लिलखावे उसका नाम ।
 हुंडीवाल० ना० पु० साहकार, जो हुण्डीलिखे ।
 हुत० गु० जो होम कियागया ।
 हुतना० स० कि० होमकरना, होममें जलाना ।
 हुतभुक० }
 हुताशन० } ना० पु० अग्नि ।
 हुति० अव्य० पलटे, बदले, औरसे ।
 हुती० स्त्री० }
 हुती० पु० } कि० हुआ, अव्य० भी, था, रहे ।
 हुती० पु० }
 हुमकना० अ० कि० कूदना, मारने के समय
 हुंकारना ।
 हुमे० कि० जलाये ।
 हुरगुंडा० ना० पु० तरकारीविशेष ।
 हुर्मई० ना० स्त्री० चरभेद ।
 हुर्दुहुर० }
 हुर्दुहुरा० } ना० पु० पायाविशेष ।
 हुरुकनी० ना० स्त्री० कंवनी, चेरया ।
 हुरी० ना० पु० फूट, फटक, विषेय ।
 हुसा० ना० पु० चन्दन विसनेका पायाविशेष
 जो पायाता होता है ।
 हुलकारना० स० कि० उभारना, हुमकाना,
 लहाना ।

स्थूलैला० ना० स्त्री० बड़ी इलायची ।
 स्थैर्य० ना० पु० स्थिरता ।
 स्थौल्य० ना० पु० मोटापा, मोटाई ।
 स्नान० ना० पु० नहान ।
 स्नानीय० ना० पु० जल जो नहाने के योग्य है ।
 स्नुही० ना० पु० सेंडू ।
 स्नेह० ना० पु० प्रेम प्रीति, स्नान, तैल ।
 स्नेहवृक्ष० ना० पु० देवदारु ।
 स्पर्द्धा० ना० स्त्री० द्वेष, दाह, अन्यके अपमान करनेकी इच्छा ।
 स्पर्श० ना० पु० छुआवट, छूने का काम ।
 स्पर्शेन्द्रिय० ना० स्त्री० स्पर्श, चर्म ।
 स्पष्ट० ना० पु० खुला, सहज, ठीक, दुरुस्त ।
 स्पष्टीकरणार्थं अर्थ स्पष्ट करने के लिये ।
 स्फिरा० ना० स्त्री० शालपर्णी ।
 स्पृश्यं शु० स्पर्श करने के योग्य ।
 स्पृष्टं शु० छुआगया ।
 स्तृहा० ना० स्त्री० इच्छा, चाह ।
 स्फटिकं } ना० पु० स्वच्छ पाषाणविशेष,
 स्फटिकं } विहार पत्थर, चन्द्रकान्तमणि,
 और कपूर ।
 स्फटिकाक्षा० ना० स्त्री० फटकी ।
 स्फटिकोपलं ना० पु० चन्द्रकान्तमणि,
 विहारपत्थर ।
 स्फुटं शु० खिला, खुला, व्यक्त, प्रकट ।
 स्फुरत् अ० क्रि० प्रकाशित, शोभित, डोलत ।
 स्फूर्ति ना० स्त्री० दीप्त, अक्षयहाट, डीला,
 हिलाव ।
 स्फोटकं ना० पु० फौड़ी ।
 समय० ना० पु० अभिमान, अहङ्कार, गरूर ।
 स्मरं ना० पु० श्रीमहादेवजी, कामदेव ।
 स्मरणं ना० पु० स्मृति, चेत, स्मृति, याद,
 ध्यान ।
 स्मारकं शु० जो स्मरण करावे ।
 स्मार्त्तं ना० पु० स्मृतिका ज्ञाता ।

स्मृति० ना० स्त्री० शास्त्र विशेष, स्मरण, चेत,
 याद ।
 स्मृतीहिता० ना० स्त्री० शताहली ।
 स्मृद्धि० ना० स्त्री० बढ़ती, अधिक, चाहना ।
 स्यन्दन० ना० पु० रथ, पानी, चित्ततरंग, वदवृष ।
 स्यानं } ना० पु० चतुराई, चालाकी ।
 स्यानपनं }
 सयानां शु० चतुर, चालाक ।
 स्यारं ना० पु० शृगाल, गीदड़ ।
 स्योनां } ना० पु० वृद्धविशेष ।
 स्योनाकं }
 श्लिग्धद्वयं ना० स्त्री० बेरीवृक्ष ।
 श्लिग्धपर्णी ना० स्त्री० मुरहरी ।
 सुव० ना० पु० सुवा ।
 स्रोतं ना० पु० सोत, सोता ।
 स्रोतः ना० पु० सोता ।
 स्रोतस्वती ना० स्त्री० नदी ।
 स्व० सर्व० अपना, निजका बोधक, ना० पु० धन,
 धाम ।
 स्वः ना० पु० स्वर्ग ।
 स्वकीयं ना० पु० अपना, सगा ।
 स्वकीयां ना० स्त्री० निजस्त्री, अपनी ।
 स्वच्छं शु० निर्मल, साफ, पवित्र ।
 स्वच्छतां ना० स्त्री० निर्मलता, पवित्रता,
 सफाई ।
 स्वच्छन्दं शु० अपनी इच्छा के अनुसार, स्वैरी
 स्वार्थी, ना० पु० ईश्वर ।
 स्वच्छन्दचारी० ना० पु० संन्यासी, भगवान् ।
 स्वच्छफलं ना० पु० नारियल ।
 स्वजनं ना० पु० अपनेलोगों नैत ।
 स्वजातीयं शु० एकवर्णका, निजजाती ।
 स्वतं अर्थ आपसे ।
 स्वतन्त्रं शु० स्वाधीन, निजयश ।
 स्वतन्त्रतां ना० स्त्री० स्वाधीनता ।
 स्वधर्मं ना० पु० अपना धर्म ।
 स्वप्नं ना० पु० निद्रावस्था, द्वितीयावस्था, नींदमें

हुलसाना० अ० कि० आनन्दित होना, मुदित होना ।

हुलसाना० स० कि० रिक्ताना, प्रसन्नकरना ।

हुलास० ना० पु० सुंपनी, आनन्द, विलास ।

हुलड़० ना० पु० रौला, बखेड़ा ।

हुं० अव्य० हां, भी, हो ।

हुंक० ना० स्त्री० शब्द विशेष ।

हुंकरना० स० कि० क्रोध से वा जय से वा आइ फूंक से हुं शब्द बोलना ।

हुंठ० ना० पु० सादेतीन ३॥ ।

हुंठा० ना० पु० सादेतीन का पहाड़ा ।

हुंहां० ना० पु० धूमधाम, गोलमोल उत्तरदेना ।

हुक० ना० स्त्री० पीड़ा, टसक, झटक ।

हुचना० स० कि० चूकना, भूलना ।

हुठना० स० कि० धका देना ।

हुड़० } ना० स्त्री० खेचालेंची ।
हुड़ाहुड़ी० }

हुण० ना० पु० कठोर मनुष्य ।

हुन० ना० पु० मन्दरानी, मुद्राविशेष ।

हुल० ना० स्त्री० भोंक, खोंचा ।

हुलना० स० कि० भोंकना, खोंसना ।

हुहा० ना० पु० चर्चा, आंधी, धूमधाम, टीमटाम ।

हुदय० ना० पु० वलःस्थल, छाती, अन्तःकरण, मन ।

हुदयनिकेत० ना० पु० कामदेव ।

हुपीक० ना० पु० इन्द्रियां ।

हुपीकेश० ना० पु० इन्द्रियपतिविशेष, श्री कृष्णचन्द्रका एक नाम ।

हुष्ट० गु० हर्षित, प्रसन्न ।

हुं० अव्य० सम्बोधनका सूचक, यथा हे भगवन्, हे नारायण ।

हुंगा० ना० पु० सरावन, पटेला, हेगा ।

हुंठ० अव्य० नीचे स्त्री० कांव जो गुदा में निकलती है ।

हुंठा० गु० आलसी, नीच, डरपोकना ।

हुंठापन० ना० पु० नपुंसकता, नीचता, निचाई ।

हुंत० } ना० पु० अर्थ, कारण, प्रकरण, प्रयोजन,
हुंतु० } निमित्त, प्रीति, प्रेम ।

हुति० अव्य० हा हति ।

हुेम० ना० पु० स्वर्ण, कंचन, सोना ।

हुेमनिधि० ना० पु० पारा, स्वर्णकी खानि ।

हुेमन्त० ना० पु० ऋतुविशेष, भित्तों-अगहन और पौषमास गिनाजाता है ।

हुेमपुष्पा० } ना० स्त्री० शम्पावृक्ष ।
हुेमपुष्पिका० }

हुेमलता० ना० स्त्री० सोनरुही ।

हुेमवती० ना० स्त्री० हरि, हड़ ।

हुेमव्रता० ना० स्त्री० वच औषध ।

हुेमाचल० } ना० पु० समेर पर्वत ।
हुेमाद्रि० }

हुेरना० स० कि० निरेखना, देखना, हूदना, रगेदना, खदेड़ना ।

हुेरम्य० ना० पु० शीगणेशजी ।

हुेरी० ना० स्त्री० रागिनीविशेष, जो अहीरगति है ।

हुेल० ना० स्त्री० बोझ, भार, टोकराभरगावर ।

हुेलना० अ० कि० पैरना, तिरना, स० कि० धका, देना, हडाना ।

हुेला० ना० स्त्री० अवज्ञा, प्रवाह, रेखा, क्रीडा संग, सहज ।

हुेलमारना० स० कि० टकेलना, टेलना ।

हुैक० ना० पु० हुय ।

हुैराज० ना० पु० हुयहुय, सहस्रबाहु ।

हुो० अव्य० सम्बोधन का चिह्न ।

हुोआना० अ० कि० होकर आना ।

हुोकना० अ० कि० हांकना ।

हुोठ० ना० पु० औष्ठ, लंब ।

हुोठा० ना० स्त्री० लगाम, दहाना ।

हुोके० अव्य० द्वारा, से ।

हुोळुकना अ० कि० सम्पूर्ण होना, गिपटना ।

होजाना० घ० कि० होना, पदना ।
होठ० ना० पु० होंठ ।
होड़० ना० स्त्री० प्रयत्न, यत्न, दांव, रात ।
होड़ल० ना० पु० धमक, धनरक ।
होड़चक्रा० ना० पु० जिसके द्वारा ज्योतिषी लोग राशि-विचारते हैं ।
होत० ना० स्त्री० वरा, शक्ति ।
होतव० ना० पु० नदा-प्रारम्भी ।
होतव्य० ना० पु० भवितव्य, होनहार ।
होतव्यता० ना० स्त्री० भवितव्यता, होनहार ।
होता० ना० पु० होमकरनेहारा ।
होते० अव्य० रहते, में ।
होतेहोते० अव्य० क्रम क्रम से ।
होत्र० ना० पु० पूजन, हुतन ।
होत्री० गु० पूजक ।
होनहार० ना० गु० जो होसके, सम्भव ।
होना० घ० कि० रहना, बनना, जा कुछहोगा ।
होम० ना० पु० अग्न्याग्नी, घृतादि अग्नि में होमना ।
होमना० स० कि० होमका यज्ञकरना, जलाना ।
होला० ना० पु० नावावेश, बूट, भूनीफली ।
होलाष्टक० ना० पु० होली का समय ।
होलिका० ना० स्त्री० होली ।
होलिहा० ना० पु० होली खेलनेहार ।
होली० ना० स्त्री० फाल्गुन की पूर्णमासी का उत्सव ।
होआ० ना० पु० हाऊ, होवा ।
हो० कि० हूँ, सर्वे में, हम ।
होस० ना० स्त्री० इच्छा, चाह ।
होका० ना० पु० तोभ, झालच, वापुसमेतफड़ी ।
होले० अव्य० धीमें धीरे ।
होलेहोले० अव्य० धीरेधीरे ।
होवा० ना० पु० भोकास, सुतना ।
होवा० ना० पु० विनालोडा, बड़ाजताराय, तालाव, भील, अगाधता ।

हस्व० गु० अदीर्घ, छोटा, एक मात्रिकाक्षर ।
हस्वमूल० ना० पु० ऊत, गघा, गांका ।
हृदिनी० ना० स्त्री० नदी ।
ह्री० ना० स्त्री० लज्जा, हया ।
ह्रीण० } गु० लजित, शरमायाहुआ ।
ह्रीत० }
ह्रै० कि० होकर ।
ह्रै० कि० होगा ।

[क्ष]

क्षर्य० ना० स्त्री० चयरोग जिसमें एक और रक्त-सुरसे गिरता है और खांसी भी आती है ।
क्षण० ना० पु० ठीस कक्षाका एकक्षण होताहै, थोड़ादेर, तिल ।
क्षणक० ना० पु० क्षण, राल ।
क्षणप्रति० अव्य० बारंबार ।
क्षणसूचि० ना० स्त्री० भिजली, कौधा ।
क्षणिक० गु० अस्थिर, सरयानाशी ।
क्षणैक० अव्य० थोड़ेकाल में ।
क्षत० ना० पु० फोड़ा, घाव ।
क्षतज० ना० पु० रुधिर, खोह, रक्त ।
क्षति० ना० स्त्री० हानि, घटी ।
क्षत्र० ना० पु० एकद, तान, छाता, छतुरी, सवियवंश ।
क्षत्रक० ना० पु० सुरकोडा, जिसे कुक्षरमुत्ता कहते हैं ।
क्षत्रधारी० ना० पु० राजा, नृपति, महीपति ।
क्षत्रघन्धु० ना० पु० जो क्षत्रियों में नीचदी ।
क्षत्रिय० ना० पु० द्वितीयवर्ण, सिरनी ।
क्षपा० ना० स्त्री० रात ।
क्षपाकर० } ना० पु० धन्त्रमा ।
क्षपानाथ० }
क्षम० ना० पु० योग्यता, गु० समर्थ, योग्य ।
क्षमता० ना० स्त्री० योग्यता ।
क्षमना० स० कि० समाकरना, छोड़ना ।
क्षमा० ना० स्त्री० मोक्ष, मुक्ति, मोचन, अलसी, दया, धरती ।

हुलसाना० अ० क्रि० आनन्दित होना, मुदित होना ।

हुलसाना० स० क्रि० रिभाना, प्रसन्नकरना ।

हुलास० ना० पु० सुपनी, आनन्द, विलास ।

हुल्लङ्ग० ना० पु० रौला, बसेड़ा ।

हुं० अव्य० हां, भी, हो ।

हुंक० ना० स्त्री० शब्द विशेष ।

हुंकरना० त० क्रि० क्रोध से वा भय से वा आदर से हुं शब्द बोलना ।

हुंठ० ना० पु० सादेतीन ३॥ ।

हुंठा० ना० पु० सादेतीन का पहाड़ा ।

हुंहां० ना० पु० धूमधाम, गोलमोल उत्तरदेना ।

हुक० ना० स्त्री० पीड़ा, टसक, झटक ।

हुचना० स० क्रि० चूकना, भूलना ।

हुठना० स० क्रि० धका देना ।

हुड़० } ना० स्त्री० सेंचाखेंची ।
हुड़ाहुड़ी० }

हुण० ना० पु० कठोर मनुष्य ।

हुन० ना० पु० मन्दरानी, सुद्राविशेष ।

हुल० ना० स्त्री० भोंक, खोंचा ।

हुलना० स० क्रि० भोंकना, खोंसना ।

हुहा० ना० पु० चर्चा, आंधी, धूमधाम, टीमटाम ।

हुदय० ना० पु० वचःस्थल, छाती, अन्तःकरण, मन ।

हुदयनिकेत० ना० पु० कामदेव ।

हुपीक० ना० पु० इन्द्रियां ।

हुपीकेश० ना० पु० इन्द्रियपतिविशेष, श्री कृष्णचन्द्रका एक नाम ।

हुष्ट० गु० हर्षित, प्रसन्न ।

हुं० अव्य० सम्बोधनका सूचक, यथा हे भगवन्, हे नारायण ।

हुंगा० ना० पु० सरावन, पटेला, हुंगा ।

हुठ० अव्य० नीचे स्त्री० कांच जो शूदा में निकलती है ।

हुठा० गु० आलसी, नीच, दरपोकना ।

हुठापन० ना० पु० नपुंसकता, नीचता, निचाई ।

हेत० } ना० पु० अर्थ, कारण, प्रकरण, प्रयोजन,
हेतु० } निमित्त, प्रीति, प्रेम ।

हेति० अव्य० हाइति ।

हेम० ना० पु० स्वर्ण, कंचन, सोना ।

हेमनिधि० ना० पु० पारा, स्वर्णकी खानि ।

हेमन्त० ना० पु० श्रातुविशेष, गिरमों-अग्रहन और पौषमास गिनाजाता है ।

हेमपुष्पा० } ना० स्त्री० चम्पावृक्ष ।
हेमपुष्पिका० }

हेमलता० ना० स्त्री० सोनचूड़ी ।

हेमवती० ना० स्त्री० हर, हड़ ।

हेमव्रता० ना० स्त्री० वच औषध ।

हेमाचल० } ना० पु० सुमेरु पर्वत ।
हेमाद्रि० }

हेरना० स० क्रि० निरेखना, देखना, हड़ना, रगेदना, खदेड़ना ।

हेरम्य० ना० पु० श्रीगणेशजी ।

हेरी० ना० स्त्री० रागिनीविशेष, जो अहीरगातिहै ।

हेल० ना० स्त्री० नोभ, भार, टोकराभरगोवर ।

हेलना० अ० क्रि० पैरना, तिरना, स० क्रि० धका, देना, हडना ।

हेला० ना० स्त्री० अवज्ञा, प्रवाह, रला, फीड़ा संग, सहज ।

हेलमारना० स० क्रि० टकेलना, डेलना ।

हैक० ना० पु० ह्य ।

हैराज० ना० पु० ह्यह्य, सहस्रपाड ।

हो० अव्य० सम्बोधन का चिह्न ।

होआना० अ० क्रि० होकर आना ।

होकरना० अ० क्रि० हांकरना ।

होठ० ना० पु० ओष्ठ, लव ।

होठा० ना० स्त्री० लगाम, दहाना ।

होके० अव्य० द्वारा, से ।

होचुकना अ० क्रि० सम्पूर्ण होना, गिपटना ।

होजाना० अ० कि० होना, पदना ।
होठ० ना० पु० होठ ।
होड़० ना० स्त्री० प्रयत्न, यत्न, दांव, रात ।
होड़ल० ना० पु० धमक, धमक ।
होड़ाचक्र० ना० पु० जिसके द्वारा व्योतिषी लोग राशि विचारते हैं ।
होत० ना० स्त्री० यश, शक्ति ।
होतव० ना० पु० वदा, आरम्भी ।
होतव्य० ना० पु० भवितव्य, होनहार ।
होतव्यता० ना० स्त्री० भवितव्यता, होनहार ।
होता० ना० पु० होमकरनेहारा ।
होते० अव्य० रहते, में ।
होतेहोते० अव्य० क्रम क्रम से ।
होत्र० ना० पु० पूजन, हुतन ।
होत्री० गु० पूजक ।
होनहार० ना० गु० जो होसके, सम्भव ।
होना० अ० कि० रहना, बनना, जो कुछहोगा ।
होम० ना० पु० अग्न्याग्नी, घृतादि अग्नि में होमना ।
होमना० स० कि० होमका यज्ञकरना, जलाना ।
होला० ना० पु० नावविशेष, बूट, भूनीफली ।
होलाएक० ना० पु० होली का समय ।
होलिका० ना० स्त्री० होली ।
होलिहा० ना० पु० होली खेलनेहार ।
होली० ना० स्त्री० फाल्गुन की पूर्णमासी का उत्सव ।
होश्या० ना० पु० हाज, हीवा ।
हो० कि० हूँ, सर्व में, हम ।
होस० ना० स्त्री० इच्छा, चाह ।
होका० ना० पु० तोष, झालच, वायुसमेतभङ्गी ।
होले० अव्य० धीमे धीरे ।
होलेहोले० अव्य० धीरेधीरे ।
होवा० ना० पु० भोकस, सुतगा ।
हृद० ना० पु० विनास्त्रोदा, नङ्गनताशय, तालाब, झील, धमाधता ।

ह्रस्व० गु० अदीर्घ, छोटा, एक मात्रकार ।
ह्रस्वमूल० ना० पु० ऊल, गसा, गांवा ।
ह्रदिनी० ना० स्त्री० नदी ।
ही० ना० स्त्री० लजना, हया ।
हीण० } गु० लजित, शरमापण्डित्य ।
हीत० }
है० कि० होकर ।
हैद० कि० होगा ।

[क्ष]

क्षई० ना० स्त्री० घयरोग जिसमें एक और रक्तस्रवसे गिरता है और खांसी भी आती है ।
क्षण० ना० पु० क्षीण कक्षाका एकषण होताहै, थोड़ादिर, तिल ।
क्षणक० ना० पु० क्षण, राल ।
क्षणप्रति० अव्य० वारंवार ।
क्षणहृत्वि० ना० स्त्री० विजली, कीधा ।
क्षाधिक० गु० अतिथर, सत्यानाशी ।
क्षणक० अव्य० थोड़ेकाल में ।
क्षत० ना० पु० फोड़ा, घाव ।
क्षतज० ना० पु० रथिर, खोह, रक्त ।
क्षति० ना० स्त्री० हानि, घटी ।
क्षत्र० ना० पु० एकुट, ताम्र, छाता, धनुरी, शनिध्वंश ।
क्षत्रक० ना० पु० भुईकोड़ा, जिससे कुकुरमुत्ता फड़त है ।
क्षत्रधारी० ना० पु० राजा, नृपति, महीपति ।
क्षत्रघ्न० ना० पु० जो क्षत्रियों में नोचही ।
क्षत्रिय० ना० पु० द्वितीयवर्ण, क्षिरनी ।
क्षपा० ना० स्त्री० रात ।
क्षपाकर० } ना० पु० धन्द्रमा ।
क्षपानाथ० }
क्षम० ना० पु० योग्यता, गु० समर्थ, योग्य ।
क्षमता० ना० स्त्री० योग्यता ।
क्षमना० स० कि० क्षमाकरना, छोड़ना ।
क्षमा० ना० स्त्री० मोक्ष, मुक्ति, मोचन, अलसी, दया, भरती ।

क्षमापन० ना पु० क्षमा करनेका स्वभाव ।
 क्षमायोग्य० गु० जो क्षमा के योग्य होवे ।
 क्षमिय० कि० क्षमाकीजिये ।
 क्षमित० गु० क्षमा किरागया ।
 क्षय० ना० पु० क्षयरोग, विनाश, प्रलय ।
 क्षयमास० ना० पु० जिस चान्द्रमास में सूर्यका
 दो राशि में संचारहो ।
 क्षयरोग० ना० पु० सूखा, शोष, क्षयी ।
 क्षर० ना० पु० भारी, स्थूल ।
 क्षान्त० ना० पु० सन्तोषी, धैर्यवान् ।
 क्षान्ति० ना० स्त्री० सन्तोष, धीरज ।
 क्षार० ना० पु० खार, राख, भस्म, धूलि ।
 क्षारपत्र० ना० पु० बहुधा, मार्जीविशेष ।
 क्षारश्रेष्ठ० ना० पु० टांखवृक्ष ।
 क्षारी० ना० पु० भीमहादेवजी ।
 क्षिणवर्त० ना० पु० मेदासिगी ।
 क्षिति० ना० स्त्री० पृथ्वी, धरती ।
 क्षितिज० ना० पु० भौमाक्षर, मंगल ।
 क्षितिनाथ० } ना० पु० राजा, महीपति ।
 क्षितिपाल० }
 क्षितिमण्डन० ना० पु० ब्रह्मा ।
 क्षितीश० ना० पु० राजा, महीश ।
 क्षिप्र० गु० शीघ्र, उतावल ।
 क्षीण० गु० दुबला, पतला, ना० पु० प्रमेहरोग ।
 क्षीर० ना० पु० दूध, खीर, पानी, खारिलेन ।
 क्षीरगन्धा० ना० स्त्री० विदारीकन्द ।
 क्षीरद० ना० पु० मेष, गाय ।
 क्षीरपत्रा० ना० स्त्री० जामन, फलेद ।
 क्षीरवृक्ष० ना० पु० पीतलवृक्ष, थूहलवृक्ष ।
 क्षीरा० ना० स्त्री० लक्ष्मी ।
 क्षीरिणी० ना० स्त्री० इडो, बूटी ।
 क्षीरी० ना० पु० चंशरोचन, खिरनी, खीर, धन ।
 क्षीरोद० ना० पु० समुद्रविशेष ।
 क्षुत्पिपास० ना० स्त्री० भूख, थास ।
 क्षुद्र० गु० छोटा, नीच, कमीना, ना० पु०
 नरक धिकनी पौधा ।

क्षुद्रजम्बू० ना० पु० जामन, फलेद ।
 क्षुद्रतन्दुला० ना० स्त्री० विडंग ।
 क्षुद्रता० ना० स्त्री० नीचता, नीचपन ।
 क्षुद्रपनस० ना० पु० बड़हल ।
 क्षुद्रफला० ना० स्त्री० इन्द्रवारुणी, जामन ।
 क्षुद्रवर्षा० ना० स्त्री० खालपुननसा, थोड़ी
 बरसात ।
 क्षुद्रा० } ना० स्त्री० छोटी कटाई ।
 क्षुद्री० }
 क्षुधा० ना० स्त्री० भूख ।
 क्षुधासं० } गु० भूखा, बहुत भूखा ।
 क्षुधावन्त० }
 क्षुधित० गु० भूखा ।
 क्षुर० ना० पु० छुरा, उस्तरा, मुंज ।
 क्षुरक० ना० पु० गोखरू, तिलकवृक्ष ।
 क्षुल्ल० ना० पु० कौड़ी ।
 क्षेत्र० ना० पु० भूमिपुण्य, खेत, तीर्थ शरीर ।
 क्षेत्रज० ना० पु० जो क्षेत्रमें उत्पन्नहो ।
 क्षेत्रज्ञ० ना० पु० आत्मा, जीव, गु० किरान
 मापक ।
 क्षेत्रफल० ना० पु० खेतका फल, यथादि वि
 गहटी ।
 क्षेत्रजीव० ना० पु० किसान, खेतीवाला ।
 क्षेत्रम० ना० स्त्री० कुशल ।
 क्षेत्रकरी० ना० स्त्री० पत्नीविशेष ।
 क्षेमकुशल० ना० स्त्री० आरोग्य, भलाई, कल्याण,
 कुशलता, खैर्याफियत ।
 क्षोणिज० ना० पु० क्षितिज, मङ्गलादि ।
 क्षोणिप० ना० पु० राजा, महीपति ।
 क्षोणिदेव० ना० पु० ब्राह्मण ।
 क्षोणी० ना० स्त्री० विति, पृथ्वी, धरती ।
 क्षोभ० ना० पु० छोह, क्रोध, खमार, अभिर
 मन ।
 क्षौद्र० ना० पु० मधु, शहद ।
 क्षौर० ना० पु० मुखडन, नाई का काम ।
 क्षौरक० ना० पु० छुरा वा नाई

दमा० ना० स्त्री० पृथ्वी, धरती, भूमि ।
 दमापति० ना० पु० राजा, भूपाल ।
 [क्ष]
 क्षा० श्रय्य० शब्दान्तमें कर्त्ता वा कारक का चिह्न,
 यथा, धर्मक्ष, कृतक्ष ।
 क्षाता० यु० जाननेहारा, शास्त्रपक्का ।
 क्षाति० ना० स्त्री० पिता, असपिण्ड, वयंजाति ।
 क्षान० ना० पु० समझ, बुद्धि, व्यक्त और धर्मकी
 बुद्धि निसंकरके आत्मा आवागमन से रहित

होता है ।
 क्षानतः० ना० पु० समझ, ठीकबुद्धि ।
 क्षानवान्० } यु० बुद्धिमान्, परिष्कृत, समझ-
 क्षानी० } दार ।
 क्षापक० गु० जाननेहारा ।
 क्षापन० ना० पु० जतावना ।
 क्षेय० गु० जो जानने के योग्य ।
 क्षेया० ना० स्त्री० मेदा ।

दो० । भीपरमात्मा जगतेश्वर कृपास्नानिभिः एक । जासुदयापूरणभयो मङ्गलकोष विवेक १ ॥
 विविधदेशनापामिलित भाषामन्यनिमाहि । यथासंस्कृतकारसी आदिकपदश्रवणादि २ ॥
 अर्थलितैर्निनबुद्धिसम विपुलमन्यमतधारि । कोषकारक्रीमूढता तन्निबुधपदैविचारि ३ ॥
 शब्द समूह समुद्रवत नौका कोषप्रमान । पारजाईचदिनालत्रुधि निनसन्देहसुजान ४ ॥
 यथाश्रुतुं यत्र खेती भाद्रप्रसिर्ततिविचारि । ग्रहचपनवमहिसहितशुभसंवतविक्रमधारि ५ ॥
 कोष भयो पूरणं तत्रैर्पतेपुरं शुचि ठाम । कोषकार सानन्दलित्त्र कोषसमङ्गलनाम ६ ॥
 जोगुणगाहकं सृजनजन विचारीलं प्रवीन । तेषुलि कोष सराहिर्हैर्हैसिर्है बुद्धिमलीन ७ ॥

इति ॥